3/6/23

विश्रामसागर

بسرام ساگر

जिसमें

षट शास्त्र अठारहों पुराण का मत और श्री त्रिभुवनपति
कृष्ण चन्द्रावतार के चरित्र जन्म से निज लोक गमन
पर्य्यन्त और श्री सच्चिदानन्द परब्रह्म रामावतार
की कथा बहुत से ग्रन्थों के मत से उत्तम २
छन्दों में वर्णित है

उसको

श्री मन्महा महोपाध्याय गुणि गण मण्डली मण्डन श्री
परब्रह्म रामचन्द्र जी के पादारविन्दानुरागी परम वैष्णव
महन्थ श्री रघुनाथ दास राम सनेहीजी ने महात्माओं और
हरि भक्तों और विद्या रसामृत स्पर्शियों के निमित्त अतीव
परिश्रम करके सम्पूर्ण ग्रन्थों के आशय लेकर भाषा
उल्था किया

दूसरी बार

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापागया

अक्टूबर सन् १८८० ई०

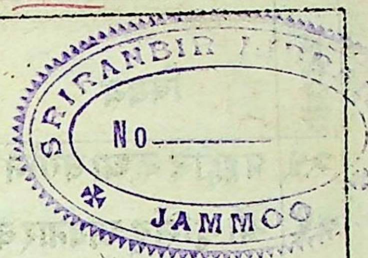
श्री सम्वत् १९३७ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् अक्टूबर सन् १८८० ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तैय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परन्तु व्यौपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिन को व्यौपार की इच्छा हो वह छापखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय करलें।।

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
भाषा पुराण इतिहास	दोहावली रामायण	शुक बहत्तरी
काव्य कोष	विनय पत्रिका	बकावली सुमन-
महाभारत भाषा छन्द	सुखसागर टैप	चहार दरवेश
प्रबन्ध	तथा उत्तम पत्थर के छा-	क़िस्सा हातम ताई
विजय मुक्तावली महा-	पे की	अपूर्व्व कथा
भारत का संक्षेप	सती विलास	क़िस्सा गुल सनोबर
रामायण तुलसी कृत सू-	प्रेमसागर	इन्द्र सभा
तथा सटीक मानस दीपि-	ब्रजविलास	सहस्र रजनी चरित्र
का कोष इत्यादि सहित	भक्तमाल	दास्तान अमीर हमज़ा
तथा मोटे अक्षरों की मये	बिक्रम बिलास	मनोहर कहानी
तसवीर	श्री राम व्याहोत्सव	अवतार कथाऽमृत
रामायण कवितावली	बैताल पच्चीसी	कमीशन बड़ोदा
तथा गीतावली	सिंहासन बत्तीसी	सूरसागर
रामायण राम विलास	पद्मावती खण्ड	कृष्णसागर
कृष्णप्रिया	दानलीला नागलीला	देवी भागवत

6523. Price R. /8/

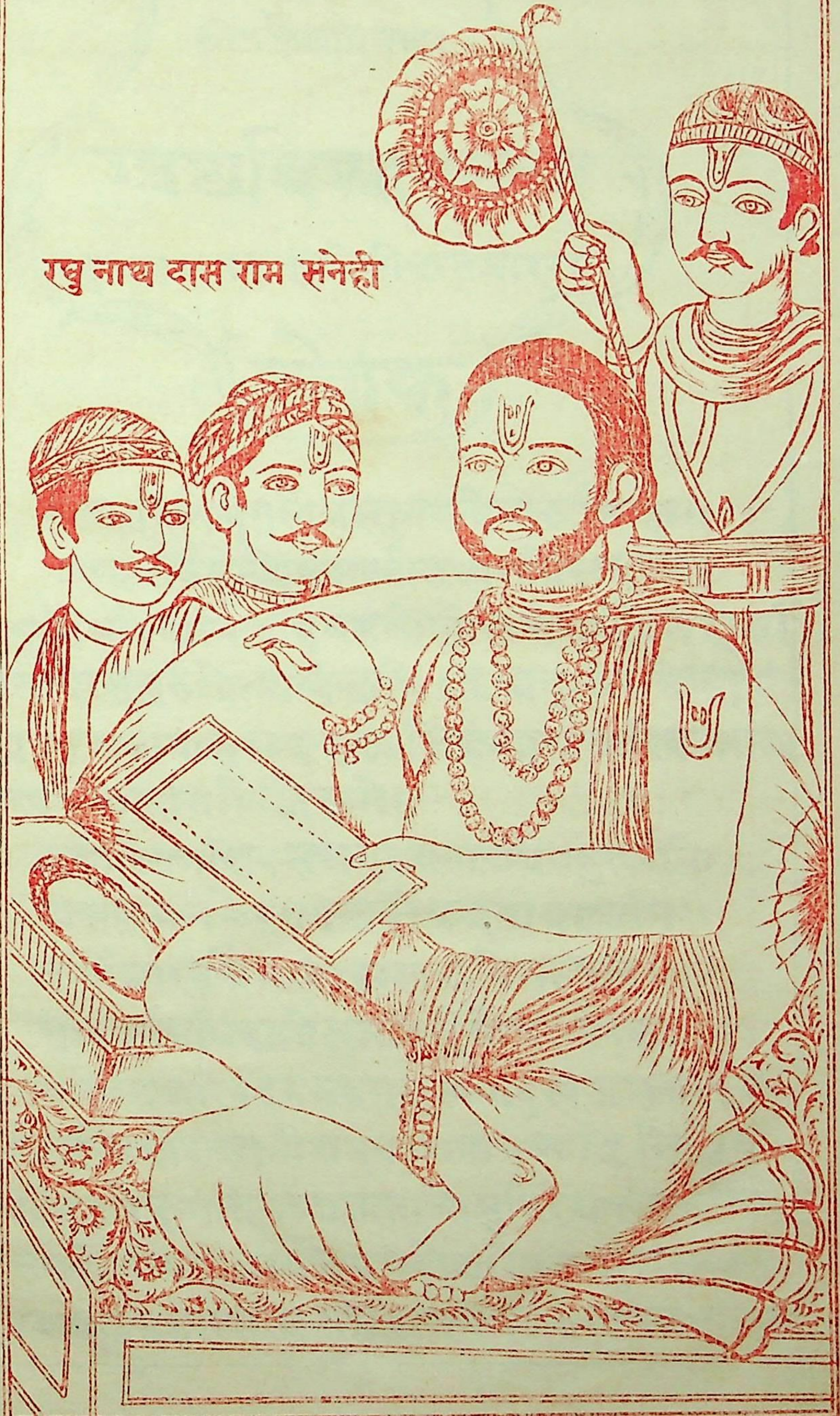


सूची पत्र

विश्राम सागर की कथा का ॥



تصویر رگھناتھ داس رام سنیہی



श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर

रघुनाथदासरामसनेहीकृतप्रारम्भः

श्लोक

सीतारामेतियुगुलंवस्तुतस्त्वेकरूपिणं॥
परमानन्दसन्दोहंसर्व्वाराध्यंनतोस्म्यहम्॥

तत्प्राप्त्यैपरिमार्गिताहिबहुधालोकेजनानैवतद्दातारं
हरिभक्तदासगुरुतोन्यान्यंक्वचिद्दृष्टवान्।तेषामेवतुपा-
दपद्मशुभवायासुस्वचक्षाजिहंरघुनाथाखिलग्रन्थ
सारसुखदंविश्रामसिन्धोकृते॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि।
नानाग्रन्थनकेरमतकहौंबन्दनाबखानि॥
बन्दौंशारदकेचरणहरणअविद्यामूल॥
बुधिसुधिविद्यादेसुमतिहैमोपरअनकूल॥

कुण्ड॰ एकरदनकरिवदनसदनसुखकेदुखनाशक।ईश
तनयगणईशशीशरजनीशप्रकाशक॥करिहुसिद्धिबु-
धिलेतदेतहरिकुमतिनजागत।जोसुमिरैमनलायविघ्न-
णाताजनकेभागत।जयजयगणेशगिरजासुवनभुवन
विदितयशअघहरण।रघुनाथदासवन्दनकरतबारबारगण्

ति वरण॥ जो अनङ्ग अरि सङ्ग उमा अरधङ्ग विराजत। मुराड माल मृग छाल कराह विष व्याल जो छाजत॥ शीस गङ्ग सारङ्ग भस्म सब अङ्ग लगावत। तीन नयन मृदु वैन अयन सुख दुःख नशावत॥ दीन दयाल कृपाल हर कर त्रशूल वर गौर तन। रघुनाथदास बन्दन करत करौ कृपा मोहिं जानि जन॥ बन्दौं द्विज पद कमल अमल सुन्दर सब लायक। बन्दौं रघुपति सचिव सखा सेवक सुख दायक। बन्दौं गङ्ग तरङ्ग मे दिनो कुमुद विभाकर। बन्दौं सुर मुनि मनुज दनुज विधि जीव चराचर॥ बन्दौं कवि कोविद विमल जिन बरण्यो सियराम यश। सब मोपर किरपा करहु कहौं कथा बल पाय तस॥

चौ॰ राम चरित्र विचित्र अपारा॥ गावत निगम न पावत पारा॥ निज मति सरिस तदपि मुनि गावैं॥ मन चञ्चल तेहि तहां रमावैं॥ श्रवण कीर्तन सुमिरण सेवा॥ भक्ति अङ्ग भाषत महि देवा॥ करण पवित्र गिरा अघहारी॥ सब प्रकार मुद मङ्गल कारी॥ अस बिचारि बरणत रघुनाथा॥ भाषा करि हरि प्रेरित गाथा॥ कवित शेष गुण ग्रंथ मझारा॥ कहे नागपति यहि परकारा॥

दो॰ छं॰ मगण नगण अरु भगण यगण शुभ चारि कहावैं। जगण रगण पुनि सगण तगण कवि अशुभ बतावैं॥ मगण तीन गुरु आदि देव महि सब सुख कारी। नगण तीन लघु देव नाग दायक बुधि भारी॥ भगण आदि गुरु देव चंद्र मंगल दा होई। यगण आदि लघु देव नीर आनन्द प्रद सोई॥ जगण मध्य गुरु देव सूर सुख सकल बिनाशै। रगण मध्य लघु देव अग्नि दाहत तनु नाशै॥ सगण अन्त गुरु देव काल नित दे त उदासी। तगण अन्त लघु देव व्योम निरफल फल नासी॥ मनुज कवित

के आदि महं लीजे इन्हैं बिचारि सुख। कहैं रघुनाथ श्री रा-
म गुण वर गात अशुभो होत शुभ ॥

दो० तहां मित्र कोउ दास हैं उदासीन रिपु कोउ।
अक्षर शुद्ध अशुद्ध कोउ सुनो कहौं मैं सोउ।
खग कच घन अरु परत छुत इति सुखप्रद अङ्क।
शेष परै जो कवित तो करै रावते रङ्क ॥

चौ० यहि विधि पिङ्गल कहत बखानी॥ सो है मम विशेष नहिं जानी
तेहि ते सबै कहौं कर जोरी ॥ जो कछु चूक परै लखि मोरी ॥
सुजन सुधारि लहेउ तुम ताहीं॥ लघु गुरु वरण जहां जस चाही
मोहिं न ज्ञान बुधि बल चतुराई॥ कीन्ह चहौं हरि कथा सोहाई
मति अति छीन पीन रुचि मोरी॥ चाहत नभै छुवन कर जोरी॥
यह ढीठता समुझि बर ज्ञानी॥ छमिहैं निज शिशु सेवक जानी
सुनिहैं मुदित सराहि सराही॥ राम सिया पद रत मति जाही।
जिमि बालक बोलत तुतराई॥ सुनत मात पितु अति हरषाई
निंदिहैं कपटी खल अभिमानी॥ जे हरि बिमुख भक्ति नहिं जानी
तासु बचन सुनि सुजन सुछन्दा॥ तजहिं न उडुप रावि शिव निन्दा
रबिहि उलूक कहै मल नाहीं॥ साक्षी कि सिधारै मन माहीं ॥
निंदा फल नहिं कह्यो बखानी॥ पैहैं जब तब जैहैं जानी ॥ ॥

दो० राम कथा सबका सुखद अरु तुब षीकी नाइं॥
अर्क जवासा दुष्ट जन ते अशुद्ध जरि जाइं॥

चौ० यदपि रहै मम भनित भदेशी॥ पै हरि जन गुण नाम ते लेशी
ताते भई अनूपम नीकी ॥ जिमि मनि मादृत बोलनी फीकी ॥
हरि रजन बिन जो कबिताई॥ सुभग प्रान बिन जिमि वपु भाई।
खल बायस कर तीरथ सोई॥ सुजन हंस तहं मिन कोई ॥ ॥
कल्ह भवबंधन हरि गुण गावै॥ संजीवनि सोइ काव्य कहावै॥

कहैं सुनैं मिलि सज्जन ताही॥ करैं प्रणाम प्रीति गुण ग्राही।
यथा बक्र गति सरित निहारी॥ तासु पाथ पावन सुखकारी।
मज्जहिं ताहि महामुनि देवा॥ ऽअपर न का को बरणै भेवा॥

दो० श्रीपति धीपति यज्ञ पति ऽअखिल लोक पति जोपि।
स्वाधों भूपति प्रजा पति करौ कृपा प्रभु सोपि॥
बन्दौं हरिजन पद कमल ऽअमल तत्व प्रद रेनु॥
जिन के संग प्रभु फिरत इमि जिमि बच्छा संग धेनु।
यद्यपि कामी कुटिल खल सम लौं जन रघुनाथ।
तद्यपि ऽअहै तुम्हारो इ समुझि न छांड़ो हाथ॥
बड़ कृत ऽअंगीकार जेहि प्रति पालत सजि ताहि।
ऽअहि महि हर विष दीध ऽअगिनि तजत न दुख प्रद ऽआहि।
बन्दौं खल मल रहित जे राम भक्ति गुण खानि॥
पर दुख सोई सुख जिन्हें पर सुख मोटी हानि॥
हरिजन मणि की कोठरी ऽआसु सुता री ऽआहि॥
मुयहु न त्यागत टेक निज तेहि ते छांड़ो नाहि॥
सन्त सुभाव प्रभाव लखि समुझि खलन कै रीति॥
तब मैं कीन्हों ग्रंथ यह हृदय न ऽआन्यो भीति॥
करिश्रीर केरे कुंवर को कहा सकै करि स्वान॥
भक्त मारे जाइहैं यम के भवन निदान॥

सो० बन्दौं सन्त समाज शीस नाइ कर जोरि कै॥
जहं हरिनाम जहाज ऽअमित पतित चढ़ि भव तरहिं।

चौ० बन्दौं गुरु पद बारहिं बारा॥ जासु कृपा छूटत संसारा॥
होत बिमल मति मान बड़ाई॥ मिटत विभेद कपट कुटिलाई।
जिहिं सम पतित न यहि जग कोऊ॥ लघु मति ऽअगुण ऽअपुख लघु सोऊ
सतगुरु गुरु मोका गुरु कीन्हा॥ यथा दंड कर बावन लीन्हा॥

करहु तासु केहि भाँति प्रशंसा॥ जो कुल काग कहिपिक बक हंसा
मलिन न भक्ष तजिकपट कुसंगा॥ लागेउ नाम चुनन सत संगा।

दो॰ काशीवास निवास सुर मणिपद पाथ सरूप।
गुरु मुरति पशुपति प्रकट तारक मंत्र अनूप।

चौ॰ बन्दौं अवध अवध पुर वासी॥ जे अनन्य सियराम उपासी
बन्दौं सरयू विमल तरंगा॥ पाव न करणि करणि अघ भंगा॥
करहिं पान जल सुमिरें नामा। बसै अवध में जे बसु जामा॥
ते न तु र्नजिर्फिरि जग नहिं आवें। अस प्रभाव निगमागम गावें
बन्दौं नृप दसरथ सब रानी॥ दुलराय जिन सारंग पानी॥॥
बन्दौं श्री मिथिलेश सुनयना। अवलोकि रघुपति निज अयना
बन्दौं भरथ लषन रिपु आरी। रामानुज सब विधि सुखकारी

छप्पै जयति व्रात संजात जय निरवि मंडल ग्रासक। जयतिसन्त सुरसुखद जयति निश्चर कुल नाशक॥ जयतिबिजय मद हरण जयति सिय शोच निवारण। जयतिज्ञान गुण उदधि जयति सब संकट टारण॥ जयति जासु उर बसत नित रघुकुल मणि सर चापधर। सोइ प्रभु सेवक जानिके करौ कृपा रघुनाथ पर॥

दो॰ बन्दौं श्री जानुकी पद पदुम जोरि युग पानि॥
विधि हरि हर चिंतत जिन्हें शक्ति सहित सुखखानि

छप्पै सारंग से दृग लाल माल सारंग की सोहत। सारंग ज्यों तन श्याम बदन लखि सारंग मोहत॥ सारंग सम कटि हाथ माथ बिच सारंग राजत। सारंग लाये अंग देखि छबि सारंग लाजत॥ सारंग भूपण पीत पट सारंग पद सारंग धर रघुनाथ दास बन्दन करत सीतापति रघुबंश बर॥

दो॰ गुणागार गुण रहित हरि गुण निधान गुण खानि॥

गुण नायक गुणनिधन कर गुण दायक गुण जाल
मातृ पितृ गो मित्र द्विज गुरु हा दुर्वृत्त कोउ ॥
जासु नाम कीर्तन किये शुद्ध होत जग सोउ ॥
अंध बिलोचन पंगु पग लहैं मूक बच तासु ॥
जासु कृपा ते तिमि मह कहिहौं गुण गण तासु ।

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत बन्दना बरणनो नाम प्रथमो ऽध्यायः ॥ १

दो॰ बन्दौं बेद पुराण जे करहिं राम गुण गान ॥
जो सुनि प्राणी पावहीं भोग भक्ति निर्बान ॥

चौ॰ बन्दौं राम नाम अघ नाशी ॥ अचल अखंड चराचर बासी ॥
सब सुख करण हरण दुख भारी ॥ जपैं जाहि शिव शैल कुमारी ॥
भव निधान कलिमल मथ नारी ॥ पावन हू को पावनकारी ॥
मुक्ति पंथ बिश्राम स्थाना ॥ कबि सुसंत के जीवन प्राना ॥
धर्म बिटप बर बीज प्रकाशक ॥ मंगल करण शोक सब नाशक ॥
मानस रोग अनेक प्रकारा ॥ भेषज नाम बिना गन हारा ॥
बिपति गहन घन बाण कुठारा ॥ करि अज्ञान मृगेश निहारा ॥
मंत्रराज षट बरण समेता ॥ कहत सकल निगमागम बेता ॥
परम सरल सुमिरत सुख दाई ॥ लोकानंद परलोक भलाई ॥
जन मन सारंग सारंग हरिसे ॥ जगदीध कूल कलप दल सरिसे
मुक्ति बाम श्रुति सुमन बिहंगा ॥ मुनि मन पक्ष उड़न जिन संगा ॥
कलिमल तम बिधु बल्लभ गंजन ॥ अज्ञ नयन भ्रम धूम प्रभंजन
करम कोट करि दशन कराला ॥ दु बीसना उड़प कर ताला ॥
अनेम मरण बिलि क्षुधा पिपासा ॥ नाम पियूष प्रसन बर बास
ज्ञान बिराग अंबर जल जाना ॥ कहै रघुनाथ मोर पितु माता ॥

दो० राम नाम बसै जासु उर। अरि बल मंत्र कोबीजं।
प्रलय अनल विष मृत्यु ते सो न रहोइ उ तीजं।
सो: छं० सोइ नाम सुमिरि सुभाय कहौं ग्रंथ एक बनाय॥
विश्राम सागर नाम सुनि लहैं नर आराम॥
दो० संव्वत मुनि वसु निगम शत रुद्र अधिक मधुमास।
शुक्ल पक्ष कवि नौमि दिन कीन्ही कथा प्रकास।
अवध पुरी परसिद्ध जग स कलपुरि नसि रनाम।
रामघाट के बाट मे राम निवास सुधाम॥
तहां कीन आरम्भ मैं रघुपति आयसु पाय॥
श्री गुरु देवा दास के पद निज हृदय बसाय।
सत गुण रज गुण तमो गुण तैं विधि के सुनि वार।
मोक्षद स्वर्ग द तम दहैं धरिहौं सुखप्रद सांच।
उभा शम्भु सीता रमण जो मो पर अनकूल।
तौ बरणों मो होइ फुर अन्त मध्य अरु मूल।
चौ० पर उपदेश न लेश बड़ाई। कहौं कथा निज मति हितगाई।
जग बन मन करि दुख दव दहई। हरि गुण सरि परि तब सुख लहई।
श्रुति पुराण बहु विधि सुखदानी। लघु मति मोरि परत नहिं जानी।
भाषा बन्ध करब मैं ताते॥ समुभि परै अरुथा कस जाते॥
बचन बिभेद अरथ नहिं दूजा॥ यथा मिंदु शशि अर्चन पूजा
पुनि बहु मत बहु ग्रंथन माहीं॥ सब संग्रह बिन जानि न जाहीं
तेहि ते मैं एक ग्रंथ मझारा॥ धरब बरण कम अर्थ अपारा।
तात पर बर कृति हासा॥ भक्ति बिवेक सहित नहिं हासा।
सुनि सन्देह करै जनि कोई॥ देखे बेद पुराण बिलोई॥
सब का सार ग्रंथ मत लीन्हा॥ मै विश्राम सुसागर कीन्हा।
आदि अन्त दोउ जानि किनारा॥ राम सुयश पय पावन भारा

दो० अद्भुत हास सिंगार भव वीर विभत्स विषाद।
रुद्र सुरुचि सम शान्त ये यामें नवरस स्वाद।
चौ० संशै भंवर कुतर्क सत संगा॥ ग्रन्थ गहिर ऽअघ आवर्त्त अंगा।
कमल कवित्त सोरठा दोहा॥ भक्ति सुबास संत ऽअलि सोहा।
छन्दै विविधि भाँति की मीना॥ सीप सकल चौपाई लीना
रामनाम मुक्ता हल भाई। जासु ऽआब ऽत्रिभुवन महँ छाई॥
सुजन मराल चुगन हर्षाहीं॥ दुष्ट काग बग की गति नाहीं
नाना विधि इतिहास पुरानी॥ सोइ यहि थल रतनन की खानी
मन गिरि वासुकि सुरति लगावै॥ यहि विधि मथै सोइ जन पावै
क्षमा शील संतोष विचारा॥ मोह सयन भक्षक धरि ऽआरा॥
दो० उक्ति युक्ति ऽअरु ध्वनि ऽअर्थ भावना केर।
योग भास ऽअन्वै जमक जलचर ऽअपर घनेर।
चौ० बसत तहाँ श्री युत भगवाना॥ यामें राम सिया कर थाना॥
जो चाहै प्रभु दरशन भाई॥ तासु युक्ति इमि ऽआगम गाई॥
प्रथमें श्रद्धा सम्बल बाँधै॥ दूसर साधु संग शुभ साधै॥
तीसर भजन क्रिया सोइ चलई। तुर्य ऽअनर्थ विरति धन लहई
पंचम निष्ठा रुचि उपजावै॥ षष्ठ सुज्ञान ध्यान चित लावै॥
सप्तम नामाशिक ह्वै जावै॥ जपत जीव त्रैताप नशावै॥
ऽअष्टम भाव हरै दुख नाना॥ नवम प्रेम पै करि ऽअस्नाना॥
दशम दरस रघुपति के पावै॥ जीव व्याधि सब तुरत नशावै
निज सरूप सुख लहै हजूरी॥ यहि उपाय बिन दरशन दूरी॥
राम कृपा बिन श्रम उपजाई॥ पावै जिमि द्विज सुत ससुराई
ग्रंथ ऽअनेक नदी नद नारा॥ यहि ऽआयं शुचि जासु मझारा॥
गी० छं० षट शास्त्र वेद पुराण मत विश्राम याहीमें लह्यो।
यहि ऽअर्थते विश्राम सागर नाम मैं याको कह्यो॥ जे मुन-

हिं समुझहिं प्रीति करि हरि चरणमें चित लाइ हैं। रघुनाथ ते गो-
पद सरिस संसार यह तरि जाइ हैं॥

दो॰ कलपद्रुम सम ग्रंथ यह सर्ब सुफल दातार॥
धर्म मोक्ष काम अर्थ हरिभक्ति विराग विचार।
बुद्धि न ज्ञान विवेक कछु बदौं न हरिपद प्रीति।
तिन्हें न प्रीति लम लाग यह विश्रामोदधि रीति।
विबिधि ग्रंथ देखे सुने जिन के कपट न शोक
ते प्रमुदित ह्वै बरणिहैं पद प्रति प्रश्लोक।

चौ॰ येहैं सुख संपति यश पावन॥ ह्वै हैं हरि जन मन भावन।
कलपित ग्रंथ कहै जो कोऊ॥ याचौं ताहि जोरि कर दोऊ॥
यह मम कृत तुम बारकबारा॥ देखि जाउ सुचि सहित बिचारा
जो मम मति कलपित कछु होई॥ तौ मिलि दोष देहु सब कोई।
आगे मुनिन कथन जो कीन्हा॥ सोई मैं भाषा करि दीन्हा॥
बहु ग्रंथन मांहै जो बाता॥ सो एकै माधुरी सोहाता॥॥
तहं कोइ कहै कहां है भाखा। तेहि ते मैं बुधि बिन माखा।
सुरनर पशु पक्षी जो होई॥ निज बानी समुझत सब कोई।
रहैं बिबिहु कोविद गिरि राया॥ गरुड़ै बायस पास पठाया॥
आयु धरयो पुनि हंस शरीरा॥ जब गुरु सुने सुभुशुण्डी तीरा।
अजहं जे सुर बानी कहईं॥ प्राकृत करि समुभावत अहईं
तब सब हरषै प्रीति बढ़ावैं। ना हित कोइ निकट नहिं आवैं
तेहि ते जो नित जहां की बानी॥ सोई ताहि तहां सुखदानी॥
लेन देन बिधि जो कछु करई॥ देश वाक्य ते कारज सरई॥

दो॰ जेहि ते निज कारज सरै ताको नीदै नीच॥
यथा कोल पय पान करि धुनि करि डारत कीच।
जो भाषा मानत नहीं तो भाषामति गाय॥

जो बोलै तो स्वान सम उगिलि असन फिरि खाय॥
अब गुरु पद रज अंजि दृग राम चरण सिर नाय॥
चली कथा जेहि भाँति जहं सो सब कहौं बुझाय॥

चौ॰ षट ऋतु माहिं सिसिर ऋतु जानो। फाल्गुन शुक्ल पक्ष पहिचानो॥
नैमिष क्षेत्र अटन तब होई॥ पक्ष एक निवसै सब कोई॥
प्रथम चक्र तीरथ जल पावै॥ पुनि सब पंच श्राग चलि जावै॥
यहि विधि ब्रह्म सरा दिन होई॥ धेनुमतिहि आवै ऋषि सोई॥
तेहि तट व्यास देव कर थाना॥ ऋषि सौनक तहं रहैं सुजाना॥
बहुरि सूत आये तेहि ठामा॥ लखि सौनक कियो दण्ड प्रणामा॥
चरण धोइ आसन बैठारी॥ धूप दीप आरती उतारी॥
बोले बचन सुचित करि गाढ़े॥ हाथ जोरि सनमुख भे ठाढ़े॥
नाथ बात कछु पूंछा चहऊं॥ आयसु होय बचन तब कहऊं॥

दो॰ अतिशै प्रीति बिलोकि तब कहा सूत हरषाय॥
मुनि मन जनि शंका करो पूछो जो जिय आय॥

चौ॰ बोले रिषि सुनिये महि देवा॥ तुम जानत तिहुं काल क भेवा॥
वेद रु शास्त्र सकल तव देखा॥ नित्यानित्य क कीन्हों लेखा॥
तुम दयाल दीनन सुखदाई॥ तुम तजि कहां पूंछिये जाई॥
प्रथम कहो गुरु महिमा गाई॥ नाम महातम बहुरि सुनाई॥
कर्म्म अकर्म्म धर्म्म अधर्म्मा॥ ज्ञान विराग भक्ति को मर्म्मा॥
दुख सुख स्वर्ग नर्क सब भांती॥ कौन कर्म करि केहि मा जाती॥
माया ब्रह्म जीव जग जाना॥ हरि हरिजन गुन करो बखाना॥
ब्रह्म अनादि धर्यो बपु आई॥ कीन्ह चरित कस कहो बुझाई॥
चारि खानि जग जीव अपारा॥ उतपति पालन अरु संहारा॥

दो॰ योग यज्ञ व्रत दान तप बरणाश्रम कर भेउ॥
भिन्न भिन्न भाखो सकल रहि न जाय तेउ॥

शास्त्र बिना नहिं ज्ञान भव ज्ञान बिना नहिं भक्ति
भक्ति बिना नहिं सत्य सुख तातें सुनिय सुशक्ति

कुं० शीश भार श्रुति सर्प बिल ग्रह मल मग सम लयन। कर सन कर पग अफल तरु मेरि यक्ष शशि नयन॥ मोर पक्ष शशि नयन ध्यान बिन बिग्रह अहई। नवें न गुरु जन चरण राम गुन सुनै न कहई॥ करैं न जो हरि कर्म हित अटैं न तीर्थ मुनीश॥ दारु जो बिबता सरिस सो धावत नावत शीश॥

दो० हरि विषयक जो होइ जन ताहि उचित है देह
महा मनोहर हरि चरित सुनै सदा करि नेह॥

चौ० सुनि मुनि बचन सूत सुख पावा॥ बेद ब्यास पद शीश नवावा॥
छिन एक हरि कर ध्यान लगाई॥ पुनि मृदु बचन कहे हरषाई॥
भेद तुम्हार हमें सब जाना॥ पूंछेउ जिमि मूरख अज्ञाना॥
सो मैं अब तुम्हार मत जाना॥ कीन्ह चहत सब कर कल्याना॥
धन्य धन्य तुम मुनि बड़भागी॥ पूंछेउ राम कथा अनुरागी॥
राम कथा शुभ चिंता मणि सी॥ दायक सकल पदारथ जन सी॥
मोह महा तम बसि कर रानी सी॥ अहंकार करि हरि घरणी सी॥
अभिमत फल प्रद देव धेनु सी॥ स्वच्छ करण गुरु चरण रेणु सी॥
कलि मल भेक बिपुल सर्पी सी॥ क्रोध महिष दुर्गा दर्पी सी॥
सुजन समाज उडुप रजनी सी॥ साधु पोत पालन जननी सी॥
ब्रह्म लषन हित दृग धुतरी सी॥ मन मृग बन्धन हित सुनरी सी॥
लालच लोभ लवा बहरी सी॥ सदगुण सकल बनक डहरी सी॥
दुर्बासना ससूह सलभ सी॥ दीप सिखा सम दहन कलभ सी॥
हरि में हरिता विभाव सुता सी॥ दुखद अविद्या तूल हुतासी॥
धर्म कर्म वर बीज रसा सी॥ सुमति बढ़ावन सुख सुद मासी॥
ज्ञान भान भव सुरा वती सी॥ कवि कोविद हित अज युवती सी॥

कामभुअंगबिछेलहरीसी॥ मनिमयूरपाटनगहरीसी॥ ॥
भर्मबलाहकजगतप्रानसी॥ ज्ञानखड्ग खरधरनसानसी
भवसरस्वानकमलबहनीसी॥ बिरतिबिचारकहनिरदनीसी
दारिद दुख मूषकमिनकीसी॥ रघुपतिध्यानकरनयिनकीसी
सर्वभूतपादपमधुरलुसी॥ कलिमलभञ्जनहेतमिरलुसी
बिरति निवेकनृपतिमोहनीसी॥ सदसंतोषक्षीरदोहनीसी।
शोकशुक्रभवभीमयुसासी॥ पितरतरणा हरिभक्तिसुपासी।
प्रभुपद प्रीतिवढ़ा वनिसेसी॥ अनुदिनलाभलोभकहं जैसी।
रामहिंप्रिय जिमिकाककजासी॥ भक्तिमुक्तिप्रदमंगलरासी

दो० मङ्गलबक्ताकेभवनमङ्गलश्रोताधाम॥
मङ्गललेखकके करनि मंगलहोतेहिंठाम॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदा-
सरामसनेहीकृतवन्दनावर्णनोनामद्वितीयोऽध्याय २

दो० भगवतचरितपिऊषवनितसेवै जो कोइ॥
अन्तकालकेसमैमें तेहि उदवेगन होइ॥

चौ० असिहरिकथाकहौंसुखदाता॥ सुनोप्रथमगुरुमहिमाताता॥
गुरुब्रह्मागुरुबिष्णुपुरारी॥ गुरुपरब्रह्मदीनदुखहारी॥ ॥
गुरुशरणागतजोकोइआवै॥ बहुरिनसोचौरासीजावै॥
गुरुकृपालअगनितगतदाता॥ गुरुकृपाछूटे यमनाता॥
महाअधमपापीनरहोई॥ गुरुशरणागतआवैसोई॥
फिरितेनर्कपैरनहिंआनी॥ जोगुरुबचनलेइ फुरमानी।
कहौंएकइतिहासपुरानी॥ मनुलगायसुनुमुनिवरज्ञानी

सो० रहाबधिकएकनीचकरैठगाहीबनविषै॥
नामतासुमारीचअतिनिर्दैकपटीकुटिल॥

चौ० तेहिंएकदिनमनकीन्हविचारा॥ सोसमयतितनकोइसंसार

जबते धरयो देह जग आई। पाप करत सब उमिरि बिताई।
इन अपराध कौनि गति होई। यहि विधि विपिनि शोच करसोई
तेहि अवसर गौतम ऋषि आये। जात रहैं कछु सहज सुभाये।
मुनिहिं बिलोकि तुरत उठि धावा। चरण नाय सिर वचन सुनावा
मैं पापी ठग कुटिल चवाई। तुम दयालु पतितन गति दाई।
तेहि ते प्रभु कृपा अब कीजे। मोहिं आपनो शिष्य करि लीजे
कह मुनि तोहि शिष्य जो करहूं। अर्द्ध पाप अपने सिर धरहूं॥

दो॰ सुनु ठग पद्म पुराण में देखौ सब निरताय॥
पाप पुण्य जेहि विधि बँटै सो तोहि कहौं बुझाय॥

चौ॰ एक तपसी विषयी एक होऊ। भोजन करैं एक महं दोऊ॥
भली बुरी सङ्गति होइ जाई। पाप पुण्य आधा बटि जाई॥
कुवै सराँह जो बनवावै। दशवां अंश तहां बटि जावै॥
दरशन ध्यान वचन सुनु जाका। सतवां अंश पाप पुनि ताका
जप तप दान धर्म एक करई। एक सेवा ताकी अनुसरई॥
दशों अंश फल सोऊ पावै। पाप पुण्य जोई होइ आवै॥
करज काढ़ि पुनि पाप जो करई। तीन भाग फल धन दहि परई
चोरी करि धर्म करै जो कोई। पाप पुण्य तेहि कछु न होई॥
जो कोउ काहू पर करावै। पुण्य पाप षट अंश सो पावै॥
प्रजा जो धर्मी धर्म कमाई। षटा अंश राजा ढिग जाई॥
होम पाठ सन्ध्या अस्नाना। जाप करत वा पूजा ठाना॥
दान करै अथवा कुछु लेई। षटा अंश निज पुण्यहि देई॥
आन के कर निज धर्म करावै। षटा अंश फल सोऊ पावै।

दो॰ पिता पुत्र नारि पुरुष गुरु शिष्य यहि भाय॥
पाप पुण्य जो कछु करै अर्द्ध अर्द्ध बटि जाय॥

चौ॰ अस बिचारि शिष्य करौं न तोहीं। बाटन तेहुकु जानँद मोहीं।

बोला बधिक जान नहिं देहौं॥ जबलगि गुरु न तुम्हैं करि लेहौं
सुनि मुनि हृदय बिचारहि आना॥ यह है खल नहिं देहै जाना॥
सह सनेह कह निज भल भाई। धरी पर पंथ देहु बनाई॥ ॥
कह ऋषि गुरुदक्षिणा दे मोहीं॥ तब तो शिष्य करौं मैं तोहीं॥
बोला का दीजै सो कहहू॥ समरथ होइ लेब जो चहहू॥
अब जनि पाप करिहु कछु भाई॥ रामनाम सो सुमिरहु जाई
परम जाप तारक ब्रह्म सही॥ ब्रह्महत्यादि पाप हरै जही॥
अस कहि ऋषि चलि भे जिउ पाई॥ बधिक नाम में प्रीति लगाई
यहि भांतिन कछु काल बितावा॥ मरण काल का दिन जब आवा
ताहि लेन यमदूत सिधाये॥ पाछे ते हरिगण चलि आये॥
शीश मुकुट मणि कुण्डल काना॥ पीत बसन तन भूषण नाना॥
भुज बिशाल अनुपम कर लाजै॥ हरि दर चक्र कौमुदी राजै।
गणन देखि यमदूत डराने॥ बोले बचन कपट छल साने॥
बड़ी भाग्य हम दरशन पाये॥ आजु कहां यहि ठौर सिधाये
दो० कहा गणन दूतौ सुनौ बधिक भक्त यहि ग्राम।
तेहि आने आयन इहां लै जैबे हरि धाम॥
चौ० सुनत बचन किंकर यम केरे॥ बोले निज नैन तरेरे॥ ॥
बधिक नीच पापी अन्याई॥ जीव हतेसि नहिं जाय गनाई॥
बनके बन यहि कीन्हेसि नासा॥ तेहि तुम कहत राम कर दासा
कह गण जबते गुरु यहि कीन्हा॥ रामनाम में मन चित दीन्हा
किहिसि न तब ते कछु अपराधू॥ यहि सम और कौन है साधू
अस कहि लीन विमान चढ़ाई॥ हरिपुर का चलि भे हरषाई॥
गी० छं० चलि भे बिमान चढ़ाइ हरिपुर ताहि गण्यो जायकै।
अति देखि गुरु परताप यम के दूत गय खिसियायकै॥ अस
समुझि नर गुरु शरण है हरिभजन जिन नाहीं कियो॥ तिन

भाय नरतन आइ जग करि हानि नर्कहि चलि दियो ॥
दो॰ गुरु शरणागत न आइ के जो सुमिरै सिय राम ॥
इहां रहै आनन्द में अन्त बसै हरि धाम ॥ ॥
ब्रह्मा बिष्णु महेश ते जो अघ की ह्वै जाय ॥
गुरु बिन भव निधि नाँ तरै कहत निगम समुझाय ॥
चौ॰ यामें कछु सन्देह न पेली ॥ आदिहि ते सब गुरु करि खेली ॥
ब्रह्म के शिष्य प्रकृति ही जानो ॥ प्रकृति शिष्य महतत्व पिछानो ॥
महातत्व शिष्य अरौ जो कहिये ॥ ॐकार ते बिष्णुहि लहिये ॥
बिष्णु के शिष्य लक्ष्मी भयऊ ॥ तिन के बिधि बिधि के शिव कहेऊ ॥
राम चन्द्र अवतार जो लीन्हा ॥ बिश्वामित्र गुरु तिन कीन्हा ॥
ब्यास पुत्र शुक देव सुभाये ॥ जन्म लेत ही बिपिनि सिधाये ॥
तिन्ह गुरु कीन्हें जनकै जाई ॥ तब हिरदे महं निष्ठा आई ॥
ब्रह्म पुत्र नारद मुनि जेऊ ॥ मनु भगवान केर मुनि लेऊ ॥
दिक्षा हीन जाइं हरि तीरा ॥ दरशन हेत सदा मुनि धीरा ॥
कछुक काल रहि जब फिरि आवैं ॥ जब बैठें सो ठांउ धो आवैं ॥
एक बार नारद लखि लयऊ ॥ रमा नाथ ते पूछत भयऊ ॥ ॥
दो॰ बोले हरि नारद सुनौ तुम गुरु अबै न कीन ॥
सो बिचार सती जगह नित्त पाक करि लीन ॥
चौ॰ दिक्षा हीन जहां चलि जावै ॥ सो जागा अशुद्ध ह्वै जावै ॥ ॥
गुरु मुख चरण पैर जब आई ॥ तब सोइ धरा शुद्ध ह्वै जाई ॥
कह नारद मुनि ये सुरराया ॥ प्रथमें तुम मोहि कस न बताया ॥
कह प्रभु तुम अति शै प्रिय मोरे ॥ कह्यों न मुनि होई दुख तोरे ॥
तहि ते अब गुरु कीजे जाई ॥ काहि करौं प्रभु देहु बताई ॥
जो प्रथमैं मिलि जाय सकारे ॥ ताहि गुरु तुम कीन्हेओ प्यारे ॥
भोर भये निकसे मुनि जबहीं ॥ धीमर देह धरी हरि तबहीं ॥

मुनि आगे होइ निकसे आई। नारद देखि परे पग धाई॥ ॥
तेहि गुरु करि हरि के ढिग आये। देखत प्रभु निज हृदय लगाये

दो॰ कह गुरु कीन्हों कौन पै सुनि बोले हरिराउ॥
गुरु में पै जो तुम कही चौरासी कहं जाउ॥

चौ॰ सुनि नारद निज गुरु पहं आये। समाचार सब कहि समुझाये
गुरु दयाल बोले तुम जाओ। हरि लिखि चौरासी लिख लाओ॥
लिखि जब होहिं लौटि तब जायौ। हाथ जोरि युग बचन सुनायौ
सुनि नारद आये प्रभु पाहीं। चौरासी जानत मैं नाहीं॥ ॥
सो लिखि मोहिं देहु समुझाई। ताहि देखि भुग तो मैं जाई॥
कह हरि नौ लख जलचर जाती। सब योनिन भर मैं बहु भांती।
दस लख पक्षी को बिस्तारा। उड़त रहैं भय को उर धारा॥
ग्यारह लाख जाति कृमि कीटा। बीस लाख थन बिटप जो दीटा
तीस लाख पशु यो निहि जानो। चारि लाख मानुष्य पिछानो।
यह चौरासी योनि कहावै। सब भुगते बिन अंत न पावै॥

ह छं॰ सुनि गये नारद लौटि तामें देखि प्रभु बोलत भये॥
केहि दीन मत यह तुम्हें कह ऋषि आजु गुरु मो को दये।
तेहि कहत पै जिन एक छिन में मेटि चौरासी दई। अस औ-
र नाहिं कृपाल दीनदयाल गुरु सम जग हुई॥ ।

दो॰ गुरु गोविन्द ते अधिक हैं यह प्रतीत मन लाइ।
गोविन्द डारें नर्क जो तो गुरु लेइ बचाइ॥ ।
तम गु कार रू तासु हर गुरु सोइ करै प्रकाश।
बरणौ धर्म अरु शास्त्र कीय हमे बर इति हास।

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ
दासराम सनेही कृत मारीच नारद कथा बरणनो नाम
॥ तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

दो॰ बन्दि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखखानि।
बरणौ धर्म अरु शास्त्र को पुनि इतिहास बखानि।

चौ॰ कही सत्त गुरु महिमा गाई। सुनि सौनक बोले हरषाई॥
नाथ मोहि निज किंकर जानौ॥ गुरु प्रभाव कछु और बखानौ॥
कहा सत गुरु बिन कछु करई। ताको काज एक नहिं सरई॥
गुरु बिनु मुक्ति पंथ नहि पावै॥ गुरु बिन नर चौरासी आवै॥
गुरु बिनु ज्ञान भक्ति नहिं जानै॥ गुरु बिन आतम नहिं पहिचानै

दो॰ बिन गुरु दिक्षा अफल सब जप तप होम क्रियादि
ज्यों पाहन में बीज वय उपजै ना फल आदि॥

चौ॰ तेहि पर एक इतिहास बखानो॥ सुन्दर ताहि पुरातन जानो॥
अवध उत्तरे योजन चारी॥ रहे नगर एक अति सुखकारी
तामें कृष्णदत्त द्विज रहई॥ सुंदरि नाम तासु तिय अहई॥
करै दान नित अति अधिकाई॥ द्वार अतिथ बिमुख नहिं जाई
हीरा हेम पदारथ नाना॥ देहिं विप्र कहं वेद बिधाना॥ ॥
असन बसन गजि बाजि मिठाई॥ शय्या दान करै मन लाई॥

दो॰ एक दिवस द्विज वर सोइ गयौ रहे कहुं ग्राम।
नाम सुन्दरी तासु प्रिया रहे आपने धाम॥ ॥

चौ॰ तेहि दिन तेहि पुर नारद आये॥ कर बीना सिर तिलक लगाये
राम चरित गावन हरषाई॥ तेहि द्वारे है निकसे जाई॥ ॥
ऋषि हि देखि सुन्दरी उठि धाई॥ करि बहु बिनय भवन ले आई
उच्चासन ता पर बैठारे॥ प्रेम धार लै चरण पखारे॥ ॥
कछु चरणोदक कीन्हो पाना॥ कछु छिरक्यो सगरे अस्थाना
धूप दीप आरती उतारी॥ बड़ी भाग्य भै आजु हमारी॥
सुनि अस कै पाक बनाई॥ कह्यो स्वामि सों भोग लगाई
तब नारद उठि भोजन कीन्हा॥ पुनि बहुरि आसन का दीन्हा

सुन्दरि बात करन तब लागी ॥ लखि नारद बोले अनुरागी ॥
धन्य तुम्हार मात पितु चीन्हा ॥ जिनकी कोख जन्म तुम लीन्हा ॥
नरतन पाय सफल तब भयऊ ॥ जो मन जन सेवा महँ दयऊ ॥
धन्य तुम्हार गुरु सुखदाई ॥ साधु सेव जिन तुम्हैं दिढाई ॥

सो० मुनि बोली द्विज नारि मेरे तौ गुरु हैं नहीं ॥
अपने हृदय बिचारि देहु असन लखि छुधित कहँ ॥

चौ० सुनि अस बचन देव ऋषि तासू । डारे असन बान्त करि आसू ॥
लखि सुन्दरि डरि बोलि लीन्हा ॥ केहि अपराध बमन प्रभु कीन्हा ॥
कह मुनि होइ बैशाव जो जन ॥ करै अबैशव के गृह भोजन ॥
भावै तहाँ जलहु बिन जानै ॥ ताको यह प्रायश्चित बखानै ॥
चंद्रायन ब्रत ठानै सोई ॥ तेहि अघ ते तब पावन होई ॥
इष्टापूर्त पुराय सब वाके ॥ किये अमिथ्या निष्फल ताके ॥
तेहि ते अधिक पाप तेहि परई ॥ निगुरा छुधा जो भोजन करई ॥
यहि ते नष्ट कर्म नहिं आना ॥ भ्रष्ट बुद्धि करि देत अयाना ॥

दो० ताते सुन्दरि तव छुधा भोजन कीन अजान ॥
कियो बान्त या कारणे नष्ट भयो मम ज्ञान ॥

चौ० सुनि सुन्दरि मन कीन बिचारा ॥ कत मैं कीन्ह धर्म अधिकारा ॥
कत मैं बिबिध दान ब्रत किहऊँ ॥ कत मैं तीर्थाटन मन देहऊँ ॥
कत मैं सुबरण सींग मढ़ाई ॥ दई गऊ बिप्रन समुदाई ॥
गुरु बिन धर्म करै जो कोई ॥ मैं नहिं जान्यो निष्फल होई ॥
तेहि ते मुनि अब दाया कीजै ॥ राम मंत्र मोको प्रभु दीजै ॥
अब जनि देर लगावहु स्वामी ॥ देखि प्रीति बोले ऋषि नामी ॥
प्रथम जाइ कीजै अस्नाना ॥ सुन्दरि कहा बचन परमाना ॥
जब हरि शरण जीव यह जाई ॥ यम भय त्रासै कुटुम्बि आई ॥
सुत पितु मातु कहैं अस बैना ॥ भक्ति न कीजै हमरे ऐना ॥ ॥

कोऊ कहै ऐसे उजागत सुख कीजै। यहु संयम हरि भजि लीजै
सुनि मति भ्रम जे रहे सुपाई। लीन्हेसि काल अचानक खाई
मृतक जानि सुत पुत्री नारी। रोवहिं स्वारथ हेतु पुकारी॥
तासु सोच कोउ नेक न करई। हरिहि बिमुख धों कस दुख परई
तेहि ते मैं नहिं जाव नहाई। सुनि नर नारि रहैं सरमाई॥
राम चरण पंकज चित दीन्हा। जेहि ते होत पाप सब छीन्हा
सुनत बचन मुनि अति सुख पावा। तुलसी माल कंठ पहिरावा

दो० बिप्र बयस नृप सुन्दरी होइ अधीन पति बाम।
हरि बिमल धारै उचित तेहि है तुलसी को दाम।
बिधि हरि हर कहं साखि करि राम मंत्र तब दीन्ह
बैस्नव धर्म सिखाय कै पावन पिता गुरु कीन्ह

चौ० तेहि छिन ता निलै तासु पति आवा। लखि बस क्रोध अस बचन सुनावा।
केहि के कहे लीन्हें तैं माला॥ जानि परा पहुंचा तव काला॥
अब ते तोकु बहसि जो आना॥ नाहित कटिहौं शीश कृपाना।
सुनि सुन्दरि बोली कर जोरी॥ सुनहु प्रान पति टेक जो मोरी।
चहुं तन टूक टूक करि डारो॥ भावै अनल माहिं धरि जारो॥
धरी खोरि तो पिय कर देहू॥ तजौं न रामहिं धरा सम येहू॥
जिन अधमैं करि पाके छाड़ा॥ तिन्है जानि स स्वांगी भाड़।

दो० अस अबला के बचन सुनि गुरि गाढ़ि जरह्यो सुपाय
काढ़ि देउं तौं जग हसै मारे हत्या न्याय॥

चौ० तेहि दिन ते अस नेम सो धरई॥ पति का छुधान भोजन करई
सहित प्रीति ते असन बनावै॥ परसि दूरि ते ताहि पवावै॥॥
यहि बिधि दिन प्रति पावै खाना॥ देखि बिप्र मन भई गिलाना
जो हम मारि जूठनि नित खाई॥ सो अब दूरि ते देत बहाई॥॥
अब की चटपि आवै मम धामा॥ तो हं गुरु करि सुमिरौं रामा

यहि बिधि द्विज मन करत बिचारा। कृपा कीन्ह नारद पगु धारा॥
गुरुहि हेरि सुंदरि हरषानी॥ शीस नाय बोली मृदु बानी॥
सुफल जन्म भा आजु हमारा॥ जो नित के नेरे पगु धारा॥
सुन्दर आसन पर बैठावा॥ चरण धोइ चरणोदक पावा॥
बहुरि पांच पैकरमा कीन्हा॥ दर्बि भेंट ले आगे दीन्हा॥
दो० गुरु बैद्य अरु ज्योतषी देव मित्र बड़ राज॥
इन्हें भेंट बिन जो मिलै होइ न पूरण काज॥
चौ० आज्ञा मांगि कीन्ह जिवनारा॥ षट रस ब्यंजन बिबिध प्रकारा॥
सुबरण थार परसि धरि दीन्हा॥ हरिहि अर्पि मुनि भोजन कीन्हा॥
अचमन करि आसन जब आये॥ द्विज सुन्दरि ने बचन सुनाये॥
गुरु दिक्षा मोहि देहु देवाई॥ जाते तब संगति होइ जाई॥
सुंदरि आइ कही गुरु पासा॥ इनहुन का कीजै हरि दासा॥
बिप्रहु तब बोला कर जोरी॥ पुरवो प्रभु अभिलाषा मोरी॥
दिक्षा लिहे सरी मम काजू॥ नाते बिनै कीन्ह मै आजू॥
कह नारद द्विज आउ नहाई॥ तब तुम का हरि नाम सुनाई॥
सुनि मुनि बचन बिप्र हरषाना॥ पुरन्द सरितहँ चल्यो नहाना॥
मग एक पंडित तेहि भेंटा॥ बाद कीन्ह तेहि गहि कर फेंटा॥
एको कृष्ण दत्त तुम आजू॥ हरबर चलत कौन यह काजू॥
कृष्णदत्त पंडित ते भाषा॥ गुरु दिक्षा कीन्हि अभिलाषा॥
दो० तब पंडित बोले बचन कृष्ण दत्त सुनि लेहु।
यह मरत्यु पख कुँवार है गुरु दिक्षा जनि लेहु।
चौ० यामें पिण्ड दान भल कीन्हा॥ दिक्षा मंत्र न चाहिय लीन्हा॥
कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ मासा॥ तब तुम होय कृष्ण हरि के दासा॥
सुनत बचन द्विज अस भ्रम छावा॥ तुरत पलटि नारद पहँ आवा॥
कह प्रभु कार ज्ञान अब दीजै॥ कार्तिक शुक्ल पक्ष यह कीजै॥

यह सुनि नारद गे बिधि पासा ॥ बिप्र रहे कातिक की आसा ॥
ताकी अवधि न पहुंचन पाई ॥ बीचहि दुहुन काल लिये खाई ॥

दो० पल पहार को खबरि नहिं घोघासे का होय ॥
आगे की आसा करत काल हंसै मुख गोय ॥
अस बिचारि जे चतुर नर करत न लावें बार ॥
नहिं जानों केहि घरी में काल करै संहार ॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मल आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ-
दास रामसनेही कृत कथा दत्त कथा बर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ४

चौ० कह सौनक मुनि कहौ बखानी ॥ तनु तजि कहां गये दोउ प्रानी ॥
कहा सूत सुन्दरि द्विज नारी ॥ चढ़ि बिमान हरिलोक पधारी ॥
बिप्र गयो यम के दरबारा ॥ याके पुराय का भयो बिचारा ॥
यम ते चित्र गोपित्र बखाना ॥ इन बहु कीन्ह पुराय अरु दाना ॥
जबते जाय देह इन धारी ॥ उभै पाप कीन्हे अति भारी ॥
कह यम कौन पाप सो कहिये ॥ तेहि अनुसार दण्ड यहि चहिये ॥
एक बार इन यज्ञ जो कीन्हा ॥ सब बिप्रन कहं न्योता दीन्हा ॥
तहां एक हरिजन चलि आवा ॥ क्षुधावन्त ते बचन सुनावा ॥
हम हैं क्षुधावन्त द्विज राई ॥ कछु भोजन मोहिं देहु मंगाई ॥
अस सुनि बिप्र क्रोध कियो भारी ॥ अनुचित बचन कहे दुइ चारी ॥
सुनि कटु बचन गयो उठि साधू ॥ तेहि ते यहि पर भा अपराधू ॥
हरिजन जासु यज्ञ महं आवें ॥ मिलै न असन क्षुधित फिरि जावें ॥
ताको पुराय सकल घटि जाई ॥ बहुरि पाप होवै अधिकाई ॥
दूसर जब सुन्दरि गुरु कीन्हा ॥ तेहि लखि इन प्रतिज्ञा दीन्हा ॥
तातें पुराय छिन्न भे याकी ॥ थोरी एक रही है बाकी ॥ ॥

सो० मुनि बोले यमराय याहि देहु गज देह अब ॥
निज फल भोगी जाय आप कहूं नृप के भवन

चौ॰ अस कहि धर्म बिपिन जनु भावा॥ कथा इन्द्र राज को अनुपावा॥
कछुक दिवस बन माहिं बितायो॥ पुनि नृप चन्द्रसेन गृह आयो॥
चन्द्रसेन कुरुक्षत्र के राजा॥ जिन के सदा धर्म कर साजा॥
यह सब चरित देखि द्विज नारी॥ मन आशोच करै अति भारी॥
मम पति सो वारण तनु पावा॥ मोहि बिषम मन खेद बढ़ावा॥
धरि ले पुनि मृत लोकहि ऐली॥ जहं आसा तहं बासा पैली॥
जाके घर गज ता नृप केरी॥ भई सुता अति रूप घनेरी॥ ॥

दो॰ दान दिहिसि अरु किहिसि गुरु भै कन्या नृप केरि
राजा को करि दिज भयो दूनो जाति सुमेरि॥

चौ॰ कन्या जब कछु भई सयानी॥ गई द्विरद पहं निज पति जानी॥
इन देखा यह है मम नारी॥ भई महीपति केरि कुमारी॥
अस बिचारि दोउ प्रीति बढ़ाई॥ दिन २ होत जात अधिकाई॥
एक दिवस नृप हृदय बिचारी॥ ब्याह योग्य भई सुता हमारी॥
विप्र बोलि शुभ घरी सोधाई॥ यत्न सोयम्बर केरि बनाई॥
सुनि से दूरि निरासन त्यागेया॥ करि बिचारि मन सोच न लाग्यो॥
लखि राजा बर वैद्य बोलावा॥ तब हु न कुम्भी दाना खावा॥
यहि बिधि बीत बार बहु गयऊ॥ तब तो नृप के अति दुख भयऊ॥
कह कन्या पितु ते अस जाई॥ गजहिं असन मैं देहुं कराई॥
बोले भूप जाहु किन अबहीं॥ मरि जाई तब जैहो कबहीं॥
पिता बचन सुनि गे पति पासा॥ बोली तुम कत रहत उदासा॥
बहु दिन से भोजन नहिं खायो॥ सो कारण मोहिं नाहिं बतायो॥

दो॰ कह गयन्द चाहत करन नृपति तुह्मार बिवाह॥
सो बिचारि अब होत है हृदय हमारे दाह॥

चौ॰ जब ते यहां जन्म तव भयऊ॥ कबहु न संग बिछुरि मम गयऊ॥
रूप सबिचारि दुख होत है मोहीं॥ ब्याही आन पुरुष अब तोहीं॥

तातें मैं नहिं दाना खाहूं ॥ बारहिं बार मनहिं पछिताहूं ॥
सुनि कन्या बोली मृदु बानी ॥ सोच कि है दुख होइक हानी
हम जो कहा नरतन के माहीं ॥ भजहु राम फिरि औसर नाहीं
तब कार्तिक की आस लगायो ॥ अब बारहा की देही पायो ॥

दो० तब कार्तिक की आस करि बिसर्यो सिरजनहार ।
अब चौरासी योनि में आय पर्यो भरतार ॥
तातें पुनि मैं कहत हौं दुख तजि भोजन खाहु
तुम्हें छाड़ि हौं ना करब आन पुरुष संग व्याहु ॥

सो० सुनि राज भोजन कीन लखि नृप बोल्यो कुवरि ते ।
कौन मंत्र तुम दीन जो सुनि खायो तुरत हीं ॥

ध० छं० कह कन्या वोहि जन्म केर राज अहे मोर पति । मैं हौं या-
की नारि विप्रघर जन्म रहै सति ॥ हौं गुरु करि हरि भज्यों भइ-
उं लेहि सुता आइ तव । दान दीन्हें बहु दान भक्ति बिन बारहा
बपु भव ॥ सज्यो स्वयम्बर साज सुनि करि भोजन तज दीन
लहि । वचन दीन मैं जाइ जब तब फिरि भोजन कीन्ह यहि ॥

चौ० सुनि अस वचन भूप हरखाना ॥ कन्या बचन सौं चरहिं माना
लागे करन स्वयम्बर साजा ॥ आये देश देश के राजा ॥
रानी तब कन्यें अन्हवावा ॥ कीन्ह्यों तन शृंगार सोहावा ॥
सहित सनेह गोद बैठाई ॥ बोली मधुर बचन सुखदाई ॥
रंगभूमि आये बहु भूपा ॥ देश देश के सुभग सरूपा ॥
जो नव मन भावै महिपाला ॥ मेल्यो तासु गरे जयमाला ॥
अस कहि हार दीन्ह तेहि हाथा ॥ पठई एक सहेली साथा ॥
भूपन दिसि नहिं दृष्टि उठाई ॥ चली कुवरि कुंजर पहं आई ॥
पट्ठी उर मेल्यो जै माला ॥ चकृत भये सब देखि भुवाला ॥
सबहिन कही बयस लघु जानी ॥ बौधि गई कन्या फिरि ठानी

सखीसदन लाईं जहं रानी॥ मातु ताहि लखि बहु नरिसानी॥
दईसबै मतिहरी तुम्हारी॥ नृपतजि माल ब्याल उरडारी॥
दीन चहै बिधि दुख जब जेही॥ ताकी मति पहिले हरि लेही॥
अस कहि पुनि दीन्ह्यों कर मालहि॥ अबतेपहिराव हु नरपालहि॥
गई कुंवरि पुनि करि उरडारी॥ देखि भूप सब चले सिधारी॥
तब राजा अति शै दुख पावा॥ असि लै कन्यै मारन धावा॥
श्रुति धारी जे बिप्र प्रबीना॥ छोरि कृपान नृपनि ते लीन्हा॥
अल्प बयस यह अहै कुमारी॥ है अज्ञान न चाहिय मारी॥

सो० गोहर हंद द्विज चोर सुत नारि ब्यभिचारणी॥
पती भूप जन और तदपि न इनको मारिये॥

प० छं० दश गो मारे पाप सहश एक द्विज संहारे। दश द्विज बधे जो पाप एक स्त्री के मारे॥ दश स्त्री बध पाप एक कन्या बध होई। दस कन्या बध पाप पती एक मारे सोई॥ दश दंडी मारे से जो घातक सिर आय। नेहि सम एक हरिजन बधे कहत निगम अस गाय॥

दो० ताते हा जन लीजिये कीजे एक उपाय॥
बर खोजाय टीका करो बहुरि देहु भौंराय॥

चौ० सुनि नृप नाऊ बिप्र बोलावा॥ बर ढूंढन हित तुरत पठावा॥
पुर अरु ग्राम अनेकन देशा॥ देखे जहं तहं सकल नरेशा॥
गुङ्ग पंगु अन्धा धर काना॥ सिरी बरी कोढ़ी आना॥ ॥
अस बर मिले जहां चलि जाहीं॥ कन्या सरिस मिले कहु नाहीं॥
तब द्विज नाऊ दोउ फिरि आये॥ राजा ने सब खबरि सुनाये॥
सुनि नृप कर्म बिपाक मंगाई॥ बिप्रन ते ताको बचवाई॥
कह द्विज कन्या कहा जो रहई॥ महाराज सो दुसांची अहई
जहां तहां फैली यह बाता॥ हाथी राजा कर या माता॥

सुनि ऽअपकीरति नृप दुख पावा॥ ऽअग्नि कुण्ड गुरु लै खनवावा
दो॰ गोमल घृत भरि दारु नृप जरै लाग तेहि माह।
तेहि क्षण ऽआये देव ऋषि खैंचि लीन्ह गहि बाँहे॥
चौ॰ कह नारद केहि जरै भुआला॥ सो सब बरणो मोसे हाला।
बोल्यो नृप राज ऽप्रसन्न कीन्हा॥ कन्या ताहि खवावै लीन्हा
मैं पूछा कस दिहे खवाई॥ कन्या कहा मोर पति ऽआई॥
तासु गिरा हम सत्य न जानी॥ यत्न स्वयम्बर की सब ठानी॥
कन्या हारु राजहि पहिरावा॥ तेहि पाछे मैं बरु खोज धावा॥
जसि कन्या बरु मिला न तैसा॥ मिला सो ऽआंधर पंगु ऽऐसा
तब मैं कर्म विपाक बंचाई॥ कन्या कहा सो सांची पाई॥
ताहू परजे पुरुष ऽअनारी॥ घर घर निंदा करै हमारी॥
सो ऽअपकीरति सुनी न जाई॥ ताते जरि मरिहौं ऋषिराई॥
दो॰ कह नारद जनि जरहु ऽअबहिं कहुं एक उपाय।
राम नाम राज सुनै तो ऽअबहीं नर होइ जाय।
चौ॰ सुनि मुनि बचन भूप सुख पावा॥ बार ऽचरणन सिर नावा
महाराज ऽअब देर न कीजे॥ बेगि राज गुरु दिक्षा दीजे॥
जेहि ऽअपकीरति मिटै हमारी॥ बरी जाइ तेहि साथ कुमारी
मुनि नारद हरि मंत्र सुनावा॥ राज पातक सब दूरि बहावा॥
मुखते भा बालकु रूप ऽपाई॥ तेहि शोभा कछु बरणि न जाई
बैस किशोर गोर तन जासू॥ दृग बिशाल शशि सम मुख हासू
बाल बिलोकि भूप ऽअरु रानी॥ टूक टक रहे निमेष न ऽआनी
देखि सखी सब कुंवरि सराहें॥ धन्य भाग बड़ तुमरे ऽआहें॥
पूर्ब मैं तन दुख सह्यो ऽअपारा॥ ताते पायो सुभग कुमारा॥
हमैं न बिधि ऽअस दीन्हों नाहा॥ सखी सराहि कहैं मन माहा।
तब कुमार शिशु बन्दन कीन्हा॥ शीश नाइ चरणन धरि दीन्हा।

जयजयजय ऋषिराजतुम्हारी॥ मोहिपापीकीबिपतिनिवारी
गजतनुलहिमैं अतिदुखपावा॥ तादुखतेतुम आजुबचावा॥
दो० जान्यो मैं तव कृपाते अबसतसंग प्रभाव॥
दासौं जानतनवादि हितकरतजहांचलिजाव
चौ० तबमुनिवरवर शिक्षा दीन्ही॥ सुनितेहिसहितहियेधरिलीन्ही
नृपरानीकन्यासोइजानी॥ भे नारदके शिष्य बखानी॥
तेहिपाछेपंडितबोलवावा॥ ब्याहहेतशुभदिवससोधावा
पत्रीखोलिविप्र अस बोला॥ आजुलगन नृप अहे अमोला
सुनिनरेशमनभेपरतीती॥ कीन्हब्याहगंधर्वकीरीती॥
बहुविधिदायजुदीन्हभुवाला॥ बड़आनन्दभयोतेहिकाला
गी० छं० नृपकीन्हसुताबिवाहअतिउतसाहनहिंवरणत
बनै। दियोदानबहुमहिसुरनकहं गजबाजिधुररथकोग
नै॥ दिनदिन अधिक अधिकालसुखसुरपुरसरिसबहु
भांतिहो॥ गुरुशरणकेपरतापतेरहिसकलसंशैजातिहो॥
दो० गुरुसमानतिहुंलोकमें औरनदूसरदेव॥
तातेसौनककीजियेगुरुचरणनकीसेव॥
दीपउड़पमनिचंद्ररबि पंचप्रकृतिगुरुजानि।
वेदपावदिक्षासर्वथमुनिवरकहतबखानि॥
वेदपावधर्मतेपरेजोधर्मनिरूपैकोइ॥
सोसहस्त्रजन्मनतेमुक्तननपावैसोइ॥
कुं० अन्यगुरुजोहोइतोरामभंत्रफिरिदेय। राममंत्रगुरुजौ
नतेहि अपरनदेयनलेय। अपरनदेयनलेयसोईपथपावदेखा
वै॥ सतगुरुमानहिंतासुज्ञानजोजानिपावे॥ कहतदास
रघुनाथयेगुरुशिष्यदोउधन्य। परैनर्कमहंजायजोधर्मसिखावैअन्य।
इति श्री बिश्रामसागर सवमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास

रामसनेही कृत गुरु महात्म्य रु शादन कथा वर्णनो नाम पञ्चमोऽध्याय ५

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख खानि ॥
बरणों नाम प्रभाव बहु ग्रंथन के मत आनि ॥

चौ० पुनि सौनक बोले कर जोरी ॥ ऋषि सुमंत्र पद प्रीति न थोरी
नाथ मोहिं निज सेवक जानी ॥ नाम महातम कहो बखानी ।
सुनि मुनि बचन सूत हरषाने ॥ बोले बिमल वचन सुख साने ।
सुनो कहों मैं नाम प्रभावा ॥ जो गिरिजा प्रति शंकर गावा ॥
एक बार शिव सहित भवानी ॥ बैठे निज आश्रम सुख दानी ।
पतिहि प्रसन्न देखि अधिकाई ॥ बोली शिवा सनेह बढ़ाई

दो० मुहुरु मुहुरु तुम कहत हौ राम नाम सुख दानि ।
तासु अर्थ करि कृपा प्रभु मोसे कहो बखानि ।
धन्य प्रिया तुम जगत में कह्यो ईश हरषाइ ।
राम नाम के अर्थ ही जो पूछ्यो मन लाइ ॥
चारि बेद अरु षट सहस सब पुराण मुनि देव ॥
नाम प्रभाव सो उग्र अति ते नहिं जानत भेव ।
राम नाम को अर्थ जो सो सब जान्यो राम ॥
तासु अनुग्रह ते कछुक मैं पायो सुखधाम ।

चौ० निज मति सरिस सुनहु मन लाई ॥ नाम अर्थ मैं कहौं बुझाई
कोटि काम सम जानिन शोभा ॥ अस को जो न देखि नहिं लोभा
जनक नगर जे नर अरु नारी ॥ रहे देखि तन सुरति बिसारी
सप्त दीप के नृप जे आये ॥ सहित विदेह सो देखि लोभाये
परस राम बिन कारण कोही ॥ राम रूप देखत गे मोही ॥
बन बिहरत खग मृग नर नारी ॥ कोल किरात यतन्हु मडारी
तेस कल मिलि सेवा ठानी ॥ रमक्रीडा तहं कहत भवानी ।
धोबिनि आखरि लखि कोब रामा ॥ धीनेइ का कीन्हों बस कामा

चौदह सहस असुर खर दूषण॥ मोहे देखि राम बिन भूषण॥
दो॰ दंडक बन मुनि सर्ब जे ज्ञान योग तप धाम॥
राम रूप छबि देखि कै भे पुरुष ते बाम॥ ॥
चौ॰ सेहु बालि देखत रघुराया॥ अजर अमर नहिं लीन्ही काया॥
रावण सम निशाचर जेते॥ देखि राम छबि मोहे तेते॥
अवध नगर नर नारि चराचर॥ रम्यो राम तन देखि दिवाकर॥
रस क्रीड़ा नाते तुम जानौ॥ अब सो सुनौ जो और बखानौ॥
जल तरंग जिमि रवि अरु घामा॥ कनक एक भूषण बहु नामा॥
गिरा अर्थ जिमि अग्नि उषाला॥ कहत भिन्न नहिं भिन्न सो अन्ता॥
तैस नाम रूप है भावा॥ यदपि नाम कर अधिक प्रभावा॥
दो॰ रूप मिलत नहिं नाम बिन नाम रूप बिन बादि।
ताते दोऊ नित्य हैं अमल अनूप अनादि।
राम बदन राजा नियै अतेहि उर पहिचानि।
मा मकार दोउ चरण भे रेफ तेज चेतानि॥
सो॰ कोटि भानु ते भूरि। है प्रकाश जासे बिमल।
रह्यो चराचर पूरि। पर ब्रह्म ताको कहत।
कोटि विष्णु अज ईश कोटि शारदा शेष शशि।
सुरपति कोटि फणीश सम प्रभाव जामे विशद।
तीरथ कोटि अनन्त नाम अधिक पावन करन
हरण पाप श्रुति सन्त। कहत तदपि उपमा नहीं
चौ॰ कहं रवि कहं खद्योत प्रकाशा॥ सम कि लहै मुख फूंक बताशा॥
उपमा नाम की नाम न आना॥ गुह्य भेद सुनु कहुं बखाना॥
राम नाम अंशांश ते जानौ॥ तीन सिद्धि भे प्रगट बखानौ॥
सोहं बीज और ॐ कारा॥ अर्द्ध रे ते करब बिचारा॥ ॥
अर्द्धी कार ते ऊ पहिचानौ॥ रेफ सो अन्तर भूत पिछानौ॥

हल मकार ऊपर अनुसारा ॥ ताको सिद्धि भई ओंकारा ॥
यहि विधि सोऽहं शीव भवानी ॥ नामते प्रकट मुक्ति को दानी

दो० रामनामते प्रकट भे षट बस्तुइ जे और ॥
तिनके नाम बखान है सुनु मन करि इक ठौर
परब्रह्म अरु जीव जो महा नाद स्वर चारि ॥
पंचम बिंदु षष्ठ रु अक्षर माया दिव्य निहारि ॥

चौ० परब्रह्म सो रेफते भयऊ ॥ जीव रकार आदि ते कहेऊ
मध्य अकार नाद सो कहिये ॥ राहीरघते स्वर को लहिये ॥
हल मकारते भा अनुस्वारा ॥ अनुस्वारते प्रणौ बिचारा
प्रणौते भये तीन गुण जानो ॥ सत रज तामस आदि सिकानो
त्रैगुणते त्रै देव उपाये ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश कहाये ॥
तिनते भयो सकल संसारा ॥ रमक्रीड़ा तेहि करत उचारा

दो० नारायण को रूप करि जोहै प्रथम रकार।
महा विष्णु आकारते महा शम्भु माकार।
रामनाम के भीतरे ब्रह्म जीव त्रै लोक ॥
ज्यों क्षिति बीज नक्षत्र नभ नग माहिं ग्रह थोक।
रामनाम के ध्यान में स्टष्टि ध्यान होइ जात।
जिमि सींचे यक मूल के डार पात हरियात।
रामनाम को छांड़ि कै करत जो अपर उपाइ
मुख तजि भोजन भजै जिमि सपनेहुं क्षुधा न जाइ

चौ० रमक्रीड़ा याते बुध कहई ॥ अपर हेतु सुनिये जो अहई
परम जाग शुभ रेफ कहावै ॥ परम बिराग रकार बतावै ॥
सो पावक के बीजहि लहिये ॥ बड़वा नल आदिक जो कहिये
अस विचारि जो नाम उचारै ॥ कर्म शुभाशुभ सो सब जारै ॥
परम ज्ञान विज्ञान जो कहई ॥ ताको मूल अकार सो अहई

सो सृजन का बीज यही है॥ सुमिरत करत प्रकाश सही है॥
भक्ति सरूप मकार सुहावनि। चंद्र बीज चैताप नशावनि॥
तीनि कांड रबि शशि सब जाते॥ रमक्रीड़ा कबिबर गावत ताते॥
सत रकार चित जानु अकारा॥ आनंद रूप मकार बिचारा॥
सत कहि ये जो बिन से नाहीं॥ चित चैतन्य सकल घट माहीं॥
आनन्द जो नित रहै अनन्दा॥ ताते नाम सच्चिदानन्दा॥ ॥

दो॰ तत पद ब्रह्म सो रेफ कहि त्वं पद जीव अकार।
हल मकार माया असी तत्व मसी श्रुति सार॥
हल मकार कहु माया अक्षर ब्रह्म अकार॥ ॥
रेफ निरक्षर ब्रह्म कहि सब व्यापक निरकार।
हल मा इच्छा प्रकृति ते सकल शक्ति संजाय।
रमक्रीड़ा तेहि कहत अब मुख्य नाम कहौं गाय।

कुं॰ हं विष्णु नारायण कृष्ण ओ बासुदेव हरि ब्रह्म। परमेश्वर परमा-
त्मा विदम्बर निष्कर्म निरञ्जन निष्काम कलानिधि कलुष ह-
नन्ता। केशौ कमलाकान्त बिश्ववपु भव भगवन्ता॥ औरौ ना-
म अनेक जो रटै त्यागि मुख सेष्णु। सुखद सकल पावन महा
पहुंचावन पुर बिष्णु॥ सब नामन में राम नाम पर का यक जि-
य जानु। जिमि नक्षत्र महं चंद्रमा अरु गृहगान में भानु॥ अ-
रु गृहगान में भानु कबिन में यथा अनन्ता॥ निर्जर में जिमि श-
क्र भक्त में जिमि हनुमन्ता॥ लोकन में गोलोक सरिन में सुर-
धारा। नरन माहिं जिमि भूप धनुषधारिन में मारा॥ भगवन्त-
न में राम यथा शक्तिन में सीता॥ अद्रिन में जिमि मेरु पुराण
पाठन में गीता॥ कामधेनु गो माहि अहिंसा धर्मन मा जिमि।
व्रतन में सुरध्वज खगन में बथन तेइ तिमि॥ क्षिमन माहि-
जिमि छिमा सरित में जिमि सरस्वाना॥ कर्मन में हरि कर्म उत्तम

में ब्रह्मज्ञाना पुरिन माहिं जिमि अवध मंत्र में जिमि ओंकारा।
रु इन में मैं यथा स्वर्ग में जिमि आकारा।पुष्कर तीरथ माहिं
मणिन में कौस्तुभ जैसे।सब नामन में रामनाम तुम जानो तैसे॥
सुनि बोली गिरजा बहुरि शिव सों तिन के अर्थ सब।कहहु शिव सो-
ऊ सुनु प्रिया बन्दौं नाम संक्षेप सब॥

चौ० नर जीवन की संज्ञा मानौ॥ नर सब जाके आश्रित जानौ॥
ताते नाम नरायण कहिये॥ नर हिय अयन जासु को लहिये॥
हरि दुख हरत भक्त के पापा॥ ताते हरि अस नाम सुथापा॥॥
वासुदेव सब मां बसै जोई॥ सब जहँ बसै वासुदेव सोई॥ ॥
केशो सो जेहि तेहु सुर सेवैं॥ कला अंश अवतार जो लेवैं॥
पोषत भरत सकल संसारा॥ तासु विश्वम्भर नाम उचारा॥
सूर्य जिमि सब जगत प्रकाशा॥ सबै भिन्न निर्गुण परकाशा॥
ताते ब्रह्म कहावत सोई॥ अनन्त अनन्ता रूप जेहि होई॥ ॥

दो० कृषि भू वाचक शब्द जो ताहि न कहत हैं कृष्ण॥
सब में व्यापक रहत नित विष्णु व्याप सो विष्णु॥
सब ऐश्वर्य सुधर्म यश श्री बिराग बिज्ञान॥ ॥
षट भग जामें होइ ये तेहि कहिये भगवान॥
रामनाम ते होत जो सो काहू ते नाहिं॥ ॥
यह निश्चै करि देखिये सकल पुरानन माहिं॥
रामनाम निर्बर्ण है सब बरनन को ईश॥ ॥
मुकुट छत्र ये जानिये रेफ बिन्दु सब शीश॥
रामनाम मय सर्व है नाम प्रकृति अरु वर्ण॥
रम क्रीड़ा ताते कहत सुनहु अपर धरि कर्ण॥
कोटि तीर्थ व्रत दान तप कोटि योग जप ध्यान॥
कोटि ज्ञान बिज्ञान मख तुलै न नाम समान॥

सप्तकोट जो मंत्र हैं चित भरमावन काज॥
परो मंत्र है राम नाम सकल मंत्र को राज॥ ॥
चौ० रामनाम जे जपैं सदाहीं॥ मुक्ति भुक्ति तेहि संशै नाहीं॥
मूर्द्ध गगन तहं बसत रकारा॥ त्रकुटी बास अकार बिचारा॥
जिह्वा बास मकारहि सोई॥ निज निज थल उच्चार सो होई॥
योगी अर्धरकारहि ध्यावैं॥ अरु अकार ज्ञानिन मन भावैं॥
पूरा नाम जपै हरिदासा॥ मुक्ति भुक्ति की छांड़ै आशा॥ ॥
जैजै मंत्र प्रयोग कहावैं॥ तैसतैस साधे फल पावैं॥ ॥
ते सब सिद्ध छिप्र होइ जाई॥ रामनाम सुमिरै मन लाई॥
जपै कौन बिधि शुचि अशुचि अस्त्रो॥ निजजन जानि न नाथ दुराओ॥
कह शिव सुनो प्रिया करि प्रीती॥ नाम जपन की बरणौं रीती॥
सतगुरु ते जब पावै नामैं॥ करि बिश्वास रटै ताही कामैं॥ ॥
गी० छं० तजि काम क्रोध बिमत्सरालस लोभ मोह निवारि-
के॥ छल मल कुसंगति त्यागि सद्गुरु बासना सब मारि कै॥
शुचि अंग गो मन जीति नासा निरत नित नामै रटै॥ है जाय सो-
नर राम ही को रूप भवबंधन कटै॥ ॥
चौ० प्रीति अप्रीति रीति बिन जाने॥ कहत नाम सुख लहत सयाने॥
अमिय गरल गद जल मल आगी॥ पारस सम गुण कहत बिरागी॥
अंतर नाम जपत जो कोई॥ मुक्ति होत परि भक्त न सोई॥ ॥
रामरूप दरशन नहिं पावैं॥ तातें जन रसना मन लावैं॥ ॥
रसना नाम रटत जो कोई॥ पराभक्त हरि दरशन होई॥ ॥
रसना नाम रट्यौ जिन जानौं॥ तिन सबहिन के नाम बखानौं॥
दो० लौमस नारद ब्यास शुक भृगु अगस्ति प्रहलाद॥
गणिका यमन गयंद द्विज नामक जान्यो स्वाद॥
चौ० कागभुशुण्ड नाम गति जोई॥ कल्यान्तौ जेहि नाश न होई॥

बालमीक ध्रुव सुमिर्यो नामा॥ पावन भयो लह्यो बिश्रामा॥
नाम प्रसाद शेष महि लीन्हें॥ भुवन चारि दश रज सम कीन्हें॥
नामहि बल मैं बिष कियो पाना॥ बेद पुराण बिदित जग जाना॥
सनकादिक गणपति हरि जाता॥ जीवनमुक्ति पूज्य सुखदाता॥
औरौ अमित भये हरि दासा॥ नाम सुमिरि गे प्रभु के पासा॥

सो० योगी ज्ञानी भक्त जे सुकर्म करता सकल॥
रामनाम अनुरक्त सब की ह्वा तातें कहत॥

चौ० सतयुग सत्य न झूठ बखानी॥ करि हरि ध्यान तरे भव प्रानी॥
त्रेता तप मख संयम करहीं॥ सुख लहि देइ जीव जग तरहीं॥
द्वापर व्रत पूजा आचारा॥ करि करि जीव होइ भवपारा॥
कलि नहिं तप व्रत संयम योगा॥ साधन कठिन देह बस रोगा॥
तातें निगम सुगम मग गावा॥ कलि भव सिन्धु नाम दृढ़ नावा॥
नाम प्रताप सकल युग जानू॥ कलि विशेष जिमि ग्रीषम भानू॥
अस बिचारि जे नर बर ज्ञानी॥ जपहिं नाम ऋतु अन ऋतु मानी॥
अन्न असन तजि बन फल खाना॥ गज रथ बाजि देइ गो दाना॥

गी० छं० गो देइ कोटिन दान बिबिधि चढ़ि झौंपले तन जारहीं॥ स-
ब करहिं तीरथ अटन ज्ञान पुराण बेद बिचारहीं॥ मख कोटि सुर
तैंतीस साधै योग अष्टांग हि करै। एक राम नाम जहा-
ज बिन संसार सागर ना तरै॥

दो० अवैं अनल शशि व्योम फल तम रबि देइ मिटाय॥
बिन हरि भजन न भव तरै करै जो कोटि उपाय॥
गरुड़ै खाइ भुजङ्ग बरु घृत निकसै जल नीर॥
भजन बिना सुख नाहिं है यह पाथर की लीक॥
अस बिचारि रघुनाथ भजु रामनाम मन मोर॥
जब होई तब होइहै येही ते भल तोर॥ ॥

सोइ ज्ञानी ध्यानी गुनी दाता सूर सुजान॥
अतिपवित्र रघुनाथ सो जो सुमिरै भगवान॥
रामनाम का अर्थ कछु कहौं बुद्धि अनुसार॥
नाम प्रभाव अपार अति को अस पावै पार॥
पाठ अशिष्य बिष पाठ की तिन्हें न यह मत देइ॥
रामउपासक ते कही जो सुनि उर धरि लेइ॥

इति श्री बिश्राम सागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत नाममहात्म्य बर्णनो नाम षष्ठो ऽध्यायः ६॥

दो० सुमिरि राम सिय संत गुरु गणप गिरा सुखखानि॥
कूरम कोल पुराण की कहौं इतिहास बखानि॥
कह सौनक हरि नाम कहि पतित तरे जग कौन॥
यह अभिलाषा सुनन की कहौ नाथ तुम तौन॥
बदेउ सूत हरि नाम कहि तरिगे पतित अनेक॥
पार न पावैं जो गनैं सहस शारदा शेष॥
जो कछु मम जाने सुने गुरो पुराणन माहिं॥
सो तव हित बरणन करौं जो पूछौ मोहि पाहिं॥

चौ० बालमीकि गाथा कागज जानौ॥ यमन केर इतिहास बखानौ॥
कीरति सुखद इक मुनिवर रहई॥ विपिन मध्य तन योगन दहई॥
इक दिन स्वपने शुक्र बिनासा॥ बांधी धरि जाप चले उदासा॥
तेहि ते बालमीक मुनि भयऊ॥ ठगन केरि संगति होइ गयऊ॥
तिनके साथ बिपिन नित जाई॥ मारि जीव धन लेइ छिनाई॥
सब विधि सों जब भयो सयाना॥ तब बन लाग अकेलेहि जाना॥
ब्राह्मण बयस शूद्र जेहि पावै॥ प्रथम मारि तेहि बस्तु छिनावै॥
जो कोइ आपुइ ते धन देई॥ बिन बध किहे कबहुं नहिं लेई॥

दो० एक दिवस बड़ि देर भइ मिलान कोउ ताहि॥

तेहि मानि के सप्त ऋषि के हुत नाम जो आहि॥
कश्यप अत्रै यमदग्नि विश्वामित्र वसिष्ठ॥
भरद्वाज गौतम कहे नाम सप्त ऋषि शिष्ट॥
चौ० इन्हें देखि धाय हरषाई। बोला वचन मुनिन ते जाई॥
पोथी पत्रा देहु उतारी॥ नाहित सबन डारि हौं मारी॥ ॥
जानि दुष्ट बोले मुनि ज्ञानी॥ सुनु ठग हम पूछत इक बानी॥
जो तुम पाप करत अति भारी। तिन मा कोइ औरौ सझियारी॥
यह घर जाइ पूँछि ये बाता॥ आइ हमैं फिरि कीजै घाता॥
कही बिहँसि मैं पूछन जावों। तुम भजि जाउ कहां पुनि पावों॥
तब मुनि सोंह राम की खाई। सुनि आवा घर देर न लाई॥ ॥
तात मात सुत बनिता भाई॥ पूछेसि सब का निकट बोलाई॥
मैं जो लूटि मारि धन लावों॥ खात सकल मिलि भोग भोगावों॥
जीव बधे कर पाप जो होई॥ तेहि मा सझियारी है कोई॥ ॥
सबहिन कहा पाप जो आहीं॥ ता के हम साथी हैं नाहीं॥
दो० अस सुनि सोउ रत भयो गयो सप्त ऋषि पास॥
हाथ जोरि चरनन परयो कह्यो बचन परकास॥
चौ० महाराज हों सरन तुम्हारी॥ पतित जानि मोहि लेहु उबारी
सुत पितु मातु बन्धु तिय नारी॥ हैं सब स्वारथ के संघारी॥ ॥
संकट परे काम नहिं आवैं॥ सब के सब जहं तहं भजि जावैं॥
अब लगि मैं सब कानि जु जानी॥ करत रहौं पातक सुख मानी॥
सो अघ समुझि लगत डर भारी॥ पाहि पाहि मैं सरन तुम्हारी॥
दीन जानि बोले सुखदाई॥ मरा मरा कहि सुमिरहु जाई॥ ॥
सुनि मुनि वचन हृदय धरि लीन्हा॥ मरा २ सोइ सुमिरन कीन्हा
तिसरे शब्द राम होय गयऊ॥ बालमीक कर कारज भयऊ
जाप करत भे पातक नाशा॥ निर्मल हृदय भयो परकाशा॥

दो० तबभविष्यसियरामयशकह्यौकोटिसतगाइ
सौनकनामप्रभावअसमराकहेगतिपाइ॥ ॥

चौ० औरसुनोगणिकाइकरहई॥ ताकेपापपारकोलहई॥
अन्तसमयलीन्हों यमघेरी॥ लगेदेनतेहित्रासघनेरी॥॥
तेहिसमयएकहरिजनआये॥ देखिजायकाबिनयसुनाये॥
तुमहौदीनबंधुसुखदाई॥ मोहिंसङ्कटतेलेहु छुड़ाई॥
सुनिसाधूमनबिसमयकीन्हा॥ मंत्रयाहिनहिंचाहियदीन्हा॥
जोयाकरकल्याणनहोई॥ तौअपजाइहमारोखोई॥ ॥
बिनानामभलहोतनजानौं॥ यहि कौनबिधिनामबखानौं॥

दो० असबिचारिसाधूकह्योजगजोहिन्दूलोग॥
कीरपदावतकहौसोइतबतवनाशैसोग॥

चौ० सुनिगणिकाकहरामसोआही॥ असकहतेतनछूटाताही॥
सुनतहिहरिगणआयेधाई॥ यमफांसीसेलेतछुड़ाई॥
हितसेसुभगबिमानचढ़ावा॥ रामधामतहंजाइबसावा॥
असहैरामनामसुखदाई॥ अधमजातिगणिकेंगतिपाई॥
सुनहुएकगजअतिबलवाना॥ करनगयोसागरजलपाना॥
ग्राहगह्योताकरपगधाई॥ लैगाजलगहिरेघसिलाई॥
फिरिगजखैंचिकिनारेलावा॥ यहिबिधिसोबहुकालबितावा॥
गजकेतातभ्रातसुतभामा॥ कछुदिनभोजनदीन्हेंतामा॥
पाछेसबनत्यागितेहिदीन्हा॥ क्षुधाक्षीणभाबलतेहीना॥
कोउसहायकजबनहिंदेखा॥ जान्योगअबप्रानबिशेखा॥
तबतेहिअर्द्धनामगोहरायो॥ गरुड़छाँड़िहरितुरतहिधायो॥
ग्राहैहतिगजलीनबचाई॥ सुनुमुनिअसदयालरघुराई॥
तिन्हैछाड़िजेआनेध्यावैं॥ तजिसुरसरिजलकूपखनावैं॥
औरसुनौमैंकहौंबखानी॥ हौमलेच्छएकअघखानी

एकदिवसगुणीकहंगयऊ॥ बाहेरग्रामसोबैठतभयऊ॥॥
पाछेतेसूकरसुतआवा॥ विटऊपरसुखमारिगिरावा॥
कह्योयमनमास्यौहारामा॥ असप्ताँगतछूटयोताजामा॥
यमकेदूतगहिनतेहिधाई॥ आइगणानतबलीनछिड़ाई
कह्योगणानलीन्हेंयहिनामा॥ अबनहिंजायतुम्हारेधामा॥
कहयमदूतहरामजोकीन्हा॥ सोयहिनामसुबरकालीन्हा
हरिगणाकंहसंकटकेमारे॥ हाइरामअसकहिसिविचारे
दूतकह्योचलिन्यावचुकाई॥ जाहिमिलेसोईलैजाई॥॥
यहिविधिभगरतगेविधिपासा॥ बोलेब्रह्मजाहुकेलासा॥
तबचलिउमानाथपहंगयऊ॥ दोउमिलिहालगुजारतभयऊ

दो० सुनतकहाशिवनामकरन्यावनमोसोंहोइ॥
चलिबैकुण्ठचुकाइयेश्रीपतितेकहिसोइ॥

चौ० असबिचारिबैकुण्ठहिआये॥ समाचारसबहरिहिसुनाये
कहयमदूतचरणाशिरनाई॥ इहुहैअतिपापीअन्याई॥॥
मरतहरामकहेसिमुखयेहीं॥ तातेगणालेजाननदेहीं॥
सोनियावतुमतेप्रभुहोई॥ जोतुमकहोकरैंहमसोई॥॥
सुनतबिष्णुमनकीन्हबिचारा॥ नामप्रभावअनन्तअपारा॥
बोलेयमदूतोसुनिलीजे॥ याकोइहैंरहनअबदीजे॥॥
सुनियमगणाचलिभेखिसियाई॥ हर्षेशिवबिरंचिमुनिराई॥

गी० छं० हर्षेबिरंचिमहेशशेषगणेशनारदआदिकै। जेहि
हेतुमुनिजपकरतयोगीयोगआसनसाधिकै॥ नहिंमिलत
सोपदयमनकहिहारामबिनश्रमपायहू असजानिजा
मेंनाजपेंतिनबादिजन्मगंवायहू॥

दो० असहैनामप्रभावजेहिकहिनसकैंहरआपु॥
तातेसन्तनकीजियेरामनामकोजापु॥॥

इति श्रीविश्रामसागर सुषमतआगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासराम सनेही कृतबालमीक गजगनिका उद्धारवर्णनोनाम सप्तमो ऽध्यायः॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपद गिरा सुखदानि॥
कहौं कथा भागवत की अब इतिहास बखानि॥

चौ॰ बाले मुनि कछु नाम प्रभावा॥ कहौं सुनौ अब अपर सोहावा॥
कनउज तीर ग्राम इक अहई॥ अजामील द्विज तामें रहई॥
माता पिता नाम यश धारा॥ सो सब सांच कीन्ह करतारा॥
पूर्व्व कर्म्म बस तजि निज नारी॥ वेश्या सकोल हिंसि वेढारी॥
सुरापान ताके सँग कीन्हा॥ शौच सयान दूरि धरि दीन्हा॥
अजामील ले नीच न देई॥ चर्म नका पर अपना लेई॥
अस पातक निशिवासर करई॥ हृदय नेकु दाया नहिं धरई॥

प॰ छं॰ एक दिवस इक साधु तासु नगरी महं आयो। पूछ्यो हरिजन धाम सुनत बुधजन बहँकायो॥ अजामील घर जाहु चहौ जो शुभ विश्रामा। हरिजन जान्यो सांच गयो चलि ताके धामा। गणिका लखि घूमें तुरत अजामील सुनि याइ। विनती करि फिरि लै गयो आसन दीन बनाइ॥

दो॰ यद्यपि मैं यहि जन्म में दुर्भग अघ युत दीन॥
तदपि पाछिले जन्म महं पुण्य घनी कछु कीन॥

सो॰ पुण्य पुंज बिन नाथ। मो को तव दर्शन कहां॥
जो पि मिलत कहुं साथ। तौ नहिं होतो भाउ उर॥

चौ॰ अस कहि सीधा विटतें लायो॥ विविधि भांति भोजन करवायो॥
है प्रसन्न बोल्यो हरिदासा॥ तब वनिता उर पुत्र निवासा॥
अब की बेर जन्म लेइ जब याही॥ धरौ नाम नारायण ताही॥
नारायण जो धरिहौ नामा। तौ नहिं जैहौ यम के धामा॥

घ॰ छं॰ अस कहि हरिजन गयो भयो जब बालक जानी॥

असो नरायण नाम बचन बैशों को मानी ॥ तासो राखें नेह नेकु नहिं न्यारा करई । मोह बश्य भा अंध मृत्यु ते नाहीं डरई ॥
यहि भाँतिन कछु काल गे अन्त समै का बार । लेन चले यम दूत बहु आये तासु अगार ॥

चौ० महा भयानक रूप निहारी ॥ अजामील डरप्यो अतिभारी
मोग दर मारि डारि गर फाँसा ॥ काढ़त जीव चले उर्द्ध स्वासा ॥
निकसत प्राण भई अति पीरा ॥ रही न तन कौ सुद्धि शरीरा ॥
करत घोर श्रम गण इक लखऊ ॥ मुख से बचन बोलि नहिं गयऊ

दो० तब सोइ सुत की आदि करि कह्यो बचन हरु वाइ ।
कहाँ नरायण पुत्र मम तेहि मोहिं देउ देखाइ ॥

चौ० नाम लेत हरि हृदय बिचारा ॥ दुख कौ बस कहुँ मोहिं पुकारा
मोर नाम जे जन मैं लेहीं ॥ तेहि किकष्ट यम किंकर देहीं ॥ ॥

सवैया तुरतै हरि बोलि कह्यो गण ते केहु नाम लियो तेहि वेगि बचावो ॥ फाँस छोड़ाइ चढ़ाइ बियान बजाइ निशान मेरे ढिग लावो ॥ आयसु पाइ गये द्विज धाम बिलोकि के दूत सबै दुख पावो । बोलि उठे तब ही गण ते केहि कारण भौन घुसे तुम आवो ॥

चौ० इतना सुनि उत्तर गण दीन्हा । इहाँ रहत हरि जन हम चीन्हा
तासु फाँस काटन के हेता ॥ सौंते पठ दूनि कृपा निकेता ॥
सुनि यम दूतन कहा रिसाई ॥ तुम सो गणो बड़े अन्याई ॥
याकी सम नहिं दूसर पापी ॥ ताको तुम हरिजन करि थापी ॥
खायसि मांस कि हिंसि मद पाना ॥ असताहि ले चल्यो बिमाना
सुनहु गनो जे आमिष खाहीं ॥ तेहि सम और पाप नहिं आही
याकर दोष जोन कछु होई ॥ कृपा कहो पारषद सोई ॥
पशु के तन जो रोम शरीरा ॥ तिल ने बर्ष नर्क सह पीरा ॥ ॥

आठ जु हिंसा के गृह जानो ॥ सो भारत में साखि बखानो ॥
जीव बधन इक आज्ञा देई ॥ दूजो मारै त्रै गहि लेई ॥
चौथो सुनो सवारनहारा ॥ पंच बंबेचनहार निहारा ॥
छठो रसोई जोन चढ़ावै ॥ सतवों सो जो परसि जिमावै ॥
अठवों खानहार जो होई ॥ धरे नर्क महं आठो सोई ॥

दो० मोल मंगावे घर हते ताहि दर्वि दे कोउ ॥
सुखसम्पति सब नाश हीं मोक्ष लहै नहिं सोउ ॥

चौ० द्विज ह्वैके मदिरा जो खाई ॥ देवतुरुक कर पूजे जाई ॥
बार सुखी जो गेल लगावै ॥ कुल का धर्म सकल घटि जावै ॥
तेहि द्विज की पूजा जो करई ॥ पुण्य जाद घटि अघ सिर परई ॥
यामें नहिं हम झूठ बखाना ॥ धर्मशास्त्र में यह परमाना ॥
तेहि ते अस ऐसी जनि कीजै ॥ याहि नर्क लैजाने दीजै ॥
अस पापी जो हरिपुर जाई ॥ नर्क काहि हम डारब भाई ॥

सवैया बोले तबै गण दूतन ते तुम नाम प्रभाव न जानत भाई । गो द्विज पाप करै नर जो अपने करते मधु लेइ छोड़ाई । चोरी करै बटपारी करै गुरुतल्प धरै पग आमिष खाई ॥ औरहु पाप करै बहु जो हरिनाम लिहे सबही जरि जाई ॥

दो० गणिका यमन गयन्द से बालमीक अघखानि ॥
नाम कहत सब तरि गये कहं लगु कहौं बखानि ॥

चौ० कोटि गऊ जो देवै दाना ॥ ग्रहण करै काशी अस्नाना ॥
मकर प्रयाग बसै जो जोई ॥ यज्ञ करै दश सहस सोहाई ॥
गिरि सम हेम दान कर कोई ॥ रामनाम सम तुलै न सोई ॥
यथा ढेबुक मुद्रा जग माहीं ॥ हैं सब एक पदिक सम नाहीं ॥
बस्तु अमोल यथा मति कहहीं ॥ जिन जाना जस तस फल लहहीं ॥
संकेत परिहास जो करई ॥ रामनाम सुमिरत अघ हरई ॥

असहरिनाम प्रकट जग आही॥ शेष महेश रटत हैं जाही॥
सोई नाम याते कहि आवा॥ याकी सम को भक्त कहावा॥
कह यमदूत सुनहुं गणजेता॥ कब यहि कीन राम सों हेता॥
यहि तो पुत्र नाम कहि टेरा॥ ताते हम दियो दुःख घनेरा॥
जो यह लेत राम कर नामा॥ तौ हम ते याते का कामा॥
कह गण हरिजन जो कहि गयऊ॥ ताके बचन मानि यहि लयऊ॥
करि उपदेश सन्त दिय नामा॥ ताते भक्त भयो यह रामा॥
चारौ युग श्री शारँग पानी॥ साँचो करि आये जन बानी॥
यहि विधि दूतन कह समुझाई॥ लीन्हो ताहि बिमान चढ़ाई॥
राम धाम लै गे यहि भाँती॥ यम किंकर चलि भे खिसियाती॥
हरिगी॰छं॰ खिसियाहि चलि भे दूत यम के देखि महिमा नाम की। अस अधम पापी खल सुरापी निर्दयी हरि बाम की॥ सो अन्त समै पुकारि सुत को नाम हरि पुर को गयो। अस राम नाम प्रभाव सुनि अति हर्ष शौनक के भयो॥

दो॰ नारायण इति नाम कहि अजामील भो पार॥
ताते सन्तन कीजियो राम नाम उच्चार॥
सुत बनिता धन धाम जो सब इहनै रहि जाइ॥
नर्क स्वर्ग यमलोक में नामैं होत सहाइ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत अजामील प्रसंग बर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ८

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
धर्म दूत सम्बाद अब कहौं अस कंद बखानि॥
सो॰ कह सौनक हरषाइ। अजामील जब नामिल्यो॥
दूत धर्म ढिग जाइ। कहा कहिन सो बरणिये॥
चौ॰ कहा सत्य यम दूत रिसाई॥ धर्मराज पहँ पहुँचे जाई॥

दंड फाँस सब दीन्हेंा डारी ॥ देखौ रबिसुत दशा हमारी ॥ ॥
जाहि अधम पापी हम चीन्हा ॥ तेहि सब ढिग लावन मन कीन्हा
अन्त समै सुत नाम पुकारा ॥ तुरतै हरिगण ताहि उबारा ॥
लीन्हे निषद हरि बिमान चढ़ाई ॥ रामधाम तहँ गे रवेनि जाई
अस अनरीति न हमैं सोहाई ॥ तासे तव ढिग आयन धाई ॥
दो॰ दंड फाँस लीजै अपनि कह्यो सबन शिर नाइ ॥
दूत कर्म नहिं करब अब अस कहि चले रिसाइ ॥
चौ॰ रिस हृ जानि यमराज बोलाये ॥ करि सनमान निकट बैठाये
कहा धर्म दूत सुनो मम बाता ॥ हे हरिनाम सकल सुख दाता
संसकार जो अघ कर आही ॥ सूक्ष्म रूप कहत मुनि ताही
सो नहिं नशै तपादिक कीन्हे ॥ यतन अनेक दान बिधि दीन्हे
सो वह सूक्ष्म अघ को मूला ॥ सुकृत नाम नाशत सब शूला
तातें ताके अघ सब नाशैं ॥ जिमि तम सह जैं भानु प्रकाशैं ॥
जो जन लेइ राम कर नामा ॥ तेहि ते तुम तेहि का कामा ॥ ॥
तिनके निकट न जायो भाई ॥ देखि दूरि ते दियो बराई ॥ ॥
सुनत दूत कह जग के माहीं ॥ नाम सकै बर लेत को नाहीं ॥
जो उनके ढिग जान न पाई ॥ तो मृत्युलोक करब का जाई
कह रबिसुत दूतो सुनि लेहू ॥ मैं जो कहत ताम मन देहू ॥ ॥
राम कहत जो नर जग माहीं ॥ सो औ हार नेह कछु नाहीं ॥
गुरु ते राम नाम जिन पावा ॥ करि बिश्वास सो हृदय बसावा
जो कोइ कोटिन करै उपाई ॥ मारै त्रासै लोभ दिखाई ॥ ॥
तदपि राम तजि अन्त न ध्यावै ॥ सो हमरे लोके नहिं आवै
अस हरि भक्त बिलोको जबही ॥ करयो प्रणाम दूरि ते तबही
साकट कहं तुम धरि लै आवो ॥ नर्क डारि सब कर्म भोगावो ॥
बोले दूत जोरि युग पानी ॥ इक संशै हमरे उतपानी ॥ ॥

पाँच तत्व की सब की देही ॥ किमि जानब येराम सनेही ॥ ॥
भक्तन केर चिन्ह कहौं गाई ॥ जाते हम उन ढिग नहिं जाई ॥
बहुरि कहौं साकट कर भेदा ॥ जिन्हैं लाय देई बहु खेदा ॥ ॥
कह रघि सनय सुनौं रे भाई ॥ भक्त चिन्ह मैं कहौं बुझाई ॥ ॥
कण्ठ विषे तुलसी की माला ॥ मस्तक में दिये तिलक विशाला ॥
शङ्ख चक्र भुज मूल सोहाये ॥ भुवन पवित्र करण भुव आये
हरि की कथा सुनैं हरषाई ॥ राम नाम सुमिरैं मन लाई ॥ ॥
जीव बधन हित अस्त्र न धरहीं ॥ देखत दीन दया अति करहीं
क्षमा शील सन्तोष गहहीं ॥ बाल वृद्ध सब के प्रिय रहहीं ॥
मन क्रम काहु दुःख न देवैं ॥ अति उदार सन्तन कह सेवैं ॥
अस हरिभक्त हरी सम जान्यौं ॥ यामें रञ्चक भेद न आन्यौं

दो० जो कदापि भक्तन विषे कछुक दोष दरशाइ ॥
तथा देह कृत मानिये भक्तन परसै नाइ ॥
भक्त दोष प्राकृत नहीं तिन्हैं न बाधक होय ॥
औरन को पावन करन सद समर्थ है सोय ॥

चौ० ताको यह दृष्टान्त बिचारौ ॥ सो सुनि कै संदेह निवारौ ॥
जो गङ्गा में फेन दिखावै ॥ तौ का गङ्ग प्रभाव मिटावै ॥ ॥
ब्रह्म द्रव जग मगत जहाहीं ॥ हरत ब्रह्म हत्या छिन माहीं
तैसे सन्त गोविन्द पियारे ॥ सब दोषन को भञ्जन हारे ॥ ॥
ताते तुम्हें कहौं समुझाई ॥ भक्तन ढिग जनि जायो भाई

दो० भक्तन के लक्षण कहे कछु संक्षेप बखानि ॥
अब साकट बरनन करौं सो उर लेहु तुम जानि ॥

चौ० साकट जेहि हरिभक्ति न भावै ॥ साधन लखि मन क्रोध बढ़ावै
साकट जे पर निंदा करई ॥ पर सुख देखि बिना नल जरई
साकट सो हिंसा रत रहई ॥ तजे सुपन्थ कुपंथ गहई ॥ ॥

साकट जो परद्रव्य चोरावै॥ पर अपकार सदा मन भावै॥
साकट सो भोगै परदारा॥ करै अकारन क्रोध अपारा॥
जिव बदले जो जीव मरावै॥ साकट मास बिराना खावै॥
गुरु पितु मात बचन नहिं मानै॥ साकट औरन का दुख ठानै॥
इमि नर बिमुख राम ते आहीं॥ डारहु आनि नर्क के माहीं॥

दो॰ कौन करम करि लहत नर नर्क स्वर्ग में बास॥
सो हम ते बर्णन करौ जानि आपने दास॥

चौ॰ कह यमदूत सुनौ जेहि कर्मा॥ परत नर्क महँ कहौं सो मर्मा॥
हिंसा करै बचन कटु भाखै॥ सुनै बेद परतीति न राखै॥
दै बिश्वासघात जो करई॥ प्रानी सोई नर्क महँ परई॥
देव बिप्र संतन दुखदाई॥ परनिंदा करै अपन बड़ाई॥
बिना समै भोगै जो नारी॥ परत नर्क महँ मास अहारी॥
रजस्वला त्रिय गर्भ युत होई॥ तासों रमन करै जो कोई॥
बिप्रन उत्तिम बहुरि नहिं देवै॥ सो प्रानी नर्क बासा लेवै॥
शूद्र भील सुपचाधम कोई॥ भगवत भक्ति परायण होई॥
तिन्हें जानि के करै जो तर्का॥ मन्दबुद्धि सो भोगै नर्का॥
जे निज देह माँझ अभिमानी॥ आतम बुद्धि लखैं अज्ञानी॥
हरि कलत्र अपनी करि मानैं॥ प्रतिमा मात्र देव करि जानैं॥
सलिल मात्र तीरथ जिन जाना॥ संतन मैं कुभावन आना॥
ते गो खर सम जानो प्रानी॥ परत नर्क महँ बाचक ज्ञानी॥
अर्चै बिष्णु शिला करि मानैं॥ श्री गुरु देवै नर करि जानैं॥
बैष्णो की जो जाति बिचारैं॥ अन्य देव सम बिष्णुहि धारैं॥
हरि औ हरिजन चरणोदक होई॥ तीर्थ बुद्धि करि मानै सोई॥
राम नाम मंत्रन सम धरई॥ सो नर घोर नर्क महँ परई॥
गोशाला अरु ग्राम जरावै॥ घात चोरि पर त्रिय मन भावै

देखेबिना दोष दे सीसा॥ नर्क परे सो बिस्वे बीसा॥ ॥
तीरथ देव गऊ अस्थाना॥ मध्यगली धर्मशाला जाना
जाय मैल बिष्टा जो करई॥ जीव बधै सो तम में परई॥ ॥
पूजै नाहिं सन्त घर लाई॥ और देखि मन क्रोध बढ़ाई॥
हैम गुरु ते बाल चोरावैं॥ हरियश सन्त जिन रकीरति गावैं॥
भक्तन को यश कभू न कहई॥ रामभक्ति ते बिसुख हिं रहई॥
मर श्रीगुरा जो करैं उधारा॥ ते शत युग तें नर्क अपारा॥
नारी जो निज पति छिट कावै॥ आन पुरुष को गरे लगावै
पति से बोलै बचन कठोरा॥ राम ते बिसुख धर्म सुख मोरा
असचिय परै नर्क के माहीं॥ यामें कछु संशै है नाहीं॥ ॥
पाप कर्म सब ते तम होई॥ ऊँच नीच चाहै करै कोई॥ ॥

दो० नर्क परत जेहि कर्म करि सो मैं कह्यो बखानि॥
स्वर्ग मिलै सो कहत अब दूत लिख्यो तुम जानि॥

चौ० श्रद्धा सहित करैं जे दाना॥ पूजें उत्तम बिप्र सुजाना॥ ॥
होम यज्ञ तीरथ ब्रत कर हीं॥ जप तप गायत्री मन धरहीं॥
पर उपकार सदा मन भावै॥ द्वार अतिथ बिमुख नहिं जावै
बोलैं बचन सबन सुखदाई॥ ते नर बसैं स्वर्ग महँ जाई॥
काहू को बुरा नाहिं चह हीं॥ रक्षा करत जीव की रहहीं॥ ॥
मान पराया गिरन न देहीं॥ सत्य बचन दृढ़ी गहि लेहीं॥
बैशो देखि करैं पर नामा॥ रजकन जितने लागैं जामा॥
तितने शत मन्वन्तर माहीं॥ बसैं स्वर्ग कहि आगम जाहीं
नारी पति ब्रता जो होई॥ धर्मवान कोमल चित सोई॥
पति कुष्ठी दारिद्री जानो॥ रोगी कपिरा अन्ध यहि चानो
कामी क्रोधी कैसो होई॥ नारि ईश सम मानै सोई॥ ॥
पति के संग सती होइ जावै॥ सो तिय सत्य स्वर्ग सुख पावै

सो॰ आश्रम धर्म दृढ़ होइ बिहँग कपोता की सरिस॥
बसै स्वर्ग महँ सोइ। बहुत काल लगि जानिये॥
इति श्री विश्राम सागर सब सत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत यम दूत सम्बाद बर्णनो नाम नव मोऽध्यायः ९॥
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं इति हास समुद्र को अब इति हास बखानि॥
चौ॰ सुनत दूत अस पूँछे लीन्हा। बिहँग कपोत धर्म का कीन्हा
सोउ नाथ अब कहो बखानी॥ जाइ गृह आश्रम जेहि जानी
कह धर्म सुनहु दूत मन लाई॥ बन्दौं कथा सुंदर सुखदाई॥
बधिक एक अति निरदै रहई॥ बिपिन जाइ जीवन कह गहई
निस दिन नीच जीव संहारै॥ पाप दोष नहिं हृदय बिचारै॥
एक दिवस एक बनहिं सिधावा॥ तामें जीवन एक हु पावा॥
उत्तर दिशि ते आँधी आई॥ भयो अंधेर न सूझै राई॥ ॥
गर्ज्यौ मेघ प्रलय की नाई॥ भाग्यो सुनत पंथ नहिं पाई॥
वृष्टि होन पुनि अति भै लागी॥ पाथर परत सबै सुधि भागी
जहाँ तहाँ जल बहै घनेरा॥ पावन अड़ै बिपति ने घेरा॥
माघ मास काँपै सब देहा॥ सहै त्रास करि करम सनेहा॥
क्षुधा सतावै ज्यौं ज्यौं तन को॥ होवै धीर अधिक ही मन को
पवन जोर ते पक्षी जानो॥ गिरि गिरि परे वृक्ष तर मानो
दामिन च मक कपोती देखी॥ धाइ बधिक तेहि गह्यो बिशेखी
दो॰ आयु काल के गाल में सोन बिचार्यो अंध॥
॥ वाहि पींजरा माँहि करि चलत भयो मति मंद॥
चौ॰ शोचत सुमन कपोती सोई॥ मम पति आजु अकेला होई
मंदिर तिन कर जहाँ रहावा॥ तेहि द्रुम तरे बधिक सोइ आवा
छाया ताकी सघन निहारी॥ बैठा सो मिटि सुपास बिचारी॥

शीत क्षुधा बस बोलि न जावै॥ काठ सरिस तनु आदुख पावै
ताही समे कपोत सो आयो॥ प्यारी बाम धाम नहिं पायो॥
दो॰ मोले पहिले आवती नित्त बधू गृह माहिं॥
आजु रही कहँ प्राणप्रिय कछु कुशल है नाहिं॥
चौ॰ अस बिचारि मन शोचन लाग्यो मोह प्रबल हिरदे महँ जाग्यो
मैं गृ अकेल रह्यों घर माहीं॥ बिन बनिता जीवन कछु नाहीं
नारि पुरुष तें अंतर परई॥ धृग तेहिं नरहि जो गृह मन धरई
आश्रम की शोभा त्रिय जानौं॥ बनिता बिना बृथा सुख मानौं
जित तित दृष्टि कपोत हि फेरी॥ देखी बधू पींजरे गेरी॥ ॥
बिस्मै कीन्ह कपोता जबहीं॥ बोल्यो बचन बिकल है तबहीं
अहो प्रिया अब मैं का करिहौं॥ तुम बिन प्राण त्यागि के मरिहौं
पति को बिकल कपोती जानी॥ बोली बचन धर्म नै सानी॥
हे पति त्यागो शोच सनेहा॥ दुःख मूल जानो जग गेहा॥ ॥
मिलन बियोग दुःख सुख साथा॥ तातें शोच करिय जनि नाथा
हे स्वामि तुम बिचारि मन माहीं॥ जग में कोउ काहू कर नाहीं
धाम धाम तन धन सुत भाई॥ एक दिवस सब ही छुटि जाई
जो कछु धर्माधर्म कमावै॥ अंत समै सो संग सिधावै॥ ॥
अधरम करै भरे यम त्रासा॥ धर्म ते लहै अमर पुर बासा
तातें धर्म करौ मन लाई॥ यातें लोक प्रलोक भलाई॥
बधिक आश्रम सुन्दर आयो॥ याको पूजि करो मन भायो
पति मति बैरी याको जानो॥ बैठो शरण तुम्हारी मानो॥ ॥
बिपति परे जो करै सहाही॥ होइ तासु यश त्रिभुवन माहीं
घर आये सतकार न करई॥ नाथ पुण्य पाप सिर धरई॥
धनि वह गेह कुटुम्ब परिवारा॥ जातें होवै पर उपकारा॥
तातें याकी सेवा करहू॥ गृहस्थ धर्म सो हिरदे धरहू॥ ॥

करौधर्मजनिदेरलगावो ॥ फिरिऐसो औसरनहिं पावो ॥

दो० सुनतकपोतीकेबचन कीनकपोतबिचार ॥
मैंपक्षीमानुष्ययह किमिपोषौं यहिबार ॥
असकहिउतंस्योबृक्षतेगयोबधिककेपास ॥
सनमुखह्वैश्रद्धासहितकीन्हौंबचनप्रकास ॥
मोकोंआज्ञादेहुकछुसोइकरौंयहिबार ॥
धन्यभागमेरेअबजोतुमआयेद्वार ॥ ॥

चौ० सुनिकिरातबोलाअसिबानी ॥ अहोकपोतसुनहुँसुखदानी ॥
मोकोंशीतसतावैभारी ॥ सोकाहूबिधिदेहुनिवारी ॥ ॥
तबकपोतचढ़िचहुँदिशिदेखी ॥ बरतबृहदइकपुरमेंपेखी ॥
बिहँगचावकरिपहुंचोजाई ॥ जरतसमाधिगहिलायोधाई ॥
भोंभउजारिभूमिमेंडारी ॥ तामेंअगिनिदईपरजारी ॥ ॥
औरौपातसूखतरुकेरे ॥ चुनिचुनिलाइअगिनमहँगेरे ॥
ताप्योबधिकशीतभयोनाशा ॥ चेतनुह्वैपुनिबचनप्रकाशा ॥

दो० परउपकारीबिहँगतैं शीतनिवारेमोर ॥
अबकछुभोजनदीजिये छुधासतावैघोर ॥

चौ० सुनिकपोतमनकीनबिचारा ॥ हमहैंपशुपक्षीअवतारा ॥
चरिचुनिकैनिजुपेटहिभरहीं ॥ परउपकारकौनबिधिकरहीं ॥
धनिवैमनुष्यबहुतसुखडारैं ॥ हमहमआपनओदरपसारैं ॥
भयोकपोतखेदउरभारी ॥ बिनवितगृहकोअसबउजारी ॥
भवनकूपकुमकुटुम्बबिलासा ॥ होइपापजनजाइनिरासा ॥
रुदनकपोतकियोबहुतेरो ॥ केहिबिधिहरौंदुःखयाकेरो ॥
शोचतहीमनकीनबिचारा ॥ येहिबिधितेचहिपरउपकारा ॥
धर्मसधैतोकरौंउपाई ॥ हर्षिबधिकतेबोल्योजाई ॥ ॥
धीरजधरौअतिथमनमाहीं ॥ देतअहारदेरअबनाहीं ॥

दो० करि परिकर्मा अग्निनिकों कूदि परयो ता बीच॥
यह सब कौतुक देखिकै बधिक कियो सिर नीच॥
सो० पूरब पुराय प्रताप उदै भयो बैराग तेहि॥
लाग्यो करन कलाप मो सम मन्द न बुद्धि कोउ॥
चौ० धन्य धन्य पक्षी तन तेरो॥ धृग जन्म मम मानुष केरो॥
नरतन लहि का कीन्ह कमाई॥ पाप करत सब बयस गंवाई
कबहूं कछु सुकृत नहिं कीन्हों॥ नहिं काहू कर दुख हरि लीन्हों
धृग धृग मोकों बारहिं बारा॥ धनि बिहङ्ग जेहि धर्म बिचारा
मैं जो कियो प्रतिपालक मारी॥ अबत पकरि सब देहौं जारी
अस कहि डारयो जारहि फारी॥ तुरत बिहङ्गिनि दीन निकारी
दो० छूटि कपोती फन्द सों ऐसे करत बिचार॥
पति बिन जीवन नारि को जग में बृथा निहार॥
चौ० यों कहि गिरी अग्नि महं सोई॥ भई सती साँची यह जोई
मध्य अगिन महं दीख बिमाना॥ पति ता बीच बैठि जिमि भाना
बिहंगिनि को तनु पलटि जो गयऊ॥ ताहू केर दिब्य बपु भयऊ
पति लखि भयो गरे लगाई॥ गयो दुःख सन्ताप नसाई॥
स्वक दुख कीन्हों धर्म हेता॥ सुख जो भयो गने को तेता॥
ताते धर्म कीजिये भाई॥ या मैं जनि रहिये कदराई॥
नारि पुरुष दोउ चढ़े बिमाना॥ गगन उड़े मगन मन जाना
जय जय देव किहिनि हरषाई॥ सत्य लोक तहँ ते खेनि जाई
दो० कबरा कबरी की कथा भई कही मैं सोय॥
बधिक हाल बरनौं बहुरि सुनि राखो हिय जोय॥
चौ० बधिक बिपिन तप कीन्हो भारी॥ मगन ध्यान तन सुरति बिसारी
इक दिन अग्नि लगी चहुं पासा॥ बधिक देह जरि बरि भइ नासा
अघ जो रहे जरे तन सङ्गा॥ बधिक सो राच्यो हरि के रङ्गा॥

दिव्य बिमान पारष दलायो॥ तापर चढ़िकर स्वर्ग सिधायो
कपटी कुटिल कीर अघ धामा॥ सज्जन सङ्ग लहो बिश्रामा
गृस्त धर्म जस तस यह गावा॥ सुनि दूतन अति सै सुख पावा
कह यम चरणा चार सिर नाई॥ अब हम मृत्यु लोक कहँ जाई
कौने ठौर जाइ हम रहिये॥ कहाँ न जाय कृपा करि कहिये॥
बोले यम जो पूँछेउ आई॥ तुमहि देहुं अस्थान बताई॥ ॥
जे नर हरि पूजन मन धरहीं॥ लै चरणोदक भोजन करहीं॥
कथा सुनैं हरि कीरति गावैं॥ ठाकुर द्वारे मैं नित जावैं॥ ॥
कुटुम्ब सहित गुरु साधुन सेवैं॥ क्षुधित देखि तेहि भोजन देवैं

दो॰ हरि गुरु दासन ते रहैं साँचो निह छल जौन॥
तिन के ढिग जनि जाय हू दिहौ त्यागि ये भौन॥

चौ॰ पिता अवज्ञा पुत्र न करहीं॥ द्वारे अतिथि बिमुख नहिं फिरहीं
यज्ञ होम करि बिप्र जिमावैं॥ सन्तन की संगति चलि जावैं॥
बेद बचन राखैं बिश्वासा॥ इत नै ठौर तुम्हार न बासा॥ ॥
अस अस धाम त्यागि तुम देहू॥ बसौ जहाँ सोऊ सुनि लेहू
जहाँ न कथा राम की होई॥ हरि की भक्ति न जानै कोई॥ ॥
पुत्र न मानै पितु की सीखा॥ जेहि घर लहै न भिक्षुक भीखा
कराटक बृक्ष होइ जेहि धामा॥ तहाँ जाइ तुम करौ मुकामा
जिव हिन्सा जाके घर होई॥ मदिरा मांस मीन भखै जोई॥
हरि तजि पूजै भूत पिशाचा॥ बेश्या रत कह सत्य न वाचा॥
अस नर जहं तहं बसिये जाई॥ मरे नर्क महं डारयौ लाई॥ ॥
सूने भवन दीप नहिं बरई॥ गणिका आय नृत्य जहँ करई॥
गृह जूठनि जाराल्प टाना॥ पर्व परे नहिं देवैं दाना॥ ॥
सुता पराई घर मा आवे॥ रहै निरादर दुख जहँ पावे॥ ॥
पर बपरे भौगें जो नारी॥ बसहु जाइ अस भवन बिचारी

बासी अन्न जो दिन प्रति खावैं। जेहि गृह सन्त न आदर पावैं
कलह होइ जहं सांझ सकारे॥ साधु विप्र जे करैं दुखारे॥ ॥
बिना दीप निशि भोजन खाहीं॥ बसहु दूत तिन के घर माहीं
दो० मात पिता कहं देहिं दुख करैं कहैं जो थाम॥
तहां बसो तुम जाइ के जे न भजहिं सियराम॥
चौ० अपुभक्त घर साकट नारी। सुत कलत्र सब मांस अहारी
तिनका छुवा जो भोजन खाई। भक्ति धर्म सब ही घटि जाई
अवसि बसो तिनके गृह सोधी। जे सतगुरु ते भये विरोधी॥
छोड़ि के रहैं जो नारी॥ वह सासु से लड़ै प्रचारी॥ ॥
मरघट चारि पन्थ जो होई॥ अजया पुत्र रहैं जहं सोई॥
ये अस्थान कहे मैं बरनी॥ औरौ लेहु जानि लखि करनी॥
धर्मराज के बचन सोहाये। सुनि यम दूतन के मन भाये॥
गी० छं० भयो सुनत यम दूत पुर बिधूत जो बरगान कियो।
उठि नाइ शिर मन मुदित है सब फांस मुगदर करि लियो॥
यह दूत यम सम्बाद बरनौ सुनैं जे अरु गाइ हैं॥ तेहि भूत प्रेत पिशाच यम के दूत नाहिं सताइ हैं॥
दो० लक्षण धर्म अधर्म के ऊंच नीच जे आहिं॥
जन रघुनाथ बिचारि कछु लिखे ग्रन्थ के माहिं॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत गृह धर्म यम दूत कथा बर्णनो नाम दशमोऽध्याय १०
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
नासकेत भारत्थ की कहौं इतिहास बखानि॥
धर्मराज निज गणन ते बोले निकट बोलाइ॥
गंग यमुन के बीच इक द्विज तेहि लावहु जाइ॥
चौ० जासु गिरि ढिग बस्ती आही॥ तामें बिप्र रहत है वाही॥ ॥

नामशालमलिताकोजानौ॥ गोत्रअगस्त्यकेरयहिंचानौ॥
पूरराआयुभईसबताकी॥ लावहुबेगिनहींअबबाकी॥
सुनियमदूतसकलहरषाने॥ निजनिजबाहनसबनपलाने॥
कोइकूकरसूकरपरकोई॥ करमेंगुर्जमथानकसोई॥
कोईचलेमहिषचढ़िबीरा॥ बड़े२दसनलिहेधनुतीरा॥
कोइखरपरआरूढ़पिछाना॥ कारीदेहसुमेरसमाना॥
कोइसुतरापरकिहेसवारी॥ ठाढ़ेकेशगदाकरधारी॥
कोईसिंहचित्ताचढ़िधाये॥ लोहितलोचनभौंहचढ़ाये॥
कोइबसहापरआसनकीन्हे॥ फाँसीअरुमुद्गरकरलीन्हे॥
यहिभांतिनयमदूतसिधाये॥ बसतबिप्रजहंतेहिपुरआये॥

सो० सोइगोत्रसोइनामदूसरद्विजतामेंरहत॥
यसघुसिगेतेहिधामडारिफांसत्रासनलगे॥

दो० उभैघरीकेबीचमहँमारिलिहिनिद्विजसोइ॥
मुश्कबाँधिलैचलतभेरहेकुटुम्बीरोइ॥
तातमातसुतभ्राततनग्रामधामधनजोइ॥
सबजहँकेतहँईरहेसंगचल्योनहिंकोइ॥

चौ० भूसुरकहआगेकरिलीन्हा॥ यमपुरओरपयानाकीन्हा॥
मृत्युलोकतेयमपुरजानो॥ सहसछियासीयोजनमानो॥
आठठौरतेहिमारगमाहीं॥ अतिशेकष्टहोतसुखनाहीं॥
प्रथमेदुइसहस्रमगजोई॥ तामेंदुखसुखकछुनहिंहोई॥
एकसहसयोजनतेहिंआगे॥ सिंहबहुतलखिअतिभैलागे॥
जेबैठेसाधनकेमाहीं॥ तिन्हेंदुःखलहंव्यापैनाहीं॥
योजनपांचसहसअसहोई॥ कांटेपरललोहसमसोई॥
पायनमेंसोचुभिचुभिजावैं॥ तामेंप्राणीबहुदुखपावैं॥
गजरथबाजपालकीदीन्हा॥ तेनरतेहिचढ़िजातेचीन्हा॥

उभै सहस योजन यहि भाँती ॥ बारू तपत रहत अति ताती ॥
सो पर दान दिहिनि जिन लोगा ॥ तिन का तहाँ न ब्यापै सोगा ॥
योजन द्वादश सहस अगारा ॥ परत बिषम खाँड़े की धारा ॥
एक कर दान काम तहँ आवै ॥ नाहित नर अति सै दुख पावै ॥
आगे योजन आठ हजारा ॥ मिलत तहाँ जल गहिर अपारा ॥
मही दान दीन्हे सुख पावै ॥ उतरत पावन मैं बुड़ जावै ॥ ॥
योजन तीस अगारू जाई ॥ अंधकार तहँ अति दुख दाई ॥
दीप दान तहँ कामैं आवै ॥ ठाकुर द्वारे जौन बरावै ॥ ॥
की ब्राह्मण घर की सग माहीं ॥ साधभवन की तुलसी पाहीं ॥
तीरथ माहिं कथा के नेरे ॥ बारि दीप ते जाहिं उजेरे ॥ ॥

सो० आगे योजन आठ महा भयानक मग मिलत ॥
चढ़त उतर के घाट होत तहाँ प्राणी बिकल ॥

दो० तेहि के आगे मिलत है योजन सहस अठार ॥
तपत भानु दस शीस पर तहँ अति दुःख अपार ॥

चौ० तेहि मारग में सो सुख पावै ॥ कुवाँ बावली ताल खोदावै ॥
की पौसरा दीन बैठाई ॥ की ठाकुर द्वारे पहुँचाई ॥ ॥
अरु मारग में ब्रक्ष लगावै ॥ ऐसा दान काम तहँ आवै ॥
सहस छियासी योजन येही ॥ पृथक २ देख्यो द्विज तेही ॥
आगे जाय यमपुरी तीरा ॥ देखो तहँ एक नदी गँभीरा ॥
नाम तासु बैतरनी आही ॥ मज्जा रुधिर भरा तेहिं माहीं ॥
गोजर बीछि सर्प अरु कीरा ॥ उतरत पापी पावहिं पीरा ॥
सौ योजन की चाकल सोई ॥ देखत प्राणी बिकल तहँ होई ॥
जो अपने स्वामी को मारै ॥ कन्या कामिनि द्विज संहारै ॥
जीव बधै अरु सबै सतावै ॥ पुर जंगल महँ आगि लगावै ॥
तिन्हें प्यास लहँ लागै भाई ॥ रक्त पीब सोइ पीवैं जाई ॥ ॥

दो० अग्नि दग्ध अघहारी मदपिया ज्वारी चोरकसाय॥
बटपारी जो घातकी दुख पावत अधिकाय॥
कोउ उकुस्तबड़त कोऊ लहरि संग बहि जात॥
काहू बीछी सर्प बहु क्रीड़ा नोचे खात॥ ॥
सो० जो कोउ पापी होय ताहि रुधिर की लखि परै॥
पुरायवान कह सोइ देखि परै घृत छीर की॥
छं० होम यज्ञ व्रत कीन दीन जिन अन्न के दानहिं। पूजे द्विज चपुराग किये तीरथ अस्नानहिं॥ पुरट दान पट दान तुला गज बाजि जो दीन्हों॥ अ ज्य मिठाई क्षीर दही घी धी दत कीन्हों॥ सन्त चरण में प्रीति जिन गुरु दिक्षा लियज्ञा-नि सुख। ते वैतरणि शैल चढ़ि उतरि जात नहिं होत दुख॥
चौ० जिन गोदान दीन्ह संसारा॥ पकरि पूछ सो हो वैं पारा॥
यहि बिधि नदी उतरि द्विज पाई॥ पुरह यमपुरी देख्यौ जाई॥
जोजन सहस तासु बिस्तारा॥ तामें द्वारे चारि निहारा॥ ॥
पूरब उत्तर पश्चिम जानो॥ चौथा दक्षिण द्वार पिछानो॥
धर्मवान जो प्राणी भयऊ॥ सो तौ तीनि द्वार है गयऊ॥
दक्षिण द्वारे मे सो जाई॥ जो नर पाप कीन्ह अधिकाई॥
बिप्र साधु सुरभिन दुख दीन्हा॥ अरु विश्वास घात जिन कीन्हा॥
दुष्ट बड़े तन मन दुखदाई॥ सब जीवन की तकैं बुराई॥
चोरी करैं चौपया मारैं॥ पक्षी पकरि फन्द में डारैं॥ ॥
कन्या बेंचि द्रव्य जो लेहीं॥ छल करि कै काहू विष देहीं॥
हरि ते विमुख सदा जे रहईं॥ काम क्रोध तस्ना बस वहईं॥
वेद पुराण शास्त्र नहिं मानै॥ गुरु ते कपट सयान पठानैं॥
दुखी दीन कहं आपु सतावैं॥ झूंठी साखि भरन जे जावैं॥
साधु ब्राह्मण सेइ न नाहीं॥ किहिनि दान पर्व के माहीं॥

अस प्राणी दक्षिण दिशि जावैं। यमकिंकर तेहि बहुत सतावैं
दक्षिण द्वार गयो द्विज सोई। जाय साल मलि हेरयो जोई॥
दो० तहाँ सिंह बहु स्वान वृक सर्प गीध अरु भाल।
अन्धकार नहिं जान कोउ राति दिवस का हाल॥
नर्क हजारन हैं जहां परे पतित रह रोई॥
त्यों त्यों मारें दूत गिर रक्षक तहाँ न कोइ॥
तिन में बड़े जे मुख्य हैं नर्क अठारह जानि॥
भिन्न २ का नाम अब सब के कहौं बखानि॥
पङ्कजवाटिका छं० प्रथम मैं इक कुम्भीपाक जानि। अति
शै दुखदाई ताहि मानि॥ जो विप्र गऊ पशु पक्षि मारि। ब्रह्म
चारि को तप देहि टारि॥ अरु दान देत हटकै जो नीच। सो प-
रत नर्क कुम्भी के बीच॥ है कुम्भ सरिस मुख छोट जासु॥
षोड़श योजन बिस्तार तासु॥ तामें मल मज्जा अति निहा-
रि। दुख पावत पापी नर रु नारि॥
कलहंस छं० दूसर नर्क अवीचि नाम। तामें पल नाहीं
है अराम॥ गुरु अरु कन्या बधै कोइ। भक्ष्य अभक्ष्य जो
खात होइ॥ जो पाहुन आवैं निकेत तेहि न करें सन मान हेत॥
नर्क अवीची परत सोइ। नर नारी चाहे सो होइ॥
हरिगीतिका छं० अब नर्क तीसर नाम रौरव है भयानक
सो महा। तेहि देखि डर पत जीव बारू मय सरह ती है त-
हां॥ पग जरत प्राणी करत रोदन दौरि चहुं दिशि जाव-
हीं। अति होत व्याकुल सकइ छण विश्राम नाहिन पावहीं॥
तोटक छं० जिन राज बिषै नहिं न्याव कियो। बिन औगु-
न भर्जहि दंड दियो॥ जिन ब्राह्मण वेद पढ़े जु भले। तेहि
मारग आपु सो नाहिं चले॥ के हैं आरत आइ के सम्म करी॥

गृहदेह बताइ सुवित्तहरी। धरि पाखण्ड रूप फिरै जग में।
हरिविमुख सो बूड़ि रहै अघ में॥ जप संयम पूजन नाहिं करैं।
तप तीरथ यज्ञ न ध्यान धरैं॥ व्रत दान कभू जे ना करते। त-
मरौरव माहिं परैं नरसे॥

चौ॰ चौथ नर्क गुरु जिमि है नामा॥ गुरुरत अप्रम श्रोदत है तामा
सो काहू की माँ जी मारै॥ अरु काहू का बुरा बिचारै॥ ॥
घर गुरु लै राजो लोह चारोंयै॥ गुरुजिम नर्क सोई दुख पावै
पंचवाँ कूप नर्क तहँ अहई॥ तामें प्रानी अति दुख लहई॥
कूप समान बनानि तेहि केरी॥ पीव रक्त कृमि तामें हेरी॥
तासु निकट बैठे बहु कागा॥ बीछू २ बीच भयानक नागा॥
परै जीव जबहीं उतराहीं॥ मारैं बीच रसातल जाहीं॥ ॥

दो॰ रामभक्ति जिन नहिं करी गुरु दिक्षा नहिं लीन॥
रामनाम सुनि स्यों नहीं साधुसङ्ग नहिं कीन॥

सो॰ मानुष देही पाइ। कह्यौ सुन्यौ नहिं राम यश॥
दासी संग कराइ। कूप नर्क महँ सोइ धरत॥

चौ॰ छठवाँ कीट नर्क है जानौ॥ तामें कीड़ा भेद बखानौ॥ ॥
पापिन के तन चोटे सोई॥ तामें त्रास अधिक ही होई॥ ॥
मारि मारि मक्खी जिन खाई॥ है कृमि रहैं निरे मँह जाई॥
भलो वस्तु जो छिपि के खावैं॥ अरु काहू को अन्न चोरावैं
दुखी दीन लखि दया न करहीं॥ कीट नर्क महँ सो नर परहीं
सतवाँ असी पत्रवन नामा॥ ताके पत्र दुधारे स्यामा॥
पापिन को तामें घसिलावैं॥ कटि २ जाय बहु रिजुरि आवैं
त्राहि २ लहैं जीव पुकारैं॥ त्यों त्यों दूत परिघ सिर मारैं॥
जिन कोउ अपने मित्रहि मारा॥ कादिन हरि अरु ब्रह्मगवाँरा
कामी कुटिल अकारन क्रोधी॥ परनिन्दक गुरु संत बिरोधी

सखावरतभङ्ग जेकरहीं॥ असीपत्र महँ सो दुख भरहीं॥
दो० अठवाँ दारुण नर्क हैं जेहि देखत भय होय॥
जे कामी हैं नारि नर तहँ पावैं दुख सोय॥
बहुत खम्भ नर रूप तहँ बहु हैं नारि प्रकार॥
बरत रहत एक रस सदा दोउ दिश काष्ठ अपार॥
चौ० जो नर परत्रिय गरे लगावैं॥ पकरि खम्भ महँ ताहि भेटावैं
कहैं कि चीन्हि लेहु सोइ नारी॥ जेहि के सङ्ग कियो सुख भारी
जे त्रिय आन पुरुष सङ्ग करहीं॥ तहाँ जाय तेऊ दुख भरहीं
परवी परै बरत वा होई॥ तेहि दिन मैथुन करै जो कोई॥
सो उ खम्भ महँ जात भेटावा॥ यम के दूत अधिक तेहिं तावा
कहैं कि तुम मानुष तन पायौ॥ करि २ मैथुन ताहि गवाँयौ॥
तुम ते खर श्कर भल जानी॥ बरष २ सन्तोषै आनी॥ ॥
हरि की भक्ति किये सो नाहीं॥ सहौ कष्ट अब दारुण माहीं
नवम नर्क निरस्वास कहावै॥ तामें स्वास न घूटी जावै॥
सो० ब्राह्मण विधवा नारि। सुरु गुरु अरु शचोरावहीं॥
कहैं न वचन विचारि। परै सोइ निरस्वास महँ॥
चौ० दशवाँ कुलशंकुल है भारी॥ तामें सो अति दुख अधिकारी
अगिन समान जरत द्रुम रहहीं॥ दश योजन के चाकल अहहीं
योजन पाँच घेर विस्तारा॥ एक एक का न्यारा न्यारा॥
बंधे जँजीरन में तहँ पापी॥ हाय हाय बोलैं सन्तापी॥
ब्राह्मण क्षत्री शूद्र रु बैसा॥ भारी पाप कीन जिन जैसा॥
मारैं जीव मास ले खावैं॥ ते नर यही नर्क दुख पावैं॥॥
ग्यरहों नर्क सोई मुख नामा॥ सूची छेद परै जिव तामा॥
जिन सतगुरु की निंद्या कीन्हा॥ संतन दोष लगावत हीना
तीरथ वहि मुख वेद पुराना॥ सबहिन की निंद्या जिन ठाना

नारि बधै अरु बिप्र सतावै ॥ सो सूची मुख नर्कहि जावै ॥
बरहों घोर नर्क अस नाऊं ॥ सो विकराल भयानक ठाऊं
तामें सिंह स्यार अहि शूकर ॥ भाल भेड़िया काग रु कूकर
जिन रसना हरि नाम न लीन्हा ॥ कटुक बाद साधन ते कीन्हा
कबहूं न कोमल बचन उचारे ॥ तेहि मुख नाग लगावत कारे
सन्त दरश जिन कीन्हों नाहीं ॥ निरखि धरयो नहिं पग भू माहीं
पर त्रिय देखि कुदृष्टिहि झांके ॥ तिन की काग निकारत आंखें
जो कोउ पुर में आगि लगावै ॥ तिन का मांस भेड़िया खावै ॥
जो कोउ बन पशु पक्षी मारे ॥ ता का पेट सिंह धरि फारे ॥ ॥
जो कोउ काहु इ मारै भाई ॥ शूकर ताके हाथ चबाई ॥ ॥
जिन हरि चरित सुने नहिं जाना ॥ सीस औटि डारैं तेहि काना
जिन नर आमिष अहारै कीन्हा ॥ गोला लाल पियावैं लीन्हा
पीवत गोला करैं पुकारा ॥ त्रास देइं यम दूत अपारा ॥
तब तो भख्यो पराया मांसू ॥ अब कत रोवत बड़े बड़े आंसू
कांट चुभत अपने दुख मान्यों ॥ पर को संकट देत न जान्यों

दो० बिन दावानित रहत जे फूल पात चुनि लेत ॥
तिन्हैं मारि भक्षण कियो केवल रसना हेत ॥

चौ० कर्म कियो जस भोगो सोई ॥ नर्क अघोर माहिं अस होई
तेरहें शूली नर्क कहावै ॥ शूली सम दुख तामें पावै ॥ ॥
जो नर पाप करै अधिकाई ॥ करि शिकार मृग मारे जाई ॥
नाहक नर सूरी धरि दीन्हें ॥ जिन बन माहिं ठगाही कीन्हें
काहू को शस्त्रन ते मारे ॥ तेहि यम शूली नर्क में डारें ॥
नर्क चौदहों हैं दुखखानी ॥ अग्निकुंड तेहि नाम बखानी
तामें अग्नि बरै अति भारी ॥ जाहि देखि डरपै नर नारी ॥
जरैं जीव बहु ताके माहीं ॥ हाय हाय बोलैं घिघि याहीं ॥

कोउ कहैं मैं बहु तपियासा॥ जलपियाइ फिरि दीजे त्रासा
दूत कहैं सुनु रे मति हीना॥ तू तौ दया धर्म नहिं कीन्हा॥
प्यासे को जल नाहिं पियायो॥ भूखे को नहिं कबहुं खवायो
साधु अहारा अरु गुरु भाई॥ पूज्यो नहीं कबहुं घर लाई
ग्रहन परे नहिं दीन्हें दाना॥ पेट भस्यो नित बैल समाना॥
धृग धृग रे मूरख नर लोई॥ अपना किया भुगत अब सोई
पानी मांगत कोने ज्ञाना॥ प्रथमे अग्नि कुंड नहिं जाना

दो० नर्क धन्द्र हों है जहां तेल जंत्र ता नाम॥
कोल्हू की सम सो बना डरत देखि नर बाम॥

चौ० जो चोराइ पर खेत हि काटे॥ निस दिन मात पिता कहं डांटे
भूमि पराई लेइ छिनाई॥ पर पत्नी बरबस लै जाई॥
तुला चढ़ाय घाटि जो देवे॥ तेल यंत्र सो बासा लेवे॥ ॥
सो रहों नर्क नाम दुख दाई॥ तामें तो है दुख अधिकाई॥
जो मद पीवे आमिष खावे॥ झूठे काहू दोष लगावे॥ ॥
पर अंगुरा जो करे उघारा॥ दुखी दीन कहं नाहक मारा
भक्ति को डावे निगुरा करई॥ कहे कहाय जो पर हरई॥ ॥
दुखद नर्क में सो दुख पावे॥ जो नर कीन्ही कृत बिसरावे

सो० नर्क सत्रहों जानि। अन्धकार जेहि नाम है॥
महा भयानक मानि॥ तामें कछु सूझै नहीं॥

चौ० जेरा कस अति निरदै कोही॥ तन अभिमानी हरिजन द्रोही
गैर बिराने करद चलावै॥ अन्धकार दुख सोई पावै॥
नर्क अठरहों है दुख धामा॥ हवे बिलोचन ताकर नामा
तामें नर अन्धा ह्वै जावे॥ भर्मत फिरे कष्ट बहु पावै॥
जो मग चलत जीव नहिं पेखे॥ क्रोध दृष्टि है साधु हि देखे
अरु पर नारि कुदृष्टि निहारे॥ कराटक तो रिबाट में डारैं॥

बिधवानारिनयनजोआंजै ॥ खाइपानपरयतिकेकाजै ॥
जोठाकुरद्वारेनहिंजावै ॥ साधुगुरूलखिशीशनवावै ॥
अन्धेकोदेवैवहंकाई ॥ परैविलोचनमेंसोइआई ॥

दो० नर्कअठारौंसालमलदेखिडस्योमनमाहिं ॥
तनकांपतसबकछुबचनमुखतेंआवतनाहिं ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ
दासरामसनेहीकृतयमपुरीबर्णनोनामएकादशोऽध्यायः११॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि ॥
बरणौंकर्मविपाककछुसोइइतिहासबखानि ॥

चौ० फिरिदूसनआगेकरिलीन्ह्यो ॥ यमकीसभाठाढ़तहँकीन्हा
बिप्रबिलोकेउधर्मकरूपा ॥ मारकंडेयसमतेजअनूपा ॥
रतनजटितशिरमुकुटबिराजै ॥ श्रुतिकुण्डलगलमालसुछाजै
चारिवेदकेपढ़नेवारे ॥ औरमिमांसाजाननहारे ॥ ॥
बहुतशास्त्ररचिआपुबनाये ॥ धर्महेतजगमाहिंचलाये
बैठेसिंहासनहरषाहीं ॥ शोभाकान्तिअधिकतिनमाहीं
औरऋषीश्वरबहुसतिबादी ॥ धर्मराजदियतिनकोगादी
जीवहिंजबयमगणलैजावैं ॥ ठाढ़करैंरविसुतकेठावैं ॥
कहैंमहिशेषवहांलैजावो ॥ चित्रगोपितेंयाहिदिखावो

दो० गुप्तप्रकटपुनिपापजोकरतजीवजगमाहिं ॥
सोसबलिखि२धरतहैंतनकोचूकतनाहिं ॥

चौ० पापपुण्यतेसबकहिदेहीं ॥ रविसुतनिजकाननसुनिलेहीं
धर्मसहिततबन्याउचुकावै ॥ जोजसकरैसोतसफलपावै
पापिनकोलैनर्कमेंडारैं ॥ यमकिंकरशिरमुद्गरमारैं ॥
धर्मवानतेस्वर्गसिधावैं ॥ आगेबाजनबाजतजावैं ॥ ॥
पहुँचेंस्वर्गनिकटजबजाई ॥ आगेमिलैंअप्सराआई ॥

नृत्य करत भीतर लै जावैं ॥ सिंहासन ऊपर बैठावैं ॥ ॥
कहैं कि हम हैं तुम्हरी दासी ॥ रहिये सकल बने घर वासी ॥
देव देव ह्वै करै निवासा । हे माले सुख भोग बिलासा ॥
अब सो पुण्य कहौं समुझाई । जासे बसत स्वर्ग महं जाई ॥
जिन नर दान द्विजन कहं दीन्हा ॥ काहू कर अपमान न कीन्हा
सब जीवन की दया बिचारें ॥ काहू दुख देवें नहिं मारें ॥
वेद पुराण सुनै सुख पावें ॥ कथा कीर्तन में मन लावें ॥
योग तपस्या तीरथ करहीं ॥ संयम सहित धरम अनुसरहीं
मांडे बस्तर घोड़ हाथी ॥ गौ वैं दई बाछुरा साथी ॥ ॥
कन्द मूल फल अन्न जो दीन्हा ॥ विप्र साधु कर आदर कीन्हा
मग में वृक्ष विपुल लगवाये ॥ कूप बावली ताल खनाये
कार्तिक माह वैशाख नहाये ॥ नाग पग सो पर पहिराये ॥
और धर्म बिबिधि बिधि कीन्हा ॥ स्वर्ग माहिं तिन बासा लीन्हा

दो० जो कोइ करै सो आपु को पर को करै न कोइ ॥
अपना कीन्हा पाइ है ऊँच नीच किन होइ ॥

चौ० जिन को उ गुरु ने दिक्षा लीन्हा ॥ मन लगाइ हरि सुमिरन कीन्हा ॥
साधन की सेवा नित करहीं ॥ मुख ले बचन सोठ उच्चरहीं ॥
दान करै सो हरि का अरपै ॥ बोलै सत्य झूठ नहिं जल्पै ॥
करै भांत सत्त सङ्गति जावैं ॥ अस नर लै बैकुण्ठ सिधावैं ॥
तिन को धर्म तोर नहिं न्याऊ ॥ जे हरि भक्ति करैं सति भाऊ ॥
या बिधि धर्मराज के पासा ॥ जाइ न रुकौ हरि का दासा ॥
पापिन को यम यहि बिधि करहीं ॥ प्रथमै नर्क माहिं लै डरहीं
बहुत काल लगि नर्क भोगाई ॥ फिरि जग में जन्मावत भाई
पूरब जिन जस कीन्हें कर्मा ॥ तैसा पाइ लेत जग जन्मा ॥
जो नर ब्राह्मण हत्या कीन्हा ॥ जन्म निपुत्री सेहि जग दीन्हा

गऊधापते होइ मलेक्षा॥ जो नाहिं करै जीव की रक्षा॥ ॥
जो काहू का सोन चोरावै॥ जन्म पाय कुष्टी है जावै॥ ॥
मदिरा पीन्है मेडुक होई॥ मारे पंथ रोग युत सोई॥ ॥
द्विज पुस्तक पढ़ि नाहिं बिचारा॥ बहुत रहे विषया की धारा
हरि की भक्ति करी सो नाहीं॥ तेई होत सर्प जग माहीं॥ ॥
जिन गनिका की संगति लीनी॥ रासभ होत आइ सोइ प्रानी
जो द्विज मास अहारी होई॥ ताको दान देइ जो कोई॥ ॥
दोनो गीदर का तनु धावै॥ पर की निंद्या मुख करि गावै॥ ॥
जिन पल दान दीन अधिकारा॥ पावै बाघ सिंह अवतारा॥
जो कोइ कन्या होती मारै॥ सो गिरगिट की देही धारै॥ ॥
झूठा बाद बिवाद बढ़ावै॥ सो कच्छप की देहीं पावै॥ ॥
देवे योग्य दान नहिं करहीं॥ सो सठ बगुला का बपु धरहीं॥
दान देत जो धर्जै कोई॥ सो तौ लद्दुवा घोड़ा होई॥ ॥
करज खाइ कोई मरि जाई॥ है कै बृषभ भरै सो आई॥
जो साधुन की निंद्या कीन्हा॥ शूकर केर जन्म तिन लीन्हा
जो कोइ धरी धरोहरि नाटै॥ अरु पक्षिन के पर जो काटै
साधहिं दोष लगावै जोई॥ सोइ बिष्टा कर कीरा होई॥
जो काहू का लोह चोरावै॥ होइ नहारु बहु दुख पावै॥
जो काहू को अन्न चोरावै॥ होवै बहिरा सुना न जावै॥

दो॰ ब्राह्मण अरु हरि भक्त कहँ लातन मारै जोइ॥
जन्म पाइ जग के विषे सोई पंगुल होइ॥ ॥

चौ॰ आपु होत गुरु गुरुन कीन्हा॥ सोइ बिलार होत हम चीन्हा
जो नित क्रोधी हरखै नाहीं॥ सोई होत नकुल जग माहीं
दै विश्वास करै दुखदाई॥ सो है कुरंग बस बन जाई॥ ॥
दान देइ पाछे पछितावै॥ सो नर जन्म ... कर पावै॥

जिन कर पूरक पास चोराई। सो शुत्रा होवै सति भाई॥
बैलै बधिया करै करावै॥ सोइ नियुंसकी वा है जावै॥ ॥
जो अन होती करै लड़ाई। सो बन की मारवी है जाई॥ ॥
गुरु आज्ञा का अंश चोरावै। सो मरु देश भुवंग तनु पावै॥
नर तन पाइ करै पर पीरा॥ सो होवै मोहरी का कीरा॥ ॥
ज्ञान पाइ गुरु ते फिरि जावै॥ सो शरीर कोढ़ी का पावै॥
जो संतन की हाँसी करई। जन्म पाय सिरी है मर ई॥ ॥
भीतर कपट उपर ते प्रीता॥ सो पापी धारै तन चीता॥ ॥
पर प्रसदन ते जो व्रति करहीं॥ सो जग माहिं स्वान वपु धरहीं
देखि दोष जो आमिष खावै॥ सो नर गीध केर तनु पावै॥ ॥
पाप सहित जिन दीन्हो दाना॥ सोइ होत छिद्र जग जाना
हरि जन माहिं छूति जिन मानी॥ होत छूछूंदरि सो मल खानी
सो० बिनाल्न गाय भोग। जो नर भोजन करत नित॥
होत तासु तन रोग। जन्म मिलत तेहि काग कर॥
दो० जहं लगि खोटे कर्म हैं सो सब दुख की खानि॥
सोई करि नर परत हैं चौरासी में जानि॥ ॥
चौ० स्वर्गापुर यम सीरा है जावै॥ पुनि सो मृत्यु लोक को आवै
नर तन मिलै तिन्हें अति पावन॥ सुत बनिता धन धाम सोहावन
फिरि धर्म करै स्वर्ग सुख पावै॥ अधरम करै तो नर्क सिधावै
हरि की भक्ति करै नहिं जब लौं॥ आवागवन मिटै नहिं तब लौं
यहि भांति तिन यम लेखा लीन्हा॥ जेहि जस चही ताहि तस दीन्हा
पाछे यम गरता छिजै दिखावा॥ लखि हरि तिन ते बचन सुनावा
रे दूतो मति मन्द अनारी॥ आज चूक सर कियो तुम भारी॥
अस्य नाम द्विज और रहायो॥ ताको सजि या को लै आयो॥
सुनि यम दूतन बचन बखाना॥ धोके नाय इन्हें हम आना

तबधर्मराजद्विजैमनमान्यो॥ मनमेंनिजअपराधपिछान्यो॥
कैसापापी होवैकोई॥ बिनाअवादआवनसोई॥ ॥
यहुद्विजबिनाअवादेआयो॥ असबिचारियमवचनसुनायो॥
दो॰ हेद्विजतोकोदेखिकैलागिदयाअतिमोहिं॥
जोभावैसोमांगुबरआजुदेहुमैंतोहिं॥
चौ॰ कहद्विजजोप्रभुकिरपाकीजै॥ तोमृत्युलोकजानमोहिदीजै॥
जेतनीमारिआयुहैबाकी॥ तेतनेदिवसयहांमोहिराखी॥
अबलगिमैंकछुधर्मनकिहेऊं॥ भूठेजगतमाहिमनदिहेऊं॥
जबतेदेख्योपुरीतुम्हारी॥ नरकनिरखिलाग्योडरभारी॥
तातेअसमतमोसेकहिये॥ जातेफिरितवधामनऐये॥
कहयमपापीपुरायीदोऊ॥ मोरपुरआवतहैसोऊ॥
रामभक्तिजगकरैजोकोई॥ तिनपरमेरादंडनहोई॥ ॥
चक्रएकदिशिरक्षाकरई॥ एकदिशिगरुड़नकबहूंटरई॥
एकओरसबपार्षददौरैं॥ हरिरक्षातिनपरसबठौरैं॥
तिन्हैंबिरोधिकहोकितरहऊं॥ मनक्रमबचनसत्यमैंकहऊं॥
तातेद्विजअबजगमेंजाई॥ सुखप्रदभक्तिकरौहरषाई॥
बिनहरिभक्तिइन्द्रसुखपावै॥ पुरायक्षीणमृत्युलोकहिंआवै॥
रामभक्तकोपातननहोई॥ भक्तिबीजअजरामरसोई॥
सुनिद्विजधर्महिंशीसनवायो॥ तुरतपलटिमृतलोकहिंआयो॥
मृतकशरीरमाहिंपुनिजाग्यो॥ लखिगृहवासिनकोदुखभाग्यो॥
परयोकुलाहलनगरमंझारी॥ सुनतचलेदेखननरनारी॥
भईभीरबहुबिप्रनिकेता॥ आयेचलिपुरवासीजेता॥
पूछनलगेकहांतुमगयऊ॥ केहिभांतिनफिरिआवतभयऊ॥
कहाकालमलयमगराआये॥ महाभयानकरूपबनाये॥
मारिमोहिंयमलोकसिधाये॥ आठौरमगदुखअतिपाये॥

देखिय एक बैतरनी धारा ॥ तामें पीब रक्त कृमि छारा ॥ ॥
गयन यम पुरी दक्षिण द्वारे ॥ तहाँ हजारन नर्क निहारे ॥
तिनमें जीव परे कुल सारा ॥ देखत धीरज भाग्यो मोरा ॥ ॥
दूत हमैं लैगे यम धामा ॥ तिन मोहिं देखत वचन प्रकामा ॥
याके नाम और द्विज भाई ॥ तिहि तजि यहि दीन्हों दुख आई ॥
मोसे कहिन माँगि बरु लीजै ॥ मैं कह हव हुरि जान मोहिं दीजै ॥
और बात इक देहु बताई ॥ जातें फिरि तव लोकन आई ॥
तिन कह रामभक्ति करु जाई ॥ कबहुन नर्क परहु पुनि भाई ॥
जेहि विधि गयन जवन विधि आयन ॥ सो हम तुम ते बरनि सुनायन ॥
जे नर चतुर सुजान सुकर्मी ॥ लागे करन भक्ति मिलि मर्मी ॥
आपु साल मल गुरुहि बोलाई ॥ राम मन्त्र लीन्हो हरषाई ॥ ॥

हरिगीतिका छं० लीन्हो हरषि द्विज मंत्र तारक बहुत विधि उत्सौ कियो ॥ पितु मातु सुत तिय बन्धु कोउ घर रहन साकत नहिं दियो ॥ करि नेम सुमिरैं नाम पूजन ध्यान नित हरि को करैं ॥ सत सङ्ग साधन सब हरि यश कहैं सुनि मन में धरैं ॥

दो० यहि विधि रघुपति भक्ति द्विज कीन्ही अति अभिराम ॥
अन्त समय सब कुटुम्ब लै बस्यो राम के धाम ॥
जन रघुनाथ कलि चारि के करि के रास सति भाय ॥
नालकोन्ह वक्त [illegible] नर तन चोसी जाइ ॥
बहुत जन्म सुकृत किये ताको फल नर देह ॥
कहै रघुनाथ सो पाइ के जन्म सुफल करि लेह ॥
चौरासी लख कोस में एक दरवाजा छोट ॥
ताहि पाइ जो ना कढ़ै तो फिर भरमै कोट ॥
काल सिचानो सिर खड़ो ताहि डरै नहिं नेक ॥

फूलो फिरै समुद्र में करत कुकर्म अनेक ॥
आखिर को फिरना रहै मरना तेहि विशेषि ॥
ताते हरि भजि लीजिये यही लाभ मन पेखि

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदा-
स रामसनेही कृत गृह धर्म कर्म विपाक बर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः १२

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं महभारथ की पुनि इतिहास बखानि ॥
कहहिं सौनक यह जगत में कोउ धनी कोउ रंक ॥
कोइ नीरोगी रोगी कोऊ भूपति भिक्षुक संक ॥
कोउ निसदिन दुख ही सहत कोउ जनमत मरि जात ॥
कोउ जियत बहु काल तक कोउ बिन पुत्र लखात ॥
काहू के जननी जनक मरत बालपन माहिं ॥
सो यह कारण कौन है कहो नाथ मोहिं पाहिं ॥

चौ० सुनि अस सूत बचन अस भाखा ॥ लखि अधिकारी गुप्त न राखा ॥
सौनक जो तुम पूछेउ आई ॥ सो सब कर्म प्रभाव लखाई ॥
कर्म से दुख सुख रोग अरोगी ॥ कर्म तें भिक्षुक भूपति भोगी ॥
कर्म ते मरै बाल पितु माता ॥ और बात कछु नाहिन ताता ॥
एक इतिहास कहौं प्रबगाई ॥ जाहि सुनत बहु ब्याधि नसाई
एक द्विज गुणनिधि नाम सुजाना ॥ सर्ब शास्त्रन को जेहि ज्ञाना ॥
तेहिके एक कन्या भै आई ॥ नाम सुवर्त्ता छबि अधिकाई ॥
चारि बरस की भई कुमारी ॥ तबहीं तासु मरी महतारी ॥
तब गुणनिधि निज मनहिं बिचारा ॥ बिन त्रिय भवन बसब धिक्कारा
कन्या युत सो बनहिं सिधायो ॥ तामें मुनि आश्रम बहु पायो ॥
तिनके ढिग एक कुटी बनाई ॥ रहन लग्यो द्विज अति हर्षाई
करन लागि कन्यहि प्रतिपाला ॥ बिप्र जानि ये बड़े दयाला ॥

बिबिधि भाँति के चित्र बनावै। लाय खिलौना ताहि खेलावै
राखै ताहि प्रसन्न सदा हीं॥ होइ उदास कभू सो नाहीं॥ ॥
मातु हीन अरु बाल कुमारी। तेहि हित द्विज संन्यास न धारी
भई सु बलीं जबै सयानी॥ तब द्विज ब्याह करन मन आनी
इतने माहिं काल धरि खायो॥ मन इच्छा सो करन न पायो
मृतक पिर्ताहि लखि कन्या रोवै। व्याकुल अधिक धीर नहिं होवै
कहै सुबलौ बहु बिधि बानी॥ पिता पिता कहि रोदन ठानी॥
दो॰ मोको तजि कित को गयो अहो पिता परबीन॥
दया वत्सल सब भाँति तुम मैं कन्या अतिदीन॥
चौ॰ अब इत रक्षक कौन हमारा॥ मातु पिता भ्राता नहिं प्यारा
हाय हाय मैं का कर्म कीन्हा॥ ऐसा दुख दयी मोहिं दीन्हा॥
जरौं अग्नि की जल में बहिहौं॥ की चढ़ि गिरि ऊपर मरि जैहौं
पटकैं दोउ कर सिर भू माहीं॥ बिन पितु मात मम जीवन नाहीं॥
सुनि कन्या का रोदन भारी॥ उठि दौरे ऋषि संयुत नारी॥ ॥
सो॰ आंय सब ले तेहि तीर। समझावैं बहु भांति करि॥
धरै न मन में धीर। तात मात कहि सिर धुनै॥
चौ॰ ऋषिपतनी बहु करैं प्रबोधा॥ नहिं उपजै ताके उर बोधा
लखि यम के मन करुणा आई॥ तत क्षण द्विज का रूप बनाई
पहुँचे आइ सुबल ता तीरा॥ कह्यो बचन मृदु सुखद गंभीरा
दो॰ हे कन्या मति रुदन करु धरु धीरज मन माहिं॥
अपने कर्मन केर फल जाय कहूँ सो नाहिं॥
चौ॰ आगे करै सो अब भुगतावै॥ अब जो करै सो आगे पावै
कल्प कोटि तक घटै न सोई॥ अवशि सब भोगब कहँ होई
कर्म बीज हो नीफल अन्ला॥ तेहि निर्धंस होत कोइ सन्ना
ताते कुँवरि न रोदन कीजे॥ पाछिल कर्म कि हौ लस लीजे

कहइ कन्या मांयो प्रभु तोना ॥ पूरब कर्म कीन्ह हम कौना ॥
विप्र कहा सुनु सुता सयानी ॥ प्रथम जन्म तव कहौं बखानी
पूर्व जन्म गणिका तैं अहई ॥ उजयन नगर माहिं घर रहई ॥
सुन्दर रूप नयन चपलाई ॥ जेहि चितवै तेहि लेइ लोभाई
पुर के लोग बहुत बस तेरे ॥ जो तुम कहौ करैं वहि बेरे ॥ ॥
तेहि पुर विप्र रहइ इक जानो ॥ पुत्र तासु विद्वान पिछानो ॥ ॥
पूजा करै धर्म शुभ साधै ॥ पाप कर्म नहिं कछु अवराधै ॥
एक दिवस सो सहज सुभाई ॥ तव द्वारे है निकसो आई ॥
देखि तुम्हैं भूल्यो बुधि ज्ञाना ॥ रह्यौ ठाढ़ लहं मनो देवाना
तब तू जानि ताहि बाल भावा ॥ आदर करि निज ढिग बैठावा
वाकी प्रीति तुम्ही से लागी ॥ मात पिता बनिता निज त्यागी
तेरे बिषै बसै दिन राती ॥ चलत फिरत हिय तोहिं सोहाती
इक दिन तेरे भवन मंझारा ॥ दूसर कामी आइ पधारा ॥ ॥
विप्र शूद्र तें भई जो रारी ॥ शूद्र द्विजै तहं डास्यौ मारी ॥
दो॰ यमकिंकर तेहि लै गये डारेनि नर्क अघोर ॥
शूद्र सुनै भाग तब भई नगर महं सोर ॥
चौ॰ काहू द्विज गृह आइ पुकारा ॥ तव सुत गणिका घर मारा
सुनि पितु मातु नारि दुख पाई ॥ रोदन करत धाम तव आई ॥
पुत्र बिलोकि अधिक दुख पागे ॥ तो को शाप देन तब लागे ॥
तासु मातु बोल्ली असि बानी ॥ पुत्र वियोग न धीरज आनी ॥
हे वेश्या तैं सुत बस कीन्हा ॥ यंत्र मंत्र करि धन हरि लीन्हा ॥
फिर ताको डारे मरवाई ॥ हमकहँ दुख दारुण दिलवाई
पुत्र विछोह कराये मोहीं ॥ मातु हीन होई दुख तोहीं ॥ ॥
दो॰ पिता तासु ऐसो कह्यो बाल अवस्था माहिं ॥
पिता तोर मरि जाइहै जहां हितू कोउ नाहिं ॥

कह्यो भार्य्या पति बिना मोहिं कियते जैस ॥
रह्यौ कुंवारो नाह बिन सह्यौ कष्ट तुम तैस ॥
ऐसे तोको श्राप जो दई तिहूं मिलि जानि ॥
ताते दुख यहि उमिरि में भयो कर्म गति आनि ॥

सो० भले बुरे जो कर्म । बिन भोगे छूटत नहीं ॥
धरै जो कोटिन जन्म संग न छाड़त एक छिन ॥

चौ० सुनत सुबर्णा बोली बानी ॥ द्विज तुम कहा सत्य मैं जानी
जन्म थाकि लो तुम कहि गाथा ॥ जेहि कर्म ते मैं अस दुख पावा
इक सन्देह होत मन मोरे ॥ सो अब पूछत हौं कर जोरे ॥ ॥
मैं हारि के अति अधम अपावनि ॥ बहु नाहन तें नेह लगावनि
बिषै मनोरथ नित अभिलाले ॥ बहु मनुष्य के घर में घाले ॥
जननि जनक कुल धर्म सो त्यागे ॥ जे मेरे संग नेक हु लागे ॥
कहौं कथा सब पापै कीन्हा ॥ भलो कर्म स्वपने नहिं चीन्हा
द्विज कुल जन्म कवनि बिधि पायौं ॥ सब दिन खोटे कर्म कमायौं
अरु तुम दरश दियो किमि आही ॥ सुनि भूसुर बोला सुखपाई

दो० जौन कर्म ते बिप्र की सुता भई तू आइ ॥
दीन दरश मैं पुराय जेहि सुनु सो कहौं बुझाय ॥

चौ० एक बिप्र हरि भक्त सुजाना ॥ समदरशी गुणज्ञान निधाना
गोगज स्वान बिप्र चंडाला ॥ सब में इक दीखै नन्दलाला ॥
जप तप आदि धर्म जो ठानै ॥ तेहि कर फल अर्पै भगवानै
इंद्री जीत धीर मन राखै ॥ झूठ बचन मुख ते नहिं भाखै ॥
काम क्रोध मोह मद त्यागी ॥ रहित लोभ हरि पद अनुरागी
मैं अरु मोर तोर नहिं जानै ॥ दुख सुख को सामान्य पिछानै
नहिं कछु आश्रम बंधन ताके ॥ कुल कुटम्ब कर मोह न जाके
जित चाहै तितहीं बसि रहई ॥ हर्ष शोक नहिं बिसमय गहई ॥

एकदिवस पुरवासा लेवै॥ दूजेदिन नहिं तेचलि देवै॥ ॥
विचरत सहज सुभाय सोहायो॥ एक दिन नगर तुम्हारे आयो॥
देखि स्वेत तब द्वारे माहीं॥ बस्यो सन्त निशि खोरपन नाहीं॥
मैलवसन शरीर कृसान्ना॥ त्यागि दिये भोग जो नाना॥ ॥
आधी रात भई निशि नासा॥ बैठे भजन करैं हरि दासा॥ ॥
दो॰ तेही समय कुलवाल की फेरी पहुँची आइ॥
कह्यो सन्त सो कौन तू सोतो मौन रहाइ॥
चौ॰ तिन्हे उत्तर कुछ दियो न जबहीं॥ चोर रु करयक स्यात बहीं॥
द्विज कछु सोंद वचन समुझाये॥ दुष्टन मन विश्वास न आयो॥
खैंचि चल लिले अपने साथा॥ नहिं कछु दुख मान्यो द्विजनाथा॥
तैं जागे अपने घर माहीं॥ सोर सुनत आइ तिन पाहीं॥ ॥
दीरव मँगाइ द्विजे दिखरायो॥ तब तुम तिनतें वचन सुनायो॥
जो यह चोर होइ सुनि लीजे॥ तो चाहो सो हम को कीजे॥
सुनि तव वचन दिहिन छुटकाई॥ कर गहि तू निज मंदिर लाई॥
चरण पखारि पलँग बैठावा॥ धूप दीप करि पद सिर नावा॥
कह्यो कछुक दिन मम गृह रहऊ॥ पहिरो वसन जौन विधि चहऊ॥
षटरस भोजन करो बनाई॥ जाते देह पुष्ट ह्वै जाई॥ ॥
सुनत सन्त बोल्यो शुभ बानी॥ ज्ञान विराग भक्ति रस सानी॥
दो॰ धन्य मात तव मातु को मोहिं चही कछु नाहिं॥ ॥
तृष्णा सकल सुख जगत के बिनसि जात क्षण माहिं॥
क्षुधा तृषा सुख भोग को कछु इच्छा नहिं मोहिं॥
सहज आइ निकस्यो इहाँ सत्य सुनायो तोहिं॥
चौ॰ तुम समान मैं औरन चीन्हा॥ पर उपकार आजु तैं कीन्हा॥
पर उपकारी धनि नर नारी॥ भवसागर सो होवै पारी॥ ॥
तुमपर तुष्ट होइ भगवाना॥ भेंटे जग कर आवन जाना॥

सोको कछु यहि से नहिं भाई। कहहु सैन निज सेजहि जाई
यहि बिधि संत कह्यो समुझाई। तबै सेठ पुनि बोल्यो सिरु नाई
महाराज मैं धन्नि हौं आजू। दरशन पाइ सरे सब काजू॥
पाप चारि राशी में अधिकारी। जेहि भव तरै सो कहौ बिचारी
कह्यो सन्त भव तरै सो वाही। जो हरि शरण आइ के गाहै॥
काम क्रोध मद मोह निवारै। निर अभिमान दंभ परिहारै॥
तृष्णा लोभ मछरता दहई। इन्द्रिन के मारग नहिं बहई।
थिर सुभाव एकान्त निवासी। दुख सुख सम चित धर्म प्रकाशी
उपजै न ताहि भूतक पहि धानै। मिलै न हर्ष शोक भय आनै
नासवन्त सब जगको देखै। आतम अचल पुरुष दृढ़ पेखै
सम दम शील दया उर राखै। गुरु ते गर्वित बचन न भाखै॥
पर दुख देखि तासु दुख हरई। हरि हरिजन की सेवा करई॥
राम नाम सुमिरै मन लाई। राम छांड़ि चित अन्त न जाई॥
उठत बैठत भोजन पावत। स्वास स्वांस प्रति नाम मे ध्यावत
आन उपाय सकल परिहरई। केवल राम नाम रत करई॥
सो संसार तरै सत्ति मानो। यामें कछु संदेह न आनो॥ ॥
मुक्त होइ भव बंधन छूटै। फिर तेहिं यम किंकर नहिं लूटै॥
तातें तुमहूं येही कीजै। नर तन पाइ सुफल करि लीजै॥
भय निद्रा मैथुन आहारा। सब योनिन में मिलत निहारा॥
हरि सुमिरण याहीते होई। सब योनिन सम ताहि न खोई
दो० ऐसे ताहि उपदेश ही करत भयो भिनसार॥
साधु उठि रमतो भयो धरि हरि पद उर सार॥
चौ० तब ताहिं उदै भयो बैरागा। बिषै बिलास वमन सम त्यागा
धर्म बुद्धि निज हिरदे महं धार्यो। कंचन मृत्तिका सरिस निहार्यो।
तजि घर बन में बासा कीन्हो। राम चरण पंकज चित दीन्हो।

द्विजरक्षा करि हरि को ध्यावे॥ जन्म विप्रकुल तेहि पुनि पायो
प्रथम मैं द्विजन आप जो दयऊ॥ तेहि ते तोहिं दुःख यह भयऊ
संत कृपा यम जालन परेऊ॥ संत कृपा सब पातक जरेऊ॥
संत कृपा ते नर्क न लहेऊ॥ चौरासी बिच नाहिन बहेऊ॥॥
संत कृपा मैं दर्शन दीन्हो॥ पूर्व कर्म तव वरणन कीन्हो॥
यह मैं भेद सकल कहि गावा॥ जो तुम पूरब कर्म कमावा॥
इति श्री बिश्रामसागर सबमतआगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास
रामसनेही कृत सुबती कथा वर्णनो नाम त्रिदशो ऽध्याय १३॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं मिमांसा शास्त्र मत सोइ इतिहास बखानि॥

चौ॰ सुनत सुबती बचन उचारा॥ नाथ शोक तुम मोर निवारा
तदपि सुरति करि दुख ह्वै आवत॥ मोह विवस मन बोध न पावत
ताते बात कहौं अब सोई॥ जाते फिरि मोहिं दुःख न होई॥
कह द्विज सुनु कन्या मन लाई॥ तहं दुख जहं सनेह सरसाई
बिन सनेह दुख होय न कैसे। शुक मूषक सुत सद्ज जैसे॥
सब जीवन में समता आनै॥ शत्रु मित्र मध्यस्त न मानै॥
बपु धरि हानि लाभ जो होई॥ कर्मन के सिर राखै सोई॥
जैसे नारि गौतमी कीन्हा॥ पुत्रशोक तेहि भयो न चीन्हा॥
कह कन्या सुनिये द्विजराई॥ कथा गौतमी की जो चलाई
मैं अज्ञान न ऐसे जानौ॥ तासु कर बिस्तार बखानौ॥॥
बोला विप्र कुंवरि सुनि लेहू॥ कहौं कथा तामें मन देहू॥

दो॰ ज्ञानवन्त धीरज बड़ी दया हृदय बैराग।
नारि गौतमी जानिये हरिपद में अनुराग॥

चौ॰ करै तपस्या बन के माहीं॥ परम कठिन कहि जात सो नाहीं
ताके रहै पुत्र एक जानौ॥ खेलै तहं निर्भे पहिचानौ॥॥

एक दिन एक तरुन शिशु गयऊ ॥ काट्यो सर्प तुरत मरि गयऊ ॥
तहँ इक बांधक दीख यह हाला ॥ डारि फांस पकरयो सो ब्याला ॥
लायो जहाँ गौतमी रहई ॥ तासों बांधक वचन अस कहई ॥
अहै भुजंगी हँ बालक तिहारो ॥ सर्प ने संहारो ॥ यह दु
ष्ट जान्यो ॥ पकरि ताहि आन्यो ॥ तजो नाहिं याको ॥ बल ले
बधों याको कहीं जाहि पोषी ॥ भयो ब्रह्म दोषी ॥

चौ० ऐसे वचन सुने भै कारी ॥ बोलत भई गौतमी नारी ॥
अहो बांधक मैं कहों सो कीजै ॥ अबही छांडि सर्प को दीजै ॥
याहि हते सुत जीवै नाहीं ॥ वृथा धरै क्यों अघ शिर माहीं ॥
कह्यो कीर हिंसक ठग कोई ॥ ताहि बधे कछु पाप न होई ॥
बालक दोषी सर्प अनारी ॥ मैं सो याहि डारि हौं मारी ॥
सुनि गौतमी कही अस बाता ॥ मुये कहा करै तू घाता ॥
कामी क्रोधी हिंसक रोगी ॥ अयशी कृपण दरिद्री सोगी ॥
वृद्ध मूढ़ तस्कर जाके जारे ॥ राज अग्नि जल सिंह विदारे ॥
राम विमुख निन्दक अभिमानी ॥ पापी कोल काल बस जानी ॥
बेद विदूषक हरिजन द्रोही ॥ भुजंग भूत तन पोष क होई ॥
य सब जीव मृतक सम जानो ॥ मुरदे कहा मारनो ठानो ॥
अपने कर्म ते मरयो कुमारा ॥ अपने कर्म तुम जाय निहारा ॥
अपने कर्म सर्प बँधि आवा ॥ जस कीन्हे तिन तैसा फल पावा ॥
परको दुख देवै जो कोई ॥ सोई दुख ताहू कह होई ॥ ॥
बोलै गिरा कूप को जैसी ॥ वाही सम्ब मिलै तोहि तैसी ॥
जो दरपन को थाप उठावे ॥ तैसी थाप ताहि बनि आवै ॥
तैसहि जन सब कर्म किये जैसे ॥ भोगै देह धारि के तैसे ॥
बालक नहीं सर्प ने मारयो ॥ वाके कर्म वाहि संहारयो ॥ ॥
ताहि ते बधिक छांड़ि देय हू ॥ दोष भुजंगहि नाहक देहू ॥

सुनि गौतमी केर अस बैना॥ बोला उरग पाय उर चैना॥ ॥
यामें है कछु दोष न मेरा॥ मैं तो फिरौं मृत्यु का प्रेरा॥ ॥
बालक मोते कई यो बारा॥ भई भेट इहि बिधिन संस्कारा॥ ॥
डस्यों न मैं तेहि सहज सुभाये॥ बिना मृत्यु की आज्ञा पाये
अस सुनि मृत्यु तहां चलि आई॥ बोली बचन सत्य सुखदाई
सो० हौं नहिं खायो बाल। नहीं बध्यो यहि सर्प ने॥
दई जो आज्ञा काल। सोइ करौं मैं आइ के॥
चौ० मैं हौं कालराय की चेरी॥ आज्ञा होइ ग्रसौं बा बेरी॥ ॥
काल कहै ताको मैं खाऊं॥ बिना निदेश निकट नहिं जाऊं
भुजंगप्रयातछं० सुनै बैन ऐसे जबै कालराया। धरी देह-
छबि श्रेउसी ठौर आया॥ कह्यो सर्प नाहीं नहीं मृत्यु मार्यो॥
नहीं रोग कोई जु मैं नाश धार्यो॥ करै कर्म जो जैस तैसा हि
पावै। बिना भेद जाने हमै दोष लावै॥ मरै औ जियै वृद्ध बा-
लक जवाना। सो तो कर्म ही तें सही और आना। कोई कर्म
के के बहुत काल रहै। कोई कर्म कैके अगिनि में नदा है॥ कोई
कर्म कीन्हो हमै जीति लीन्हो। बस्यो बिष्णु के धाम बिश्राम चीन्हो
दो० कोइ कर्म करि नीच ते भये ऊंच कोइ गत्त॥
कोइ बोरत तारत कोई सिरजत पालत हत्त॥
कोइ जल डूबै तरु गिरै अगिनि जरै विष खाय॥
कोई सहस न रोग कोउ सर्प डसे मरि जाय॥
चौ० कोहु सिंह भेडिया खावै। कर्म किहि नितसि मृत्युहि पावै
चित्रकेतु सुत गर्भ जनमा। रानी सकल गिंजाई बनमा॥
पगा तर पीसि गई मरि जोई॥ बिष दै बदला लीन्हि नि सोई
कीर लि ढोह जानु की कीन्हो॥ है सोइ भूमक निंदि बन दीन्हो
दशरथ दुख अंधन क्रो दयऊ॥ पुत्र शोक तनु त्यागत भयऊ

चतुरानन कन्या को धायो॥ तेहि क्रम ते शिव शीश गिरायो॥
बालि हि राम बान ते मार्यो॥ द्वापर में सोइ बदल बिचार्यो॥
कीर भयो द्वापर महँ सोई॥ कृष्ण चरण मार्यो सर जोई॥
गांधारी सुत शत वे मारे॥ कमठ अंड रुज हेत बिदारे॥
कर्म ते इन्द्र भाल भग पाई॥ कर्म तें न्टपवर भयो जटाई॥ ॥
कर्म ते भे न्टप नहुष भुजंगू॥ कर्म ते रबि शशि राहु ग्रसंतू॥ ॥
हरि बिन्द्या ते जो छल कीन्हों॥ तेहि क्रम श्राप जन्म जग लीन्हा
नारद श्राप बिष्णु कहँ दयऊ॥ कर्म ते शंभु लिङ्ग गिरि गयऊ
कहँ लग कहौं कर्म जस कीन्हा॥ तस सब हिन मिलि भोगै लीन्हा
तेहि ते कर्म प्रधान जग अहई॥ दुख सुख जीव कर्म करि लहई

सो॰ सम्पति बिपति कलेश॥ उतपति पालन यश अयश॥
होत कर्म ते तैस। यामें दोष न मोर कछु॥
सुनत काल के बैन। बुद्धि फिरी तब बधिक की॥
भा बिराग उर ऐन छाँड़ि दिहिसि तेहि सर्पे कहँ॥
सर्प मृत्यु अरु काल। जित से आये तित गये॥
भयो बधिक उर साल। कर्म याकि लै सुरति करि॥

दो॰ बधिक गौतमी के चरण पुनि २ शीस नवाय॥
लग्यो योग जप तप करन कुल की रीति गँवाय॥
बधिक गौतमी की कथा भई जौन बिधि जानि॥
सो कन्या तोसों कही मैं संक्षेप बखानि॥
अस ब्राह्मण के बचन सुनि मन में कीन्ह बिचार॥
पुनि कन्या बोलत भई बचन महा सुख सार॥
मेरे मन को दुख हर्यो कर्यो बोध बहु भाँति॥
गयो मोह अज्ञान अब हृदय में आई शांति॥

सो॰ योगी जानत भेव अगिले पीछले जन्म कर॥

सोमैं सो कहि देव। हैं स्वामी तुम कौन हौ॥

चौ॰ कह्यौ बिप्रसुन कन्या बाता॥ मैं हौं यम पापिन दुखदाता॥
मो को दीन दुखी अति देखा॥ कीन्हां बोध आय द्विज भेषा॥
मांगौ बर भावै जो तोहीं॥ अति प्रसन्न जिय जानहु मोहीं॥
कह कन्या पितु मात हमारा॥ सुहृद बंधु सगरो परिवारा॥
बसैं स्वर्ग जब लगि शशि भानू॥ यही मोहिं दीजै बर दानू॥
सवमस्तु कहि यम चलि भयऊ॥ तुरत सुधर्ता यह दृत्ति लयऊ॥
जप तप लागी करन उदारा॥ कन्द मूल भखि भोग बिसारा॥

गीतिका छं॰ बिसराय तन सुख भोग जग के तुच्छ मन में जानि कै। लागी करण हरि भक्ति सुमिरण ध्यान ज्ञान पिछानि कै॥ सब कर्म बन्धन काटि के श्री राम के धामै गई। सुर सिद्धि मुनिगत जौन दुर्लभ सजन करि पावत भई॥

दो॰ आठ पहर चौंसठ घरी तिन में भजिये राम॥
जन रघुनाथ न भूलिये यही सयाना काम॥
यह इतिहास पुनीत मैं बरणों मति अनुसार॥
कहैं रघुनाथ जो उर धरै भवसागर ह्वै पार॥

इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत गौतमी सुवर्ता धर्म प्रसङ्ग बर्णनो नाम चतुर्दशो अध्यायः॥ १४॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा सुखदानि॥
कहौं माघ की कथा कछु अघ बिलास बखानि॥

सो॰ मुनि सौनक मुनि पाहिं। पूछ्यौ दोउ कर जोरि कै॥
दान तपस्या माहिं। अधिक कहा सो बरनिये॥

चौ॰ सुनत सूत बोले हरषाई। सुनि सौनक मैं कहौं बुझाई॥
तप ते दान अधिक है जानी॥ श्रद्धा सहित करै जो प्रानी॥

बहुत कष्ट करि द्रव्य कमावै ॥ तेहि परमारथ माहिं लगावै ॥
ताको यश त्रिभुवन महँ होई ॥ बसै स्वर्ग मंह निश्चय सोई ॥ ॥
जो सुधर्म करि फल नहिं चहई ॥ तो हरि भक्ति परमपद लहई ॥
तापर एक इतिहास बखानो ॥ सुन्दर महा पुरातन जानो ॥ ॥
मुद्गल विप्र एक सुत नारी ॥ बसत रहे कुरु क्षेत्र मंझारी ॥
शीला बीनि विरति अनुसरई ॥ पाख एक अन्न को जोरत रहई ॥
द्रोण सेर जब इकठे होई ॥ पीसि बनावै भोजन सोई ॥ ॥
साधु विप्र प्रथमे भुगतावै ॥ पाछे अपना सब मिलि खावै ॥
यहि भाँतिन बीते बहु काला ॥ द्विज निज धर्म करै प्रतिपाला ॥

अमृतगीतिका एक दिवस ऋषि दुर्वासा ॥ सुनि विमल बड़ाई तासा ॥ तेहि लेन परिक्षा आये ॥ हरि जन का भेष बनाये

मधुभार छं० अरु देह छीन ॥ तन बसन हीन ॥ द्विज द्वार आय ॥ तप को छिपाय ॥ लखि विप्र सोय ॥ अति मगन होय स्वागत कीन ॥ पद धोय लीन ॥ आसन पधारि ॥ आरति उतारि ॥ दोउ पाणि जोरि ॥ बोल्यो निहोरि ॥

चौ० महाराज धनि भाग हमारे ॥ जो निकेत तुम आइ पधारे ॥
जेहि गृह सन्त चरण नहिं आवै ॥ श्मसान सम भूत रहावै ॥
तव दरशन निर्मल मन भयऊ ॥ संचित कर्म सकल अब गयऊ ॥
भोजन रहै सो आगे राख्यो ॥ दीन वचन बहु सुख से भाख्यो ॥
सुनि द्विज वचन गूढ़ सुखदाई ॥ पावन लग्यो संत हरषाई ॥
जेंव चुक्यो कछु जूठ न रहेऊ ॥ सो ऋषि बाँधि बगल में गहेऊ ॥
एको ग्रासन तिन को बाँचो ॥ विप्र प्रसन्न भयो मन साँचो ॥
दुर्वासा चलि भे निज गैला ॥ मुद्गल मन नहिं आयो मैला ॥
षट पखवारे ऐसहि करेऊ ॥ खाइ जाइ द्विज दोष न धरेऊ ॥
और भाव दिन दिन अधिकाई ॥ नेक रूष ताता मन नहिं आई

लखि दु ऐसा दृगुन भावा॥ भीतर बाहेर एक सम पावा॥ ॥
बोलत भये विप्र ते बानी॥ हर्ष सहित निर्मल सुख दानी॥
तोमर छं॰ धन्य तुम जग माहिं। अस दानि दूसर नाहिं॥ निज असन हम को दीन। बड़ दान तुम ने कीन॥ तिहुं लोक में यशतोर। होई बचन फुर मोर॥ अरु विष्णु के पुर जाइ। बसिहो तहां सुख पाइ॥ जो मुनिन दुर्लभ भक्ति। मिलिहैं तुम्हें सो शक्ति॥ अस बचन सुनि द्विजराय। बोल्यो बचन शिर नाय॥
सो॰ अहो सन्त सुख भौन। तुम किरपा जा पर करें॥
मोक्ष आदि सुख जौन। मिलत सहज में आइ तेहि॥
बरवै छं॰ यहि विधि करत बतकही विप्र सुजान। स्वर्ग लोक ते लाये दूत विमान॥ सुर बिमान की उपमा कही न जाय। सात स्वर्ग को विभव जु माहिं लखाय॥ रतन जड़ित अति उज्जल शोभावान। उतर्यो नभ से मानों चन्द समान॥
सुप्रिया छं॰ सुर दूत धुनि बन्दन कही। इन्द्रादि देवन की सही तव हेत जियं आयो भलो। चढ़ि स्वर्ग को अब हीं चलो॥ अस बैन दूतन के सुने। मन माहिं द्विज मुदगल गुने॥ बोल्यो बहुरि हरषाइ के। दूतो सुनो मन लाइ के॥
सो॰ सुरपुर दुख सुख कौन। गुण अवगुण तो मैं कहो॥
कहो कृपा करि तौन। हों प्रभु जाते जानिये॥
चौ॰ कह्यो गगन हे सन्त कृपाला। तुम को सब मालुम है हाला॥
दीन जानि प्रभु दाया कोरऊ। हम ते प्रश्न ऐसि उच्चरेऊ॥
सुनो स्वर्ग सुख बरनौ सोई॥ जन्म मरण की व्याधि न होई॥
मैन कलेश लेन नहिं देना॥ क्षुधा तृषा नहिं व्यापत मैना॥
कल्पबिटप मनसा को पूरा॥ छांह बसे होवे दुख दूरा॥ ॥
रतन जड़ित हेमालय बनेऊ॥ सुभग मंजु पट भूषण घनेऊ॥

दिव्यरूपहै धामापावै॥सेवाकरत अपसरा आवै॥॥
स्वर्गमाहिं अस सुखहै भाई॥सो हम तुम कहँदीन बताई॥
दुख अबताके सुनो चरधीरा॥कहौंसोई जो अखिलसरीरा
इकतौकछु करतव्यनहोवै॥जाते पुरायबंदे अघखोवै॥
करिकमाई जो फलखावै॥खात खातकमतीहै जावै॥
परको पुराय अधिक लखिसोई॥तेवै दुखिनामनमें होई॥
पुरायकनाधसहोहै जावै॥फिरि सो मृत्युलोक को आवै
जपतप यज्ञनते सुरलोका॥मिलत इमपिताहू में शोका
इकदूतकी एसीबानी॥सुनि मुदगनबोल्यो सुखमानी
काम क्रोध मद मत्सर आदी॥जहँअतिनहांके सुखसबबादी
स्वर्गमाहिंहै दुःख अपारा॥तेहि मन चाहत नाहिं हमारा॥
निश्चलधाम होइ जोकोई॥हमते बरनि सुनावो सोई॥

दो॰ कहुगन स्वर्ग पताल मे सब नाशक ऐजानि॥
सुरलोक विधिलोक लोंसब की होवै हानि॥
विष्णुलोक नितथिर रहै उतपतिपरलैनाहिं
सुखलितबहुत प्रकारके बसत सन्त तेहिंमाहिं॥
जन्म मरण तामें नहीं अकल दुर्प नाव्याधि॥
आनन्दै आनन्द है रामधाम आनादि॥

तोमर छं॰ तहँ रहत हैं हरिराय। ऐश्वर्य्य कछु कहौं गाय॥
जेहि राज सब ब्रह्मराड। चौदा भुवन नवखराड। बैकुंठ गढ़ अ-
जो त। चाकर सकल सुर मीत। बिरंचि जासु दिवान। है फौज-
दार ईशान॥ मातङ्ग बसुदिग पाल। पानी भरै घनमाल॥
कोतवाल है यमराज। नाक्षत्र मान हु बाज॥ सुस्तो फी चित्र
गोपित्र लम्बोदर मुंशीलिख॥ पुरदेव कानो गोइ। औ जौ-
र प्रकिल्ल सोइ॥

सरूपि कहं॰ अरु सबा शेष बिचारी॥ कूबेर जासु भंडारी
बहु खानि लाख चौरासी॥ तेहैं सब करि खन बासी॥ कैरे परा-
रब्ध कर भोगा। रहै सब पर कर्म दरोगा॥ ग्रह दी ग्रह रोग अनन्ता
जागीर तगीर करन्ता॥ यम दूत पियादा फिरहीं। जे राम विमुख
ते धरहीं॥ महि षेश लोक बदि खाना। बहु नर्क भाय सी जाना।
हरिधर्म पोत बिन दीन्है। तहं परत आइ सठ चीन्है। दिनवेद
पति ग्रह धारी। ते जान हुं सबै बेगारी॥ परवी पञ्च ग्रह जानी।
तहसील दार मह मानो। जप तप ब्रत दान हि करहीं। ते नर जं-
तु पोत हि भरहीं। मद काम क्रोध अंहकारा। डकहत लूटत सं
सारा॥ सत संगन की चलथारा। सो करत फिरत हुशियारा॥
है अन्न पूरणा मोदी॥ है सबै अहारै सोदी॥ कोतवाल बीर हनु
माना। जय विजय रहत दर थाना॥ शुचि सेवक भक्त पियारे
तिनके हित नर तन धारे॥ सुरलोक सकल जागीरा। सब सह
ना जासु समीरा॥ अरु धर्म नवीन करारा। है भक्ति चढी सर-
कारा॥ नौबत्ति है अनहद तासा। चौंपक्ख बारहु मासा॥ भूलोक
जासु बाजारा। तहं होत कर्म बेपारा॥ स रद दीप अरु खरादा।
धनु काल मृत्यु फर चराडा॥ बन बाग अठारै भागा। हैं सातौ सं-
धतड़ागा॥ पर बत सब बछी जाना। तेइ नभ दीरघ ताना॥ च-
न्दी गरा बेद कहावैं। जे नेति नेति यश गावैं॥ जिनकी प्रिय ल-
क्ष्मी रानी। साहेली गिरा भवानी॥ दे भक्ति मुक्ति दो दाना। ते हि
धेलक संत सुजाना॥ हैं रद्धि सिद्धि जेहि दासी। सो निस
दिन करैं खबासी॥

दो॰ कोटि २ ब्रह्माण्ड हैं रोम रोम प्रति जासु॥ ॥
कहै रघुनाथ बखानि को उपार कि पावै तासु॥
सुनि प्रभाव अस बिष्णु को मन हर्ष्यो महिदेव॥

पछ्यो द्विजपुरकि मिमिलै ताको कहियेभेव॥
मिलै जो यह पद भक्ति ते जोग ज्ञान मन लाय॥
और उपाय करै कितै विष्णुलोक नहिं जाय॥
सो० देवदूत के बैन। सुनि बोल्यो मुद्गल बहुरि॥
जाहु आपने ऐन। कह्यो बन्दना सुरन ते॥
दो० देवदूत भेजे स्वरग आपु भक्ति मनु लाय॥
करणी बल निज कुटुम्ब युत बस्यो विष्णुपुर जाय॥
सो० तप ते अधिकी दान सह श्रद्धा के जो करै॥
होय भुवन विख्यात। भक्ति मिलै पुनि द्विज सरिस॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत मुद्गल प्रसंग वर्णनो नाम पंचदशो ऽध्यायः॥१५॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
हरिधर्म्मोत्तर ग्रंथ की कहौं इतिहास बखानि॥
सो० सुनि सौनक सुख पाइ। नाइ शीस बोल्यो बहुरि॥
नाथ कहो समुझाइ। पुण्य बढ़त केहि द्रव्य ते॥
चौ० कहा सूत सुनि कहौं बुझाई। जेहि धन धर्म बढ़ै अधिकाई॥
सुकृत करि जो द्रव्य कमावै॥ तेहि परमारथ माहिं लगावै॥
बाढ़ै पुण्य पाप है नासा॥ सो नर लहै स्वर्ग में वासा॥ ॥
अधरम करि जो द्रव्य कमावै॥ धर्म माहिं पुनि ताहि लगावै॥
ताको पुण्य व्यर्थ ही जानो॥ सुनो एक इतिहास बखानो॥
नृप एक बीर भद्र प्रसनामा॥ सोरठ नग्र माहिं तेहि धामा॥
करै पुण्य बहु भाँतिन राजा॥ गज रथ भूमि पालकी बाजा॥
सो० सुबरण सींग मढ़ाय। मुक्ता पूछै रजत खुर॥
पीताम्बर थोढ़वाय। देइ धेनु इमि द्विजन कहँ॥
चौ० शय्यादान करै पटदाना॥ यज्ञ महोत्सव बहुविधि दाना॥

तेहि पर एक बार बिधि योगा॥ न्टप एक चढ्यौ संग लै लोगा
निशा अचानक नगर लुटायो॥ कैद कीन जेहि पकरि पायो॥
रानी न्टपति अतिथ के भेषा॥ भागि बचे काहू नहिं पेषा॥ ॥
आये एक नगर के माहीं॥ देखु कामातुर है ढिग नाहीं॥ ॥
कर मुद्रिका एक न्टप दीन्हा॥ बेचि कछुक दिन भोजन कीन्हा
नाते सार रहै पितु मामा॥ रानी सहित गये तेहि धामा॥ ॥
तहां नहीं कछु आदर पायो॥ बहुरि भूप भगनी घर आयो॥
जानि अभाव जनक लघु भाई॥ तिन के निकट गये चलि राई

सो० रहे तहां कछु काल। पुनि लागे अन खान सब॥
चलि भे तुरत भुवाल। समुझि कर्मगति मन दिये॥

दो० जाके भवनै जाइ चलि बात न पूछै कोइ॥
बिपति परे हरि बिन कोई काहू को नहिं होइ॥

कुण्डलिया कमल केर पितु सरित पति गरल सुधा शशि भाय। मित्र भानु भ्राता तने विश्वंभर जेहि माय॥ विश्वंभ-र जेहि माइ श्रीरम्भा दोउ भगनी। बह नोई हरि इंद्र नाति शिव सुन्दर भगनी॥ अस परिवार सुसार जड़ जारि दियो निशि जाम। बिपति परे रघुनाथ बिन कोइ न आयो काम॥

चौ० भूषणा भरणा लै न्टप रानी॥ भिक्षा केरि युक्ति तब ठानी
घर २ भिक्षा कैरै भुवारा॥ तन पर बसन न जुरै अहारा॥
कछुक काल या बिधि चलि गयऊ॥ न्टप रानी सें बोलत भयऊ
संभरि गढ़ इक साहु सुजाना॥ मानिक नाम बिदित धनवाना
बेचन पुण्य जात जो कोई॥ मानिक साहु लेत है सोई॥ ॥
कागद पर लिखि तुला चढ़ावै॥ ताहि बराबर सोन देवावै॥ ॥
रानी कहा सुनो न्टप राई॥ तुम हूं कीन्ह पुण्य अधिकाई॥
तनिक कुछ बेंचि लै आवो॥ पहिरो बसन पेट भरि खावो॥

जो जग में तनु रही हमारा ॥ करब दान पुनि बहु परकारा ॥
कह राजा रानी सुनि लेहू ॥ मारग को खरचा कछु देहू ॥
सुनि रानी तुरतै उठि आई ॥ गृह ते भिक्षा करि लाई ॥ ॥
नृप के वसन बाँधि सोइ दीन्हा ॥ गवाधति सुमिरि पयाना कीन्हा
तेहि बासर निशि भै तरु पाई ॥ रह्यो सुनिय बिन भोजन राई ॥
दूसरे दिन चलि सरइक पायो ॥ करि मज्जन नृप भौरी लायो
सेंकि तूर्ज हरि भोग लगावा ॥ तेहि क्षण इक अभ्यागत आवा
क्षुधावंत बोला हर आई ॥ सुनि नृप के मन करुणा आई ॥

दो० होय धनी कंगाल जो तद्यपि रहे उदार ॥
जन्म दरिद्री धन लहै करि न सकै उपकार ॥
द्वै भौरी अभ्यागतहि दीन्हीं करि सनमान ॥
दुइ पुनि अपना स्वाद कै कीन्हों बहुरि पयान ॥

चौ० तिसरे दिवस साहु घर आयो ॥ आदर करि राजा बैठायो ॥
पूछ्यो बनिक कहाँ ते आये ॥ को हो कौने काज सिधाये ॥
सुनि नरेश अस बचन प्रकाशा ॥ साव ते आयन तब पासा
बेचन पुराय हेतु यह ताता ॥ तुमहूं लेत सुनी हम बाता ॥ ॥
अस सुनि साहु उतरु तब दीन्हा ॥ बेचहु पुराय जवन कछु कीन्हा
लिखि कागद पर तुला चढ़ावो ॥ सौदा लिखो दवै जेहि पावो ॥
दश सहस्र मख कीन्हों राई ॥ सो लिखि मानिक तुला उठाई ॥
पलरा दोऊ रहे समाना ॥ रती न चढ़ा महीप खजाना ॥ ॥
बोला साहु और लिखि धरहू ॥ साँची लिखो झूठ परिहरहू ॥

सो० हेम गऊ गज बाजि ॥ दीन्हा कन्या दान जो ॥
तुला चढ़ायो राज ॥ सोऊ सब बिरथा भयो ॥

चौ० जहँ लगि लोग रहे तेहि ठामा ॥ हितू गुमास्ता चार गुलामा
सबन कही भूठे तुम अहऊ ॥ ठगही करि सुख सम्पति चहऊ

जोतुमकरते दानरु धर्मा॥ कंचन चढ़त नकौने मरमा॥ ॥
लखिरुख बोलासाहु सुजाना॥ कौनेसमय कीन्हतुम दाना॥
वीरभद्र कहसुनिपि साहू॥ जबहम थे सोरठ के नाहू॥ ॥
गजरथतुरंगपालकी जाने॥ भृत्य मृता वहु चमू रव जाना॥
तबयह दान दीन्ह हम भाई॥ तुम ते साँची कहा बुझाई॥ ॥
बोलाविटका चढ़े भुवाला॥ यह अधर्म कर धर्म तुह्मारा॥
लूटि बाँधि पर जै दुख दिहेऊ॥ बनितनकहबिन वस्तर किहेऊ॥
बहुराग ऊ वेढ़ि ले आयो॥ हरि पर दृक्ष अनेक कटायो॥
आवा कोउ फिरियादी दीन्हों॥ लै धन सो न्याव नहिं कीन्हों॥
सोधन आनि धर्म तुमदाना॥ ताते कौन पुराय पर माना॥
जबतेरङ्क भयो तुम राई॥ तबते पुराय किहेउ कछु भाई॥
दो० कह्यो महीपतिवचन मृदु सुनियेसाहु सुजान॥
भिक्षाकरि भोजन मिलै काहेम कीजै दान॥
कुराडलिया कीन्हपयाना यहाँको सुमिरि हृदयगणराय। ते
हिमग इक सरके निकट भौंरी चारिलगाय॥ भौंरी चारिलगाय
अर्पि हरि ग्रास उठावा॥ तेहि समय मम निकट एक अभ्या
गत आवा॥ क्षुधित देखि मैं तासु काउ भै मधुकरी दीन्ह।
रङ्क भयन तबते सुनहु यही पुराय जग कीन्ह॥
चौ० सुनिमानिक लिखि तुला चढ़ायो॥ डाँड़ी गहि धरि हेम उठायो
तबही पला गरू है गयऊ॥ पुनि लै पुरट चढ़ावत भयऊ॥
ज्यों ज्यों कंचन आनि चढ़ावै॥ त्यों त्यों पला अधिक गरु वावै
जहेँ लगि सुवरण साहुनि केता॥ है भौंरी सम भया न तेता॥
बोला मानिक सुनहु नरेशा॥ अब नहिं हेम हमारे लेशा॥
तेहि ते जो कछु है सो इ लीजे॥ अपने नगर पयाना कीजे॥
सुनि नृपमहिषा ऊंट मगाये॥ सकल कनक तिन माहि लदायो

लीन्हे सङ्ग सिपाही नाना ॥ जिनसोरठ कहँ कीन्ह पयाना ॥
पहुँचे द्विज तिसरे घर आई । लखि रानिहि भा सुख अधिकाई
बहुरि सेन नृप साजि अनेका ॥ चतुरङ्गिनी एकते एका ॥
दो० दैडं का अरि भूप पर चढ़ा चमू लै जाय ॥
राम कृपा तेहि जीति कै लीन्हो राज छिनाय
चौ० आइ निकेत महोत्सव कीन्हा ॥ विप्रन दान विविधि विधि दीन्हा
करन लाग पुनि राज अवारा । पाले प्रजा अनेक प्रकारा ॥ ॥
अधरम इमद होन नहिं पावै ॥ करै ताहि नृप दगड दिवावै ॥
लागेहु करन भक्ति युत रानी ॥ छाँड़ि अनीति कर्म मन बानी ॥
आवै साधु नगर मा कोई ॥ मिलै पुरः चलि भूपति सोई ॥
करि प्रणाम मन्दिर लै आवै ॥ पद पखारि निज सीस चढ़ावै
बोड़ष भाँति पूजि सन मानी ॥ मन जो गवत रहै भूपति रानी ॥
सुनै कथा हरि कीरति गावै ॥ तजि सत संग अनत नहिं जावै
सेवक सचिव करैं पुर काजा ॥ विष्णु चरण सेवैं नित राजा ॥
भवन बनाय सुबस्तु भराई । मुदित देइ महि देवन राई ॥ ॥
सुमन बाटिका बाग लगाये ॥ वापी कूप तड़ाग खनाये ॥ ॥
करै जो धर्म कर्म सुभ ज्ञानी ॥ वासुदेव अर्पै नृप ज्ञानी ॥
सहित नेम सुमिरै हरि नामा ॥ क्रोधन लोभ मोह मद कामा
युक्ति सहित करि भोग बिलासा ॥ समय पाय तनु तजि अनयासा
हरिगीतिका- अनयास निज वपु त्यागि मो हरि रूप कर-
आयुध धरे भुज चारि उरपद मुकुर कुराडल तिलक शिर
माला गरे ॥ आरूढ़ सुभग विवान लखि सुर सुमन बहु बर-
षायहू । जप योग तप ते अगम सो पद भक्ति करि नृप पायहू ॥
दो० कह रघुनाथ अधर्म करि पुनि हरि सुमिरन कीन्ह ॥
करम बन्ध ते छाटि कै मोक्ष सरूपी लीन्ह ॥ ५ ॥

तजिकुकर्मसुभकर्मकरिहीबैकेभायओकोइ
ताहिलगावैधर्मसैंतपतेअधिकीहोइ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदा-
सरामसनेहीकृतवीरभद्रप्रसंगवर्णनोनामषोडशोऽध्यायः॥१६॥

दो॰ सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
महाभारथमदग्रन्थकोकहौंइतिहासबखानि॥

सो॰ सौनकसहितहुलास।पूंछ्यौकैभेदधर्मके॥
कितउतपतिकितनाश।कितस्थितिविस्तारतिन॥

कुण्डलिया कह्योसूतमुनिधर्मकेचारिचरणपहि-
चान।प्रथमसत्यपुनिदयाहै।औरतपस्यादान॥औरत-
पस्यादानसत्यतेउतपतिसोई।दयातहांविस्तारक्षमाते
स्थिरहोई॥नाशहोतहैलोभकरिक्रोधौतेहूरीरह्यो।कृ-
तयुगचहुंपुनितीनिफिरिदुइकलिइकवेदनकह्यो॥

दो॰ सुनुसौनकजेहिभांतिजिनधर्मकिहिनितधारि।
लिखेपुराणनमेंकहौंतिनमेंलेदुइचारि॥
भूपवंसचतुभुजबलीमहिमण्डलरिपुभीति॥
दीन्हौंसुखगौद्विजप्रजनसहितवेदकीरीति॥

चौ॰ चन्द्रप्रभारहैतिनकीबाला॥जिनजायेहरिचन्दनृपाला॥
बसुधापतिहरिचन्दकिरानी॥जासुसुयशत्रिभुवनमेंजानी॥
तासुतनयरोहिताकुमारा॥इन्द्रावतीवधूसुकुमारा॥
करैराज्यहरिचन्दनरेसू॥धनअधर्मकलेशनलेसू॥
तासुराज्यकोउदुखीनरहई॥चारौंवर्णधर्मनिजगहई॥
सबसुन्दरसबविरुजशरीरा॥सबगुणग्रामसबपण्डितधीरा॥
तेहिपुररामभक्तनरनारी॥संतसभागमरुचिअधिकारी॥
निशदिनभूपप्रीतिहरिचरणा॥सुमिरनपूजनवन्दनकरना॥

सो० बापीकूपतड़ाग। खनवायेमारगविषे॥
लगवायेबहुबाग। धनबाँधेहरिहरभवन॥

दो० बिटपफूलफलसहितगिरि प्रकटभईगलियान॥ ॥
कामधेनुभैभूमिजलकहै देहिघनआनि॥
धर्मबचनमनजोकरैसो अरपैभगवान॥
भक्तिवंतभूपालवरहरितजिमानैनहिंआन॥

चौ० प्रतिसंवतसबमालखजाना॥ देइलुटाइनराखैदाना॥
नृपकीरतिसबजगमाछाई॥ जहँतहँमुनिकरैंबड़ाई॥
कहैंकिनृपहरिचन्दसमाना॥ हैनअवरधरमज्ञजहाना॥
सुनिकौशिकमुनिकहारिसाई॥ अबहींनृपसतदेहुँडिगाई॥
तुरतैअवधपुरीचलिआयौ॥ कोलककुनपविशालबनायौ॥
प्रबिसिवाटिकाचौंडनलागे॥ घुरघुरातरखवारेभागे॥
तेभूपतिपहँजायपुकारे॥ सुवरदेतइकबागउजारे॥ ॥
मुनिनरेशपठयेभटभूरी॥ आयेसबजहँकोलगरूरी॥

दो० करिउपायहारेसकल कोलसोनिकस्यौनाहिं॥
सुनिहरिचन्दतुरंगचढ़ि पहुँचेतेहिकेपाहिं॥

चौ० भागबराहदापसुनिपावा॥ देखतताहिभूपतिसपटावा॥
कहुँलखिपरतकबहुँदुरिजाई॥ सघनविपिनइमिगयउलेवाई॥
आगेबढ़िमुनियुक्तिउपायो॥ एकपुत्रीएकपुत्रबनायो॥
आपुभयेपंडिततेहिवेरा॥ लागेकरनब्याहतिनकेरा॥
अग्रबराहदीखनहिंजबहीं॥ आयेनृपतिनकेढिगतबहीं॥
लखिक्षितिपतिबोलाद्विजसोई॥ यहिकन्याकेहैनहिंकोई॥
पायँपूजियाकेनृपदेहू॥ तुमधरमज्ञजगतयशलेहू॥
कहहरिचन्दविपिनकेमाहीं॥ हैकछुप्रभुमेरेढिगनाहीं॥
नगरमाहिंजोचलतेदेवा॥ सबविधितेहिकरतिउँसेवा॥

बिप्र कहा कछु सगुन करीजै॥ गृह लेपाइ पुनि चहौ सो दीजै
है लगाम कुंजी तब तीरा॥ तेहि ते पद पूजौ रनधीरा॥ ॥
तुरतै नृप पद पूजै लीन्हा॥ बिश्वामित्र ख्याल पुनि कीन्हा
मैं तुम्हार पंडित हौं राजा॥ मोको कछु दीजै महराजा॥ ॥
भूपति कहा माँगि द्विज लेहू॥ कनक तीनि मन राजन देहू॥
कह हरिचन्द दीन द्विजराई॥ चलहु भवन मन लेहु भराई॥
कन्या कुँवर गुप्त है गयऊ॥ मुनि नृप संग अवध चलि भयऊ
राजा बाजि चढ़न तब लागा॥ छीनि लीन मुनि गहि कर बागा

दो० कह ऋषि वे कन्यहि देइ कै पुनि नृप फेरे लेत॥
अस अधर्म नहिं चाहिये तनक वस्तु के हेत॥

चौ० अस कहि आपु भये असवारा॥ पौड़ पियादे चले भुवारा
पहुँचे नहीं अश्व के साथा॥ आगे बढ़ि टेरैं ऋषिनाथा॥ ॥
नृप सुकुमार बहुत श्रम पायौ॥ कछु दिन रहे अवधपुर आयौ
लखि नृप खुशी भये नरनारी॥ गये भूप निज भवन मँझारी॥
सुभग गलीचा एक बिछायौ॥ करि सनमान मुनिहिं बैठायौ
चरण पखारि बारि सुखदाई॥ भोजन कहँ पूछा मुनिराई।
मुनि मुनि कहा हेम मम दीजै॥ पीछे अपर बात कछु कीजै॥
तब नृप कनक भराइ मँगावा॥ कहेउ लेहु मुनि बचन सुनावा
कुञ्जी दान दियौ मोहि राई॥ दर्बि सकल तेहि भीतर आई
जहँ लगि टाप घोड़ की बाजी॥ तहँ लगु भई हमारी राजी॥
मोरि दर्बि मो से कहै लेहू॥ औरे कनक आनि कै देहू॥ ॥
नाहिं त कहौं दीन नहिं राई॥ हम अपने आश्रम का जाई॥
कह नृप शिर काटै जो कोई॥ ऐसि बात हम ते नहिं होई॥

दो० सुनि सुत रानी भूपति हु कह्यौ शीश धरि माथ॥
अनु मनु सोने पर हमें बेचि लीजिये नाथ॥

चौ० अस सुनि तिन्हें लीन अगुवाई। बेचन हेत चले ऋषिराई॥
अवनि प्रजा लै हम सिधाये। राजै मोल लेन बहु आये॥ ॥
बिश्वामित्र कह्यो तिन हेरी। प्रजा कि दीन्हि है नृप केरी॥ ॥
आन देश नहिं बिकहु नरेशू। चले बनारस सहत कलेशू॥
आये मुनि पाछे नृप रानी। नहि पाछे सुत रोहित जानी॥
मुनि दूसर द्विज देह बनाई। बैठ्यो पुरह कूप पर जाई॥ ॥
राजहि देखि समीप बोलाये। पूछ्यो हाल सही पबताया
बोला बिप्र भूप सुनि लीजै। या द्विज दूरि पान जल कीजै॥
कहे नृप द्विजहि दिये बिन भाई। पियब न पाय प्राण बरु जाई
दो० अस कहि अब नृप चलि दियो रानी पहुंची आइ॥
कह्यो बिप्र जल पीजिये पेड़ गये हैं राइ॥
चौ० रानिहु वैसे बचन सुनायो। पाछे पुत्र रोहि रो आयो॥
ब्राह्मण कहा पियउ सुत पानी। आगे पाइ गये नृप रानी॥
कुंवर कह्यो वे करहु बिचारे। छोड़िनि धर्म प्यास के मारे॥
हम तौ द्विजहि दिहे बिन हेमा। घूंट न नहीं लार यह नेमा॥
अति धर्म भक्त हिय हम जाने। गाधि सुवन मन माहि लजाने
चलन काशी महं आये। मुनि लै बीच हाट बैठाये॥ ॥
बिप्र एक रानिहि लै गयऊ। मनु भरि हेम देइ सो दयऊ॥
मालाकार कुंवर कह लीन्हा। फूलबारी महं डेरा दीन्हा॥
राजहि लिहिसि डोम एक आई। पाइ पुरट चलि भे ऋषिराई
नृपति कहो सुपच अस बानी। भरा करो नाद न महं पानी॥
मुनि नृप नीर भरन तब लागयो। कह मुनि भूप सत्य नहिं त्यागो
जो जल भरे चले मुनि आवे। फोरे नाद पाय बहि जावे॥ ॥
देखि सुपच जिय तिन ते लरई। बैठ रहत कछु काम न करई॥
मुनि कह डोम भूप सुनु बाता। हम तुम बीच ईश जगत्राता॥

बाचा बन्धन नृपति तो किहेऊ। सरघट निकट बास तब दिहेऊ।
लेसव यहां जो आवे कोई। दाम लिहे बिन दाहन होई॥
निशा आइ हम का धन देऊ। भोजन मात्र तात तुम लेऊ॥

दो॰ यहि विधि बसत मसानन्रप बहु तदीन धन आइ॥
सुखी डोम नायक परम हितकारी जन पाइ॥

चौ॰ कछुक काल यहि विधि चलि गयऊ। तब मुनि रूप सर्प को लयऊ।
हरि याको सुत हि डस्यो सो जाई। दीन्हो ताहि रविहि सौं पाई।
रानी जबै खबर यह पाई। रोदन करत कुँवर पहँ आई॥
लै लहा संग गंगा के तीरा। गै जेहि घाट रहत नृप धीरा॥
नारि बिलाप करत विधि नाना। सुत सब देखि भूप दुख माना।
पुनि धरि धीर मही पति कहई। ईश रजाय शीश पर अहई॥
दुख सुख देह पाइ संग लागे। मिलन बिछोह स्वप्न जिमि जागे।
जल अकाश क्षिति पावक बाता। मिलै कौन पर पंच विधाता।
नश्वर रूप मोह बस सोचा। पर धन गये करै दुख पोचा॥

दो॰ प्रकट भयो तनु जानिये सो सो वत लखतीर॥
जीवन नाशत नित्य है अस विचारि धरु धीर॥

चौ॰ नट मरकट गति देखि निहारी। हरि आधीन सकल तनुधारी।
चाक कुलाल फिरत है तौलो। भ्रम आधार लकरिया जौलो॥
सब संसार काल कर भोगा। आपुन देखत आन हि सोगा॥
अस्थि मांस विष्टा तन छयऊ। चर्म लपेटि सहायन भयऊ।
तेहि पर कहत न मोहिं सम आना। कछु दिन गये रही नहिं माना।
अल्प आयु बहु करत उपाई। मृत्यु सिर खड़ी न ताहि डराई।
बलि पसु पाइ घास जिमि चरई। बूड़त आपु आन को धरई।

दो॰ जगत बिकट बन कुटग मन माया जाल पसारि॥
काल सिकारी बिन खबरि लीन अचानक मारि॥

चौ० दारु नारि तन ममता डोरी॥ कर्म नचावत है चहुँ ओरी॥ ॥
दश इन्द्री सुर विजय घोरा॥ खैंचत जहाँ तहाँ वर जोरा॥ ॥
मसत पांच चोर करि दंगा॥ रहत हित है निशदिन संगा॥
जीव कुमग्न कैसे कहि जाई॥ जिमि खेती हरवा है खाई॥
शोक समाज देखि सब परई॥ सुखी सो जो हरि पद मनु धरई॥
दुख कर मूल मोह है रानी॥ सो तजि सपदि मानु मम बानी॥
दंड घाट कर हम कहँ दीजै॥ पाछे पुत्र दाह निज कीजै॥ ॥
रानी कहा सुनो नरपाला॥ तुम ते कछु छिपा नहिं हाला॥
कहौ दर्वि कहँ धर्मि पाई॥ जो लै तुम्हें दीजिये आई॥ ॥

दो० कह नृप कर लीन्हें बिना हौं नहिं दाहन देहुँ॥
स्वामी केर निदेश तजि नाहक अधरम लेहुँ॥

सो० तेहि ते मैं अब जाय। पूछौं प्रभु ते हाल यहु॥
जो मैं देहि बताय। सोइ करब पुनि आय कै॥

चौ० अस कहि हरिचन्द नगर सिधाये॥ गाधि सुवन मरघट तहँ आये॥
रानी ते अस वचन उचारा॥ बैठि लिहे कत मृतक कुमारा॥
रानी सकल हाल कहि दयेऊ॥ सुनि मुनि ऐसे बोलत भयेऊ॥
जो दुर्वृत्त नहिं करी दिनेशा॥ तौ तोहिं दहन न देइ नरेशा॥
तेहि ते मैं तोहिं देउँ बताई॥ भस्म सकल तन लेहु लगाई॥
बालक एक आकर्षि जो लीन्हा॥ सो रानी कहँ मुनिवर दीन्हा॥
कह्यौ किले मठ बैठो जाई॥ मैं तुम्हार सुत देउँ जराई॥ ॥
सुनि रानी गै मंडप जबहीं॥ कौशिक मुनि पुर आये तबहीं॥
जहँ तहँ अस दीन्हों गोहराई॥ नगर तुम्हारे डाइनि आई॥
पूछिनि कहाँ है वै मठ माहीं॥ यामें झूठ कहत हम नाहीं॥
गई अबै पुर ते सह मोदा॥ लीन्हे एक बालक सब गोदा॥
चौबिसा छं० सुनि सब धाये। तेहि दिग आये रूप निहारी॥

अति भैकारी। बालक चीन्हा॥ गहि कर लीन्हा॥ नृप पहँ ल्यायो॥
कहि समुझायो॥ भूपरि साई। दीन्हेसि टेगाई। कहेउ कि धावो।
सुपचहि लावो। गरदन मारो केरी न ल्यावो॥ हिंसक स्यावो भल नहिं आगो॥

दो० गाहक धावन डोम गृह कह्यो हाल समुझाइ॥
तेहि पठवा हरिचन्द कहँ चलि आयत हँ राइ॥

चौ० राजा निजरानी पहिं चीन्ह्यो॥ तनको मोह न मन में आन्यौं
कसा तुरत उठायो राई॥ मारौं शीश बिलग है जाई॥ ॥
आइ तबै हरि कर गहि लीन्हा॥ जय जय ध्वनि सब देवन कीन्हा
धनि रानी धनि नृपति महाना॥ तज्यो न धर्म सह्यो दुख नाना
सुदिन सकल धरमज्ञ कहावें॥ कुदिन के मोटी परिखि लिआवे
घन प्रहार बिन सोवे हीरा॥ औरे किस के कांच कर खीरा॥
अस्त्र शस्त्र जिमि सब कोइ बांधे॥ सूर सोइ जो समरन कांधे
मुनि ने कह्यौ रि माइ खरारी॥ तुमरे मद सरता अति भारी
जप तप संयम करते भयऊ॥ आदि सुभाव तद्यपि नहिं गयऊ
अस धरमज्ञ नृपहि दुख दीन्ह्यौ॥ धर्म कौ लोभ सका चीन्ह्यौ
धर्म छोड़ावन इनकर आयो॥ फूकन बहुत सुमेरु उड़ायो
तप कर तुम्हें बहुत अभिमानू॥ सो नहिं रहो सत्य यह जानू
सुनि मुनि चरणा परे है दीना॥ प्रभु अपराध बहुत मैं कीन्हा
करहु सो क्षमा जानि अज्ञानी॥ नृप पद परि कह्यो प्रभु बानी
सुनि मुनि गहे चरण तजि माना॥ नरविन नृप कीन सकुचि सनमाना
तुरतै पुत्र दीन मंगवाई॥ औ प्रथमै रवि कौ सौंपाई॥ ॥

दो० नृप हरिचंदहि जानि कै पुरवासी सब लोग॥
भूप सहित विनती करी भये दरश विधि योग॥

सो० बोले बिष्णु बहोरि। जो भावै सो मांगिये॥
कह नृप दोउ कर जोरि। मोको कछु न चाहिये॥

चौ० रानी ते बूझउ सुरराई॥ माँगी जो कछु याको भाई॥
एक नाथ रानी ते भाषा॥ माँगहु वर जो मन अभिलाषा॥
रानी कहा नाथ सुनि लीजै॥ प्रथमैं भक्ति आपनी दीजै॥ ॥
जहँ जहँ जन्म धरब हम जाई॥ तहँ तहँ हरिचन्दै पति पाई॥
पुत्र मिलै रोहितसि समाना॥ राजकाज धन धाम खजाना॥
यहि बिधि मुनि सोये तहँ आई॥ जातें नाथ दरश तव पाई॥
यह वरदान देहु मोहिं स्वामी॥ और न चहिये अन्तरयामी॥
सुनि हरि सजल नयन होइ आये॥ प्रेम सहित निज हृदय लगाये॥
सुत समान त्रिय जासु अगारा॥ कस न होइ तहँ धर्म प्रचारा॥
चलहु अवध निज राज करीजै॥ प्रजा अनाथ तिन्हें सुख दीजै॥
सुनि हरिचन्द अवध चलि आये॥ पुरबासी लखि रत्न लुटाये॥
सिंहासन भूपति बैठारे॥ जग निवास बैकुण्ठ पधारे॥ ॥
बहुरि सकल संशै करि दूरी॥ रानी सहित किहिनि सुखभूरी॥
गीतिका छं० सुखभूरि करि नृप रानि परजन विविध विधि पालन भये। तजि अन्त समय शरीर विनपै सर्म हरि पुरका गये॥ यह कथा नृप हरिचन्द की तुम ते कही समुझाइ कै। अब और एक इतिहास भाषौं सुनहु मुनि मन लाइ कै॥
सो० हंसध्वज नृप तासु। तनै सुधन्वा हरिभगत॥
निज बपु दीन्ह्यो आसु। संखौलि खित्तखल द्विजन हित॥
रन्तिदेव नृप आन। बहु दिन में भोजन लहे॥
विप्र शूद्र शठ स्वान॥ सन माने तब मिले हरि॥
इति श्रीविश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत हरिचन्द सुधन्वा रन्तिदेव प्रसंग वर्णनोनाम सप्तदशोऽध्यायः १७॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा सुखदानि॥
बरणौं भारत की कथा कछु दालभ्य बखानि॥

सो॰ शौनक मन में गुणय। पूछ्यो पद शिर नाइ के॥
जिव रक्षा कृत पुण्य। होत कहा सो बरनिये॥ ॥

चौ॰ सुनि मुनि बचन बोले हर धाता॥ नीक प्रश्न कीन्हेउ तुम ताता॥
धर्म मूल जिव रक्षा जानो॥ सुनो तासु कृत पुण्य बखानो॥
जहँ लग सब तीरथ करि आवै॥ गया माहिं तिल पिण्ड परावै॥
गो गज हय पट मणि कहेमा॥ देहि विप्र कहँ करि नित नेमा॥
यज्ञ सु सकल करै ब्रत दाना॥ संयम नेम तपस्या ठाना॥ ॥
ऐसब पुण्य जो तुला चढ़ावै॥ जिवरक्षा सम सोउ न पावै॥ ॥
राजा सिब की कथा बखानो॥ जिवरक्षा तिन कीन्हो जानो॥
भूपति यज्ञ करत इक बारा॥ रहैं तहाँ महि देव अपारा॥ ॥
इंद्र अग्नि सिवि यश सुनि पायो॥ लेन परीक्षा दोऊ सिधायो॥
अग्नि कपोत वपुष तब कीन्हा॥ बाज रूप बासव धरि लीन्हा॥
भाज कपोत बाज रपटावा॥ नृप जहँ यज्ञ करत तहँ आवा॥

दो॰ बैठ सिथिल लखि गोद में दुख्यो कपोत डेराय॥
धरि बाज बोलत भयो नृप ते बचन बनाय॥
अहो भूप धर मज्ञ तुम महँ सुनी यह बात॥
मोह कृपण ता हे नहीं तन को तुम्हरे गात॥

चौ॰ तैं सब को पाले महि पाला॥ सन्त असन्त कहा नर बाला॥
आगुण देखि छिपावै जानी॥ गुण को सदा धरत उर आनी॥
द्वारे अतिथि जो कोई आवै॥ तुम ते बिमुख जान नहिं पावै॥
अब जनि धर्म छाड़ि यो राई॥ धर्म नरहे अपयश ना काई॥
भोजन मोर कपोत रखायो॥ ताको त्यं क्यों गोद छिपायो॥
भूखो हौं बहु दिन को राई॥ याको मोहिं देहु पकराई॥ ॥
राजा कहा सेन सुनि लीजै॥ याकी आश छाड़ि अब दीजे॥
सरणी डरपि मोरि सरन लीन्हा॥ तजौं न याहि परण हढ़ कीन्हा॥

शरणागत आये जो त्यागै ॥ ब्रह्महत्या ताके शिर लागै ॥

दो० लोभ क्रोध बश परिहरै करै नरसा जासु ॥
सो नर पापी नीच खल मुख नहिं देखिय तासु ॥

चौ० मुख देखे सुकृत घटि जाई ॥ धर्मवान लखि सुख अधिकाई
तेहि ते यहि तजिहौं नहिं भाई ॥ शीस हु जो कोउ काटै आई ॥
बोला सेन सुनत असि बाता ॥ मैं तोहिं सुना रहै बड़ दाता ॥
धर्म टेक सो छांड़ि भुवाला ॥ लै अप यश जीहौ कै काला ॥
दियेउ अहार होइ जिव रक्षा ॥ तजि हठ लेहु मानि सो शिक्षा ॥
किये अहार भरा पिर रहई ॥ नाहि न तनु तजि मारग गहई ॥
मोर मुये बहुतन कर नाशा ॥ जननि जनक सुत नारि बिनाशा ॥
एक जीव की रक्षा करहू ॥ बहुतेन की शिर हत्या धरहू ॥ ॥
बिन बिवेक धरमहु कर कोई ॥ पाछे तेहि पछिताइक होई ॥
क सेन की गति भोनी राई ॥ धुराय कारन पातक हू जाई ॥ ॥
तेहि ते नृपति मानि अब लीजै ॥ मोर अहार होइ मोहिं दीजै ॥

सो० कहसि बिसुनहु सिचान । शरणागत रक्षा करै ॥
यहि सम धर्म न आन । सो मैं निज हिरदै धरयौं ॥

दो० सोइ पण्डित धर्मज्ञ सोइ संत बादी मति धीर ॥
शीलवन्त ज्ञानीश जो हरै पराई पीर ॥ ॥

चौ० मोहिं इच्छा कछु स्वर्ग कि नाहीं ॥ नहिं बैकुण्ठ जानकि माहीं
मुक्ति भुक्ति की चाह न करहूं ॥ नर्क परन को मैं नहिं डरहूं ॥ ॥
इक अभिलाष यहै मन माहीं ॥ आवैं शरण जो तेहिं नाहीं
जो मोपर प्रसन्न भगवाना ॥ देहि टेक हिय यही न आना ॥
तन धन धाम बाम सुत जावै ॥ तजौं न ताहि शरण जो आवै ॥
मोहि कपोत परम प्रिय भाई ॥ ताको कहौं सजा किमि जाई ॥
और चहौ सो लीजै मांगी ॥ सुनि सचान बोला भै त्यागी ॥

भूमि धाम धन अन्न अपारा ॥ लिहे सरी नहिं काज हमारा ॥
मम भच्छ्रण पच्छी है येहू ॥ सो नहिं देउ तौ अब सुनि लेहू ॥
आपन मास खवावो मोहीं ॥ दयावन्त तब जानौं तोहीं ॥
तुला चढ़ाइ कपोतहि दीजे ॥ तेहि सम धरहु देर मन कीजे ॥
कुण्डलिया सुनि सिबि मन हरषत भयो कह्यौ धन्य मम भाग । असद अस्वच्छ शरीर यह पर स्वारथ में लाग ॥
पर स्वारथ में लाग धन्य जननी जिन जायो । दीन्हौं ज्ञान जनायक है केहि कारन आयो ॥ हरि सुमिरण अरु कर्म शुभ साधै पाइ नरदेह पुनि । जीवन ताही को सफल बोल्यौ बहुरि सचान सुनि ॥
चौ० दया करै कल बाट भुलावा ॥ सुखित जान है प्रान हमारा ॥
राजा तुरत तुला मँगवायो ॥ पलरा पर कपोत बैठायो ॥ ॥
दूजे पला मांस निज धेरऊ ॥ आपन गरु कपोत ते केरऊ ॥ ॥
तब राजा फिरि काटि चढ़ावा ॥ बिहंग पला नहिं सम सरि आवा ॥
काटि २ कै धोबै डार्‌यौ ॥ उठ्यौ न भूप नेकु निहार्‌यौ ॥ ॥
चढ़ि बैठ्यो नृप तब हर षाई ॥ देखि अगिन हरि रहे लजाई ॥
सुर देखैं नभ चढ़े बिमाना ॥ कहैं कि अस प्रण काहु न ठाना ॥
जय जय धन्य २ नृप कहहीं ॥ सुमन बरषि निज २ पुर फिरहीं ॥
दो० अगिनि पुरन्दर प्रगट तजि अकट्यो आपन रूप ॥
है प्रसन्न बोलत [illegible] धन्य २ धन्य तुम भूप ॥
बिश्व माहिं तुम सम नृपति है नहिं कोई और ॥
प्रण कीन्हो भल होइ है मेरो यश सब ठौर ॥
मेघ नदी जल भूमि द्रुम सन्त जन्म जे लेत ॥
केवल बिधि परगट किये पर [illegible]रथ के हेत ॥
चौ० तुम समान राजा जे आहीं ॥ [illegible] जा [illegible]न माहीं ॥

इतनेन की जो निंदा करहीं ॥ रौरौ नर्क माहिं सो परहीं ॥ ॥
तेरे तन की जाय बुढ़ाई ॥ होइ नवीन सुभग सुखदाई ॥ ॥
हम शठ हठ बस कुकरम कीन्हा ॥ नाहक आय तुम्हें दुख दीन्हा
सो अपराध क्षमौ करि दाया ॥ अस कहि सुरपति स्वर्ग सिधाया
यज्ञ जबै पूरण ह्वै गयऊ ॥ तब भूपति मन हरषित भयऊ ॥ ॥
गया बिमान लाये हर पाई ॥ विष्णु लोक तहँ राखिन जाई ॥
जो यह कथा सुनै अरु गावै ॥ यम किंकर तेहि नाहिं सतावै ॥
सिबि की कथा कही जो जानी ॥ और सुनौ एक कहौं बखानी
केकी नगर रहै एक साहू ॥ बुद्धिवान घर दवि अथाहू ॥ ॥
देवदत्त अस ताकर नामा ॥ सुजसा नाम जासु की बामा ॥
एक बार पति पद शिर नाई ॥ बोली मधुर बचन सुखदाई ॥
सुनहु नाथ निगमागम गावै ॥ नरतन बड़े भाग ते पावै ॥ ॥
तेहि लहि जो हरि भजन न करहीं ॥ जगत भार शिर ऊपर धरहीं
सो पाछे पछितात अभागी ॥ जिमि नग बाल अमोलिक त्यागी
ताते पति हरि भक्तिहि कीजे ॥ नरतन पाइ सफल करि लीजे
धन ते धर्म करहु मन लाई ॥ आखिर अन्त संग नहिं जाई
ऐसे बचन नारि जब कहेऊ ॥ सुनि बुधि साहु परम सुख लहेऊ

दो॰ धर्म करन लागे ललकि तन मन धन ते होउ ॥
जो माँगै तेहि देइ सोइ बिमुख न जावै कोउ ॥

चौ॰ नौधा भक्ति करै नित नेमा ॥ विप्र वैष्णो पद अति प्रेमा ॥
यहि भाँतिन बहु दिवस बिताये ॥ लेन परीक्षा धर्म सिधाये ॥
रूप अघोरी का धरि लीन्हा ॥ साहु द्वार स्वाल आ कीन्हा ॥
देखि बयस भीतर लै गयऊ ॥ मुदित मनोरथ पूरण भयऊ
कह्यो अघोरी सुनु अनुरागी ॥ मोको आजु क्षुधा बड़ लागी
पुत्र तुम्हार अर्ध पट केरा ॥ तेहि आमिष मन चाहत मेरा ॥

दोउ प्राणी मिलि सुत बध कीजै ॥ शोभन तन को मन में लीजै ॥
निज निज कर माहिं देउ खवाई ॥ नाहिं सके सो ग्रन्ते जाई ॥ ॥
सुनत साह सा हुनि ग्रस बैना ॥ खेलत सुत बोलायो ऐना ॥
मारन लगे दोऊ मिलि जबहीं ॥ बालक बचन कहत भा तबहीं ॥
मारु न मातु घरे मह रैहौं ॥ ग्रबहों दूरि न खेलन जैहौं ॥ ॥
सो० ग्रहो सुवन तब कर्म । होत जो खेलन को लिखा ॥
तो कत लेत्यो जन्म । ग्राइ हमारे जठर महँ ॥
चौ० ग्रस कहि घात कीन हरषाई ॥ बोटी २ बिलग बनाई ॥ ॥
कह्यो ग्रघोरी सों ग्रभु लीजै ॥ देर भई यहि भोजन कीजै ॥ ॥
सुनि तेहि कहा कि मैं नहिं खैहौं ॥ इतने में तन कौन ग्रघैहौं ॥
निज २ ग्रामिष दीजै थोरा ॥ जेहि ते जाइ उदर भरि मोरा ॥
खपल जबै काटन कहँ कीन्हा ॥ तुरतै धर्म हाथ गहि लीन्हा
खुशह्वै ग्रापन वपु प्रगटायो ॥ देवदत्त सों बचन सुनायो ॥
ग्रहो साह सुनु मैं हौं धरमा ॥ ग्रायो लेन तुमारो परमा ॥ ॥
धन्य २ तुम धनि हौ ताता ॥ धर्म हेत सुत कीन्हों घाता ॥ ॥
तुम्हरी पुराय घटी नहिं भाई ॥ दिन २ ग्रधिक २ ग्रधिकाई ॥
बिशुलोक बसिहौ तिहुं प्रानी ॥ जन्म मरन की होइ हानी
पुत्र तुम्हार बालकन माहीं ॥ खेलत ह्वै भ्रमि थ्या नाहीं ॥ ॥
सुनि एक सेवक साह पठायो ॥ तेहि के संग कुँवर चलि ग्रायो
देखि मातु पितु हरषित भयऊ ॥ हृदय लगाय भाइ भरि लयऊ
दो० भये बिदा तब धर्म करि देवदत्त सन मान ॥
हरि पुर ते ग्रावत भयो ताही समय बिमान ॥
गीतिका छं० ग्रायो बिमान निकेत निर्मल रतन सागर म-
णि मयो । लयो धाय गरान बढाय तिनको बिशुपुर बासद-
यो ॥ लखि देव जय २ जय लिकहि कहि सुमन बहु बरषायहू ॥

रघुनाथ गुर पद माथ धरि यह कथा सूक्षम गाय हूं ॥
दो० धन्य पुत्र हरि भक्त जो धन्य पतिव्रत नारि ॥
जासों परमारथ बनै धन्य सो दरबि निहारि ॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत सिविका देव दत्त प्रसङ्ग बरणनो नाम ग्रष्टादशोऽध्याय १८॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणों भारथ ग्रन्थ की पुनि इतिहास बखानि ॥
अग्नि देव कर पुत्र एक तासु सुदर्शन नाम ॥
धर्मवान गोजीतवर क्षमा शील तप धाम ॥
बोधवान नृप निज सुता दीन्ही हिसँ बिवाहि॥
दोउ प्राणी मिलि बसे कुरुक्षेत्र महं जाहि ॥
चौ० निश दिन धर्म सुदर्शन भावै॥ अनि थहार ते बिमुख न जावै
मन क्रम करै साधु की सेवा। सन्ते स्वामी सन्ते देवा ॥ ॥
यहि विधि कछुक काल चलि गयऊ॥ इक दिन द्विज मन शोचत भयऊ
साधुन में नहिं प्रिय को भावा॥ ग्ररथ ग्रंग तेहि बेद बतावा ॥
मैं नहीं तु गृह हरिजन आवै॥ बनिता ते सनमान न पावै॥ ॥
तो मम धर्म होइ सब नासा॥ जो आदर नहिं पावहि दासा ॥
नारि पुरुष दोउ एक मत होई॥ तेहि कर धर्म डिगै नहिं कोई॥
दो० अस बिचारि निज बधू ते बोल्यो विप्र सुजान॥
सन्त सेव हिरदे धरो जाते होय कल्यान॥ ॥
सन्त सेव हरि सेव से शतगुण अधिक जानि॥
निज मुख प्रभु बर्णन कियो धर्मो त्तर में मानि॥
पुरुह धरत नें बेद ते हिं शुद्ध करौं मैं देखि ॥
स्वाद लेत मुख दास के कहहरि बिसेस लेपेखि॥
सर्वाराधन में परे हरि अवराधन आहि ॥ ॥

जन सेवा तेहि ते अधिक कह शिव आगम माहिं॥
गोबिन्द पद पूजन करैं सन्तहि सेवैं नाहिं॥
ते नहिं प्रीतम विष्णु कहँ दंभिक भाजन आहिं॥
आवै बैरागी जासु घर पावै नहिं सनमान॥
नर्कै पुराय सो जन्म को कहै अस कंध पुराण॥
धन्न क्षेत्र निश्चै तहाँ जहाँ न संत स्थान॥ ॥
बसै जब हरि क्षेत्र सो बद बाराह पुरान॥ ॥
साधु भजे भजि जात हरि जिमि शिशु गर्भ मँझार॥
बिन जननी तोषै नहीं हुमि कह अस्तुत सार॥
अह्लायुत हरि भक्त कहँ अन्न खवावै कोइ॥
सोई सोम पर बत्त सरिस दिन दिन अधकी होइ॥
साधु सेव कीन्हीं नहीं जिन नर तन को पाय॥
ते नर पशु ते अधिक हैं पेट भरन को चाय॥
पचि२ मर्यो कुटुम्ब हित परमारथ नहिं कीन॥
धृग२ ताकी बुद्धि को तजि अमृत विष पीन॥
चौ० ताते सुनु रवि भानु मम बाला॥ जाते मोरि तोरि कुशलाला॥
तन मन धन संतन कह दीजै॥ है अधीन चरणोदक लीजै॥
गृहस्थाश्रम को धर्म है याही॥ हरिजन आइ बिमुख नहिं जाही॥
जो कछु संत कहैं सो कीजै॥ सुखप्रद बचन मानि मन लीजै॥
जो त्रिय कहा करै पति केरा॥ सो पावै सति लोक बसेरा॥ ॥
सुनि पति बचन नारि सुख पाई॥ बोली बचन कपट नहिं राई॥
भले नाथ मोहिं धर्म दिढ़ायो॥ सुनि तव बचन मोहिं अति भायो॥
तन मन धन करि संतहि पोषिहौं॥ हे पति परण तुम्हारो रखिहौं॥
पतनी सो जो अपनी सम्हारै॥ बिमुख कै सो शठ नि[illegible]रै॥ ॥
पति सो जो त्रिय की पति राखै॥ निज पति बिन तेहिं को पति भाखै

ऐसे वचन कहे जब नारी॥ सुनत विप्र उरभा सुख भारी॥ ॥

दो० दोउ धर्म लागे करन तन धन सो तजि नेह॥
विविधि भाँति सेवा करैं सन्त जो आवैं गेह॥
यहि भाँतिन बहु काल गे रह्यौ सुयश जग छाय॥
मृत्यु दुवारे आइ कै मुह मुहर फिरि जाय॥ ॥

चौ० कबहुँ धर्म घटती नहिं होई॥ ताते मारि सकै नहिं सोई॥
एक दिन सुनो सुदर्शन कानन॥ गये रहैं तहँ समधी आनन॥
धर्म परीक्षा लेन सिधाये॥ भेष वेषौ को करब नाये॥ ॥ ॥
जहँ द्विज भवन तहाँ चलि गयऊ॥ बोधवती ते बोलत भयऊ॥
हे धरमज्ञ सुनो मैं तोही॥ मनमथ आजु सतावत मोहीं॥
तेहिते अपने तन का दीजे॥ जेहिते अङ्ग सङ्ग करि लीजे॥
सुनि कर जोरि कह्यौ द्विजबामा॥ लीजे असन बसन बहु दामा॥
ऐसी बात न कह्यो गोसाई॥ बोले धर्म और कछु नाहीं॥ ॥
केवल चही शरीर तुम्हारा॥ जासों लाग्यो चित्त हमारा॥ ॥
जो न देहु तो मारग लीजे॥ द्वै मा एक बात कहि दीजे॥ ॥
सुनि अस बचन नारि शिर नाई॥ मन में शोच कीन अधिकाई॥
नाटे तो प्रण कीन सो जाई॥ सङ्ग करौं पतिवर्त नसाई॥ ॥

दो० शोचत ही श्रुति के बचन हृै आये तब आदि॥
पति आज्ञा त्रिय करै तो पतिव्रत जाइ न वादि॥

चौ० तब हरि जन ते बोली नारी॥ किरपा हम पर कीनि मुरारी॥
यह तन धन सब तुम्हरे स्वामी॥ हम सेवक सब बिधि अनुगामी॥
सुनि हरि कुटी कपाट लगायो॥ ताही समय सुदर्शन आयो॥
साइं सुनत त्रिय सकुचि न बोली॥ दीन्हा भेद अप्रति ष तब खोली॥
मेर मनोरथ पुरवत नारी॥ खड़े रहो तल्ले द्वार मँझारी॥ ॥
सुनत सुदर्शन अति सुख पावा॥ धन्य खदि बचन सुनावा॥

धन्य पिया तव पितु अरु माई ॥ पूज्यो सन्त हि हेत बड़ाई ॥
आखिर तनु नहिं रहत तुम्हारा ॥ है जातो कृमि विष्ठा छारा ॥
सो वपु वैषो हेत लगायो ॥ राख्यो धर्म मोहिं अति भायो ॥
अहो सन्त मन निहचल होई ॥ मति शङ्का मान्यो तुम कोई ॥
धाम वाम तन धन जो हेरो ॥ सो सब जानो साधुन केरो ॥ ॥
मैं सब विधि सन्तन को दासा ॥ और न मेरे आन उपासा ॥ ॥
पुराय हमारि उदै भे आजू ॥ जो घर सरयो तुम्हारो काजू ॥
बचन सुदर्शन के सुनि प्यारे ॥ धर्म निकरि आये तब द्वारे ॥
धन्य तुम धनि तव वाला ॥ प्रग आपन कीन्हों प्रति पाला ॥

दो॰ अहो सन्त मैं धर्म हों यह पतिव्रता नारि ॥
लेन परीक्षा आयऊं नहिं कछु दोष बिचारि ॥
तुम सम पुराय सलोक नहिं तीन लोक महँ कोइ ॥
जस कीन्ह्यो तस जगत में काहू तन नहिं होइ ॥
देव दनुज नर नाग मुनि गणिका तजि जग माहिं ॥
नारि दोष को देखि के रोष करे को नाहिं ॥

चौ॰ तुम्हरे क्रोध भयो नहिं राई ॥ ऊपर ते बहु कियो बड़ाई ॥
नहिं कुपरागता मानन मोहा ॥ सम चित इन्द्री जीतन कोहा ॥
विष्णु लोक तहँ बसिहो जाई ॥ आजु इ लेन विमान जो आई ॥
अर्द्ध इनी तब आधे अङ्गा ॥ सदा रही सो तुम्हरे सङ्गा ॥ ॥
अर्द्ध अङ्ग ते सरिता होई ॥ बोधवती कहवाई सोई ॥ ॥
जो कोइ मज्जो याहि मँझारा ॥ तासु पाप सब है है छारा ॥
अस कहि धर्म भे अन्तर ध्याना ॥ गण ले आये सुभग विमाना ॥
घोड़ा सहस लगे तेहि माहीं ॥ पवन समान उड़त जे जाहीं ॥
पति पत्नी तेहि माहिं चढ़ाये ॥ लखि सुर हर्षि सुमन बरसाये ॥
अपने पुराय प्रताप ते दोऊ ॥ गे हरिपुर जाने सब कोऊ ॥ ॥

दो० द्वारे मृत्यु बैठी रहै सत देखन के काज ॥
प्राण छूटै तो मार हूं ज्यों तीतर को बाज ॥
सो० प्राण जबहुं देखो नाहिं। चली तुरत खिसियाइके ॥
जाति तिते मृत्यु घर माहिं। हे मुनि पुराय प्रतापने ॥
पढ़ै सुनै नर कोइ यह इतिहास जो नित्त प्रति ॥
मृत्यु अकाल न होइ। भाषत भीषम पर्व हुमि ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम-
सनेही कृत सुदर्शन कथा वर्णनो नाम ऊनविंशो ऽध्यायः १९ ॥ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं भारथ ग्रंथ की पुनि इतिहास बखानि ॥

चौ० और सुनो मैं करौं प्रकाशा ॥ बहुला गऊ केर इतिहासा ॥ ॥
चंद्रावती पुरी एक अहई ॥ चन्द्रसेन राजा तहँ रहई ॥ ॥
द्विज हरिभक्त बसै तेहि ग्रामा ॥ बहुला गऊ तासु के धामा ॥ ॥
उज्ज्वल अङ्ग हंस की नाहीं ॥ विचरै सदा अभै बन माहीं ॥ ॥
रोहत गिरि यमुना तट एका ॥ गुफन माहिं रहै जीव अनेका ॥
वृक्ष सघन बेली उरझानी ॥ चारो तरफ भरा तेहि पानी ॥ ॥
एक दिन बहुला सङ्ग बिहाई ॥ चरत चरत परवत पर आई ॥
सिंह एक निकसा अति भारी ॥ बड़ रदन बदन भयकारी ॥
बहुले देखि सामने धावा ॥ निकट जाइ अस बचन सुनावा
जीवन कठिन जानु निजु गाई ॥ लेहौं तोहिं आजु मैं खाई ॥
जो आवै इहि बन के माहीं ॥ मोसे सो उबरत है नाहीं ॥ ॥ ॥
सुनि हरि बिवचन गऊ बिलखानी ॥ बछरा छोट आपनो जानी ॥
केहरि कह रोवै केहि काजू ॥ बचिहौ नहिं हम तें तुम आजू ॥
बद बहुला सुनु केहरि भाई ॥ आपन शोच मोहिं नहिं राई ॥
जो उपजै सो निश्चय नाशै ॥ जो नाशै सो पुनः प्रकाशै ॥ ॥

प्रीति पुत्रकी हृदयमें गाढ़ी। तेहितें मोह अगिन मोहिं बाढ़ी
प्रथम पुत्रजावा मैं याही॥ पियत अमै पयतृरा नहिं खाही
सो० बच्छे सीर पियाइ। फिरि मैं दुहने आइहौं॥
तबतुम लीन्हीं खाइ। सुनिबोल्यो मृगराज हँसि॥
दो० जोकोउ सूली चढ़त पर लगन लिखावै धाय॥
तैसे तैं मृत्यु भूलिकै बछरा के ढिग जाय॥
चौ० मेरे फन्द आइ जो परेऊ॥ सो जानौ जग जन्म न धरेऊ॥
तैं वाहँ निज पुर को जाना॥ मोहि बनाये निपट दिवाना॥ ॥
घर में जाय पुष को थैहौं॥ प्राण देन फिरि काहेकू ऐहौं॥ ॥
तातें हौं नहिं देहौं जाई॥ सुनि बहुला बोली अकुलाई॥
विप्र गऊ पितु मातें मारे॥ बनिता बालक गुरु संहारे॥ ॥
कन्या ब्याहि और को देवे॥ दोउ जनन ते पैसा लेवे॥ ॥
साधुन की निन्दा मुख गावे॥ हरि हर तजि जो आन हि ध्यावे
इनकर मन का पाप जो जागे॥ नहिं आवौं तो मम शिर लागे
झूठी साखि सभा महँ बोले॥ अतिथ निराश बास ते डोले॥
तुला चढ़ाइ घाटि फिरि देवे॥ मापिन में पुनि पातहि लेवे॥
कथा होत जो दुन्दि मचावे॥ विघ्न करे होने नहिं पावे॥ ॥
चोरि ज्वारि रत पर नारी॥ हरि हि सक मद मास अहारी॥ ॥
येनेक कर्म किहे जो पापू॥ नहिं आवौं तो मम शिर थापू॥ ॥
दो० हरि बिमुखन ते मित्रता रामजनन ते रोष॥
जो नहिं आवौं तो परै मेरे शिर यह दोष॥
चौ० मात पिते जे सेवे नाहीं॥ भली वस्तु मैं छिपि के खाहीं॥
दे विश्वास दगा करि जावें॥ साधु गुरू में दोष लगावें॥ ॥
हरि हरि जन गुण कहे न सुनई॥ पर अपकार लागि शिर धुनई
ऐसो पाप कर्म जो होहीं॥ नहिं आवौं तो लागे मोहीं॥ ॥

सुनत सिंह बोला हे माई ॥ सपथ तोर मोरे मन भाई ॥ ॥
हमरे मन बिस्वास सिहारो ॥ जिन चाहो तित बेगि सिधारो ॥
आयो आतुर छीर पियाई ॥ अस जनि जानेहु ठगौं बलाई ॥
दो॰ अहो सिंह तव ठगन को समरथ काको आहि ॥
ठगा चहै जो और को सोई सठ ठगि जाहि ॥ ॥
चौ॰ अस कहि आयसु हरि को पाई ॥ हुंकरत बहुला तुरत सिधाई ॥
पहुँची जब बछरा के तीरा ॥ बाल बिलोकि गई सब पीरा ॥ ॥
अंगज जननि देखि ढिग आवा ॥ चूमि चाटि मा दूध पियावा ॥
चित उदास अम्बा करि जानी ॥ बोला बरख अस मृदु बानी ॥
मातु बिकल देखौं मैं तोही ॥ कारण कौन बतावो मोही ॥ ॥
बहुला कहा पियहु सुत छीरा ॥ जेहि कारण आयउँ तव तीरा ॥
आजु निहारि लेहु मोहिं बेटा ॥ काल्हि न नहिं होइ पुनि भेंटा ॥
बन में हरि बैठो कहि देहौं ॥ सो हौं दै आइउँ फिरि जैहौं ॥
बोला बरख जाउँ मैं माई ॥ तेरे बदले मोहिं हरि खाई ॥ ॥
धर्मवान माता तैं आही ॥ तव सेवा मोहिं करनो चाही ॥ ॥
जाते मम होवै उद्धारा ॥ सुनि बहुला अस बचन उचारा ॥
दो॰ हे सुत आई मृत्यु मम तेरी आई नाहिं ॥
मेरी बदि तू कौन बिधि जैहै हरि मुख माहिं ॥
सो॰ सुनु सुत मम उपदेश । नन्दी नाम नृप रष्ट्र धर ॥
सरि सुशस्य अकुलेश । इन बिस्वास न कीजिये ॥
चौ॰ अस कहि चलि गौवन ढिग आई ॥ देखि मिली सुरभी सब धाई ॥
पूछन लगी कुशल कित रहेऊ ॥ गिरि पर गइ तृन सिंह तहँ रहेऊ ॥
खावे लेन रहे मृगराजा ॥ सौंह देइ आइउँ सुत काजा ॥ ॥
सब सों बिनय करौं कर जोरे ॥ क्षमा कीजिये औगुन मोरे ॥
हौं अब जात सिंह के पासा ॥ सुनत सखी सब भई उदासा ॥

बोलीबिलखि भारू अस कहई ॥ झूठे कहि य प्राण जो रहई ॥
तेहि ते बहु लाभ समति जानो ॥ घर बैठो निज प्राण बचावो ॥
बहु लाख कहा सखी सुनि लेहू ॥ अस उपदेश हमें मति देहू ॥
आपन प्राण बचन के हेता ॥ झूठ कहै तेहि जानो प्रेता ॥
पर के प्राण झूठ कहि बांचे ॥ झूठ नहीं सो जानहु सांचे ॥
जाकी मृत्यु मिटै नर सोई ॥ आपु अकेलो संग न कोई ॥
सत्य समान धर्म कोइ नाहीं ॥ पाप न झूठ सरिस जग माहीं ॥
शिव ते झूठ कह्यो चतुरानन ॥ जग महँ पूज्य नहीं तेहि कारन
सिय ते झूठ नहीं गो कहेऊ ॥ भक्ष्य अभक्ष्य युक्त है वहेऊ ॥
हरि स्तुति निन्दा झूठ बखानी ॥ भये बाघ सोइ पातक जानी
उमा शंभु ते झूठ उचारा ॥ तेहि कारण दुख लह्यो अपारा ॥
भरत कुन्त ध धर्म बखाना ॥ तेहि अघ भयो अंगुष्ठ पखाना
तेहि ते सत्य तजब हम नाहीं ॥ अस कहि चली केसरी पाहीं ॥
नमस्कार सब गोवन कीन्हा ॥ सत्य हेत जीवत तनु दीन्हा ॥
चलत अबहु लाल तहँ आई ॥ बैठो वहे जहां मृगराई ॥
बोलत भई सिंह मोहिं खावो ॥ हौं आई निज क्षुधा मिटावो
देखि व्याघ्र कह बैठो माई ॥ अब न खाब तोहिं चहै मरि जाई
सतिबादी कहुँ दुख को पावै ॥ तिमिर वकतहु दिनमणि हि मिटावै
कीन्हो सत्य जौन कछु कहेऊ ॥ तव आवन मोहिं अचरज भयऊ

दो० सत्य माहिं सब लोक है सत्य माहिं सब धर्म
ज्ञान मुक्ति है सत्य मैं सत्य माहिं शुभ कर्म ॥
धन्य धाम तव धन्य पुर धन्य चरत तृण जौन ॥
धन्य धरणि जहँ पग धरो धनि किसान हैं तौन ॥

चौ० धनि तव क्षीर धन्य जिन पीन्हा ॥ धन्य तुम्हार हमाँ जेहि कीन्हा
मैं निज भाग धन्य करि चीन्हों ॥ जब ते दरशन आपु को कीन्हों

अबबहुलासों दीजै मानू॥जेहितेहोयमोरकल्यानू॥
बहुला कहा सिंह सुनिलेहू॥हिंसाकरन छाँड़ि अब देहू॥
हरि सुमिरण में तन मन दीजै॥यह उपदेश मानि मम लीजै
कौ तुम हौ सो कहहु बखानी॥सुनि कराठीरव बोल्यो बानी॥
हे स्वामिनि मैं हौं गंधर्बा॥विद्यारूप केर उरगर्बा॥ ॥
देव श्राप ह्वै पीस तनु पायों॥यहि तन ते बहु पाप कमायौं॥
तुम्हरे दरश भये अघ नाशा॥छूटो श्राप हृदय परकाशा॥
मैं प्रसन्न हौं तुम घर जाई॥मम अपराध छिम्यो वे माई॥
अस कहि हरि सुमिरन में लाग्यो॥भोजन नीर देह सुख त्याग्यो
कछु दिन में तनु छूटत भयऊ॥चढ़ि विमान सुर पुर कहँ गयऊ
बहुला जब आई निज धामा॥पुत्र सखिन पायो बिश्रामा॥
सत्य व्रत्ति सब हिन उर धारी॥बरष सहित भये धेनु सुखारी
हरि प्रीति का सुख साय रहि कछु काल चलत विमान लेन
जो आयहू। नृप सहित पुर नरि नारि द्रुम पशु आदि सबनि
चढ़ायहू॥ लै उड़े गगन लखि देव बरषे सुमन घन जय जय
किये। गये लाँघि सातों स्वर्ग पर गोलोक में बासा लियो॥
दो० बहुला हरि सम्बाद नित कहै सुनै जो कोइ॥
रहै सदा आनन्द में मृत्यु अकाल न होइ॥
छप्पै धाम माहिं जो पढ़ै सुःख बालक को होई। गऊ खरि
क जो पढ़ै वृद्धि गोवन की सोई॥दुखी होइ सो पढ़ै नहीं तौ
श्रवण करई। होइ सकल दुख नाश और तन रोग हरई॥
बहुत महातम भाग में कहौं कछुक मैं गाय के। मुक्ति चहै
रघुनाथ भजु राम नाम मन लाइ कै॥
इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुना-
थ दास राम सनेही कृत सुदर्शन बहुला कथा बरणो नाम

बिंशोऽध्यायः २०॥

दो॰ सुमिरि राम सिय संत गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं जौ नृपकी कथा कछु ग्रसकं वखानि॥

सो॰ मोरध्वज नृप एक। धर्मधुरंधर नीति रत॥
रामभक्ति की टेक बधूपिंगला पतिव्रता॥

चौ॰ तासु राज कोइ दुखी न रहई॥ धन अधर्म कर भूप न लहई॥
बाल बृद्ध यौवन नर नारी॥ बसैं जौन तेहि नगर मझारी॥ ॥
सब मिलि करैं भक्ति हरि केरी॥ नृपरानी उर प्रीति घनेरी॥ ॥
माला तिलक सहित जो आवै॥ सुनते नृप आगे उठि धावै॥
भवन लायकै चरण पखारै॥ चरणोदक सोइ मुखमें डारै॥

दो॰ गंगन्हाइ सहस्र सब द्वारावति यत जान॥ ॥
सन्तचरण जल जो पियै तुलै न तेहि सम आन॥

सो॰ सिंहासन बैठाय। षोडश बिधि पूजन करै॥ ॥
नित नव नेह बढ़ाय। सेवै नृप सुत नारि जुत॥

चौ॰ जेहि दिन सन्तन कोई आवै॥ तेहि दिन प्राघुन भोजन पावै
चोर सात मिलि कीन्ह बिचारा॥ हरिजन के आधीन भुवारा॥
साधुन केर भेष धरिलेहू॥ सब चलिये मोरध्वज गेहू॥ ॥
नृपते प्रथम सेवक राई॥ घात पाय मूसब धन भाई॥ ॥
अस कहि सुन्दर भेष बनायो॥ मानों हरि राजा गृह आयो॥
देखि दण्डवत कीन्ह महीपा॥ मानो लह्यो स्वाति जल सीपा॥
पद पखारि आसन बैठारयो॥ धूप दीप आरती उतारयो॥
अंतह पुर में आसन दीन्हों॥ सुत बनिता सब सेवा कीन्हों॥
एक दिवस राजा मन आई॥ बन की शोभा देखिय जाई॥

छं॰ ऐसे अस बिचारि कसवाइ अश्व चढ़ि चले भूप जब॥
चमू चार असवार अनुग पाछे लागे सब॥ सघन विपिन में

गये फिरैं जहँ मृग करि हरि संग। बोलत बिबिध बिहंग कू-
लन फूले नाना रंग॥ बिहरत बीते दिवस निशि पाय कीन्ह बि-
श्राम तहं। शुभ तड़ाग पुरइन कमल कलित भँवर गुञ्जार जहं॥
इहाँ देखि घर सून चोर मूसन मन लायो। हीरा हेम निकारि भ-
वन बाहर धरि आयो॥ ढोवन बीती रैनि लोभ बस कछु न जा-
न्यो। रानिहिं डाक्यो मारि बाँधि अस बोरि परान्यो॥ इतने सा-
लौ जान हरि उत ते आवत राज। देखि हृदय संशय कस्यो प-
स्यो चरण तजि बाज॥ बोल्यो दोउ कर जोरि क्षमौ प्रभु गुनह
हमारी रानी नारि सुभाव अवज्ञा किहिसि तुम्हारी। चलिये ब-
हुरि निकेत चेत हमरे तब होई। सुनि ठग गये सुखाइ राम ते
बोले सोई साधु नहीं हम चोर हैं धन मूसा सो लेहु। हे दयाल
हम सबन पर जीव दान अब देहु॥ कह्यो भूप धन धाम बाम
सुत देह हमारी ह्वै सकल तव नाथ वृथा कस होत दुखारी॥
ऐसे बचन जनि कहौ लोग सुनि करिहैं सोरा। कहिहैं पर गढ़
गुप्त सबै हरिजन हैं चोरा॥ गहि कर लाये भवन को सिंहासन
बैठाइ। रानिहिं मृतक निहारि कै सोच भयो मन मैं आय॥
कुण्डलिया लाग्यो पुनि सेवा करन नृप संतन की आइ।
कनक थार सात हुन के धोये चरण बनाइ॥ धोये चरण बना-
इ मृतक रानी तहँ लायो। कराउहि मुराउ मिलाइ राम कर
ध्यान लगायो॥ सींच्यो चरण मृतहि प्राण घट माहीं आयो॥
उठी तुरत हरषाइ भूप लखि भावन लाग्यो॥
दो॰ आज तुम्हैं निद्रा बहुत कहाँ की घेरी आइ॥
सन्त चले जब रूठि कै राख्यौ क्यौं न मनाइ॥
हाथ जोरि रानी कह्यौ सुनौ प्राण पति बात॥
सोइ गई मैं आजु अति इन्हैं न जान्यौ जात॥

कहनृपपदअबतेगहौगहेरानिसुखझेरि॥
मनमैभयौनमैलकछुलागेसेवनफेरि॥॥
प्रतिमातीरथमंत्रगुरुभेखजवैष्णवकोइ॥
जाकीजैसीभावनाताहितैसफलहोइ॥॥

चौ॰ तबहरिपुनि२आयसुमाँगा॥बोलेभूपसहितअनुरागा॥
जोधनचहौसोहमतेलीजै॥चोरीकर्मछाँडिप्रभुदीजै॥॥
जन्मभरेकहँसम्पतिदीन्हौं॥हरषसमेतबिदातबकीन्हौं॥
ऐसीभक्तिदेखिभगवाना॥मनबचक्रमतेनिजजनजाना॥
मोरध्वजपरदायाकीन्हौं॥चक्रसुदर्शनरक्षकदीन्हौं॥॥
ईतिभीतिदुखदारिदआवै॥नृपकेनगरनपैठनपावै॥॥
एकदिवसयमदूतजोआये॥चक्रसुदर्शनलखिरपटाये॥
भागतयमपहँपहुँचेजाई॥दण्डफाँससबदिहिनिचलाई
लखिहरिकहाह्वैकाभाई॥सुनिगणबोलेबचनरिसाई॥॥
दण्डहमारतिहूँपुरमाहीं॥ऊँचनीचकोउछाँड़तनाहीं॥॥
मोरध्वजपुरजाननपायनु॥खेदेहुचक्रइहाँभगिआयनु॥
यहअनुचितदेखीमहराजा॥हमतेयहसपरीनहिकाजा॥॥
सुनिरविसुतमनक्रोधबढ़ायो॥दूतनसहितविष्णुपहँआयो
शीशनाइकहअरजहमारी॥सुनहुनाथत्रिभुवनसुखकारी॥
तवआज्ञातेजगतमझारा॥सबपररहतहैदण्डहमारा॥॥
मोरध्वजपुरदूतहमारे॥गेतहँखेद्यौचक्रतुम्हारे॥॥

दो॰ दूतनकरअपमानभा दीन्हिनि फाँसचलाय॥
सोइहकारणकौनहैनाथकहौसमुझाय॥
हँसिबोलेहरिसुनहुयमनृपसमभक्तनकोइ॥
तेहितेदीन्हौंचक्रनिजरखवारीकहँसोइ॥
केहिबिधिजावैंदूततवमेरेजनकेपास॥

सुनत पित्र पति जोरि कर कीन्हों बचन प्रकास॥
छप्पै भूप कौ केहि भाँति यज्ञ सो कहिये मोहीं। कह प्रभु केहैन
बनी चली दिखरावौं तोहीं॥ यमहिं सिंह करि आपु साधु कर रू-
प बनायो। आय नृप दरबार देखि उठि पद शिर नायो॥ सिंहासन
पधराय के षोड़स बिधि पूजन करी। भोजन को पूछत भयो तब
नृप ते बोले हरी॥ सिंह एक मम साथ प्रथम भोजन तेहिं दीजै। क-
ह्यो भूप का चहौ तबनि तन बीरहि कीजै॥ सुत को माँस सुदेहु आ-
न सा उज नहिं खाई॥ किंतो भक्ति प्रणा तजहु किंतौ शिशु लेहु बो
लाई॥ भक्ति तुम्हारी नात जौं कोटि बिघ्न किन होइ। सुत बनिता
धन धाम तन सङ्ग जाँय नहिं कोइ॥
चौ० हरष सहित इक दास बोलाई॥ कह्यो कि आनहु सुतहि लेवाई
आज्ञा मानि कुँवर ढिग गयऊ॥ खेलत बोलि लयावत भयऊ॥
पुत्रहि लखि नृप बचन प्रकासा॥ हमरे इक आये हरि दासा॥ ॥
तिनके सङ्ग इक नाहर आहई॥ तुम्हरे माँस खान सो कहई॥ ॥
सो कस आज्ञा अहै तुम्हारी॥ मेटहु संशय आजु हमारी॥ ॥
सुनि ताम्रध्वज कह शिर नाई॥ धन्य सो तन परस्वारथ आई॥
धन्य धाम जहँ अतिथि कि सेवा॥ धन्य शिष्य जाने गुरु देवा॥ ॥
धन्य नारि पतिब्रत अनुसरई॥ धन्य पुत्र पितु आज्ञा करई॥ ॥
धन्य ग्राम जो सुरसर तीरा॥ धन्य तपी तामस बिन धीरा॥ ॥
धन्य सो नगर जहाँ रजधानी॥ राजा धन्य धर्म मति सानी॥ ॥
धन्य दास जो आयसु माने॥ धनि स्वामी सेवा पहिचाने॥ ॥
धन्य ज्ञान जो इन्द्री जीते॥ धन्य सो प्रीति न याँचे मीते॥ ॥
धन्य सभा जहँ पण्डित होई॥ पण्डित धन्य क्रियायुत सोई॥
धनि धन पाइ जो त्याग न करई॥ धन्य दरिद्री पाप न चरई॥ ॥
धन्य सुखी जो बिषय निवारै॥ धन्य साधु जो मानस मारै॥ ॥

धन्य सो क्षमा समर महँ आने ॥ धनि दाता नहिं दान बखानै ॥
धन्य सो द्रव्य दान महँ लागै ॥ धनि प्रभुता मद मान न जागै ॥
धन्य कर्म जो भगवत हेला ॥ धन्य ज्ञान वैराग्य समेता ॥ ॥
धन्य विरति जो रति भगवाने ॥ धन्य सो कवि हरि चरित बखाने
धनि नर पर औगुनै छिपावैं ॥ धनि विद्या विकार मिटि जावैं ॥

दो० दयावान सो देश धनि कहत वेद बुध लोइ ॥
रामभक्त जहँ ऊपजै धन्य जाति कुल सोइ ॥
धन्य धरीर रघुनाथ तब जब होवैं सत संग ॥ ॥
जन्म तासु को सफल जो रंगै राम के संग ॥ ॥

चौ० अहो पिता मोहिं भा सुख भारी ॥ जो हरि मागी देह है मारी ॥
अब यह परस्वारथ में आयौ ॥ धनि जननी ऐसो तन जायौ ॥ ॥
रोग दोष बस छूटै काया ॥ स्वारथ शास्त्र रजाइ कदाया ॥ ॥
बिष्ठा कर्म खाक होइ जाई ॥ कहौ कौन स्वारथ फिरि आई ॥ ॥
माता मार मुई दश मासा ॥ सही अनेक भाँति तेहि त्रासा ॥ ॥
सो तन लग्यो न परहित माहीं ॥ जीवन जन्म धृग है ताहीं ॥ ॥

दो० भजन परारथ कर्म शुभ सधै पाय नर देह ॥
जीवन ताको सफल है अरु सब के मुख खेह ॥
अस कहि पितै नवाय शिर चलि भे कुँवर प्रवीन ॥
आये केहरि संत जहँ कहे बचन है दीन ॥ ॥

चौ० अब भोजन हमका करि लीजै ॥ अहो सिंह तुम देर न कीजै ॥
बारबार ऐसे जब कहेऊ ॥ सुनि धम निज तन प्रगटत भयऊ ॥
रूप चतुर्भुज हरि करि लीन्हा ॥ प्रगट नृपति कहँ दर्शन दीन्हा ॥
धन्य २ तुम धन्य भुवारा ॥ आपु सराहत सिर्जनहारा ॥ ॥
कह रवितनय धन्य हौ राई ॥ सुत तुम्हार तुम ते अधिकाई ॥
जसि श्रीपति तब कीन बड़ाई ॥ सो निज नैनन देख्यौं आई ॥

बोले प्रभु वरु मागनरेशा ॥ प्रगति पालमेरो यह येश्हा ॥ ॥
मोरध्वज कह सब सुख दाइनि ॥ आपनि भक्ति देहु अनपाइनि
एवामस्तु कहि कृपानिधाना ॥ बोले पुनि सुनु भूप सुजाना ॥
करो भक्ति जब लगु यह देही ॥ अन्त समय मम धाम सनेही ॥
अस कहि हरि यम तुरत सिधाये ॥ अपने मन्दिर आये ॥ ॥
धर्मगराान ते कथा बखानी ॥ भई प्रीति मन मिटी गलानी ॥ ॥
जो जन चरित सुनै नित येहा ॥ होइ सन्त पद पावन नेहा ॥ ॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसने-
हीकृत मोरध्वज वर्णनो नाम एक विंशो ऽध्यायः २१ ॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरनौ हरि अस्तुति मन करु सोइ कथा बखानि ॥
गनिहि मास्यो हरि न लखि वनदपि न भयो अभाव ॥
पुंचे दीन्हौं हृपिजन हित मोरध्वज राव ॥ ॥

चौ॰ यहि विधि भक्ति करै नरनाहा ॥ दिन प्रति बाढ़े अधिक उछाहा
भूप धर्म जो बेदन गाये ॥ सो सकलौ क्षिति पति करवाये ॥ ॥
सुर भूसुर सुरभिन प्रति माने ॥ बैशो को विष्णुहि सम जानै ॥ ॥
श्रीपति चरण लीन मन जासू ॥ लुब्ध मधुप जिमि तजै न पासू ॥
बहुत काल यहि विधि चलि गयऊ ॥ और सुनो जो कसनी लयऊ ॥
कीन धर्मसुत यज्ञ कसाजा ॥ पत्र बाँधि छाड़ो बरबाजा ॥ ॥

दो॰ कृष्ण बिजै बभ्रुवहन नीलध्वज नृपकेतु ॥
हंसध्वज औरो सुभट संग रक्षा के हेतु ॥ ॥
चलत बाजि आयो सोइ मोरध्वज के ग्राम ॥
ताम्रध्वज गहि बाँधि पट बाँध्यो लै निज धाम ॥

चौ॰ चढ़ि रथ आगे आप सिधायो ॥ पाछे इत अर्जुन दल आयो
होन लागि अति मारु गँभीरा ॥ सूर मगन कदरन मन पीरा ॥ ॥

सातदिवस भरिभई लराई ॥ मोरध्वजसुत जीति न जाई ॥ ॥
अर्जुन आदिबीर जे रहेऊ ॥ दिये बिडारि बिकल सब भयऊ ॥
लखि अचेत निज मन्दिर आयो ॥ बड़ पराधभा भूप सुनायो ॥
भक्ति करत जाकी नित रहिये ॥ तिनते युद्ध करन को चहिये ॥
महि दुखहरन सुरन सुखकारी ॥ धरयो आय वपु कृष्ण मुरारी ॥
सुनि ताम्रध्वज कही जुबाता ॥ अनजाने अनीत भै ताता ॥ ॥
यहां कृष्ण पारथ ते कहेऊ ॥ सात दिवस इहनै है गयऊ ॥ ॥
मोरध्वज है भक्त हमारा ॥ तेहि ते लरे न पैहो पारा ॥ ॥ ॥
सुनि कपिध्वज के भा अभिमाना ॥ हमते बड़ा भक्त को आना ॥
जिनके बस नित रहत गोपाले ॥ धनुबेकेरि विद्या उर आले ॥
यह अभिमान कृष्ण प्रभु जाना ॥ लगे विचारन हँसि भगवाना ॥
अष्टपदी छं० जाय हेत ते ज्ञान जाय कुल द्विजै सताये ॥
जाय नीच संग सुमति जाय क्षुध भोजन खाये ॥ जाय क्रोध ते धर्म जाय आदर नित मांगे । जाय नीति बिन राज जाय शूरापन भागे ॥ जाय ज्ञान ते मोह जाय अघ हरि गुण गाये ॥ जाय तिमिर रवि उदै जाय विद्या लस आये । जाय यती वश काम जाय यश लोभ बढ़ाये ॥ जाय गृही बिन नार जाय सुख सब हि सताये ॥ जाय कुमति ते दर्ब जाय संतोष ते ममता । जाय कपट ते प्रीति जाय रिस कीन्हे समता ॥ जाय सखा ते शोच जाय पालक ते शोभा । जाय सुपथ ते रोग जाय बैराग ते लोभा ॥ जाय जन्म अरु मरण राम के सुमिरन कीन्हे ॥ जाय गुरू ते भर्म कर्म निज रूप हि चीन्हे ॥ शान्ति जाय परवर्ति ते दोष जाय दिहे दान । कहे रघुनाथ यों जात है भक्ति हि के अभिमान ॥
चौ० ताते अबही देहु मिटाई ॥ नातरु बढ़त बढ़त बढ़ि जाई ॥
कृष्ण कहा पारथ सुनु मोहीं ॥ आवो भक्त देखावों तोहीं ॥ ॥

आपुवृद्धद्विजवपुधरिलीन्हा॥बालकरूपविजयकहँकीन्हा॥
आयेचलिमोरध्वजद्वारा॥हरिपूजनमारहेभुवारा॥ ॥ ॥
द्वारपालजाखबरजनाई॥बोलेनृपबैठारहुजाई॥ ॥ ॥
कहतदोऊजनचलेरिसाई॥सुनिनृपपरेचरणमहँधाई॥
करिसनमानसुआसनदीन्हा॥हाथजोरिहँसिपूछेलीन्हा॥
कौनहेतआयोमहराजा॥आयसुहोयकरौंसोइकाजा॥
हमसौंसेवनतेबनतनआना॥तुम्हरीसेवनेकसयाना॥ ॥
दो॰ विप्रकहीजोदेनकोकरोप्रतिज्ञाराइ॥
तोमैंमांगौंजाहितेबचनवृथानहिँजाइ॥
चौ॰ कहनृपकीन्हप्रतिज्ञामांग्यो॥तबतौविप्रकहनअसलाग्यो॥
आवतरहेनबनहरिएकमिलेऊ॥गहिसिआइबालकमोहिदिलेऊ॥
तबमैंकह्यौंछोड़ियहिदीजै॥याकेबदलेमोकोंलीजै॥ ॥
सिंहकहामोरध्वजराऊ॥तासुअंगदाहिनलैआऊ॥ ॥
तौमैबालकदेहुँबचाई॥नाहितौयाहिडारिहौंखाई॥ ॥
हौंतबअंगदेनकहराई॥छाड़सिनबरुसौंहकराई॥ ॥
सोईलेनआयोंतवद्वारा॥अपरहेतनाहिंकछुहमारा॥
सुनिरानीबोलीहरषाई॥अर्धंगीप्रियबेदनगाई॥ ॥
तातेमोहिंकेहरिकोदीजै॥पुत्रकह्योनाहिंमोकोलीजै॥
बहुरिकुशाबोलेमुनिस्नेहू॥केहरिबचनकहाएकयेहू॥
स्त्रीपुत्रहाथगहिआरे॥चीरैंहर्षसमेतभुवारे॥ ॥ ॥
सुनिआरानृपलीनमँगाई॥रानीपुत्रगह्यौतबआई॥ ॥
सिरधरिचीरनलागेकैसे॥बढ़ईउभैदारुकहँजैसे॥ ॥ ॥
चीरतआयोनासातीरा॥बायेंदृगभरिआयोनीरा॥ ॥
दो॰ निंदि२कहिनीरलखिचलेकथाअनखाइ॥
दोउकरिटेकिकरोतनृपपूछ्योगाढ़ुकसाइ॥

चौ० केहिकारणप्रभुचल्योरिसाई। तौनिचानमोहिंकह्यौबुझाई॥
देतछोभतेरेहूंआवा। तेहितेयकअस्वकअलछावा॥
कहनृपमोरेछोभनराई॥ वासअंगरोवतयहिलाई॥ ॥
मैनलग्योंपरमारथमाहीं॥ मोसमभाग्यहीनकोउनाहीं॥
तुम्हरेदहिनेतौनहिंआवा॥ सुनतकृपालमहासुखपावा॥
फेर्योसीसकमलकरजबहीं॥ भईनवीनदेहनृपतवहीं॥
सजलनयनप्रभुहृदयलगायो॥ जयकहिदेवसुमनबरषायो॥
कह्योकिनृपमांगहुबरदाना॥ जोइच्छामनहोइसुजाना॥
कोटिभांतिजोदेहुंभुवारा॥ तुमतेतवहुनहौंउद्धारा॥ ॥
ऐसीभक्तिकीन्हिंतुममोरी॥ दूखिनसूधिहोतदिशितोरी॥
दो० भूपकह्योजोइयदहूकरेतिहारेसाथ॥ ॥
ताकोतुमगिरिमेरुसममानिलेतहौनाथ॥
चौ० एकबातमांगतहौंस्वामी॥ सोमोहिंदीजेअंतरयामी॥
आगेजुगलागीकलिकाला॥ कुटिलअपावनरूपकराला॥
तामेकसनीभक्तनकेरी॥ लेहुननाथअरजयहमेरी॥ ॥
कलिमेभक्तनामकीआशा॥ कसनीलिहेनहोइप्रकासा॥
सुनतबचनकहबिहंसिमुरारी॥ जोमाग्योंसोदीन्ह्योहारी॥
अपनेवास्तेअवकछुकहिये॥ प्रभुपदप्रीतियहीमोहिंचहिये
कहप्रभुधन्यधन्यतुमराजा॥ धन्यपुत्रतियसहितसमाजा॥
असकहिहयलैबिदाजोभयऊ॥ देखिदर्पपारथकरगयऊ
गीतिकाछं० जबदेखिनृपकीभक्तिकोंअभिमानपारथकोग
यो। गिरिधरणश्रीगोपालकेहोयदीनअसबोलतभयो॥ म-
हिमन्दमोसमकोउतुमतेनाथहौंमिवालई। ध्यातेहुपरअहं
कारएवतभक्तमोसमनाहई॥ लोभवशगुरुमित्रभ्रातापुत्र-
बहुजीवनिहंने। समुझिकुलकरतूतिअपनेदोषजायेनहिंग

ने ॥ पर पिता द्विज कानीन हमरे पिता गोलक गारजू । हम कुंड क दुःप्रराज सुवारी हद्द हारी नारिजू ॥ अतिकष्ट करि मोव्या हु मोप्रियाय पंचभरतारी भई । गुणहीन हरि छलपीन पावर नि- धन निरबल निर्दई । ऐसेहू पर नहिं जानियत श्रौंकाहि ते रीझ्यो हरी । बनवासविपत्ति ज्वय रिपुन ते सब ठौर तुम रक्षा करी ॥

छंद॰ द्रुरबलन केबल भूप भूप केबल को बल है । तसकरि के बल धनि धनिहि धन घाते छल है ॥ मूरख केबल मौन मानिनी केबल रोदन । क्रोध केबल खल बचन नयन केबाम बिनोद- न ॥ द्विज के श्रुति क बिबल चरण स्वाके परसर केबल हौ ॥ तेहि प्रकार यदुनाथ तुम नाथ हमारे बल ग्रहौ ॥

दो॰ कहरघुनाथ सनेह नर यहि बिधि बिनती कीन्ह ॥
मोरध्वज की यह कथा यथा बुद्धि कहि दीन्ह ॥
मोरध्वज की यह कथा पढ़ै सुनै नित नेम ॥
होइ भाव भक्तन बिषय बढ़ै राम पद प्रेम ॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत मोरध्वज आख्यान बर्णनो नाम छाबिंशो ऽध्यायः २६ ॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बर्णो महापुराण को ध्रुव इतिहास बखानि ॥
सुनहु सुनिहु मनु लाइ कै सुंदर कथा अनूप ॥
कही जौन शुकदेव जी सुनी परीक्षित भूप ॥

चौ॰ सोई कथा मै कहौं सुभाई ॥ राम चरण जेहि रति अधिकाई ॥
सतयुग भे मनु जग यश जासू ॥ नृप उत्तानपाद सुत तासू ॥
सुरुचि सुनीति रहे दोउ रानी ॥ बिधुबदनी गुण रूप सयानी ॥
उत्तम नाम सुरुचि सुत जायो ॥ ध्रुव सुनीति के बेदन गायो ॥
सुरुचि महीपै प्रिय अधिकाई ॥ सो सुनीति के महल न जाई ॥

अन्नसेरभरिदेहुभुवारा॥ताहीतेदोउकरैंगुजारा॥ ॥
पाँचवर्षकेध्रुवजबभयऊ॥खेलतनृपजहँतहँचलिगयऊ
ठाढ़भयेआगेहरुगाई॥लखिनृपरुखनृपलियोगोदउठाई
देखिसुरुचिअतिउठीरिसाई॥दिहिसिउतारिगोदतेधाई॥

दो॰ बैठनकोनृपगोदजोलिखोहोततवकर्म॥
तौसुनीतिकेजठरमेंकाहेकलेत्योजन्म॥
पूतअभागिनिकेरहै चढ़ैगोदनृपकेर॥
अन्नमिलतहैसेरभरिसोउनमेलिहैफेर॥

छप्पै तपबिनहोइकिराजसाजबिनहोइकिकारज।गुण किहोइबिनटहलबिनागुणहोइकिचारज॥धनबिनमित्र किहोइमित्रबिनहोइकिसदसुख।सिद्धिकिबिनविश्वास दासबिनमिटैकिभवदुख॥अघबिनहोतकिअयशशुभ यशकिहोइबिनदानके।होतभुक्तियुतमुक्तिकहुँबिनाभ- जेभगवानके॥

चौ॰असकहिबाँहपकरिध्रुवकेरी।मंदिरबाहरदीनखदेरी।
रोवतध्रुवमाताढिगआयौ॥देखतजननीगोदउठायौ॥
केहिमार्‌योसोकहियेमोसे॥काअपराधभयोसुततोसे॥
कहध्रुवपितागोदमाहिंलीन्हा॥रानीछीनिडारिमहिदीन्हा
दूरि२कहिघरतेकाढ्यो॥सुनिदुखवचनमहँदुखबाढ्यो
ऐसीविधिमोकोदुखदियऊ॥राजाकछूमन्योनहिंकिहेऊ
तातेमैंपूछतहौंतोको॥काकीशरणअहैसुखमोको॥
कह्योमातुसुखनिधिभगवानू॥सोइपितुमातुबंधुसगजानू
जेहिप्रभुराखिगरभमेंलीन्ह्यो॥पानिकेबुंदप्रगटबपुकीन्ह्यो॥
गरभमांचिपुनिबाहरलायो॥मातुपयोधरक्षीरपियायो॥
यहिविधिपुष्टकिहेसबअंगा॥जनमतमरततजैनहिंसंगा॥

जिय अपराधी ताहि न जानै ॥ संकट परे तबै कछु मानै ॥
तातें सहै विपति बहु भांती ॥ चौरासी लख आवत जाती ॥
अस जिय जान भजहु भगवानै ॥ सुमिरत जाहि शंभु धरि ध्यानै
सो प्रभु विश्वरूप श्रुति कहई ॥ सुनो तात जेहि शेसे रहई ॥
चरपटछं० पद पताल सिर ब्रह्मधाम । अपर लोक हैं अं-
गनाम ॥ नयन दिवाकर दिशा कान । अश्वनीकुमार बाजा-
सुघ्रान ॥ घन केश अंबुपति जीह जानु ॥ निशि दिन निमेष
आनन कृशानु ॥ दिगपाल बाहु हैं पवन स्वांस । रोमावलि
विटप लघु दीर्घ वास ॥ नारी सरिता अरु अजा हास । अधर
लोभ यम दशन तासु ॥ अस्थि अद्रि रस शब्द भोग । जानै वि-
रलाकोउ चतुर लोग ॥ शिश्न प्रजापति वीर्य तोय भृगुटी वि-
लास मोइ काल होय ॥ उदर सिंधु सांचो प्रसंग दुःशूल इत-
नाजु अंग ॥

सो० अहंकार त्रिपुरारि । चतुरानन सोइ बुद्धि वर ॥
मन द्विजराज बिचारि । चेतन रूप अनूप हरि ॥

दो० सो प्रभु सचराचर विधे पूरण व्योम समान ॥
भजन बिना नहिं लखि परत ज्यों बिन मंथ कृशान ॥
अस बिचारि सब सोच तजि राम चरण चित देहु ॥
सुर दुरलभ तनु पाइ कै ताहि सफल करि लेहु ॥

चौ० ऐसे बचन सुने ध्रुव जबहीं ॥ हाथ जोरि बोले इमि तबहीं ॥
तुम कत दुखी सुखी बहु रानी ॥ तीन भेद मोहिं कहौ बखानी ।
कहरानी प्रथमै तन माहीं ॥ सपन्यो दान दीन कछु नाहीं ॥ ॥
साधु संग हरि भजन न भावा ॥ खर कूकर सम सैंति गवांवा ॥ ॥
जस कछु कर्म याच भल कीन्हा ॥ सोइ जनमत विधि सिर लिखि दीन्हा
नहिं जानी कहि सुकृत तेरे ॥ भये आशिश राणी गोविंद केरे ॥ ॥

तेहितेकोइदुखनिकटनआवै॥परारब्धतेहितनुभुगतावै

दो॰ जोकछुलिखालिलारमेंसोहोवैपरिनाम॥
चहैपरैघररंककेचहैमहीपतिधाम॥॥
तद्यपिहरिकेभजनकरिहोतसुभीतेकोट॥
नरवररवनतेहैगईबिधिबरखेंबाढ़बोट॥

चौ॰ नातेसुनतुममर्मसीकरहू॥रामचरणपंकजचितधरहू॥
भक्तिमुक्तिहरिदरसनपावौ॥जोनजिकामनामलवलावौ॥
यहिबिधिमातुदीनजबज्ञाना॥सुनिध्रुवकेअतिशैमनमाना॥
पूरबकाकछुसुकृतजागा॥ध्रुवकेभयोबिमलबैरागा॥॥
उठिजननीतेआज्ञामांगी॥करिहौंभजनबिपिनगृहत्यागी
बोलीमातुअबैतूबारो॥सतसम्बतजनिबनपगुधारो॥
क्षुधातृषाजबआनिसताई॥केहितेभोजनमांगिहौजाई॥
शीतउष्णवर्षादुखपैहौ॥काबनओढ़िहौकाहडसैहौ॥
बाघसिंहबकशूकरआई॥औरोजीवबहुतदुखदाई॥
बालकदेखिदेषहैंदुखभारा॥काउपाउतबचलीतुम्हारा

दो॰ सुनिध्रुवकहमातातुरतगयाज्ञानकातीर॥
अबहीतेहमतेकहैहरिरक्षकसबठौर॥
गरभमाहिंरक्षाकरीजहांहितूनहिंकोइ॥
अबकापरिबनपालिहैबिपिनगेहमहँसोइ॥

चौ॰ असकहिध्रुवचलिभहरषाई॥मंत्रिनभन्योभूपतेधाई
ध्रुवबालकबनजाततुम्हारा॥कानिदेशनबहैयहिबारा॥
कहनृपसोनसरजुगदेहू॥अबहीध्रुवेफेरितुमलेहू॥॥
मंत्रीसुनिआयेध्रुवपासा॥अस्थिरकरिअसबचनप्रकासा॥
सेरधरेकरदुइसरखाहू॥लउठिचलोघरबननहिंजाहू॥
जेहिप्रभुकीनसरतेंदूना॥तेहिकेभवनअबरकासूना॥

हरिमारगतेफिरवनमाहूं ॥ करै जो कोई कोटि उपाई ॥ ॥
मंत्रिन आइ कहा नृप पाहीं ॥ चले जात ध्रुव आवत नाहीं
राजा कह्यो गाँव एक दीजे ॥ मानै तबै फेरि ध्रुव लीजे ॥ ॥
सचिवन ध्रुव को ग्राम सुनायो ॥ तब ध्रुव अधिक सनेह बढ़ायो
मन में अभै मनोरथ जागा ॥ तुरतै मिलन गाँव इक लागा ॥
नाम जपे ते धौं का होई ॥ मोरे मन प्रतीति असि सोई ॥ ॥
ताते हम अब लौटब नाहीं ॥ मंत्रिन जाइ कही नृप पाहीं
तब राजा आपुइ चलि आयो ॥ चौथाई कहि अर्ध सुनायो
बहुरि कह्यो सब राजहि लीजे ॥ नाना भाँति भोग चलि कीजे
सुनि पितु बचन कहत ध्रुव भयऊ ॥ अर्ध मैं सेर अन्न नहिं दयऊ
जेहि न कोइ ताकर प्रभु सोई ॥ प्रभु जाके ताके सब कोई ॥
जब मैं राम चरण चित दीन्हा ॥ तब तुम नाम राज्य कर लीन्हा
हरि सन मुख ते जो फिरि आवौं ॥ सती स्वांग करि ताहि लजावौं

दो० रानी जबही गोद ते दीन्हों मोहिं उतारि ॥ ॥
तबहीं बंधो न सम्हारेऊ मोह करत अवहारि ॥

चौ० जबलगि हरि के दरशन पैहौं ॥ तबलग जग में सुख न देखैहौं
मंत्री नृप सब कहि कहि हारे ॥ हठ करि कै ध्रुव बनै सिधारे ॥ ॥
मिले ध्रुवै नारद मग माहीं ॥ पूछ्यो कित आयो कित जाहीं
जानत निज जनक को कित तव ग्रामा ॥ हे सुत कहौ कहा तव नामा
बोले ध्रुव पितु मात मुरारी ॥ भ्राता मित्र सोई सुख कारी ॥ ॥
सोइ कुल जाति कुटुम्ब परिवारा ॥ सब जीवन को सिरजनहारा
जबलग ऐसे पितै न जाने ॥ तबतक झूठ सांच करि मानै ॥
जग महं जेहि विधि बद सब कोऊ ॥ तुम ते कहि समुझावौ सोऊ
नृप उत्तानपाद पितु अहई ॥ माता उभै नाम ध्रुव कहई ॥
पिता गोद लखि सुरुचि माता ॥ दीन्हिसि उतारि कहिसि कटु बाता

दो० गेवतजननीपहंगयोतेहिमाहिंदीन्होज्ञान॥
हेसुतसुखसपन्योनहीं बिनाभजेभगवान॥

चौ० नवमेबनकोचल्यौसिधाई॥ सचिवनकहाभूपतेजाई॥
राजातबबहुलोभदिखायो॥ सबतजिहौंहरिशरणातकायो॥
तुमकोहौनिजनामबखानो॥ मैंबालकनहिंऐसेजानो॥
कहऋषिनारदनामहमारा॥ गोदोहनबिचरौंसंसारा॥
सुनिध्रुवगिरेचरणाहरषाई॥ ऋषिउठायलियेगोदलगाई॥
चलुध्रुवतोहिंफेरिलेजावौं॥ राजातेंसन्मानकरावौं॥
राजकरौचलिब्याहकरीजे॥ बालकएकहोइसुनिलीजे॥
सुतेराजदैबनेसिधारो॥ सबराजनकीसाखिबिचारो॥
काननसिंहबाघबहुरहई॥ भालुभेड़ियादेखनगहई॥
निशिचरबिपुलफिरतदुखदई॥ बड़ेऽभयमानतभाई॥
तहंबालककोकौनउबारा॥ तातेमानोबचनहमारा॥
सीतउष्णबरषादुखपावे॥ क्षुधातृषाजबअधिकसतावे॥
तबकेहितेदुखकहिहौरोई॥ तहंनहिंमातपितानुजकोई॥
करणीकठिननकीन्हीजावै॥ बिपिनजाइकतप्राणगंवावै॥

दो० कहेरघुनाथअनेकबिधिमुनिभयरहेदेखाय॥
ध्रुवकेतनकनशंकभयरामकृपादृढ़ताय॥

चौ० कहध्रुवहरिरक्षकसबठावं॥ घरबनफिरतचलतबिचगावं॥
जैसीकर्मभावतीहोई॥ तैसीमृत्युपावसबकोई॥
आखिरयहमनएकदिनछीजे॥ तेहितेहरिसुमिरणाकरिलीजे॥
मातापितानारिसुतनाती॥ कोकाकोसबपथिकलखाती॥
इनसबहितेतमरतजोकाजा॥ तातजिक्योंबनजातराजा॥
राजपाइकेमदहोइआवे॥ करैअनीतनरककोजावे॥
राजनरकदोउसंगीरहई॥ यहितेमोहिंनहिंभावतअहई॥

तातेमोहिं हरिभक्ति दृढ़ावो॥ कृपा करो गुरु मंत्र सुनावो॥
मैंबड़भागी हौं रुटपिराया॥ यहि अवसर तवदर्शन पाया॥
दो० सागर लय ज्यों वृष्टि भै बूड़त बोहित साथ॥
मरत धनन्तर मिलै तिमि मोहिं मिलो तुम नाथ॥
बन्धु बयर धर नारिसँग न्याय मकीजै देर॥
भोजनदान सुकर्म मैं नाहिं लगाई बेर॥
चौ० ताते बेगि सुदीक्षा दीजे॥ पतितै प्रभु पावन करि लीजे॥
नारद ध्रुव के मन की जानी॥ भूत भविष्य वर्त्तमान पिछानी॥
तब ध्रुव का दीन्हों उपदेशा॥ मूल मंत्र यहि जपत महेशा॥
आसन ध्यान कह्यो जप नेमा॥ नवधा भक्ति बतायो प्रेमा॥
सम दम सत संतोष बिचारू॥ ज्ञान बिराग दया उर धारू॥
काम क्रोध मद मत्सर लोभा॥ छांड़ो मान मोह छल क्षोभा॥
सो० विद्या जाति महन्त। यौवन को मद रूप मद॥
तजै यतन कर सन्त। पांच काटि ये भक्ति के॥
चौ० ऐसे बिघन भजन में भाई॥ रिद्धि सिद्धि सब धेरें आई॥
इंद्र डरपि अपसरा पठावैं॥ छल बल करि सो आनि डिगावैं॥
जापर कृपा करै असुरारी॥ तेहि ते सकल जाइ जिय हारी॥
मुनि शिक्षा दै जबहि सिधाये॥ तब ध्रुव चलि मधुबन में आये॥
इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदा-
सराम सनेही कृत ध्रुव मधुबन आगमनो नाम त्रैविंशोऽध्यायः २३॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरापगिरा सुखदानि॥
राजनीति संयुत कहौं मोद इतिहास बखानि॥
पांच बरस के बयस ध्रुव धर्क करी कछु नाहिं॥
सुनि माते उपदेश तहँ आये मधुबन माहिं॥
चौ० एक पांय भे ठाढ़ सुजाना॥ निश्चल मन करि हरि को ध्याना॥

अन्नत्यागि फलमूल जो खायो ॥ फलहु तजे तब पात चबायो ॥
पत्रहु छाँड़ि जल कीन अहारा ॥ जलपरिहरि भे पवन अधारा ॥
यह चिंतवनि रहत चित छाई ॥ कब देखौं हरिपद सुखदाई ॥
दो० पवन तजत लागे जरन सुर सब शक्र डरान ॥
जैसे केहरि का निरखि अस्त्र लिये मुख स्वान ॥
चौ० माया देवी तुरत बोलाई ॥ कहिनि कि ध्रुव ढिग गावहु जाई ॥
मेना और उरबसी सङ्गा ॥ आई जहँ ध्रुव सहित अनङ्गा ॥
ऋतु बसन्त बिरचिस अमराई ॥ नव पल्लव फल फूल सोहाई ॥
गुञ्जत अलि गण कूज विहङ्गा ॥ बाजत बाजन उठत तरंगा ॥
नटहिं अपसरा भाव बतावैं ॥ ऊँचे स्वर कल किन्नर गावैं ॥ ॥
यहि विधि कीहिनि उपाय घनेरी ॥ छूटी नहिं समाधि ध्रुव केरी ॥
ऐसे ध्रुव ढिगहू नहिं जाना ॥ तब देवी माया छल ठाना ॥ ॥
रूप बनाइ सुनीतिक लीन्हा ॥ ध्रुव ध्रुव कहि रोदन कीन्हा ॥
प्रथमे आँधी आनि चलाइसि ॥ परे उपल जल मल बरसाइसि ॥
भीजे पट कटकट रद होवै ॥ काँपै कुशाप पुत्र कहि रोवै ॥ ॥
घरते नृप मोहिं दीन निकारी ॥ जा ध्रुव ढिग जाकी महतारी ॥
कहि की अब मैं शरने जावौं ॥ बोलो लाल बहुत दुख पावौं ॥
शीस धुनै कर दै दै मारै ॥ हाय हाय बदि बचन उचारै ॥ ॥
दो० शोर सुनत रघुनाथ तब ध्रुव की जगी समाधि ॥
लगे बिचारन मनै मन हरि चरणन चित साधि ॥
चौ० एका एकी कानन माहीं ॥ किमि रानी आवत मोहिं पाहीं ॥
जो अस्नान होत तो औती ॥ अथवै कन्त मोहि बनै पठौती ॥
जानि परत यह माया अहई ॥ आइ छलन मोहिं सुत कहई ॥
नारद बचन आदि जब कीन्हा ॥ पुनि ध्रुव राम चरण चित दीन्हा
रघुपति रूप न भूलैं सन्ता ॥ जिमि नट लहै जमूड़ा अन्ता ॥

बहुप्रकारसो सचिवपचिहारी ॥ तबलजाइ सुरलोकसिधारी
इंद्र आदिसुरहेहें हीना ॥ मधुसूदनकीविनती कीन्हा ॥
महाराज ध्रुवतेज अपारा ॥ तेहिते सुर पुर छूटहमारा ॥ ॥
तिस्थन कौनठौर प्रभु थाई ॥ जरतविबुधजहँ २ चलिजाई
ताते हमै राखिय प्रभु लीजै ॥ ध्रुवकोजाय दरश अबदीजै
व्याकुललखि सुरकृपानिधाना ॥ मन बच कर्म दासनिजजाना
आये हैं ध्रुवनिकट मुरारी ॥ लगि समाधि तनसुरतिबिसारी
कुशलखि शङ्खनादहरिकीन्हो ॥ खोलिनयनध्रुवतबहीदीन्हो
आगेखड़े दीखभगवाने ॥ भक्तवसलशिवरूपनिधाने ॥

दो० तड़ितविनिन्दिकपीतपटनीलजलदतनश्याम ॥
इंदुबदनबारिजनयनकरआयुधअभिराम ॥
शीसमुकुटबनमालउरछबिमनोजहरिभास ॥
ध्रुवबिलोकिलागेकरनअस्तुत सहित हुलास ॥

अष्टपदीछंद० नमोरामसुखधामनमोजगदीशदयालं । नमोअशेषअलेषनमोसुरमुनिप्रतिपालं ॥ नमोअनाथनिनाथनमोसंतनहितकारी ॥ नमोशंभुअजईशनमोनिर्गुणगुणधारी ॥ नमोअपारअगारनमोनिरकार निरामय । नमोअभेदअछेदनमोनिरखेद निराभय ॥ नमोअजीतअतीतनमोपरमात्मानन्दं नमोनिकर्मनिधर्मनमोनिजब्रह्ममुकुन्दं ॥ नमोअरूपअनूपनमोसुरभूपउजागर । नमोधीरधीरनमोतारणभवसागर । नमोशरणदुखहरणाकरणातनकालनिहालं । नमोतुमेकअनेकनमोकालहुकेकालं ॥ नमोकृष्णतोहिंकृष्णतोहिंरामंबलरामं । तुहींदेशोअवतारतुहीसारणसबकामं ॥ नमोनमोजयजयतिजय अधमउधारणअघहरणा । रघुनाथदासयहिभांतिध्रुवस्तु-

तिकीन्ही महि वरशा ॥
दो० सजल नयन प्रभु अङ्क भरि लीन्ह्यौ हृदय लगाय ॥
कह्यौ पुत्र वर मांगिये जो तेरे मन भाय ॥
मधुभार छं० सुनि। गुनि ॥ ध्रुव। ध्रुव ॥
चौ० मांगौं कहा जगतपति देवा ॥ सनकसनन्दन विनतु स्हीसेवा
अर्बि रवि विलग दवि जो होई ॥ त्रिभुवन राज पाव जो कोई ॥
जो पै भरता करता सुख कैसो ॥ सपने की सम्पति भ्रम जैसो ॥
तेहिते नाथ कृपा जो कीजे ॥ प्रेम भक्ति आपनि मोहिं दीजे
जोगयज्ञ जपज्ञान विरागा ॥ क्रिया काराड बहुभाँति विभागा
भक्ति बिना गुण सोहत कैसे ॥ जीव बिना तन भूषण जैसे ॥
सन्तसङ्ग तिभवनिधिजलजाना ॥ देव दया करि सो मम बाना ॥
सुनि ध्रुव वचन सरल छल हीना ॥ बोले प्रभु भंजन दुख दीना
सांची बात कही तुम ऐसी ॥ मेरे भक्त कहत हैं जैसी ॥ ॥
सुर नर नाग लोक विधिहू को ॥ मो बिन भक्त गनत सब फीको
पर तव मातु बहुत दुख पायो ॥ राज हेत तै बन को आयो ॥
जो निजपुर अबहीं लै जावौं ॥ जग में जाहिर नाहिं करावौं ॥
तौ सब जनिहैं ध्रुव मरि गयऊ ॥ की बन खाइ जनावर लयऊ
जो जग में अपकीरति होई ॥ तौ केहि काम धाम मम सोई ॥
तातें प्रथम राज चलि कीजे ॥ छत्तिस सहस बरष लग लीजे ॥
पुनि मम लोकहि आयो ताता ॥ चढ़ि बिमान सग लीन्हें माता
तब ध्रुव कह्यो जोरि युग पानी ॥ राजते नर्क होत श्रुति बानी ॥
कह भगवान अधर्म जो करई ॥ सो नृप जाय नर्क महँ परई ॥
धर्मवान क्यों नर्के जावे ॥ राजनीतिरत दोष न आवे ॥ ॥
बोले ध्रुव मम नीति न जानी ॥ कहहरि सुनु मैं कहौं बखानी
अनूप पदी छं० कहै न मिथ्या वचन मूढ़ मंत्री नहिं राखै ॥

दइके लेइ न फेरि अजाने अमनन चारिवे ॥ सिंचे देइन दुःख असिंचे नापति आवे ॥ सब ते राखे हेत विप्रना भूलि सतावे ॥ दंड न बिरथा करे पुत्र सम परजै पालै । जूवा चोरी मांस मद्य यहि साथ टालै ॥ पर त्रिय मातु समान द्रव्य पर विष सम जानै । तजै कोह मद मोह द्रोह तन छोह न आनै ॥ करै सदा सतसङ्ग भक्त भगवत सम लेखे । मन राखे हरि चरण करण सुनि कथा विशेखे ॥ रिपु तें डरै न समर शूद्र निज भजन रखाले । मानै कवि बुध वेद गिरा कटु कभी न बोलै ॥ लोभी लम्पट द्विज न धर्म अधिकारी करहीं ॥ दान देइ लखि पात्र धार भूजा अनुसरहीं ॥ जप तप संध्या व्रत करि तजे खजाना कोष ॥ कहे रघुनाथ ऐसे नृप रती न लागे दोष ॥

दो० कृषी सींचे कांटे न कर भुके न मारहि टेक ॥
फूले फल सोइ लेइ नृप चिरै जीव मारी एक ॥
जो न चले यहि रीति नृप अवसि नर्क सो जाय ॥
अब सुनु पर जन को धरम जाते दोष नसाय ॥
कृषी बनिज व्यापार में नफा मिले जो आन ॥
दश अंश दे विप्र कहँ दोष न लागै हानि ॥
जो द्विज पावे और कहँ चोथाई दे सोइ ॥
लेइ देइ विश्वास करि दोष नाश तब होइ ॥
सेवा करि धन जो लहै यथा शक्ति दे दान ॥
तौ नहिं लागै दोष कछु कुकरम करै न आन ॥

चौ० ताते ध्रुव तुम आजिहि करहू ॥ जो मैं कह्यों सो मारग धरहू ॥ मम आज्ञा मानै जो कोई ॥ ताहि कि कछु दुख सपनेहु होई ॥ मोरी सीख करौ तुम राजू ॥ भुक्ति मुक्ति दे सारै काजू ॥ यों कहि राज काज सब साजे ॥ विविध प्रकार बाजने बाजे ॥

सैनअपारप्रकटप्रभुकीन्हों॥तंबूसेजबिछौनादीन्हों॥
गजरथबाजिपालकीयाना॥चोपदारदरबानीनाना॥ ॥
बढ़ईबजाजसराफसोनारा॥हलवाईजौंहरीचमारा॥
जहँलगभूपनकेरसमाजा॥सोसबप्रकटकीनमहराजा॥
भक्तबछलप्रभुकिरिपाकीन्हों॥चक्रवतीध्रुवकीकरिदीन्हों॥
शङ्खादिकबहुभांतिबजाई॥चलीकटकअतिबरनिनजाई॥
दो॰ हरिकीआज्ञामानिकैध्रुवचढ़िचलेगपर।
जनराघौहरिकृपातेमिटिगेसबदुखकन्द॥
चौ॰ देश२केनृपसुधिपाई॥लैलैभेंटमिलेतेआई ॥ ॥
करिसनमानसुतानिजुदेहीं॥दायजअमितकहांलकलेहीं॥
यहिभांतिननिजुपुरनियरायो॥नारदतबनृपकेढिगआयो॥
कह्योपुत्रध्रुवआवततेरो॥हरिदीन्होंतेहिराजघनेरो॥ ॥
राजाकहाबिपिनिगासोई॥अबध्रुवकेसजीवतहोई॥
जलबहिगयोकिअगिनजरायो॥सिंहसर्पधौंबाघनखायो॥
यहभ्रमहियमहेअजाहेराई॥सकलकामतजिढूंढनजाई॥
मैंअपराधीबालकत्याग्यों॥चल्योगहनउठिसङ्गनलाग्यों॥
नारदकहाशोचजनिकरहू॥बेगिहिआवतधीरजधरहू॥
सुनिसुनीतिउरभासुखभारी॥मुनिअसत्यक्यौंकहतबिचारी॥
तेहीसमयध्रुवदूतपठायो॥नृपउत्तानपादढिगआयो॥
सबवृत्तान्तकहातेहिंगाई॥सुनतेभूपउछाहरषाई॥ ॥
रानीसहितसचिवपुरवासी॥ध्रुवढिगचलेबिहायउदासी॥
ध्रुवकेडेरैनृपजबआयो॥पितहिदेखिध्रुवउठिसिरनायो॥
लीनमहीपतिगोदलगाई॥गइमणिमनहुंनागफिरिपाई॥
अंकमालभरिभेटीमाता॥प्रेमासुनतेसींच्योगाता॥ ॥
दो॰ पुरलोगनकहँभेंटिकैपूंछिकुशलबहुभांति॥

आसन दीन्हों सबन कहं यथा योगसब जानि॥

चौ॰ राजा ध्रुवकी करत बड़ाई॥ धन्य २ तुम धनि तुव माई॥
जो हरि भक्ति हृदय महं धार्यो॥ सो पीढ़ी तक पितर उधार्यो
सुर नर मुनि सब करत बिचारा॥ पुत्र बिना मिथ्या संसारा॥
एक पुत्र जन्मै अस आई॥ शत पीढ़ी दे नर्क पठाई॥ ॥
एक सुवन सुर पुर पहुंचावै॥ निर्बास यम कांस छोड़ावै॥
मोसम भाव सबन्त नहिं आना॥ पुत्र मिला हरि भक्त सुजाना
सुनि कर जोरि बिनै ध्रुव कीन्हीं॥ तुम्हरी कृपा भक्ति प्रभु दीन्ही
बिबिधि भांति जेवनार कराई॥ बासर गयो निशा तब आई॥
हरि विप्र कर्म में आज्ञा दीन्हीं॥ कंचन पुरी छिनक महं कीन्ही
मणिमय मन्दिर प्रभु रचि लिहेऊ॥ तेहि महं ध्रुव कहं बासा दिहेऊ
लागे रहन सकल हरषाई॥ भाव भक्ति दिन दिन अधिकाई
अरिन जीति बिप्रन सुख दीन्हा॥ भुज बल सकल बिश्व बस कीन्हा
पुत्र समान प्रजन कहं सेवे॥ अधरम कर धन कबहुं न लेवे॥
कथा कीरतन ध्यान कराहीं॥ सुमिरन करत याम चलि जाहीं
ध्रुव राजा की आज्ञा मानै॥ राजा ध्रुवहि बड़ा करि जानै॥ ॥
एक दिन करि बिचार बन गयऊ॥ हरि सुमिरण करि हरिपद लयऊ

दो॰ ज्यों पङ्कज जल में रहत अरु सनेह पय माहिं॥
त्यों ध्रुव बर्तें राज सुख लिप्त होइ कहुं नाहिं॥
यहि बिधि छतिस सहस बर्ष कीन्ह्यों भोग बिलास॥
कछु दिन बाकी रहे जब तब मन भयो उदास॥

कमल छं॰ साधु बिप्र। बोलि छिप्र॥ पूछि काम। दीन दाम॥
गीतिका छं॰ दियो राज काज सुपुत्र कहं पुनि आपु बनहिं सिधायहू। जहं कीन्ह प्रथमें आय तहं हरि केर ध्यान लगायहू॥ कछु काल बीते बिष्णु केर बिमान ढिग आयो भलो। गगा

लिहि निधुंवे चढ़ाइ तापर हर्षि बैकुंठ चलौ॥ ध्रुव कह्यौ ति-
नते मातु हमरी रहत तेहि लै ली जिये। वह जात चढ़ी विमान
आगे देखि आनन्द भीजिये॥ यहि भाँति दहुँ वे जाइ ध्रुव का-
अचल हरि पदवी दई। रघुनाथ सकल नक्षत्र अजहूं करत
परिकर्मा हई॥

दो० ऐसी हरि की भक्ति है ताहि करत जे नाहिं॥ ॥
तिन्हैं जानि ये पशु सम सींग पूंछ बिन आहिं
ध्रुव चरित्र रघुनाथ जन कह्यसंक्षेप बखानि॥
पढ़ै सुनै करि नेम तेहि होय दैन्य दुख हानि

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास
रामसनेही कृत ध्रुवचरित्रवर्णनो नाम चतुर्विंशोऽध्यायः २४॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
अब नरसिंह पुराण की कहौं इतिहास बखानि॥
जगत विदित बैकुण्ठ है जहां बसत भगवान॥
द्वारपाल जै बिजै दोउ अति भुजबली सुजान॥
एक बार सनकादि तहँ आये जनु चहुँ बेद॥
ब्रह्मानन्द मगन मन बालसरूप अभेद॥

चौ० रमानाथ के दर्शन हेता॥ लगे जान ऋषि हरषि निकेता
जय रु विजय दोउ रोकि बखाना॥ बिन आयसु नहिं पैहौ जाना
सुनि मुनि दीन श्राप करि कोहू॥ तीनि जन्म लग राकस होहू॥
भयो सोर सुनि सब हिन जाना॥ श्री सहित आये भगवाना॥
कहहु रि इन बहु कीन्हों पापा॥ सुनि भल कियो दियो जो श्रापा
तब बोले सनकादि बिचारी॥ प्रभु अपराध कीन्ह हम भारी॥
इन आपन धर्म पालन कीन्हा॥ बिन अपराध श्राप हम दीन्हा।
कहहु जय बिजय सुनो गोसाईं॥ इहां तुम्हार दोष कछु नाहीं॥

निज कृत दुख सुख सब कोइ लहई॥ समुझे बिन सो आनहिं कहई
जो तुम नाथ दंड मोहिं दीन्हा॥ सो हम मानि अनुग्रह लीन्हा॥
सुर हेलन प्रभु आज्ञा हानी॥ उपज्यो महा पाप दुख दानी॥
सो सब अब मम कीज्यो नाशा॥ कृपासिंधु सम हम हरि दासा

दो० अब करि करुणा देहु हम जहं जनमी जाय॥
तहं तहं प्रभु के नाम को सुमिरन बिसरि न जाय॥

चौ० मन्द जोनि कर वासन कोई॥ केहु भांति हरि सुमिरन होई
सुनि तिन केरि साधुता देखी॥ सहित लाज दुख भयो बिशेषी
कह हरि तुम कत शोचहि करहू॥ मम इच्छा सोइ मन में धरहू॥
अब सब मिलि मो करहु उपकारा॥ जेहि ते होइ इनकर उद्धारा॥

दो० एक जन्म लक्ष्मी कह्यो सनकादिक इक बार
एक जन्म भगवान कह हम करिहैं उद्धार॥
अस कहि सनकादिक सहित हरि गृह चले सिधाय॥
कछु दिन बीते जय विजय भे दिति के सुत आय॥

दीपक छं० कनककशिप हाटकनयन दैत्य बली दोउ भा-
ये दैत्य बली दोउ भाय छीनि इन्द्रासन लीन्ह्यो। निरजर दिये
निकारि हुकुम अपनो ही कीन्ह्यो॥ एक बार हरनाक्ष धरा ले
गयो पराई।। धरि वराह अवतार ताहि हरि मार्यो आई॥ हरना
कुश तप को गयो इन्द्र सूनसुन पाइ॥ लै लीन्ह्यो पुर आपनो
त्रिय दइ कैद कराइ।। दुखित जानि नारद तहां आय दियो उप
देश। आय दियो उपदेश शोक तेहि कछुक मिटायो।। गर्भ रहैं
प्रहलाद ज्ञान सब तामें पायो॥ रहे तहां बहु काल मातु वोदर
के माहीं॥ करै भजन मन मुदित कष्ट तन व्यापै नाहीं॥ हरना-
कुश को सिद्ध भो तप बिधि सास्यो आइ। अहो पुत्र बर मांगि-
ये रिधि सिधि जो मन भाइ॥ जो मोपर परसन्न प्रभु तौ दीजै वरु येह तौ-

दीजै बर यह हमें जो सृष्टि तुमारी। मरौं न काहू हाथ बान मोको यह प्यारी॥ राति दिवस नहिं मरों गगन महि जल हथि-यारा। दैकै बर विधि गये भयो तेहि हर्ष अपारा॥ गरजि चल्यो घर आपने सूनो देख्यो आइ। कोपि चढ्यो फिरि इन्द्र ते सुरपुर लीन छिड़ाइ॥ घर लायो त्रिय आपनी जन्म लीन प्रहलाद ज-न्म लीन प्रहलाद भयो तेहि आनंद भारी। दिये दान गज बाज याचकन किये सुखारी॥ करै राज मन मगन विप्र गोवन कह मानै। हरि देवन ते द्रोह आपनो बैरी जानै॥ यह भांतिन बीतत भये भोग करत कछु काल। बड़े भये प्रहलाद तब खेलें जहं कहुं बाल॥

मनोहर छं० सुनो एक हाल तेहिं नगर कुम्हार बसे धोखे ते बिलारी बच्चा आवाँ में लगायो है। पाछे सुधि आई शीस धुने पछिताई तहां आये प्रहलाद बात कहि समुझायो है॥ जपै राम नाम जासे सरै सब काम निशि बीती चारि याम राम राम रटलायो है। होत ही प्रभात खोल्यो लाग्यो सब रेगन को मिटि गयो शोक प्रह्लाद मन भायो है॥

चतुष्पदी छं० एक दिवस सुरारी मनहिं बिचारी पढ़न योग प्रहलाद भयो। कबि गुरु के लरका सराडा मरका बोलि तिन्हें सुत सौंपि दियो। संग चटसारा तहं बैठारा बाल अपारा जहां रह्यो। पाटी कर लिहुं ओंनमसिद्धं पढ़ो द्विजन यहि भांति कह्यो॥ तेहि अर्थ लगायो पोति बहायो निरख वरवरा मे राम लिख्यो। लखि विप्र सुजानी कहि मृदु बानी अरे पुत्र यह काहु सिख्यो॥ तव पितु सुनि पैहै बहुत रिसैहै मारिहै धरिहै सिर खोरी। ताते यहि बारी डारु बिगारी मानहु सुत बानी मोरी॥

पादाकुलक छं० कह प्रहलादा। युत अहलादा। विप्र सुनीजे। सत्य भनीजे॥ विद्या नामा। उभै जु तामा॥

अधिक को आही। पढ़ौं मैं ताही ॥

तोटक॰ सुनियें सुत बेद पुराण कहै। बिद्यासम ना धन और अहै ॥ नहिं चोर चोराय सकै न जरै। सुख देश प्रदेशन भूपहरै ॥ गुणरूप पराक्रम बुद्धि घनी। सुत सेवक बंधु अनेक धनी ॥ बिन बिद्या सो नर सोहत यों। बकु हंसन में यक बाग लस्यों ॥ तेहि तें सुत बिद्या नित्य पढ़ौ। जेहि पावहु राज जगयश चढ़ौ ॥ अस बैन सुने द्विज के जबहीं। प्रह्लाद जु बोलि कह्यो तबहीं ॥

दो॰ बिद्या धन कुल रूप मद प्रभुता यौवन नारि ॥
ये बाधक हरि भक्ति के कहहु बुध बेद बिचारि ॥

बरवै छं॰ तेहि तें मैं यह बिद्या पढ़व न नाथ। सुनि मह्य सुर प्रह्लाद के गहि दोउ हाथ ॥ लाय जहं हरनाकुश कहि निबिसाइ ॥ पढ़ै न तव सुत राजन हमहिं सिखाइ ॥

कडुपा छं॰ बिहंसि प्रह्लाद को गोद बैठारि कै कही सुख चूमि सुत पढ़ो काह्रा ॥ राम ही नाम सब पढ़न में सार है पढ़ा हम सोइ मुनि हृदय दाहा ॥ कहत बुध बेद यह दुष्ट की रीति है श्रीति आश्रमी में अधिक लावै ॥ ज्ञान बैराग्य हरिभक्ति भवभय दहन नाम गुण ग्राम जेहि नाहिं भावै ॥ कहौ हंसि दैत्य सठ कूर ऐसो बड़ो आइ कोइ बाल भुरकाय दीन्हा ॥ कहरि प्रहलाद ते कहन सुनि लीजिये शत्रु को नाम नहिं कहो लीन्हा ॥ सकल जग ईश सब जीव को पोषता तासु तें तात का बैर कीजे ॥ छांडि मद मान शुभ ज्ञान हिय दै धीर करौ हरि भजन जगसुयश लीजे ॥

दो॰ शत्रु न काहू के रही मित्र कहूं नाहि न तात ॥
ज्यों सोइ देवै मुकुर में तैसो नाहि लखात ॥
सुनि बचन अस प्रभु मनि रिस करि हिमिडलाति ॥

कहिसिद्धिजनतेयाहिलैजाहुपढावोमारि॥

हाकलिकाछं॰ सुनिपुनिद्विजलायेचटसारहि। त्रिविदीन्हिनिसुतपढोपहारहि॥आसुरगयेपुरकहंकछुकामहिं। पीतिलिख्योप्रह्लादश्रीरामहिं॥

शशिवदनीछं॰ लखिबालकसब। ढिगआयेतब॥ मखातेजैसे। बोलेऐसे॥

दो॰ कहाशिसुनप्रह्लादतेहबनुसकरतेकाहि॥
मातपितागुरुजोकहैंअसुदिनकीजैताहि॥
सुनिबोलेप्रह्लादतबमातपितागुरुसोइ॥
करैजोमनमुखरामकेजहंलगनिजबलहोइ॥
धर्मनतपलटैदेहुबिमपारसबदलेकांच॥
जानिबूझितेहिलेइकोउकहौसदोसबसांच॥
पढ़नसुननसोइसफलजोतामंचरणारतिहोइ॥
नातरुफिरिभूरजसभलाबाहनहानैकोइ॥

चौ॰ सुनहुतातयहिजगकेमाहीं॥दुखनिशिदिनसुखसपनेहुनाहीं
देखहुतुमनिजहृदयविचारी।उपजनचारिखानितनुधारी।
अंडजजोअंडातेहोई॥पिंडजप्रगटगर्भतेसोई॥॥
स्वेदजश्रमसीकरतेजानो॥उद्भिजसगवीकरमानो॥॥
भ्रमतजीवसबयेतिलमाहीं॥दुखबहुभांतिबरणिनहिंजाहीं
पापपुण्यजबसमदोउहोई॥ईशकृपानरतनलहैसोई॥॥
प्रथमजीवजलमाहींआवे॥जलतेंबहुरिअन्नमेंजावे॥॥
ताकेभवनजन्मभाचहई॥सोइअन्नखातवहग्रहई॥॥
अन्नतेरसरसतेसुखकारी॥रुधिरवीर्यएकमासनिहारी॥
जबयुवतीरतिदानहिंपावे॥तबसोइजीवगर्भमेंआवे॥॥
रजवीरजयकदिनमहंमिलई॥पंचयदिनबुदबुदिखिलई

दो० सतयें दिन फेना उठत दसयें पिण्ड पलबीस॥
मास दिवस जब होत तब निकसन लागत शीस॥

चौ० उभै मास भुज जांघ लखाई॥ तिसरे पेट बिलगाहै जाई॥
वेद मास ऽअंगुरी कच रोमा॥ हाड़ मांस सत तुचा गुछोमा॥ ॥
पूरण गर्भ सातयें मासा॥ ऽअठयें बाक सहित चल स्वासा॥
नवयें मास चेत भा भाई॥ पूर्व जन्म सत की सुधि ऽआई॥
विष्ठा मूत्र उपर है बाहें॥ चोटत कीट ऽअनल तन दाहें॥ ॥
पीड़ित सदा ऽअधोमुख रहई॥ नहिं न मात पितु केहि दुख कहई
तब भगवान के सुधि कीन्हा॥ बोलत भयो बचन है दीना॥ ॥
दीन दयाल कृपाल मुरारी॥ ऽअशरण शरण हरण दुख भारी
प्रभु यहि बार माहि निरवारो॥ कर्म क्षेत्र में ले तनु डारो॥ ॥
तहं तव चरण कमल चित लावों॥ जांत गर्भ वास नहिं पावों॥

दो० चारि होत सब नरन के कछु बैराग बहुन्त॥
गर्भ माहिं सब के निकट कथा सुनत रति ऽअन्त॥
बिनय सुनी तब कृपानिधि पवन चलाई एक॥
योनि छांड़ि बाहर भयो भूल्यौ ज्ञान बिवेक॥
पिता शुक्र बहु ते कुंवर मा रज ऽअधिक कुमारि
रज बीरज दोउ सम तहां होत नपुंसक धारि॥
कर्म होत जैसे कछू तैसाही फल होइ॥ ॥
तैसाई दुख सुःख को भोग करत नर सोइ॥
कर्म सो त्रैविधि संचित प्रालब्धि क्रियमान॥
भरे धरे वपु करें जस तस भोगे तन ऽआन॥

चौ० यहि बिधि तीन जन्म जग ऽआई॥ छिनयक बचन बोलि नहिं जाई
पुनि माक छु के चेतत तब जाग्यो॥ कहा कहा कहि रोवन लाग्यो
सुत उतपति सुनि पितु महतारी॥ हर्षित गान करें मिलि नारी॥

छठीभई पुनिबरहो कीन्हा ॥ नामकरण शिशुमुख में दीन्हा
करत मूत बिष्ठा जहँ परिया ॥ स्वच्छा स्वच्छ गनत नहिं करिया ॥
माताहू कछु भेद न जाने ॥ सुनधौं कोहि हित रोदन ठाने ॥ ॥
मन अनरूपित कैरे उपाई ॥ जेहि ते अधिक होत दुख आई ॥
पाँच बरस बालापन गयऊ ॥ पुनि पवगंड अवस्था भयऊ ॥
पढ़ि सुनि खेल कूद के माहीं ॥ नवसंध्वन गन चेत्यो नाहीं ॥
जननी कहत पुत्र बढ़ भयऊ ॥ यह नहिं जानत सुत घटि गयऊ
बहुरि कुमार अवस्था आई ॥ कसब करन लाग्यो हरषाई ॥
भा बिवाह बरसाभिन पाई ॥ प्रमुदित षोडस बरष बिताई ॥
तब तहँ तरुण अवस्था लागी ॥ काम अगिनि हिरदे बिच जागी ॥
बनितन ते अति हेतु बढ़ायो ॥ आपन सुख तिनमें लखि पायो

दो॰ यथा गृहपसब काथलै चरि चावत सह प्रीति ॥
निजतालूरत तनुज भखि मानत तोष अप्रीति ॥
तन हेरै फेरै नयन बयन बरै मद साथ ॥ ॥
हिंसारत निजमत चलै मलै भाऊ दोउ हाथ ॥

चौ॰ चालिस बरष लगे तरुणाई ॥ रही बहुरि आई बिरधाई ॥
भये पुत्र उपपुत्र घनेरे ॥ होत दुखी तिनके दुख केरे ॥ ॥
निशिदिन चिन्ता करत अपारा ॥ सबनकेर मोसे प्रतिपारा
कहुँ अरु कुअवारी के जोवें ॥ कोतेहि चारा देत सदौवें ॥ ॥
तिनके हेत करै अघ नाना ॥ नहिं जाने मरियम पुर जाना ॥
भजे न हरि हरिजन गुण लीला ॥ कहे न सुने मुदित मन शीला
बात नहीं बिरधापन गयऊ ॥ जरा अवस्था आवत भयऊ ॥
तन बल गयो गिरे सब दाता ॥ डगमग चलत सुनत नहिं बाता
हगा जल बहत अनाम बिचारी ॥ दीन्हो खाट दुवारे डारी ॥
परेपरे रिस कथा मन लावै ॥ भगतन कहै कहाँ को उपावै ॥ ॥

तृषा लागि जल देत न कोई ॥ चकत तहां मुख आवत जोई ॥
घर के कहें मरि उन हिं जाहीं ॥ कायम राज बिसरिगे याही ॥
जिनके हित परलोक बिगारा ॥ ते सब जियतै किहिनि किनारा ॥
इक दिन यम गण लीन्हिनि मारी ॥ सुत न दीन पुर बाहर डारी ॥
लै जब गये दूत यम पासा ॥ देखत दिहिनि नर्क महं वासा ॥
प्रथमे दुख दुर्नर्क भुगतायो ॥ पुनि चौरासी में जन मायो ॥

दो० जीवत नाना दुख सह्यो ॥ बिना भजे भगवन्त ॥
अब चौरासी के बिखे भोगौ कष्ट अनन्त ॥
धृग धृग ताकी बुद्धि को नर तन वो हित पाइ ॥
तरै न जो जग ऽ ल धि सों आत महत गति जाइ ॥

चौ० तेहि ते तात तर्क परिहरहू ॥ राम भक्ति हिरदे महं धरहू ॥
थवे प्रम्बु भुक कुभर सपाई ॥ उवै दिवाकर पश्चिम आई ॥
मृग जल निरखि तृषा वरु जावै ॥ राम बिमुख सुख जीवन पावै ॥
सुनि सब बालक बोले सोई ॥ इक संशै हमरे मन होई ॥ ॥
हम तुम जन्म लीन इक संगा ॥ खेलत रहे नु बिहंग तुरंगा ॥ ॥
तुम हरि भक्ति कहां यह पाई ॥ मुनि दुर्लभ पुराण श्रुति गाई ॥

दोधक छं० सुनि प्रहलाद कह्यो हरनाक्ष जब ॥ मारि गयो पित गा तप को तब ॥ इन्द्र सको पिदैत्य पुर छेकि के । मातु हमारी सगर्भहि देखि कै ॥

भुजंगप्रयात छं० बिचास्यो हिये में तवै पर्वतारी । असुर शुक्र ते गर्भ या के सभारी ॥ धेयाहि नीको न तो शत्रु होई । करी रारि आगे खलीदुष्ट सोई ॥

दो० तेहि अवसर नारद तहां आइ कही असि बात ॥
यहि के उर हरि भक्त हैं सुर सुख दायक तात ॥
सुनि के नारद के वचन तब चलि भये सुरेश ॥

दुखित देखि मुनि मातु कहँ लगे देन उपदेश ॥
सवैया तजि शोच हिये हरि नाम धरो जो है वे सुखदायक दुःख प्रहारी ॥ जेहि ध्यावत शेष गणेश दिनेश ऋषी सनकादि उमा त्रिपुरारी ॥ सुत बन्धु सखा त्रिय मातु पिता धन धाम सबै रविको भवधारी ॥ ना बिच धावत है मृगज्यों न जपे जग पालक सिन्धुसुरारी ॥
दो० यहि बिधि मुनि मम मातु कहँ उपदेश्यो दिन सात ॥
मैं सचेत जननी जठर सुन्यो कह्यो सोइ तात ॥
चौ० सुनि प्रहलाद बचन अनुरागे ॥ दोउ प्रणाम करन सब लागे
भल उपदेश हमैं तुम दीन्हा ॥ मात पिता स्वारथ रत चीन्हा ॥
अस कहि बैठे निज २ ठामा ॥ लागे लिखन राम ही रामा ॥ ॥
तेहि औसर दोउ महिसुर आये ॥ प्रहलादै लखि बचन सुनाये
बिद्या पढ़ो छांड़ि शठ ताई ॥ हठ कीन्हे कछु नाहि भलाई ॥
हाटक नयन बहुत हठ ठाना ॥ मारे गये है वे तब जाना ॥ ॥
भक्ति पक्ष कर हठ है नीका ॥ शठता का हठ दुख प्रद जीका
सुनि रिस करि द्विज धरि दोउ हाथा ॥ लाये तहँ जहँ निशिचर नाथा
महाराज तब सुत यह कैसा ॥ कालकूट हरि घट महँ जैसा ॥
राम राम जय राम पुकारे ॥ पढ़त न विद्या हम पचि हारे ॥ ॥
विप्र बचन सुनि गोद उठाई ॥ बोला अधिक सनेह बढ़ाई ॥
तुम सुत जेठ सब सुखकारी ॥ तुमही राज के २ अधिकारी ॥
ताते विद्या पढ़ो सचेता ॥ सुखद सिखावन सुत तब हेता ॥
निशिपालिका छं० यदपि तुम तात यह बात हित की कही ॥ तदपि मोहिं नीकि नहिं लागि तन को सही ॥ लोक में सुखद परलोक में अकाज को तातें हौं नप सौं नात करौं नाहिं राज को
शशिवदनी छं० सुनि असि बानी ॥ अति रिस ठानी ॥

श्रवनि गिरायो। गजहिं मँगायो॥ कह्यहि लीजै। पगतर दीजै॥ यड़ दुखदाई। बधे भलाई॥
मधुभार छं॰ प्रह्लाद की मात। सुनी यह बात॥ गई पतितीर। कह्यो धरि धीर॥
मालिका छं॰ नाथ बात मानि मोरि। पुत्र बधे बड़ी खोरि॥ दास नीच की समान। परा रही दह जान॥ छोड़ पुत्र आहि नेहु राजकाज ताहि देहु॥ ऐस ज्ञान नारि दीन। कहे सुने छमा कीन॥
इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत प्रह्लाद चरित्र बरनो नाम पंच बिंशो ध्याय: २५॥
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपति गिरा सुखदानि॥
बरनों श्री प्रह्लाद को पुनि इतिहास बखानि॥
तब निज सचिव पठायो आयो जहँ प्रह्लाद॥
बोल्यो सुत बिद्या पढ़ो तजि हठ वाद बिवाद॥
पद चोटक छं॰ स्वपनि है जे तनु राखि नेह। तुम पुत्र करो हरि पद सनेह॥ मल मांस मूत्र के कहे प्रधान। ऐसे तन को सोचै अयान॥ कोइ अल्प काल कोइ कल्प माहिं। मरनो बिशेष कछु रहन नाहिं॥ अबहीं चाहौ डोरे सो मराइ। पर राम नाम नहिं तजव भाइ॥
दो॰ अल्प काल जीवन भला राम भक्त जो होइ॥
भक्ति हीन सत कल्प तक जीवै बिरथा सोइ॥
कहै रघुनाथ अनेक बिधि सचिव कह्यो समुझाय॥
मान्यो नहिं प्रह्लाद जब तब उठि गयो रिसाइ॥
तारक छं॰ तहि समय पुर लोग जु आयो। आरत है अस बैन सुनायो॥ नाथ सुनो बड़ सोच हमारे। बालक सबै प्रह्लाद बिगारे॥
तोटक छं॰ तिन की दशा नहिं जात कही। कहु रोवत हँस-

तहालसही॥कहुंनाचतगावतगोपरहे।पुलकांगविलोच
ननीरबहे॥हरिनामनिशंकरटैंमुखते।किनयेउपिक़रख-
कहैहमते॥धगजीवनहैजगमेतिनको।मनलागनयारसमेंजिनको॥

दो॰ सुनौनाथप्रहलादजोफिरिजैहैंचटसार॥
तौहमशसिवेअनतकहुंत्यागवनगरतुह्मार॥

तारकछं॰ याविधिकेमुनिबैनसुरारी।मुषिकृएकभवाइ
केमारीविप्रनतेपुनिबोल्योरिसाई।खायहुबालकभक्तिपढ़ाई

दो॰ गुरुनन्दनतुमबन्धुदोउतातकरियनरोष॥
भयोकालबशबालयहविप्रतुम्हारनदोष॥

चौ॰ असकहिपुनिसुतकेदिशिडोला॥रामनामसुमिरतलखिबोला
अबलेमानिलेहुममबानी॥नाहितहोतप्राणकीहानी॥ ॥
सुनौतातसंतनकीटेका॥छूटनजोदुखपरैअनेका॥ ॥
मुनिप्रहलादबचनकरिक्रोधा॥बांधौंअधमप्रचारिसियोधा
राजकुंवारसकेकोबांधी॥सुभटसमूहरहेचुपसाधी॥ ॥

चतुष्पदीछं॰ तबआपुइधावाबांधिबनावागिरितेदी-
न्हेसिडारी।उपरेहरिलीन्हेंभूधरिदीन्हेंलागिनतातिबया-
री॥पुनिजकड़जंजीरननीरगंभीरनदिहिसिदुस्टबोरवाई॥
सांकरकहंतोरीभक्तहिछोरीकिहिंनिकिनारेआई॥तबगजम-
गवायोमेरडवायोदेखतकुंजरभाग्यो।महिखोदिगड़ायोअ-
ह्लिलपरायोतिहिक्षणाविषतिनत्याग्यो।नृपकेंबहुदाग्यो
धावनलाग्योमुनिकेस्योसिरआरा॥दोउचरणबंधायोउर-
धटंगायोतीरनतकितकिमारा॥उरचुभ्योनएकातापअनेका
नामप्रतापनव्यापी।सबकरौंविबादूयहिदिगजादूतेहिबल
बचनप्रलापी॥सुनिताकीभगनीहरबरभगनीनामदूदला
आई।उसनेप्रहलादेंअतिअहलादेंबैठिअगिनिलगवाई॥

निशिचर हरषाने जरत पिछाने काठ कपाट लै आवें। डारें तेहिं माहीं छप्पर ढाहीं चरख फरक जो पावें॥ बालकन की माला नर भख वाला गुहि गुहि आइ चलायो। जापियें मनु लाई हैसें ठठाई बड़ हरि भक्त कहायो॥ भोरहि प्रहलादा युत अहलादा बैठ धूरि उड़ावें। जरि गेतम चारि दुष्टिनि नारिन अनिजरगरियावें॥ आयत रघुनाथा यह सब वार्ता भई सत युग के माहीं॥ करि माधु सेद्रोहा है बस मोहा प्रबल गुजारी जाही॥

दो० देखि सखा प्रहलाद के हरषि मिले सब आय॥
दनुजराय बोलत भयो पुनि निज ढिग बैठाय॥

सुन्दरी छं० हौं बहु त्रास दई सुत तोकहं। लक्षि थि तूं न डरै ककु मोकहं॥ तात सुनो जिन के उर हैं हरि। ते निर्भें कोउ काहू सकें करि। तौलग संभ्रित शोक सतावत। जौं लग राम क नामन ध्यावत॥ हैं सब ताप श्रनाशन कोगद। देखु समीप अहं बपुलं हद॥

मधुभार छं० सुनि बचन ऐस। सर लाग जैस॥ गहि खम्भ आइ। बाँधिसि रिसाइ॥ तब आगि हरी। सिर कीन परी॥ कर खग्ग काढ़ि। जनु तड़ित गाढ़ि॥ बोला कठोर। कहं राम तोर॥ जेहि रहे सुधेढ़। अब राखि लेइ॥

विजय छं० राम हमार हवै सचराचर मैं नहिं मानु तौ यौं न खिलाजै। नाम क अक्षर चौगुण कै पुनि पांच मिलाइ के दूगुन कीजै॥ आठ का भाग दिहें रघुनाथ बचे गुण अंक न हीं मनु दीजे॥ मोहू में राम है तोहू में राम हैं खड्ग में खम्भ है खम्भ सुनीजै

स्री छं० खम्भ। माहैं। भाष्यो। जैसे॥

दराडक छं० गगड गडगडान्यो खम्भ फाटयो चरचरा इ निकस्यो नर नाहर को रूप अति भयानो है॥ कट कट कट कटावे दाढ़ै दसन लपलपावे जीभ अधर फरफरावे मोछ

व्योम व्याप्यमानो है ॥ भभरि भरभराने लोग डडरि डरपराने
धाम थथरि थरथराने अंग चिते चहत खानो है। कहत
रघुनाथ कोपि गर्जे नरसिंह जैसे प्रलै को पयोधि मा-
नो तड़पि तड़ तड़ानो है ॥

गीतिका छं० गर्जो महाधुनि घोर शब्द कठोर तिहुंपुर भ-
भयो। चौंके बिरंचि डेरान बासव ध्यान शंकर तजि दयो ॥
ले लरखरत दिग्गज कोल कूरम कलमल्यो अहि महि ह-
ली। नर नाग सुर से बिकल उछर्यो सिंधु जल मारुत चली ॥

चौ० दनुजराज देखा नरहारी। बोला बचन सक्रोध पुकारी॥
रे हरि कुहुक तोरि मैं जाना ॥ छल करि बध्यो बंधु बलवाना
तासु बैर लेने हित तोहीं ॥ खोजि फिर्यो कहुं मिल्यो न मोहीं
अब नरहरि तनु धरि मम नेरे ॥ आयो कठिन काल के प्रेरे ॥
अस कहि कीन्हसि गदा प्रहारा। गहि नरसिंह धरनि दे मारा
पुनि उठि लरत धरत हरि धाई ॥ बहुत काल इमि भई लराई
बिकल जानि सुर समानि बासू ॥ उरु धरि उदर बिदार्यो तासू
लखि सुर हरषि सुमन बरषायो ॥ जय २ कहि दुंदभी बजायो
आंतें काढ़ि पहिरि उरहारा ॥ तदपि न निघटत क्रोध अपारा
नारदादि सनकादि मुनीशा। सहित शक्र कमला जगदीशा।
डरहिं सकल कोउ निकट न जावें ॥ दूरहिं ते सब बिनय सुनावें ॥
कह बिधि कमला ते तुम जाहू ॥ निकट बासिनी हरि की आहू
सुनि कमला कर कानन धारा ॥ हम अस रूप न कबहुं निहारा

दो० तब सुर सब प्रह्लाद की बिनय किहिनि ढिग आय ॥
चतुरानन बहु प्रीति ते बोले हृदय लगाय ॥
निकट जाहु प्रह्लाद तुम हम सब देव डरात ॥
सुनत गये नरसिंह पहं हरष थोक नहिं गात ॥

चौ० दीनदयाललभक्तिउरलाये॥ निकुरावनबालकुजनुपाये॥
हासुततोहिं नीचदुखदीन्हा॥ पायसि फलजरबल आपनकीन्हा॥
अबमोहिं अतिप्रसन्नजियजानू॥ मांगुनातजोभावतवरदानू॥
सुनहुनाथतवभक्तिजेकरहीं॥ मनमेंकछुकामनाधरहीं॥
ते वैवनिकन आसिकजानी॥ कृतउद्योगनफलअनुमानी॥
हमैंनकछुचाहियेकिरपाला॥ सुकृततुभक्तिहिदेहुदयाला॥
यहवरदानमिलैप्रभुमोका॥ विमुखपिता पावैपरलोका॥
सुनिनरसिंहकह्योहरषाई॥ सुनहुतातममभक्तिबड़ाई॥
कुराडुलिया जाकेकुलमें भक्तममनामलिखाईहोय. एक
एक भक्त आपनी पीड़ी तारतसोय॥ पीदीतारतआयपिताकी
चौदिसजानैं॥ माताकीगनिवीसवामकीसोडसमानैं॥ द्वा
दश पुत्री औरएकदशभगनीताके॥ दशभुवाकी और
आठमौसीगेजाके॥
दो० कुलपवित्रजननीसफलभागकहौमहिवास॥
स्वर्गस्थितपितरोपिभनुजे षुवंसममदास॥
चौ० जबजगपति असवचनसुनाये॥ जनप्रहलादहियेअतिभाये॥
जोमेंजासुप्रेमपरतीती॥ संतोंहिप्रियलागतयहरीती॥ ॥
पुनिनरसिंहकही असिवाता॥ बचनहमारमानियेताता॥
यद्यपितुम्हैंइच्छाकछुनाहीं॥ तदपिमन्वंतरराजिकराहीं॥
गीतिकाछं० करियेमन्वंतरमेंककीसुतराज्य अबमोरेक
हे। होंडरतमायानेतुम्हारी विनैकरिहरिपदगहे॥ ममतेरपा
हिचरित्रनितसहमोदसुनिहैंजेगाइहैं। रघुनाथतेनिहुसं-
कहीकर्मबंधतेछुटिजाइहैं॥
दो० यहचरित्रप्रहलादकरबरणोंजनरघुनाथ॥
श्रीगुरुदेवादासकेचरणकमलधरिमाथ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतब्रह्मलोकचरित्रवर्णनोनामषटविंशोऽध्यायः२६॥

दो० सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
मारकंडेयपुराणकछुमंगलकहौंबखानि॥
रघुपतिइच्छाअकुतिसोरचब्रह्माण्डअनेक॥
बिधिहरिहरगुणथापिबहुकबहुकबहुरहेएक॥
पुनिसौनकबोलतभयेनाथकहौयहिवार॥
अवधपुरीभूलोकमहंआईकेहिपरकार॥

चौ०कहासूतसुनियेमुनिज्ञानी॥यहीभेदमैंकहौंबखानी॥
एकबारजलबाढ़तभयऊ॥सबब्रह्माण्डबूड़ितहंगयऊ॥
लैजीवनकीतत्वभवानी॥आदिविष्णुमहंआइसमानी॥
हरितबमौनभावपरकीन्हौं॥मोहीमायाजगतनदीन्हौं॥
विष्णुस्वासतेभेचहुबेदा॥आदिअन्तजेबरणतभेदा॥
नाभितेएककमलतहंनिकस्यो॥सोपंकजजलऊपरबिकस्यो॥
तबतामेंब्रह्माभेआई॥चारिभुजामुखचारिलखाई॥
तबबिलोकिबिधिहृदयविचारा॥कहंमाताकहंपिताहमारा॥
कमलनालगहितरकागयऊ॥पुनिऊपरकहंआवतभयऊ॥
विपुलबारअधऊरधआयो॥पद्मनाभकरअंतनपायो॥
तबनभतेभैगिरासोहाई॥मिलीनप्रभुबिनतपसेवकाई॥
मुनिअजाचितध्यानमेंदयऊ॥बहुतकालपरदरशनभयऊ॥

संयुताछं० तहंविष्णुकेस्रुतिमैलसे।प्रगटेअसुरयुगसैल
से।लखिकेतिन्हैंब्रह्माडस्यौतबदेवकीबिनतीकस्यो॥

शशिवदनीछं० जयजयमाता।सबसुखदाता॥जग-
तकहावै।सबउपजावै॥

मोनमरालीछं० नाहिंआदिमाया।निगमनेतिगाया॥

तो हीं कीन्ह रीतो हीं विश्वभरणी ॥ जलजमाहिं मोहीं। प्रगट कीन्ह तो हीं। जगनवसि तुम्हारे। तरुण बहु बारे ॥ पादाकुलक छं० हरिबस तोरे। सोवत भोरे ॥ देहु जगाई। करें लराई। असुर संहारें। हमें उबारें। सुनि तब माया। हरिहि जगाया।

चौ० मधुकैटभ देख्यो हरि जागे ॥ दोउ ब्रह्मा कहं मारन लागे ॥
तो हीं विष्णुहि दियेउ जगाई ॥ तब ब्रह्मा अति शोरमचाई ॥ ॥
केशोदीवबदु थकहं आये ॥ क्रोधित है असुरन पर धाये ॥
होन लागि जल माहिं लराई ॥ जीतिन जाइ बली दोउ भाई ॥
पांच सहस्र बरस चलि गयऊ ॥ मधुकैटभ तब बोलन भयऊ ॥
हम प्रसन्न तुम पर भगवाना ॥ लखि व सूरता प्रहो बलवाना ॥
तातें बर भावै सो लीजे ॥ कह हरि शीस आपने दीजे ॥ ॥

दो० हंसि बोले दोउ दीन हम जो तुम मांग्यो नाथ ॥
पर जल में जनि मारियेबाहर काटो माथ ॥

हरि छं० तब हरि उरु धरि ॥ जल पर बध करि ॥
लीला छं० मरन लागे जबै। बचन बोले तबै ॥ भूमि तन-नकी सचो। स्मृति तो पैरचो ॥

चौ० तब हरि असुर हते निजपानी ॥ तासु ज्योति प्रभु माहिं समानी ॥
तब ते मधुसूदन कहवाये ॥ कैटभारि गुण आगम गाये ॥
भूमि भई विन तन की जानो ॥ नाम मेदिनी ताहि बखानो ॥
जल के ऊपर रही सो छाई ॥ जिमि नलनी सर पर उतराई ॥
जल कर पारावार सो नाहीं ॥ कच्छप एक रहत तेहि माहीं ॥
मस्तक कुम्भ बरण हगहेरे ॥ कैयो कैयो योजन केरे ॥ ॥

दो० सप्त सहस शत कोटि यक अर्ब योजन परमान ॥
कूरम मुख पूरब दिशा पश्चिम पूछ बखान ॥

चौ० ता पर शेष नाग इमि रहई ॥ जैसे मूल मेरु पर अहई ॥

फन हजार ताके श्रुति कहा ॥ यक फन पर यक रहत बराहा ॥
मसक समान जानि नहिं पावा ॥ असतनु शेष सो आगम गावा ॥
वसुधा दशन बराह के धारी ॥ तिल सम गनै कोल अस भारी ॥
कुण्डलिया॰ आठौ दिशि दिग्गज रहैं महि रक्षा हित दुंद ।
ऐरावत पुनि पुंडरीक बामन चौथ मकुंद ॥ बामन चौथ म-
कुंद पराजित यम सारभ कुंज ॥ हेमदंत परमान अठारह-
योजन के दुज । दुज है योजन केर सूंडि वै योजन पन्ना ॥ अ-
ट षट योजन ऊंच बली अति दिग्गज आना ॥

दो॰ यहि बिधि थिर करि भूमि प्रभु बिधि का आज्ञा दीन ॥
सृष्टि रचौ यहि धारा पर सुनि बिधि सिर धरि लीन ॥

चौ॰ ब्रह्मा सृष्टि रचन जब थापी ॥ पचास कोटि योजन भू नापी ॥
मन ते बिधि जग रचने लागे ॥ इच्छै ते बहु सुत उपरागे ॥
सनकादिक आदिक जे भयऊ ॥ माया रहित सकल बन गयऊ ॥
नव बांयें भुज ते सत रूपा ॥ दहिने उपजायं मनु भूपा ॥
तिनहूं बन का कीन पयाना ॥ लखि ब्रह्मा तब रोदन ठाना ॥
ताते रुद्र प्रगट भे घोरा ॥ करन रौवत हम रचब घनेरा ॥
कोई छीन कोइ पीन बिशाला ॥ कोइ बिन सिर कोइ बिपुल कपाला ॥
कोइ बिन कर मुख दृग पग काना ॥ कुटिल कराल केहू के नाना ॥
यहि बिधि भूत बहुत उपजाये । एकहिं एक लोहिं में खाये ॥
तब बिधि तिनै बरजि सो पाये ॥ रुद्रन सहित बिष्णु पहं आये ॥
प्रभु ते सब निज हाल निरूपा ॥ मुनि मिलि गे जहं मनु सतरूपा ॥
बोले सुवन राज्य चलि करहू ॥ बचन हमार हृदय महं धरहू ॥
सम संतोष दया सुबिचारी ॥ जहं तहं अहै सुखद ब्यौहारी ॥
कह मनु हमें पुरोहित दीजे ॥ बोले बिधि बशिष्ट कहं लीजे ॥
सुमन बशिष्ट बचन अस भाषा ॥ दस कूकर सम बकी [illegible] ॥

दशचक्रीसम धुज यक होई ॥ दश धुज सरिस नायका सोई ॥
दश गणिका सम नृप यक गावा ॥ दश नृप सम उपरोहित रहावा ॥
ऐसा मन्द कर्म मोहिं देहू ॥ अहो पिता मैं लेखन एहू ॥ ॥
मुनि वशिष्ठ के वचन पितामा ॥ कह सुत लाभ अग्र तोहिं पामा
परमातमा ब्रह्म नर देहा ॥ धरिहैं रवि कुलान के गेहा ॥ ॥
तिन कहँ तुम देखिहौ भरि नयना ॥ सुनि हर्षे वशिष्ठ विधि बयना
पुनि मनु कह्यो थान मोहिं दीजै ॥ बिशद राज्यधानी जहँ कीजै ॥

दो० सुनत बिधाता के कुशाद ते दीन अयोध्या आनि ॥
मनु लायथ महि लोक महँ श्रीपति को अनुजानि ॥
कटि कांची पग अवंतिका नाभि द्वारिका सोध ॥
हृद माया कर मधुपुरी काशी द्वारा सिर औध ॥
चौरासी योजन बिषै बसी कनक मय भारि ॥
द्वै शत छत्तिस कोस कर घेरा तासु निहारि ॥

चौ० एक इस अर्ब पांच से कोरी ॥ लाख बेन्ह तीस द्विजबर जोरी
चौदा लाख यकोतर धामा ॥ तपसिन केर रहैं ऋषि तामा ॥
एक से अर्ब यकासी कोरी ॥ चारि लाख दुइ सत पुनि ओरी ॥
चारि हजार अपर फिरि हेरी ॥ यतनी बखरी क्षत्रिन केरी ॥ ॥
चौदा पदुम एक से अर्बा ॥ एते बैसन के गृह सर्बा ॥ ॥
चारि पदुम गृह शूद्रन केरे ॥ जामल रुद्र कहत इमि टेरे ॥
बारा ग्रन्थ और सन्यासी ॥ रहैं असंख्य असंख्य उदासी
यहि बिधि प्रजन सहित मनु राजा ॥ करै राज सब सुखी समाजा
द्वै सुत भे मनु के अभिरामा ॥ प्रियब्रत पद उतान सुनामा ॥

दो० बहुरि तीनि कन्या भई सकल सुलक्षण खानि ॥
देवहुती अवकूती परसूती ये जानि ॥ ॥

चौ० मनु ते भे मनुज मुनिराया ॥ तेहि ते मानुष्य नाम कहा

राज्यकरतबीतेबहुकाला॥ यकदिनकीनबिचारभुवाला॥
बिषयकरतचारिउपनगयऊ॥तदपिनइंद्रीतिरपितभयऊ
भक्तिबिमुखसुखदुःखसमाना॥असबिचारिबनकीनपयाना
नारिसहितन्रपनैमिखआये॥हर्षिगोमतीमाहिंनहाये॥
तहांविप्रहरिदेवप्रबीना॥कनकलतायुतनारिनबीना॥ ॥
करहितपस्याभगवतहेता॥असनबसनतजिअवधनिकेता
लागेकरनतहेंतपआपू॥द्वादशबर्णमंत्रकरजापू॥ ॥
गौरश्यामसियरामस्वरूपा॥धरेंअहनिशध्यानअनूपा॥
कन्दमूलफलकछुदिनखाये॥पुनिसबत्यागिनीरपरआये
षटसहस्रसम्मतजलपीनो॥पुनिभरिबातसोउतजिदीन्हों
बर्षसहसदशभख्योसमीरा॥पुनिसोउतजिदीन्होंमतिधीरा
मनअभिलाषयहैदिनराती॥प्रभुकहंदेखिजुड़ाइयछाती
निरगुणनिराकारनिरखेदा॥नेतिनेतिजेहिगावतबेदा॥ ॥
ब्रह्माबिष्णुमहेशसुभेषा॥जासुअंशतेहोतअलेखा॥ ॥

दो० सोइप्रभुसेवाबससहतकहतनिगमअसगाय॥
जोयहसत्यतोपूजिहैममअभिलाषाआय॥

तोमरछं०इमिबर्षदशहज्जार। रहेदोउबिनआधार॥
कृशगाततनातनबारि॥नहिंनेकमानीहारि॥

हंसमालाछं०लखितपअतिभारी। हरिअजत्रिपुरारी॥ चलिमनुढिगआये। मृदुबचनसुनाये॥

युक्ताछं०मांगहुबरसुतसोई। जोइच्छामनुहोई॥ मनुकछुकहतनभयऊ॥पुनिफिरिफिरिगयऊ॥

चौबंसाछं०प्रभुजगस्वामी॥अन्तरयामी॥ निजजनजान्यो। नन्यपिछान्यो॥

चतुष्पदीछं०नवभैनभवानी। सुनुन्रपरानीमांगहुजो

मनभावै। सुनिगिरासोहाई उठे सोटाई जिमि घरते कोइ-
आवै॥ बोले हर्षाई प्रेमबढ़ाई सुनु सेवक सुर धेनू। बिधि ह-
रि हर नायक सुरनसहायक प्रणत पाल सुखदेनू॥ जो शम्भु-
हु भावै मुनिजन ध्यावै कागभसुराड सुखेना। सोइ राम अ-
नूपा श्यामस्वरूपा देखौं मैं भरि नयना॥ अस बचन बिनी-
ता परम पुनीता सुनि प्रगटे भगवाना। शुभ तन घनश्याम ल-
खि सत कामं लाजत नीरज पाना॥ शशि मुख छबि सीवां चि-
म्बुक ग्रीवा अधर अरुण सुक नाशा। नव अंबुज लोचन रि-
पुमद मोचन रद कपोल हरि हासा॥ भूषण मणि जाल उर
बनमाला भाल तिलक उर भारी। श्रुति कुण्डल लोला मुकुट
अमोला भृगुटी धनु अनुहारी॥ कटि कसे निषंगा कर सारं-
गा पीत बसन लपटाये। करि कंध जनेऊ कच शुभ तेहू बिबि-
धि सुगंध लगाये॥ नख नखत छबीरा नाभ गंभीरा उदर रेख-
त्रै राजे। राजिव दोउ चरणा मुनि मन हरणा जिन ध्यावत अघ-
भाजे॥ जो सब जग मोहै बांये सोहै आदि शक्ति सुख खानी। जे-
हिं अंश अनेकं अघटें अगणित प्रगटैं उमा रमा ब्रह्मानी॥ दोउ
रूप अनूपा मनु सतरूपा यकटक रहे निहारी॥ परगिरि सुज्ञा-
ना दण्ड समाना बपु की दशा बिसारी॥ प्रभु तुरत उठायो हृद-
य लगायो फेरयो सिर निज हाथा। मांगहु बर सोई जो मन हो-
ई मुनि बोले नरनाथा॥ पद पदुम तुम्हारे देखि हमारे सब पूजे
मनकामा। लालसा जु एका है मांगि थेका कहत लगत भय-
नामा॥ जानत तुम स्वामी अंतरयामी पुरवहु मन अभिला-
षा। सब सकुच बिहाई मांगहु राई नहिं अदेव प्रभु भाषा॥
बोले महिपालक तुम सम बालक इन सम चहों पतो हू॥
बिषइक दू बजानो ईशानमानो देव यहै करि छोहू॥

दो० एवमस्तु कहि कृपानिधि पुनि बोले मनुराय ॥
आपु सरिस पैहौं कहां महीं होव सुत आय ॥
चौ० सतरूपा ते कह्यो बहोरी ॥ देवि मांगु बर जो रुचि तोरी ॥
जो पति मांगा सोइ प्रिय मोही ॥ मानो मैं इच्छा करतो ही ॥ ॥
सुनि मृदु गूढ़ बचन छल हीना ॥ कह प्रभु जो माग्यो सो दीना ॥
अब तुम दोउ मम आयसु मानी ॥ बसो जाय सुरपति रजधानी
तहं कछु काल रहेउ सुख पाई ॥ युग त्रेता जब लगि हैं आई ॥
तब तुम हहु हो अवधभुवारा ॥ तहं होब मैं तनै तुह्मारा ॥ ॥
इच्छामय नरदेह बनाई ॥ अब तरिहों अंशन युत आई ॥
करिहों चरित अनेक प्रकारा ॥ जो सुनि नर हैहैं भव पारा ॥
अस कहि पुनि प्रभु द्विजपहं आये ॥ मांगु श्बर बचन सुनाये ॥
नारि समेत विप्र अस भाषा ॥ देहु नाथ वर यह अभिलाषा ॥
दो० तुन समान कन्या मिलै तुम समान जामात ॥
यह बर दीजै कृपा करि और न चाहिय तात ॥
चौ० एवमस्तु कहि कृपा निधाना ॥ बोलत भे मनु विप्र सुजाना
त्रेता जनक होब तुम सोई ॥ नाम सुनैना तुन कर होई ॥ ॥
तब तव तनया शक्ति हमारी ॥ हैहै अंशन संयुत क्वारी ॥ ॥
मैं जामात्र मिलब सहं जाना ॥ अस कहि भे प्रभु अंतरध्याना
मनु सतरूपा द्विज द्विज नारी ॥ बसे जाय चहुं स्वर्ग मंझारी ॥
जब महि अवतरिहैं बर लागी ॥ सो चरित्र बरणव पुनि आगी ॥
हरिराय छं० यह इतिहास जो नमें कही ॥ लोमस रामायण म-
हं सही ॥ पदुम पुराण साखि पुनि भीरे ॥ सुनि करु कोइ संदेह न कोरे
इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ-
दास रामसनेही कृत ब्रह्मा की उत्पत्ति अयोध्या की उत्पत्ति शंभू
मनु कथा बर्णनो नाम सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणों सुख संहिता कछु विष्णु पुराण बखानि॥
चौ० कह सौनक शंभू मनु पाछे॥ कौन राज केहि कहिये आछे॥
बोले मुनि जब नृप बन गयऊ॥ तब उत्तानपाद पति भयऊ॥
तिनते ध्रुव ऐसे सुत दूना॥ कछु दिन पाछे हे गा सूना॥ ॥
लखि बिरंचि प्रियब्रत लै आये॥ कीनि राजि भलि प्रजा रिझाये
सात पुत्र तिन के भे चीन्हे॥ ताते सात दीप करि दीन्हे॥ ॥
दो० जांबू और पलाक्ष है साल्मी मल कुश चारि॥
क्रौंच सकला दीप षट पुष्कर सात बिचारि॥
सागर अंतर जानिये इन दीपन में तात॥
क्षार क्षीर दधि मधु मदिर इक्षु जल सागर सात॥
चौ० जंबू दीप तासु बिस्तारा॥ योजन लक्ष केर निर्धारा॥ ॥
जांबू फल तहँ नदी बहावे॥ ताते जंबू दीप कहावे॥ ॥ ॥
मेरु आदि हैं गिरि बहु रहई॥ गंगादिक सरिता बहु बहई॥
नृप अगनीत तहां भे चंडा॥ नव सुत करि दीन्हे नव खंडा॥ ॥
दो० ईलारमनक हिरण्य कुरु हरि रुप किंपुरुषाल॥
भरथ माहिं उपदीप बहु भद्राश्व धुज माल॥ ।
चौ० सौ योजन का देश बनावा॥ सबै देश का मंडल गावा॥ ॥
ऐसे सत मंडल का यक खण्डा॥ बिष्णु उपासी बसत अखंडा॥
ता में चहुं बरणन के नामा॥ द्विज नृप बणिक शूद्र अभिरामा
जंबु दीप के चहुं दिश हेरा॥ क्षार सिंधु लख योजन केरा॥ ॥
ताके आगे दीप पलाक्षा॥ उभय लाख योजन कर आक्षा॥
ता में पाकरि बिट पसो हावे॥ ताते दीप पलाक्ष कहावे॥ ॥
इदि मबाहु तहं के नृप हेरे॥ भये सात बालक तिन केरे॥ ॥
जेबे शुभद्र सात शिवरासा॥ सेम अभे अमृत तहं रि दासा॥ ॥

तातेसात खंड करि दीन्हे ॥ सरिबहु गिरि द्रुम मधि धरिदीन्हे
दो० तामें बिप्रै हंस कहि छत्रिहि कहत पतंग ॥
बैसे बुध शूद्रै बदत त्याग अपर बहु अंग ॥
ताके चारौं तरफ है सागर दधि रस केर ॥
द्वै लख योजन में तहां नररीा उपासक ढेर ॥
चौ० ताके अग्र साल्मिल दीपा ॥ चारि लक्ष योजन कर हीपा ॥
रुद्र सहस्र योजन कर तामें ॥ शामल तरु खगपति रहे जामें
दीप साल्मल तेहि कह बावा ॥ यज्ञबाहु नृप तहां रहावा ॥ ॥
सात सुवन तिनके भे चीन्हें ॥ तिनहित सात खंड करि दीन्हें ॥
रम्यायन अविज्ञान सुरोचन ॥ समर सोम परिभद्र हिमोचन ॥
दो० तहँ विप्रै बद सुत्र धर रूपै बीज धर भाव ॥
बैसे बोलत बंधधर शूद्रहि दुख धर गाव ॥
तेहि के चारौं तरफ है सागर मदिरा केर ॥ ॥
चारि लक्ष योजन तहां चन्द्र उपासी ढेर ॥
चौ० तेहि आगे कुश दीप जु अहई ॥ आठ लाख योजन श्रुति कहई
तेहि मधि कुश कर बिटप सोहावा ॥ रुद्र सहस्र योजन कर गावा ॥
भूपहि साल रेत कहँ केरे ॥ सात पुत्र भे तिनके हेरे ॥ ॥ ॥
नाभि गुप्त दृढ़ रुचि बसु माना ॥ बसु विवक्त कस्तुत ब्रत जाना ॥
तेहि भे सात खंड करि दीन्हें ॥ सरि गिरि मर्यादा के लीन्हें ॥ ॥
दो० तहँ ब्राह्मण को कुशल कहि क्षत्रिहि को बिद काम ॥
बैस अभिजित बदतु है शूद्रहि को किल नाम ॥
तेहि के चारौं दिशि रह्यो घृत को सागर पूरि ॥
आठ लाख योजन तहां अगिनि उपासी भूरि ॥
चौ० क्रौंच दीप तेहि आगे आहें ॥ सोरह लख योजन तहँ राहें ॥
क्रौंच शृंग रवि तेज सोहावा ॥ क्रौंच दीप तेहि ते कह वावा ॥ ॥

घृतकूरट तहँ केन्रप जाना ॥ तिनके भे सुत सात सुजाना ॥ ॥
मेघवृष्ट भाजीष्ठ सुधामा ॥ मधुरुह लोहित वनपति ॐामा ॥
सातखंड करि तिन्हितें बाँटे ॥ मर्यादा हित गिरि तरु पाटे ॥ ॥
दो० तहँ विप्रे पुरुषा कहत क्षत्रिहि द्रव्यवि बाराय ॥
वैसे भद्राभनतुहैं शूद्रे देवक गाय ॥
ताके चारौ तरफ हैं खोड़स योजन केर ॥
क्षीरसिंधु तहँके मनुष उदक उपासी ढेर ॥
चौ० साकदीप तेहि आगे सोहा ॥ बत्तिस लख योजन कर जोहा ॥
तहँ साकोन केर तरु अहई ॥ साकदीप नेहितें सबकहई ॥ ॥
मोक्षतिथ तहँ के नृप धीरा ॥ सात पुत्र तिनके भय बीर ॥ ॥
चित्ररेफ पवमान पुरोजय ॥ धम्नविश्ववहु रूप मनोजय ॥ ॥
तिन्हहिन सात खराड करि दियऊ ॥ सोई नाम खराडन कर भयऊ
दो० तहँ विप्रे बद्वालजी क्षत्रिहि कहत ग्रमीर ॥
वैसे भायन विरुजकर शूद्रे धारक धीर ॥ ॥
ताके चारौ तरफ हैं दीध कर सागर नीक ॥ ॥
बत्ति सलख योजन तहाँ पवन उपासी ठीक ॥
चौ० ताके आगे पुष्कर दीपा ॥ चौंसठ योजन केर समीपा ॥ ॥
पुहकर का तरु तहाँ रहावै ॥ ताते पुहकर दीप कहावै ॥ ॥
इन्द्र दवन राजा तहँ केरे ॥ रमन धातुकी सुत युग हेरे ॥ ॥
तिनहिन उभे खराड करि नावैं ॥ गिरि तरु मर्यादा हित रावै ॥
दो० तहँ विप्रे पारस कहत क्षत्रिहि भनत भुजङ्ग ॥
वैसे वालत भरवरी शूद्रे भनत कुरङ्ग ॥ ॥
ताके चारौ तरफ हैं सिंधु शुद्ध जल केर ॥ ॥
चौंसठ लखि योजन तहाँ ब्रह्म उपासक ढेर ॥
चिंतामणि छं० ताके आगे पै धूमि। गती आदीके रिभूमि-

पौने सोरह लाख हेरि । ताके आगे हेम केरि ॥
गोपाल छं० आठ कोटि बिंतालिस लाख । योजन जानहुं एकपाख ॥ लोकालो की आदि अष्ट । औरहु बीसन आहिं भ्रष्ट
बीर छं० अब तान । सुनु बात ॥ नभ केरि । मुख हेरि ॥
दो० जामूनद सुमेरु एक लख योजन परमान ॥
तामधि एक इस लोक हैं सो सब कहौं बखान ॥
कुण्डलिया बासुकि भूत क यम सुयक्ष किन्नर ब्रह्म राक्षस राक्षस काल रु चित गुपित योगिनि गंधर्व देश ॥ योगिनि गंधर्व देश सु अर्जम महत तप सुजन । सत्य सुदिव्य सुनाग देव पिप्पल बिसुकर्मन ॥ बिसुकर्मा दिक छांडि अहें औरो नानासुर पावक पवनपुरारि ब्रह्म बैकुण्ठ दिवासुर ॥ इक लख योजन भूमि ते हैं ऊंचार बिलोक । सहस बहत्तर योजन में तेहि बैवान करवोक ॥ तेहि बैवान करवोक उदै कृत इन्द्र पुरी जहं । धर्मपुरी मध्यान अस्त भव वरुणापुरी महं ॥ अर्ध लाख योजन रहै धनद पुरी उत्तरेक । यक दस सहस योजन छुसे बसे पलक विच यक ॥ यक लख योजन भानु ते है शशि लोक उछार । योजन अरतालिस सहस में ताको बिस्तार ॥ में ताको बिस्तार एक लख पर मंगर पुर । तेतालिस हज्जार माहिं बिस्तार तस्य कुर ॥ यहि बिधि इक इक लाख पर बसें ग्रहन रखत अनेक । बरनौं जन रघुनाथ किमि सबन अहै द्वै एक ॥
चौ० यह इतिहास कह्यो असि जानी ॥ अस पूछेउ सो कहौं बखानी
सुनि सौनक बोले हर्षाई ॥ हाथ जोरि चरणन शिर नाई ॥
दीन दयाल वचन सुनि तोरे ॥ अति आनन्द भई उर मोरे ॥
तुम्हन हेत अवणमम स्वामी ॥ सरित समूह सिंधु जिमि गामी ॥
तेहि ते मोहि निज किंकर जानी ॥ अब सरयू की कथा बखानी ॥

अगाटी किमि भूलोक मऽ आई ॥ कोलयो सो कहौ बुझाई ॥
सुने सूत मुनि बचन बिनीता ॥ रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥
धन्य २ कहि बारहिं बारा ॥ धर्म्यो तामैं तुम्हें निहारा ॥ ॥
सुनो नाम सरयू जिमि आई ॥ उत्पत्ति भै सो कहौं बुझाई ॥
ब्रह्मा कहं जानत संसारा ॥ जिन शिरज्यों जग कर बिस्तारा ॥
तिनके भवन तीनि रहैं इस्त्री ॥ संध्या स्वस्ति ऽ और सावित्री ॥
तिनके तनै मरीची भयऊ ॥ नाम प्रेम जो प्रिय बिधि दयऊ ॥
सुत मरीचि के कश्यप जानो ॥ दश त्रिय तिनके नाम बखानो

रोला छं० प्रथमै ऽ अदिती ऽ अमर कोटि तैंतिस जिन जाये। दिति के दैत्य अपार नाग कद्रु के गाये ॥ बिनता सुत खग नाथ चंद्र सोमावति केरे। सुरावती के सूर्य्य रहत जग जासु उजेरे ॥ पादवती जो सवा वत्सर पर बत की माता इमावती सुत अरंबै ऽ अमोघा खग संजाला ॥ इरा ते तृन वृक्ष जौन लाग न यरकाजे। नरवैरखा सुत मेघ कोटि छप्पन उपराजे ॥ तिनके ऽ अमृत वृष्टि किहे सब जग सुख पावत। कश्यप ते भै सृष्टि सकल श्रुति ऐसे गावत ॥

तोमर छं० श्री कश्यप के सुत भानु ॥ होय नारि तिनके जानु ॥ छाया प्रभा ऽ अस नाम। बिसकर्म जा ऽ अभिराम ॥ युग पुत्र छाया जाय ॥ यमराज सनि दुख दाय ॥ सनि बहिनि यमुना नाम। यम भय हरणि प्रद काम ॥ प्रभा के अश्विनी कुमार। अर्क देह स्ररुज भार ॥ तिनके तनै मनु भूप। सुचि रेखा नारि ऽ अनूप तिनके तनै इक्ष्वाकु। जिन कीन प्रजा बिस्वाकु ॥ सरयू नदी तिन आनि। भूपर बहाई जान ॥ केहि भांति लायो नाथ। बिस्तार बरणो गाथ ॥ कह सूत ऽ अवध भुवाल। इक्ष्वाकु भे जेहि काल ॥ वैठे भवन एक बार। न्रप कीनि स्वतः बिचार ॥ गुरु पास सरि ता होइ।

सो लहैं सुख सब कोइ

दो० ग्रहस्नान सो प्रथम है मध्य कूप कर होइ ॥
उत्तम सरस्वती करै उत्तम उत्तम सोइ ॥ ॥

सो० अस मन समुझि नृपाल । गुरु बशिष्ठ पहँ आयहू ॥
नाइ कमल पद भाल । कहत भये निज कामना ॥

चौ० मुनि बशिष्ठ हिय हर्षित भयऊ ॥ दोउ मिलि गंगा कन्या दयऊ
बोलत भये नदी एक चहिये । कहां सो मिलै कृपा करि कहिये ॥
कह नंदनी सुनहु मुनि ज्ञानी ॥ धुनी एक हैं कहौं बखानी ॥
एक समय बैकुण्ठ मझारी । बैठे नारायण युत नारी ॥ ॥ ॥
महादेव हरि दरशन हेता ॥ आये तहँ गिरि सुता समेता ॥
नारदादि सनकादि मुनीशा ॥ चतुरानन सुमनस सुर ईशा ॥
सबहिन आइ आइ शिर नायो ॥ प्रभु आदर करि बैठायो ॥
सभा देखि शंकर अनुरागे ॥ लागे करन नृत्य हरि आगे ॥
नारद बीना ताहि बजावैं ॥ ब्रह्मादिक सुर संग गावैं ॥
छैयो राग रागिनी छत्तिस ॥ सम सुर ग्राम सप्त स्वर बत्तिस ॥
ताल मृदङ्ग तंबुर सितारा ॥ बाजत बढ्यो बिनोद अपारा ॥
देखि नृत्य रीझे भगवाना ॥ बोले हरि मांगहु बर दाना ॥ ॥
कह पशुपति जो दाया कीजे ॥ तौ मोहि भक्ति आपनी दीजे ॥
सुनि शंकर के बचन सुरारी ॥ बोले दीनि नयन भरि बारी ॥ ॥
सोइ जल पात भयो मुनिराई ॥ लीन कमंडल मह बिधि धाई
तीरथ भयो गुप्त सो रहई ॥ लावहु जाइ ब्रह्म पहँ अहई ॥ ॥

दो० सुनि बशिष्ठ हरषत भये गये पिता के लोक ॥
सुख शोभा तहँ कर निरखि भे मुनि बिगत बिशोक ॥

चौ० ब्रह्म भवन पुनि देख्यो जाई ॥ कहि न जात कछु तासु निकाई
चतुरानन के दरशन कीन्हे ॥ भाल तिलक कर वेद जु लीन्हे ॥

धरे कमण्डल अग्र साहाये। लखि बशिष्ठ चरण शिर नाये॥
विधि रहे ध्यान माहिं लवलीना। बैठि गये तहँ मुनि परबीना॥
नव सहस्र सम्बत चलि गयऊ। तव अज ध्यान नेवरत भयऊ॥
सुत बिलोकि हँसि हृदय लगायो। कह्यो तात केहि कारण आयो॥
तव बशिष्ठ मृदु वचन उचारे। नृप इक्ष्वाकु यजमान हमारे॥
तिनके पुर ढिग सरिता नाहीं। तेहि ते हौं आयो तुम पाहीं॥ ॥
अब महराज मया करि सोई। दीजे जेहि मो कारज होई॥ ॥
सुनि विधि हर्षि कमण्डल नाये। चल्यो प्रवाह संग मुनि धाये॥
गगन ते गिरी भई आकाशा। गिरि सुमेरु महँ कीन्ह्यो बासा॥
ऐरावत के रद दोउ लागे। फाट पहाड़ चली बहि आगे॥ ॥
सो जल गिर्यो भूमि पर जाना। तेहि ते सरयू नाम बखाना॥
पुनि जल मान सरोवर आवा। गैस माइ मुनि लखि दुख पावा॥
मान सरोबर बिधि मनतेरे। भयो धाम हरि का तेहि नेरे॥ ॥
जाय बशिष्ठ ठाढ़ भे द्वारे। लगे करन तप तन मन बारे॥ ॥
विपुल काल लगि तहँ तप कीन्हा। तज्यो अहार भयो तन छीना॥
तव हरि द्वारपाल हँकराई। कह्यो बशिष्ठे लेहु बोलाई॥
द्वार पाल तहँ बोलि लयाये। आइ बशिष्ठ चरण शिर नाये॥
कह भगवान सुनो मुनि प्यारा। कवन हेतु तप कियो अपारा॥
कह बशिष्ठ इक्ष्वाकु यजमाना। भूप अयोध्या के जग जाना॥
तिन अस कहन दीय कहोई। मैं बिधि पास गयों मुनि सोई॥
तहां एक सरिता प्रभु पाई। सो सरवर महँ आइ समाई॥ ॥
बोले हरि हल को गहु पाया। अबहीं निकरि चलें तव साथा॥ ॥
तब बशिष्ठ जल जाय हलोरा। चली निकसि सरयू बरजोरा॥
गिरि पुर गाम धाम करि पावन। वहीं अवध तर आइ सोहावन॥

दो॰ सुनि नृप पुरवासिन महित आपे अपगा तीर॥

पूजनकीन्हों विविधि विधि दीनदानभयभीर ॥
आय आय सुखबधुनसुत कीन्हें नितहों अस्नान ॥
नामधरे त्रयनयनजा सरयु बसिष्ठीजान ॥
दरसपरस मंजनकरत हरत पापश्रुतिगाय ॥
अन्तकाल हरिपुर बसै रविसुत भयमिटिजाय ॥
सरयूकी उत्पत्तिइमि मुनिन कही रघुनाथ ॥
केहु पुराणमें बदलखु धेरे रघुपति वरपाथ ॥

कामाकं०॥ बाये । पाये ॥ केरो । हेरो ॥

तोटक दोउ भांति मंगल मूल । मोहिं देहु हे अनकूल ॥ सि-
यराम नाम अधीर । सुमिरों सदा नयतीर ॥

इतिश्री विश्रामसागरसब मत आगरग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासराम
सनेही कृतसातोद्वीप नवखराड प्रमाणश्रीसरयूकी उत्पत्ति बरोनो नाम अ
ष्टविंशोऽध्यायः २८॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
पिक कृत अगिनिपुराणमत कहौं भागवत बखानि ॥

चौ० सुनि शौनक बोले शिरनाई । गंगा कौन भांति महि आई ॥
केहि विधि उतपति भै सो गावो । प्रभु प्रभाव कछु बरणि सुनावो ॥
कह्यो सूत नृप सगर जो भयऊ । जिन बहु भांति प्रजहि सुख दयऊ ॥
तिनके केशि सुमति द्वै नारी । पुत्र बिना नित रहें दुखारी ॥ ॥
इक दिन नृप दोउ त्रियन समेता । वन तप करन गये सुत हेता ॥
कीन कठिन तप तीनिहु प्रानी । बरंब्रूहि बोले भृगु बानी ॥ ॥
केशी कहा पुत्र इक दीजे ॥ एवमस्तु अति सुन्दर लीजे ॥ ॥
मांगहु कहन सुमति ते लागे ॥ साठि सहस्र सुवन तिन मांगे ॥
बरदे भृगु आश्रमें सिधाये । बधुन समेत भवन नृप आये ॥ ॥
असमञ्जस सुत केशी जाये ॥ सुमन के मिस सो बिपिनिसिधाये

सुमतिके भे सुत साठि हजारा ॥ घृत घटमें कीन्हेंउ प्रतिपारा ॥
बीर महा रणधीर सक्रोधी ॥ मोर असुर सकल जिन शोधी ॥
एक बार नृप मख कर साजा ॥ कीन्ह्यो तहँ लिखि छाड़ेउ बाजा ॥
दो० इन्द्र ताहि गहि कपिल के पाछे बाँध्यो जाइ ॥
खबरि लहिं दोखि तब कहिन भूपते आइ ॥
चौ० सुनि सुत रहे सुमति केजेता ॥ चले सकल ढूंढन के हेता ॥
सात द्वीप नव खण्ड मझायो ॥ श्याम करण को खोजन पायो ॥
तब लागे महि खोदन सोई ॥ तीनि दिशा दिशि डारिनि जोई ॥
पुनि ढूंढ़त उत्तर दिश आये ॥ तहां कपिल मुनि ध्यान लगाये ॥
ताके अश्व बंधा लखि मानी ॥ बोले सागर सुवन कटु बानी ॥
यक करि तुरंग आइ में आना ॥ हमें बिलोकि धरे सिवक ध्याना ॥
सुनि मुनीश करि क्रोध निहारा ॥ सब इक सङ्ग भये जरि छारा ॥
समुझि बूझि विष पान जो करई ॥ कहौ तात सो काहे न मरई ॥
इहाँ शोच मन कीन्ह भुवारा ॥ भे बहु दिन नहिं फिरे कुमारा ॥
दो० तब असमञ्जस के तनय अंशुमान कहँ बोलि ॥
कह्यो खबरि लय पितुन की लखि हय लावहु खोलि ॥
सो० सुनत चले हरषाइ । जहँ तहँ खोजत नगर बन ॥
मिले गरुड़ मग आइ । कही कथा सब जिमि जेरे ॥
कामरूप छं० असि खबरि पाइ । जलनिधि नहाइ ॥ तिल उ-
दक दीन । पुनि गवन कीन ॥
संयुता छं० खग नाथ युत तहँ आयहू । मुनि चरण शीस
नवायहू ॥ करि बिनै आशिष पाइ कै । हय लइ चले हरषाइ कै ॥
तोमर छं० वद बैन ते सुनु तात । परमार्थ की इक बात ॥ जो ग-
ङ्ग आवै भाय । तब होंय पितर कृतार्थ ॥ सुनि अंशुमान नि-
होरि । कह गरुड़ से कर जोरि ॥ अब गङ्ग की उत्पत्ति । कहि

येकृपाकरिसत्ति॥आयेमहीपरजासु।तौरहैंपितरममआ-
सु॥बोलेगरुड़हर्षाइ।उतपतिसुनुकहौंगाइ॥
चौ० त्रेतायुगमेंबलिमखठयऊ।इन्द्रलोकलैसोमनुभयऊ
तबहरिहियबिचारअसकीन्हा।प्रहलादैंमैंयहपददीन्हा
सोबलिलैनचहतकरियागा।तेहिहितबावनतनुअनुरागा
बावनअंगुरकेहिकारणा।भेप्रभुसोकहियेअहिचारणा
मागनकेरहेतुहरिजाना॥तेहितेबावनभेभगवाना॥ ॥
मागनमरणउभयसमअहई॥मानबड़प्पननेहनरहई॥
सो० खगतेलघुतूलाइ।तूलहुतेलघुयाँचकहु॥
कसनउड़ावतबाइ।मागनकरभयमानिकर॥
चौ० यातेहरिबावनतनुभयऊ॥अदितिकेउदरजन्मअलयऊ
यज्ञोपवीतभयोजबजाना॥भिक्षाहेतचलेभगवाना॥ ॥
बड़दानीसुनिबलिपहँआयो॥बहुप्रभुतामुखबरणिसुनायो॥
बलिबिलोकिइकटकरहिगयऊ॥असबपुकबहुँनदेखतभयऊ
कहँबलिमांगुजोभावैतोहीं॥पगतीनिपृथ्वीदेमोहीं॥ ॥
ममसमानदानीलहितुमते॥मागतबनानमागहुअबले॥
बावनकहीसुनहुनरपाला॥द्विजैतोषचाहीसबकाला॥
दो० असंतोषद्विजहोयुतसंतोषीनृपचारि॥
सहलज्जागणिकाअधमनिरलज्जाकुलनारि॥
कहाशुक्रमहिपालसुनुयहैश्रीभगवान॥
छलनहेतआयेतुम्हेंदेहुनइनकहँदान॥
दोधकछं० जोभगवानकहौतुमएहैं।हौनदेहौंबलिके-
नहिंलेहैं॥ताते यहैहितहितेदीजे।नामचलीधनलैकहुकीजे॥
चौ० शुक्रकहापुनिसुनहुभुवारा॥अबतेंमानहुवचनहमारा॥
दीनहीननरव्याकुलरहई॥सबठौरमदादरलहई॥ ॥

बिनापराध मित्र जन मारैं ॥ त्रियसनेह करि बचन न भाषै ॥
तेहित धव को रक्षा न हू ॥ दवै ते सबै बेस मान हू ॥ ॥
दो॰ धर्म हेतु॰ कहत लि देन के होइ न काव्रत । जो नहिं देहुं तौ
धर्म नशै सब ॥ झूठ समान न पातक आन जू । बोलत भे
धनि शुक्र सुजान जू ॥
तोर छं॰ धातु ब्यो । पंच चौर ॥ झूठ कही । दोष नहीं ॥
दो॰ निज त्रिय ते पुनि ब्याह में धन हित संकट प्राण ॥
गो द्विज हिंसा मे कही झूठ न दोष प्रमाण ॥
जिन कर रक्षक लोक सब असुर हते जिन हाथ ॥
तेहि कर मागत भीख अब कि लपिन दीजै नाथ ॥
चौ॰ अवनि रत्न धन तन सब सबही ॥ पुनि असि समो मिली नहिं कबहीं
अस कहि करन संकल्प लागे ॥ प्रबिसे कबि करसा हम आगे
रुकेउ नीर हरि डाभ चलायो ॥ फूटि आंखि संकल्प करायो ॥
तब बावन निज देह बढ़ाई ॥ पग भू जंघ लोक ध्रुव जाई ॥
स्वर्ग भयो कट शिबपुर पेटू ॥ रबि सुत लोक हृदय जा भेटू ॥
कंठ आयत पञ्जो क हि भयऊ ॥ आनन सत्य लोक महं गयऊ
ऐसो दीर्घ रूप हरि कीन्हा ॥ पुनि पृथ्वी नापन मन दीन्हा
दो॰ तल अतल वितल तलातल रसातल पाताल ॥
सप्त पताल न एक पग तेनापेउ कृपाल ॥
प्रथमे भू दूसर भुवर तीसर स्वर जन चारि ॥
पंचम सत्य छठा मह तसु निबिधि लोक निहारि ॥
चौ॰ सात स्वर्ग ये जो मैं बरणा ॥ सो सब नापे दहिने चरणा ॥
ब्रह्म लोक जब हरि पद गयऊ ॥ चौन्हि चलांक धोइ सो लयऊ
ध्रुव लोक मंडल महं चतुरानन ॥ गंगा भई रहत जग जानन ॥
तप जो करहु गंग महि आवैं ॥ तब तुह्मार पुरुषा गति पावैं ॥

गंगाकी उतपति इमि जानौं ॥ बावन कृन अब सुन तुम रानौं ॥
द्वै पग सकल लोक जब भयऊ ॥ एकै पग बाकी रहि गयऊ ॥
बलि बावन पग पीठि न पाई ॥ दीन्ह कहा मागो बर राई ॥
जो प्रभु मो पर किरपा कीजै ॥ यही रूप निज दरशन दीजै ॥
एवमस्तु कहि बलिहि लवाई ॥ राज्य सुतल को दीन्हों जाई ॥
द्वारपाल है श्रीभगवाना ॥ रहत सदा तहं सब जग जाना ॥
याही ते हरि सन मुख टीका ॥ कृपा कोप छल तिन कर नीका ॥

दो० बड़े बड़े न ते छल करहिं जन्म कनौड़ होय ॥
वृन्दा श्रीपति शिर लसै गति बावन बलि जोय ॥

चौ० यह सब चरित गरुड़ जब गावा ॥ अंशुमान मुनि अति दुख पावा ॥
पुनि खगनाथ गये हरि पासा ॥ आये अंशुमान निज बासा ॥
देखि सगर उर लीन लगाई ॥ खबरि सकल पुत्रन के पाई ॥
यज्ञ कीन्ह भूसुर सनमाने ॥ कछु दिन रहि गृह पुनि अकुलाने ॥
राज्य सु अंशुमान कहं दयऊ ॥ आपु तपन हित सरि बन गयऊ ॥
अंशुमान के भये दलीपा ॥ तिन्हे थापि बन गे नर दीपा ॥
भागीरथ दलीप के सूवन ॥ अजेहि नाम चारि दश भूवन ॥
तिन्हहिं राज देवन अनुराग्यो ॥ करि तप कठिन तहैं तनु त्याग्यो ॥
भागीरथ सुत का कुथ भयऊ ॥ देतेहिं राज आपु बन गयऊ ॥
लागे तप गंगा हित करना ॥ रबि सन्मुख ठाढ़े इक चरणा ॥
सहस बर्ष बीते बिधि आये ॥ मांगु तात बर बचन सुनाये ॥
कह नृप जो किरपा प्रभु कीजै ॥ तौ गंगा महि आवन दीजै ॥
बोले अज हम छांड़ब जबहीं ॥ जाई गंग रसातल तबहीं ॥
तेहि ते अब शंभुहि अबराधी ॥ मांगहु बर तेरि बिहै साधी ॥
मुनि नृप दिब्य बर्ष शिव ध्याये ॥ मांगहु बर हर आइ सुनाये ॥
गंगा रोकि लेहु करि दाया ॥ कीन कबूल गंग मुनि पाया ॥

दो० जाउ रसातल सहित जिमि जटा बद्धयो ईश ॥
छुट्यो अजहुं इक वर्ष लौं रही भुलानी शीश ॥
ध्यायो नृप गार्यो जला भइ प्रसन्न तहँ तीन ॥
सुरपुर गई पताल इक रही मही परसीन ॥
सुरपुर मंदाकिनि कहत भोगावती पताल ॥
गंग कहाई अवनि लखि बोले मलिन नृपाल ॥
हे सुरसरि हरि भक्त जे रहहिं समस्त वेकार ॥
तिन के तन अस्पर्श से नाशी पाप तुम्हार ॥

चौ० मुनि समोद नृप संग सिधाई ॥ पहुंचे करत पुरसागर आई
तेरे पितर भागीरथ केरे ॥ अजहुं उधारत पतित घनेरे ॥ ॥
यहि विधि मुनि गंगा महि आई ॥ जासु महातम बरणि न जाई
दश सहस्र संवत तप करई ॥ सत्य व्रत दान नेम आचरई ॥ ॥
सकल पुण्य लै तुला चढ़ावै ॥ गंग महातम सम नहिं पावै ॥
सुर मुनि मनुज सिद्ध बहु जाना ॥ गंगा के व्रत सब हिन ठाना ॥
हरि जन आप बहुत विधि राखे ॥ प्रभु का पादोदक श्रुति भाषे
जिमि घन सोणा सोपा तम खोवै ॥ तिमि गंगा कलि पातक धोवै

दो० दग्ध अघ सत जन्म के पीत्वा अघ सत दोय ॥
मज्जन जन्म सहस्र के हत गंग कलि जोय ॥

चौ० जो पै कुंजर सी मन होई ॥ तौ हरि धाम बसै नर सोई ॥
वयस केर बालक इक मेरऊ ॥ कप्फन की रज मुख में परेऊ ॥
भयो न भूत गयो सुर धामा ॥ देखि तिहि कीन्हों परिनामा ॥
विप्र एक गनिकारत जाना ॥ अन्तकाल निकसे नहिं प्राणा
बार सुखी मुख पूर्व्यो आई ॥ तजि तनु बस्यो विबुध पुर जाई
पक्षी गिर्यो मृतक हू नीरा ॥ सिद्धि भौ ताहु सकल भव भीरा
गंग महातम अहै अपारा ॥ थकै कहत सुरत शेष हजारा ॥

गीतिका छं० कहिथकैं शेषसहस्रमुखमैंएककाबखानकरी
निजबुद्धिमापिककह्योकछुतबहेतुहरिपदउरधरौ॥ तेध
न्यसुरसर तीररहि लहिनाम नित्यनहावहीं। रघुनाथतेतनु
त्यागिकैपरधाम निश्चय जावहीं॥

सोरठा नाथनाइरघुनाथ। मांगत दीजैजननिमोहिं॥
जन्मजन्मतपपाथ। पावौंगावौरामगुण॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरा
मसनेहीकृतगंगाकीउत्पत्तिवर्णनोनामऊनत्रिंशोऽध्यायः २९॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
बरणौंब्रह्मपुराणकोअबइतिहास बखानि॥
सुरसरिमहिमाअगमसुनिबावनकथारसाल॥
पुनिशौनकबोलतभयेनाइसूतपदभाल॥

चौ० प्रभुआनन्दभयोअतिमोरे॥सुनिइतिहाससुधारसबोरे॥
इकलालसाऔरउरजामी॥सोअबपूरणकीजैस्वामी॥ ॥
एकादशीकीउतपतिकैसे।भइजगमाहिंबखानोतैसे॥ ॥
सुनतसूतबोलेसुखपाई॥भलीप्रश्नकीन्हींऋषिराई॥ ॥
सबसुखकरणिअघहरणिअपारी॥पारहोवभवसुनिनरनारी॥
सोइइतिहाससुनावौंतोहीं॥जसकछुसमुझिपरीउरमोहीं॥
सतयुगमाहिंअसुरइकभयऊ॥मुरअसनामसबनिदुखदयऊ॥
शंखासुरसुतपितुबधजान्यो॥तबबनजाइमहातपठान्यो॥
पद्मासनविधिआइबखाना॥मागुसुवननिजरुचिवरदाना॥
बोलासुनिसुरमुनिमनुजादी॥औधरहरलोकपसहपादी॥
जहंलगसृष्टिरचीतुमहोऊ॥हमतेसमरनजीतैकोऊ॥ ॥
एवमस्तुकहिब्रह्मसिधाये॥सुखरपाइबेसनिजआये॥
भुजबलजीतिसकलमहिपाला॥पुनिदलसाजिसुरनपरचाला॥

भयायुद्ध अतिखेचरहारे ॥ शक्रसहितभागेभय मारे ॥ ॥
दनुजराजलखि अतिहरषाना ॥ बैठोरतहँ आपन थाना ॥
दिगपालन पर बहुरि सिधारा ॥ जहाँतहाँ भयमारु अपारा
वरुरा ॥ कुवेर कालयम राई ॥ लेलैजियसवगये पराई ॥ ॥
सकललोकतपबलवसकीन्हे ॥ निजसेवकन बासतहँदीन्हें
तबसुर सहितइंद्र शिवपासा ॥ आइनाइशिरहाल प्रकाशा
नाथ असुरभयदेषदुखारी ॥ बूहिउपाइ मिटे दुखभारी ॥
कह हर सेतदीपतुम जावो ॥ कमलनाभकहँ विपतिसुनावो
शंभुवचनमुनिसुरसुरईशा ॥ आयेतुरत जहाँजगदीशा ॥
सन्मुखहैलोचनभरिवारी ॥ हाथजोरिअस्तुतिअनुसारी ॥
तोटक छं॰ जय जय जगदीश अजीशपतिं । करुणारसमा-
गर शुभ्रमति ॥ जयदीनदयालकृपालप्रभो । तब भूरिरयोज
गमाहिं विभो ॥ जबहीं जबदुखहमैंजुपस्यो । तुमहींतबसंकट
नाथहस्यो ॥ अबनिश्चरएक भयोमुरहे । सुरदीन निकारिलि
योपुरहे ॥ दिगपालसबैमिलिदेवहरी भयत्रासित आइपुका-
रकरी ॥ तेहिते अबनाथकृपाकरिये । दनुजेदलिमोदुखकोह-
रिये ॥ सुनिदीन गिराबदविष्णुतबै । करिहौंकछिकोपननाश
सबै ॥ कहियाबिधिसाजिचलेदलका । दिगपालनदेवनकेहृ-
लका ॥ यहसुद्धितमीचरपाइबली । लैसेनसुसन्मुख आइरली
नभभूरिरहीरजरोरकरे । परआपनवाजनबूझिपरे ॥
चामर छं॰ इत्त उतबीरजेतिजैपुकारिधावहीं । चक्रपालश-
क्तिशूल भिंडलेचलावहीं ॥ शीसपाणिपाय भूमिखंडखं-
डहेगिरें । उठिउठिरुराडदौरिमारुमारुकेभिरें ॥
तोमर छं॰ पुनिचल्यौमरबलवान । करिक्रोधकालसमान ॥
करधनुपसरभरसाथ । सबचलेदेवपराय ॥ सुरनाथजूभन

लाग। रणाश्रमित इन्द्रहु भाग॥ हरिकाग्रस्यौ सुरभूप। भयविष्णु
क्रोधसरूप॥ हनिचक्र मार्यो ताहि। नहिं कीन्हिं तनकौ आहि।
तरज्यौ तमीचर धाइ। सठहरिहि मारिसि आइ॥ यहि भाँति यु-
द्धकरंत। भइ सहस बरषै गन्त॥ सुनि सिद्ध हाहा कीन। तजि-
समर विष्णुहि दीन॥ भागत निशाचर नाथ॥ धावत भयौ हरि-
साथ॥ श्रम विपुल बढ़ी आइ। प्रविसे गुहा महं धाइ॥ रह सिं-
घवत्त अस नाम। योजन तरणि बड़ ताम॥ यक द्वार ता मधि ता-
त। सुर दीख विष्णुहि जात॥ लय संग निज भट सर्व। प्रविस्यौ
गुहा युत गर्व॥ दानव वधन के लाय। प्रभु कीन एक उपाय॥ भ-
य आपु निद्रा बस्य। कन्या भई उर तस्य॥ बल विपुल तेज अपा-
र। है जगत जेहि आधार॥ तन दिव्य पट भुज चारि। असि कार आ-
युध धारि॥ प्रकटी जो माया आदि। जेहि डरत शिवब्रह्मादि॥
लखि दनुज करिकै क्रुद्ध। लागी करण तहं युद्ध॥ प्रगटी दशौ
दिशि आगि। कित जाहि दानव भागि। भूमि भये सब जरि छार। निक
सी सुगन्ध अपार॥ भा शकुन इन्द्रहि नीक। आये गुहा सामीक॥
कियो कंदरा परवेश। सुर नारदादि गणेश॥ देखो सबै जगमात।
बैठी प्रफुल्लित गात॥ वा मय सहित अनुराग। अस्तुति करन तब लाग।
मदन मोहक दंडक जयति जग जननि अघहरणि मन म
गनि कर अयुध धर चक्र असि शूल धरणी। सर्व गुण भवनि दुख
दवनि दानव सुरभि व्याध जन पद्म हरि विश्व करणी॥ रोग तम-
तरणि भय हरणि कलिकालिका सालिका शत्रु पर चंड रूपी।
भूत ग्रह प्रेत वय साकिनी डाकनी विहंग हितं जास दुर्गे अनूपी॥
दो० याहि विधि अस्तुति इन्द्र करि देवन हने निशान॥
बरसि सुमन जय जय लिक तत तब जागे भगवान॥
सुर असुर पति हग पाल मुनि विनय किहिनि सब भाँति॥

देखि असुरबधविस्मृतबेलेमनहरषानि।

भुजंगप्रयातछं० किहोदेवि कल्याणदेवन्यकेरो। बसैमांगियेजोत्वहेचित्ततेरो॥ कहाशक्तिप्रकटीमैतनतेतुम्हारे। असुरदुष्टआवत लखसर्बमारे॥ सुनोनाथमोकोनहींयांचिआवै। कृपाकैसोदीजैतुम्हैंजोनभावै॥ वचोबिष्णुवल्लभोकमेरेमेंगाहो। एकादशिसबीरिन्मुमेंनामलाहो॥ नवोनिद्धसंसिद्धफलतुतदाता। जुहोवोसदाभयहिरगायाक्षघाता॥ रहैबर्तपूजैतुम्हैंनेमधारी। मनोकामलाथाइहैनरुनारी॥

दो० यहिप्रकारवरदानदै हरिभेअन्तरध्यान॥
उतपति एकादशीकीइमिमैकीनिबखान॥

चौ० कहसौनक यहकहौबखानी॥ कौनीभांतिरहेब्रतप्राणी॥ सुनिमुनिवचनसूत सुखमाना॥ तातसुनोअबबत्तबिधाना॥ एकादशीब्रतकीनजोचाहै॥ दशमीतेअसनेमनिबाहै॥ ॥ मसुरीमासकांसतियसंगा॥ कोदवचणाक शयनपरयंगा॥ अल्पअहारबारइककरई॥ मधुअरुशाकदूषीपरिहरई॥ उठै एकादशिहोतविहाना॥ सुचिकरिमध्यदिवसअसनाना॥ केशवकीपूजापुनिठानै॥ षोडशभांतिभजैभगवानै॥ ॥ कामक्रोधमदलोभरुमाया॥ तम्रसोयमदमैथुनजाया॥ ॥ निद्राहास्यमदृशतबोलै॥ तजिरदधावनझूठनबोलै॥ ॥ रातिजागरणकरैसुजाना॥ सुनैकथा हरिकीरति गाना॥ ॥ प्रातक्रियाकरिबिप्रबोलाई॥ यथाशक्तिसनमानैभाई॥ ॥ तैलासिखपरान्नपुनिभोजन॥ मैथुनादितजिद्वादशसोजन॥ यहिप्रकारजोकरैबिधाना॥ ताकरफलसुनियेदैकाना॥ ॥

दो० काशीसेवैअब्दशतअचवैवारिकेदार॥
उभैसहसगोदानदेतीरथअटेअपार॥

होमयज्ञकरिशतसहसविप्रजेमावैकोय॥
एकादशीब्रतकेरहेसमनहिंकोईहोय॥
सो॰ जोब्रतसहितविधान।रहैरांखविश्वासउर॥
ग्रावैअंतबेमान।बसैबिष्णुपुरजाइसो॥
रोलाछं॰ निराहारफलपूरीदुग्धतेआधारहई।फलअ-
हारचतुरांशकंदतेअर्धालहई॥कैरेउदरभरिअसनअ-
शसतकाफलपावै।उभैवारतेसहसअंशफलनिगमबता-
वै॥एकादशीकेदिवसअन्नखावैजोकोई।अथवाखैवैका-
हुदोखताकाबहुहोई॥बरतकरतपरिहरिरहैंबिषयारस-
लीना।ग्रासग्रासपरपरतब्रह्महत्यातेहिचीन्हा॥
दो॰ दशमीवेधीनारहीकरीद्वादशीयत्त॥
पंचालिसतकचाहियेसदियानीधुनिहत्त॥
सो॰ बरषएकके माहि।एकादशीचौबिशपरै॥
सुनोसबनकेनाँय।फलसमेतवर्णनकरौं॥
चौ॰ अगहनअसितएकादशिकेरा॥शयनबोधनीनामनिवेरा
विप्रकोटिसतन्योतिजेवावै॥यहिब्रतसमफलसोनहिंपावै
मार्गशुक्लसितमोक्षदनामा॥जोरहिपुंसपावहरिधामा॥
तेहिपरएकइतिहासबखानौं॥ब्रह्मपुराणकेरसुमजानौं॥
गोकुलनगरहेयकराजा॥बैखानसअसनामबिराजा॥
नर्कपरापितुसपनेदेखा॥जागतभाउरखेदबिशेषा॥ ॥
राजकाजसुखनीकनलागे॥मनविचारिकेहिबिधिदुखभागे
पुत्रजासुअधोगतहोई॥ जीवतवृथापुत्रजगसोई॥ ॥
असकहिमुनिअश्रमआयो॥करिप्रणामनिजशोचसुनायो
कहिऋषितवपितुतइकबारा॥रितुवतीप्रियभोगबिचारा॥
सुनिरतिदानदीननहिंराई॥तेहिअघपरयोअधोमुखजाई

दो॰ मार्गशीर्षसितपक्षकीएकादशीव्रतस्वच्छ॥
करिदीजेफलदानतेहिलहैपितातवमोक्ष॥
सो॰ सुनिनृपमन्दिरआइ।करिव्रतदीन्ह्योदानतेहि॥
पुण्यपरमगतिपाइ।जयकहिसुरबर्षेसुमन॥
रहेजोव्रतजसिरीति।पावैअंतविमाद्रसुख॥
यहैसुनैकरिप्रीति।बाजपेइफलसोउलहै॥
सत्यझूठकीबात।जानेनिगमकिरामजी॥
मोहिहरिहेतसोहात।अधिकनामकलिकामतर॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतएकादशीउत्पत्तिमार्गशीर्षकृष्णपक्षशुक्लपक्षसयनबोधनी-मोक्षदाकथावर्णनोनामत्रिंशोऽध्यायः३०॥

दो॰ सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कहौंपावनपौराणमतब्रह्मवैवर्तबखानि॥
चौ॰कहसौनककहियऋषिराऊ॥पूसअसितव्रतकरप्रभाऊ॥
कहानामकिनपूजरकीन्हा॥सुनिसुमंत्रअसबोलेलीन्हा॥
सुफलानामअहैयहितात॥जानिअजानिकिहफलदाता॥
करैसहसजोकन्यादाना॥तुलैनइहिव्रतरहैसमाना॥
यहिपरएकसुनोइतिहासा॥महिषमनृपचंद्रावलिवासा॥
तासुपुत्रबड़भयोअधर्मी॥लंपटचोरमदपहतकर्मी॥
सुनिनरेशबनदीननिकारी॥करैनिवाहबिहंगमृगमारी॥
पौषकृष्णहरिबासरवारा॥मिलानकछुतेहिदिवसअहारा
क्षुधितरह्योचलदलतरसोई॥निद्रालब्धभईनहिंकोई॥
व्रतप्रसादतेभामनपावन॥जान्योआपुहिवंसलजावन॥
आइभवनपितुपदसिरनायो॥समयसनेहराजपदपायो॥
असनजानेव्रतकरफलऐसा॥जानिकिहनहिंजानीकैसा॥

जोयहकथासुनैयागावै॥कन्यादानदिहेफलपावै॥ ॥

इतिश्रीपौषकृष्णएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण

सो॰ कहसौनकशिरनाइ।पौषशुक्लहरिव्रतकथा॥

अबमोहिंदेउसुनाइ।मुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ पहिकरनामपुत्रदाकहियै॥अवशिपुत्रफलधारैलहियै

लक्ष्मीनारायणहितसेवै॥संयमनियमपूर्वलखिलेवै॥ ॥

यहिपरएककहौंइतिहासा॥केतुमाननृपभद्रनिवासा॥

तेहिकेतनैनएकहुभयऊ॥यकदिनकरिबिचारबनगयऊ॥

देखेंबनहुंखगमृगतरुनाना॥मटतमिलेमुनिसोमसुजाना॥

करिबिनतीनिजदुखसककहेऊ॥सुनिमुनिमब्रबीतजसचहेऊ

पौषशुक्लव्रतपुत्रदनामा॥करहुजाइपूजीमनकामा॥ ॥

भवनआइव्रतकीन्हेउभूपा॥हरिप्रसादसुतलह्योअनूपा

जोयहकथासुनैअरुगावै॥सुखसंपतिनानाबिधिपावै॥

इतिश्रीपौषशुक्लएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो॰ कहसौनकसिरनाइ।माघकृष्णहरिव्रतकथा॥

अबमोहिंदेहुसुनाइ।सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ पहिकरनामखटतिलाअहई॥करिव्रतनेमनिकरअघदहई

तिलपिरिडनमेंहरिहिपधारै॥बिबिधिभांतिपूजाअनुसारै॥

तिलपावैतिलविप्रेदेवै॥तासुपुरायसुरपुरसुखलेवै॥ ॥

यहिपरयकइतिहासबखानौं॥रहेपुरशशिब्राह्मणीजानौ॥

नानानेमबरतसोठानै॥दानदेनभिक्षानहिंआनै॥ ॥ ॥

करिचिन्ताहरिजाच्यैआई॥दीन्हीमृतिकाद्विजैरिसाई॥ ॥

अंतकालतेहिपुरायप्रतापू॥लहास्वर्गशुचिमंदिरआपू॥

तहंधनधान्यकछुनहिंदेख्यो॥आसुहिमहामन्दकरिलेख्यो

हरिमतदेवबधुनतेमांगी॥यकखटतिलापुरायदुरिमांगी॥

इत्याहि नव्रतकाहूदयऊ। ऋद्धि सिद्धि सबनाके भयऊ॥ ॥
जो यह कथा सुनै बागावै॥ तस्य अश्वमेध पुराय सर सावै॥
इतिश्रीमाघकृष्णएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कह सौनक शिर नाइ। माघशुक्ल हरिव्रतकथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० माघशुक्ल हरिबासर केरा। जयानाम अघ हरत सबेरा॥
यहि पर यक बरणों आख्याना। इंद्र अप्सरा रहे छबि बाना॥
निरखत सो हरि अगि जानी। मालवगंधर्व देखि लोभानी॥
निरखि निलज्ज आप तृष दयऊ। होउ पिशाच जाय दोउ भयऊ॥
बनमें रहैं सहैं दुख नाना। माघशुक्ल व्रत किहिनि अजाना॥
हरि प्रसाद गे स्वर्ग यान चढ़ि॥ इमि भविष्य बोतर भाषत पढ़ि॥
जो यह कथा सुनी वा कही॥ करी कृपा तेहि पर प्रभु सही॥ ॥
इतिश्रीमाघशुक्लएकादशीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कह सौनक शिर नाय। फाल्गुन कृष्णा हरिव्रतकथा॥
अब मोहिं देहु सुनाय। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० बिजया नाम याहि श्रुति गावै॥ याके रहे बिजय नर पावै॥ ॥
अवधनगर नृप दशरथ के सुत॥ पितु बच बन गत बंधु बधू युत
तहँ जानकी हरी दशकंधर॥ मिलि रबिसुत हि चढ़े ले बन्दर॥
उदधि तट आपु अनुज मत ठयऊ॥ बकदालय ढिग पूछन गयऊ
नाथ कहौ केहि बिधि रिपु जीती॥ सुनि मुनिबर बोले कर प्रीती॥

दो० फाल्गुण कृष्ण बिजया असनाम एकादशि केर॥
करहु जाय तेहि कृपा ते जितिहौ शत्रु घनेर॥

सो० आय कीन व्रत राम। रण चढ़ि मार्यो दशमुखहि॥
सियसोदर युत धाम। पहुँचत पायो राजपद॥
कल्पभेद यह बात। बद असकंध पुरान इमि॥

पढ़ै सुनै जो तात। सो न सहै यम त्रास पुनि॥
इति श्री फाल्गुन कृष्ण एकादशी माहात्म्य संपूर्ण

सो॰ कह सौनक सिर नाय। फाल्गुन सित हरिव्रत कथा॥
अब मोहि देहु सुनाइ। मुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ॰ आमर्दकी नाम यहि जानो॥ गोशत दिये अधिक फल मानो॥
धात्री तरु पूजे मनु लाई॥ देइ दान बहु विप्र जेवाई॥ ॥ ॥
हरि सुमिरन जन भजन प्रकाशै॥ आधि व्याधि दुख दारिद नाशै॥
याही व्रत कीन्ह्यो सुग्रीवा॥ तस्य प्रसाद लह्यो सुख सीवा॥
राजा नल दमयन्ती रानी॥ यहि व्रत करि भइ विपदा हानी॥
आमर्दकी प्रात दुरबासा॥ नृप परतम करि भये निरासा॥ ॥
जो यह कथा सुनै या गावै॥ पुष्कर मज्जन कृत फल पावै॥ ॥
इति श्री फाल्गुन शुक्ल आमर्दकी महात्म्य संपूर्ण॥

सो॰ कह सौनक सिर नाइ। चैत्र कृष्ण हरिव्रत कथा॥
अब मोहिं देउ सुनाइ सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ॰ पापमोचनी यहि कर नामा॥ शुभगति लहै कि है बिश्रामा॥
यहि पर यक इतिहास बखानौं॥ भविष्योत्तर पुराण को जानौं॥
च्यवन पुत्र मेधावी नामा॥ करै तपस्या विपिन अकामा॥
इन्द्र डरपि अप्सरा पठायो॥ हाव भाव करि आइ डिगायो॥ ॥
सत्तावन बरस बीत्यो पचासी॥ बोली अहं जाव नभ वासी॥ ॥
कह मुनि यक क्षपा जानि डोली॥ होत प्रात जायो सुनि बोली॥
कै वर्ष की तब राति प्रमाना॥ मुनिहिं चेत तब भा दुख माना॥
दीन श्राप तेहि हे अघ करणी॥ होहि पिशाची तप क्षय करनी॥
सुनि कम्पित है चरनन नई॥ कीजे कृपा भूल बड़ि भई॥ ॥
कह ऋषि चैत कृष्ण उपवासै॥ करु हरिबासर ते अघ नाशै॥
सुनि अप्सरा कीन व्रत भारी॥ है पावन सुरलोक सिधारी॥ ॥

जोयह कथा सुनै वा गावै॥ चन्द्रायनब्रत कृत फल पावै॥ ॥

इतिश्री चैत्रकृष्ण पापमोचनी महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सौनक सिरनाइ। चैत्रशुक्ल हरिब्रतकथा॥
अबमोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० कामद नाम एकादशि एहा॥ करत हरत जेहि कलुषसनेहा॥
यहि पर एक सुनौ इतिहासा॥ पुंडरीक नृप सुतल निवासा॥
गंधर्वी ललिता तेहि तीरा॥ क्रीड़त करी नपति तेहिं भीरा॥ ॥
मदनानुरहे गान बिगारा॥ दीनि श्राप निशचर बपु धारा॥ ॥
पति गति लखि लज्जित बिलखानी॥ किंकरोमि कोगच्छ कठानी॥
यक दिन कानन कीन पयाना॥ बिद्यासिखर मिले मुनिनाना॥
पूंछे तेनिज बिपति सुनाई॥ तिन कह कामद ब्रत करु जाई॥
सुनि ब्रत दान ताहि करि दयऊ॥ राक्षसत्व गत गंधर्व भयऊ॥
चढ़ि बिमान निज पुर पगु धारा॥ सुनत कहत अघ दहत अपारा॥

इतिश्री चैत्र शुक्ल कामद महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सौनक सिरनाइ। बैशाख असित हरिब्रत॥
अब मोहि देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० नाम बरूथिनि यहि मुनि गाइनि॥ सब सुखराम भक्ति बरदाइनि॥
बिप्र सुच एक यह ब्रत करेऊ॥ जात जागरा हरि मग धरेऊ॥
बोला द्विज लौटन मोहिं खाये॥ सपथ खाइ हरिमंदिर आये॥
करि जागरण प्रात तहं गयऊ॥ ब्रत प्रसाद मृगपति तजि दयऊ॥
अन्त समै हरिपुर गा सोई॥ कहत सुनत गोशत फल होई॥

इतिश्री बैशाख कृष्ण बरूथिनि महात्म्य संपूर्ण॥

सो० कह सौनक सिरनाइ। बैशाख शुक्ल हरिब्रतकथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ० मोहनि नाम काम फल दाई॥ बिषय बराग सेवै चितु लाई॥

षोड़स भांति सहित अभिलाषै ॥ करै प्रदक्षिणा जय श्रुति भाषै
बिष्णुहि चारि अर्घ हरि काहीं ॥ रबिहि सात चंद्रै यक चाहीं ॥
हरि ढिग भूठ विवाद न ठानै ॥ गरमाले पादुका न आनै ॥ ॥
अग्र द्रुष्टे उपदि सिवामा ॥ करै न जप तप होम प्रनामा ॥ ॥
यहि विधि द्वादश दोष बराई ॥ हरिहि भजे सब पाप नसाई ॥
यहि पर यक इतिहास बखानों ॥ कूर्म पुराण केर तुम जानों ॥

दो० श्रीरघुनाथ बशिष्ठ ते कह्यो स्वप्न के माहिं ॥
देखत हौ मैं दश मुखे भय वश सूतत नाहिं ॥

चौ० कहौ सो ब्रत जेहि करि अघ जाहीं ॥ मुनि बशिष्ठ बोले प्रभु पाहीं
रामनाम तव धारणा करई ॥ कैसे कलुषी भव निधि तरई ॥ ॥
अस्म लोक हित किहेउ कृपाकर सित बैशाख रहो हरि बासर ॥
सब दुख दोष देत करि हानी ॥ सुनो एक इतिहास पुरानी ॥ ॥
सरस्वती तट सोमवती पुर ॥ बसै बैस धनपाल नाम चुर ॥ ॥
तासु तनै बड़ पापी भयऊ ॥ तस कर जानि काढ़ि तेहि दयऊ ॥
धूर्त कर्म करि दिवस बितावै ॥ जच तच गहि पीटो जावै ॥ ॥
नृप भय बहुरि बसा बन जाई ॥ खग मृग तहं के बध करि खाई ॥
एक दिन जान्हवी चलि न्हायो ॥ कौंडि न्याश्रम लखि सिर नायो
महापातक मैं किमि अघ नाशौ ॥ कह मुनि करु मोहनी मुपासै
मुनि ब्रत रहत दहत अघ भयऊ ॥ दिव्य देह है हरि पुर गयऊ ॥
जो यह कथा कहै वा गावै ॥ सो ब्रत अर्ध केर फल पावै ॥ ॥

इति श्री बैशाख शुक्ल मोहनी महात्म्य संपूर्ण ॥

सो० कह सौनक शिरनाइ । ज्येष्ठ कृष्ण हरि ब्रत कथा ॥
अब मोहिं देहु सुनाइ । सुनि सुमंत्र बोले हरषि ॥

चौ० जेठ असित ब्रत अपरा नामा ॥ दोष दलनि दायक मन कामा
एक इतिहास सुनो श्रुति कहई ॥ सत्यवती एक ब्राह्मणी रहई ॥

हरिमिलनेहित जेहितेहिप्रभु ऐके। केहिलोवैंतजि धामदपुसे
लखिलालसातासुलालचमुनि। बोलेसत्यवती मोतेसुनि॥
जेष्ठकृष्ण अपराव्रतरहऊ। मिलीसोइपतिजेहितुमचहऊ
करणलागिव्रतसहितविधाना। द्विजनि जेवाइदेइबहुदाना
तनुतजि अन्तकाललहिजोई। भईआइसतिभामासोई॥
कृष्णकंतनेपुरायएकदिन। बूझसि आपनियहीकहीतिन
अस अपराव्रतभूष्हतगावै। पढतसुनतगोदानफलपावै॥

इतिश्रीज्येष्ठकृष्णअपरामहात्म्यसंपूर्ण॥

सो॰ कहसौनकशिरनाइ। ज्येष्ठशुक्लहरिव्रतकथा॥
अबमोहिंदेहुसुनाइ। सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ यहव्रतनामनिर्जलासेवै। हरिपदधेनुबिप्रकहंदेवै॥
दुवादशीदिनपारनकरई। सोनरयमजातनानभरई॥
बरणयोव्यासभीमतेयाही। अन्नअसन नहिंव्रतदिनचाही
यहितनसोचंडालसमाना। मरेलहैंदुरगतिदुखनाना॥
बोलेभीमकरियकसताता। असमवोदरव्रतरहानजाता॥
तोतुमएकनिरजलाकीजे। बारौमासकेरफललीजे॥
सुनिविधिकरणवृकोदरलागे। जातभयेहरिपुरतनुत्यागे
जोयहकथासुनेवागावै। गयापिंडदीन्हेफलपावै॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगतग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतचतुर्दशएकादशीमाहात्म्यबर्णनोनामएकत्रिंश अध्याय॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
बरणोबिबिधिपुराणकोपुनिइतिहासबखानि॥

सो॰ कहसौनकशिरनाइ। असितअषाढहरिव्रतकथा॥
अबमोहिंदेहुसुनाइ। सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ महापुनीतयोगिनीनामा। यहिव्रतचरेहोइसिधिकामा॥

यहि पर एक इतिहास बखानो॥ ब्रह्मवैवर्त केर तुम जानो॥
अलका पुरी यक्ष पति पाली॥ बटुक हेमरह तिनकर माली॥
तस्यांगना मृगाक्षी नामा॥ प्रीत्या शक्त रहै बस कामा॥ ॥
शिव पूजन कुबेर नित जाहीं॥ एक दिन सुमन पहुंचायस नाहीं
तब धनपति निज अनुग पठावा॥ रमत देखि तहं आय सुनावा॥
सुनि कुबेर बोले करि रोसा॥ सुर हेलन कृत देइ भरोसा॥ ॥
यहि अघ कुष्ठ होइ अष्टादस॥ कहत भयो गयो कानन तस॥
सहै कष्ट तब मन पछिताई॥ मारकंडेय लखि विपति सुनाई
कह मुनि योगिन्या सुपवासे॥ करु जेहि पुराय कुष्ठ तव नासे
सुनि व्रत करत भयो बपु नीता॥ कहत सुनत सुख अद सब हीका
इति श्री अषाढ कृष्णा योगिनी महात्म्य संपूर्ण॥

दो॰ कह सौनक शिरु नाइ। सित अषाढ हरि व्रत कथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत्र बोले हरषि॥

चौ॰ सुख शयनी यहि नाम अनूपा॥ जेहि धरि हृदय तरिय भव कूपा
मिथुन सूर्य अविहरि हि सो वांचे॥ तुला रासि गत बहुरि जगावें
तस्य पुरः चतुराब्द कि मासा॥ करे नेम रहि बरत उपासा॥ ॥
मृदु वादी होवे गुड़ त्यागी॥ पुष्प तेल गंधर्व सोभागी॥ ॥ ॥
कटुक कषाय तजे कु विवंता॥ रविगत भय हरि सुमिरण संता
रक्त करा ठ तांबूल नवारे॥ पदाभ्यंग बस वाहन द्वारे॥ ॥
महिं सायि नृप होय बिशोका॥ पय दधि तजे जाय गोलोका
तजे अन्न सो सुरपुर वासे॥ लोन तजे त्रै तन के अघ नासे॥
हरि मंदिर मार्जनी जो करई॥ दीप दान लेपन अनुसरई॥
काम क्रोध मद लोभ गवांवे॥ सो सायुज्य मुक्ति नर पावे॥ ॥
जेहि तेहि भांति देइ जो दाना॥ सो प्राणी होवे धनवाना॥ ॥
नृत्य गान कृष्णा लै करई॥ सो नर भक्ति लहै बर बरई॥ ॥

अंबरीषपतनीयहआवति॥पुरहरहीहरिमंदिरगावति ॥
दीनलगायचूननिजपानी॥तेहिफलभईअवधकीरानी
करिहरिभक्तिगईप्रभुधामा॥नहुपुंसनकरसास्योकामा॥
कहतसुनततेहिप्रभुनिजजानैं॥इमिनारदीपुराणबखानै॥

इतिश्रीअषाढशुक्लदेवशयनीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो॰ कहसौनकसिरनाइ।श्रावणातमहरिव्रतकथा॥
अबमोहिदेहुसुनाइ।मुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰श्रावणाकृष्णाकामिकानामा॥सेवतदोउलोकविश्रामा
पूजैविष्णुचरणचितलाई॥तासुपुण्यकछुवरणिनजाई॥
गंगागयागोदावरिपुष्कर॥वाराणसीप्रागमज्जेनर॥ ॥
अन्नपटादिदानदैसोई॥यहिव्रतसरिसतदपिनहिंहोई॥
उरगबढ़ावनिस्वर्गनिसेनी॥यकइतिहाससुनोसुखदेवी॥
शुभगसुमनरुकमंगदबागा॥आवैलेनसुरीसहरागा॥ ॥
यकदिनएकराहिगईभूमा॥चूनताककरलाग्यौभूमा॥ ॥
सुनिनृपमालीतेतहंआघा।देहुपठाइस्वर्गमोहिभावा॥
केहिविधितवसुकृतसरसाई॥कामदव्रतदीजैयकराई॥
कहनृपमहानजानैकोई॥कीनअजानलयाधोसोई॥ ॥
तबनृपनगरपिटाईडौंडी॥सुनिआईयकबनिककीलौंडी
दीनदानव्रतलहिसुरनारी॥चढ़िबिवाननिजलोकपधारी॥
देखिप्रभावकरननृपलाग्यो॥सुततियप्रजबसहितअनुराग्यो
कलिमोहनीकठिनबरुजाचा॥तद्यपितज्यौनहरिव्रतसाचा
प्रणविलोकिहरिदरशनदीन्ह्यो॥खलमोहनिहिवुकैलाकीन्ह्यो
इमिब्रह्माण्डपुराणबखानैं॥कहतसुनतअघनासनमानैं॥

इतिश्रीश्रावणकृष्णकामिकामहात्म्यसंपूर्ण

सो॰ कहसौनकशिरनाइ।श्रावणासितहरिव्रतकथा॥

अबमोहिदेहुसुनाइ।सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० श्रावणशुक्लपुत्रदानामा॥लहैंपुत्रयहिकरिअभिरामा
याहिपरयेकइतिहासभनीता॥माहिष्मपुरहनृपमहिजीता-
पुत्रहीनकछुरुचैननेका॥द्विजनिदृश्किवनगादिनएका
तहांमिलेलोमसकालीना॥पूछेतेबोलाहैदीना॥ ॥
तनुलहिकुपथनयगहमधारे॥कोहिअघभयोनपुत्रहमारे
कहमुनिपूर्वबनिकतुमरहेऊ॥धर्मवानयकदिनजलचहेऊ
तृषितसवत्सपेतरहेगाई॥पीननहितुममारिभगाई॥ ॥
तेहिअघअंगजमिल्योनधीजै॥अबपुत्रदाइकादशिकीजै
होइश्रवणासुनतगृहआयो॥कीन्ह्योव्रतप्रतापसुतपायो॥
जोयहकथासुनैयागावै॥गंगस्नानकिहेफलपावै॥ ॥

इतिश्रीश्रावणशुक्लपुत्रदामहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकसिरुनाइ।भाद्रअसितहरिव्रतकथा॥
अबमोहिदेहुसुनाइ।मुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० अजितानामअस्यअदछमा॥हृषीकेशपूजेयुतप्रेमा॥
यहिपरसुनुएककथापुरानी॥न्टपहरिचंद्ररहेबड़दानी॥
विधिबसराजभ्रष्टभेताकी॥सुततियदेहगईबिकिजाकी
दुर्व्रनजनमृतचैलप्रहारी॥बोलेलखिगौतमदुखभारी॥
अजिताव्रतकरोहरिचंदा॥मिटैंसकलदुखहोइअनन्दा
सुनिमहिपालतेहंव्रतकीन्हा॥सुततियराज्यबहुरिहरिदीन्हा
जोयहकथासुनैवागावै॥अश्वगोदानदिहेफलपावै॥ ॥

इतिश्रीभाद्रकृष्णअजितामहात्म्यसंपूर्ण॥

सो० कहसौनकसिरुनाइ।भाद्रवसितहरिव्रतकथा॥
अबमोहिदेहुसुनाइ।मुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ० यहिहरिवासरपद्मानामा।सबदुखहरणिकरणिसुखधामा।

याँहपरएककहौंइतिहासा॥मान्धातानृपअवधनिवासा
धर्मवानगोजीतअमानी॥प्रजाअनंतबसैतहँजानी॥
तीनिवर्षजलमेघनदीन्हा॥भयेलोगसबसुखतेहीना॥
नृपदुखितहैकस्यसिधावा॥मिलिअंगिरहिसुकष्टसुनावा
कहमुनियकशूद्रलीनतपकरही॥तेहिअघमहिजलछीटनपरई
करुहतताहिआशुजलबर्से॥हिंसाकरबनबरुजगभर्से
तेहितेदेहुधर्मउपदेशा॥नभसितहरिव्रतकरौनरेसा॥ ॥
भलेनाथकहिकीन्होआई॥प्रजजनहितभैवृष्टिअघाई
सहसंचितसुखलहौनरेसा॥कहतसुनततेहिमिटतकलेशा

इतिश्रीभाद्रपदशुक्लपक्षामाहात्म्यसंपूर्ण॥

सो॰ कहसौनकशिरनाइ॥आश्विनिकृष्णहरिव्रतकथा॥
अबमोहिदेहुसुनाइ॥सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ नामइन्दिरायहिसुखदैनी॥नर्कनिवारणिस्वर्गनिसैनी॥
तापरएककहौंइतिहासा॥इन्द्रजीतनृपमहिपुरवासा॥ ॥
सविततस्यअधोमुखरहेऊ॥नारदआयभूपतेकहेऊ॥
कहनृपकिमिहोवैनिस्तारा॥बरतइन्दिराहोभुवारा॥ ॥
देहुताहिफलकरिनृपदयऊ॥त्यागिअधोमुखहरिपुरगयऊ
जोयहकथासुनैवागावै॥नैमिषक्षेत्रअटेफलपावै॥ ॥

इतिश्रीआश्विनकृष्णइन्दिरामहात्म्यसंपूर्ण॥

सो॰ कहसौनकशिरनाइ॥अश्विनिसितहरिव्रतकथा॥
अबमोहिंदेहुसुनाइ॥सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ पापांकुशानामयहिजानी॥अशुभकर्मनाशनिसुखदानी
सुनिइतिहासकथाजिमिकहेऊ॥चेतननामविप्रएकरहेऊ
विद्यावितगर्वितनहिंसूझै॥आपसमाननआनहिंबूझै॥

दो॰ विद्याबादअमादधनअतिसपरदुखहेत॥

खल सुसाधु विपरीत कर ज्ञान दान सुखदेत॥
विद्याविद्या हरत हित पढ़ लहात खलठूठ॥
चह्यौनिकासन मीनकौ भूमि आयौग्रह ऊठ॥
सो० एकदिन सोवत माहिं। कह्यौ मनुज एक नगरमें॥
भूप रह्यौहै नाहिं। चलु तहँ मिलि हैं राज तोहिं॥
चल्यौ हरि विवस मोह। मगन दल विलाग्यौ हलन॥
मध्य मगर सह कोध। चावत जाग्यौ सहित दुख॥
चौ० करि विचार कुंभज पहँ गयऊ॥ तिन उपदेश यथा विनसयऊ
पढ़े सुने का फल सुत येही॥ करि विवेक हरि पद चित देही॥ ॥
दो० दशसन्दन नन्दन चरण कमल अमल अनुराग॥
जो न बढ्यौ वादि हि पढ्यौ मढ्यो मोह मद राग॥
चौ० अवनद काल मगर तुम देखा॥ मध्य वयस महँ खाव विशेखा
पाप संकुल करि अघ जारो॥ हरिपद भजि परलोक सुधारो॥
कीन आइ व्रत बुद्धि प्रकासी॥ सुमिरण करि भा हरिपुर बासी
जो यह कथा सुने या गावै॥ व्रत फल चतुर अस सोइ पावै॥
इतिश्री आश्विन शुक्ल पापांकुशा महात्म्य संपूर्ण॥
सो० कह सौनक शिरनाइ। कातिक कृष्णा हरिव्रत कथा॥
अब मोहिं देहु सुनाइ। सुनि सुमंत बोले हरषि॥
चौ० रमनी नाम रहे जो कोई॥ सो नरइन्द्र समीपी होई॥ ॥
यहि पर एक सुने अख्याने॥ नृप मुचुकुन्द भले व्रत ठाने॥ ॥
सुता तस्य शशिभागा नामा॥ शोभन पति आवा पितु धामा॥
क्षुधित असन निज नारि से मांगा॥ सुनन कह्यौ पति तं शशिभागा
आजु अहे हरि वासर नाथा॥ पशु पक्षी कोइ लहे न पाथा॥ ॥
होत हंस गति कौन अकाजू॥ बड़े भाग मृत्यु पाई आजू॥ ॥
भावी वस त्यागे तेहि प्राना॥ हरि पुर गा चढ़ि शुभग विमाना॥

बहुतककहाकहियेविस्तारी॥ व्रतप्रभावसबपुरीउधारी॥ ॥
जोयहकथासुनैवागावै॥ अन्नदानदीन्हेंफलपावै॥ ॥

इतिश्रीकार्तिककृष्णरमाणीमहात्म्यसंपूर्ण॥

सो॰ कहशौनकशिरनाइ। कार्तिकसितहरिव्रतकथा॥
अबमोहिंदेहुसुनाइ। सुनिसुमंत्रबोलेहरषि॥

चौ॰ प्रबोधनीनामयहनीकी॥ दायकसकलकामनाजीकी॥
यहिव्रतसरिसअपरव्रतनाहीं॥ अघसमाजिमिबिलोकिरविजाहीं॥
जनकनगरएककृपारहेऊ॥ हरिनिशिजागिमित्रमगचहेऊ॥
तेहिप्रसादमनभईगिलानी॥ तजिसिदेहभजिसारंगपानी॥
तिलदत्वाखिलभयसुखाला॥ नृत्यगानव्रतकैरखाला॥
सोहनसनेहजेपेहरिनामा॥ ब्रह्मचर्यअस्थितहरिकामा॥
व्रतप्रसादसोइगोपकुमारी॥ भईअधिकगिरधरेंपियारी॥
वृन्दावनविहारजगजाना॥ इथंबदतिस्कन्धपुराना॥ ॥
कार्तिकमेंसुनिसुमनचढ़ावै॥ हरिहितासुफलबरणिनआवै॥
देवोस्थानीहरिव्रतगीता॥ सुनतकहतफललहतपुनीता॥
येचौबीसौनामबखाने॥ एकादशीकेजोममजाने॥ ॥ ॥
विधिवतचरिहरिसुमिरणकरई॥ गोपदइवभवसागरतरई॥

गीतिकाछं॰ भवतरैगोपदसरिसजोसुचिनेमकरिव्रतदान-
ई। पावैवरतघटअंसफलजेकथासुनैबखानई॥ कलिकाल
पापपयोधिजपतपयोगमखआश्रितजे। रघुनाथदासप्रवीन
तेसतसंगकरिरामेभजे॥

दो॰ रामभजनबिनकर्मजोसोसबतुच्छलखान॥
यथासुन्नदशगुन्नबिनअंकगनेनहिंआन॥
एकादशीवरदानिसोहिमातुजाँचिसबकोइ॥
लह्योकामफलदेहुमोहिंरामचरणरतिहोइ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथदास
रामसनेहीकृतचौबीसोएकादशीमाहात्म्यवर्णनोनामद्वात्रिंशोऽध्यायः३२

दो० सुमिरिरामसियसतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कातिकमहातमकीकथाकहौंइतिहासबखानी॥

चौ० पुनिसौनकबोलेमृदुबानी।केहिबिधिभईतुलसिकाज्ञानी
विष्णुशीशधारीकेहिहेता॥यहौकहौप्रभुकृपानिकेता॥१॥
कह्योसूतसुनियेऋषिराई॥विष्णुपुराणकहतइमिगाई॥
तुलसीनामरहेयकनारी॥तेहिहरिहितकीन्हतपभारी॥२॥
ह्वैप्रसन्नआयेभगवाना॥बोलेसुमुखिमांगुवरदाना॥
देखिरूपबोलीकरजोरे॥पतिहोसदारहौउपमोरे॥३॥
सुनिलक्ष्मीतापरकरिकोहू।दीन्हौशापबिटपजड़होहू॥
कमलहिशापदीनतेहिरहा॥बसौजाइतुमनीचनगेहा॥
सुनतबिष्णुतुलसीसेकहेऊ॥बिटपहोउतुममप्रियरहेऊ
मैंधरिशालग्रामशरीरा॥रहिहौंसुमुखिसदातवतीरा॥
प्रथमगराडकीकामिनिएकचुर॥तपुकरिमांगिसिबसौसदाउर
मैंकहसरितहोउयहिभोरे॥शिलारूपबसिहौंउरतोरे॥४॥
एककल्पइत्थश्रुतिगाई॥दूसरिबिधिअबसुनोसुनाई॥

गीतिकाछं० एकबारशिवसगजातसुमिरतनामतहंबास
वरह्यो।लखिकहेउयोगीहोहुठाढ़ेचितैभवमारगगह्यो॥
तबइन्द्रदर्पितधाइआइरिसाइअसबोलतभयौ।मानेक-
हानहिंमोरतैंसठहेरिहमतनचलिदयो॥सुनिबक्रबचन-
महेशक्रोधितनयनतीसरतेतहां।प्रकटीअग्निकीज्वाल
तीक्ष्णाजरनहरिलागेयोमहा॥होयबिकलबासवगिर्यो
चरणनत्राहित्राहिपुकारेहू।लखिदीनअसकृपालपाव
कतोयनिधिमहंडारेहू।तेहितेहुतेतहंभयोबालक

सिंधुसुतकरिपालेऊ॥विधिआइकीन्ह्योकर्मनामहुधरिजलं-
धरबालेऊ।कालकालकछुभालरुखावृन्दानामनारीपायऊ॥
सोकालनेमिकिसुतामनबचकर्मपतिपदध्यायऊ॥ ॥

दो॰ भयोजलंधरप्रबलअतिजीतिजगतबशकीन्ह॥
निशिचरपतिहूनिशिचरनिवासजहांतहंदीन्ह॥

चौ॰ एकदिनसभाबैठरहेसोई॥सकलसमाजआपनीओई॥
राहुकबंधसेरिवआसकहई॥शीशशेरकेहिकाटाअहई॥ ॥

रोलाछं॰ सुनोनाथएकसमयदेवदानौसबआये।मथ्योसिं-
धुगिरिडारिरत्नचौदातहंपाये॥कामधेनुगजअश्वकल्पतरु
विषशशिजानो।धनुकधन्वन्तारिकंबुरम्भापहिचानो॥कौ-
स्तुभमणिवारुणीसुधायेचौदाकहेऊ।दियेबांटहरिसुरान्म-
समधुअमलभयऊ।तेहिहितश्रीभगवानमोहनीरूपबनायो।
निकटआइसुरअसुरउभैपांतिनबैठायो॥बाटनलागेआपुसु-
रनदैत्यनकहूदीन्हों।दैत्यनिपायोपियुषतहांउठिमाहूपीन्हों॥
रविशशिदिहिनिबताइविष्णुकाट्योशिरभारा।देवासुरसंग्राम
भयोसागरतटघोरा॥ऐरावतसुरधेनुकल्पतरुरंभाचारी॥लै-
गेवासवस्वर्गसंपदासकलतुम्हारी॥सुनिनिश्चरपतिदूतसुत-
दिगतुरतपठायो।जाइकहीचरदेहुवस्तुजोदधिकीलायो॥
दूतबचनसुनिशक्रकह्योजानिजपतितीरा।लेइआइअबब-
स्तुहोइजोअतिबलबीरा॥करिमहिमण्डलराजजीतिनरभा
बरखण्डा।अबआवैचढ़िसमरकरौतेहितनसतखण्डा॥दू-
तजलंधरपासआइसबहालसुनावा।जातुधानसुनिकोपि
कटकलैआतुरधावा॥अमरावतीगेरिइन्द्रहुकीनिलराई।
मैरनमारेअसुरसुरनयुतगयेपराई॥तबहरिसन्मुखजाइविवि-
धिविधिविनयसुनाई।दुखितजानिभगवानइन्द्रतेकीनि-

लड़ाई।बितीत कछु काल समर लखि रीझे मुरारी।कह्यो
जलंधर मांगु होइ रुचि जौन तुम्हारी॥जो मोपै परसन्न नाथ
दीजै वर येहा कमला के संयुक्त वसौ तुम हमरे गेहा॥एवमस्तु
कहि कृष्ण कीन तेहि गृह निवासू॥शोभा तिहुं पुर केरि आइ
तहँ कीन प्रकासू।तब वासव है विकल गये चतुरानन तीरा।०
कह्यो सकल दुख रोइ सुनत विधि दीन्ह्यो धीरा॥नारद ते तब
कह्यो जलंधर बली अपारा॥मरत न तासु शिव हाथ अपर ते-
मरै न मारा॥जो शंकर लै बधहु करै तौ सुरसुख लहई।सुनि ना
रद पितु बचन दनुज महं आये तहंई॥लखि मुनि दीन्हि अ-
शीश नाइ शिर नृप बैठारा।बोली बीरा धरा आजु कित ते पगुधारा
चौ०सुनि नारद बोले निज काजू।हम कैलास गये रहे आजू॥
तहां करत त्रिपुरारि बिहारा॥शीश जटा उर नरशिर हारा॥ ॥
नागन अंग भूलरूप बिशेषी॥तहां नारि एक सुन्दर देखी॥
इंदुबदनि मृगनयनि बिराजे॥रति शत कोटि देखि छबि लाजे
जेहि के घर ऐसो त्रिय होई॥तेहि समान जगमें नहिं कोई॥ ॥
सुनि नारद के बचन सुरारी॥लीन राहु का तुरत हंकारी॥ ॥
बोला शरशंकर पहं जाऊ॥कह्यो देहु त्रिय जो भल चहऊ॥
शिघ्र राहु शंकर पहं आवा॥निज पति कर संदेस सुनावा॥
सुनि महेश कियो क्रोध कराला॥कीरति मुख प्रगट्यो तत काला
गदा पाणि दृग अति भय कारी॥डरपि राहु बहु बिनै उचारी॥
सुनि पशुपति तब दीन बचाई॥आवा जहां निशाचर राई॥
सब बिरतान्त तहां कर कहेऊ॥सुनि सागरसुत उर अति दहेऊ
गीतिका०॥ उर दह्यो तुरतै सयन संग अपार लै सठ धायहू॥
बहु होत असगुन गुन न तनहिं सो शम्भु संमुख आयहू॥ख-
रबदन आदि गरीश भूत पिशाच भिरे प्रचारि कै।द्रुम अ-

स्त्र शस्त्र चलाइ एक हि एक डारत मारिकै। कोउ परे कहरत
घाउ बस कोइ शीश बिन जहं तहं फिरैं। कोउ मारु पुकारको
ऊ एक बारा लागत महि गिरैं॥ यहि भाँति कीन्हों युद्ध शिवशा-
थि मास तब बहह स्यो हियो हैं अमित गिरजानाथ हरि को ध्या-
न समरै में कियो॥

चौ॰ नाथ हरो मम संकट भारी॥ तुरतै प्रगटे तहँ मुरारी॥ ॥
बोले हरि तुम सुनो पुरारी॥ पतिव्रता है याकी नारी॥ ॥
तेहि प्रभाव खल जीति न जाई। कबहु कि काहु न कोटि उपाई
ताते यहि आड़ो कछु बेरा॥ मैं व्रत भंग करौ तेहि केरा॥ ॥
अस कहि यती स्वरूप बनायो॥ गुहा निकट वृन्दा के आयो॥
उदित भूमि तरु द्वारे पाई। बैठे आसन रुचिर बनाई॥ ॥
तेहि रजनी रजनिचर नारी। देख्यो स्वप्न भयंकर भारी॥
मनोजलंधर खर आरूढ़ा॥ मुंडित सिर गा दक्षिण मूढ़ा॥
चौंकि परी व्याकुल अति सोचा॥ प्रात भये गृह काज न रोचा
छिन द्वारे छिन भीतर जाई॥ जती बिलोकि बिष्णु पहँ आई
सीस नाइ निज स्वप्न सुनावा॥ कह हरि सुर हित अवसर पावा
सुनु वृन्दा पुरारा अस कहई॥ अस स्वप्न दुखदायक अहई॥
तव पति समर शंभु कर आजू॥ मरी अनन्द करी सुरराजू॥
तेहि छिण मायाकर धर शीशा॥ गिरा आइ आगे तेहि दीशा।
विविध विलाप किहिसि पति चीन्हा॥ जरिहौं संग चिता रचि लीन्हा
कह हरि बचन मानु यक मोरा॥ तो अबही पति जीवे तोरा॥
रुंड मुंड धरि बसन ओढ़ाई॥ सुमिरो निज सत धरि अढाई॥
यहु उपाय करि सुनि तेहि किहऊ॥ बान अर्ध धरि झापट दिहेऊ
उठ्यो जलंधर माया केरा॥ वृन्दहि तब सुख भयो घनेरा॥
मायाधीश चरण शिरु नाई॥ गई तुरत निज निलै लवाई॥

कादि असन कछु नाहिं खाई ॥ यों दिं दोउ पर यंक बिछाई ॥ ॥
कीन विहार छूटब्रत तासू ॥ भयो तेज हत दनुज उदासू ॥ ॥
तब शिव समर जलंधर मार्यो ॥ सिर भुज जहँ वृन्दा तहँ डार्यो
माया कापति गयो बिलाई ॥ मरम जानि तब हरि दिग आई ॥
धरी छं० विष्णुनीत देखि धरि । क्रोध कीसि । श्राप दीसि ॥
बरवे छं० छल्यो मोहि तुम धरिके जती स्वरूप । होउ मनुज अ-
बजाय चराचर भूप ॥ तहां मोर पति हि होई प्रबल सुरारि । यही
रूप धरि हरि हे नारि तुम्हारि ॥
दो० अस कहि चिता सवाँरि बर बैठि जरी पति संग ॥
तासु भस्म ले रमापति लपटाई निज अंग ॥
सो० इहां शक्र सुख पाइ । सुरगण मुनि दिगपाल मिलि ॥
उमानाथ पहँ आइ । लागे सब अस्तुति करन ॥
तोटक छं० प्रणमामि भवं भव भय समनं । करुणामृत सिं-
धु कलिं दमनं ॥ निरगुण्य गुणं अम कं करणं । जयश्री शिव-
संकट के हरणं ॥ अबिकल्प कलानिधि वेद बिभु । सरब ज्ञ
सदा परमीश प्रभुं ॥ चिद काशक नित्य निरावरणं । जयश्री-
शिव संकट के हरणं ॥ निरव ध निराश्रम सावधुवं । अचला
खंड पार अजा अदुखं ॥ सत शील गुणाकर कंजरणं । जय-
श्री शिव संकट के हरणं ॥ अतुलित बल वीर्य विरक्त वरं । गु-
ण ज्ञान बिरागो नीतपरं ॥ मद मोह निशा दरणं तरणं । जयश्री
शिव संकट के हरणं ॥ हरि कुंद कपूर समा सुतनं । सब भस्म-
बिभूषित भूरिगणं ॥ छबि कंद्रप कोटि देवा करणं । जयश्री-
शिव संकट के हरणं ॥ मृदु मौलि जटा मधि गंग बसे । बरबाल
छपाकर भाल लसे ॥ त्रय अंबक मूल करं धरणं । जयश्री शि
व संकट के हरणं ॥ उर मुंड अकाम्बर व्याल त्रमं । श्रुति कुंडल

लोलकपोलध्रुवं।।सुकश्चानशरालन मिंदुध्रुवं।जयश्रीशिव
संकटकेहरणं।।डमरू करकंठभुजंगछजै।चरणाम्बुज चिंत-
तदुःखभजै।।भवआरणतारणकेकरणं।जयश्रीशिवसंक-
टकेहरणं।।सुरसंतकबंधजगोपलनं।भखभावबनामहति
दलनं।।भुजदंडप्रचण्डछयंकरणं।जयश्रीशिवसंकटकेह-
रणं।।वृषभध्वरबाहनभूतमिसं।गिरिनन्दिनिराजतबामदि-
सं।।प्रणपालकघालकदुष्टजनं।जयश्रीशिवसंकटकेहरणं।।
नहिंआवतजीवतुमेंजबलौं।दुखपावतजावतहैंतबलौं।।
जगश्रौढरदानिउमारमणं।जय श्री शिव संकटके हरणं।।
रघुनाथ कहैमुनिक्रोधगयो।तुरतैगवरीश प्रसन्न भ-
यो।। मिट रुद्र एकादशजोपिपढ़ै।।दुखदैन्य नभैसु-
खभूरि बढ़ै।।

चौ० यहिविधिविनैकीन्हअसुरारी।।तबतिननेबोलेत्रिपुरारी।।
सुनहुसकलसुरवचनहमारा।।बिष्णुकृपामेंनिशिचरमारा।।
चलौचलीअबतिनकेपासा।।आयेचलिजहँरमानिवासा
अमरणयतीरूपअसदेखी।।पृथकहकरिबिनयबिशेषी।।
रहेअधोमुखतबभगवाना।।मनहिंमाहिंदेवनिसनमाना।।
हरिगतिदेखिसुरनदुखपायो।।तबमहेशविधियुक्तिउपायो
बोलिउमापद्माब्रह्मानी।।कह्योप्रसन्नकरहु हरिजानी।। ।।

सो० प्रभुअनुसासनमानि।गईंतिहूँभगवानपहँ।।
लैआरतिनिजुपानि।कीन्होंहरिगुणगानकछु।।

चौ० पुनिभारतीभस्मजललयऊ।।धरयोमहीतरुधात्रीभयऊ
देखिभवानीवैसैठाना।।यतीबेल,उपजीजगजाना।। ।।
कीनइंदिरासोइउपावा।अजगन्धातुलसीतरुपावा।। ।।
सीतलछाँहसुगंधलहीजब।।हैप्रसन्नहरिबोलेतबहीं।।

वृन्दातनु तुलसी भै आई ॥ हर्षि विष्णु निज शीश चढ़ाई ॥
अधम निशाचरि पतिब्रत कीन्हा ॥ हरि छलि तेहि उत्तम पद दीन्हा
देखि देव छबि हने निशाना ॥ तुलसिहि अतुल पूज्य अनुमाना
विष्णुप्रिया कलि कलुष निकंदनि ॥ जय जय जय तुलसी जगबंदनि
तब प्रभु सब देवन ते कहेऊ ॥ परम प्रीति वृन्दा बस भयऊ ॥ ॥
तेहि तनु पाइ तुलसि कर रूपा ॥ गयो बिरह सुख भयो अनूपा ॥
लक्ष्मी बास हृदय मम अहई ॥ तुलसी सदा शीश पर रहई ॥ ॥
जो मन क्रम यहि सेवन करिहैं ॥ सो कुल तात धुर पावन धरिहैं ॥ ॥
दल करि प्रीति जो मम शिर राखी ॥ तुलसी मिश्रित भोजन चाखी
दीपदान देई जो कोई ॥ कोटि यज्ञ फल तिन का होई ॥ ॥
कंठ लगन जो तुलसी धारी ॥ सो सब काल शुद्ध बिन बारी ॥
तस्य दरश भे जानहु मेरो ॥ करौ सदा हौं जन उर डेरो ॥ ॥
तुलसी धारि करी शुभ कर्मा ॥ बढ़ी सो अधिक कोटि गुण धर्मा
नर वा नारि जो मम ब्रत धारी ॥ सो तुलसी स्रक करि अधिकारी
तुलसी दास नाम मम ध्यावै ॥ तासु पुराय कहि कापै जावै ॥ ॥

दो० तुलसी धारक मात्र जो होइ भक्ति बिहीन ॥
सोऊ पूज्य है बिप्र कहं और कहा नर दीन ॥

कुण्डलिया तिलक दाम धरि देखि कै करी जो निंदा तासु ।
सो मलेक्ष जाता अमक त्यागी संगति तासु ॥ त्यागी संगति ता-
सु दोष नत लागी भारी । ज्यों हर हट के संग जाइ कपिला गो मा-
री ॥ मारी गो जिमि जाल तिमि यम गरा देहैं दुख दिलक । प्रमु-
दित है जो सुने सोउ जान्यो दुश्मन को तिलक ॥

दो० तुलसी स्रक धारे बिना करी जे भाजन अन्न ॥
परम अपाव नि पाय सो लह्यो न जनु नर तन्न ॥
जेहि आदर मैं देउ जग तेहि निंदे अस कौन ॥

भूपबचनपरिहरिप्रजाबसे किसोसुखभौन॥
श्रीमुखबानीशीशधरिगे सब निज२थान॥
कार्तिक महातमकी कथा यह मैं कीनि बखान॥
इतिश्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास
राम सनेही कृत श्री तुलसी माहात्म्य बर्णनो नाम त्रयः त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं भारत की कथा कछुक वृतान्त बखानि॥

चौ० मुनि सौनक बोले मृदु बानी॥ राय युधिष्ठिर मख जब ठानी
तासें अचरज भयो जु कौनू॥ मोकहँ नाथ सुनावो तौनू॥ ॥

कामहंस छं० हंसि कह्यो सूत। जब धर्मपूत॥ कृत करालाग॥ दय बलि बिभाग॥

चौ० तब सब मिलि बाले ऋसिबानी॥ पूरण मख भय केहि बिधि जानी
घंट एक तब कृष्ण बंधायो॥ भोजन कहँ द्विज बिपुल बोलायो
जेंइ बिप्र खरिका जब लयऊ॥ घंट बिषे कछु शब्द न भयऊ॥
बोले कृष्ण बिरात हितकारी॥ यज्ञ हीन भय भूप तुह्मारी॥ ॥
ताही समय नकुल इक आवा॥ लौटयो तहँ जहँ दिजन अंचावा-
मयो न सर्व बपु खहरि तासू॥ तब तौ मन करि लीन उदासू॥
बहुरि पुकारि सभा महँ कहई॥ मिथ्या यज्ञ भूप तब अहई॥
बिप्र एक सतुवा मख कीन्हीं॥ तेहि सम अपर यज्ञ नहिं चीन्हीं

दो० सुनत सभा के लोग सब नकुलै निकट बोलाय॥
पूछ्यो द्विज मख किमि करी सो अब कहौ बुझाय॥

चौ० तन तब अचरज रूप लखाई॥ सुनि न्यौरा बोला हरषाई॥
सतुवा यज्ञ भई जेहि रीती॥ कहौं सुनो नृप सुनि करि प्रीती॥
बिप्र एक कुरुक्षेत्र महँ रहई॥ नाम शिलोचन तेहि सब कहई॥
पूत पतोहू अपना नारी॥ चरिहु न का हरि भक्ति पियारी॥

शीलाकी वृत्ति करि तन पोषै। प्रथमै साधु विप्र कहँ तोषै॥
यहि विधि करत गये बहु काला। एक बार तहँ पर्यो दुकाला॥
पशु पक्षी सब भये दुखारी। लंघन करैं निकर नर नारी॥ ॥
कठिन विप्रहू को अति जावै। बिना नजाइ अन्न नहिं पावै॥
चुनि चुनि धरत मास युग गयऊ। तीनि पाव तब यव कै भयऊ॥
सोइ भुजाइ सतुवा बनवायो। तामें चारिउ भाग लगायो॥ ॥
धर्म वैश्यो रूप बनाई। आये तुरत जहाँ द्विज राई॥ ॥ ॥
देखि विशिलोचनि पद शिर नायो। आदर करि आसन बैठायो॥
चरण धोय सतुवा धरे आगे। हित ते धर्म खान तब लागे॥ ॥
आपन भाग जेइँ जब लीन्हा। क्षुधा न मिटी द्विजहुँ निज दीन्हा॥
सोउ पाय पर अपित न भयऊ। तब द्विज शीश नाइ निज लयऊ॥
चतुर नारि पति की गति जानी। बोली बचन धर्म नय सानी॥
हे पति भाग मोर लै दीजे। क्षुधित न जाइ बात सो कीजे॥
दो० सांची प्रीति पिछानि कै सोऊ भाग द्विज दीन॥
भयो न पूरण सन्त लखि बोला पुत्र प्रवीन॥
रोला छं० अहो पिता अब भाग मोर लै संतै देहू॥ करहु पर-
णायह पूरजाइ यह तन धन गेहू॥ सुत यद्यपि तुम बड़े तदपि मो-
हिं पालन योगू। भयो बृद्ध मैं तुम्हैं अबै करना सुख भोगू॥ ता-
ते पोष हु देह जियो बहु अर्थ लगे जेहि। धर्म बिना जो जियै पि-
ता जग मृतक आनि तेहि॥ सधै धर्म तन गये ताहि जीवत प-
हिचानो। अस कहि दीन्हों भाग भक्ष खायेन अघानो॥ पुत्रव-
धू जिय जानि दीन निज भाग मगन होय। भयो तृप्त तब संत व-
चन बोल्यो ऐसे सोय। हे द्विज मैं हौं धर्म लेन आयो तव अ-
न्ता। देखि गयो हिय हारि नहीं कोउ तुम सम संता॥ अब तजि-
कै मृत लोक बसो चलि हरिपुर माई। घटी न तुम्हरी पुराय-

औरदिनदिनअधिकाई॥ताहीसमयबिवानदेवगणातें-
हर्षैआये।जयजयकहिसुरसुमनसुमनद्विजपरबरषाये।
लीन्हौंबहुनचढ़ायजायहरिपुरमहंराख्यो॥देख्योधर्मप्र-
तापकिहेऐसाफलचाख्यो।जितअचवारहैअतिथतहां
मेंनिकस्योंधाई।भयोअर्धतनुस्वर्णसर्वजलरहानराई॥
गीतिकाछं॰हमरीडमिरिमहंऔरदूसरियज्ञवैसीनाभई।
जहंहौंलह्योफलअक्षतआधीदेहहरिकीहैगई॥तबतेंफि-
रैंबहुतीर्थयज्ञनसबैकाहूनाकिया।इहनोयहीउरधारिलो-
ट्योमेटिनहिंखोटपनदियो॥

दो॰ सुनिन्यौराकेबचननृपशोचकीन्हमनमाहिं॥
पूछिनिप्रभुनेयज्ञयहपूराभयकतनाहिं॥

चौ॰सुनतकृष्णबोलेहरषाई॥यहौभेदमैंकहौंबुझाई॥ ॥
यहिसमाजवैसोनहिंआयो॥ऋषिसमूहमिलिजहंतहंखायो
जोतुमकह्योभक्तयेनाहीं॥हैंधरिजातिगर्भइनमाहीं॥ ॥
कुलविद्यामहत्वछबिज्ञानी॥पांचकांटयेभक्तकेजानी॥
इनतेभक्तिननेरेआवत॥अतिसुकुमारिहेरिबिडरधावत॥
तेहितेनिरअभिमानजोहोई॥पूरणचहौजेवावोसोई॥॥
ऐसेभक्तकहांहमपाई॥तबपुरहैंतौदेहुबताई॥ ॥ ॥
बालमीकसुपचाबड़साधू॥लावहुजाइसहितअहलादू
सुनिप्रभुबचनयुधिष्ठिरधाये॥करिसनमानभवनलैआये
परसेअसनदुर्पदीनाना॥सोसबभक्तएकमहसाना ॥ ॥
पंचालीलखिकृतअनुमाने॥सूपचरसस्वादेकाजाने॥
तेहिंजेवतकरघंटाबाजा॥एकैबारखुसीभाराजा॥ ॥ ॥
वासुदेवमनबिस्मैआवा॥बारकबारशब्दसुनिपावा॥ ॥
ग्रासग्रासपरचाहियेबाजा॥असबिचारिबोलेयदुराजा॥

सभालोगसबसत्यहिभाख्यौ॥यहिंअबसरहुरावजनिराख्यौ
क्षोभकीनकेहिहृदयबिशेषी॥बड़िमान्यताभक्तकेदेखी।
निजउरबातदुर्यदीकहेऊ॥सुनिहरिउचहुदोषबडुगेहेऊ
चलदलद्रोनपुरीषतेहोई॥सुरनरमुनिपूजतसबकोई।
तुलसीस्वच्छचहैतहँजामे॥तिमिममजनपावनसबठाँमे
बरतबाभहरिबासरअहई॥नदीबाँभसुरसरिश्रुतिकहई
देवबाँभजिमिरमानिवासा॥बरराबाँभतिमिमेरदासा॥
श्वसुतकुलनिजजन्मनिरिक्षा॥मात्रयोनिजनुलीनपरिक्षा
तातिऐसीकमूनकीजै॥चलौभक्ततेपूछैलीजै॥ ॥ ॥
सबमिलिआइकहीअसिबानी॥डार्यौबेयोंएकहिमहसानी
बोलेभक्तभोगभगवाना॥लागिगयौसबभयोसमाना
पावतपरतस्वादअनुमानी॥यहितेमैंसबडारसानी॥ ॥
सुनिजनबचनहर्षउरछयऊ॥भक्तजेइजबअचवतभयऊ
नकुलजायपरसादसोपावा॥सकलशरीरस्वर्णाकरभावा
सकलसमाजदेखिअसकहई॥अमितप्रभावभक्तिकरअहई
द्वादशकोटिरहेद्विजभूरी॥सुपचभक्ततेभैमखपूरी॥ ॥
बहुमुनिधैपंपाशरकक्षा॥सेबरीपदरजतेभास्वक्षा॥ ॥
कुम्भजव्यासआदिमुनिनाना॥हरिभजिकोनहिंभयौमहाना
तबसुजातरिपुपूछैलीन्हा॥केहिगुणाइनतुमकहबसकीन्हा
सुनहुधर्मनन्दनकरिनेहा॥मोहिंजनसमनहिंप्रियनिजदेहा
तबपुरणमभक्तयहछेमा॥सुनौतासुबरणौजपनेमा॥॥
गीतिकाछंद जपनेमसंयमकरहिध्यानअमानसदारहा-
वही।समशीलसतसंतोषदयाबिचारिक्षमागहावही॥छ-
लहीनइन्द्रीजीतिउरबैरागमदमोहैतजै।गतकामक्रोधरु
लोभभयमोहिंछाँडिआनैनहिंभजै॥

दो० ममगुणगावतपुलकितनमज्जनसोंअतिप्रीति॥
नेहितेमैंयहिबसरहतअज्ञासुगकीरीति॥
यहिप्रकाररघुनाथहरिभाख्योभक्तिप्रभाव॥
सुनतयुधिष्ठिरकेभयोतबभक्तनमेंभाव॥
सो० पुनिबोलेकरजोरि।बरणाश्रमकेधर्मप्रभु॥
सुननकीरुचिमोरि।भक्तिसहितसोबरणिये॥
वीरछं० सुनिप्रश्नबदकृष्णा॥द्विजधर्मकरजर्म॥
दो० संध्यामंजनहोमजपश्रुतिपठनाइनदेव॥
क्षमातोषद्विजधर्मयहअभ्यागतकीसेव॥
क्षमातेजबलअचलकलिअतिउदारद्विजदास॥
येगुणक्षत्रीकेरकुरउमेरोविश्वास॥ ॥ ॥
आस्तिकबुद्धिविनीतव्रतदानेउद्यमआरम्भ॥
येलक्षणाबरवैश्यकेविप्रभक्तनिरदम्भ॥
तिहुंबरणकीसेवकरिजोपावेसोलेइ॥
सतसन्तोषीकपटबिनशूद्रधर्महैएइ॥
मिथ्याबादअशौचअरिनास्तिककुटिलकठोर॥
एलक्षणानरनीचकेकामीक्रोधीचोर॥ ॥
सत्यक्षमाधरस्वार्थरतगतमदआरकुकर्म॥
तृष्णाबिनचहुंबरणकेएसाधारणधर्म॥
अपनेअपनेधर्मकरिअन्तअमरपुरजाइ॥
बरणाश्रमभोगेनर्कअबसुनुआश्रमराइ॥
ब्राम्हणक्षत्रीवैश्यइनतिनहुंनकीविधिएक॥
गर्भाधानादिकसकलसंस्कारकरनेक॥
कुण्डलिया जनोअयगुरुपासरहिपढैवेदपदसेइ।द-
ण्डकमंडलमृगचरममालमेंरवलालेइ॥मालमेंरवला

लेइकेशनखबिन्दुनत्यागै।संध्योपासनसौचकालतीनौ-
अनुरागै।।रागैनहिंजगमाहिंलघुअसनकरैदृढ़आसनौ।
ब्रह्मचर्यकेधर्मयेममसममोतैगुरुजनौ।।ब्रह्मलोकजोचहै
सोरहैयाहीपथमाहिं।कामीकामिनिकेरसंगभूलिहुजानै-
नाहिं।।भूलिहुठानैनाहिंचहैजोहोनसकामा।तौश्रुतिपढ़ि
घरआइकरैयुवतीअरुधामा।।धामआमजपदानमखकर
तरहैश्रुतिधर्म।यज्ञकरावनदत्तग्रहणवेदपढ़ावैब्रह्मधरियेसी
नौआइभूमिजिमिपावककोतीर।ब्रह्मतेजनहिंरहतहैतेहि-
त्यागतमतधीर।।तेहित्यागतमतिधीरसिलौकरितननिरबाहै।
ममसुमिरणममध्यानअन्तमेंवापदलाहै।।लाहैक्षत्रीयहक-
रैपालनसबकोवरि।रणसन्मुखमरिजायनहिंघरधरउपरि।।
गृहवासीकोधर्मसिनकरैपांचमखमेध।प्रथमपाठकरिऋषि-
जजनबहुरिहोमकरिदेव।।बहुरिहोमकरिदेवभूतबलिआइ
तेपीतर।अन्ननीरतेअतिथकहाशत्रूकहमीतर।।मित्रमानि
सबकाहुसमुझिकाहुइनदुखावै।मिथ्याजानैजगतकुटंब
पंथीठहरावै।।मिलेनमुदगतशोचरहैपाइनसमतासी।व
करैसदाममभजनतरैसोबसिगृहवासी।।जबजाकोविपदा
परैवैश्यविरतिसोलेइ।जबमिटजावैआपदातबआपनिग-
हिलेइ।।तबआपनिगहिलेइएकसुतभेवनजावै।चहैरहैघ-
रमाहिंमुक्तिअसग्रहीपावै।।पावैसोइउत्तमद्वारहोयजोजग-
आशक्त।मैंमैकरिकुलमेंजेभजैनहिंमेरोभक्त।।भक्तकेगु-
णनाहिंयाहिउरलखललक्षणासब।अन्तसमयपछितातजा-
तकिरतांततीरजबयहिविधिबयपचासरहितबजावैबन-
माहिं।ऋतुऋतुकोतपकरैसहैकचनखनराखैनाहिं।।कच-
नखनराखैनाहिंनिरसहैभोगविसारै।कन्दमूलफलखाइपौ

स प्रणामयधारै ॥ धारै वल्कल बसन रसन हित आवै रि-
धि सिधि । छुवै न यान प्रस्त के लक्षण है यहि विधि ॥ बन-
बसि होइ पवित्र मन तब लेवै संन्यास । दण्ड कमण्डल धारि
कै करै एकांत निवास ॥ करै एकांत निवास क्षुधा हित पुर-
में आवै । द्विज घर घुटकी सान मांगि सरि भरत तट जावै ॥ जा
हु करै तंह पाक प्रथम कछु भाग निकारै । कीटै वै लखि पशु इ
किसो सो हि जल माहि डारै ॥ डारै पग मग देखि करै मम सुमिरन
सुचितन । यह लक्षण संन्यास नहीं सो भेष बहुत बन ॥

दो० परम धरम संन्यास करि लहु परम पद हंस ॥
परस्था विधि के विप्र लखि लेइ लीन कर अंस ॥

कुण्डलिया तत्त्वज्ञान जब होत तब छूटि जात सब मान ।
जदपि हृदय अति बुद्धि तदपि बरतै बाल समान ॥ बरतै बाल
समान ध्यान मेरो मन माहीं । क्षुधा तृषा तप सीत तिन्हैं कछु-
ब्यापै नाहीं ॥ नहि मद माया मोह भय रक्षा रहित ममत्व । जीव
नमुक्त समान यह परमहंस कर तत्त्व ॥

दो० परपद दायक धर्म यह परमहंस पद श्रेष्ठ ॥
जो यह लक्षण होइ न तौ भयो जानिये भ्रष्ट ॥
हे नृप जे मम भक्त हैं रहित बासना चित्त ॥
तदपि करैं शुभ कर्म किं जग कल्याण निमित्त ॥
जैसे सबिता के बिषे अंधकार नहिं लेश ॥
तदपि करत प्रकाश जग पर सुख हित उपदेश ॥

चौ० कहहु नृप भक्तन के शुभ कर्मा ॥ बरहु देव सबों परि धर्मा ॥
मुनि गिरिधर बोले लखि प्रीती ॥ सुनहु भूप भक्तन की रीती ॥
मेरी कथा सुनै अरु कहई ॥ सहित सनेह नाम मम गहई ॥ ॥
पूजा में अति निष्ठा धारै ॥ बिबिध भांति अस्तुति बिस्तारै ॥

बंदनकरैप्रदक्षिणादेई॥ साष्टांगचरणामूललेई॥ ॥ ॥
सबभूतनमेंमोकोजानै॥ममजनतेहिमेरोतनमानै॥ ॥ ॥
मेरेहेतकरैसोकरै॥ मोबिनजौननाहिपरिहरै॥ ॥ ॥
मेरेहेतअरथसबत्यागै॥ अरुहुभोगनतेंबैरागै॥ ॥
योगयज्ञजपतपब्रतदाना॥शयनासनभोजनजलपाना
इत्यादिकसबममहितकरहीं॥जातेंअन्तरसोपरिहरहीं॥
सदाआपकोमोहिनिबेदै॥प्रेमशस्त्रनेंग्रंथिहिछेदै॥ ॥
मुक्तिभुक्तिकीकरैनआसा॥तिनकेहृदयकरौंमैंबासा॥ ॥
ऐसीजबममभक्तिलहेऊ॥तबअवशेषनकछुरहिगयऊ॥
मेरीभक्तिहृदयजेहिनाहीं॥तेसबधर्मअधर्मकराहीं॥ ॥
भक्तिसुतन्त्रचारिफलदाता॥सकलजीवसुखप्रदजिमिमाता
बिरतिविवेकज्ञानविज्ञाना॥होततुरततेहिकरतसुजाना॥ ॥
सोइमुनिसाधुसुघरनरसोई॥यस्यभक्तिममकिञ्चितहोई॥
जिनममभक्तिहृदयमहंधारी॥सबसुधर्मकेतेअधिकारी॥

दो॰ बरणाश्रमकरमानधरितबतकश्रुतिकरदास॥
बरणाश्रमतेंत्यक्तजेश्रुतिऊपरतेहिबास॥
जेहिकरिहोतप्रसन्नमैंविनहींश्रमअनिहाल॥
सोभाख्योनिजभक्तिमुनिपुनिबोलेमहिपाल॥
हेप्रभुजोसबधर्ममयहैंतबभक्तअखेद॥
कर्मउपासनज्ञानकलकियेत्रिकांडीबेद॥

चौ॰ एकेकससिद्धान्तनराखा॥सोऊभेदसुनियप्रभुभाखा
जाकोयथादेख्योअधिकारी॥तेहिहिततैसीबातबिचारी॥
जिनजगजालमूढकरिजान्यो॥ब्रह्मलोकतकदुखअनुमान्यो॥
बहुरिहुताकेउद्यमत्याग्यो॥बिधिनिषेधबिनमोहिंअनुराग्यो
तिनकोज्ञानयोगअधिकारा॥अस्थिरहैममकरैबिचारा॥

अरु जिनके ममता दृढ़ नाहीं॥ राजत कछु प्रवृत्ति के माहीं॥
परम प्रगुराग सुनि कै सुख मानै॥ मेरो भजन सत्य करि जानै॥
तिन कहँ भक्ति योग सुखकारी॥ तेरे आशु तौरे संसारी॥ ॥
अरु जे बिषयन के आधीना॥ तिनके उद्यम में लवलीना॥
कथा सुनन को नहिं अवकासा॥ नहिं मम भजन केर अभ्यासा
तिनको कर्म योग सुखदाई॥ गहेन भूलि निषेधै भाई॥ ॥
जो शुभ कर्म तजै अस ग्रही॥ सो सम सुपच न छुइये तेही॥
तन मैं जो रन घर मैं हाला॥ नृपसरि करि किल है कल्याना॥
जे लत धर तिन हुन मा हो हीं॥ ते अति सै उत्तम प्रिय मोहीं॥ ॥
फल इच्छा सो सकल मिटावै॥ अन्त समय मम लोक सिधावै

दो॰ बहु तन जप योग तप धर्म ज्ञान रत होइ॥
होय हृदय जब शुद्ध तब भक्ति लहै मम सोइ॥
करै कथा मम सन्त जब तब नहिं दूजे ठौर॥
गुरु सो मेरो रूप है सर्व देव शिर मौर॥ ॥
दशाक्रम मैं ब्रत बध मैं तीरथ होम सराध॥
सवट स्थान गुरु बिप्र है दिसा गुरु मम साध॥
मुनि गिर धर के बचन बर हरष्यो भूप सुजान॥
एकादश अस कन्ध मत यह मैं कीन बखानि॥

इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगार ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत युधिष्ठिर यज्ञ बर्णाश्रम धर्म हरि भक्ति साधन बर्णनो नाम चतुस्त्रिंशो ऽध्यायः ३४॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
स्वसन समुच्चय आदि बहु सत मत कहौं बखानि॥
सो॰ पुनि सौनक शिर नाइ। बोले द्विज पद नाइ सिर॥
नाथ कहौ समुझाइ। सत संगति महिमा कछुक॥

चौ० सुनतसूलबोलेसुखपाई।। सतसंगतिसमकछुनहिंभाई॥
सौसहस्रसंबततपकरहीं।। अयुतयज्ञनितउठिअनुसरहीं॥
चंद्रायनव्रतआदिअपारा।। करैयोगजपदाननिहारा॥ ॥
जहंलगहैंतीरथफिरिआवै।। छिनसतसंगसरिसनहिंपावै॥
सातस्वर्गसुखमोक्षहुकेरा।। धरैतुलापरएकहिबेरा॥ ॥
सतसंगतिलवभरिकैरकोई।। तेहिसमसुखदूसरनहिंहोई॥
निहसंशयजानहुयहभाई।। सत्यमहातमरामसोहाई॥ ॥
गंगापापतापशशिहरहीं।। दारिददूरिकल्पतरुकरहीं॥ ॥
साधसंगमाजोमनलावै।। ततकालतिहूंतापनसावै॥ ॥
दोइघरीयकघरीसोहाई।। हरिकेजनतिष्ठैजहंआई॥ ॥
तीरथसकलतहांईजानो।। सहीतपोबनसोइपिछानो॥ ॥

दो० संतनकीबानीसुनैप्रेमसहितजोकोइ॥
गंगादिकसबतीर्थफलबिनस्नानहिंहोइ॥

चौ० अन्तकालहूजाकेपासा।। भक्तअकामीकरैनिवासा॥ ॥
ब्रह्महत्यामयपापीहोई।। भगवतधामपाइहैंसोई॥ ॥
सतसंगतिभवनिधिमहनावा।। चढैसोपारहोइमतिभावा॥
साधसंगतेसीतलहोई।। जन्ममरणछिनमेंजाइखोई॥
साधसंगतेपातकजावै।। ज्योंपावकलेसीतनसावै॥ ॥
सतसंगतिगतिपलटैऐसे।। पारसतेलोहाहरिजैसे॥ ॥
अधमहुसाधसंगजोआवै।। पावनहोइवेदअसगावै॥ ॥
ज्योंअपवित्रनीरमधुसंगा।। गंगमिलतपावनहैगंगा॥ ॥
तिलसंगफूलफुलेलकहायो।। साभरिभयोखेतजोआयो
नीरछीरकीसंगतिपाई।। बरनमिल्योसोइमोलबिकाई॥ ॥
रसअनेकभांतिकेकोई।। मलयागिरिसंगचंदनहोई॥
बेनकरीलहोतनहिंजानो।। सारहीनहतभाग्यपिछानो॥

ऐसे जे नर भ्रष्ट अभागी॥ बैठे साधन ढिग अनुरागी॥ ॥
संगति फल लागत नहिं कैसे॥ नागबेलि बिच अमरस जैसे॥
जिनके भक्ति बीज उर छायो॥ सतसंगति जल नाहीं पायो॥
उगत तुरत सुनहु मुनि तावें॥ अनीश्वरि ते नभ नहिं जावें॥
उदय दिनेश सबहिं लखि परहीं॥ पै उलूक गोहर निशि चरहीं॥
नाते जन संगति का करहीं॥ जो गुरु बचन हृदय नहिं धरहीं॥
जिन जिन बचन सन्त कर माना॥ तिन तिन का हूँगा कल्याना॥
सोल अमरनि कोनैं पै जाहीं॥ तदपि कछुक बरनौं मुनि पाहीं॥
अजामेल सठ पालक धामा॥ साधु संग मिलि लहेसि अरामा॥
बालमीक मुनि भे मुनिराई॥ सप्त ऋषिन की संगति पाई॥ ॥
द्विज दुंदभी प्रेत एक भयऊ॥ लहि गोकरन संग तरि गयऊ॥

दो॰ महादेव का संग करि कीर अंड मुनि भेव॥
चेतन है श्रुति उड़ि गयो भयो आइ शुकदेव॥

चौ॰ व्यास संग नारद का कीन्हा॥ तपनि मिटे भे शीतल चीन्हा॥
भौमर संग चिमन का पायो॥ अरवन सहित सुरलोक सिधायो॥
व्यास पुत्र के संग समाजा॥ भे भव पार परीक्षित राजा॥ ॥
षाठ हजार यज्ञ सुत जबने॥ नारद संग जाइ बन गवने॥ ॥
विप्र एक ग्रह दुख बस दीन्हा॥ भिक्षा हेत जान तन छीना॥
वैश्य एक निकस्यौ मद भरेऊ॥ रथ का धका लाग द्विज गिरेऊ॥
मरन लाग तापर करि क्रोधा॥ मातलि देन चले तब बोधा॥
तुरतै धरे सियार शरीरा॥ आये चलि ब्राह्मण के तीरा॥ ॥
बोले विप्र शोक परिहरहू॥ नेक बिचार हृदय महँ करहू॥ ॥
दुख सुख हानि लाभ संयोगा॥ कर्मन ते पावत सब लोगा॥
जो जस करै सो तस फल पावै॥ आनहिं बिरथा दोष लगावै॥
यद्यपि हम पशु योनि मझारी॥ ऐसा शोच करहिं नहिं भारी॥

करगायहींननगसैदानो॥ जोकछुहोइभावई मानो॥ ॥
यद्यपिहमकछुधर्मनकरहीं॥ तद्यपित्रणघासनहिंचरहीं
जीवबधेबहुघातकजाना॥ तातेविप्रदेहुजनिप्राना॥ ॥
देखोतुमविचारिमनमाहीं॥ नरतनसमतनदूसरनाहीं॥
जासुविवसमचराचरसोहा॥ नर्कस्वर्गअपवर्गअरोहा॥
तातेहरिसुमिरनकरलेहू॥ कोहकुबुद्धियाहितजिदेहू॥
तनछूटेपरबड़दुखपावे॥ नहिंजानीकेहिजोनिसमावे॥ ॥
ब्राह्मणतनतैंउत्तमपायो॥ जगतसुखनलगिबादिगवांयो
खानपानहितनहिंजनहिंआयो॥ तपकेकारनईसपठायो॥ ॥

दो० सुनिजंबुककेबचनद्विजकरनलग्योतपजाइ॥
मिटिगेसबदुखअंतमहंबस्योस्वर्गसुखपाइ॥

चौ० अससतसंगअहेमुनिराई॥ गईतुरतद्विजब्याधिनसाई
अवरसुनहुंबिधिसुतएकभयऊ॥ जाजुलऋषितपहितबनगयऊ
कीन्हतपस्यातनसुधिटारी॥ खगनकीनघरजटामंझारी॥
अंडादेपकिफूटिउड़ाने॥ शिरतेनिकसतजाजुलजाने॥ ॥
तबऋषिकेउपज्योअभिमाना॥ मोहिंसमानतपकियोनआना
सुरतिभईनभबानीटेरी॥ तुलाधारसमतपनहिंतेरो॥ ॥
समताभक्तिजासुउरआई॥ रहतबनारसदेखोजाई॥ ॥
सुनिजाजुलऋषितुरतसिधाये॥ तुलाधारबनियाघरआये
देखिकीनसनमानअपारा॥ चरणधोइआसनबैठारा॥ ॥
पूछ्योकेहिहितआयहुआजू॥ अज्ञाहोइकरोंसोइकाजू॥
कहऋषियशतुम्हारसुनिमोहीं॥ भासुखअबकछुपूछततोहीं
मैंबनतपबहुकालकमावा॥ तुम्हरीसमसरिनासुनिपावा॥
कौनधर्मतुमसाधतअहहू॥ सोहमतेकिरपाकरिकहहू॥
तुलाधारकहरामहिंध्यावों॥ रामहिकेगुणसुखलेगावों॥ ॥

कायबचन मन संतहिं सेवों ॥ विप्रजेंवाइ दान बहु देवों ॥ ॥
ताकर फल तन को नहिं चाहों ॥ अर्पों हरिहिं सुमारग गाहों ॥
चारि खानि जहं लगि तन धारी ॥ सब महं व्यापक एक मुरारी
यह बिचारि सब को सिर नावों ॥ ऊंच नीच नहिं मन में लावों ॥ ॥
दुखी दरिद्री होइ जो कोई ॥ सेवों ताहि नरायन जोई ॥ ॥ ॥
डांड़ी थकरि छांटि नहिं देहूं ॥ भूठ न कहों पराञन लेहूं ॥ ॥
काहुइ शत्रु मित्र नहिं मानों ॥ मैं मेरी तेरी नहिं आनों ॥ ॥
आये हर्ष न गये बिषादा ॥ दुखसुख सम नहिं करों बिवादा
यो मन के मारग नहिं बहऊं ॥ पांचहु बिषय प्रहारे अहऊं ॥ ॥
करि हरि मीन कुरंग पतंगा ॥ एक एक बस बिसरत अंगा ॥ ॥
सब को बस सो किमि सुख पावे ॥ तेहिं ते यो मन दूर रहावे ॥ ॥
काहुइ दुख देवों नहिं पावों ॥ राम नाम निशि बासर ध्यावों ॥ ॥
याते शांति बसी उर आई ॥ दुरमति भ्रम सब गयो नसाई ॥ ॥
निज दुख निज गुण कहा न चाहीं ॥ तुम पूछ्यो मैं बरन्यो ताहीं
कहु मुनि शांति कवन बिधि आवे ॥ सुनहु निगम यह भांति बतावे

दो० सात भूमिका ज्ञान की तिन बिन होइ न ज्ञान ॥
ज्ञान बिना नहिं शांति सुख सो अब करों बखान ॥

कुंकुमा छं० प्रथम भूमिका है शुभ इच्छा दूसरि जानु बिचा-
रे । नित्य वस्तु हिरदय में राखें और अनित्य निवारे । तीसरि त-
नुमानसा कहावे तन मन इन्द्री रोके । चौथी सत्यापुत सब-
जग में आतम एक बिलोके । पंचम अंश शक्त निज रूपे ता-
में निश्चय आने । छठई नाव पदारथ तेरे द्वैत बुद्धि लगु हाने ॥
सतई तुरीभूमिका जानों मैं त्वें जहां न रहई । सप्त भूमिका ये
कहवावें बिन गुरु ना कोइ लहई ।

चौ० ये सातों साधन बनि आवें ॥ उपजे ज्ञान शांति तब पावे ॥

अबतेशान्तिबसैउरआई ॥ कामक्रोधमद जाहिंनशाई ॥
उरबासनारहै नहिंकोई ॥ भयकलेशसंशय जाइ खोई ॥
समचितरंकरावबड़छोटा ॥ समचितखरखनसज्जनखोटा ॥
समचितशीतउष्णबरषाना ॥ कंचनमृतिकानारिपखाना ॥
समचितमातुबंधुसुतदारा ॥ समअरिमित्रहुअपनपरारा ॥
ब्रह्मानन्दमगननितरहई ॥ जीवनमुक्तसोईनरअहई ॥ ॥
परमहंसीयहज्ञानकहावत ॥ रामकृपातेकोइकोइपावत ॥
अतिदुस्तरमारगयहभाई ॥ बरनतसुलभकरतकठिनाई ॥
तातेजेनचतुरनरअहहीं ॥ तजिसबरामभक्तिएकगहहीं ॥
ज्ञानबिरागआपुहीआवै ॥ गोसङ्गज्योंघृतबछरूहुपावै ॥
तातेमुनितुमहूंअसकरहू ॥ ज्ञानभक्तिहिरदैमहँधरहू ॥

सो० जोकोइभक्तिबिहाइ । ज्ञानहेतबहुश्रमकरहिं ॥
मानहुंतजिसुरगाइ । आकदुहैपयलागिशठ ॥

महारामायणेश्लोक

येकेवलांहृतमलानुरक्ताःश्रीराममूर्तिविमलांविहाय । तेवैमहान्धाहृदयेस्वमूर्तिंत्यक्त्वायजन्तिप्रतिबिम्वकुम्भे ॥ १ ॥
येरामभक्तिममलांसुविहायरम्यां । ज्ञानेरताअतिदिनंपरिक्लिष्टमार्गे ॥ आरांमहेंद्रसुरभीपरिहृत्यमूर्खा । अर्कभजंतिसुभगंसुखदुग्धहेतुम् ॥ २ ॥

सो० ज्ञानतेपरपदजाइ । करैनिरादरहरिचरण ॥
गिरैसोपुनितमआइ । प्रभुरक्षितनहिंजनकबहुं ॥

भागवतेब्रह्मस्तुतिश्लोक ।

येन्येरविन्दाक्षविमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः । आरुह्यकृच्छ्रेणपरंपदंततःपतंत्यधोनादृतयुष्मदंघ्रयः १ ॥ तथानतेमाधवतावकाःक्वचिद्भ्रस्यंतिमार्गात्त्व-

यिवहु सो हद।।त्यांभिगुन्नाविचरंतिनिर्भयाविनायका-
नीकपमूईसुधमो।। १।।

दो॰ नसोपुराणनसंहितानसोकाव्यइतिहास।।
नसोशास्त्रतीरथव्रतजहांनहरिहरिदास।।
योगकुयोगमखयागगुणअवगुणजनजाल।।
विद्याऽविद्यानिसुखजहंनरामरतिमाल।।
नारदादिसनकादिमुनिअजशंकरशुकदेउ।।
लोमसभृगुसबज्ञानविधिभक्तिकरतहैंसेउ।।

चौ॰ सुनिजाजुलनरोषहरषतभयऊ।।ज्ञानभक्तिहिरदैधीरलयऊ।
तुलाधारकहंगुरुकरिजान्यो।।जैसेगरुडभुसुंडहिमान्यो।।
रसोशांतिउरअंतिलायो।।तवनभवानीकोशिरनायो।। ।।
ऋषिसवजगमेंब्रह्मनिहारो।।असमतसंगप्रभावअपारो

दो॰ ब्रह्मजीवजगवृक्षहैसतसंगतिफलसार।।
चरचाअमृतरसभराबीजहुलासुसंस्कार।।
बीजहुलासुसंस्कारहेइमिभाषतवेदांत।।
जोचाहैहरिरससोकरैसदासतसंग।।
पिसुवपलालनपाइएपियूषनचंद्रसंस्कार।।
यिमुखमिलतसतसंगमेंइमिकहैंअमतसार।।
तातेमनरघुनाथतिलकरुसतसंगविचारि।।
प्रभुपदबंदैसनेहजेहिजनमसरणजापहारि।।

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरा-
मसनेहीकृतजाजुलतुलाधारप्रसंगवर्णनोनामपंचत्रिंशो।ऽध्याय।। ३५।।

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरगणपतिगिरासुखदानि।।
कहौंसमुंखकीकथाकछुकएकादशजानि।।

चौ॰ वहुरिसूतबोलेहेताता।।जाजुलकेरिकहीमैंवाता।। ।।

अपर सुनहुं यक नहुष भुवारा॥ भयो इंद्र पद लेन विचारा॥
सौ यज्ञन करि चढ्यो बिमाना॥ इन्द्रलोक सूनो सुनि काना॥
वृत्रासुर मार्यो सुर ईशा॥ तेहि हत्या ते दुरे नदीसा॥ ॥ ॥
नहुष जाइ सिंहासन बैठो॥ प्रभुता पाइ आइ मद पैठो॥ ॥
सहस बरष कीन्ह्यौं सुखराई॥ इन्द्रानी दिश कर्यौ मन आई॥
तब नृप तासों बचन सुनावा॥ अब सोहि इंद्र जानु सति भावा
सुनत शची अति सै दुख पायो॥ धायो गुरु हि तुरत ढिग आयो
शीस नाइ निज बिपति सुनाई॥ दीन देखि मुनि युक्ति बताई॥
नृप ते तुम अस जाइ सुनावो॥ आवाहन चढ़ि मम ढिग आवो
शची आइ नृपति से कहेऊ॥ सुनत नहुष अतिशय सुख लहेऊ
घटज आदि द्विज लीन लगाई॥ चढ़ि पालकी चल्यो हरखाई
कामातुर है कहेसि रिसाई॥ सर्प सर्प चलिये अतुराई॥
मुनि अगस्त्य तब दीन्हों श्रापा॥ होहु सर्प तुम अपने पापा॥

दो० तेहि छिन तुरत परयो पद कह्यो वचन परकास॥
श्राप दूरि कब होइ है कहौ जानि निज दास॥

चौ० कह अगस्त्य द्वापर के अन्ता॥ प्रगटी धर्म तनय यक संता
सो आई तुम्हरे ढिग कबहीं॥ चरण छुवत निस्तरिहौ तबहीं
कौन भांति जानब हम ताही॥ कुंभज कह्यो चिन्ह इक आई
पूंछ्यो ज्ञान उतरु जब पायो॥ जानि तासु पद शीस धरायो
अस कहि मुनि पुनि चले सिधाई॥ भये सर्प नाहुष तब आई
गिरि कंदरा रहे बहु काला॥ हिरदै उठे अगिनि की ज्वाला॥
बड़े कष्ट करि द्वापर पायो॥ बनोवास पांडव जब आयो॥
द्रुपद स्वयम्बर रच्यो अनूपा॥ जुरे जहाँ दिशि दिशि के भूपा॥
तब बरबरा पारि ते कह्यो गोपाला॥ पंडन कहँ लावहु तत काला
आज्ञा सिर धरि गरुड़ सिधाये॥ कुंती सुत पांचो जन लाये॥

सोइ गुरुतीर तिन्हें बैठाई। कृष्णापास आये खगराई॥
राजेतृषा लागि लहंजानो। भीमते कह्यो जाइ जल आनो॥
देखि तड़ाग निकट चलि गयऊ। चांपपाइ अहिनिकसतभयऊ॥
योजन एक सुनय विकराला। उरगनहीं जनुमूरतिकाला॥
पूंछ्यो पास भीमके आई। कहु जगमहं जीवत को भाई॥
जो कोइ मनुष होइ बलवाना। सुनि अहि लह्यो नयहि उत्ताना॥
खैचि स्वास लीन्ह्यो मुखडारी। यहां युधिष्ठिर जानि अवारी॥
पठयो नरहि सरहि चलि आये। देखि सर्प्प असवचन सुनाये॥
को जीवत जगमानर सोई। सरविद्या जाके कर होई॥
समुझि सुज्ञानहीन धरिखायो। तबनकुलै महिपाल पठायो॥
ससानि काकं० तालतीर गेजबे। नागबो लियो तबे॥ जीव
धन्य कोनहे। रूपवान जोनहें॥
धीरकं० सुनि सर्प्प करिदर्प्प। मुखवाइ गयो खाइ॥
चौ० यहां युधिष्ठिर कह सहदेऊ। लेउ जाइ भाइन कर भेऊ॥
गयलीनि जन एकन आयो। नहिं जानी कोने बिलमायो॥
तब सहदेव निकट सर गयऊ। अजगर देखि कहत असभयऊ॥
जीवत जग मैं काहि पिछानी। विद्यावान होइ जो ज्ञानी॥
भक्ति बिहीन ज्ञान बिन चीन्ह्यो। तुरत निगल सहदेवै लीन्ह्यो॥
बहुरि युधिष्ठिर आपुइ आये। चक्षुश्रवा लखि बचन सुनाये॥
किंवार्त्ता अचरजका भारी। पंच कौन मो दितन सनारी॥
चहूं प्रश्नका उत्तर दीजे। तेहि पाछे नृप नीरहि पीजे॥
धर्मनन्दन बोले हरषाई। सुनो यथा मति कहौं बुझाई॥
दो० भक्ति मोह क्षुधानुरविधवनिस्वासमद दारु॥
लिपिरि हिनघन दवी बरयक्रम कुटकाल लोहारु॥
चौ० जीवसमरसमकूटनजाई। यहे बारता मोमन भाई॥

सुनिधन्नगप्रसन्नअतिभयऊ॥नत स्रगाउगिलभीसकहँरयऊ
चारिखानिजहँलगुननुधारी॥जलचरथलचरनभचरनारी॥
मराएकदिनसबकरहोई॥शेषरहेप्रभुचरजहैंसोई॥ ॥
सुनीभुजंगबातयहजबहीं॥उगिलिदिहिसिपारथकातबहीं
धंधसोजाहिमहाजनध्यावै॥नकुलेउगिलिदिहिसितबचावै
दूसरेदिनचहुंभोजनपावै॥यहबसहोइनअस्तुरारहावै॥
भजेरामतजिकामकुकर्मी॥सोइनरभुविदिनसंयुषभर्मी॥
कृपाबहिर्मुखसबसमप्रानी॥होइनकसबिधिसमगुरारखानी
असमुनिधुनिसहदेवेरयऊ॥बहुरिरावनेबोललभयऊ॥ ॥
महाराजबचनामृततोरे॥सुनिआनंदभयोअतिमोरे॥ ॥
अबनिजचरणशीशममधरहू॥दीनदयालकृतारथकरहू॥
कारणकौनभालयगराखी॥इमतेभेदकहोसोभाखी॥ ॥
पूरबभेदनहुषसबबरना॥विप्रश्रापजेहिविधिनिस्तरना॥
सुनिनृपअहिशिरचरणछुवावा॥भैप्रबहानिदिव्यबपुपावा
आयेसुरतविमानसमीपा॥चढ़िहरिपुरकागयोमहीपा॥ ॥
अससतसंगप्रभावघनेरा॥जेहिलहिगादुखनाहुषकेरा॥
औरसुनोयकमक्कीसाहू॥रहधनहीनदीनसबकाहू॥ ॥
धनहितउद्यमकिहिसिअपारा॥होइनकानहिंघटानिहारा
करजुकादिपुगवृषभहिलायो॥नहिंकेजोतनखेतसिधायो
मगमाहंवृषभकीनिमचलाई॥भागतपरेऊंटपरजाई॥ ॥
माथबीचगरदनिकेउरझी॥उनमदऊंटउरझीनहिंसुरझी॥
दो॰ चलेघसीटलवृषभदोउभएमृतककरपिराइ॥
लखिमक्कीशोचनलागेमहितनगीसनवाइ॥
चौ॰ताहीसमादत्ताश्रयआये॥दुखितदेखिअसबचनसुनाये
कहांतातमनधीरजगाहो॥वृथाशोचकरिक्योंतनुदाहो॥ ॥

दुखसुखकर्मभावई हाथा॥ कैसे मिटै लगी सो साथा॥ ५ ॥
तेहिते चतुर शोच नहिं करहीं॥ होनहार सोइ हिरदे धरहीं॥ ॥
बिन इच्छा तब्य द्रव्य नहिं पावे॥ देखा बिदेश चहो फिरि आवे॥ ॥
पूरब पुरायन सोइ जो आई॥ बिन आरंभ मिले धन आई॥ ॥
बहु नर उद्यम हीन हयाना। ते धनवन्त दुखी बुधिवाना॥ ॥
पाछिल धर्म जानिये भ्राता॥ और ला सुझोने सबै बाता॥
आदो हान दिह्यो नहिं ऐसो॥ अब चाहत धन मिलो न केसो
तेहि तेउर सन्तोषे धारौ। तृष्णा डाइनि दुख निवारौ॥ ॥ ॥
नाहिं सुख कछु संतोष समाना॥ चौबिस गुरु कहि हम यह जाना

दो॰ मुनि मक्षी बोलत भयो॥ मुनि पद शीस नवाइ॥
कौन कौन गुरु किहेउ प्रभु से मोहिं देहु सुनाइ॥

वीर छं॰ सुनि द्त्त। निजु मत्त॥ मृदु बोलि। क खोलि॥ ॥

तोटक छं॰ प्रथमे गुरु जानहु भूमि किह्यो। तेहि ते जु क्षमा गुरु शांति लिह्यो॥ जल दूसर सर्व पवित्र करे। जिमि सज्जन जीव के पाप हरै। गुरु तीसर वायु अमैल अहै। ममत्वा गति सगसमान बहै। मृग बद हि गुरु सुनि तात मेरे। तेहि भांति विषय-सुख चित्त हरे॥ गुरु पंचम आतप ज्यों हरहीं। हरि के जु नरी-तल त्यों करहीं॥ छठयें रवि ज्यों रस सर्व ग्रहे। नालिये परि त्यों-जग संत रहे॥ भ्रम के समता गिनि आज्य परे। निघटे ति मिका-सन भोग करे नभ अष्टम पूरण ब्रह्म तथा। नवमान द्हा जन-बृक्ष यथा॥ दशमो दधि आप घटे न बढ़े। जन त्यों दुख-सुःख समान बढ़े॥

चौ॰ भँवर इकादश बिरति सुपासू॥ पुहुप कीलेहि सुवासू॥
नाहिं पुहुप का दोष बिचारै॥ करहिं संत तेहिं विरति अहारै॥
कीट हि शब्द सुनावत ऐसो॥ सोहि जात भृङ्गलै जैसो॥ ॥

द्वादश अहि नहिं भौन बनावै ॥ तैसहि भक्ति बसहि जहं पावै ॥
तेरहें गुरु हाथी कहं कीन्हा ॥ काम विवस परबस भा चीन्हा ॥
तबतें काम नेवारत भयऊ ॥ रामचरणपंकज चित दयऊ ॥ ॥
मकर चौदहा रसना स्वादा ॥ आमिष गह्यो सहित अहलादा ॥
सुख नहिं भयो गयो पुनि प्राणा ॥ तज्यो सकल रस दुखद पिछाना ॥
दशसर सलभ दिया की जोती ॥ देखत जरत सती ज्यों होती ॥
तैसे नर त्रिय लखि फंसि जाहीं ॥ सो बिचारि हैं देखत नाहीं ॥
जेहि देखो तेहि आतम जानो ॥ औरन दूसर भेद हि आनो ॥ ॥
षोड़स चील्ह एक लै मासू ॥ उड़त भई सह मोद प्रकासू ॥
बहुत बिहंग ताहि पछु आयो ॥ दीन्ह्यो छाड़ि तवै सुख पायो ॥
तबतें चित ग्रहण नहिं करहूं ॥ जहां तहां निरद्वन्द बिचरहूं ॥ ॥
सत्रहसौं गुरु अजगर भावै ॥ निरालंब आवै सोइ खावै ॥ ॥
अष्टादश गुरु वेश्या एका ॥ बैठी करि सिंगार अनेका ॥ ॥
एक दिवस व्यसनी एक आवा ॥ दइ धीरज गय लेन सिधावा
तुरत पिंगला सेज संवारी ॥ मग देखत निशि रहटक वे नारी ॥
युगल याम रजनी बसि गयऊ ॥ वेश्या हृदय बोध तब भयऊ ॥
आसा त्यागि भजिसि भगवाना ॥ वही ज्ञान मैं हिरदय आना

दो॰ गुरु कीने समधान कर दीरघ बनाव नतीर ॥
भूप गयो तेहि अग्रहू सहित शब्द अलि भीर ॥

चौ॰ वहू धाय पूछा यहि ओरा ॥ नृप गमेन सुनी कछु शोरा ॥
तहं मैं सिखहुं ध्यान का भेदा ॥ रहौं लीन तजि जग के खेदा ॥
विंशम मिथुन कपोता भयऊ ॥ विपिन कपोती अंडा दयऊ ॥
फोरि सेइ बड़े सिसु भयऊ ॥ इक दिन बधिक देखि गहि लयऊ
आये दोउ लखि हि सुत चारा ॥ पुत्र बिना घर सून निहारा ॥ ॥
बधिक तीर देखि अकुलाई ॥ गिरि कपोति निजा रहि जाई ॥

देखिशोच अतिकीनविहंगा॥ फसाआपुहु सबकेसंगा
अतिबलमोह देखिमैंजाना॥ तबतेतज्योंभज्योंभगवाना
गुरु एकैसम मकरीभाई॥ पूरततारु निगलिफिरिजाई॥
ऐसईईशजगतकरिसोई॥ अन्तआपुमहँलेतसमोई॥॥
उभयविंसजानहु मधुमाखी॥ रसरसआनिइकठे राखी॥
खाइनितनहिं निज काजनकीन्हां॥ आइछोडाइ आनहीलीन्हां
तेसहि कृपिणद्रविकोपाई॥ पुगयनकरहि सकहिनहिंखाई
विविधिभांतिराखैमहिगोई॥ करहिभोगतेहि आनहिकोई
तेहितेसंग्रहकरौनदामा॥ नृपभयचोरबधतठगतामा॥
गुरु तेईशवां कन्याजानहुं॥ तासुचरित अबसुनहुबखानहु
करनसगाईयुगजन आय॥ मातपितातेहि घरनहिं पाये॥
कन्यातबकीन्हेउ सन्माना॥ आपलगी धुनिकूटनधाना॥
चूरीखटकतभईगिलानी॥ डारेसिफोरिकछुकनिजपानी
द्वैलगरहीखटकनहिंजाई॥ एकराखिकूटेसिहरषाई॥॥
तबतेसोइसीखधरिचित्ता॥ एकाएक रहौं मैं नित्ता॥ ॥
बहुतनसंगकलहहै आवै॥ एकाएक परम फल पावै॥ ॥
चौविसवांगुरुकिहेउशरीरा॥ जिहिलगिसबनरसाहतपीरा

दो॰ पालतषट्रसस्वाददै बिबिध बसनपहिराइ॥
तेल फुलेललगाइनितसेवाकरीबनाइ॥

सो॰ अन्तसमयकीबार॥ सङ्ग नचालै एकपग॥
औरसकलपरिवार॥ सोआपनकिमिहोइहै॥

चौ॰ आपनतनजान्योंनहिंजबते॥ करनलाग्यो निजस्वारथतबते
निजस्वारथसोईकहवावे॥ जोकछुरामभजनबनिआवे॥
भजनबिनाजीवहिसुखनाहीं॥ बिधिहरिहरसमीपचहुंजाहीं
चौविसगुरुकरिज्ञोमतपायो॥ सोमैंतुमकहसकलसुनायो॥

मुनि भक्ति उर उपज्यो ज्ञाना॥ जगत झूठ करि लखहि घिनाना
मुनि पद शीश नाइ बन गयेऊ॥ जप तप करि तन त्यागत भयेऊ
हरि पुर बसेउ जाइ दुखबीसा॥ अस सत संग प्रभाव मुनीशा॥
कह शौनक इक संशय मेरे॥ दत्तात्रयी सुत किन केरे॥ ॥ ॥
यहौ भेद प्रभु देहु बताई॥ सुनत सूत बोले हर्षाई॥ ॥

सो॰ अत्रय ऋषि की नारि। द्वै देवन कर अंशलय॥
कीन्ह्यो पुत्र विचारि। नाम धर्यो दत्तात्रयी॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत भक्ति दत्तात्रयी सम्वाद चौबिस गुरु वर्णनो नाम षट्त्रिंशो ऽध्यायः ३६॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख दानि॥
कहौं समुझि चरित कछुक छुजै मिन मत आनि॥

चौ॰ बहुरि सूत बोले कहि येहा॥ धन्य २ शौनक तव नेहा॥ ॥
जो पूछ्यो सो चरित सुनावा॥ औरउ सुनौ सन्त संग प्रभावा॥ ॥
सब ते अधिक ज्ञान यह पावन॥ पुत्र पिता सम्बाद सोहावन॥
विप्र एक कश्यप अस नामा॥ मेधावी सुत अति अभिरामा॥
ज्ञानवन्त ममता उर नाहीं॥ एक दिन प्रश्न किहिसि पितु पाहीं॥
पिता कहो का करत पकरिये॥ जाते भवसागर को तरिये॥ ॥
कह कश्यप सुत वेद पढ़ीजे॥ ब्रह्मचर्य करि ग्रह सुख कीजे॥
वानप्रस्थ बहुरि संन्यासा॥ धारण करि कीन्ह्यो बन वासा॥ ॥
जप तप योग यज्ञ नहँ हान्यौं॥ यह कर्तव्य है तुम्हें बखान्यौं॥
मुनि मेधावी उत्तर दीन्हा॥ मृत्यु विवश हम सब कहँ चीन्हा॥
जब चाहै तब हीं संहारै॥ बाल वृद्ध नहि तरुण बिचारै॥ ॥
तौ केहि बिधि बहु आश्रम करई॥ अमर होइ सो हिरदे धरई
लोमश आदि मुनि चिरजिव आहीं॥ टूटत रोम कलप के माहीं॥
ते ऊ डरत मृत्यु ते भाये॥ तोइ डार रहत शीश औंधाये॥ ॥

और सुनो पांडवमखसाजा॥ कीन्ह्यो जबतव छाड़ेयो बाजा
अरजुन कृष्ण हन्तध्वजकेतू॥ चलेसकल रक्षाके हेतू॥ ॥
ढूंढ़त सिंधु पार जब गयऊ॥ दीप एकबन देखत भयऊ॥ ॥
तहं बक दालभ ध्यान लगाये॥ सबन जाइ मुनिपद सिर नाये॥
चरण छुवत बकदालभ जाना॥ नयन खोलि कीन्हो सनमाना
लागे कहन चरित हरिकेरे॥ बहु विधि जो निजनयनन हेरे॥

दो॰ तीन कोटि चव्वन लाख पुनि उभय सहस्र अवतार॥
भये दशरथ राम के मेरी दृष्टि अगार॥ ॥

चौ॰ सुनि अरजुन बोले तिन हीते। तुम्हें इहां कितने दिन बीते॥
कह मुनि सुनहु तात मन लाई॥ आदिहिते सब कहौं बुझाई॥
निमिष अठारह काष्ठा जानो॥ तीस काष्ठ की कला पिछानो॥
तीस कला की होत महूरत्ति॥ तीस महूरति का दिन पूरत्ति॥ ॥
पंद्रह दिवस केर पखवारा॥ उभय पाख का मास विचारा॥ ॥
बारह मास बिगत जब होई॥ तेहि का बरष कहत सब कोई॥ ॥
सत्रा लाख अट्ठाइस बरषा॥ सतयुग रहत सकल सुर हर्षा॥
बारा लाख छानवे हजारा॥ त्रेता रहत सुखी संसारा॥ ॥ ॥

दो॰ आठ लाख चौसठ सहस द्वापर रहत समान॥
चारि लाख बत्तिस सहस बर्ष रहत कलि जान॥

चौ॰ चारि सहस युग बीतत जोई। तब ब्रह्मा का इक दिन होई
राति तेतनही तब विधि स्वोवै॥ सृष्टि धरै उर कल्प कहावै॥
तीस कल्प बीतत अजमासा॥ बारा मास बरष परकाशा॥
ऐसे बरष एक शत जाई॥ तब लगि ब्रह्मा जीवत भाई॥ ॥
मरे पितहि परले है आवै॥ ब्रह्मकल्प सोई कहवावै॥ ॥
मोहिं देखत एते दिन भयऊ॥ ब्रह्मा बीस नाश है गयऊ॥ ॥
एक बार ब्रह्मा इक आये॥ चारि भुजा मुख चारि सोहाये॥ ॥

करतलचारिवेदतनपीना ॥ रामचरितगावतलवलीना ॥
सोतेकहिनिध्यानतजिदीजे ॥ हमतेकछुकचतुरतानकीजे ॥
तेहींसमयबौंडरइकआई ॥ हमेंबाहिलेचलाउड़ाई ॥ ॥
उलटतपलटतनाचलखंडा ॥ देखाजाइआनब्रह्मण्डा ॥
तहँविधिबैठिआठमुखसोहा ॥ आठभुजावसुदेवहुजोहा
कोभवानिविधितेबिधिभाषा ॥ ब्रह्मअहंइत्थंसुनिमाखा ॥
दो० अबतककहेउसोकहेउपरअवनकहौंअजनाम ॥
ब्रह्मायमयआठमुखजेहिकरतलसबकाम ॥
चौ० इतनीकहतफ्वनधुनिधुनिघूमी ॥ उभयलयेउँचलीनभभूमी
उहांतेउड़ेनआनमहंगयनू ॥ सोरामुखबिधिदेखतभयनू
पुनिवत्तिसचौंसठिछानाघा ॥ दुगुन२मुखकोविधिपावा
जेहिदेखासोऊउड़िजाई ॥ गगनपारसबनिकसेजाई ॥ ॥
दो० तहांपुरुषइकदीखबरजेहितनअतिबिस्तार ॥ ॥
बदनअनन्तअनन्तभुजवेदअनन्तअपार ॥
चौ० कीनबन्दनातिनसनमाना ॥ सबब्रह्मराकागाअभिमाना
कछुकबाररहिआयुसुपाये ॥ फिरिनिजनिजआश्रमकहंआये
सुनिअरजुनअसिसेसुखपावा ॥ बहुरिजोरिकरबचनसुनावा
हेप्रभुकतउजारमहंरहऊ ॥ सीतउषाबरषासिरसहऊ ॥ ॥
लेत्योइकमंदिरबनवाई ॥ सुनतबचनबोलेऋषिराई ॥
लघुजीवनजगकौनेहेता ॥ धनसंचौअरुकरौनिकेता ॥
मृत्युखड़ीसिरसन्मुखहेरे ॥ जबचाहैतबहींमुखगेरे ॥ ॥
जोकोइछुरीचढ़ावाजावे ॥ सरारहिगयेकौनसुखपावे ॥
सुनोपिताऐसेजेअहई ॥ तेऊडरतमृत्युतेरहई ॥ ॥ ॥
औरनकीअबकौनचलावे ॥ जोनितजनमि२मरिजावे ॥
तेहितेतातमोहतजिदेहू ॥ करहुरामपदपङ्कजनेहू ॥ ॥

निधिलासरऋतुजेहिबिधिजांवे ॥ त्योंतुम्हरीनितआयुसिरांवै
देखतजातसचेतनहोवे । ढहतेमहलमाहिंकससोवे ॥ ॥
प्राणअन्तकछुबनेनभाई । ढबीढाठजिमिबस्तुनपाई ॥ ॥
श्लोक यावत्स्वस्थमिदंदेहं यावन्मृत्युश्चदूरत: ॥
तावदात्महितंकुर्य्यात् प्राणान्तेकिंकरिष्यति ॥ ९ ॥
गीतिकाछं० मुनिपुत्रकेअसबचनबिमलबिरागकरप्रथमके
भयो । दोउत्यागितृणासमधामधनसुतबामबनकोचलिदि-
यो ॥ जपयोगसंयमसहितकरिहरिभक्तितनमनप्रीतिके ॥
गयअन्तसमयबिमानचढिप्रभुधामबस्योप्रतीतके ॥
सो० ऐसाहैसतसंग । जाकेकरतेअघनशत ॥
लागतहरिकारंक । भागतसंशयशोकभ्रम ॥
चौ० औरसुनोबिस्वावसुनागा ॥ मन्दालसासुतासुठिभागा ॥
तालकेतुनृपथमाहबिलाही ॥ ऋतुध्वजगालबमखरक्षकाही ॥
बधकरिताहिसुतासोइलीन्ही ॥ बिश्वावसुहिंआइपुनिदीन्ही ॥
व्याहपुनिनृपतितबठानी ॥ यहिपरबोलीकुंवरिसयानी ॥
तीनिबचनमोहिंदेवैनाहू ॥ ताकेसङ्गकरवहौंब्याहू ॥
इकतोमोममद्वारेआवे ॥ सङ्गनविमुखजाननहिंपावै ॥
दूसरमोहिंजीवतनरनाहा ॥ करैनअपरदानिसङ्गब्याहा ॥
तीसरजोबालककहौंजावों ॥ द्वादशसम्बतमहीखेलावों ॥
असप्रणकठिनसमुझिमनमाहीं ॥ भूपतिकोउहिंबरिकहनाहीं ॥
रतिध्वजबचनदेइतहंपरणी ॥ धूमसहितलायेघरघरणी ॥
कछुककालबीतेसुतभयऊ ॥ चेरिउकानहिंकबहूँदयऊ ॥
आपुखेलावैदिनअरुराती ॥ देइज्ञानतनुजेयहिभांती ॥ ॥
श्लोक शुद्धोसिबुद्धोसिनिरंजनोसिसंसारमायापरिवर्जि-
तोसि । संसारस्वप्नंत्यजमोहनिद्रांमन्दालसावाक्यमुवाचपुत्रम् ॥

चौ० बड़े भाग सो नर तन पायो ॥ सुर दुर्लभ पुराण श्रुति गायो
ताहि पाइ निज राम न ध्यावा ॥ भृंग जो बन जग बादि गवांवा ॥
ताते सुत हरि सुमिरण करहू ॥ ज्ञान बैराग हृदय महँ धरहू ॥
छुधा तृषा सुख दुख अपहारी ॥ काम क्रोध मद मोह नेवारी ॥
सुत पितु मातु बन्धु अरधङ्गी ॥ ये सब हैं स्वारथ के सङ्गी ॥ ॥
अन्त समय कोउ काम न आवे ॥ बीचहि मिले बीच रहि जावे ॥
तिन्हें त्यागि बन साधन हिं कीजे ॥ अहनिशि राम रसायन पीजे
छिन छिन तेरी आयु सिरावे ॥ ज्यों करतल जल निघटत जावे ॥
काल अचानक सब का मारे ॥ बालक बृद्ध नहिं तरुणा बिचारे ॥
ताते बालपनहिं ते चेतो ॥ बेगि लगावो हरि पद हेतो ॥ ॥ ॥

दो० बहु प्रकार मदालसा दीन सुतें उपदेश ॥ ॥
भयो ज्ञान हिरदे बिमल गयो बिपिन मुनि भेष ॥

सो० यहि भाँति न षट बाल पठये बन उपदेश करि ॥
सप्तम भये भुवाल आइ निकट बोले बिलखि ॥

चौ० हे भामिनि सुनिये मम बानी ॥ भयनु बृद्ध हम तुम दोउ आली
बालक बन पठयो सब आछे ॥ करी राज को हमरे पाछे ॥ ॥ ॥
तेहि ते यहि राखो गृह माहीं ॥ बार बार बिनवों तोहि पाहीं ॥ ॥
सुनि पति बचन पुत्र घर राख्यो ॥ तासों ज्ञान कछू नहिं भाख्यो
परनित शोच हि करै अपारा ॥ परै न नर्क यह पुत्र हमारा ॥ ॥
तब यक जंत्र बांधि भुज दीन्ह्यो ॥ बिपति होइ यामें सोइ कीन्ह्यो
कछु दिन बीते दोऊ मरि गयऊ ॥ पाछे अलरक राजा भयऊ ॥
सुनि बन बंधु गये ते आये ॥ तजहु राज बड़ दोष सुनाये ॥ ॥
सो महीप मानेस नहिं राई ॥ बरबस भागन दीन खेदाई ॥ ॥

दो० तब ते काशीराज पहँ फिरि आदी भे जाय ॥
निज अहीशादिन कहि लायं ताहि चढ़ाय ॥

चौ॰ कछुक दिवस अलरक नृप लेऊ। भयो शिसल तब सनपरिहेऊ॥
गयो भागि वनयोपति विचारयो। खोलि मुद्रिका ताहि निहारयो॥

दो॰ जगत जाल में मतियरें केवल दुख यहि माहिं॥
सत्य कहों सनि कहों सुनसुख समयन्यों नाहिं॥

सो॰ राम विमुख नरजौन। किह्यो न संगति तासुकी॥
साधु संग सुख भौन। मिलत ज्ञान हरि भक्ति जहं॥

दो॰ खग मृग किन्नर नाग नर दैत्यासुर समुदाइ॥ ॥ ॥
युग युग में जे तरे ते सकल साधु संग पाइ॥ ॥

चौ॰ अस मुद्रिका मांझ जब देख्यो। खोजन दत्तात्रेय काले रख्यो॥
परयो चरण निज विपति सुनायो। मुनि बहु बिधि ज्ञान सिखायो॥
गयो मोह सुख भयो अपारा। करि हरि भक्ति भयो भव पारा॥
अस सत संग अहै स्थिराई। गइ सराम मन व्याधि नसाई॥
तातें साधु संग नित कीजे॥ मन क्रम वच्या विकुसंगति दीजे॥ ॥

कुण्डलिया भक्ति लता सत संग जल सरधा पल्लव पाइ। सार अज्ञान विराग गुरु लघु सुमादि समुदाइ। लघु दसमादि समुदाइ प्रेम सा सुमन सोहावन॥ हरि प्राप्ति फल मधुर स्वादु दुख दावन सावन॥ प्रथम अजात रहियेवडे भये नहिं शक्ति॥ वंधे रहें कर इमि कहें कल्पलता हरि भक्ति॥ ॥

दो॰ जनसि कन्या जनक तें रहें जनक के गोद॥
होइ पुत्र तब बिबि सुखद इमि कहें भक्ति विनोद॥
प्रभु पयोधि धन संत हैं हरि जन पौमान॥
मुस किन तें रघुनाथ इमि करत साधु अस्नान॥

इति विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत पुत्र पिता संवाद अलरक प्रसंग वर्णनो नाम सप्तत्रिंशो ध्याय॥ ३७॥

दो॰ सुमिरि राम सिय संत गुरु गणपति गिरा सुखदानि॥

सांख्य शास्त्रमत कहौं कछु वेदांत बखानि ॥

चौ॰ सुनि सौनक बोले हरषाई ॥ सत संगति महिं साध कुमाई
और एक बरनौं इतिहासा ॥ जो हित होइ ज्ञान परकासा ॥ ॥
सयनजीत एक भूपति राई ॥ नीति चाल बरजे पहु चौई ॥ ॥
तेहि के पुत्र बरष दश केरा ॥ भयो मृतक सोक मन घेरा ॥ ॥
राजा शोच कीन अति भारी ॥ प्राण तजन की बात बिचारी ॥
तेहि अन्तर लोमस ऋषि आये ॥ नृप हि दुखित लखि अस सुनाये
हे नृप शोक करै सु काको ॥ तेरो सुत नहिं ते पितु वाको ॥ ॥ ॥
पुत्र शरीर परा तब आगे ॥ रोवत मृषा जीव के लाये ॥ ॥ ॥
जनमै मरै न भयो न होई ॥ नित्य स्वरूप अचल है सोई ॥ ॥
सस्त्र काटि सकै नहिं ताही ॥ पावक जारि सकै नहिं आही ॥ ॥ ॥
नीर भिजोय सकै नहिं वाको ॥ मारुत सोखि सकै नहिं ताको ॥ ॥
ऐसा यहि आतम कहँ जानो ॥ मन महँ ना सु सोच जनि आनो ॥
याको मृतक कहै जो कोई ॥ महामूढ़ अज्ञानी सोई ॥ ॥ ॥
नासवन्त है देह पिछानो ॥ जीवात्मा अविनासी जानो ॥ ॥

दो॰ देह अंग न्यारे करो जहँ तक होत बिनास ॥
उतपति भय जेहि भांति ते करत नरक को बास ॥

चौ॰ प्रथम ब्रह्म अज अथइ अमाया ॥ इच्छा कीर पुरुष उपजाया ॥
पुरुष इच्छा ते प्रकृति प्रभेवा ॥ प्रकृति ते भयो महानत देवा ॥
महातत्व ते भो तिरंकारा ॥ निरंकार ते प्रणव निहारा ॥ ॥
प्रणव ते भये तीनि गुण राऊ ॥ सत रज तामस प्रगट प्रभाऊ ॥
त्रैगुण की भांति वा ओसादी ॥ जिन ते भा तनु अनिल उपाधी ॥
सत ते वामदेव चित जानो ॥ और चौदहो देव पिछानो ॥ ॥
रज गुण ते ब्रह्मा बुधि भयऊ ॥ दशौ वायु इन्द्री दश जयऊ ॥ ॥
तामस ते शिव जानो राई ॥ अहं अंतहकरन लखाई ॥ ॥

अहंसे भा अकाशलहिं पोला॥ उपजे श्रवणा सुनत जे बोला
नभ ते भई पवन अस्पर्शा॥ तासों भुक त्वचा पहिं हर्षा॥ ॥
अगिनि ते जल रसना रस चाहै॥ जल ते पृथ्वी गंध जो लाहै॥
एक ते एक प्रकट है आई॥ जब मिटै सब जाइ समाई

दो० सतरज तम बुधि चित अहं शब्द अस्पर्श सरूप॥
रसन गंध मिलि गांठि परि लख उपज्यो मन भूप॥
तीहिं ते अन्तह करण नृप गने जात हैं चारि॥
मन बुधि चित अहंकार अब बिरती कहौं बिचारि॥

चौ० ज्ञान बिचार शील बिस्वासा॥ धीरज निश्चै मति थिर भासा
सुरति चपलता अगिनि उमंगा॥ राग आदि चित बृत्ति प्रसंगा॥
मैं ते आन मलिनता रेखा॥ अहंकार की बिरति सरेखा॥ ॥ ॥
दुख सुख भय संकल्प बिकल्पा॥ लाज उच्चाटन मनबृत्ति थल्पा
एक बस्तु बहु नाम कहाये॥ अन्नचून जिमि रोटी गाये॥ ॥
अब इनके इन्द्रिन के देवा॥ जे जे हैं बरणौं सो भेवा॥ ॥ ॥

कुकुभा छं० मन के देव चन्द्र बुधि ब्रह्मा बासदेव चित केरे।
अहंकार शिव दिसा कर्ण के नयन भानु सुर हेरे। रसना बरु-
णा तुचा के मारुत नासा अश्विनि जानो। मुख के अगिनि इन्द्र-
हाथन के देव गुदा यम मानो। लिंग देव परजापति सिरजन
चरणन बिष्णु बिराजै। चौदह देव रहत यहि तन संग नित नि-
रमै है गाजै॥ ॥

दो० नाड़ी चौदह सहस है यहि शरीर के माहिं॥
तिन मा चौबिस मुख्य हैं सब कोइ जानत नाहिं॥
कमल नाभि ते दश ऊर्ध्व दश गई अध जान॥
युग दक्षिण उत्तर उभय तिन मा दश परधान॥

चौ० तिन दशहुन के नाम बखानौं॥ जहँ बसै सो ऊ तुम जानौ॥

बांयेइड़ापिंगलादायें ॥ मध्यसुखमनातीनिगनायें ॥ ॥
बामचक्षुगंधारीरहई ॥ हस्तीजिह्वादहिनेअहई ॥ ॥
पूषा कर्णदाहिनेअहई ॥ पुनियसस्विनीबायेंलसई ॥ ॥
नाभिमाहिंआलंबकराजे ॥ कहुलिनासिकामाहिंविराजे ॥
मुखअस्थानसंखिनीकेरा ॥ येनाडिनकेनामनिबेरा ॥ ॥
दशपवनौहैंयहितनमाहीं ॥ निजनिजथलमेंसोउरहाहीं
प्राणपवन हिर्दैमें बासा ॥ जेहितेनिशदिननिकसतस्वासा
गुदाअपाननाभिसमाना ॥ कंठउदानसर्वतनव्याना ॥ ॥
नागवायुतेउँडकारै ॥ कूरमनयननपलकउघारै ॥ ॥
देवदत्तआवैजमुहाई ॥ किरिकिलछीकलगावैभाई ॥
मुयेधनंजयदेहफुलावैं ॥ येदशपौनशरीररहावैं ॥ ॥

दो० इन्द्रियदशतत्वपांचतेप्रकटभईयहजानि ॥
उभैउभैसोप्रीतिहैसोऊकहौंबखानि ॥

चौ० मुखतेश्रवणकहतयकसुनई ॥ त्वचापानिअसपरसैगुनई
नयनचरणतेप्रीतिरहावै ॥ नयनकसैपदलयपहुंचावैं ॥ ॥
रसनउपस्थभोगदोउचाहैं ॥ गुदानासिकानेहनिबाहैं ॥ ॥
मनइनइन्द्रिनकेसुखलागो ॥ भूल्योब्रह्मकांतिसबभागो ॥
तातेभयोदीनमतिहीना ॥ मनवासाअबकहौंप्रबीना ॥ ॥
हिर्दैबीचकमलयकअहई ॥ पखुरीआठकेरमहँरहई ॥
जोहिदलपरमनबैठतधाई ॥ तबनहँतैसीबिरतलखाई ॥
पूर्वदलपरजबचलिजावै ॥ दयाधर्मधीरजउपजावै ॥ ॥
दलआग्नेयमाहिंपगधरैले ॥ क्षुधातृषानिद्रालसबरैले ॥
ईर्षिरामदमत्सरछलद्रोहा ॥ अहंकारउपजैअरुकोहा ॥
नयऋत्यिदलैमाहंहठमाया ॥ आशातृषणासकगनाया ॥
पश्चिमदलसमतोउपजावै ॥ आनंदनिरभैचित्तरहावै ॥

बोयसउच्चाटनसंताया॥मयलज्ञावरनैउरभाषा॥ ॥
उत्तरदलपरजबमनटिका॥हसीविनोदकामकीचेष्टा॥
ईशानैसुधिबुधिसंतोषा॥क्षमाशीलसतनिरतिअदोषा॥
मनअग्नीमसुनिलपरधावै॥पवनसमानबारनहिंलावै॥
मोहिमनकारोकनकोइसन्ना॥चकरिलगावतचरणअनन्ता
नातरुजगतमिथमहंभंगा॥बाहुलकर्मबीचिकनसंगा॥ ॥

कुण्डलिया॥ औरसुनोतत्वपांचतेजोप्रगटेतनमाहि॥का
मकोहमदमोहमैंयवोलननभतेआहि॥बोलननभतेआ
हिवायुसेबाढेकाया॥बलकरनासुनिचलनपरासिमकोचव
ताया॥पावकतेआलसक्षुधातृषानींदसगबौर॥जल
तेमेदरुरक्तकफबिन्दपसीनाऔर॥

दो० महीतत्वतेजानियेअस्तिमांसअरुचाम॥
नाडीरोमासर्वमिलिभाशरीरवेकाम॥ ॥
तनझूठाझूठाकरतझूठासबसंसार॥ ॥
तनसच्चासच्चाजगतसच्चाकर्मविकार॥

चौ० तनमेंतुर्जदेहहैमूला॥व्यापकसूक्ष्मलिंगअस्थूला
तिनकोचारिअवस्थाकुरिया॥जागतस्वप्नसुषोपतितुरिआ
बानिहुचारिभांतिकीकरी॥पराप्रसन्तीमध्यबैखरी॥ ॥
दशइन्द्रीअरुपांचोतत्त॥तिनतेतनअस्थूलअनित्त
बालयुवावृद्धापनरोगा॥सोवनजागतसीततयोगा॥ ॥
मलडारनव्यवहारनिहारा॥घूलसंगयेलगेविकारा॥ ॥
जाग्रततासुअवस्थाजानो॥देखतजोकछुकरतपिछानो

दो० दसोवायुअरुतीनगुणापांचमात्राभास॥
चौदहस्वरअंतहकरणाधामेंकरतबिलास॥
पांचतत्वइन्द्रीदसोऔरपांचसंगवाय॥ ॥

। सतगुण हृदय देवता सोइ यह सुख पाय ॥

चौ० सोवत स्वप्न देखत जोई ॥ लिंगदेह तुम जानो सोई ॥
लिंगदेह जै तत्त्वन केरा ॥ सो मैं तुमतें कहौं निबेरा ॥ ॥ ॥
प्राण अपान समान उदाना ॥ व्यान बायु सत्रह सम जाना ॥
अन्तहकरण चारि सरचारी ॥ पाँच मात्रा सोउ निहारी ॥
बीसतत्वंत लिंगशरीरा ॥ स्वपन अवस्था तासंग बीरा ॥ ॥
जीवनाम ताहि कोपरही ॥ लिये मना सोई अवतरही ॥ ॥
कर्मकरत सत भोगत भाई ॥ स्वर्गनर्क महिं मेडल आई ॥ ॥

सो० जन्ममरण सुखशोग ॥ क्षुधापिपासा जानिये ॥
येषट उरमी रोग ॥ जीवसंग लागे रहत ॥ ॥

चौ० लिंगशरीर नाम सब पावै ॥ जबनर अजपा में मन लावै ॥
अजपा किं जो स्मसउ सासा ॥ सुमिरै नाम सहित बिश्वासा
स्वासलेत रातजलमकारै ॥ जागत सोवत नाहिं बिसारै ॥
होइ बासना सब सब नाशा ॥ मिलै ब्रह्म महं जिमि जल बासा
आनंद प्राण मनोमय कोसा ॥ तिहुनकेर तनु सुक्ष्म पोसा
अधिक नींद सोवै जब आनी ॥ रहै न ताको कछु पिछानी ॥ ॥
सुख समा प्रकासित भोपत्ति ॥ तस्य अवस्था आहि सुखोपति
तीनि अवस्था ना सत चीन्हा ॥ सब संग तुरिया नित्त नवीना
ईश्वर जीव भेद मिटि जावै ॥ तुरिअवस्था सोइ कहावै ॥ ॥
कोइ कोइ सन्त लहत हैं याको ॥ लक्षण सुनो बतावौं ताको
प्रेम बिबस तन की सुधि भूली ॥ गद्गद कंठ रोम रहै फूली ॥ ॥
कहुं उठि चलत बैठि कहुं जाई ॥ कहुं नाचन कर ताल बजाई ॥
बोलत वचन और को और ॥ समुझि परत मानहु मति बौरा
जड़वदन तन चंदन समासू ॥ नहिं लागत जेहिं सुधा पिवासू
बूझि परत नहिं पावन पाऊं ॥ कोहम कहां जात केहि ठाऊं

समचित शत्रु मित्र नर नारी ॥ सम चित पुत्र पिता महतारी ।
होंतू बंधु गर्व सब खोई ॥ त्याग अत्याग तहां नहिं कोई ।
दोष अदोष मिटी भ्रम काई ॥ निज स्वरूप सुख रहे समाई
मन चित अहंकार नहिं जावै ॥ बुधि पहुंचत पहुंचत नसि जावै

दो० जैसे पुतरी लोन की दधि थाहत गलि जाइ ॥
त्यों आतम के खोज ने सुधि बुधि जात हेराइ ॥
ज्यों सूरज के तेज ने देखि परत रवि जात ॥
त्यों आतम के तेज तें आतम रूप लखात ॥
ऐसो मत जिनका मिल्यो ते नर जीवन मोष ॥
ज्यों चाहे त्यों ही रहे तिन्हे न दोष अदोष ॥

चौ० चारि अवस्था शरीर सुनाई ॥ जहं जहं बसें कहों सो गाई
जाग्रत को चक्षुन में बासा ॥ लिंग देह कर कंठ नेवासा ॥
कारण तनु हिरदय महं राजे ॥ तुरी अवस्था गंगन विराजे
परमातमा ब्रह्म की जानो ॥ सब ते पृथक जो आदि पिछानो

दो० मुख्य प्रकृति महत्तत्त्व पुनि त्रयों गुण अतह कर्म ॥
इंद्री सुरतत्त बायु तन इनते पर जो ब्रह्म ॥ ॥
पर कारक चर अचर का परमात्मा सो एक ॥
जैसे बहु जल कुम्भ में रवि लखि परत अनेक ॥
आदि अन्त मधि मीश सोइ पश्यति जे मतिधीर ॥
जिमि मृति पात्र अनेक बिधि बसन तंतु गो क्षीर ॥

श्लोक एक ह्य मृत्पात्र मनेक रूपं क्षीरं च मेक बहु गो धेनुः
सुवर्ण मे कं बहु भूषणानि परमात्म्ये कंच शरीर भिन्नः ॥

दो० सो शरीर अनित्य है नित्य आतमा ब्रह्म ॥
तू ताही को अंश है भूल्यो है के भर्म ॥
जैसे मंदिर कांच के जात भयो कोइ स्वान ॥

आपनि छाईं देखि कै भूकत भाँहे रान ॥
जैसे मूरख सिंह ने आपन रूप निहारि ॥
कूदि पर्यो जल कूप में दूजो भर्म सम्हारि ॥
यथा सिचान उड़ान नभ निकसा जहँ गच कांच ॥
निज तन छाँह बिलोकि जड़ टूट भग्न भय खाँच ॥
तेरे ही अज्ञान ते दूजो भासत आइ ॥
ज्यों बिच फूटी आरसी मुख बहु परत लखाइ ॥
अपने ही अज्ञान सों सबसे कीन्हों बैर ॥
तेरो दुख तो को भयो और न दूजो गैर ॥
ताते तोही एक है नित्य अखंड अनूप ॥
जीव ग्रंथि को छाड़ि कै लखो आपना रूप ॥
काम क्रोह मद मोह भय राग दोष अभिमान ॥
मैं तैं हिंसा सोक भ्रम जीव लक्ष परमान ॥
जब तक इनके बस रहेगा है गो मन नाहिं ॥
तब तक सपने हु ना मिले निज स्वरूप के माहिं ॥
जीव आत मैं कर्म है पर मातमा बिसोग ॥
जन रघो यहि भेद का जानत ज्ञानी लोग ॥
कर्म उपासन ज्ञान मत तीनि बेद के माहि ॥
जो तत पर तिन बिंधि कहियत ज्ञानी ताहि ॥
ज्ञान भानु हरि भक्ति चख कर्म मुकर लै हाथ ॥
देखि परै निज रूप तब कहत दास रघुनाथ ॥

गीतिका छं० शुभ कर्म ज्ञान रु भक्ति तिहु बिन जन्म मरन न छूटई। चहु जाइ सुर पुर नाग पुर महि गिरत यम गरा कूटई ॥ सुनि भूप ऋषि के बचन क्षिप्र पुत्र शोक बिहाइ के। ला-गो करन जप योग संयम ज्ञान मुक्ति हि पाइ कै ॥

दो॰ कह्योसूत सोनक सुनो ऐसा है सत संग ॥
सयनजीत नृप ब्रह्म में भयो लीन तजि अङ्ग ॥
सत्य वृन्दावन मोक्ष प्रद कुमति हरन त्रैशूल ॥
सत सङ्गति अस जानि नर करन करैं सुखमूल ॥
इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत सयन जी न प्रसंग बरनो नाम अष्टत्रिंशो ऽध्यायः ३८
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गराप गिरा सुख दानि ॥
श्री हरि बंस पुराण की कहौं अब कथा बखानि ॥
पुनि सोनक बोलत भये नाइ सूत पद भाल ॥
सत्सङ्गति महिमा कछुक कहिये और कृपाल ॥
चौ॰ कह्यो सूत सत सङ्ग समाना ॥ और न दूसर बस्तु जहाना ।
जो सत सङ्ग करै मनु लाई ॥ उपजै ज्ञान मिटै भ्रम काई ॥
मोक्ष आदि सुख चाहै कोई ॥ सतसङ्गति करि पावै सोई ।
जप तप योग करै ब्रत दाना ॥ सतसङ्गति बिन लघु फल जाना
सत सङ्गति क्षण मात्रहु होई ॥ तेहिं सम तुलै न तप लख कोई
सुनो एक इतिहास पुरानी ॥ जाते परै महातम जानी ॥ ॥
मुनि बसिष्ठ एक बार सुभाये ॥ गाधिसुवन के आश्रम आये
बिश्वा मित्र बहुत सनमाना ॥ रहे तहाँ कछु दिन सुखमाना
चलन लगे जब बिधिसुत येहा ॥ कीन बिचार गाधि सुत येहा
पूजा इन्हें दीजिये काहा ॥ जेहि ते खुसी जाय ऋषि नाहा ।
लाख बरष जो तप मय साधा ॥ तेहिं मा मुनिहिं देव सब साधा
करि संकल्प दीन ऋषिराई ॥ पाइ बसिष्ठ चले हरषाई ॥
दो॰ इक दिन बिश्वामित्र हू गे बसिष्ठ के भौन ॥
तिन दीन्ह्यो सत संग फल उभै घरी कर जौन ॥
चौ॰ गाधिसुवन मुनि कह्यो रिसाई ॥ मैं तोहि तप दीन्ह्यो अधिकाई

तेहिं सम युगुल घरी किमि कीन्ह्यो ॥ न्याव चुकावन दोउ चलि दीन्ह्यो ॥
आये शंभु तीर कैलासा ॥ तिन पठयो ब्रह्मा के पासा ॥
तब दोउ ऋषि ब्रह्म पहँ गयऊ ॥ सब बिर्त्तान्त सुनावत भयऊ ॥
चतुरानन अस कहा बिचारी ॥ जाहु दोऊ हरि पास सिधारी ॥
सुनि विधि बचन दोऊ मुनिनाथा ॥ जाइ बिष्णु पद नायो माथा ॥
गाधि सुवन बोले हरखाई ॥ नाथ न्याव इक देहु चुकाई ॥
हमरे भवन गवन इन कीन्हा ॥ जस कछु बना सो आदर दीन्हा ॥
बिदा होत तप सहस पचासा ॥ इन्ह दीन्ह्यों मैं सहित हुलासा ॥
हौं चलि आयों इनके धामा ॥ कछुक दिवस कीन्ह्यों बिश्रामा ॥

दो० चारि घरी सत सङ्ग इन कीन्ह्यो स्वप्न मझार ॥
तेहि माते युग दंड मोहिं दीन्ह्यो चलती बार ॥

चौ० दुइ माते काहे अधिकाई ॥ यहै न्याव प्रभु देउ चुकाई ॥
सुनि मुनि बचन बिष्णु अनुमाना ॥ ऋषि सत सङ्ग प्रभाव न जाना ॥
जो मैं बहु बिधि कहब बुझाई ॥ तब हुँ न इनकी संशय जाई ॥
अस मन समुझि कह्यो श्रीनाहू ॥ दुइ जन एक शेष पहँ जाहू ॥
तिन काला बहु रहो लवाई ॥ पुनि प्रभु सहित चले हरखाई ॥
जाइ शेष पहँ भाख्यो हाला ॥ कह अनन्त जो तुम यहि काला ॥
धरहु धरनि दुइ माते कोई ॥ देहुँ चुकाइ न्याव मैं सोई ॥
कह ऋषि लाख बरष तप कीन्हो ॥ तेहि माँ अर्द्ध समर्पि दीन्हौं ॥
आधा रहा हमारे पाहीं ॥ तेहि तप तेज मही रहि जाहीं ॥
धार्‌यो शीस शेष सिर टाला ॥ सधी न छिति ऋषि भये बिहाला ॥
तब बिधि तेहि रि कह्यो बुझाई ॥ मुनि बसिष्ठ बोले हरखाई ॥
चारि घरी स्वपने के माहीं ॥ साधु सङ्ग कीन्हों बहु नाहीं ॥

दो० उभय घरी ऋषि को दिह्यों रह्यो उभय मम पास ॥
ताके फल बल भूमि यह घट पर करो प्रकास ॥

चौ० मुनिशिरमें विलीन अहिराऊ। महिमहिं गे सतसङ्ग प्रभाऊ॥
सङ्ग प्रताप है यहि अधिकाई। नाधि सुवन तव रहे लजाई॥
योग तपस्या त्यागन कीन्हों॥ सतसङ्गति में तन मन दीन्हों॥
अस सतसङ्ग अहै वरियाई। और सुनो अब कहौं बुझाई॥
द्विज इक रहा बड़ा अविचारी॥ तस्कर कर्म करै सहि गारी॥ ॥
सो इक दिवस नर्मदा पासा॥ गयो तहां निवसें हरिदासा॥ ॥
तिनकी चोरी करि बेहेला॥ बसत भयो निशि सन्त निकेता॥ ॥
कथा भई कछु वारन हाहीं॥ अनमन बैठि रहा तिन पाहीं॥ ॥
जब रजनी बीती युग जामा॥ तब हरिजन कीन्हेनि विश्रामा॥
सोवत जानि विप्र अकुलाई॥ चोरी करन लाग हरषाई॥ ॥ ॥
लखि यमराज क्रोध अति कीन्हा॥ बोलि दूत अस भाषे लीन्हा
यहि भक्तन की कीन्हि सि चोरी॥ लावहु बेगि नर्क महं बोरी॥ ॥
वह द्विज है सन्तन के ठाईं॥ ताहि लेन को नीति विधि जाई॥ ॥
कह्यो धर्म जौनी विधि पावो॥ तौनी भांति यहां तक लावो॥ ॥
सुनत दूत यक नक इक भयऊ॥ हरिजन धाम तहां चलि गयऊ॥
मन्दिर निकट रहा लगि बाढ़ा॥ निकसा द्विज चोराय अहि काय
जल थल जान सन्त सब धाये॥ चरणोदक तुलसी मुख नाये॥
राम राम कहु राम बखाना॥ इतने माहिं मुक्त भे प्राना॥ ॥ ॥
सुभट रमो रेडारि गर फांसा॥ दूत लिया ये यम के पासा॥ ॥
लखि द्विज धर्म तेल औटायो॥ वरल कराह मांझ डरवायो॥ ॥
भयो सनेह सुरभि सम ताही॥ करै अनन्द परा तेहिं माहीं॥ ॥
बहुरि बरत खम्भा भेंटवायो॥ सीतल भा गोला औटायो॥ ॥
सेत थी आभा अर्की समाना॥ असिवन मांग भे [illegible] कलाद॥
लोहा कांट सुमन सम भयऊ॥ तब लोडारि [illegible] भयऊ॥
विष्टा पीब कीट सब भागा॥ धर्मराज लखि [illegible] जागा॥

करतबिचारमनहिंमनलाये ॥ तेहीसमयऋषिनारदआये
बोलेवैवस्वतकरजोरे ॥ नाथएकबड़िसंशयमोरे ॥ ॥ ॥
यहपापीअतिचोरलबारी ॥ ताहिदीन हमसांसतिभारी ॥ ॥
याकेदुखकछुभयोनगाई ॥ सोकारणमुनिजानिनजाई ॥ ॥
दो० धर्मराजकेबचनसुनिबोलेऋषिहरषाइ ॥
याहिमगायोकहांतेसोमोहिंदेहुबताइ ॥
चौ० नबरबिसुतसबहालबखाना ॥ जेहिबिधिसंतनदिगतेआना
सुनियमबचनकहाऋषिराजू ॥ बड़अपराधकीनतुमआजू ॥
सन्तमहातमतुमनहिंजाना ॥ जिन्हेंबखानतवेदपुराना ॥ ॥
जगमहंनहिंकोइसन्तसमाना ॥ जिनबससदारहतभगवाना
दासीशिशुमेंपाइउछिष्टा ॥ बिधिसुतभयोऋषि नमहंसिष्टा
सूर्भैयोहीतेसंगप्रभावा ॥ तिनमोहिंजलचरपासपठावा ॥
देखतमत्स्योधरयोबपुआना ॥ पुनिशुकपहंपठयोभगवाना ॥
सोऊनिजशरीरतजिदयऊ ॥ तबनृपसुततेसूभतभयऊ ॥
देखलआवादिव्यबिमाना ॥ तेहिचढ़िबोलासुवनसुजाना
दो० प्रथममेंमैंजलचररह्योजहांदरशतुमदीन ॥
तेहिफलपायोकीरतनुतहांकृपातुमकीन ॥
शुकतनुतजिनृपसुतभयोंपुनिभेदरशतुम्हार ॥
अबनभजालबिमानचढ़िहरिलोकसिधारहमार ॥
सो० संभाषणअरुस्पर्शकैरेधरैजेसेवउर ॥ ॥
तस्यसुकृतफलसर्सकहिनसकतश्रुतिसहसमुख ॥
चौ० सुनिमोरमनआनंदछावा ॥ संतप्रभावअमितलखिपावा
हिंविप्रयहतिनकेपासा ॥ तुमअहिंबनकतकीन्हेंग्रासा ॥
साधुनसमरामअबेरा ॥ काहनछांडिदिह्योतेहिंबेरा ॥ ॥
अबतेकह्यामानिममलीजे ॥ याकोपठैधामहरिदीजे ॥ ॥

अससौनकसतसंगप्रभावा। बड़पापी हरधामसिधावा॥
वायुपुराणकेरइतिहासा। यहमैंतुमतेकीनप्रकासा॥ ॥
नलिनीदलगतजललवजैसे। नरजीवनहैचंचलतैसे॥॥
छिनहींसज्जनसंगतिकरई। तेहिनौकाचढ़िभवनिधितरई॥
चहुंयुगचहुंश्रुतिकहैबुधलोई। बिनसतसंगतितरैनकोई॥

हरिगीतिकाछं० सतसंगबिननहिंतरैभवनिधिदानक्र-
तबरुबहुकरै। असजानिजेनरचतुरकरिसतसंगहरिनामैं-
रैं॥ जगआइनरतनपाइसपनेहुंसाधकेढिगनगयो।
तेहिजानिपैपशुसरिसमानुषदेहभयनौकाभयो॥

दो० साधनकेसतसंगकीमहिमाअगमअपार॥
बरनीजनरघुनाथकछुनिजमत्याअनुसार॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेही
कृतसतसंगमाहात्म्यबर्णोनोनामएकोनचत्वारिंशतमोऽध्यायः३९॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुरवानि॥
कहौंनवमअसकन्धमतकछुब्रह्मांडबखानि॥

चौ० बहुरिसूतबोलेमृदुबानी॥ सुनौकथाऋषिकहौंबखानी
एकबारयमराजप्रबीना॥ आपनदूतबोलिसबलीना॥ ॥
कह्यौकिमृत्युलोककेमाहीं॥ तुम्हराकोईदुसरिहानाहीं॥
एकबातयहजानिरहियो॥ साधुनकोकरकभूनगहियो॥
वेतोहैंपरमेश्वरप्यारे॥ रहैंरामकरबानाधारे॥ ॥ ॥
वैशावसबकोपूज्यसदाहीं॥ स्वर्गरसातलभूतलमाहीं॥
स्वर्गदेवअहितलअनुसरहीं॥ मनुजपूज्यमहिंनिजहितकरहीं
तेहितेजोतुमहूलखिपायो॥ तुरतदूरितेशीशनवायो॥ ॥
जोममआपनिचह्यौभलाई॥ तौनसतायोसंतहिजाई॥ ॥
साधुदुखावैजेफलपावै॥ तनधनकुटुंबनासहूजावै॥ ॥

जिनजिन बयर भक्त सों ठाना ॥ याइ निदुख बहु सुने प्रमाना ॥

दो॰ हरनाकुस प्रहलाद ते दुरयोधन पंचालि ॥
कंस उग्रसावरा अनुज में सुकंठ अरु बालि ॥

चौ॰ दुरबासा करि थि बहु दुख पायो ॥ अम्बरीष ते बयर बढ़ायो ॥
नृपनृग भे गिरिगिट जग जाना ॥ सुपचभक्त को मरद्यो माना ॥
धृष्टबुद्धि सो आपुइ मारा ॥ चंद्रहास का सरल बिचारा ॥ ॥
सुरति सुधन्वा ते गसठानी ॥ शंख लिखित मुखछबि भे हानी ॥
सुनत दूत बोले करजोरी ॥ कहौ नाथ बिस्तारि बहोरी ॥ ॥
केहि बिधि दुरबासा गे जारे ॥ धृष्टबुद्धि केहि बिधि मारे ॥ ॥
नृग गिरगिट भे केहि बिधि भाई ॥ प्रथक सब कहौ बुझाई ॥ ॥
कहर बि तिनके कहौं मलियथा ॥ प्रथम अम्बरीष की कथा ॥ ॥
राजा अम्बरीष बड़ साधू ॥ तिनके उरमें क्षमा अगाधू ॥ ॥ ॥
सब स्मन कुश चरण में राखे ॥ मुख ते राम कथा नित भाखे ॥ ॥
कर सों हरिमंदिर बरम्हारे ॥ नयनन ते प्रभुरूप निहारे ॥ ॥ ॥
सिर सिअ्याम पद करत प्रनामा ॥ रसन थप्रिय प्रसाद प्रभुनामा ॥
श्रवननि सुने चरित हरि केरे ॥ अपर काज के जात न नेरे ॥ ॥
कहँ लगि कहौं चरित में तिनके ॥ व्यंजन हरि रहि डोलायो जिनके ॥
तिनके भवन गये दुर्वासा ॥ ता दिन रत नृप रहे उदासा ॥
अविहि देखि भूपति सुख पायो ॥ दीन निमंत्रण सबै टिकायो ॥
रैनि जागरन करि उत्साहू ॥ होत बिहान उठे नरनाहू ॥ ॥
प्रातक्रिया करि आइ महीसा ॥ जान्यो दुवादसी पल तीसा ॥
बूझा गुरु बोलि का कीजे ॥ पारन हम अब केहि बिधि लीजे ॥
मुनि की पूजा है युगजामा ॥ होत बिरोध किहि दोउ कामा ॥ ॥
भृगुमुनि कह्यो मिला हरि धोई ॥ करहु पान कछु दोष न होई ॥ ॥

दो॰ गुरु की आज्ञा पाइके नृप चरणोदक लीन ॥

दुर्बासा अरु बिप्र जानि तहँ आइ क्रोध अति कीन ॥

चौ० नृप हमें निमंत्रन दीन्हें । तोहीं प्रथम पान जल कीन्हे ॥
क्रोध अगिनि ते नृप कुल जेता । करहुं भस्म सब तोहिं समेता ॥
अस कहि पटक्यो जटा बिसाला । प्रगटी तुरत अगिनि की ज्वाला ॥
सनमुख चली भूप के जबहीं । नरपति रामहिं सुमिर्यो तबहीं ॥
चल्यो सुदर्शन चक्र कराला । अगिनि खाक करि मुनि तन चाला ॥
भागे ऋषि गे अजपार नाई । तेहि क्षरा गे हद ब्रह्मपुर छाई ॥
कीन बिदा ब्रह्मा बरि आई । हरिद्रोही को सकै बचाई ॥ ॥
तब गे ऋषि शंकर के पासा । देखि शंभु अस बचन प्रकासा ॥
पढ़ेउ पुरान सहस सब बेदा । जान्यो नहिं भक्तन कर भेदा ॥
महा प्रलय महँ बचत न कोई । तबहुँ न नाश भक्त कर होई ॥
अचल धाम साकेत बिहारी । निवसत तहाँ दिव्य बपु धारी ॥

श्लोक मार्कण्डेय पुराणे सदाशिव वाक्यं दुर्वासा प्रति ॥ महति निल-
ये ब्रह्मन् ब्रह्माण्डे जलप्लुतः । न तत्र नाशो भक्तानां सर्वे पन्थ विशिष्यते ॥

चौ० ताते जाहु यहाँ ते भागी । नाहिं त जरी नगर मम आगी ॥
तब बैकुण्ठ गये दुरबासा । व्याकुल भाखि बचन परकासा ॥
हे ब्रह्मण्य देव आरतिहर । शरणापाल पूरण करुणाकर ॥
हाइ हाइ प्रभु लेहु बचाई । चक्र सुदर्शन देह जराई ॥ ॥
सुनु द्विज कहा रमापति टेरी । मोहिं नहिं शक्ति बचावन केरी ॥
है यहि बिधि अगणित गुण मेरे । भक्तबसल ताके सब चेरे ॥
यथा समारि तेज के पासा । दीपो गरा नहिं करत प्रकासा ॥
भक्तन पराधीन हौं कैसे । पक्षी बंध्यो डोरि महँ जैसे ॥ ॥
साधुन मेरो उर अस गेहऊ । तिन तजि छिन हू जात न रहेऊ ॥
दारागार पुत्र अपनाना । तन धन मोह मानि कल्याना ॥
सकल त्यागि मम शरणो आवै । तेहि मैं कैसे तजि जावै ॥

याते अधिक भक्त प्रियमोहीं। दुरवासा समुझावों तोहीं॥
तिनतें बैर कीन्ह तुम जाई। भागे यहां न रहे भलाई॥
होन कसूर मोर कछु भाई। तौ मम कहे माफ हु जाई॥
सदा दास मम की रखवारी। फिरहिं चक्र को सके उवारी॥
तातें जो निज चहौ उबारा। तो फिरि जाउ भूप दरबारा॥
बड़े दयाल दीन दुखहारी। देखत तुम कहं लेहैं उबारी॥
ऐसे बचन कहे जगदीसा। मुनि ऋषि चले काटि जन सीसा॥
अंबरीष दिग पहुंचे जाई। मे सीतल नृपलीन बचाई॥
पद परवारि भोजन करवाये। तिन पाछे उठि आपुहु पाये॥
दो० लज्जित है ऋषिराज तब कीन्हों तप बन जाइ॥
भावै सो बर मांगिये कह्यौ रमापति आइ॥
दुरवासा बोले बिहंसि यह बर दीजे मोहिं॥
दश सहस्र अंबरीष हौ जन्म धरन कहं होहिं॥
सो० मुनि बोले भगवान। अंबरीष मम भक्त है॥
सो न धरी तनु आन देन कह्यौ सो लेहु तुम॥
चौ० जन्म हजार आन के जोई॥ मम अवतार एक सम होई॥
तातें अंबरीष हित लागे। दश अवतार धरब हम आगे॥
सहज सुभाव प्रणात अनुरागी॥ नरतनु धरेउ दास हित लागी॥
अस प्रभु प्रणात पाल को आही॥ भजिये योग भजिय जग जाही॥
अपर देव आपे बर देवें॥ आपै मरा मांगि सुद लेवें॥
रामभक्ति बिन केवल ज्ञाना॥ सो ऊ निरस श्रम साधन नाना॥
जैसे बिना पुरुष की नारी॥ केहि ते दुख निज कहै बिचारी॥
... देव लन्द पे जो पाऊं॥ तौ लोको परलोक नशाऊं॥
सो भागिनी करै क्रम खोटा॥ तऊ लाहि बड़ि पति की ओटा॥
गोपी गोप पंडु सुत पांचा॥ कौन कुकर्म करत तिन बांचा॥

कृपाकृपासबवंजय पाई॥यज्ञऊरथभ निजदेह जराई॥

दो॰ भगवतगीतामें कह्यो अर्जुनसेंगोहराय॥ ॥ ॥
भक्तियोग छूटिजेनहीं सबदिनबढ़तजाइ॥
भ्रष्टभयेपंथीसरिसकीनपंथमेंबास॥ ॥
भोस्मयेपुनि चलिमिल्यो निमिसोकोममदास॥
दैवीमायागुणमयीमहादुरत्ययतात॥ ॥ ॥
ममआश्रयहैजसममसो बिनप्रयासतरिजात॥

इतिश्री बिश्रामसागरसकलमंगलआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेही कृतअम्बरीष कथाबरनोनो नाम चत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
बरनौंजैमिनकीकथाकछुनृपनीतिबखानि॥

चौ॰ मुनियमराजकह्योमृदुबानी॥अम्बरीषकीकथाबखानी
अबसुनु दूसर कथासुनाऊं॥भूपएककेरलथतिनाऊं॥ ॥
तिनकेतनयभयेचंद्रहासू॥मूलनक्षत्रजन्मभातासू॥ ॥
कछुदिनबादिबिपतिअसिजागी॥धाशिहांसेधाहीलयभागी
कुन्तलपुरकुंतलपनरेशा॥जेहिनृपसबकरुदेइं हमेसा॥
तस्यदेवानधृष्टबुधिनामा॥रहीआइधाहीतेहिधामा॥ ॥
करिकिंकरपालनसुतसोई॥तिनकरभेदनजानतकोई॥ ॥
यहिबिधिभयेबरषषटकेरे॥बुद्धिवानअतिरूपघनेरे॥ ॥
तेहि यक दिनब्रह्मभोजप्रकाशा॥जुरेऋषयतहंगेशशिहासा
बिषयानामसुतानिजलीन्हें॥बैठदेवानचिन्हद्विजचीन्हे॥
यहिकन्याकायाहीबालक॥बरीबिशेषिकह्योउद्दालक॥
अहंसुतापतियहि बिधिचाही॥दुष्टबोलिबनपठयोताहीं॥
जाइदुरन्तरबोलेसोई॥लेउघाइजोतुमरेहोई॥ ॥ ॥
पितामातपायेदुखआयो॥तिनहमकावधहेतपठायो॥

है एक गोली सुखद हमारी ॥ भजि लीजै पुनि डारो मारी ॥ ॥
है गराडु की सुत मुख बीचा ॥ पूछ्यो मालस शिरकरि नीचा ॥

दो० तदाकार है हतन हित दई नयन की सैन ॥
लखि जल्लादन के कठिन भई दया उर ऐन ॥
हरि प्रेरित रघुनाथ थल बोले आपुस माहिं ॥
ऐसो सुन्दर बाल यह बध न योग्य है नाहिं ॥
छठी आंगुरी कटि रहै काटि लिहिलि सोइ चीन्ह ॥
शशिहासै बन छाड़ि कै जाइ दिवानै दीन्ह ॥ ॥

सो० ठाढ़ कियो खग माल । चहुं दिसि बैठे घेरि मृग ॥
आयो इक महिपाल । नाम कुलिन्द अपुत्र सोइ ॥

चौ० चन्द्रहास लखि लीन उठाई ॥ प्रमुदित मनहुं रंक निधि पाई ॥
गो लै भवन कीन उतसाहा ॥ दिहिसि दान जाको जस चाहा ॥ ॥
निज सुत समुझि पढ़ावत भयऊ ॥ पुनि नृप राज तिलक सो दयऊ ॥
लागे करन राज हरषाई ॥ पालहिं प्रजहि सुखी सब भाई ॥ ॥
मन क्रम करै भक्ति हरि केरी ॥ सन्त समागम प्रीति घनेरी ॥ ॥
गृह गृह प्रति हरि गुण गण होई ॥ रामनाम सुमिरन सब कोई ॥
जो कोइ भक्त भवन चलि आवै ॥ करि प्रणाम आसन बैठावै ॥
षोडश भांति पूजि सनमानै ॥ हरि हरि जन में भेद न आनै ॥ ॥
एक बार निज कटक बनाई ॥ सुदिन साधि नृप चढ़ा बजाई ॥ ॥
जहँ तहँ परी मारु नृप जीते ॥ कोइ कोइ आइ मिले भय भीते ॥ ॥
सबसों राम भक्ति करवाई ॥ करण कहै तब दैवे जाई ॥ ॥ ॥
यहि प्रकार नृप जीति बसाये ॥ पुनि निज पुर चंदनावति आये ॥
पितै पूछि अरु मानि बड़ाई ॥ नृप कुन्तल पै चौथि पठाई ॥ ॥
पहुंचे भृत्य भूप दरबारा ॥ दीन दिवान खजाने डारा ॥ ॥ ॥

सो० उतरे ताही धाम । हरिबासर तेहि दिन रहे ॥

रामनामसियरास। कहिनिधिकीन्हीनाससब॥

चौ॰ भोरभयेजागेसबधारी॥ आइदेवानकहीकटुबारी॥ ॥

काकुलिंदराजालखपायो॥ हाइहाइकरिरातिबितायो॥ ॥ ॥

बोलिसेवकराजेकोइ॥ मराकहैमरिगासोइहोई॥ ॥ ॥

हमरेनृपकरसुतअसभयऊ। सबभूपनतेकरुनिजलयऊ॥

इन्हेंजानिजनचौथिपराई॥ सुनिदेवानमनसंशयआई॥ ॥

सुतकुलिन्दकेरहेनकोई॥ भयोकवैसुनिबोलेसोई॥ ॥ ॥

भूपशिकारगयेोएकबारा॥ मिल्योतहांएकसुभगकुमारा॥

आनिभवनसुतमानिपढ़ायो॥ दीनराजतिनभक्तिबढ़ायो॥ ॥

सुनिदेवानविसमयपेज्ञा॥ सोइनहोइजेहिमारनभेज्ञा॥ ॥

तुरतैगयोमहाथलिपासा॥ हाथजोरिअसबचनप्रकासा॥ ॥

नाथसुतामममईसयानी॥ नृपसुतइकऊहरलबरजानी॥ ॥

जोराउरकीआज्ञापावों॥ मदहूदेखिानेजनयननआवों॥ ॥

सो॰ सुनिनृपआयसुदीन। तुरतभवननिजआयहू॥

बोलिमदनसुतलीन। कहिसिजावबरखोजहित॥

चौ॰ हैतयारचंदनावलिगयऊ॥ चन्द्रहासलखिआदरदयऊ

धृष्टबुद्धिसोइबालकदेखा॥ बहुरिविचारयोमरणविशेषा।

दुखददुसहआहिमनाथीना॥ खलबसहितविधिकछूनकीन्हा

ऊपरहितअन्तरकुटिलाई। बोलाबचननिकटबयठाई॥ ॥

खरचुभूरितुम्हेलघुलाभा। बहुरिवहतमुहिदेवैकामा॥

जोइहवांआवैममबस्ता। तोकरिदेहुतुम्हेंमैंसस्ता॥ ॥ ॥

कहचन्दहासकौनबिधिआवै॥ तुमबिनउहांनकोऊपावै॥ ॥

तातेतुमहींजाहुसिधाई॥ बोन्हतउहांतुम्हेसबभाई॥ ॥ ॥

चामरछं॰ बैतएककामधामलोगवागयोकहीं। जातचं-

द्रहासकोपठाइदीजियेसही। देखिवेकिलालसादेखाइ

देइआइयेकरदहीमदन्नतेजुबेगिमांगिलाइये॥
चौ०असकहिखलदूकचीठीकीन्हों॥तामेंयहश्लोकलिखिदीन्हो
श्लोक विषमस्मैप्रदातव्यंत्वयामदनशत्रवे।कार्य्योका।
य्यंनकर्त्तव्यो।कर्तव्यंकिलमेप्रियम्॥ १ ॥
चौ०लेखतचन्द्रहासचलिभयऊ॥मारतहयकुन्तलपुरगयऊ
भूपवाटिकादेखिसोहाई॥उतरिनहान्योंसरसुखपाई॥ ॥
हरिपूजनकरिबसनबिछावा॥बांधिअश्वसोयोतेहिठावा॥
ताहीसमयमहीपकुमारी॥सखिनसहितआईफुलवारी॥
चम्पकमालिनिनामसुधन्या॥विषयानामदिवानकीकन्या
चन्द्रहासकोदेखिलोभानी॥पागपत्रखोल्यौनिजपानी॥
बांचिपितहिरीझीमनमाही॥मारनयोगकुंवरयेनाहीं॥॥
काजरपोछिदृगनतेलीन्हों॥विषजहंतहंबिषयालिखिदीन्ह्यो
शंभुशिवाबारेनेसेई॥होहुप्रसन्नमिलैंवरयेई ॥ ॥ ॥
छविमयमूरतिहृदयबसाई॥नृपजासहितभवननिजआई
चन्द्रहासजागेलखिबारा॥आयेछिप्रदिवानदुवारा॥ ॥ ॥
भेंटिमदनकरिपातीदीन्ह्यो॥बांचिबेगिबड़आदरकीन्ह्यो
तुरतपुरोहितलीन्हबोलाई॥दईब्याहिविषयासुखपाई॥ ॥
हर्षितसुवासिनिमंगलगाये॥विप्रनदानबिबिधिबिधिपाये
बाजैंबाजनरागमिलावैं॥नाचैंनटीचटपटीलावैं॥ ॥ ॥
दूसरेदिनतेग्रामसिधावा वेगवन्तनिजपुरकाआवा॥॥
भाटनकीरतिविदितसुनाऊ॥अवसासुनतजनुलागतघाऊ
भवनआइसुनदूलहदेख्यो॥रागरङ्गबहुभांतिपरेख्यो॥ ॥
तेहिप्रसङ्गसुनबोल्योरिसाना॥किहेकहायबातबरवाना॥ ॥
बांचिपत्रशिरपीटनलागा॥लिख्योकहामैंमन्दअभागा॥
पुनिमारनहितरचिसिउपावा॥सुतऊअनाथहैमोहिभावा॥

चन्द्रहासयद्यपियगपरेऊ॥ तद्यपिदुष्टदयानहिंकेरेऊ॥ ॥

दो० दुष्टनछाड़तदुष्टताकैसौहोइअधीन॥
ज्योंजलकोमलमेंचलैजोकवक्रगतिलीन॥

चौ० पुनिनृपदरबारपठायो॥ आपुउभैजल्लादबुलायो॥ ॥
बोलाजाइ आजिमठदेऊ॥ डारोमारिजोआवैकोऊ॥ ॥
तबसठचंद्रहाससेबोला॥ आवहुपूजिदेविकुलमोला॥
सुनतचलेकरतलधरिथारा॥ तेहीसमयकुन्तलपभुवारा॥
बोलागुरुनेशीशनवाई॥ होइसुगतिजेहिकहोउपाई॥ ॥
कहगालवऋषिसिखसुनिलीजे॥ राजसुताचन्द्रहासेदीजे॥
सबसोंनेहगेहतजिराई॥ सीलाधरिसुमिरोबनजाई॥ ॥
सुनिनृपकहाअवैकोउजावै॥ चन्द्रहासेममपासलैआवै॥
मदनबिचारिसुरतउठिधायो॥ भूजलजातपन्थमेंपायो॥ ॥
बोलाचलोभूपबोलवाया॥ देईराजकाजनिजआया॥ ॥
शिष्या छं० देवीपूजेहोंजावों॥ राजापैकैसेआवों॥ धरिमो-
कोलाचोजू॥ राजालेराजावोजू॥

चौ० देवीपूजैमदनसिधाये॥ चन्द्रहासराजाढिगआये॥
देखतब्याहिसुतानिजदयऊ॥ राजतिलककरिबनकागयऊ
इहाँमदनगेआजिनिकेता॥ दुष्टनमारीखड्ग सचेता॥ ॥
धरेभुराइ बिलगकरिदीन्हें॥ असफलखलसङ्गतिकेकीन्हे

दो० दुष्टसंगमिलजोकरैताहूकोदुखहोइ॥
देहजीवसोसिया घरीसिररसनाभतिजोइ॥
दैविहालकाहूकही धृष्टबुद्धिसोंजाय॥
आयनिरखसुतासिलासिरपटकिमराकहिहाय॥
जोजनकाअनभलतकैसोइजायसठखीस॥
ज्योंरजतेमोरैरविहिउलटिपरैनिजशीस॥

चौ० चन्द्रहाससुनियहसबहाला॥निर्बैरीसमसन्तकृपाला
आयोचलिदेवीकेधामा॥कीनशक्तिलखिनृत्यप्रणामा॥
बोलीथदोउशत्रु तुम्हारे॥मद्यीक्रोधकरिआजुसंहारे॥ ॥
मागहुबरजोतुम्हेंसोहाई॥देहुमातुफिरिइन्हेंजियाई॥
छप्पैछं० नसकरकेतुकधर्मदुष्टकेकुलगमस्वाना॥किर-
पिनिकेकुलदानमूढ़केकुलविज्ञाना॥कसबीकेकुललाज
शान्तिकुलनरकामिनके।विसनीकेकुलद्रव्यधामकुलसब-
लभामिनके॥हिंसककेकुलदयादिलकपटीकेकुलमित्रस-
ग क्हैरघुनाथसनाथइमिहरिजनकेकुलभजुजग॥

दो० दुर्जनतजैनदुष्टतासज्जनतजैनहेत॥
कज्जलतजैनश्यामतामातीतजैनश्वेत॥

चौ० सुनिजियायेसोदोउदीन्हें॥सन्तसलायेकरफलचीन्हें॥
कीनराजजलपङ्कजनाई॥दीनिभक्तिभुवमेंफेलाई॥ ॥
हयनजैनेवृषदवजलजोरे।यथाभूपतसप्रजाप्रचारे॥ ॥
जोयहकथासुनैवाकहई॥धनबुधहोयहरषमेंरहई॥ ॥
फलजैमिनमेंबहुविधिगावा॥तातेंहेंसंक्षेपेभाषा॥ ॥ ॥
देखोहरिजनतेकरिद्रोहा॥आपुइदुखपायोबसमोहा॥
असिहरिभक्तिसुखदछलत्यागी॥तनुधरिकैरैसोईबड़भागी

दो० यस्यनविद्यादानतपजपनशीलगुणधर्म॥
तेमनुष्यमहिभाराहितप्रकटैनाहकब्रह्म॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम-
सनेहीकृतचन्द्रहासआख्यानबर्णनोनामएकचत्वारिंशोऽध्यायः४१॥

दो० श्रीमिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कहौंउत्तराध्यईमतकछुधर्मोनरजानि॥ ॥

चौ० मुनिरषिसुतदूतनतेकहेऊ॥चन्द्रहासगुणसुनिमुमलहेऊ

और सुनौ यक भयो भुवारा ॥ नाम निरग जानत संसारा ॥ ॥
चक्रवती नृपनीति निधाना ॥ दाने धर्म अनेक विधाना ॥ ॥
हरि बृषान खुर जल मदाई ॥ जलजलूम गुहि बसन चोटाई ॥
सुरभी सहस विप्र कहं देवै ॥ तेहि पाछे जल अन्नहिं सेवै ॥ ॥
तेहि पुर सुपच भक्त यक रहई ॥ देसक नाम नाहि सब कहई ॥
सुकृत जान हरि दाया कीन्ही ॥ कामधेनु तेहि को प्रभु दीन्ही ॥
पुरबासी बिप्रन लखि पाई ॥ आइ भूप तें बात चलाई ॥ ॥
सुजान प्रधान छं० महाराज है डोम के एक गाई । नहीं दूसरी
सान मा मूल खाई । सुनी स्वर्ग के माहिं है धेनु ऐसी । न जानी सु-
पच ने लही भाँति कैसी ॥ भली भाँति ते जोइ से दान देवै । भखे
कोटि हू ले पेर पुन्य लेवै । सो ताते गऊ आनि विप्राहि दीजे ।
अमित पुन्य को फल इसी द्योस लीजे । महीपाल सुन्ते हिये लो-
भ कीन्हों । कहीं मोल ला वो अभी दाम दीन्हों । गये विप्र बोले
कल धेनु मेरी । जु बेचौं कहा हौं नहीं गाइ मेरी । प्रभू की अहै भोग
पै को लगावौं । बचै जौ निजू अन्न हू ताहि पावौं ॥ भयो क्रोध विप्रै
गयो भूप पारी ॥ कह्यो नाथ सूपच करै मान मारी ॥ गऊ को दुहै
छीर घृत आपु खावै । तुम्हें लेत जानी प्रभू की बतावै ॥ पम्मु भू-
द्र नारी सरं टोल जावत बिना दाड दीन्हे नहीं ठीक आवत ॥

दो० कह महीप बिप्रहु सुनौ सूपच है हरिदास ॥
ताहि सतावै सो इ जो चहै निरे को बास ॥ ॥

चौ० ताते हौं न सतावब साधू ॥ पुराय करत होइ अपराधू ॥
बोले विप्र बहुरि हरखाता ॥ स्वारथ रत अधर्म की बाता ॥ ॥
सुनहु भूप यह है चण्डाला ॥ कहा भयो पहिरे गर माला ॥ ॥
स्वान स्वाल गंगाजल होई ॥ ताहि पवित्र कहै नहिं कोई ॥ ॥
छीर धरै मद भाजन माहीं ॥ होत कबहुं सो पावन नाहीं ॥ ॥

तैसेभक्ति नृगकीराजा॥ नाहिसतायेकछुनअकाजा॥ ॥
मानहुंपितरबिप्रसुरगाई॥ होतमहाफलजिनसेवकाई॥
यहिबिधिद्विजनकहासमुझाई॥ सुनिनृपकेमनदुखअतिआई॥
बुद्धिवानकैसोहोइकोई॥ कहेसुनेलेभासेभ्रमहोई॥ ॥ ॥
तबनृपसेवकसेअसभाखा॥ लावहुकोरिधेनुकरिभाषा॥
आयसुपाइतुरतजनधाये॥ बरबससुरभिन कौल्याये॥
भक्तद्रोहलखिलक्ष्मीपतिआशू॥ द्विजमुखनृपपैदेवायोआशू॥
निजअपराधप्रभुजानतवाई॥ भक्तदोषसोनहिंसहिजाई॥
सोइसुरभीएकगऊहजारा॥ दईविप्रकहँएकेबारा॥ ॥
मुदितमहीसुरल्यायोधामा॥ फिरिआईसुरभीतिहिठामा॥
दूजेदिननृपदानजोकीन्हों॥ सहससंगताहूकोदीन्हों॥
हांकिविप्रनिजभवनसिधावा॥ हेरतफिरतप्रथमजेहिपावा
बोलाप्रथममोरियहगाई॥ दूसरकहैआजुमैंपाई॥ ॥ ॥
झगरतयेदोउनृपपासा॥ क्रोधितहैअसबचनप्रकासा
रेनृपतूअतिहैअन्याई॥ धेनुदेसिफिरिलेसिफिराई॥ ॥
बोलेभूपक्रोधजनिकीजै॥ सहसधेनुयहिबदलेलीजै॥ ॥
बोलाप्रथमविप्रसुनुराई॥ मैंतोलेबयहैनिजुगाई॥ ॥ ॥
अपरदेउतुमकोटिसमाजा॥ तदपिहोइनहिंयहिसमराजा
दूसरकह्योमोहिंकाकहई॥ दैकेदानलीनअबचहई॥ ॥
दुबिधापरिनृपशोचबढ़ावा॥ मूड़हलावतबचननआवा
शीसतोरगिरगिटसमकाँपा॥ गिरगिटहोउहमारेशापा॥
कहनृपबचनअमोघतुम्हारा॥ होइकिमिउद्धारहमारा॥
करुणाकरिसोदेउबताई॥ मुनिबिनतीबोलेद्विजराई॥
द्वापरयुगयदुबंसमँझारा॥ कृष्णचन्द्रलैहैंअवतारा॥ ॥
सुनुनृपतिनकेचरणसनेहा॥ छूटीतबगिरगिटकीदेहा॥

असकहिद्विजनिजमंदिरगयऊ।कालपाइयमगणगहिलयऊ
लैगेदूतधर्मदरबारा॥पापपुण्यकाकीनविचारा॥ ॥ ॥
पुण्यतेपापभयोअधिकाई॥प्रथमेंकहाभुगतिहौराई
बोलेभूपबहुतजोहोई॥प्रथमेंमोहभोगावोसोई॥ ॥
इतनाकहतनलागीबारा॥गिरगिटकातनुधर्योभुवारा॥
द्वारावतीनिकटइककूपा॥लाग्योरहनतहांनरभूपा॥ ॥
दिव्यवर्षशतजबचलिगयऊ।तबअवतारकृष्णकरभयऊ
बालचरितकरकंसैमारी॥बसेआइद्वारकामंझारी॥ ॥
तहँइकदिनप्रभुयदुनसमेता॥आयेबनशिकारकेहेता॥
लागिप्यासबभयेदुखारी॥ढूंढहुजलअसकह्योमुरारी
खोजतकरतपावासोइकूपा॥किरकिलदेहधरेजहँभूपा॥
लागेसबकाढ़नयदुबीरा॥तबहुननिकसेअधमशरीरा
विप्रश्रापअरुहरिजनकोपा॥निकसैकिमिपापनतेतोपा
यदुनआइतबहरितेकहेऊ॥सुनिआयेजहँनृपरहेऊ
बामचरणअसपर्श्योजबहीं॥दिव्यस्वरूपभयोनृपतबहीं
देखिचरितबोलेयदुराई॥कोतुमअहोकहोसोगाई॥ ॥
कहनृपमैंहौंनिरगनरेशा॥जाकरदानविदितसबदेशा॥
महिरजजलकननभउडुजाना॥गनिनजातजिमितिमिममदाना
कहहरिकीन्हेउदानअपारा॥कौनहेतगिरगिटतनुधारा॥
तबनृपसबवृत्तान्तसुनावा॥जेहिकारणगिरगिटतनुपावा

दो० दानविभूषणलोकमेंदानस्वर्गसोपान॥
दानदलैदुखदोषनहिंदानसरिसहितुआन॥

चौ० सुनिबोलेगिरिधरकरिछोहा॥अबजनिकरुभक्तनद्रोहा
ममजनमोहिंप्राणतेप्यारे॥सदारहतजेशरणहमारे॥ ॥
करहुंसदामैंतिनकीरक्षा॥संगसंगफिरौंयथागोवक्षा॥

ममजनदिशि निरखै लरवैकोऊ। लेहुं निकारि तासु दृग दोऊ॥
जोममजनहि चलावै हाथा॥ डारौं काटि तासु कर माथा॥
जोममजनतें बैर बढ़ावै। दिहुँ मिटाइ रहन नहिं पावै॥
पारषमास संवतत्रै पाँचा॥ मद्धि बिनाश बचन मम साँचा॥
तेहि पाछे यम दुख चौरासी॥ खरकूकर सूकर तनु पासी॥
जोममजनकी सेवा करई॥ मानहु मम सेवा अनुसरई॥
यद्यपि हौं स्वतंत्र सब भाँती॥ तदपि रहत जनबस दिनराती॥
भक्त हमारे बांधव प्यारे॥ हम भक्तन के बंधु पियारे॥
मेरे भक्त गुरू हैं मेरे॥ हौं गुरु उनकर वे मम चेरे॥
जहं मम भक्त सकल सुख तहंवा॥ गंगादिक तीरथ सब जहवां॥
मैं भक्तलगत जेहि प्यारे॥ ते बल्लभ हैं परम हमारे॥
विप्ररिउ भक्त होइ जो कोई॥ अहै पवित्र तबहु जन सोई॥
जिमि मा शिशुहिं सवारि सभीतो॥ देत दिठौना तिमि मम रीती॥
भक्त दोष जो मन में लावै॥ सो नर नीच निरै दुख पावै॥
कीट पतंग आदि जो कोई॥ मुक्ति क्षेत्र सबकी गति होई॥
वैष्णो द्रोही सुगति न पावै॥ आगम शास्त्र बचन असगावै॥
श्लोक मुक्तिः कीटपतङ्गानां सर्वेषा मिह देहि नां। मुक्तिक्षे
त्रमिदं प्राप्य वैष्णवद्वेषिणां विना॥ १॥
चौ० भक्तन की निन्दा जो करई॥ सो नर्क गदकोल लखि परई॥
निन्दा विष्ठा उदर न भरई॥ साधुन को पावन सित करई॥
जो वैष्णव की करै बड़ाई॥ निश्चय सो भवनिधि तरिजाई॥
वैष्णव परम धर्म मैं जानो॥ परम धर्म मय वैष्णो मानो॥
वैष्णव परमाराधन हेरे॥ परम सुहृद वैष्णव सबकेरे॥
वैष्णव संगति करै जो भोजन॥ विमल होइ कलिमल तें सो जन॥
वैष्णवकर चरणामृत पावै॥ कोटि जन्म कर पाप नशावै॥

सन्तउच्छिष्टसहितजोखाहीं। ब्रह्महत्यादिपापनशिजाहीं
सुपचहोइममभक्तिहिकरई॥ सोइउत्तमसोइमदनिधितरई
जाकोदीजैतासोंलीजै। सोहिंसमताकीपूजनकीजै॥ ॥
भक्तिहीनजोहोइकुलीना॥ वृथाउन्नतजपतपज्ञानप्रवीना॥
ताकेसबगुणजानहुऐसे ॥ मृतककेदेहकेमण्डनजैसे॥ ॥

दो० बिरचतसन्तजोअघनिधनीरथपावनहेत॥
तेरिखडैरेजङ्गलकोतिन्हैंपरमसुखदेत॥

सो० संसृतसिन्धुअपार।तामधिबूडतजीवसब॥
तिन्हैंउतारनहार।बोहितसन्तस्वरूपमम॥

चौ० मेरोसन्तसन्तकोजानों॥ सन्तासहुमेरोकरिमानो॥ ॥
हैतुममेंअरुवेहैंनाहीं।मैंहौंहींसन्तनकेमाहीं॥ ॥ ॥
काहुइअसतनुधरिउद्धारौं॥ काहुइसन्तरूपहैतारौं॥ ॥
सन्तनकेचरणनकीरेनू।भुक्तिमुक्तिदायकसुरधेनू॥ ॥
भक्तकहैसोइमैंकरहूँ।संतनकेहितनरतनधरहूँ॥ ॥ ॥
भक्तमोहिहैंपरमपियारे।मुनिनेमजनवचनउचारे॥ ॥
प्रभुतुमजोहिअपनजनकहऊ॥ जिनकेचिन्हहिंमनिधिरिकहऊ
तिनकेलक्षणमोहिंसुनावो॥ जिनकीमहिमानिजमुखगावो
हेप्रसन्तबोलेप्रभुलक्षणा॥ सुनहुभूपसन्तनकेलक्षणा॥
परमकृपालद्रोहनहिंजानें॥ क्षमावन्तअरुसत्यबखानै॥
निंदारहितद्वन्द्वउरसमता॥ परउपकारीसुहृदनममता॥ ॥
त्यागेकामबुद्धिथिररहई॥ इन्द्रीजीतिनमनागहई॥ ॥ ॥
अल्पअसनएकान्तनिवासी॥ सदाचारसंग्रहणमेंवासी॥
सीतलचित्तयुतविरतिविचारा॥ धर्मसहितनिजसहितविकारा
दयावन्तषटउरमीजीता॥ मोहमानमदमानअतीता॥ ॥
ज्ञानमानप्रदपरमप्रवीना॥ परसुखसुखलखिपरदुखदीना

मित्रमित्रहितमित्रहिखावैं।तेहिप्रकारनितमोकोध्यावैं॥
चारिप्रकारमुक्तिनहिंलेहीं॥सबतजिममसेवामनदेहीं॥
दृढबिस्वासनलोभनरोषा॥यथालाभलामेंसंतोषा॥
जोकोउचलिशरणागतआवै॥ज्योंत्योंकरितेहिज्ञानउपावै॥
अनघअजातिअप्रभुअचाही॥आसनवासनसद्गुणमाहीं
प्रेमनेमहृदशान्तिसरूपा॥समचितसुखदुखनिरधनभूपा
हरिपूतकरिमहिपगुधरहीं॥बस्त्रपूतजलपानहिंकरहीं॥
सत्यपूतकरिबचनउचारैं॥मनसिपूतकरिकारजसारैं॥
यद्यपिवेदरूपमयगाये॥बरणाश्रमकेधर्मदृढाये॥
सोउशुभाशुभतेसबतजहीं॥कायबचनमनमोकहंभजहीं
ममआधीनसदाहीरहई॥साधनकोबलभूलिनगहई॥
मोहींकोकरताकरिमानैं॥सपनेहुंउरआपानहिंआनैं॥

दो॰ बैठेजहंजबसन्तमिलिसातपांचइकठौर।
तहंममबातचलावहींकरैंनचरचाऔर॥

चौ॰ कोउकहदशअवतारमुरारी॥धरेसकलसुन्दरसुखकारी
मीनबराहकमठपहिचानो॥नरहरिवामनभृगुपतिजानो
रामचंद्रनंदनन्दनलीनै॥नवमबौधनिकलंकीहीनै॥
दशनाहिंअवतारबिशाला॥मनमोहनरघुपतिनंदलाला॥
इनयुगलकोबड़सुखराशी॥बोलेसबरघुनाथउपासी॥

दो॰ रामहमारेबड़ेहैंलघुतुम्हारेकान्ह॥
केहिबिधिजानैंजाइनिजप्रभुताकेबिख्यान॥
प्रथमसोमकुलकृष्णतवपुनिरामतेजप्रकाश॥
भानुवंशश्रीरामजीरविसमद्युतिभास॥
जन्मसमयश्रीरामकेभयोमहाआनन्द॥
नन्दसुदेवबड़ाइकेडारिगयेमुहनन्द॥

रामहमारेभूपहैंरैयततुम्हरेलाल ॥ ॥
यमुमलिसुननाथनृपभरामअस्थिरअकृताल॥
नकीनमोहीरेतबिषअसुरनमोह्योकोइ॥
मातुलमोहीबांधतीमोहीयुवतिनलोइ॥
सो० युवतिनकीयहरीतिपुरुषमनोहरदेखिके॥
करहिंकामबसप्रीतिबहुरिबजाईबांसुरी॥
दो० मोहनहमरेरामहैंकछूनकरतबकोन॥ ॥
देवदनुजमुनिनागनरमोहिंबिलोकतलीन॥
जोकहोकैकैदीनबनतासुभेदघटजात॥
कह्योसंहितामेंसुनोएकसमयसुरबात॥
बचनबन्धकरिमातुलेकह्योचतुर्दशबर्ष॥
राजसमयमोहिदियोबनसोइकीन्ह्योंतजिहर्ष॥
कंसहिमारयोकृष्णतबसोनसपतिदुखदाय॥
रावणबधअनुजनअसुरताहिबधोरघुराय॥
बेदवतीदशशीसतेंकह्योरहेमैंनाहिं ॥ ॥
तवपुरपैठिबिनाशिहौंहेतुगईतेहिसोहिं॥
कृष्णछोड़ायेमातुपितुनिजरक्षासबलोग॥
रामनेवाजेदेवमुनिमनुजअनततजिभोग॥
प्रथमखबरिलगवाइकेकूबरदीनसुधारि॥
चरणपरसिपावनकरीरघुपतिगौतमनारि॥
जगसिन्धुकेसमरमाभयेभागिगोपाल॥ ॥
पीठिनदीन्हीरणबिषैकाहूरामकृपाल॥
चोरीकीन्हीकृष्णनवपरभामिनितेंप्रीति॥
रामनबोलेझूठकछुभूलिनचलेअनीति॥
ब्रजपतिबिधिवृषभेषकरहरयोमानछलधेम

विरकुंअगभृगुनाथहूकीन्हेंसुखसविशेय॥
कृष्णगोवर्धन करधरयोयहसेवककोकाम॥
सोइकारजसबकपिनतेकरवायोश्रीराम॥
कृष्णपीन्हायानलहिनाथ्योकालीनाग॥
रामसेतुकरिअरिसमरअमितनिवारेनाग॥
विप्रसुदामामित्रतेतंदुललैधनदीन॥ ॥
रामकपीशविभीषणहिंदुदिनमेंनृपकीन॥
सबसदीन्ह्योगोपिकनतदपितज्योयदुराउ॥
ऋणीभयेहनुमानकेअसरघुवीरसुभाउ॥
कृष्णसखाउद्धवभयेपुनिपठयेतपहेत॥
तिन्हेंहमारेरामजीराजपरमपददेत॥ ॥
दशसहस्रदशशैवरयकीन्हिअवधबसिराज॥
फिरियादीबकस्वानहूंभेइततोदिशिसमाज॥
अहिमहिअशसुअनुजसियदीन्ह्योजगहितत्यागि॥
अधुखपुरगजानवदिकृष्णसकृतसरलागि॥
चौ० असहैंरामहमारेस्वामी॥अखिलरूपकेकारणनामी॥
अपरकहैंसिद्धान्तहमारा॥पूरणहैंसकलोअवतारा॥ ॥ ॥
समभक्तमसबएकेअहई॥रूपधरेचौबिसश्रुतिकहई॥
हैंसबएककनकजिमियद्यपि॥होतनरासिरतीसमतद्यपि॥
बोलेअपरसकलश्रुतिसारा॥रामनामहैइष्टहमारा॥ ॥
सुखदायकदुखपातकहरता॥सबइष्टनकोपूरणकरता॥
ब्रह्मवहाबिनरामाहोई॥राबिनरघुपतिकहेनकोई॥ ॥
माबिनमहादेवहाकहिये॥रेफबिन्दुबिनप्रणवतलहिये॥
कृष्णरहितराकसनकहावै॥महावीरबिनमानरहावै॥
राबिनराधाधारहिजावै॥आबिनसीतासीतकहावै॥

दुर्गारमासारदाभयरें।।गवरिगणेशआदिहरिगयरें।। ॥
करिविचारिदेखैबुधकोई।।सबमंत्रनमहंअक्षरदोई।। ॥
जीवयथालघुतेहिबलजागै।।देवससिमफलदेतजोमांगै।।
जेहिजानेबिनकछुनजानै।।पशुसमानतेहिवेदबखानै।।
नामविवसहैरूपसदाहीं।।रूपनामबिनआवतनाहीं।। ॥
बिनानामपुरधामनपावै।।जाननामकहतमिलिजावै।।
अगुनसगुनयुगब्रह्मकहावै।।सुखप्रदपरितामेंनहिंपावै।।

दो० ब्रह्मसोव्यापकसकलघटआनन्दअमलअखंड।।
तदपिग्रसितजगजीवसबसहतविविधविधिदंड।।
प्रीतिसहितजोनामकहँरटैराखिविश्वास।।
यहांसदासुखमेंरहैअन्तरामपुरवास।। ॥
निरगुनतेबड़नामयशसोमोंकहौंबुझाइ।।
अबसरगुनतेकहतहौंसुनोसुजनमनलाइ।।

चौ०रामरूपधरिअसुरसंहारे।।सुरनरमुनिसबकियेसुखारे
नामजपतेनसुखीसदाहीं।।औरनकेदुखदेखिमिटाहीं।।
कृशाकुनपधरिगिरिकरलीन्हें।।ब्रजबासिनकीरक्षाकीन्हें।।
नामजपतअहिपतिमहिलीन्हे।।भुवनचारिदशरजसमकीन्हें
रामकामअरिकरधनुभंजा।।भृगुपतिसहितदपनमदगंजा।।
नामरासिकनृगासमसंसारा।।तोरहिंकलिविबसिआइविचारा
कृष्णएकदावानलपीन्हा।।ग्वालबालसबबाहरकीन्हा।।
नामसुमिरिशिवविषकियेपाना।।जड़रुजीवजेहिसबजगजाना।।
रामगीधसेवरीमुनिनारी।।हैप्रसन्नभवभयलेतारी।। ॥ ॥
नामसुमिरिसठनरअपारा।।अजहूंजपतहोतभवपारा।।

दो० रामसुकंठविभीषणेदीन्हिराजिनिजकाज।।
नामसुमिरिसज्जनतजहिंबातसरिसजगसाज।।

रामसिन्धुमासेतुकरिभेयपारलैसैन ॥ ॥
नामसुमिरिहनुमानगेकूदिपियोयदजैन॥
रामरावणाहिरणानिधनकीन्हिराजिबसिवास॥
नामजपतखुलमोहदलहोतबिनयश्रमजास॥
रामकामककरिप्रनघटुक प्रवधजानलैधाम॥
नामउधारततिहुभुवनजोसुमिरैसहसाम॥
॥हनुमत्संहितायां हनुमानबचनश्रीरामप्रतिश्लोक॥
रामत्वत्तोधिकंनामंइतिमेंनिश्चितामतिः॥
त्वमेकंतारलेयोध्यानाम्नाचभुवनत्रयं॥ ॥

चौ० असहिइष्टहमारमहाना॥सिरधरिसबहिनकीनप्रमाना
जेप्रभूसंतवारबदावैं॥जाननहारमहासुखपावैं॥ ॥ ॥
एककहैंसबहैप्रभिरामा॥नामरूपप्रभुलीलाधामा॥ ॥
यहिप्रकारकीबातेंकरहीं॥मेरेहितप्रापुसमहेंलरहीं॥
सोबातेंमोकहंप्रतिभावें॥सुनोजायमैंतिनकेठांमें॥ ॥
जैसेबिपुलसुतनकीवानी॥सुनिहरषतपितुनिजसबजानी
तैसेमैंसुनिसुनिहरषाऊं॥जाउंजहांजहंतहंचलिजाऊं

दो० प्रेमप्रशंसाविनययुतवेगवचनयेप्राहिं॥
तेहितेहोतप्रनन्दचुरफुरउरलागतनाहिं॥
भक्तनकेलक्षणसकलसुरवदसुनायेतोहिं॥
जिनकरिकेपक्षीसरिसनिजवसकीन्हिंनिमोहिं॥

चौ० सुनिनरेशप्रतिशैसुखपायो॥संतनपदपुनिशिरनायो
देवदूततेहिप्रवसरवीरा॥लैबिमानप्रायेनृपतीरा॥ ॥ ॥
कृपासागरशिरनाइनरेशा॥चढ़िबिमानगवन्योसुरदेशा॥
गीतिकाछं० सुरलोकगवन्योभूपन्मगतमकूपकेदुखना-
शहू॥लखिदेवबधिप्रसूतप्रभुतबयदुनसेपरकाशहू॥

करिदानबस अभिमानके नृपद्रोहहरिजनसेदयो। तेहिपा-
पपायोतापद्विजकीशापदरशनलेगयो॥ असजानिमनअ-
नुमानिकबहु संतकोनसताडयो। बनिपरैकीजैमेवनाहिंब-
निपरैतोशिरनाइये॥ यहिभांतिकेसुनिबचनयमके-
गणानअतिसुखपायहू॥ शिरनाइदण्डउठाइतबस-
बमृत्युलोकसिधायहू॥

दो० संतनकोउतकर्षजोकहैसुनैनितनेम॥ ॥
बदैभावभक्तनविषैकहरघुनाथसुप्रेम॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरा
मसनेहीकृतनृगप्रसंगसंतलक्षणवर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः४२

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
धर्मशास्त्रमतकहौंकछुमनुअस्मृतिजुबखानि॥

चौ० सुनिसंतनकीबिपुलबडाई। पुनिसौनकबोलेशिरनाई
नाथकहोअसिकौनउपाई॥ जोकरिजीवसुखीहोइजाई॥
कौनदेवकेसुमिरनजूटे॥ जेहितेपितरनर्कतेछूटे॥ ॥ ॥
कौनदेवहैसबफलदानी॥ सुनलसूतबोलेमृदुबानी॥
सौनकसुनौसत्यमोहिंपाहीं॥ रामसमानआनसुरनाहीं
जिनकेसुमिरतसुरसारे॥ बिनप्रयासहीहोतसुखारे॥
जिमितरुमूलनिखेचनमाहीं॥ डारपातफलसबहरिआहीं
असजियजानिसकलविधिदासा॥ रामहिभजहिंतजहिसबआसा
तीनिप्रकारभजनहरिकेरा॥ व्याससुवनसुकदेवनिबेरा॥
निष्कामीजोरामैध्यावै॥ तासुबिबसप्रभुआपुरहावै॥ ॥
मोक्षकामकरिकोइसेवै॥ ताकोराममोक्षपददेवै॥ ॥ ॥
सर्वकामकरिसेवैदासा॥ ताकीहरिपूजहिंसबआसा॥
ऐसप्रभुकशरणोआई॥ जासुकृपाअनुकम्पाभलाई॥

अपरदेवसेवैकरिदुखवा॥होइप्रसन्नदेहिजगसुखवा॥
औसेवाबिधिबैननकोई॥कोपिबिनाशतासुकैसोई॥ ॥
तातेनारायणसमदेवा॥नहिंनिहुकालसत्ययहभेवा॥
दो॰ सर्वशास्त्रअवलोकिकेपुनिकीनबिचार॥
ध्यानयोगमँगलकरनहैरामैनतसार॥
चौ॰ जोनिजपितरचहैनिस्तारा।तोहरिभक्तिकरैबिस्तारा॥
जैसेक्वासमहीपतितारे॥सुनिसौनकमुनिबचनउचारे॥
हेप्रभुकेहिप्रकारनरहारी॥तारेपितरकहौबिस्तारी॥ ॥
केहिबिधिभक्तिकरीहरिकेरी॥बोलेसूतसुनोमनुफेरी॥
शोणितपुरएकबस्तीकहेऊ॥क्वासनामतामेंनृपरहेऊ॥ ॥
अन्तसमययमगणाचलिआये॥मारिबांधिनिजलोकसिधाये
देखिभानुसुतलेखालीन्हा॥पुनिदूतनकहँआयसुदीन्हा
डारोजायनर्कनृपएहू॥चौदहलाखबरषदुखदेहू॥ ॥
आयसुपाइनर्कढिगलाये॥पीवरक्तजामेंकृमिछाये॥
चाकलथाहसयोजनकेरा॥सोरायोजनगहिरनिबेरा॥
परेजीवबूडेउनमाहीं॥एकोपलनसुपासजहँनाहीं॥ ॥
तेरेकीटतनकैंबेहाला॥जारहिंमध्यअगिनकीज्वाला।
ऊपरयमगणमारहिंनाना॥देखित्रासनृपक्वासडेराना॥
ताहीनर्कमाझनृपकेरे॥पुरिषारहैंएकोत्तरिहेरे॥ ॥ ॥
भूपहिंलखिरोदनतिनठाना॥सुनिमहीपअसबचनबखाना।
कोतुमहोजोहममहिंनिहारी॥लागेहुरोदनकरनपुकारी॥
हेनृपहमहैंपितरतुम्हारे॥तुमहोपुत्रहमारेप्यारे॥ ॥
बोलेभूपबहुरितिनपाहीं॥काहिपरेउनर्ककेमाहीं॥ ॥
कीतुमदानकबहुनहिंकीन्हा॥कीतुमविप्रनकहँदुखदीन्हा
कीसन्तहिंबोलेहुकटुबानी॥बोलेबहुरिपितरसुतजानी॥

दीन्हपुत्रसज्यादिकदाना॥गजरथबाजपालकीनाना॥
पूजेदेवबिपुलबहुभांती॥बिप्रजेवांयेदिनअरुराती॥
ऐसबकीन्हदर्बिपरश्चानी॥तातेभईपुण्यकीहानी॥
जीवमारिबहुकीन्हप्रहारा॥तातेपावानर्कअपारा॥
जीवनखेकरपालकभारी॥मावलकबिकेविदश्रुतिचारी॥
सुनिगुरुतेहरिमंत्रनलीन्हा॥तातेनर्कबासयमदीन्हा॥
जेहिप्रभुनरतनसिरदेहसंवारी॥जहँतहँरक्षाकीन्हिहमारी॥
तासुभजनहमकीन्हनभूली॥काहेनसुखअधोमुखझूली॥
अबलगरहीतुम्हारीआसा॥कबहुंकहेहेंहरिकेदासा॥
तबहुमारहोइनिस्तारा॥बसबजाइसुरलोकमझारा॥
सोतुमहूंहरिभक्तिनकीन्हीं॥आइनिरैमहँबासालीन्हीं॥
कहनृपजोअबछूटनपावहु॥तौतुमकासुरलोकपठावहु॥
हेहरिभक्तभजहुभगवानहिं॥जातेपावहुपदनिर्बाणहिं॥
सुनिबोलेयमगणतेहिसंगा॥अबथैंकैसौनरंगेहुहरिरंगा॥
अबयमजालपरेहुजबभाई॥तबहरिभजनकेरिसुधिआई॥
जैसेकोउगृहपावकलागे॥कूपखनावनअतिअनुरागे॥
परतधारजिमिबबुरबवावै॥होतयुद्धगढ़नीवडरावै॥
तथातुम्हारमनोरथकारन॥अबकहिलेगेनरकमहँडारन
तेहिअवसरइकहरिजनआये॥तिन्हेंदेखियमकेगनधाये
पदशिरनाइकीन्हअतिआदर॥लायेबैठवनदिगसादर
देखिकृतान्तउठेहरषाई॥करिदंडवतलीन्हउरलाई॥
कनकसिंहासनआसनदीन्हा॥पदपखारिपादोदकलीन्हा
धूपदीपकरिदोउकरजोरी॥लागेअस्तुतिकरनबहोरी॥
देखिप्रभावरूपहुदिगआवा॥रामभक्तसोंबिनतीलावा॥
नमोनमोतुमपतितनतारन॥नमोनमोप्रभुविपतिनिवारन

नमोनमोतुमपरउपकारी। मोहिंनरकतेल्येहुउबारी ॥ ॥
सुनिबिनतीभेसन्तदयाला। रबिसुतलेबोलेततकाला ॥
याकोछांडिफांसतेदीजे। इतनाकहाहमारोकीजे ॥ ॥
करहिजाइहरिभक्तिनरेशा। मिटहिंजाहितेसकलकलेशा
सन्तकहासोनियममीन्हा। तुरतहिछांडिनरगहिदीन्हा
ऐसेहैंहरिभक्तकृपाला। सहजनिकसिनरकरहिंनिहाला
छूटभूपमृतलोकहिंआवा। मृतकदेहनिजप्रानसमावा
उठतनृपतिभेलोगसुखारे। सकलकहेंबड़भागहमारे
दो॰ नबमहीपयमलोककीकथाकहीसबगाइ ॥
जेहिबिधिदेखेपितहनिजदीन्होसन्तछोड़ाइ ॥
चौ॰ यमपुरहमनिजनैननदेखा। बिनहरिभक्तिमहादुखपेखा
तातेभक्तिकरबअबहमहूं। जातेनर्कनजाईकबहूं ॥ ॥
बिप्रबोलिशुभघरीसोधाई। केहिदिनयरसाराम्कीजाई
पश्चालरिवाद्विजबचनउचारा। आतहिगुरुमुखहोहुभुवारा
असमुनिभूपदानबहुदीन्हा। करिसनमानबिदातबकीन्हा
जबतेंनृपहरिशरणबिचारी। तबतेंभेसबधिनरसुखारी ॥
बैठनिकरिनरकके पासा। कहेंकिसुनहोइहरिदासा ॥ ॥
कबहमजावअमरपुरभाई। असकहिहुलसहिंहंसहिंठठाई
दो॰ तावतभरमतपित्रजगपिराडहेतहखिवार ॥
यावतकुलमेंकृशाकरभक्तनहोतकुमार ॥

पद्मपुराणेश्लोक

तावद्भ्रमतिसंसारेपितरःपिण्डतत्पराः।
यावत्कुलेसुतःकृष्णभक्तियुक्तोनजायते ॥१॥

स्कंदपुराणे

पचंतिनरकेपितरस्त्रस्यंतेचमुहुर्मुहु ॥

मन्द्र शेषेवेशावोजानांसमेत्तानाभविष्यति ॥२॥
चौ० इहांपुरोहितकीन्हविचारा॥सबविधिगारोजिगारहमारा
जबराजा हरिकाजनहोई॥ज्योतिषमंत्रनमानी कोई॥
नहिं प्रबधेनुवेदाईकबहीं॥पांचसातकोदेईहमहीं॥॥
सुनीज्ञानजबसन्तनकेरा॥आईनहींवचननबमेरा॥॥
हरिसेवासेंमनचितदेई॥आनदेवकोनामनलेई॥॥
तातेसो प्रबकरों उपाई॥जातेहोनवेशावराई॥॥
सुनिबोलीद्विजभामिनितबहीं॥नृपकेभवनजाहुतुम प्रबहीं
रानीतेअसकहउबुझाई॥सत्याविकटराउनहिंआई॥
सुनिद्विजलैपंचाङ्गसिधाये॥लिसेरपहरभूपगृह आये॥
रानीलखिउठिमाथनवावा॥आशिर्वाददीनबैठावा॥॥
पत्राखोलिकहीद्विजबाता॥फेरोबिधितुम्हारअहिवाता
सर्वविधिबनारहैतवसाजा॥पैअबचाहतहोनअकाजा
कौनअकाजभूपजोकाल्ही॥लेईगुरुदिक्षाघनपाल्ही॥
तबतुह्मारसबभांतिप्रकाजा॥राजिपाटसबछाड़ीराजा
भक्तिज्ञानमेंमनचितलाई॥घरकोकामसकलबिसराई
तुमरेनिकटनआईकबहीं॥चलिहोईतीरथजबनबहीं
तातेकरहुयतनतुमसोई॥जातेभूपनवेशाघहोई॥॥
कोनियत्नकीजेसोगावहु॥रूपमोहनीकेरबनावहु॥॥
करिकटाक्षमोहहुनृपआजू॥कामबिबसलखिकीन्होकाजू
विप्रहिविदादर्विदैकीन्हा॥अपनारूपरचनमनदीन्हा
जहंलगुत्रियनकेरशृङ्गारा॥अङ्गअङ्गसकलसंवारा
निशापाइपतिनिजसिधाई॥हासविलासकीन्हसुखपाई
जबअनङ्गबसभूपहिजाना॥एकरिस्तूठकरिवचनबखाना
स्वर्गलोकतेतुमफिरिआयहु॥हमहिंनकछुदीन्हेंउसवपायहु

बोलेनरपतिमांगहुप्यारी॥ जोकछुइच्छाहोइ तुम्हारी॥ ॥
बिधिहरिहरकोसांचीदीजै॥ तौहमकन्तमंगुवकलीजै॥
तवमहीपयैंद्वैदेवनकेरी॥ रवाईसोंहहरषिबहुतेरी॥ ॥
सुनिबोलीपतियहबरदीजै॥ जहांराजतहंभक्तिनकीजै
भक्तिकियेहबड़ेहोतअकाजा॥ तातेंमैंबरजनहींराजा॥ ॥
दानपुरायमलकरहुभुवाला॥ जाकरफलपावहुततकाला
सुनिमहीपबोलेअकुलाई॥ बनेहुनमांगलबड़दुखदाई
जपतपयज्ञदानबहुकरहीं॥ भक्तिज्ञानबिनजीवनतरहीं
किहिनिदाननिजभक्तिबिहाई॥ तेगिरगिटअहिगजमेंआई
तातेअबमोहिंआयसुदेहू॥ कीजैभक्तिपरमफलयेहू॥
रानीसुनिपुनिवचनउचारा॥ प्रथमैंकौबाचातुमहारा॥
देखहुशिवदधीचकसकीन्हा॥ बाचाबसअपनतनदीन्हा
नृपहरिचन्दबड़ेरजधानी॥ बाताभरिनिडोमघरपानी॥ ॥
मधुकैटभजिनकीमहिमाटी॥ बाचाबसदीन्हिनिशिरकाटी
असुरगयासुरदानवअहई॥ बाचाबस्यअधोमुखरहई
दशरथदैनकहेउबरदाना॥ बचननतजेहुतजेहुसुतप्राना
विष्णुबचनचपलामनेहारा॥ तेहितेअपुनदधिसुतमारा
सोतुमछांड़तनिजमुखमाखी॥ ब्रह्माविष्णुशिवहिकरिसाखी
फेरहुभूपदुविधामहंकैसे॥ गहिमुखसांपछछूंदरिजैसे॥
तजहुंभक्तितौनरकहिजैहौं॥ बाचातजेअधिककदुखपैहौं
यहिविधिनिजमनटीकजोआनी॥ दीन्हिसिछांड़िभक्तिअज्ञानी

दो॰ कल्पलतातजिमूढ़जिमिकिंशुकलोबेकोइ॥
सोइकीन्हीनृपकामसहुसमुझेबहुभलहोइ॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासराम
सनेहीकृतराजाकामआख्यानवर्णनोनामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥

दो० सुमिरिराम सियसन्तगुरु गवापमिरासुखखानि॥
बरणौं भारत की कथा कुचिनान्यो मनअ्रानि॥

चौ० भजनहिं भक्ति दूत यम केरे। गुरु बहु रिनरक महगेरे॥
ऊपरसे मोगदर शिरदयऊ। विविसन योजन भीतरगयऊ॥
जबते छूटत ब भारत थाई। कहैं कि अबक्यों उछरत आई॥
जेहिसुन कीनु मअ्राअलगाई। ह्रुजराभी तेहि छलाबनाई॥

दो० जानिबूझि नृपरामको दीन्हिसि मरिकै बिहाइ।
आपु हि पारिह मन्दमति यहीनर्कमे आइ॥

चौ० यहसुनि नर्को करहिं पुकारा। केहि खलसु येपापु नहमारा॥
द्विज हत्याताके शिर दीन्हा। बैराबहोनमनेजेहि कीन्हा॥ ॥
तेहिसम पापी अ्रपरनपावा। हरयमाहिं जेहि हमै रोवावा॥
ऐसे वचन सकल मिलिबोलहिं। उछरहिं कबहुं अस्थिरबोलहिं
तेहि अबसरनहँनारद आये। नरकिनने अस बचनसुनाये
घरे अ्रधोसुख पमिन अपारा। तुमकाहे बहुकरत पुकारा॥
हैंमुनि हमरे कुलन सपक्षासा। होन चहत रहे हरिदासा॥ ॥
दीन्हों बरजि ताहि अबकोई। तेहितेहमें महादुखहोई॥
अजहू जोताको समुझावे। कोटियज्ञ कीन्हे फलपावे॥
मुनिनारद के लागीदाया। नरकिनते अस बचनसुनाया॥
जो मैं सुत समुझावों तोरा। सत्य बचन नहिं मानी मोरा॥ ॥
जेजड़ जीव हवैं जगमाहीं। सन्तकहा ते मानतनाहीं॥ ॥ ॥
कहैं कि धनाहित करहि प्रबोधा। समुझै नहिं भक्तनकाबोधा
नरकिन कहासुनहु महराजा। ऐसे बचन न बोलीराजा॥ ॥ ॥
प्रथमदेरवगादशा हमारी। सुनतै अस्तुति करी तुम्हारी॥ ॥
जोकुजा तिनहिं मानहि बाता। गगरा खोदि देखापहु साता॥
गाड़े बीच अजिरके माहीं। मोहर भरे नृपजानत नाहीं॥ ॥

इतनासुनिमुनितुरतसिधाये।बेगिभूपकेमन्दिरआये॥
मुनिहिबिलोकिदंडवतकरेऊ।हाथजोरिअस्तुतिअनुसरेऊ॥
धन्यआजुहमधन्यमुनीशा। तुमरोदरशदीनजगदीशा॥
जोचाहहसुरलभवस्तुअनेका।दुर्लभसन्तसमागमएका॥
अबभोजनकाकहियेभेवा।केहिबिधिबनैरसोईदेवा॥
कह्योनारदआदिसिलिकेरा।असिबिचारसमजलमधुहेरा॥
भास्त्रनकानिकेहूकीराखै।पद्मपुराणवचनअसभाखै

गौरीतंत्रश्लोक।

कृष्णमंत्रविहीनस्यापापिष्ठस्यदुरात्मनः॥
श्वानविष्ठासमंचान्नंजलंचमदिरासमं॥१॥

पद्मपुराणे

अवैशावास्तुयेविप्राश्चांडालांश्चमास्मृताः॥
तेषांसंभाषणंस्पर्शंसामपानादिवर्जयेत॥२॥

स्कंदपुराणे

अवैष्णवगृहेभुक्त्वापीत्वावाज्ञानतोपिवा॥
शुद्धिश्चांद्रायणेप्रोक्ताइष्टापूर्तंवृथासदा॥३॥

चौ॰रामभंत्रतुमसुनानकाना।आज्ञामागतकौनेज्ञाना॥
नरतनलहिहरिभक्तिनकीन्हीं।झूठेजगतमाहिंमनदीन्हीं
देख्योतुमनृपयमपुरसासति।तदपिहृदयनहिंआईहसति
बड़भागानेकूटनपायो।इहांआइपुनिज्ञानगंवायो॥
प्रसवसमयजिमितियपतित्यागे।दुखबीतेफिरितासोंपागे
तेहिप्रकारतबमतिभइराजा।जानिबूझिनिजकिहउअकाजा
पुनिपादेविनरकमहंआयहु।भक्तिकौलकरिसुधिबिसरायहु
बोलेभूपसुनहुमुनिज्ञानी।रूपसँवारिकुलामोहिंरानी॥
मागिसिबकरिकौलकरारा।कहिसिकरौजनिभक्तिभुवारा

तबमैंनाहिबहुतसमुझावा॥वाकेमनतनकहुनहिंआवा
वाचाकीसुनिकानिबिचारी॥तेहितेहमहरिभक्तिबिसारी॥
कहनारदसुनियेनृपभेदा॥नारिसुभावकहतश्रुतिवेदा
रहितअचारबिचारबिहीना॥परमभयाकुलहृदयमलीना
चंचलबुद्धिचपलअवगाही॥सदाअकर्मलागिसुखचाही
अधरानासिकाभेदअभंगा॥बिगतप्रसादमलिनसबअंगा
इतनेअवगुणनारिमझारा॥कसनकरैनृपतबअपकारा
दुष्टनारिमतमानैसोई॥तबसमाजनीचैजोहोई॥ ॥
जैसेभेभामिनिबसराजा॥तिनसबहिनकाभयउअकाजा
आशिरङ्गीनरयिबिधिसुराई॥अपरप्रसंगसुनौमनलाई
कुंडलनामरहैद्विजएका॥उग्रबुद्धिबरदविवेका॥ ॥
निरधनजानितासुकीनारी॥नितउठिदेहिहजारनगारी
इकदिनद्विजनिजपुस्तकलीन्हा॥उठिपरदेशपयानाकीन्हा
ताहिमगइकतड़ागनिहिपावा॥कोरिमज्जनघिसितिलकलगावा
पुनिहरिकथाकहनाहुजलगा॥बावनमध्यरहइकनागा॥
तेहिहरिकथासुनीसुखमाना॥तबनिमिटीकछुहृदयअज्ञाना
लागेकरनविसरजनजबहीं॥आवानिकटनिकसिअहितबहीं
मोहरएकधरिबोलाबानी॥कोतुमअहउकहउसुखदानी
कुंडलकहाबिप्रहमहोई॥बिद्याधरजानतसबकोई॥ ॥
बिधिअनकृपापरमदुखपावहु॥अबधनहितपरदेशसिधावहु
बोलासर्पदूरिजनजावो॥हमकाहरिकीकथासुनावो॥
मोहरएकदेवनिततोहीं॥काहुईपैनबतायहुमोहीं॥ ॥
यहसुनिद्विजमनहरषितभयऊ॥निकटहिग्रामलाभकरिदयऊ
लागसुनावनविविधपुराना॥पावहिएकमोहरनितदाना॥
भाषनवानमहलबनवावा॥सुभगवाजिनिजद्वारबंधावा॥

भूषणाबसनअनेकप्रकारा॥पहिरैंआपुसहितसुतदारा॥
एकदिनभवनपरोसिनिआई॥बोलीकरकललेहहगाई॥
तुमतौरहिउदुखितधनहीना॥किततुमकायहसम्पतिदीना
बोलीबिप्रबधूसुनुमाई॥कोजानैकहंवापतिपाई॥ ॥ ॥
जोतुमतेपतिभेदनगावा॥तौकेहिकामधामधनपावा॥
पुरुषनारितेअन्तरकरई॥तौसम्पतिपावकमहपरई॥ ॥
तेहितेपूछेहुआनुसंभारी॥असकहिचलीगईसोनारी॥
द्विजभामिनितबरहीरिसाई॥दीन्हेसिअभरणसकलचलाई
द्विजपुस्तकपढ़िघरजबआवा॥दुखितदेखिअसबचनसुनावा
कौनिबिथातोरेमनमाहीं॥सोसबकहउप्रियामोहिंपाहीं॥
कैयोवारबिप्रजबबूझा॥बोलीतबतुमकानहिंसूझा॥
रहेउरंकअबसम्पतिलहेऊ॥कितसोंहमतेभेदनकहेऊ॥
सुनिबोलाद्विजशिरकरधारी॥याहीहितकीन्हेउरिसभारी
भूषणासनहुतजहुमनखेदा॥सुनौकहउंमैंधनकरभेदा॥
पुरदक्षिणाहैएकतड़ागा॥तेहितटरहतहवैयकनागा॥ ॥
दिनप्रतिताहिपुराणसुनावौं॥मोहरएकतहंवांमैंपावौं॥
इतनासुनिउठिभोजनकीन्हा॥पतिसुततिन्हैंजवावैलीन्हा
निशापाइद्विजसोवनलागा॥बोलीसुततेकरिअनुरागा॥ ॥
सरकेनिकटआजुतुमजावो॥सर्पहिमारिद्रव्यखनिलावो
सुनिपोथीकुद्दारिसहिलयऊ॥भोरहोतसरकेतटगयऊ॥
तसकदीखबिप्रसुतआवा॥लखिकुद्दारिमनधोखबढ़ावा
कीन्हिबिप्रजबकथाप्रसंगा॥निजबांबीतेसुनहिभुजंगा॥
तबद्विजबिबिधिरागिनीफेरी॥तदपिनलागिघाततेहिकेरी

दो॰ करतबिसरजनलागजबतबनिकसासोब्याल॥
मोहरएकचढ़ाइकैबहुरिफिरावतकाल॥

चौ० भीतरभवनहंसमनहिपावा॥अपरदुष्ट कुठारिचलावा
कछुक पूंछ काटिगे अहि केरी॥काटिसि घुमरि सरातेहिबेरी
इहाबिप्रजागेपरभाता॥सुतकितगापूछीयहबाता॥ ॥
बोलीत्रियकछुकामहिंआयऊ।सुनिब्राह्मणाकेबिसमयभयऊ
उठासुरतहिंजअहिढिगआवा॥मृतकतहांनिजबालकपावा
रोदनकीन्हिलीनउरलाई॥कीन्हिक्रियाबिधिवतघरआई
कछुदिनबादसर्पढिगआयो॥धरिधीरजअसबचनसुनायो
आइपुराणासुनहुजजमाना॥केहिकारणहमतेदुखमाना॥
बोलाअहिअसमारसगयऊ॥जबतेतुमबनितहिकहिदयऊ
तुम्हरेसुतकरशोचअपारा॥हमरेलूमकेरदुखभारा॥ ॥ ॥
तेहितेजाहुभूमिनिजधामा॥अबहमतेतुमतेनहिंकामा॥
यहसुनिबिप्रपलटिगृहआवा॥सुतकरदुखकछुमनदुखपावा
देखहुभूपनारिबसभयऊ॥द्रव्यलाभसुतदूनहुगयऊ॥
जैसेबिप्रकीन्हनिजहानी॥तेहिप्रकारतवमतिबौरानी॥

दो० भगवतभजनछोड़ाइनिजधर्मदिढ़ोबेकोइ॥
ताहित्यागियेआशुसमपरमहितूकिनहोइ॥
तज्योपितैप्रहलादमाभरतबिभीषनभाइ॥
गुरुबलिब्रजबनिताबरनिभेसबमंगलदाइ॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामस
नेहीकृतकासनारदसम्बादकुण्डलप्रसंगबरणोनामच-
त्वारिंशोऽध्यायः॥४४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
महभारतसद्ग्रंथकीकहौंइतिहासबखानि॥

चौ० अपरसुनौप्रसंगसुनावौं॥जनौचरकारूपलखावौं॥ ॥
जबभारतकरभाआरंभा॥चलेपांडुसुतगाइनखंभा॥ ॥

दो० बोलितबसहदेवतेप्रमुदितचारोभाइ ॥
होइजीतजेहिभाँतिसोंसोइतिदेहुबताइ ॥

चौ० कहसहदेवसुनहुबलवाना॥प्रथमेउनतेकीन्हबखाना॥
अबनुमकाकेहिभाँतिबताई।तेहिहितसगुनसुनहुयकभाई
इस्त्रीचरितपुरुषजोपावो॥ताहिआनिकुरुक्षेत्रगड़ावो॥ ॥
ऐहैंचलिजंबुकतहँदिनते॥सकलभेदतुमपैहौतिनते॥ ॥
यहसुनिदूंदनभीमसिधाये॥घूमतएकनगरमहँआये॥ ॥
तेहिपुरहतरहेइकतेली॥सुनहुतासुकीरीतिनवेली॥ ॥
बैठीपलंगतासकीबामा॥अपनाकरहिंधामकरकामा॥ ॥
झारिपोतिघरजलभरिलावे॥कूटिपीसिपुनिअसनबनावे
ताहिपवाइखायतबअपना॥बहुरिकैरेसबटहलअलपना
एकदिवसगैआगिबुझाई॥रबिदिनमांगिफिरानहिंपाई
तबवनितावोलीताकेरी॥हैपगलागमहाउरमेरी॥ ॥ ॥
जोतुमकन्धचढ़ावोमोही॥आनिदेउंमैंपावकतोहीं॥ ॥
सुनतहिलीन्हसिकन्धचढ़ाई॥चलामुदितमनलाजबिहाई
संगेजाइआगिनिजेहिद्वारे॥तालबजावहिंबालकसारे॥
घ्रमदासमहँसिहँसिअसबोले॥भलेआगियेमांगतडोले
कोउनिलज्जकहिदेवेगारी॥कोउकहैनीचढारिहैनारी॥
करहिंकुबुधिनीइहिबिधिबाता॥हेमेनअसबरदीन्हविधाता
पुरुषदेखिपुरुषनतैकहई॥येदोऊनिलज्जबड़अहई॥ ॥
जोइमिहोतीनारिहमारी॥डरतेनुताहिज्याननेमारी॥ ॥
एककहैअसदइउनकरई॥दुष्टनारिनरपालेयरई॥ ॥

दो० दुष्टभार्य्यामित्रसठउत्तरदायकभृत्यु॥
सर्पसहितगृहवासरिपुसवलसोजीवतमृत्यु॥

चौ० यहसबचरितभीमजबदेखा॥जनीचरितनिश्चयकरिलेखा

नारिउनारिताहि धरिलायो॥कुरुक्षेत्रके माहिं गड़ायो॥॥
अरुपुरहैछिपिचढ़ि तरुडारा॥आयेतहँतबबहुतसियारा॥
दो॰ नेहितेलीकेअंगसबसूंघेयेकसियार॥
बोलामांसअशुद्धहैहमनहिकरबअहार॥
चौ॰ जोहमयाकोभक्षणकरिवै॥कोटिनबरषनरकमहँपरिवै
तबजंबुकसबपूछनलागे॥हैअशुद्धकेहि कारणयागे॥॥
सुनिजम्बुकतबउत्तरदीन्हा॥यहिकबहूंशुभकरमनकीन्हा
नारिहिकेडरडरतरहावा॥हरिगुरुजनपदशीशनवावा॥
नेहितेशिरअशुद्धहैभाई॥जानिबूझिहमकेहिबिधिखाई
श्रुतिअशुद्धगुरुमंत्रनलीन्हेसि॥हगमलीनजनदरशनकीन्हेसि
मुखअशुद्धहरिनामनटेरेसि॥गरअशुद्धतुलसीनहिंगेरसि
करअशुद्धकछुकिहिमिनिदना॥उरअशुद्धदायवतनठाना
उदरअशुद्धप्रसादनखाइसि॥पगअशुद्धतीरथनसिधाइसि
सुनिसियारसुतबोलताता॥कीन्हेंतुमअशुद्धसबगाता॥
हमैंलामिहेभूषअपारा॥कहोकाहिअबकरीअहारा॥
तबजंबुकसबसिसुनप्रबोधा॥आजुकेदिनसुतकरहुसमोधा
काल्हियुद्धहोइयहठांवे॥खायहुमल्लजितनामनभावे॥॥
चलिहैंअस्त्रसस्त्रबिधिनाना॥जूझहैंबड़ेबड़ेधर्मवाना॥
भक्षणकीन्हिजिनकरमासा॥होईहमहिंदेवपुरबासा॥॥
सुनिसियारसुतबोलबाना॥कोजीतीकोहारीताता॥॥
जंबुककहाजीतिहैंसोई॥प्रथमैंध्वजारोपिहैंजोई॥॥॥
लखियहसगुनभीमधरआये॥बलकनसहितसियारसिधाये
हेरबहुनृपत्रियकेबसभयऊ॥डारिकरिरामभक्तितजिदयऊ॥
जंबुकहूनहिखाइनिताही॥तेसीगतिनृपतुम्हरीआही॥
कलिप्रकाजरानीतबकीन्हा॥भक्तिमाहिंबाधाकरिदीन्हा

कैकहाअबलाकरसोई। नोहिसमानपतिनजोहोई॥
यहसुनिराजाबहुतलजाना॥माथनाइअसबचनबखाना
सांचहुमैंनिजकीन्हअकाजू। असप्रभुनामसुनावहुआजू
नारदकहातयारीकीजे॥तबतोराममंत्र हमदीजे॥ ॥ ॥
यहसुनिनृपमंत्रीहकरावा॥भीतरबाहरभवनलिपावा॥
कुम्भपुरानसकलकरिदूरी॥नूतनकलसधरेजलपूरी॥
विप्रवैष्णवनसकलबोलाये॥गुरूमुखहोनजानिसबआये
भईभीरनृपद्वारअपारा॥बाजहिंतालमृदंगसितारा॥ ॥
गंन्धर्वकरहिंरामगुणगाना॥लखिसमाजभूपतिहरषाना
तबबोलेउरुपितकरजोरी॥अबकाआयसुहोतबहोरी॥
कहनारदरानीढिगजावो॥ताहूंतेआयसुलैआवो॥ ॥ ॥
जोनमुदितमनआज्ञांदेही॥लागेउमारनतुरतेतेही॥ ॥

दो० भलेनाथकहिभूपतबगेरानीकेपास॥ ॥
बोलेआयसुदेहुअबहोईहरिकेदास॥ ॥

चौ०सुनिरानीअसबचनउचारा।नृपहरिगाहैज्ञानतुह्मारा
हमतुमकाबहुबिधिसमुझावा॥तदपितुम्हारेमननहिंआवा
इतनासुनिनृपमारनलागा॥बोलीतुरतसहितअनुरागा॥
हेपतिमैंयहिबिधिपरकासा॥हमहूंतुमहोईहरिदासा॥ ॥
वैष्णवकंथअवैष्णवनारी॥ऊंटबैलकरजोतबिचारी॥॥
पुरकेलोगसुनतडरपाये॥गुरूदिक्षाहितसबचलिआये॥
तबनारदअतिकरुणाकीन्हा॥बाहुमूलगमायुधदीन्हा॥
ऊर्द्धपुण्ड्रपुनितिलकलगायो॥द्वादशमंत्रनसहितसोहायो
धर्योबहुरिहरिमिश्रितनामा॥पहिराईतुलसीकीदामा॥
तेहिपाछेकछुआहुनिकीन्हो॥राममंत्रमहिपालहिदीन्हो

दो० राममंत्रगुरुबदनतेजेहिउरकरैप्रवेश॥

होतशुद्धसोतुरतइमिकहतसंहिताशेष॥
सर्वमंत्रतेअधिककहैंवैसबमंत्रअभेद॥
विस्नुमंत्रहूतेअधिकराममंत्रबदवेद॥
ब्रह्महत्यागुरुतल्पगास्वर्णचौरमदिराप॥
सर्वेन्येवविंहंतिअघराममंत्रकोजाप॥

चौ०जबलगिमंत्रसुनानृपकाना॥पुरिबासनचढ़िगेयवेवाना॥
सुनिवानीकोमंत्रसुनावा॥तेहिथांकेआवासोइपावा॥ ॥
तबनृपहिंजनदीक्षादीन्हा॥मनविधितोषभवनकरकीन्हा
सोशोभासुरवरनिनजाई॥रहीभक्तिसबपुरमाछाई॥
जहँतहँहोहिंचरितहरिकेरे॥जपैनामसबसाँभसबेरे॥ ॥
कहनारदमैंदेखोंजाई॥तबपुरिषनकेसोगतिपाई॥ ॥
सुनिमुनिबचनबिदानृपकीन्हा॥तबसातोंमगराकहिदीन्हा
तबपितरनहैंमोहिबलाये॥असकहिऋषियमलोकहिआये
दूतनतेअसपूछाजाई॥नरकीवैकितगयेसिधाई॥ ॥
सुनिदीन्हिनिउत्तरयमदूता॥रामदासभाउनकरपूता॥ ॥
तेहितेवैसुरलोकपधारे॥छूटेघेरेहैंनर्कहमारे॥ ॥ ॥
सुनिनारदकेभासुखभारी॥आयेचलिबैकुंठमभारी॥ ॥
बैठरहेतहँायमराजा॥दूतनसहितआपनेकाजा॥ ॥
जबमुनीशहरिपदशिरनावा॥तबप्रभुऋषितेबचनसुनावा
आयेहैंरविसुतफिरियादी॥कहैंकिहमबैठेहनुबादी॥
नारदभक्तिदिढ़ाइतुम्हारी॥खालीकीन्हिनिपुरीहमारी
जगमहेसबहोइहैंतबदासा॥कोआइहिफिरिहमरेपासा॥
तेहितेअबहमजावनलहबौं॥पापीसबआवतहैंजहवौं
केतनौमैंइनकासमुझावा॥तदपिनमानतमोरमनावा॥
कहनारदहमकीजैकाहा॥जेहिंनमानिजाइयमनाहा॥

ऐसेअधर्मराजतुमजाहू ।जगमेंभरमावोसबकाहू ॥ ॥ ॥
औहिसेरामभक्तिनिसारे ॥आवहिकमसबलोकहमारे
कहुमानबहुमनतेनहिंहोई ।कोटिउपाइकरहुकिनकोई ॥ ॥
तुमचाहौभरमावोजाई ॥हरिहूकहाभलाहैभाई ॥ ॥ ॥
जेहोइहैंदृढ़भक्तिहमारे ॥तेनहिंलगिहैंकहेतुम्हारे ॥ ॥
लगिहैंभांतिमारिनहिंकबहीं ॥सुनिचलिभेरविकेसुतनबहीं
आयेभूपक्षासकेग्रामा ॥नाउतरूपबनाएकतामा ॥ ॥ ॥
लागहलावनदोउकरशीशा ॥अपरबजावहिंबाजनबीसा ॥
कौतुकदेखिलोगजुरिआये ॥मायनाइअसबचनसुनाये
किमिहौदेहमारिकुशलाला ॥देहुबलाइकृपाकरिदाला ॥
बोलाजोचाहौकल्याना ॥तौतुमसेवहुवीरमसाना ॥ ॥
पूजहुशक्तिभक्तिकरिभारी ॥पावहुतुरतपुत्रधननारी ॥
कोभैरोंमरहीकासेवो ॥अजयापुत्रमहिषबलिदेवो ॥
तुरतेमनबांछितफलपैहौ ।जेहिकोपिहौतेहितुरतनशैहौ
क्षेत्रपालहिपूजहुकोई ॥तेहिकेविघ्ननकबहूंहोई ॥
पांचहुपीरनमेंमनदेहू ॥जिनतेमनबांछितफललेहू ॥
महावीरहैशंकरदेवा ॥मिलहिंनकछुफलइनकीसेवा ॥
दानवरिबहुहैंजगमाहीं ॥कोजानहिंफलमिलैकिनाहीं
रामभक्तिजोवेदनगाई ॥सोतोहैअतिशैदुखदाई ॥ ॥
जानबहुरिकोभक्तिप्रकाशे ॥सुतवितनारितासुकीनाशै
रोगशोगबहुआनिसतावै ॥जहंनिकसैतहंहंसीकरावै ॥
यहिविधिकष्टसहैबहुकाला ॥तबकबहूंहरिहोइंदयाला
तेहिपरलोकहिकछुनहिंदेहीं ॥सूरबयहिमतकामनदेहीं
सुनिसुनिकृतनकीअसिबानी ॥हरिसेविमुखभयेबहुप्रानी
रामभक्तजेरहेंसुजाना ॥तिनतनकोविश्वासनआना ॥

जेमनिमन्द विशेरसपागे। तेश्रमुकातजि भूजनलागे॥ ॥
बनिनतनका देन्हेंहोंइमि सीखा॥ गलिन २मिलिमांगहु भीखा।
लूटिबजारभक्तिकह पूंजो॥ मिटहिंसकलदुखसुखनिजभूंजो
काहुइयंत्रमंत्र सिखराये॥ काहुइभूत च ढाइ कु डाये॥
काहुइ दिहिनिसुतासुतनाती॥ काहुइदीन्हिनिधनबहुभांती
एकहुबालकबहुं फुरहोई॥ सकलसत्यकरिमानहिंसोई॥

दो॰ यहिबिधिजगभरमाइकैं गेयमपुरयमदूत॥
सोईरीतिसंसारमें ०अजहूं हैकहसूत॥ ॥

छन्द कहसूत०अजहूं रीतिसोईरहीजगमेंछाइकै। सचमानिनरसबकरतजेहितिपरत०अघमें०आइकै॥ मतिधीरजेगंभीरजननिकूटमनमेंजानिकै॥ तजिभर्मनानाधर्महरिकीशरनभेसुखमानिकै॥

दो॰ रामभक्ति दृढ़करनहित हरनभर्मतमरूप॥
बरणीजनरघुनाथतेहिदूइइतिहासअनूप॥

इतिश्रीविश्रामसागरसबमत०आगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामसनेहीकृतराजाकासकथावर्णनोनामपंचचत्वारिंशो०ध्यायः ४५॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
भक्तिरत्नमतकहौंकछुपातांजलजुखखानि॥
कहासोनकनेंधाभगतिकहीयोगयुतमोहिं॥
जोअसरायोअरषिकामतेसोइसुनावोंतोहिं॥

चौ॰ आजबशिषिनादकरराजा। बोलातबहितसहितसमाजा
नाथभयेसबशरवासुहारी॥ बिनगुरुहोतनदृढ़लाभारी॥
जिमिशिशुअंध्रथ दूधबिनपीहें। मैरेनभेरे छीनतालीन्हें॥
कहनावरसुनुभूपप्रसंगा॥ हैहरिभक्तिकेरनव०अंगा॥ ॥

दो॰ प्रथमाकैमतनअसमनरागयदसेवन०अरचन्य॥

बंदनदास्यसख्यात्मनअवेदननवधेगन्य ॥

चौ० दशईप्रेमलक्षणाजानौ ॥ पृथक्‌अससकलबखानौ
जोहरिकथासुनैमनलाई ॥ तासुश्रवणमगहरिउरआई ॥
बसिपंकजअघनाशैकैसे ॥ सरदकालजलमलहरैजैसे ॥
विसईबिरतबिमुक्तउमाहीं ॥ हरिगुणसुननसबनकहँचाहीं
वीतरागहरिचरितनकोम्भा ॥ हैकरिकोइकिलहैंकहुँशोभा
अजगिरीसशेषसुरआदी ॥ अपरभयेजेमुनिश्रुतिबादी ॥
रामचरितसुनिकोउनकंदा ॥ श्रवनरुचैतेहिजानहुमंदा ॥
जोनरहरिगुणसुनैनकाना ॥ सोखरऊंटकोलसमखाना ॥
भयोनिरादरभाजनभारी ॥ तेहितेस्वानकहौंनिरधारी ॥
असदवानबहुविधिकेबरना ॥ चरलऊंटसमतालेबरना ॥
बहैभारग्रहकोदिनराती ॥ तेहितेखरसमकहौंकुजाती
अमितअनंदकथाकेमाहीं ॥ अघवासमेतसुनैकोनाहीं

दो० अवराचातिकहंससुकमीनमच्छिकावधल ॥
श्रोताद्वादशभांतिकेमधुपूकनमकुरसयल ॥

चौ० द्वादशमेंषटउत्तमजानौ ॥ अपरअधमअवदोषबखानौ
अन्यमानद्वगलोभअधीरा ॥ पदकेदकअसमञ्जशरीरा ॥
बादरसिकनिद्रावसमानी ॥ बिनबिस्वासअहितअज्ञानी
रुद्रदोषबिनश्रोताहोई ॥ चरितामृततबपावैसोई ॥ ॥
तातेभूपदोषतजिसारे ॥ सुनौकथाहरिकीनिरधारे ॥ ॥

दो० कथाप्रीतितेसफलहैमोक्षहेतुकोकर्म ॥
कथारहितजोकृतकरैसोकेवलश्रमसर्म ॥

चौ० अथरापरीक्षितभलकरिजाना ॥ अबसुनुकीर्तनभक्तिसुजाना
प्रभुकेजन्मकर्मबहुतेरे ॥ मंगलप्रदजेअहैंघनेरे ॥ ॥ ॥
लज्जारहिततिन्हेंजोगावै ॥ सोनिश्चयअभिमतफलपावै

नारदादि ऋषिजहँलगुरहेऊ॥ मनुहरिहरिगुणासबहिनकेहेऊ॥
रामचरित्रवरणायोसोइवानी॥ शुभगसत्यसुचिमंगलखानी॥
हरिबिनविषमवादिसबधंधा॥ इमअपिप्रोक्तद्वादशस्कंधा॥
वक्तापांचप्रकृतिकेजाना॥ रविशशिउड़मणिदीपसमाना॥
वकताहूमेंदोइकहोहीं॥ तातेंबिधयोगसुनावोंतोहीं॥ ॥ ॥
पक्षपातधनचाहअधीना॥ श्रोतानहिंसमुझैपरवीना॥
प्रश्नकरैंतेहिउत्तरनदेवै॥ सारवस्तुसुनितकेनलेवै॥ ॥
मूर्तिअंधिकैवचनउचारै॥ मूरखसोकैसेउरधारै॥ ॥ ॥
प्रेमप्रतीतप्रीतिबिनतोषा॥ पूछतवाणकैरअतिरोषा॥ ॥
बहुतपापश्रोताजबकरहीं॥ तबऐसेवक्तासिरपरहीं॥ ॥

दो॰ पदिगुणिवेदपुराणहरिभक्तिनकेग्रीसार॥
ज्योंपशुचन्दनभारधरिभरमतजेहिंतेहिंद्वार॥

श्लोकआदिपुराणे

यथाखरंचंदनभारवाही भारस्यवेत्तानतुचंदनस्य॥
तथाचविप्राश्रुतिशास्त्रयुक्तं मन्नं[illegible]हीनाःखरवद्वहंति॥

दो॰ ज्योंविधवाकेशीशमेंसोहैनहिंसेंदूर॥ ॥
गुणचतुराईरामबिनत्योंहींजानोकूर॥
गावैविधवाअपनकहिबनरादुलहिनकेर॥
पतिसुखलहैनस्वप्नहूतिमिहरिजनबिनभेद॥
विद्यागोधनवेदचहुंभक्तिद्विजजनभक्ष॥
पावैबरतावैतनुजलहेकिलनविनअक्ष॥
तेहितेरसिकअनन्यहेकहैरामगुणग्राम॥
तबपावैशोभायथाबलितचन्द्रनिशियाम॥

चौ॰ कीर्तनशुकमुनिभलकरजाना॥ ध्रुवसुमिरनभक्तिसुजाना॥
श्रीपतिकोसुमिरनजोकरई॥ सोपदइवसोभवनिधितरई॥

गणिकायमनगयन्दअजामिल॥कीरआदिकबिकटउधेरेखिल
बिषइनिभंजेबिषयकोधावै॥रामैसुमिरिरामढिगजावै॥ ॥
बिधिहरिहरगणपतिअहिराई॥सुमिरनतेपाईप्रभुताई॥
हरिसुमिरनसबसुखकोमूला॥हरिसुमिरेनाशेसबसूला॥
हरिसुमिरनकीजैजिमिगाई॥चरतफिरतसिसुबिसरिनजाई
हरिसुमिरनकीजैजिमिकामी॥तजिहियहोननारिअनुगामी
हरिसुमिरनकीजैजिमिलोभी॥निसुदिनरहेद्रव्यहितछोभी
हरिसुमिरनकीजैजिमिचातक॥गनैनलाभनिलाभनिजघातक
रामनामजिनसुमिरनकीन्ह्यो॥तिनजनुसकलधर्मकरिलीन्ह्यो॥
रामनामजिनहिरदेधारा॥तिनकाकहाकरैसंसारा॥ ॥
रामनामकरसुमिरनसाँचा॥जेहियाँवेजगहोइअयाँचा॥
बहुतजन्मकोपुण्यबिहीना॥रामनामसुखजातनलीन्हा॥
दंभौतेजोनाउउचारै॥पावकसमअघतूलहिजारै॥
शत्रुभावकरिजोकोइध्यावै॥सोऊहोइमुक्तश्रुतिगावै॥॥

दो० भृङ्गीभयतेकीटज्योंहोतभृङ्गतनअंत॥
तैसेअरिअघत्यागिबपुधरतरूपभगवंत॥
रामनामकेबीचमेंमनकोदेइमिलाइ॥ ॥
करिहरिसमरघुनाथसोंसहजमाहिंछुटिजाइ॥
कलिकेकलुषीनरननहिंआनधर्मअधिकार॥
रामनामइतिवर्णयुगजपिहेंहैंभवपार॥
तेबड़भागीजीवजेकलियुगमेंहरिनाम॥
सुमिरैंसुमिरावैंसुखदसकलकृतारथधाम॥
पापदहनहरिनाममेंइतनीशक्तीआहि॥
जितनीपापीनरनकोपापकरनकीनाहिं॥
चंडालीजोरामइतिरसनाकरैबखान॥

तासंगमैदियेबोलियेमोहिंमृत्युतिपरिमान॥
यश्रावाडलरामेलिवाचंवहृतेन॥ ॥ ॥
सहसंवसेसेनसहसंवदेतेनसहसंमुनीयान्॥
दो० रामनामकलिकामतरुकहतसुकलश्रुतिसाध॥
लहैकामफलजोधरैउततजिदशअपराध॥
सो० दशअपराधसेकौन।नाथकृपाकरिवोलिये॥
सुनौकहौंमयलोन।सनकसंहितामाहिंजस॥
कुण्डलियागुरुअवज्ञाएकहरिजनहरिनिंद्यात्याग।
गनैब्रह्ममेंभेदमुनिकरैनामबलपाप॥करैनामबलपापन-
मपरलापनजानै।बिनसरधाउपदेशदोविश्रुतिशास्त्रमा-
नै॥मानैदोगिरघुनाथश्रद्धेनिजइन्द्रीकहुडर।येदशतजि
अपराधजोपैलवनामफललेगुर॥
दो० तेहितेतुमहूंहोअलजिजपहुनामनिरशंक॥
ब्रह्मलोकसुखनहिंरुचैश्रौरकहानृपरंक॥
सहितदोषनिरदोषहू रामनामजोलेइ॥
तबहूंताकीभाग्यकीकोश्रसउपमादेइ॥
चौ०सुमिरनभलेकीनप्रह्लादा॥अबसुनुसेवनभक्तिसवाद
सेवनभक्तिकीनश्रीनीके॥तेहितेवसीविशदउरपीके॥
दो० सेवनहरिपदसेनरअसुरदनुजकोइहोइ॥
जोसेवैहरिपदकमलसदसुखपावैसोइ॥
हरिपदसेवनविनमनुजजहांचलिजाय॥
तहांतहांभयपुतरहतकहुंनछांडतसाथ॥
चौ०तेहितेरामचरननितसेवो॥अर्चनभक्तिकहौंसुनिलेवो
परमानन्ददानिहरिपूजा॥इहिंसमसुगमउपाइनदूजा॥ ॥
केवलहरिअर्चनकेकीन्हे॥लहततेतामसुसकलप्रवीने

जिमि सींचे जर सब तरु तोषै ॥ हरित न होइ पात जो पोषै ॥ ॥
मुखते असन प्रान हीं खावैं ॥ सब इन्द्री तिरिपित ह्वै जावैं
प्रभु आनन्द सिंधु सुख धामा ॥ करुणाकर परि पूरन कामा ॥
सो निज पूजा चहैं न कबहीं ॥ निज कल्याण हेत करै सबहीं
हरिहि पूजि पूजित ह्वै येहू ॥ पावै सुख संपति निज गेहू ॥
ज्यों निज मुख तिलकादि लगावै ॥ सोइ दरपन प्रति बिम्ब सोहावै
श्रीपति मान दिहि बिन ध्यानी ॥ लेहै न कतहुं मान अज्ञानी ।
प्रभु कर मान करै नर जबहीं ॥ हरिहु ताहि सन मानत तबहीं ।
प्रभु कृपा दरसो धन्य नर सोई ॥ तेहि सम बड़ भागी नहिं कोई
गुडल देव मुनि ताहि सराहें ॥ चरण रेनु तेहि पावन चाहें ।
ऐसी है हरि पूजन ताता ॥ पुनि पैसर केरि नहिं बाता ॥ ॥
दंभ सहित मद दुष्ट धनादी ॥ करहिं यतन सो श्रम सब बादी
जल अंकुर दल दून चढ़ावै ॥ बिन मद सो उत्तम गति पावै

दो० माफ दारु हरि चित्र पवि पुरट मनोमय रत्न ॥
ये प्रभु प्रतिमा आठ बिधि पूजे जन करि यत्न ॥

तोटक छं० हरि पूजन षोड़श भांति कही । प्रथमै आवाहन कीन चही ॥ पुनि आसन पाद रघाचमनं ॥ अस्नान पटा हुति सूत्र तनं ॥ सुचि चन्दन पुष्प सुधूप दिपं । नैवेद तंबूल बिने अधिपं ॥ पर दक्षिणा षोड़श भांति इयं । चरणामृत नासत कोटि बियं ॥

दो० जल दल चन्दन चक्र दर बूंद झिला हरि ताव ॥
अष्ट वस्तु मिलि होत है चरणामृत सुख दाव ॥
फल चरनोदक लिहे कर कहु तक करौं बखान ॥
भूमि परे पातक तथा अब सुनु दीप विधान ॥
चारि चरन युग देश कटि मुख मंडल इकवार ॥

सप्त चक्र सर बांग पर इमि आरती उतारि ॥
श्री हरि पूजा अमित फल परम पुराण सुखदानि ॥
ताते संतत कीजिये प्रीति सहित हित मानि ॥
अब सुनु दूसरि विधि कहौं जाहि करत सनकादि ॥
अग जग रूप अनूप हरि आसन देइ अनादि ॥
पाद पुष्पता अरघ अपि सुचि सनेह अस्नान ॥
बसन विराग मखसूत्र गुरा चित चन्दन स्रकज्ञान ॥
धूप बासना दीप निज बोध हरै अविवेक ॥
अधुभा शुभ तूलास धुन गोवर्तिका अनेक ॥
बिरति बन्दि करि अर्पि के बिबिधि भावनै वेद ॥
प्रेम तांबूल सुगंध पन पाइ मिटत भव भेद ॥
सदन सत्य पर्य्यंक पर रामहिं शयन कराइ ॥
क्षमा दया परचारिका तत्र सुदेइ लगाइ ॥
यहि विधि जो पूजन करै हरै सकल संताप ॥
निर बरती की रीति यह केवल हरि का जाप ॥

चौ॰ पूजन भले कीन्हि पृथुराजा ॥ पूरब पश्चिम सनक समाजा ॥
कहई बंदन शक्ति अनूपा ॥ प्रभु बंदन सबका सुख रूपा ॥ ॥ ॥
बंदन करै जोरि कर जबही ॥ मंगल सो नर पावत तबही ॥ ॥ ॥
सकल जीव हरि सन्मुख आवै ॥ मन बच क्रम करि शीश नवावै ॥
सो हरि धाम मोक्ष सुख लहई ॥ इमि भागवत माहिं विधि कहई ॥
सुकृत प्रनाम प्रभु कर कोई ॥ तेहि सम दश अश्वमेध न होई ॥
दश अश्वमेधी पुनि जग आवै ॥ कृष्ण प्रनामी बहुरि न आवै ॥ ॥
मग खसि गिरे बिथा बश मरई ॥ निकस नाम हरि बंदन करई ॥ ॥
तासु महा अघ संचित नाशै ॥ प्रीति सहित फल कौन प्रकाशै ॥
बंदनि कीनि दान पति आछे ॥ भये सहु आगे पाछे ॥ ॥

दो० हरि प्रनाम महिमा अमित को करि सकै बखान ॥
तेहिं ते बंदन राम की करहु मानि कल्यान ॥ ॥
चौ० सतयें भक्ति दास्य अस नामा ॥ दास भाव है सेवै रामा ॥ ॥ ॥
जासु नाम सुमिरत अघ जरई ॥ जासु चरण जल भव रुज हरई ॥
जासु कटाक्ष चहै विधि ईशा ॥ भजे जाहि सन कादि मुनीशा ॥
तेहि प्रभु केर दास जब भयऊ ॥ कौन कर्म बाकी रहि गयऊ ॥ ॥
तिन का कछु न चाही कबहीं ॥ दास भये पुर स्वारथ सबहीं ॥ ॥
दास भाव बिन जरनि न जाई ॥ इमि दुर्बासा कह्यो बुझाई ॥ ॥ ॥
जो जावत हरि जन नहिं तावत ॥ सुकृत सुधन रागादि चोरावत ॥
दास भये धन हरना जेते ॥ लगहिं भक्ति साधन महँ तेते ॥ ॥ ॥
भगवत होत सकल ज्यों पारा ॥ होत सुरवद सुचि मिटत विकारा ॥
दास सरिस प्रिय प्रभु कुन कोई ॥ रघुपति तिलक सांक्ष हम जोई ॥
बैठे जहँ सब सब विधि चीन्हा ॥ तिलक दास हनुमाने दीन्हा ॥

दो० काय बचन मन कर्म करि सो अर्पै भगवान ॥
विधि निषेध नहिं नाथ बश दास भाव सोजान ॥
नारायण को दास जो भयो न लहि वर वृत्ति ॥
जियत सो सब सम कहत इमि पारासर अस स्मृत्ति ॥

चौ० अष्टम भक्ति सरवत्व कहावै ॥ रघुपति सखा परम सुख पावै ॥
नंद गोपि का अरु ब्रज वासी ॥ भये मित्रता करि सुख रासी ॥ ॥ ॥
निशिचर पति सुग्रीव निषादा ॥ भये सखा करि सहित बिषादा ॥
अपर मित्र प्रति स्वारथ चाहै ॥ राम सखा सुख ते सुख लाहै ॥ ॥
अपर सखा कोउ जाइ बिदेशा ॥ तेहि वियोग दुख होइ अँदेशा ॥
अंतर यामी राम कृपाला ॥ निकट रहत सन्तत सब काला ॥ ॥
अपर मित्र में अस गुण नाहीं ॥ जस गुण है रघुनन्दन माहीं ॥ ॥
तहि ते सब सुख तुच्छ बिचारी ॥ श्याम सुंदर ते कीजे यारी ॥ १॥

मन मलीन पूरब कृत दोषा ॥ पुनि ताहिं डारत करि रोषा ॥ ॥ ॥
ताते संसृति पुनि पुनि लहई ॥ किमि उद्धार होइ श्रुति कहई ॥
जिमि कोइ फेनु पकरि नद बहेऊ ॥ किमि उतरै फिरि फेनुइ गहेऊ ॥
तासु देह बोहित्त सुख धामा ॥ सकल विश्व दायक विश्रामा ॥
जब लग तिन में प्रीति न करई ॥ तब लग कर्म सिंधु नहिं तरई ॥

दो० प्रभु पद प्रीति सोहात ही मिटत त्रिविधि दुख दोष ॥
सकल सुसाधन कर फल यत्तने करिय न मोष ॥

चौ० नवईं भक्ति सुनो मोहिं पाहीं ॥ आतम अर्पन सम कोइ नाहीं ॥
जो निज देहा दिक प्रभु पासा ॥ करै समर्पन तजि सब आसा ॥ ॥
सो निह चिन्त रहत सब काला ॥ तासु फिकिरि प्रभु करत कृपाला ॥
जिमि कोइ वृषभ अश्व निज बेचै ॥ तासु यत्न हित रहत निशोचै ॥
राम मया भाजन सो अहई ॥ हरि ऐश्वर्य मोक्ष ते लहई ॥ ॥ ॥
तर्क शास्त्र अरु नय विधि चारी ॥ अहै जीव कहं सब सुख कारी ॥
ते सब निगम नीति अनु कूला ॥ करैं भली विधि नहिं प्रति कूला ॥
परम पुरुष श्री पति गुण सागर ॥ अन्तर यामी राम उजागर ॥ ॥ ॥
तिन का आतम करै निवेदन ॥ तौ सब सोच जानिये खेदन ॥ ॥
तन मन हरि हिहि अर्पन कीना ॥ तौ धर्मा दिक फल पर बीना ॥
गुणातीत सोइ अहै विवेकी ॥ नृप बलि केरि टेक निज टेकी ॥

दो० तेहि ते सर्बसु अर्पि कै निर्भय हरि गुण गाव ॥
आखिर इक दिन छूटि है अब सुनु शरण प्रभाव ॥
देव पितर ऋषि भूत कर ऋणी अहै सब कोइ ॥
हवन श्राद्ध अध्ययन बलि कर नित तब शुच होय ॥
नाहित सब विधि कर्म तजि गहै शरण हरि केरि ॥
तब छूटे ऋण पाप कोइ तेहि तन सकै न हेरि ॥
अथवा ऋण दीन्हे बिना रहै ब्योहर आधीन ॥

सो नर इमि दिन भरै जिमि करणी धनिक बस दीन ॥
याते कृष्ण कृपाल के युगपद सब सुख दानि ॥
परम कृपा लै जानि के शरण गहो प्रण ठानि ॥
चौ० जे नर राम चरण सुख कारी ॥ शरणि गहो जब दृढ़ ब्रत धारी ॥
प्रबल काल तेहि लखि इमि कहई ॥ यह अब हमरे बश नहिं अहई ॥
दो० देखो सुर नर असुर अहि किन्नर खग गंधर्व ॥
काल कलेवा ह्वै रहे ब्रह्मा दिक जग सर्व ॥
बचत न कोई काल ते जहँ लक आवत दृष्ट ॥
करत ग्रास बड़वागिन ज्यों यों कह योग वशिष्ट ॥
ऐसो काल कराल सो डरत जासु दिशि देखि ॥
जे हरि शरणागत गहे ते शठ सम पशु के लेखि ॥
प्रेम लच्छना प्रेम करि रहत न देह संभार ॥
दृष्ट धा भक्ति कहा बसो यह सब ते अधिकार ॥
दृष्ट भक्तिन महँ एक हू जिन राखी उर धारि ॥
सोइ वल्लभ श्री राम कहँ कहा पुरुष कहँ नारि ॥
सान्त दास अरु शिष्य ता पुनि वात्सल्य सिंगारि ॥
जल महिं यरु मुक नभ सुये भक्ति पंच रस सार ॥
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ ॥
कहे भक्ति के अङ्ग सब सुखद प्रद जन रघुनाथ ॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास-
राम सनेही कृत नौधा भक्ति वर्णनो नाम षष्ट् चत्वारिंशो ऽध्याय: ॥४६॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
योग शास्त्र मत कहौं कछु हंसो पनि मद जानि ॥
चौ० बोले भूप बहुत सुख पाई ॥ बिन गुरु को सद पंथ बताई ॥ ॥
पाताञ्जलि शास्त्र के माहीं ॥ कहौ योग किमि सो मोहिं पाहीं ॥ ॥

कह मुनि भले सुनो मनु लाई ॥ सघन स्थल करि कहौं बुझाई ॥

दो० आठ अङ्ग हैं योग के यम नेमासन साधि ॥
प्राणायाम प्रत्याहार अरु धारणा ध्यान समाधि ॥

प्रथम यम अंग

सत्य अहिंसा धुराय धृत छमा अचाह असङ्ग ॥
ब्रह्मचर्य निरभै भवन गुणा सुक थिर यम अङ्ग ॥

द्वितीय नेम अंग

शौच धर्म जप तप आतिथि हरि गुरु सेव संतोष ॥
सोम तीर्थ उपकार पर निर्छल नेम अदोष ॥

तृतीय आसन अंग

चौरासी आसन कहे तिनमा उभौ बिशाल ॥
एक पदुम द्वग शुद्ध मन सिद्धासन थिर साल ॥

चतुर्थ प्राणायाम अंग

चतुरथ प्राणामै करै षट चक्कर को सोधि ॥
एक अधार स्वाधिष्ठान पुनि मनि पूरक को बोधि ॥
चौथा अनहद चक्र कहि पचवां नाम बिशुद्ध ॥
छठवां आज्ञा समुझि के जपै मंत्र शुद्ध ॥
पूरक में षोड़श जपै कुंभक में चौसट्ठि ॥
रेचक में बत्तिस कहे हरै हरै जनि हट्ठि ॥
ज्यौं ज्यौं ठहरै पवन उर त्यौं त्यौं मंत्र बढ़ाय ॥
कुम्भक आठ प्रकार की सुनो कहौं अवगाय ॥
प्रथमै सूरज भेदनी पूरै पिंगल बात ॥ ॥
रेचै बांये रोकि कछु हरै वाय रुज गात ॥
उभै उजाई पवन की पूरि धरै उर माहिं ॥
ईड़ा तें रेचन करै कफ रुज ले धर जाहिं ॥

तीसरि सीत जो कारणी पेय घ्रान ते पौन ॥
शीघ्री काहि मुख ते तजै भजै क्षुधा तिर पौन ॥
चौथि सीतली पूरई जीह वदन ते प्रान ॥
रोकि नेवारै नाक तेहि करै रुद्ध ते ज्वान ॥
पचई भस्त्रिक स्वास ते भरै तजै अति शिघ्र ॥
पके करै रवि शशि वहारि मिटै त्रिविधि रुज विघ्न ॥
छठी भ्रामरी भृंग धुनि भरै स्वास ते वाइ ॥
रेचै ताही शब्द ते मन चंचल रह राइ ॥
सतई मूर्छा नाम को सुमिरै सास उसांस ॥
भ्रमुइ मिलावै दुख हरै करै देह दुख नाश ॥
अठई केवल जो कही ग्रंथ में मंत्र गनाय ॥
सो कुम्भक मो सिद्ध है जिमि मनु वन में राय ॥

पंचम प्रत्याहार अंग

पंचमा प्रत्याहार जो विषै वोर मनु जाइ ॥
घेरि लगावै ध्यान में ज्यों निज सुत को माइ ॥
तब आपुहि वस होइ है जिमि बनिआ कर भूत ॥
तदपि सजग रहिये सदा रिपु सम जानि कपूत ॥

षष्ठ धारणा अंग

षष्ठम धारै धारणा पाँचो तत्त्वन केर ॥
प्रथम मे गुरु गोविन्द की धारणा पवन हिय हेरि ॥
काल ज्ञान ते हित रचै जो बरणी विविध प्रकार ॥
वसु चक्र छाया पुरुष दीप गांधि ध्रुव तार ॥
मूल सिद्धि लौं हिय जपै ज्ञान अलख दिन सात ॥
तालू लौं पित पंच दिन कमल सुख बात ॥
प्रश्नय विविध प्रकार की हैं सुरही में लेखि

जो सब समुझा चहै तौ लेइ सोइ देखि ॥

सप्तम ध्यान अंग

सतवाँ अंग है ध्यान का सोउ चारि बिधि मीत ॥
पदस्थ पिण्डस्थ रूपस्थ चौथा रूप अतीत ॥
पदस्थ सो जो श्री राम के चरण कमल उर लेइ ॥
नख शिख लौं छबि निरखि पुनि पायन में मनु देइ ॥
करते करते ध्यान यह हरि की प्रापति होइ ॥
की कुम्भक करि प्रणव युत जापत पावै सोइ ॥
दूजा ध्यान पिण्डस्थ है सो धौं पिण्ड सरोज ॥
भ्रमर गुफा चढ़ि युक्ति ते चवली कोल है खोज ॥
रूपस्थ ध्यान तीसर सखा चितवै भृकुटी ओर ॥
लखै जोति उडमाल शशि रवि प्रकाश सब ठौर ॥
चौथा रूपातीत सो ध्यान शून्य का होय ॥
करत शून्य है आप हू रहै न भव रुज कोय ॥

अष्टम समाधि अंग

अठवाँ किह समाधि के आपा जात नसाइ ॥
ध्याता ध्यान ज्ञेय कहै मिलै तुरी में जाइ ॥
अष्टांग योग जो मैं कहौ सो तुम समझो तात ॥
अब सुनु जो षट करम मैं प्रथम कीन्हे जात ॥
प्रथम मैं नेती नाक ते डारि कढ़ै मुख ओर ॥
दूजा धोती झीन पट निगलि निकारै कोर ॥
तीजा बस्ती गुदा ते नीर खैंचि तजि देइ ॥
चौथा गज जल युक्ति युत रोचि उदर भरि लेइ ॥
पंचवाँ न्यौली कर्म ते नले बिलोइ जाहि ॥
छठवाँ त्राटक दृगन की पलक लगावै नाहि ॥

अब सुनु मुद्रा पंच विधि प्रथम खेचरी होय॥
मुख में नासु निवास है बढ़वे जीभ बिलोय॥
दुसरी मुद्रा भूचरी नासा जासु निवास॥ ॥
प्राण अपान जुदी जुदी करि है वे यक पास॥
तीजी मुद्रा चाचरी बसै हगन बिच सोपि॥
नासा आगे दृष्टि धरि हेरैवे अचरज गोपि॥
चौथी मुद्रा गोचरी करत श्रवण में बास॥
ज्ञान सुरति एक होत है अनहद शब्द प्रकास॥
पचई मुद्रा उन मुनी बसै सो दश यें द्वार॥
पावै सिद्धि समाधि तहँ होइ बासना छार॥
बंधन चारि प्रकार सुनु महा बंध पुनि मूल॥
जालंधर उड्यान चहुँ हैरे हृदय की भूल॥
योग क्रिया रघुनाथ सब बरणी मति अनुसारि॥
गुरु बिन सधत न समुझि के तेहि कीन्ह्यों नहिं विस्तार॥
योग तपस्या कि किहे मिलै ऋद्धि अरु सिद्धि॥
तिन में बहै न चतुर सोइ अब सुनि तिनकी रद्धि॥
प्रथमै अनिमा लघु करै दूसरि महिमा मोट॥
तीसरि लघिमा तूल सम गरिमा करै बड़ोट॥
पचई प्रापति चहै तहाँ फिरि आवै अति हाल॥
छठी प्रकाम सुख पुधरे सत्त ईस ता जाल॥
बसीकरन सिधि आठवीं करै चहै तेहि बस्स॥
राम भजन बिन बादि अब सुन यक कम निधि दस्स॥
महा पद्म अरु पद्म पुनि कच्छप मकर मुकुन्द॥
शंख खर्ब नीला ठये नवई निधि जु कुन्द॥
रिधि सिधि भई तो क्या भयो जो न भज्यो रघुबीर॥

खगबहुउड़तअकाशमेंकूपिबहुनांवतनीर॥
लोकरिझायेहानिबड़िलाभतुच्छसनमान॥
वाहवाहकहिभाडकेसर्पडसनगेभान॥
तेहितेंत्रैबोधकोजियेहरिकोसुमिरनसार॥
सत्यअमितिनाथफिरिकहौंसहितविस्तार॥

चौबोलाछंद॰सुनुसुमिरनकीबातकहौंअबलोहिरे।जेहि-
तेइन्द्रिनसाहितअचलमनहोहिरे॥षटमासनकोकरैनतौ-
सिधजानिके।मेरुदंडसमराखिचिबुकउरआनिके॥ना-
सापरकरिदृष्टिलिकुटीठामको।सुमिरैसांसउसासरामही
नामको॥रटलामिलैमिठासअभ्यासआगेपरे।अगिनफूलसे
प्रथमसुरहलागतझरै॥कछुदिनमेंलखिपरैदीपकीजोति
जू।पुनितारनकीमाहंबिंदुदुतिहोतिजू॥सनइरसनइससो
मसूरबहुदेखई।सहसकमलपरपरमज्ञातमहिंपेखई॥
बड़ोबिरहकोलायधायसुखरामही॥झिलमिलझिलमिल
जगततेजमेंभायही।ज्योंजलनिधिमेंबूड़िवलोकेमाहिजू॥
दशादिशद्रदर्शैजलेअरोरकछुनाहिंजू॥बाजैअनहदनाद
तहांदशभांतिजो।बरनौंतिनकीरीतिरहानिहूजातजो॥प्रथ-
मभंवरगुन्जारअङ्गपुलकावई।पुनिसुनिनेपरनादसुआ-
लसआवई॥तीसरिधुनिसुनिशङ्खप्रेमपीड़ाजगै।चौथेअ-
मलसुनिघंटशीसघूमनलगै॥पंचमबाजततालअमी
बरसावही।षष्टमसुरलितजिकपाटतेरसोइपावही॥सप्त-
मभेरीसुनतबढ़ैछबिमरकी।अन्तरयामीहोयलखैगतिदू-
रकी॥अष्टमअकनिमृदङ्गनादअनहदसुनै।अपरलजा-
नैकोइकालयहालिहुगुनै॥नवमनफीरीसुनतअगोचरहो-
यजू।चहुंतहांबलिजायनदेखैकोयजू॥पुनिहोवैअस्थूल-

दर्या सबदेवकी। दसईकेहरि नाद सुनत अहमेवकी।। गांठि-
कठिनखुलिजायहोय सो ब्रह्महो। सत चित आनन्द रूपमि-
टे सबकर्महो।। जिमिहिमिमालिमिलिउदधिकहांवेउदधि
हो। होयवन्हिसंगवन्हि दहत जो संगहो।। करे सदायह ध्यान
बैठि एकांतमें। अल्प असन अनुरक्त रहे रसतालमें।।
नाहितनिजपग मानि मूंदि नवद्वारको। सुनै सुरतितम आदि अ-
नेकप्रकारको।। भाषतजनरघुनाथसनेहीरामके।। भयेय-
हीकरिसन्त निवासी धामके।। जो चाहे हरिभक्ति भजे अवना-
रसों।। करे ध्यानसब अङ्गसमुझि गुरुद्वारसों।। जपै इष्टकोनाम
प्रेममनठानिके। सदा सर्वगत ईश सर्वको जानिके।। सुंदरश्या-
मस्वरूपसुखदउर आवहीं। ब्रह्मलोककासुखनलखेहिभा-
वहीं।। अन्तभावनासारसिलहे भगवन्त को। प्रभुताकरप्रभु
सुनिप्रसिपालकसंतको।। अलपदृष्टकोअलपभूरिको-
भूरिहै। चाहवन्तकोनिकट चाहबिनदूरिहै।। कहतउपनिष-
दबेदसोईसो भारहै। जो जनकरतीकेरेकरनिहीसारहे।। क-
रनोहीहे जरउकरानिहीसिद्धिहे। बिनकरनीनहिंहोतकिसी-
कीवृद्धिहै।। तातेजनरघुनाथसुकरनीकीजिये। असनबि-
नानहिहोततृपितसुनिलीजिये।।

दो॰ सिपतकरे कोखांडकी धरेनमुख अभिराम।।
लहेस्वादरघुनाथकिमितिमिसुमिरनबिननाम।।
हरिसुमिरनकीन्ह्योंनहींकैसेसुखसरसाय।।
हरदीजरदीतबचढ़ेजबमरदीभलजाय।।
सुमिरनबिनजानैकहाकोऊ हरिनामप्रभाव।।
जिमिमानिककेमोलकोमानिकपरखैपाव।।
कुटिलकुनवनीकूरतेरामतत्त्वजनिगाय।।

अंधेकरहीतापरीदेईदूरिचलाइ॥ ॥ ॥

रामतत्वगुरुभक्तलेकहिंयेज्ञानिकुतत्र

पदिकपारखीसेइगोहेइनकोंकल्यान

वेदरूशास्त्रपुराणकरकहींजोव्यापकमत्व॥

अबसुनुभाषौंस्वल्पमेंतिनसबहिनकोतत्व॥

कुण्डलिया चारिवेदकेअंगषटग्राह्यसुनव्याकर्ण। शिक्षाज्योतिषछंदविधिपुनिनिरुक्तनिजवर्ण। पुनिनिरुक्तनिजवर्णवेदकेचहुउपवेदा। रिगुकाआउतस्यचिकित्साशास्त्रअरेषदा॥ यजुर्वेदकाधनुर्वेदतसयुद्धशास्त्रकहि॥ सामकेरगंधर्वतस्यसंगीतशास्त्रसहि। सहीअथर्वणाकोअर्थसिल्पशास्त्रसुनधारि। अपरमिमांसाआदिहैहैषटशास्त्रविचारि॥

चौपई तत्वमसीकहैसामवेद। ब्रह्मजीवहैप्रकृतिभेद॥ प्रज्ञानंदरिगुवेदबयन। शीवस्वयंआनन्दअयन॥ ब्रह्मअस्मिपद्यजुरभाषि। चेतनसबमेंहैभलसाखि॥ अंआतमाअथर्वणआहु। मेरीसबकोइभरतचाहु॥ सकलवाक्यकोयहीअर्थ। ब्रह्मजीवमायाअनर्थ॥ अबसुशास्त्रमतसुनुसुजान। जेहिविधिमुनिवरकरतगान॥

दो॰ प्रथममिमांसाशास्त्रकेजैमिनिमुनिआचार्य॥

धर्मविधैसुनाथमनिस्वर्गादिकफलकार्य॥

दुतियेवैशेषिकशास्त्रतस्याचार्यकनाद॥

मूलपदारथज्ञानफलभावाभावविवाद॥

न्यायशास्त्रगौतमरिषिभाष्योतर्कविशेखि॥

प्रमानादिषोड़सअरथबोधप्रयोजनलेखि॥

चतुरथपातंजलऋषियोगशास्त्रसुखमूल॥

बिषैनिरोधनचित्तविरत्तिनासकसंस्त्रितमूल॥
पचवांशास्त्रजुसांख्यकेकर्त्ताकपिलयोगीस॥
प्रकृतिपुरुषनिरोधबिषैहेतुत्रिबिधिदुखखीस॥
षष्ठमशास्त्रवेदांतकेआचारजमुनिव्यास॥
ब्रह्मजीवकीयेकताबिषैमोक्षफलतास॥
सो० सर्गबिसर्गअस्थान।पोषनऊतिमनोतरधि॥
मुक्तिनिरोधदुसान।आश्रयदशपुराणमत॥
दो० वेदस्मृतिमुनिसंहिताआगमनिगमपुराण॥
एकवाक्यतासबनकैवेद्यएकभगवान॥
एकनगरकेबहुतपथसबमूधचलिजात॥
अंतप्राप्तियेकैनगरत्यौंशास्त्रनकीबात॥
वेदशास्त्रनसहितजोलखैकाव्यकीरीति॥
तौनहोयसंदेहकछुज्यौंपुत्रनकीप्रीति॥
अरिल्लछं० चौहटहाटसमानवेदचहुंजानिये।बिबिधि भांतिकीबस्तुबिकतनहंमानिये॥जोजेहिरुचैसोलेइदेइ धनधामको।परिहांलीन्हौजनरघुनाथरतनहरिनामको॥ पावनपरवतसरिसवेदअरुशास्त्रहैं।बिबिधिभांतिकीधा तुरहतलिनमाझहैं।जोजेहिरुचैसोलेइभलेहितमानिजू। परिहांसन्तनलीन्हीभक्तिमनिनकीखानिजू॥
दो० वेदबिपिनबूटीवचनहरिजनकिमिआकार।
खरीजरीतिनकेकनेखोटीगहतगंवार॥
श्रीगुरुदेवादाससेकेचरनकमलधरिमाथ॥
इतिहासायनग्रन्थयहपूरकीनरघुनाथ॥
गीतिकाछं० रघुनाथगुरुपदमाथधरिकह्योरामयश हितमानिकै।कल्यानकरतापुरायमतोपापहर्त्ताजा-

निकै॥कहिहैं जेसुनिहैं सहित नेह बिदेह गति पैहैं सही॥
मनकामककरणाधामकोशुचिनामसोहृढ़ करिगही॥ ॥

दो॰ रामचरितगावतसुनतविघ्नकरतजोकोइ॥
जन्मलेहिउदरमेंरोगजलंधरहोइ॥ ॥
विश्रामोदधिग्रंथमेंतीनिअयनहैंतात॥
इतिहासअयनकृष्णायनरामायणसुखदात॥

चौ॰ ग्रंथमाथरोपरमानगनाई॥उनइससैसत्तरचौपाई॥
दोहाछैसैपचाससोहाये॥उनहत्तरिसोरठागनाये॥ ॥
कुण्डलियाचौबिसपहिचानौ॥तोटकछन्दअठाराजानौ॥
कुकुभाचारिमालिकाहोई॥अष्टपदीतेरहहैंजोई॥ ॥
तोमरउनइसचरपटसाता॥हरिपदअठभुजंगप्रयाता
सुनिमधुभारसरपिकाबारा॥रोलामनुअश्लोकअठारा॥
बरवैतीनिसवैयाचारी॥शुभपंकजबाटिकानिहारी॥ ॥
शशिसमानिकापससुन्दरी॥दोधकतीनिसुप्रियासुंदरी॥
एकइसछप्पैतारकचारी॥हैंछब्बिसगीतिकाकरारी॥ ॥
हरिगीताकुण्डलहलमराली॥चिन्तामनिमधुहिरनिगोपाली॥
कामाकमलविजैहरिलीला॥निसिपालिकामनोहरसीला॥
श्रीअमृतगतिअमृतसुक्ता॥एकएकयेछन्देमुक्ता॥ ॥

दो॰ अर्द्धभुजंगीसंयुताकरखाद्वैद्वैधीर॥ ॥
शशिमुखदीपकशारदकटिचारि२मुनिधीर॥
बीसचतुष्पदहंसकलउभैअरिल्लअमान॥
चारिसहसपुनिपांचसतहैंश्लोकप्रमान॥
हरिप्रेरितरघुनाथजनजोकछुकीनबखान॥
विश्रामोदधिकेविषेसोजानौविद्वान॥
विद्वनबिनजानैकहाविद्वनकोपैसर्मं॥

जैसे धूमा इलि रोपवस पारको मर्म॥ ॥

दुर्जन हैं देवदोषपर पेखे नहिं गुणसील॥

लक्ष मुहर के महल में खोजत छिद्र पपील॥

संस्कृत प्राकृत पारसी विविधि देश के बैन॥

भाषा ताको कहत कवि लघु कीनमें ऐन॥

इति श्रीविश्रामसागर सकलमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीमज्ञानगुणा
गनिभक्त ज्ञान श्रीरामस्यानुरागानुगामी श्रीरघुनाथदासरामसने
ही निर्मितायां सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः

इति रामायनखंड समाप्तम

इति

श्रीगणेशाय नमः

अथ विश्राम सागर

श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत कृष्णायण

॥ खण्ड आरम्भः ॥

भुजङ्गप्रयात छन्द

नमो शारदा शारदा ज्ञानबुद्धिं। नमो गुरु गणेशं हरन्विघ्नसिद्धं॥ नमो राम घनश्याम कामं स्वरूपं। नमो जानकी जक्त माता अनूपं॥ नमो भारतं लखन शत्रुघ्न आरी। नमो केसरीनन्दनं मुक्तकारी॥ नमो दीनदानी सदाशिव भवानी। नमो विष्णु कमलं नमो ब्रह्मवानी॥ नमो मीन वाराह नरसिंह कूरम। नमो वामनं परशुरामादि सूरम्॥ नमो कृष्ण बल्ल विध्वंभानं किशोरी। नमो कालिके देव चैनोसकारी॥ नमो सरयू गंग भू भानु धर्मं। नमो वेदव्यासं निगम्हर्षी भर्मं। नमो ऋद्धि आशीस हरबुद्धिराशी। नमो सन्त आनन्द मुक्तिप्रकाशी॥ कहत दास रघुनाथ युग हाथ जोरे। करौ सर्व जन कृपा दृष्टि मोरे॥

दो॰ जानि कृपा कृपाल के कहौं चरित चित चोर॥
अर्थ अमित आखर नमित होइ मति लखि थोर॥

चौ॰ रामभक्ति की मुनि प्रभुताई। मुनि शौनक बोले शिर नाई॥
नाथ वचन तव अमी समाना। तृप्त न होत उदधि मम काना॥
तेहि तें अब करुणा करि गावो। कृष्ण चरित कछु मोहि सुनावो॥
मुनि सुमंत्र बोले हरषाना। भलो प्रश्न कीन्हेंउ गुनखाना॥
सुनो कहौं हरि चरित सोहाये। जौन परीक्षित ने शुक गाये॥

सोसबकरि संक्षेपबखानौं ॥ आदिहि ते नीमें मन आनौ ॥
द्वापर कृष्णलीन अवतारा ॥ कीन्हें चरित्र अनेक प्रकारा ॥
कलि आवत गवने निजलोका ॥ सुनि पांडवन कीन अतिशोका ॥
राज्यपरीक्षितकासौंपाई ॥ अपनाभले हेवारे जाई ॥ ॥
बिशुरातजबतेनृपभयऊ ॥ परजनकहं बहुबिधिसुखदयऊ ॥
एकदिवसका सुनो हेवाला ॥ विजैहेत निकसा महिपाला ॥

दो० एकठौरदेखतभयोवृषभएकएकगाय ॥ ॥
भयबसभागेजातदोउ एकनरमारतजाय ॥

चौ० तेहिके चिन्हनृपनकेऐसे ॥ करतबकरतनीचजनजैसे ॥
तबतौभूपनिकटचलिगयऊ ॥ वृषभधेनुतेबूझतभयऊ ॥
कोतुमअहेजातकितभागे ॥ यहकोहि मारत केहिं लागे ॥
कह्योवृषभभलनिस्वयनाहीं ॥ बोलीतबसुरभीनृपपाहीं ॥
एहें धर्म धरणि हम आनू ॥ कलिकेभयसे भागे जानू ॥ ॥
कलिमलमलिनकरीसबधरणी ॥ बरण धर्मके धर्मनजानी ॥
बिप्रसु मारग पगुनहिंदेहें ॥ बेचिहैं वेद धर्म दुहि लेहें ॥ ॥
बिबुधकुपंथनिरतदिठियारे ॥ किहि अबलबहि अन्धविचारे ॥
छत्रीकुलमयकलिमलमूला ॥ वंचक बिप्रवेदप्रतिकूला ॥
बनिकमहाजनसाहुसुनामा ॥ बचनमधुरअतिकरतबवामा ॥
शूद्ररहितनिजधर्मविचारू ॥ अशुभजीवका अशुभअहारू ॥
धर्मस्तुतीरथसंचसमाजी ॥ तहे सिरोधिक कलिकुटिलबिराजी ॥
काई सुरसरि बिमलतड़ागा ॥ फूलबफलबसमयबिनबागा ॥
तिनकरफलपुनिदुरितदुकाला ॥ बिबिधबाधिबसजीवबिहाला ॥
सुकृतीलघुजीमनखबनाना ॥ दाता बिधनकृपिन धनवाना ॥
पावकबहुजमकेहुइकदानी ॥ होइहें अगरिसतरासकजानी ॥
भूमिबीजबिनघटरसस्वादा ॥ पाटपोरबढवादबिवादा ॥

नृपसरो यसब प्रजा दुखारी ॥ कबधौं मिटै देव सब गारी ॥ ॥
कालकर्म महिपाल अधीना ॥ बरणत वेद सोइ मति हीना ॥
श्रोनि सकै षट अकारण कोहा ॥ करत मातु पितु गुरु ते द्रोहा
देहि गारि सुतिय माहा गिनत चेरी ॥ गुन बरयाति अच्युत कुल केरी
ठाकुर कूर सचिव मति हीना ॥ होइहैं पुरुष नारि आधीना ॥ ॥
धनी कुलीन गुनागर सोई ॥ धनी सुसाधु यदपि खल होई ॥
साधु सुसील सुजान सुजाना ॥ धन बिन सहिहैं दुख अपमाना
बकता बिपुल सुनी नहिं कोई ॥ गुरु शिष अन्ध बधिर गति होई
उपदेशक आचरण मलीना ॥ बेचिहैं धन हित नाम नगीना
चतुर चोर भट जे बट पारी ॥ सब नर नारि सुमन रुचि कारी ॥
गिरही रंक यती धनवाना ॥ शूद्र पुरारिक विप्र किसाना ॥
निरबल साधु सकल खल कामी ॥ दास सुजान नीचजन स्वामी
मृतिका पात्र अभूषण केसा ॥ परिकर बसन बिछौना सेसा
जटिल कुभक्षक सिद्ध शरीरा ॥ परधन पचवैं ते बड़ धीरा ॥
जीवन थोर दुराशा भारी ॥ सत्य कहब ते होब लबारी ॥ ॥
चलिहैं सुरुचि अनेकन पंथा ॥ होइहैं लुप्त सुभग सद ग्रंथा ॥
सोइ सद ग्रंथ जहां हरिनामा ॥ धर्म विवेक भक्ति अभिरामा ॥
सुता पितु दूषक कर बिन ब्यांह ॥ पुनि रिपु होब नारि सुख चांह
दो० तीस बरस की आयु नर होइ कलि अधि आइ ॥
अष्ट अबद की कामिनी जनमी सुत पति पाइ ॥
चौ० सुरुचि कुसंग अरुचि सतसंगा ॥ तुलसि हिहं सब सराहब भंगा
यति विरोध परपति रत नारी ॥ पंडित बाजब परम लबारी ॥
कवि कबीर साखी शब्द बखाना ॥ निंदिहैं हरि हर वेद पुराना ॥
तजि कुल कुटुम्ब होब बैरागी ॥ तिन हुन माहिं दुरचना लागी ॥
मेखबिमद बातन में सूरा ॥ भक्ति भजन में कादर कूरा ॥ ॥ ॥

जोकोइहरिसुमिरनपरकासी।करिहैंसबमिलितिनकीहाँसी
गांजाचरसन्तमालउड़ाई।होईकलितेहिकेरिबड़ाई॥ ॥
जोतिहिहरनहिकेइकबधा।रहोननेकुधर्मकीसर्धा॥ ॥
विद्यावनिजकृषीसेवकाई।होईफललघुश्रमअधिकाई
दो० तरुवड़भाऊविटपसमसुरभीअजासमान॥
मेघबरसिहैंओससमबयेनजामिहैंधान॥
चौ० कलिकेदोषकहेकछुगाई।सुनहुजेअहेंसुनोसोराई
कलियुगमनकरपातकनाहीं।पुरायपुनीतमनोरथमाहीं
वाचकपापजाइपछिताये।सरयूसरिहरिपदअन्हाये॥
कायातेपातकजोहोई।बिनभोगेछूटतनहिंसोई॥ ॥
सतयुगदेशग्रामत्रेताहीं।द्वापरकुलकलिमैंकरजाहीं॥
कलिमैंरामभक्ततनुधरिहैं।तेवहुजीवकृतारथकरिहैं॥
रामभक्तिकरिकरिनरनारी।भवसागरतरिहैंयहभारी॥ ॥
कालकमैंगुणअकृतिसुभाऊ।भक्तिसमीपजातनहिंकाऊ
कृतयुगजोगतिध्यानकिहेते।त्रेतायुगमखदानदिहेते॥
द्वापरयुगहरिपूजनठानी।पावतरहेजौनगतिप्रानी॥ ॥
सोगतिकलिहरिकेगुणगाये।पैहैंनरजपिनामसुभाये॥
कलिकेवलपरमारथहेतू।रामनामभवसागरसेतू॥ ॥
साधननामसिद्धफलनामा।जेहिनप्रतीतनाहिंविधिवामा
धर्मचारिपदकलियकदाना।जौहैंनहिंभालिफिहैंकल्यान
जबशुभपंथसकलमिटिजाई।तबकहुहरिअवतरिहैंआई
मुनिनृपकोपिचलावलिवोरा।रखननामसुनेनहिंओरा॥
तबकलिडीपिचरणनमैंपरऊ।बहुतभाँतिअस्तुतिअनुसरऊ
जोकछुआयसुहोइतुम्हारा।सोहमकीजेयाहीबारा॥ ॥
जबलगुईशनजगराजकरीजे।तबलकआपनअमलनकीजे

देहु माहिं अस्थान भलाई ॥ जहँ हम बसनु कटक युत जाई ॥
दूत चोर गणिका मद थाना ॥ कनक बसहु दूतने अस्थाना
मुनि नृप मुकुट बैठ सुख पाई ॥ सुमति मिटी असुरमति आई
चला भूप कछु तृषा सतावा ॥ शृंगी ऋषि के आश्रम आवा
ध्यान स्थित लखि मन अनुमाना ॥ हमैं देखि ठानि सठ ध्याना
मृतक सर्प धनु कोर उठाई ॥ कंठ लपेटि चल्यो हरषाई ॥
सुन्यो सुवन शृंगी ऋषि केरे ॥ आवा तुरत पिता के नेरे ॥ ॥

दो॰ पन्नग कंठ बिलोकि कै दीन्हों श्राप रिसाई ॥
सतयें दिन नरपाल का काटैल तक्षक जाइ ॥ ॥

चौ॰ काढ़ि उरग तब पितहि जगावा ॥ भूपति को चरित्र सुनावा
श्राप दीन मुनि अति रिसियाने ॥ कीन्हु निपट अकाज अयाने ॥
जेहि के चलत विविध सुख कीजै ॥ ताहि कि चहिय दण्ड अस दीजै
मुनि सेवक कछु चूक करहीं ॥ चतुर स्वामि लेहिं न जननन वहीं
धर्मवान जाइ नृप ऐसा ॥ नहिं कलियुग अब आवे कैसा ॥ ॥
अस कहि ऋषि चलि भे तिन येरा ॥ भूपहि बोध देन के हेरा
महीं महीपति मुकुट उतारा ॥ तब मन भो सब कीन्ह अधिकारा
कौन कर्म कीन्ह्यों मैं आजू ॥ होइ कछु बड़ दोष अकाजू ॥
जो या कर फल माहिं विधाता ॥ देहु अछत तनसौं भलि बाता
तेहि औसर ऋषि पहुँचे आई ॥ लखि नृप परयो चरण अकुलाई
बोले ऋषि भइ तुम्हें सरापू ॥ सजग होउ अब होत अपू ॥
कह नृप अति बड़ दोष हमारा ॥ थोरेहि मानव तैं ने निवारा ॥
नृप तुम कछु अपराध न कीन्हा ॥ होनहार है परबल चीन्हा
सुर मुनि दनुज नाग नर माहीं ॥ होनी टारि सकत कोउ नाहीं
हरषा ॥ कुश दम कंधर कंशा ॥ औरौ भये भूरि क्षिति बंशा ॥ ॥
जीवन हित बहु किहिनि उपाई ॥ काल साइ कोउ बचे न राई

गरुड़ कपोलै च हैं बचायो ॥ अजगरके मुखमें धरि आयो ॥
होनहार जो सुन्दर होई ॥ तौ जग मारि सकै नहिं कोई ॥ ॥
कनककसिपु प्रहलादे डाटा ॥ काकरि सकै ठाट बहु ठाटा ॥
बालि बधन सुग्रीवे चाहा ॥ कहो बेर कारि कीन्हि निकाहा ॥
चन्द्रहास का सब जग जाना ॥ का कीन्हि सि करि यतन रिवाना
अंबरीष पर रिस अति कीन्हो ॥ मुनिवर कौनि बड़ाई लीन्हो
सचिव सुधन्वे चह्यो जरावा ॥ मांखलि रिविल फल आपुइ पावा
सुरुचि चह्यो ध्रुव बरहि विनाशा ॥ रामकृपा अविचल भयो दासा
पाण्डुसुतन कह बहुत साइनि ॥ दुरयोधन कछु कीन्ह पाइनि
ब्रह्म अस्त्र तब ऊपर घेरा ॥ द्रोणपुत्र का कीन्हि सि तेरा ॥ ॥
जाकी मीच निकट जब आवै ॥ तौ हर शुके रस धे हूं जावै ॥ ॥
तेहितें होनहार है जेती ॥ नीकि जबुनि होति है तेती ॥ ॥ ॥
सन्त चहें कछु देहिं मिटाई ॥ अपर न टारि सकै कोइ राई ॥
अस कहि ऋषि निज आश्रम अये ॥ भूपतुरत मुनि सहज सुमये
राजकाज तजि सकल प्रवासा ॥ आइ कीन गंगा तट बासा ॥
व्यास परासर आदि मुनीशा ॥ जेरु आइ तहँ बहु अवनीशा ॥
कोउ कहै करो भूप गोदाना ॥ कोउ मुनिबर तब लावै नाना ॥

दो० तेहि अवसर शुकदेवजी आये नेग धरंग ॥
नाल बजावत बाल बहु डारत लेस ज अंग ॥

चौ० शुकहि देखि जे रहे अखाड़े ॥ ज्ञान बिरध ला रवि भे सब ठाढ़े
आसन दीन भूप सनमाना ॥ आपन जन्म धन्य करि ज्ञाना ॥
बोले बहुरि जोरि युग पानी ॥ कहो भद्र की बात बखानी ॥ ॥
हे नरेश मन शोचन कीजै ॥ नृपरवट्वांग बात चित दीजै ॥ ॥ ॥
उभय घरी में भइ गति जाकी ॥ तुम्हें सप्त दिन जीवन बाकी ॥ ॥
हरि चरितामृत पान कराई ॥ तुमें तारि देहों मैं राई ॥ ॥

अस कहि कहन भागवत लागे ॥ आगे सुनन भूप अनुरागे
प्रथमे कछु कामना देखाई ॥ पुनि अभु चरित कहे हरषाई ॥
जग उतपत्ति अस्थित संहारा ॥ ब्रह्म निरूपन ज्ञान उचारा
भक्ति योग वैराग विवेका ॥ भा अस्कन्ध समापत एका ॥ ॥
तब दूजे में लाग लगावा ॥ पुनि कछु योग रूप करि गावा ॥ ॥
विधि नारद को कथा बखानी ॥ चौबीसो अवतार हि जानी
जग उद्भव कहि पूरण कीन्हा ॥ लव अस कंध तीसरो लीन्हा
ऊधो मिलन प्रभास वि षादा ॥ कहौ विदुर मौत्रे संवादा ॥
सप्त विकार सहित ब्रह्मण्डा ॥ रूप विराट कहत में अण्डा
सूक्ष्म थूल काल की करणी ॥ पुनि ब्रह्मा की उतपति बरणी
बधि हिरण्याक्ष धरा जिमि आनी ॥ वाराह की उत्पत्ति बखानी
शंभू मनु सतरूपा केरी ॥ कही कथा त्रै सुता निबेरी ॥ ॥ ॥
पुनि करदम का कहो बिहारा ॥ नव कन्यन ते सृष्टि अपारा
देवहुती अरु कपिल कज्ञाना ॥ बरणि चौथ अब करत बखाना
दक्ष यज्ञ जेहि विधि भइ भंगा ॥ सती मरण कर कहो प्रसंगा
ध्रुव चरित्र पुनि तिन कर बंशा ॥ कहा कथा पृथु केरि प्रशंसा
पुनि प्राचीन बरहि जिमि कीन्हीं ॥ कहि न सीख नारद जो दीन्हीं
पूरंजन कि पंचम माहि ठानी ॥ बरणि प्रियब्रत केरि कहानी
ऋषभ केर आख्यान सुनावा ॥ भरत मृगी करि जो दुख पावा
पुनि जड़ भरथ रघुगण ज्ञाना ॥ कह्यो भूप भा नारि अज्ञाना
दीप सिंधु गिरि सरिता धरणी ॥ रवि शशि उडुग रथादि बरणी
जोति चक्र पाताल प्रमाना ॥ बरणो नर्क महा दुख नाना ॥ ॥
षष्ठम अजामील इतिहासा ॥ धर्म दूत संवाद प्रकासा ॥ ॥

दो० सहस एकादश पुत्र बर दक्ष किये उतपन्न ॥
नारद ज्ञान सुनाइ कै बिपिन पठाये धन्य ॥

चौ० नव तिन साठि सुता उपजाई। तिनतें सृष्टि भई अधिकाई॥
कश्यप के जन्मे सुत नाना। सुरगुरु हरि का बयर बखाना॥
बिसेश्रवे वध वासव कीन्हों। हत्या लागि बांटि जिमि दीन्हों॥
इन्द्र वृत्तासुर युद्ध बखाना। नहुष भये जिमि पन्नग जाना॥
चित्रकेतु की कथा सुनाई। भे उनचास पवन जिमि आई॥
सप्तम कहि प्रह्लाद चरित्रा। बरना आश्रम के धर्म पवित्रा॥
अष्टम कहि मन्वन्तर चौदा। गजनारद की कथा मसौदा॥
कूरम कर अवतार सुनाइनि। सागर मथन रत्न जिमि पाइनि॥
समर असुर सुर मल्ल कहानी। बलि बावन की कथा बखानी॥
नवम माहिं रविवंश बखाना। नृप की कथा कीन तहँ गाना॥
त्रिमनशंकु की कथा सुनाई। अम्बरीष की कीनि बड़ाई॥
सगर भगीरथ अति मन भाये। रामचरित प्रमुदित कछु गाये॥
निमि प्रसंग निमैं जग केरी। परशुराम की कथा निबेरी॥

दो० रवि शशि वंश मिलाप कहि इला बुद्ध संयोग।
ययाती सांतन की कथा पुनि ययाति कर भोग॥

चौ० पुनि यदुवंश कहा विस्तारी। जामें प्रकट भये गिरिधारी॥
दशयें कहा कृष्ण अवतारा। बकी सकट तृणावर्त मारा॥
यमलार्जुन तिनका गति दीन्हो॥ वत्स बकासुर जिमि बध कीन्हो॥
कंस निधन विद्या जिमि पाई। जरासिंधु की कही लड़ाई॥
रुक्मिनि हरन द्वारके आये। औरौ चरित दशम बहु गाये॥
ग्यारहें कहा यदुन कर नासा। नव योगेश्वर जनक विलासा॥
हरि उद्धव का ज्ञान सुनाये। दत्तात्रे द्विज का यश गाये॥
बहुरि भये प्रभु अंतरध्याना। सो चरित्र सब कीन बखाना॥
द्वादशयें युगन कस गायो। निकलंकी अवतार बतायो॥
होइ संभरपट अभिरामा। विशुदत्त ब्राह्मण के धामा॥

दुनिमले कछु पुनिसतयुगहोई। कुमतिसवन कीजाईखोई॥
उतपतितीनितराकीभाखी। परलयचारिभांतिकीराखी॥
दो० इतलीकथासुनाईके सुकमुनिकीनिपयान॥
सुतैअहिकाटेउनृपहिंआयोहरिपदेवान॥
चौ० यहिविधिशहरिलोककहिगयऊ। जयधुनिदेवकरतसवभयऊ॥
तबसौनकलेमुनिवरज्ञानी। जनमेजयकीयज्ञबखानी॥
वेदनकीसाखाउपसाखी। मारकंडेकीपरलेभाखी॥ ॥
द्वादसस्कंधनिकीकथासुनाई। सूतसकलभागवतगाई॥
जोनरपाठनेमयुतकरिहैं। तासुदोषदुखश्रीपतिहरिहैं॥
दो० श्रीगुरुदेवदासकेचरणकमलधरिमाथ॥
अखिलभागवतकेरसनबत्तायोजनरघुनाथ॥
चौ० पुनिसौनकबोलेसिरनाई। नाथसकलभागवतसुनाई॥
अबअभिलाष एकउरआई। कृष्णकथासुन्दरसुखदाई॥
दशयमसहुरिकथाकरिगाओ। करिबिस्तारपूर्वाईसुनाओ॥
जोउचाईनाथतुमगावा। इतिहासनमहँसोसुखपावा॥
तेहिनिबालकृष्णलीलाअब। कहोमोहिंकरिकृपानाथसब॥
केहिकारणअगटेगोपाला। केहिबिधिमारयोकंसभुआला॥
बहुरिरुक्मिनीमंगलगाओ। भाविवाहकेहिंभांतिबताओ॥
औरहुकिहिनिचरितबहुतेरे। सोसबकहहुदेवहितमेरे॥
बोलेसूतसुनहुमुनिज्ञानी। अथमेंनेसबकहौंबखानी॥
इतिश्रीविश्रामसागरसबमतआगरग्रन्थउजागरश्रीरघुनाथ-
दासरामसनेहीकृतकृष्णायनप्रबन्धवर्णनोनामप्रथमोध्यायः१॥
दो० सुमिरिरामसियसंतगुरुगणपगिरासुखदानि॥
आरम्भमनकीरिकंसकोउतपतिकहौंबखानि॥
चौ० नगरएकमधुपुरअसनामा। कालिंदीतटअतिअभिरामा॥

उग्रसेनरहेतामेंभूपा ॥ पवनरेखवरमनोरतिरूपा ॥ ॥ ॥
देवकनामउग्रकोभ्राता ॥ तिनहुंकिंत्रियामनोहरगाता
इकदिनउग्रसेनकीनारी ॥ सकलसिंगारकिहिसिढ़बिभारी
सखिनसंगलैउपवनदेखन ॥ गईप्रथकह्वैलागीपेखन ॥
तेहिअवसरदानवइकआवा ॥ भूपरूपधरिहाथचलावा ॥
बोलीपतिऐसीमतिकीजै ॥ दिनरातिकिहुपुरायसवछीजै ॥
तेहिमानानहिंककुअयोगा ॥ बरबसकिहिंसितासुसंगभोगा
तेहिपाछेनिजवपुप्रगटावा ॥ नृपपत्नीलखिबचनसुनावा ॥
रेखलनीचकुलेतैंमोहीं ॥ कोइसिश्रापदेउहौंतोहीं ॥ ॥
बोलामैंहौंदनुजजुझारा ॥ कालनेमहैनामहमारा ॥ ॥ ॥
सतयुगसमरबिष्णुतेठाना ॥ आपनदेहुलेहुबरदाना ॥ ॥
दो० तुम्हरेहमरेअंशतेहोईबालकएक ॥ ॥
महाप्रतापीभुजबलीजीतीभूपअनेक ॥
चौ० मारीअसुरनिकरबलभारे ॥ बिनभगवंतमरीनहिंमारे
सुनतप्रसन्नभईतबरानी ॥ आईजहँसबसखीसयानी ॥ ॥
हँसिबोलीबनितातबऐसे ॥ बिगलितभयेबसनतवकैसे ॥
धावाकपिएकनिकटहमारे ॥ आइनुभागितासुभयमारे ॥
तेहितेअबचलियेनिजधामा ॥ सुनिआईगृहनिजश्यामा ॥
गर्भअवधिसुखसहितबिताई ॥ माघशुक्लकुजतेरसिआई
जन्मासोइबालकअधराती ॥ भयेउपद्रवनानाभांती ॥ ॥
उग्रसेनबहुद्रव्यलुटाई ॥ कंसनामबुधराखिनिआई ॥
भाजबबड़ाबालकनसंगा ॥ खेलनजायकरैतहंदंगा ॥ ॥
फेरैकूपभरनजलदेखै ॥ भुजबलमस्तनकाहुइलेखै ॥ ॥
मगधदेशयकराजसिधावा ॥ जरासिंधकोजाइहरावा ॥ ॥
तिनकेरहेसुतायुगआछी ॥ ब्याहातिन्हैंपरोसिसहसांछी

दो॰ नामअस्तिप्राप्तिमनहुंमनमथकीकरवाल॥
लग्योकरणासुखसदनबसितिनयुतकंसभुवाल॥

चौ॰ एकदिवसभूपतिलेबोला॥तोहींकौरेगोराजिअडोला॥
असकहिकीन्हिसिकैदअभागा॥अपनाकरनराजसुखलागा॥
असुरमयावीविपुलबटोरे॥जेरिपुसमरमुरैनहिंमोरे॥॥
तिन्हैंसंगलैयकदिनधावा॥जीतिनिकरनृपपुरफिरिआवा॥
अपरसुनौदेवककीबारी॥नामदेवकीरहैकुमारी॥॥॥
तिनकोब्याहकरनकेकाजा॥खोजवायघरजहंतहंराजा॥
सूरसेनकेसुतबसुदेऊ॥सबहिनकहीइन्हैंवरिदेऊ॥॥

दो॰ तबनरेशबसुदेवकोदीन्हीसुताबिवाहि॥
दोउदिशभाउतसाहअतिसोकापैकहिजाहि॥
हैगजस्यन्दनहेमपटरतनअनेकनदीन॥
याचकसबपरतोषिकैबिदाबहिनिकरकीन॥

चौ॰ परबनचलाआपुसुखमानी॥तेहिक्षणभईगगनइमिबानी॥
यहिकन्याकेबालकहोहीं॥अठवोंसुतमारीनृपतोहीं॥॥
सुनिनृपउतरिकेशगहिलीन्हें॥खड्गकाढिमारणकोकीन्हें॥
तबबोलेबसुदेवपुकारी॥प्रमदाबधपातकहैभारी॥॥॥
तेहितेयाहिछांड़िनृपदीजे॥बोलातुमकछुशोचनकीजे॥
आगेतरुविषफलफलैकोई॥डारैताहिकाटिभलसोई॥
यहिहनितुम्हैपरारिहौंआना॥सुनिबोलेबसुदेवसुजाना॥
नृपकछुतवभगनीनहिंघालक॥रिपुतुम्हारहैंइनकरबालक॥
जबहींसुतप्रगटीजगआई॥देहौंतुम्हैंतुरतमैंलाई॥॥
सुनिविनतीदीन्हिसितबत्यागी॥आयेदोउनिजगृहअनुरागी॥
कछुदिनगयेसमौजबआवा॥प्रथमैंपुत्रदेवकीजावा॥
लैबसुदेवगयेनृपपासा॥जानिसिहैंसांचेहरिदासा॥

बालबिलोकिदयाउरआई। कहिसिशोचनिजसुतलैजाई
तेहिअवसरनारदतहँआये। कछुअनिधनहितबचनसुनाये
कंसकहालरिकाईकीन्ह्यो। जानिबूझिनिजरिपुतजिदीन्ह्यो
सुनिमहीपअसबचनउचारा। अष्टमसुतहैकालहमारा॥

दो० तबनारदलिखिवक्रगतिरासकहत्समअथसमसोइ॥
कोजानैनृपशत्रुजोप्रथमैआवाहोइ॥ ॥

चौ० असुनिकंसशिशुहिधरिमार्यो। याहेबिधिषटबालकसंहार्यो
तबदेवकीमहादुखपावा। मनहींमनश्रीपतिकोधावा॥ ॥
कंसबंशममकीन्हेसिषीशा। यहबिपदाहरिहोकबईशा॥
बेदपापपृथ्वीगरुआनी। शिवबिरंचितेबिनतीठानी॥
सबमिलिगयेजहांभगवाना। अस्तुतिकरतभयेबिधिनाना
सुनिबोलेलखिदीनमुरारी। निरभयहोउदेवमुनिझारी॥
धरिहौंमैंनरतनअबआई। हरिहौंसकलभूमिगरुआई॥
करिहौंपूरमनोरथसबके। भावविवसकारजजबनके॥
आयसुसबहिदीनपुनियेहू। गोकुलजन्मजाइतुमलेहू॥
बेदनसचनकादीनिरजाई। गोपीहोउसकलतुमजाई॥
पायरजाइसबनसोइकीन्हा। आपुबोलिनिजमायहिलीन्हा

दो० कह्योदेवकीकेगरभहैसततवांममअंश॥
ताहिरोहिणीकेजठरकरिआवोनिरसंश॥

चौ० सुनिसोइकरतभईहरिहांशा। जानासबनगर्भभानाशा
अठयेंबासआपुहरिलयऊ। बदनप्रकाशचंद्रसमभयऊ॥
अंगसुगंधवदनछबिजाई। कंसदिहिसिलखिवंदिडराई
करहथकरीनिगढ़पगडारे। जह्निकपाटपहरूबैठारे॥ ॥
तिनतेकहेसिहोयसुतजबहीं। सुनितुमहमैंजनायोतबहीं
यहिबिधिगयेकछुकदिनबीती। जेहिहरिअकटसुनहुसोरीती

भादौं मास पक्ष अँधियारा। उड़ रोहिणी अरु बुधवारा॥
तिथि अष्टमी रैनि अँधियारी। झिमिझिमि वर्षत वारि॥
प्रभु आगमन जानि सुर आये। करि विनती पुनि गगन सिधाये
खुलिगे सकल पटल केवारे। भे निद्रा वस सब रखवारे॥
अरु वसुदेव देवकी दोऊ। छूटि गये बंधन ते सोऊ॥
उदय प्राची दिशि शशि समाना। प्रकट भये तब श्री भगवाना
क्षीरसिंधु गोलोक निवासी। शोभा सदन सकल सुखरासी
शीश वसन श्रुति कुंडल लोला। उर विशाल बनमाल अमोला
शंख चक्र गद पद्म विराजे। मणि भुज चारि विप्र पद भ्राजे

दो० पीत वसन उपवीत उर राजत नयन सरोज॥
अंग अंग पर रघुनाथ जन वारत अमित मनोज॥

चौ० लखि वसुदेव ब्रह्म कहँ चीन्ह्यो। अंजलि जोरि दंडवत कीन्ह्यो
पुनि उठि कह्यो तुम्हें मैं जाना। परम पुरुष हौ तेज निधाना॥
परम जोति अद्वैत अविकारी। निरगुण ब्रह्म त्रिगुण तनुधारी
कंसासुर त्रास न निशि भोरा। हरहु नाथ मम संकट घोरा॥
पुनि मुनि प्रभु देवकी जानी। बंध त्रास युत विनय बखानी
अहो पुराण पुरुष अविनाशी। निजानन्द निर्गुण गुणराशी
काल व्याल ते मनुज डेराने। सर्व लोक कहँ जात पराने॥
तजत न मृत्यु जहाँ चलि जाहीं। निरभय होत कतहुँ सो नाहीं
तव पद पदुम प्राप्त जब होई। पद रक्षा सुख पावत सोई॥
मृत्यु डेरन लागी तब ताहीं। सेवत चरण कमल जो आहीं
ऐसे तुम मम उदर निवासी। है नरलोक बड़ी उपहासी॥
बोले तब श्रीपति सुनु माई। जेहि ते तव मन संशै जाई॥
पूरब जन्म माहिं तुम मोहीं। यांचेहु वर तुम सम सुत होहीं॥
भक्त बछल मैं बिरद विचारा। भयऊँ आइ तेहि तनै तुम्हारा॥

कंसमहाखलसुनतैंआई ॥ तौमोहिंगोकुलदेहुपठाई ॥
यशुमतिकेउपजीममसाया ॥ लावहुतेहिउठाइकरिदाया ॥
कछुदिननन्दभवनकरिलीला ॥ मिलबतुम्हेंपुनिबन्धुसमीला ॥
असकहिशिशुहोइरोवनलागे ॥ देखिमातुपितुअतिअनुरागे ॥
नारवेवारसमेतउठावा ॥ लैवसुदेवचलेनभछावा ॥ ॥ ॥
कालिंद्रीजबलगेमैंभावन ॥ यमुनाबढ़ीछुवनपदपावन ॥
गुलफजंघकटिगरतकआई ॥ शिरधरिठाढ़रहेडरपाई ॥ ॥
लखिप्रभुपाकेपाउंपसारा ॥ परसिबहींमुखनतकधारा ॥
ऊपरशेषसहसफनछाये ॥ इतउतहरितरिगोकुलआये ॥
प्रविशेमहरिभवनकेमाहीं ॥ प्रगटीसुतातिन्हंसुधिनाहीं ॥
शिशुसोवाइतिनआगेदीन्हों ॥ लैबालकीभवनपुरकीन्हों ॥
निवसतनिलेबहुरिपटलागे ॥ बन्धनपरपौरियाजागे ॥
सुनिकन्याकोरोदनजाना ॥ भासुतनृपसेजाइबखाना ॥
सुनतकंसआयुधचलिआवा ॥ तवदेवकीबहुतसमुझावा ॥
तदपिनखलमानिसिपरतीती ॥ लीन्हेसिछीनिसुताविपरीती ॥
पटकनलागाशिलापरनीचा ॥ करतेतड़िपगईनभबीचा ॥
बोलतभईकंसतवहंता ॥ प्रगटहोइचुकाहेकहुंअन्ता ॥
सुनिनभगिराउठाअकुलाई ॥ गिरादेवकीकेपगधाई ॥ ॥
मैंअपराधकीनसुतमारे ॥ होनहारसोटरतनटारे ॥ ॥ ॥
कंसज्ञानउपदेशतकैसे ॥ दीपप्रकाशतआनहिंजैसे ॥ ॥
कहदेवकीसुनोहेभाई ॥ निजकृतकर्मनतोरिलगाई ॥
जोजसकरैसोतसफलपावै ॥ बिनसमुझेपरदोषलगावै ॥
दुखसुखप्रदजगमेंनहिंकोई ॥ मनमानेकरसंभ्रमहोई ॥
यहसुनिउठिनिजमंदिरगयऊ ॥ सचिवबोलिअससूझतभयऊ ॥
कहौकहाअबकरैकहोई ॥ जन्माकहुंअन्तेअरिसोई ॥

बोलेउग्रसुनोमहराजा॥ याकीतोहेसहजइलाजा॥ ॥

दो० एकबरषकेबीचमाँजोसुतजनमेंहोइ॥
डारहुसकलमराइतुमआपुइबचीनसोइ॥

चौ० सुनतबोलाइसिअसुरसमूहा॥ कह्योकिमारहुशिशुकरिहूहा
चलेजहाँतहँआयसुपाई॥ लोगकरनपापअधिकाई॥ ॥
यहइतिहासकह्योमनमानी॥ अबगोकुलकीसुनोकहानी॥
रोदनतहँजबकीनमुरारी॥ जागीमहरिसोरसुनिभारी॥ ॥
बालकदेखिपरमसुखपावा॥ गोमयचन्दनभवनलिपावा
गोधुरकलसविचित्रधराये॥ नवलवधुनमिलिमंगलगाये
धुजपताकतोरणपुरछाये॥ देवनहरषिसुमनबरषाये॥ ॥
नन्दसहसदशधेनुमँगाई॥ विप्रनकहँदीन्हीहरषाई॥ ॥
मुदितनारिनरबीथिनडोलैं॥ जयतिजयसुतकीबोलैं॥
उड़तगुलालसकलतनसींचा॥ मारगमध्यमचीदधिकीचा
बाजहिंबाजननाचहिंनारी॥ हँसिदेहिंनन्दकहँगारी॥ ॥
नारदादिसनकादिमुनीशा॥ कौतुकलखतफिरतब्रजईशा
बहुतकहाँतककहौंउछाहू॥ प्रगटभयेजहँत्रिभुवननाहू॥
जातककर्मवेदविधिकीन्हा॥ बहुविधिदानयाचकनदीन्हा
पुनिलेनन्दक्षीरदधिछेगू॥ कंसैदेनचलेमिलिनेगू॥ ॥
मधुपुरआइचढ़ाइनभेंटा॥ सबनकहाइनकेभाबेटा॥ ॥
बहुतनीककहिभीतरटेरे॥ तहँबैठाइगयोउठिडेरे॥ ॥
तुरतलिखिहिमिपूतनहिंबोलाई॥ आवहुमारिनन्दसुतजाई

दो० चलीतुरतनवनारिबनिसजिननभूषणचीर॥
जहरउरोजलगाइकेआईयमुनातीर॥
पुरपतनीभौंचकिरहींरूपवानलखिताशु॥
बिनबूझेआसनदयोबरिणभागिनिजआस

सो॰ लालहिलखिदुलराइ।टेरिदइविनीमहरिको॥
लीन्ह्योगोदलगाय।दीन्ह्योमुखविषसहितकुच॥
चौ॰ लागेपियनकृशाकरिजोर॥भागीकरतछोड़ावनसोरा
लीन्होखैंचिप्रानपुरवासा॥योजनछहमाहिंवपुभासा॥॥
दीन्हीगतिजननीकीनाहीं॥कोकृपालअसभजियेजाहीं
कौनिसुरायथाकीन्ह्योभारी॥जानैधन्योवृथमुरारी॥॥
रतनदामसुहितबालिकेरी॥बावनवपुछविलसितबहुतेरी
मनमेंचहिसिखियावोंछीरा॥सोइइच्छापूजीयदुबीरा॥
कृष्णनासुकुचथरइमिराजैं॥जिमिघनशिशुगिरिशृंगविराजैं
भयवसलोगनिकटनहिंजावें॥दूरिहितेधाधाराचलावें॥
हाइहाइकरियशुमतिधाई॥लीन्हेंनिलालहिलखिगोदउठाई
भवनआनिदीन्हेंबहुदाना॥कह्योबचायोहरिभगवाना
पुरवासीमुनिदेखनधावें॥बकिहिविलोकिबिधिहिशिरनावें
करिरक्षामोहनतनकेरी॥कहेंकिकेहुइंदिहेंउभमतिफेरी॥
यहांनन्दनृपआयसुपाई॥मिलैमिलनचलेहरषाई॥॥
कुशलप्रश्नकहिकरिसनमाना॥बोलेपुनिवसुदेवसुजाना
कालाधीनदेहनहिंनेमा॥विछुरिमिलेसमअपरनछेमा
भलेकृपाकरिदरशनदयऊ॥अतिसुखमिलासुनासुतभयऊ
जाहुवेगिनिजमंदिरलाला॥करतफिरततमचरउतपाता॥
रक्षाकरतसुतनकीरहियो॥करुणादृष्टिरामकीचहियो
गोकुलआइदीखसोइहाला॥लगेबतावनसबनरबाला
सोइउकरिताकरअंगा॥जारतकढ़ीसुगंधप्रसंगा॥॥
एकदिवसकागासुरआवा॥पकरितासुशिरतोरिबहावा
पूर्वविप्रभारीयहरहेऊ॥भइगुरुश्रापभुगतिगतलहेऊ
जन्मनहुचपरापुनिआई॥पूजनहितबहुरेकुलभाई॥॥

श्यामहिंसकटतरेंथोढावा॥महरिकाममेंचित्तलगावा॥
गईभूलिमोहिनिपटबिसूरा॥मारीलातसकटभोचूरा॥
सुनिलरिकनसुखपितुमाता॥रोहिलगाइनिपुत्रहिगाता॥
अचरजमानिकहैंनरनारी॥टरीकाल्हकोकरिवरभारी॥
तृणावर्तलैंहियाकोमेजा॥प्रभुइपरदेखासुदिसेजा॥
गरुआपामनहिलखिमहतारी॥जागतहिंहिसिरहेंतहंपारी॥
बौंड़रह्वैकान्हेंश्रंधियारा॥लीन्हेंगगहिगगनमझारा॥
गरलगेप्रभु सधानभारू॥गिरामहोततभासंहारू॥
इलथंभनन्पपथंडुरदेशा॥दुरबाशादत्तमिटयोकलेशा॥
छातीपररेखलतसुतथाइनि॥नन्दमहरिनिजभागमनाइनि॥
विप्रनबोलिदानबहुदीन्हा॥गोपवधुनतबलैतालीन्हा॥
दइउदीनसबकेघरबारा॥तुम्हेंकाममेंहैबहुतपियारा॥
बौंधपनदेख्योसुतआंखी॥नदपिनप्रीतिप्राणसमराखी॥
कहैरघुनाथनिरखिप्रभुवोरी॥थकितहोहिजिमिचंदचकोरी॥

इतिश्रीबिश्रामसागरसबमतआगरग्रंथउजागरश्रीरघुनाथदासरामस-
नेहीकृतश्रीकृष्णजन्मउत्साहपूतनाकागासुरतृणावर्तबधवर्णनो

नामद्वितीयोऽध्यायः २॥

दो॰ सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कहौंश्यामकीरहसिकछुकथाखंडकीआनि॥
कबहुंमहरिमुखचूमिकेबदनपयोधरदेत॥
कबहुंझुलावतपेलनेकबहूंलाइउरलेत॥ ॥

चौ॰ यहिसुखमेंकछुकालबितायो॥अन्नपरासनकोदिनआयो॥
नन्दबहुतसामानमंगवाई॥मधुमेवापकवानमिठाई॥ ॥ ॥
साइतिसमुझिश्यामसुखदीन्ह्यों॥विप्रबंधुमुनिभोजनकीन्ह्यों॥
दिनादिनबढ़नलगेहरिकैसे॥शुक्लपक्षकरनिशिकरजैसे॥ ॥

प्रगटी तन अति चंचलताई। गहैन एकौछिन थिर ताई॥ ॥
अगिनि कीस सुकन रवी सिंगारा। धरन करन तहं अहरिनि सारा॥
वत्स पूंछ गहि कभू भगावैं। पुरजन पकरि मातु ढिग लावैं॥
एक दिवस आये द्विज एका। किहि निरसोई सहित विवेका॥
पुनि तहं भोगल लगाइनि चोटा। पावस दीरघनन्द का टोटा॥
कह्यो न हरि ते बहुरि कराई। भोगल गत पुनि पहुंचे आई॥
नवपमुमति द्वव की सुनि लेहू। पुनि मोहिं बोलावत येहू॥
दो॰ यहि भूंके संसार को भावत भू डीभक्ति॥ ॥
कुर अहि लखि रघुनाथ जेमि भागहि निया सुथाके॥
चौ॰ कछु दिन गये गर्ग ऋषि आये। नाम धरा वसुदेव पठाये॥
लखि ब्रज पति पूज्यौ सब भांती। कहि निज भाग धन्य दिन राती॥
सुत सुख दुख अद तुम सुद दाता। आत्रुगीर देखे दो उभ्राता॥
शंकर्षण बलभद्र रु रामा। कहे तीनि अग्रज के नामा॥
बासुदेव अरु कृष्ण कन्हाई। इनके नाम अपर बहुराई॥ ॥
मातुल रिपु पर तिय रत चोरा। होइहैं निलज निडर बरजोरा॥
साधु विप्र गोपालन करिहैं। अभिमानिन को अहमिति हरिहैं॥
मातपिता को आनंद देहैं। नृप सुख सहित जगत यश लेहैं॥
औरौ फल बहु कहे तुम्हाई। आये भवन दक्षिणा पाई॥ ॥
एक दिवस खाई हरि माटी। लखि कन कहा महरि सुनि डाटी
मुख पसारि देखरावत भयऊ। उदर बिलोकि बिसरि तन गयऊ
देखा सकल विश्व मुख माहीं। कौन सो बात जो वा में नाहीं॥
सुर नर असुर नाग नभचारी। रवि शशि उडु सरि सर दधि भारी
स्वर्ग नर्क यम कालनि हारा। बिधि हरि हर बैकुण्ठ बिहारा
इहि बिधि सकल बस्तु दिखगई। मूंदि लिहिनि पुनि बदन कन्हाई
चकित भइ दुस्वपन मैं देखा। सांचो सांच कि नयनन पेखा

भा विवेक सुत ईश्वर चीन्हा ॥ बहुरि कृष्ण माया बस कीन्हा
कहैं रघुनाथ धन्य ते प्रानी ॥ जे ऐसे प्रभु सों रति मानी ॥ ॥
एक दिन एक ग्वालिन घर जाई ॥ लागे माखन खान चोराई ।
निज पर छाँह मुकुर लखि बोले ॥ तुमहू खात कहौ जनि खोले
सुनि मृदु बचन हँसी सोइ बाला ॥ भीतर ते भागे नन्द लाला ।
एक दिन गये अपर घर बारा ॥ छींके ते नव नीत उतारा ॥ ॥
तेहि छन धनि आइ नि चलि आई ॥ बोले तासों बचन बनाई ।
कूदत रही एक मंजारी ॥ मैं उतारि कीन्ही रखवारी ॥ ॥
भले करत तुम दोष लगावा ॥ जानि पड़ा अब ही कलि आवा
तेहि तब कहा खाइ तुम लेहू ॥ मोहिं नीके नाहिं लागत येहू ॥
एक दिन गे एक भवन बहोरी ॥ सींके लखि दधि पेंदी फोरी ।
पावत तासु बचन सुनि चीन्हा ॥ निकसे तुरत पकरि तेहि लीन्हा
पूछत भइ कस भागे जाहू ॥ बोले तब तेहि ते सुर नाहू ॥ ॥
कहिये कह दुख में दुख होई ॥ भै नर मुरिडत की गति सोई ॥
दो० सेद ज दुख बिन कच भयो लग्यो घाम अकुलाइ ॥
धर्यो बाग सिर बेल फल गिर्यो अधिक दुख पाइ ॥
चौ० मैया मोहिं उठि मारन धाई ॥ तेहि आयनु तब भवन लुकाई
तहँ देखी दधि खात बिलारी ॥ सोइ डेरइहौं ते भागेन प्यारी
सुनि तेहि दीन तुरत ही छोड़ी ॥ दौरि उतारिसि आइ दुधाड़ी ।
एक दिन धाम अपर के गयऊ ॥ माखन घट ले भागत भयऊ ।
ते सब दिन पति देहिं उरहना ॥ महरि न मानै तिन कर कहना
एक दिन गे कमला के धामहिं ॥ धाइ धरिसि तेहि देखत श्यामहिं
गोकी कहैं चलौ जहँ माई ॥ तिनकी कसरि निकारी जाई ॥
बोले श्याम मोहिं नहिं शंका ॥ बिन कीन्हे कहुं लगत कलंका ।
यशुमति निकट दे खावन लाई ॥ भये तासु पति तुरत कन्हाई ।

बोली महरि भई हँसि बौरी ॥ स्वप्न में पकरि देखावन दौरी ॥
पति मुख लखि लज्जित ह्वै भागी ॥ किह्यो कहा में मन्द अभागी
एक दिन पकरि लयाई आना ॥ ह्वैगे तासु तनय तब कान्हा ॥
खात खसम सुत सब के चीन्हा ॥ हमरे पुत्र निवल करि लीन्हा ।
एक दिन प्रभु सब सखा बोलाये ॥ तिनते कौतुक बचन सुनाये
अहो मित्र गोपिन घर चलिये ॥ खाइय दधि भाजन दलि मलिये
जोवे मिलि पकरें बर जोरी ॥ तुम सहाइ हूज्यो तब मोरी ॥ ॥
एक मत लखि कोउ सकत न जूटी ॥ जिमि बुधि सेन बिहंगगा छूटी
एक मते ह्वै पंगुल अंधा ॥ बंच्यो अगिनि ते चढ़ि पर कंधा ॥ ॥
अस कहि कृष्ण चले अभिलाषी ॥ लागे संग सखा भल भाषी ॥
बदहिं परस्पर सुनिये मीता ॥ चलत मही पर लागत भीता ॥
एक कहैं तुम कादर भारी ॥ हम हरिहैं करिहैं कह नारी ॥ ॥
अपर कहैं भागब भय देखी ॥ शून्य सदन प्रविशे एक पेखी ॥
सोज खाइ अरु कपिन लुटाई ॥ निकसि गये तब सो तिय आई
देखि बिनाश करत भइ शोरा ॥ दिनहीं में को आयो चोरा ॥
निकट जाइ बोली एक बाला ॥ मैं पैठत देख्यों नन्द लाला ॥
मन में भई पुकारों तोही ॥ गूंगी केहु करि दीन्ही मोही ॥ ॥
इतने में ताहू के धामा ॥ हालि गोरस खायो घन श्यामा ॥
लगी पुकारन घर जब आई ॥ नाहक में तब भवन सिधाई ॥
जो कोइ बीच जबर के परई ॥ लोमड़ी सम दुख सोऊ भरई ।
दधि माखन पकवान अनेका ॥ खाइ गयो राख्यो नहिं नेका ।
पुनि काहू के मंदिर धसेऊ ॥ देखि लीन तेहि सब कहँ सेऊ ।
कह हरि साधु हमारे आये ॥ बाबा भोजन हेत टिकाये ॥ ॥
मैया मोहिं पठयो तब तीरा ॥ माँगि लाव दधि माखन क्षीरा ॥
आये हमें भई बड़ि बारा ॥ माँगों कासों शून्य अगारा ॥ ॥ ॥

सखा बुलावन आये अबहीं ॥ चलो चह्यौं ते आई तबहीं ॥ ॥
जो चित चहै देहु अनुरागी ॥ धन्य भाग्य पर स्वारथ लागी ॥
साधु सिंह सम चरित रहावै ॥ भाव हीन लखि मृतक न खावै ॥
लाल बदन की सो सुनि बानी ॥ बोली हँसि मन में सकुचानी
प्यारे जो ऐसी है बाता ॥ तौ मेरो सो तुम्हरो ताता ॥ ॥ ॥
संचित घृत दधि माखन क्षीरा ॥ हरि खिल आनि धर्‍यो हरि तीरा
चले सखन के शीश धराई ॥ लागे सब मिलि चोहट खाई ॥
यह कौतुक सब गोपिन देखा ॥ वंचक धूर्त छली अति लेखा ॥
बोली एक तासु घर आई ॥ आजु भली तू गई ठगाई ॥ ॥ ॥
सुनि सो कहत भई हे बाला ॥ मति बौराइ गयो ले लाला ॥
जाइ श्याम ढिग बोली बानी ॥ झूठ बखानि बस्तु कत आनी
लाल कही हम झूठन भाषा ॥ मैं महं तये सब ग्रीषि साखा
दीठ जानि सो मारन दौरी ॥ भागे दधि मुख मारि हथोरी ॥
इक दिन गये भवन में आना ॥ जड़ि कपाट लागे दधि खाना
ताही क्षण धनि आइनि आई ॥ टेरत बार बार अकुलाई ॥
कह्यो श्याम भल टेरन देहू ॥ निरभय बस्तु खाइ तुम लेहू ।
तेहि जब द्वार खुलत नहिं जानी ॥ तब पर माँगि निसेनी आनी ।
भीति लगाइ चढ़ी छति जबहीं ॥ कृष्ण खोलि पट भागे तबहीं ।
नष्ट भ्रष्ट गृह देख्यो जाई ॥ लगी देखावन सखी बोलाई ॥
बाहेर कढ़त भयो यह दाहू ॥ कहो इहाँ किमि करिय निबाहू ।
जो यशुमति ते जाइ पुकारैं ॥ लखि नंदान त हूँहैं मही हारैं ।

दो० जिमि अबूझ नृप के रहै बातन केर निआउ ॥
जतिहि चढ़ावत सूरि पर चढ़ौ बात सुनि राउ ॥

चौ० जो अथमैं मोहिं होतो ज्ञाना ॥ मेरे घर आयो है कान्हा ॥ ॥
तो गहि भवन यशोदै लेती ॥ सुत की सब लीला देख रोती ॥ ॥

तबजानी मम साथिनि रामा ॥ बीते समय बुद्धि किस कामा ॥
एक दिन एककर पकरि लुटावा ॥ मुनिजननी मृदु बचन सुनावा
तुम्हरी कृपा लह्यो सुत मोहूं ॥ देहु अशीष करो सब छोहू ॥
मोहि प्राण ते बहुत पियारे ॥ बिन अपराध जात नहिं मारे ॥
निज नयनन देखिहौं जब वीरा ॥ देहौं दराड धरहु मन धीरा ॥
और दराड तुम कछू न कीजे ॥ एक दुइ बरषम कोदे दीजे ॥
नृप बिन नीति प्रीति बिन सारे ॥ बिगरि जात सुत बहुत दुलारे
नीति निपुन नर बात ते लाजे ॥ सूप बजाये सुत रन भाजे ॥

दो० एक दिन गे गृह एक के बैठ देख्यो ताहि ॥
पाछे ते मूंदे नयन सो संगी को आहि ॥
दई सयन सब सखन सों ले गोरस समु दाय ॥
गये निकरि जब दूरि तब आपहु भगे बिराय ॥
जिनके घर नहिं जाइं तेविधि ते कहें निहारि ॥
कब ऐहैं हमरे भवन खैहैं माखन चोरि ॥

चौ० तब ताही के मंदिर जाहीं ॥ प्रीति समुझि दधि माखन खाहीं
खटक सुनत तुरते भजि जावें ॥ उरहन के मिसि देखन आवें
सुनि सुनि श्याम बदन की बानी ॥ प्रमुदित होइं बात सोइ ठानी
एक दिवस मिलि गोप लुगाई ॥ भवन आइ बोलीं सुनु माई ।
अबेतो कान्ह बरष षट केरे ॥ करत रहत छल बल बहुतेरे ।
बड़े भये धौं करिहौं काहा ॥ यही अंदेश बड़ो है ताहा ॥ ॥
चितवत जेहि तन मृदु मुसक्याई ॥ सो बिन मोले जात बिकाई
टटी बस्तु फिरि ताहि नि छांड़े ॥ माखन हित सबके घर मांड़े ॥
करि जाने बहु भांति बहाना ॥ को धौं गुरू मिला नहिं जाना ।
बधे बच्छ तजि धेनु पियाई ॥ सोवत लड़िकन देत जगाई ॥

दो० कभू अंधेरे भवन में आपो रहत दुराइ ॥

पाछे दीयजगाइ कै भाजत ताल वजाइ ॥

चौ० बोली महरि सुनो हे भैया। तुम्हरे विधि दीन्ही बहु गैया।
दधिमाखन भावे सो खाहू। परघर कत चोरन को जाहू ॥
माखन चोर कहै सब नारी। सुनि तो को नहिं लागत ख्वारी
फिरत धरावत मेरो नामा। मातु न देत होइ गो धामा ॥ ॥
परअकाज कीन्हे का पावत। नाहक निरमल पित हि लजावत
मातु बचन करि श्रवण कन्हाई। बोले तब नघनाजननाई ॥ ॥
हे मइया मैं खेलन जाहू। काहू के घर कछु न खाहू ॥ ॥ ॥
येई मोहिं पकरि लै जावैं। नारि भेष करि संग पिसावें ॥ ॥
कबहूं गो मैं हेल धरावैं। कबहूं घर की टहल करावैं ॥ ॥ ॥
कबहुं कजु रिमिलि टादी होहीं। गावैं आपुन चावै मोहीं।
मारि गुलिचन मे हनति लेहीं। तेहि पर आइ उरहना देहीं।

दो० सत्य कहत लघु धवाम को पलटत लगै न देर ॥
तियइ लख्यो पति कुबध्यमें पतिहि कस्यो तेहि जेर ॥
हमहूं निरबल विप्रसम करें काल गुदरान ॥
आखिर अहि रघुनाथ भनि हैं नभेक कजान ॥

चौ० औरौ सुनो करम इनकेरे। मलैं सु अंग अंग मा मेरे ॥ ॥
कबहुं क पकरि मिजावैं पीठी। कबहुं तकें निरखी करि दीठी
कबहुं क कहमैं द्वार बैठाई। आपु सहित पति पै दै जाई ॥
सुनि गोपी बोली मुसक्याते। सुनो महरि निज सुत की बाते ॥
कहती हो जानत कछु नाहीं। भरे सकल गुन इनके माहीं ॥
तुम्हरे निकट साधु से दीसै। हैं खोटे अति बिस्वा बीसै ॥ ॥
झूंठ कि सांच सांच की झूठी। करत रहत यह विद्या मूठी ॥ ॥

दो० सुना रहे कोइ चतुर नर नृपकी मेटि प्रमान ॥
नचि आयो घर बंधत इन तेहू के काटे कान ॥

चौ० सुनियशुमतिकहसहितसनेहा॥तुमजानोकीजानैयेहा
तुम्हरीइनकीबातअगूढ़ी॥बूझिनपरतमोहिमतिबूढ़ी॥
एकदिनमहरिश्यामकोलैके॥परीपलंगपरलंकियादैकै॥
लागीकहनकथासुखदाई॥जिमिअवतारलीनरघुराई॥
बालबिनोदबिवाहउछाहू॥बिपिनिगवनभूपतिकरदाहू॥
भ्रातसनेहलषणसेवकाई॥कहिखरदूषणकेरिलड़ाई॥
कह्योजानकीकरहराजब॥कहँधनुसरकहिकृष्णउठेतब
यशुमतिडरपिउछंगलगायो॥बोलिसयानेहिफूंकडरायो
कबहुंकरावैंभोजननाना॥कबहुंसिंगारैरूपनिधाना॥
कबहुंबस्तुमांगेहठठानी॥जेहितेहिभांतिदेतसोरानी॥
कबहुंधेनुरविपसरुचरावैं॥कबहुंभूपबनिनीतिसिखावैं
दो० जाकेकुलकीरीतिजसगहततेहिशुभसोइबाट॥
नृपसुतमुनीकेगयोतहँउठेनृपठाट॥
चौ० एकदिनकह्योमातुमोहिदाऊ॥आजुसखनबिचबकुलखिभाऊ
मोसकहेंमोलकोलीन्हो॥नंदबदलिबसुदेवैदीन्हो॥ ॥ ॥
मातपितागोरतेंकारो॥वेसूधेतैंकुटिललबारो॥ ॥ ॥
सुनिमाहसिअंचलमुखगेरी॥मैंजननीतबतैंसुतमेरो॥
कहुरिकह्योमोहिंविपिनिलवाई॥कहिहाऊआवतकुटल्याई
होडरिराइभगततबतीरा॥सखबहुनेकधावतधीरा॥
जानीमातुबुरोतेंजानै॥फिरिकैखेलतासुसगठानै॥॥
अबतेकहोरहुघरमाहीं॥तोमेंपकरिपिटावौंताहीं॥
तबकछुकान्हनउत्तरदयऊ॥कहैरघुनाथहरषिउरलयऊ
इत्यादिकयशुमतिसुखदेवैं॥सबाराध्यधन्यकरिलेवैं॥
कहन्नृपकौनधर्मइनकीन्हा॥कृष्णबालसीलासुखदीन्हा
कहमुनिवसुवसुद्रोणप्रधाना॥धरासहितप्रियराधेभगवाना

विधि आये तिनते इनकाहा॥ सदा राध्य होय शिशु लाहा॥
एवमस्तु कहि विधि तेहि भावा॥ नन्द महरि मोद सुख पावा॥
प्रथम रहे द्रोण सन्दन भाला॥ अब लीन्हें निरखत सुख नाला॥
इति श्री विश्राम सागर सव मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम-
सनेही कल कलुषादि धर्मागीवाक विलास वर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ३
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख खानि॥
कहौं दशम की रीति कछु ब्रह्मवैवर्त कजानि॥
चौ० एक दिन सुनो नन्द की रानी॥ मथत रही दधि लिहे मथानी॥
प्रथु करि अति उत्तम पट धारे॥ ला पर किंकिणि जाल सवारे॥
सुत अनुराग स्रवत कुच क्षीरा॥ कंचन कुण्डल लोल शरीरा॥
श्रमकन तन प्रकंट अति लसहीं॥ सुमन माल नीं सिर ते खसहीं॥
आइ कृष्ण तहँ भोजन माँगे॥ मथि लीजै नव दीजै लागे॥ ॥
ताही समय दूध उतराना॥ दौरी तुरत उतारन जाना॥ ॥ ॥
तब प्रभु निज मन कीन्ह विचारा॥ हम ते भायथ बहुत पिआरा॥
गहि पाथर मटुकी महँ दयऊ॥ फूटि मटुक लगो रस बहि गयऊ॥
यशुमति देखि क्रोध कियो भारी॥ श्रम करि पकरत भई दुखारी॥
ऊखल मैं पुनि बाँधन लागी॥ रसरी युग अंगुल सो पुनि माँगी॥
यहि प्रकार रसरी बहु जोरी॥ युग अंगुल घटि रही बहोरी॥ ॥
गोपी खड़ी कहैं सब नेरे॥ देख्यो आजु चरित सुत केरे॥ ॥
अब तक कहो मोर सुत सूधा॥ कादत आजु छुड़ी कर दूधा॥
जाना श्याम मातु खिसियानी॥ लीन बँधाय एक रजु मानी॥
दो० कखल गाड़ि स्वस्थान तब महरि मुदित मन होइ॥
यमलार्जुन की सुरति करि चले घसीटत सोइ॥
धनपति के सुत ज्ञानि भे नलकूबर मणिग्रीव॥
नारद के रे श्राप ते भे यह अर्जुन तरु द्वाउ॥ ॥

जल बिहार युवतिन बिषे देखि नगन सतवार
होउ बिटप कहि पुनि कह्यो हरि करिहैं निस्तार ॥

चौ॰ निकसे प्रभु निन तरु भे जाई । जवल भिरत गिरे अररराई ॥
दिव्य पुरुष प्रकटे तहं दोई । लागे करन बिनै भूमि सोई ॥ ॥

रोला छं॰ जयति जयति जगदीश ईश नव चरित अनन्ता ॥ सुनत कहत अघ दहत प्रहत भ्रम सब श्रुति सन्ता । जयति मच्छ बपु धरन सत्यब्रत प्रलै देखावन । जय बराह धनि नाथ कनक दृग दलि महि लावन ॥ जय कूरम गिरि धरत रतन चौदा उद्धारन । जय नृसिंह हति हिरणाय कशिप प्रहलाद उबारन । जय बावन बलि छलन चरण नख सुरसरि जावन । जयति परशुधर सहसबाहु अरि विप्र रिझावन । जयति राम सुर सुखद सन्त मुनि दशमुख गंजन । जयति कृष्ण कंसारि असुर अरा तारत रञ्जन ॥ जयति बौध श्रुति दोष दनुज कुल पुराय छुड़ावन । जयति कलंकी निधन नीच क्षिति करि हौं पावन । जयति व्यास बेदार्थ सोधि कृत विविधि पुराने ॥ जय एथु प्रथवी दुहन भूजि प्रति मास बठाने ॥ जयति हंस बिधि सुतन प्रश्न कर उत्तर दीन्हें । जय शंभू मनु आदि प्रजे जिन परघट कीन्हें ॥ जयति ऋषभ रुहैत मार्ग जर बिबुधन दिखाई । जय हयग्रीव दनुज मारि निगमानि ल्याई ॥ जयति धनु प्रकाश प्रगट भे मुनिजन काजे । जय ध्रुव करि हरि भजन अचल अस्थान बिराजे ॥ जयति धन्वंतर रूप जगत भै निस्तारक । जय बद्री पति शक्र कर मद मान प्रहारक ॥ जयति कपिल सुत सगर दहन गंगोदधि वासी । जय दत्तात्रै ज्ञान भक्ति बैराग्य केरासी । जयति देव ऋषि ज्ञानि स्थापति इच्छा ठानें । जय सनकादिक ब्रह्म निरत सुआसु-

नि सुख मानें ॥ जय इति चौबिस वपुष धरयो निज भक्तन हे-
ता। ऐसो होत अमाप मापि को पावे तेता ॥ जय प्रभु याही रू-
प मम हृदय बस्यो छबि सिंधु। शीश नाइ रघुनाथ निज-
लोक गये दोउ बंधु ॥

दो० जासु नाम जग जाल ते देत बिनय श्रम छोरि ।।
सोइ प्रभु जन बस मातु की तजत न बाँधी डोरि ॥
खग मृगादि शठ आपु ते कीन्हे अधिक महान ॥
अस प्रभु को निज ईशता तजि राखो जल मान ॥

चौ० सुनि यशुमति बिलखत ढिग आई। बंधन छोरि लिहिनि उरलाई
कीरति आदि लगीं सब दूषण ॥ गोरस हित बाँधे ब्रज भूषण ॥
धन गोरस अरु जन्म तुम्हारो ॥ जाते सफल ताहि तुम मारो ॥
राम जननि कछु कह्यो न तेहू ॥ मैया इन बिच दखल न देहू ॥
ताही समय नन्द घर आये ॥ सुनि यशुमति को बहु रिसि वाये
तब सबहिन मिलि कीन बिचारा ॥ इहाँ होत हैं बिघन अपारा ॥
चलो बसी वृन्दा बन माहीं ॥ सकल सुपास महित सो आहीं
चले सकल वृन्दाबन आये ॥ बसे सुथल जेहि का जो भाये।
श्री वृषभानु खबरि यह पाई ॥ सहित समाज रहे तहँ आई
वृष रवि कुँवरि नन्द घर आवे ॥ नन्दलाल कीरति पुर जावे ॥
बालक प्रीति परस्पर देखी ॥ तात मातु सुख लहे बिशेषी ॥
तहाँ एक दिन नन्द कन्हाई ॥ गये खरिक लग गावन गाई ॥
आई तहँ वृषभान दुलारी ॥ नाम राधिका छवि अधिकारी।
जासु जेठर ते भयो बिरादा ॥ दीन चलाइ कृष्ण तेहि डाटा ॥
कह्यो न अब तुम्हरे सुत होई ॥ भली बात ब्रज बिहरत सोई ॥
जाके नयनन मध्य निहारा ॥ चौदह रतन दशो अवतारा ॥
चारि चारि खग मृग फल फूला ॥ लजत जासु वपु देखि समूला

दो० भजत विविधि अवतार जब बहुत जन्म करि यन्त ॥
तब राधा पद मिलन इमि कह हरि लीला तंत्र ॥

चौ० जे राधा राधा अस कहईं ॥ राम कृष्ण तिन के बस रहईं ॥
हरि ब्रह्माण्ड पुराण मंझारी ॥ कह्यो राध आराध हमारी ॥ ॥
तेहि प्यारी को जब हरि देखा ॥ भये मुदित इत प्यारि उपेखा ॥
तेहि क्षण झुकि आये घनकारा ॥ नन्द दीख जब अति अँधियारा ॥
राधा ते बोले वर आजू ॥ श्यामें दिहौं सौंपि सब काजू ॥ ॥
कर गहि चलत भई धीरे धीरा ॥ आये दोउ यमुना के तीरा ॥ ॥
तहँ लखि माया की प्रभुताई ॥ मणि मन्दिर शुचि सेज सोहाई ॥
श्याम सहित पर्यङ्क पधारी ॥ परत पेखि तेहि तरुण बिहारी ॥
कह्यो कृष्ण ऐसी जनि कीजै ॥ मानुष जन्म पालि सुख लीजै ॥
इतनी कहत स्वयंभू आये ॥ सुर समस्त सामग्री लाये ॥ ॥
मंगल मय मंडप तहँ छाये ॥ बेद रीति सब कर्म करायो ॥ ॥
विधिवत ब्याह होन तब लागा ॥ गावैं सुरी सहित अनुरागा ॥
कन्या दान बिधाता दीन्हा ॥ विधिवत कृष्ण चंद्र सो लीन्हा ॥
सब बिधि ब्याहि चलन जब लागे ॥ दारहु भूमि भार वर माँगे ॥
कहि जब गये भये प्रभु योवन ॥ पूज्यो प्रिया मनोरथ कोमन ॥
बाल रूप ह्वै पुनि गृह आये ॥ श्रीजय देव चरित ये गाये ॥ ॥
इक दिन कृष्ण बूझि दिन अच्छा ॥ ग्वालन साथ गये लै बच्छा ॥
लागे विपिन चरावन जबहीं ॥ आयो असुर बच्छ बन तबहीं ॥
कृष्ण पूँछ गहि महि दै मारा ॥ मरिगा जब तब सखन निहारा ॥
एक दिवस यमुना के कूला ॥ रहे चरावत बच्छ समूला ॥ ॥
धरि बक रूप बकासुर आवा ॥ लिहिसि लीलि श्यामहिं सहचावा ॥
दीनिसि उगिलि अगिन उरझारी ॥ निकसे तुरत चोंच गहि भारी ॥
बाल बिलोकि सकल हरषाने ॥ गावत गुण निज घरन तुलाने ॥

इक दिन खेलत रहे मुरारी ॥ आवा निकट प्रलम्ब सुरारी ॥ ॥
खेलन लाग बाल कन संगा ॥ जबतब करै सखन ते दंगा ॥ ॥
जानि गये बलदेव कुमारा ॥ पकरि ताहि पुह करते मारा ॥ ॥
दिव्य रूप ह्वै हरि पुर गयऊ ॥ मुनि दुरलभ कैसे पद भयऊ ।
इन के पूर्व जन्म कर हाला ॥ कहौं सोऊ तुम सुनौ भुआला ।
बक प्रलम्ब केशी बत्सा सुर ॥ गंध मदन गन्धर्व के सुत फुर ॥
मुनि दुर्वासा शिष्य किये सब ॥ हित उप देश दियो तिनको तब
षटसहस्र बरस तुम धारो ॥ विष्णु लोक में जाइ बिहारो ॥ ॥
लगे करन सोइ धरि उत्साही ॥ हरिमें प्रीति जनन में नाहीं ॥ ॥
मिले न तब शिव सर तेलाये ॥ दीन्हेउ श्राप उमा लखि पाये ॥
होउ असुर तुम चारो जाई ॥ पति मुख लख्त सुनि करुणा आई
बोली हरि कर मृत्यु पैहो ॥ असुर योनि तजि हरि पुर जैहो ।
तेई असुर ह्वै यह गति पाई ॥ अब सुन अपर कथा सुखदाई
इक दिन सखन सहित नद नन्दा ॥ रहे बिपिनि फाटल फर फन्दा
तहं अहि रूप अघासुर आवा ॥ इक इक योजन अंग बनावा ।
बदन पसारि रहा तिन तीरा ॥ करि बिचार प्रविसे सब बीरा ॥
श्याम गये जब तब मुख चांपा ॥ बाढ़त भये कृष्ण करि दापा ॥
उदर फारि पुनि बाहर निकसे ॥ सखन सहित बिबुधलखि बिकसे

दो० भूप बत्निका पुरी को पुन्य कार मृग बड़ ॥
कीन देखि गोतम दियो श्राप होइ असुर ड़ ॥
करी बीनती भाँति बहु बार तन धन प्रान ॥
दीन दुखित लखि लोल पुनि बोले ऋषे सुजान ॥
ऐहें जब गोलोक तेजस में कृष्ण कुमार ॥ ॥
मृत्यु पाइ तिन हाथ ते होइ तव उद्धार ॥

चौ० सोई भयो अघासुर आई ॥ अपर कथा सुनिये ऋषि राई

एक दिवस गे पुलिन मँझारा। निज निज भोजन सबन उतारा।
लागे खान स्वाद मुख गाई। सो सब चरित देखि बिधि आई
चहुं दिशि उड़्ड् बाल अनन्ता। मध्य बिराजत शशि भगवन्ता
दृत श्याम सब का सब श्यामे। तबतो ब्रह्मा सोदु विधामे।।
जिमि भुशुराड संग खेलत गेहा। भये भ्रमित तिमि कृत संदेहा
ये अवतार कवन बिधि आहीं। सबहिन की जूठनि जे खाहीं।
हमहुं बिवाहि गयलु इकबारा। अब कछु चहौ प्रभाव निहारा
अस बिचारि बछरा हरि लेगे। दूढ़न चले कृष्ण सब हरि गे।।
बालन हूं को तब हरि लीन्हा। जाना श्याम चरित अज कीन्हा
तुरत बछ बालक रचि लीन्हें। ज्यों का त्यों कछु जात न चीन्हें
माता करें अधिक अस नेहा। धेनु पियावें तजि नव गेहा।।
सन्तन करें चरित प्रभु सोई। जाना राम अपर नहिं कोई।।
बरष एक यहि बिधि चलि गयऊ। इत उत लखि अज बिस्मत भयऊ
पुनि सब बाल लखे हरि रूपा। सेवत पद बिधि भव सुर भूपा।
ब्रज बासी सब बिबुध समाजा। बहुरि दीख प्रभु आप बिराजा
बस्तु गई सो चिन्ता भारी। लज्जित है अज हृदय बिचारी।
देखो अति मेरो अज्ञाना। त्रिभुवन पति तिन ते छल ठाना
निकट आइ थिर नाइ बिधाता। लागे करन बरणा पुलकाना
नमो नमो त्रिभुवन पति स्वामी। नमो सकल उर अन्तर जामी
श्याम शरीर पीत पट कांधे। गुन्जा भूषण दोउ कर बांधे।।
बिम्बा धर आनन छबि सींवा। जलजमाल कौस्तुभ मणि ग्रीवा
शीश मुकुट श्रुति कुंडल लोला। अंग अंग प्रति बसन अमोला
अरुण अंघ्रि पद मास बिशाला। करि कर भुज तिलका बलिमाला
कुंचित कच नाशिका सोहाई। बेणु बाद पर पालक गाई।।
अस स्वरूप मानुषी तुम्हारा। भयो अनुग्रह हेतु हमारा।। ।।

ऽहैसोइच्छामयवपुमाहीं।।पंचभूतकीरचनानाहीं॥ ॥
ऽअसिसमर्थ्यनाहिंमोहिंयभारी।।जानीमहिमाऽरामतुम्हारी
जावतऽअसवपुहृदयनधरहीं।।ऽआतमरूपविचारैंकरहीं॥ ॥
तावतज्ञानपरिश्रमऽआही॥ऽअसबिचारिबुधत्यागततांहीं
सुमिरयसदायशबिमलतुम्हारा।।साधुनसुखानेकसतजोसारा
कायबचनमनतुमकोध्यावै॥तुम्हेंजनमनमेंऽप्रतिभावै॥
जीवनमुक्तऽयेहैंतेज्ञानी॥जेतवपदपंकजरतिमानी॥ ॥
यद्यपिहैतुमस्ववसऽअजीता।।तदपिइनतुमकोप्रभुजीता
तावनहैंरागादिकचोरा॥जावतगृहकेबंधनघोरा॥ ॥ ॥
तावतमोहनिगड़पैरसोई॥जावतकरमनतवजनहोई॥ ॥
भक्तितुम्हारिसकलसुखदाइनि॥हैकल्याणकरणमनभावनि
तेहितजिकेवलबोधइलागी॥करतयतनऽअनुदिनऽअनुरागी
तिनकररहतपरिश्रमसेखा॥तरुऽअस्थूलसघनकसलेखा
होसुतंत्रतुमऽअपनीमाया॥करिबिस्तारत्रिभुवननिकाया॥
तुमहींशोभितहोजगभूपा॥सृष्टिकालतहँब्रह्मसरूपा॥
तुमजगपालनकालमुरारी॥संहारणहिततुमत्रिपुरारी॥
भूरजनकनभनखततेजऽआहीं॥कालपाइऽआपनिहोइजाहीं॥
हितकारीतुम्हरेऽअवतारा॥तिनकेचरितनकेरनपारा॥ ॥ ॥
तेहितेकरुणादृष्टितुम्हारी।हैसबपरसामान्यमुरारी॥ ॥ ॥
ऽआपतकीनकर्महैजैसे॥ऽअनायासभुंजतनरतैसे॥ ॥ ॥
नमस्कारतिनकोबड़भागी॥जिनकरमनतवपदऽअनुरागी॥
तेऽअनित्यभवसागरएहा।तरतबत्सपदसरिससनेहा॥ ॥
तुमऽअनादिमेंऽआदिऽअजानी॥मायापतिनेमायाठानी॥
तुम्हरेऽआगेकोमैंतनका॥बृहदसमूहकेरजिमिकनका॥ ॥
कहममसानवितोकीकाया॥कहतुमऽआशिगनंऽअइउपाया

सकलसृष्टि तव उदर मझारी॥ तेहि ते छमिये गुनह हमारी॥
बालगरभगत चरण चलावै॥ मातु सोचि अपराध न लावै॥
नहिं यह मिथ्या बात मुरारी॥ है तुम ते उतपत्ति हमारी॥ ॥ ॥
जब मैं नाभ कमल ते भयऊं॥ तब फिरि ताके भीतर गयऊं॥
बरस एक सत खोज्यौं तोही॥ तबहुं न देखि परे तुम मोहीं॥
तप करि तहं देख्यो तव रूपा॥ कोटि भानु सम तेज अनूपा॥
तम करि अंध वसु अभिमाना॥ तुम ते पृथक ईश मैं जाना॥ ॥
तुम मम नाथ दास मैं तोरा॥ क्षमहु देव अब औगुण मोरा॥
दयायोग्य मैं अहों तुम्हारी॥ ईशन के तुम ईश खरारी॥ ॥ ॥
सुनि बिनती चतुराननकेरी॥ पोंछे हग प्रभु निज पटफेरी॥ ॥
जाहु धाम कह कृपानिधाना॥ तजि मद मोह नर्क विधि नाना
सुनि अज पदरज धरि शिर गयऊ॥ बच्छ बाल लै आवत भयऊ
जहं तहं धरि निज लोक सिधाये॥ बरस बंटो रि कृष्ण तब आये
बोले बालक सुनिये ताता॥ तुम बिन नहिं खावा दधि भ्राता
लागे बहुरि सकल मिलि खाना॥ विधि छल बल काहू नहिं जाना

गीतिका छं० जाना न काहू मरम भोजन खाइ अस बोलत भये। फल ताल लागे हैं सब सखा मिलि खान के हित बलि गये॥ ध- रि रूप रासभ को धेनुक असुर यक तहं आयहू। पग पकरि पट- के हु विटप पर बलिराम सब हुन पायहू॥

सो० बलिसुत सहसिक नाम। हरिजन बन अपसरा लखि॥
भा मुनि थल बसकाम। दीन श्राप उद्धार कहि॥

दो० सोई यह धेनुक असुर भयो गयो गति पाइ॥
मातन तें रघुनाथ सब कही कथा घर आइ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसने- ही कृत कृष्ण बालबंधन यमलार्जुन उद्धार राधिका विवाह नवस्त्रावच्छह-

इतिधेनुकवधकरणोकथावर्णनोनामचतुर्थोध्यायः ४॥

दो० सुमिरिरामसियसन्तगुरुगणपगिरासुखदानि॥
कहौंदशमकीरीतिकछुगर्गप्रदिलमनआनि॥

चौ० बालचरितबरनेउपतिपावन॥औरसुनौजेहैंमनभावन
इकदिनरामभवनबिहाई॥अपनागये चरावनगाई॥॥
पहुँचेजवकालीदहतीरा॥पियतभयेगोबालकनीरा॥॥
मरेतुरतपुनिकृष्णजियाये॥सुरभिननिजरबच्छपियाये
लागेखेलनगेंदकन्हाई॥चढ़िबिटपशिशुआरिसिधाई॥
उछरिगेंदकालीदहगिरेऊ॥ताहीसंगकूदिप्रभुपरेऊ॥॥
गयेसपदिकालीकेतीरा॥निरखि चपटिगासकलशरीरा॥
निबुकिचढ़ेताकेसिरकूदी॥गरुयेंहडारेफनखूंदी॥॥॥
चलाहधिरमुखचखुननैरे॥सिथिलअंगभेविनमदकेरे
नाथलीनवकृशाकृपाला॥बिनवतभईतासुकीबाला॥
नौमिकृष्णभजनभयभारी॥नटवरभेषसुभगसुखकारी
पतिअपराधछमियभगवाना॥मोहबिबसमहिमानहिंजाना
सुनिबिनतीबोलेयदुराई॥रौनकदेशबसहुअबजाई॥॥
हेहमतेखगपतिलेरारी॥अनलगयेडरिहैंसोमारी॥॥॥
सबअहिदेतरहेंभोजनतेही॥वसरीयरहमदीननहितसहि
भिरतिभिरतुहमहूधरिधीरा॥हारिपराइुरेनुयहितीरा
इहांआयसोभरिक्रोधकेरी॥तेहितेगरुड़करतनहिंफेरी
कबहुँबैठितरुउगिलीमांजरि॥कहमुनिपुनिआवतजेहिंजरि
मेरेचरणचिन्हतवमाथा॥लखिअबबोलीनहिंखगनाथा॥

दो० पूर्वजन्मकोभूपतेंमदबसममपदमाथ॥
लिहौदिहोतजिसिरसिलेहिभयोसर्पपदमाथ॥

चौ० इहांनिकटगढ़ब्रजलोगा॥रोदनकरहिंसकलबसशोगा॥

यशुमतिनन्दनधीरजधरहीं॥ संकरषनउपदेशहिंकरहीं॥
धरहुधीरगुणागुणिमनमाहीं॥ कतहुँजादुकुलमहिभयनाहीं
तेहिअवसरउठेयदुनाथा॥ कालीसहितचढ़ेतेहिमाथा
लागेकरननिरतपुनिकान्हा॥ हरषेसकलमिलेजनुप्राना
उतरेजबतबअहिहिसिरनावा॥ कुटुँबसहितरौनकहिसिधावा
कुलमहिंसबभेटैंपुरवासी॥ तातमातप्रमुदितनरदासी॥
तेहिदिनरहेसकलतेहिघाटा॥ असुरएकपुनिकैरेडाटा॥
चहुँदिशिभौरवरुँधिबनाई॥ तेहिबनदीन्हिसिआगिलगाई
भयेविकलसबशरणपुकारे॥ करिदवपानतुरंतउबारे॥॥
रोहितचिन्हननेकुलखाना॥ आयेभवनकरतगुणगाना
तेहिअवसरबरषाऋतुआई॥ सचराचरसबकेसुखदाई॥
निजगृहसबछावनलागे॥ जिमिचेतहिंबुधजरपनआगे
उमड़िघुमड़िनभजलधरआये॥ दानदेनजनुसुधनिकधाये
बगुलपांतिसोहतयहिभांती॥ जिमिशुक्रतिनउरटेकसोहाती
निरतहिंमोरमुदितघनपेखी॥ गृहीबिरक्तजिमिहरिजनपेखी
बरषतजलथलअचलभयदीन्हे॥ जिमिसंपतिरघुपतिकेदीन्हे
भईकीचनरचलतनिहारी॥ जिमिसज्जनजगमाहिंविचारी
बोलतदादुरनहिंफलसाला॥ जिमिसठकरतअकारणबाला
तड़ितचमकिफिरिजातबिलाई॥ जिमजगतनधनसुततियभाई
बढ़िरीनीरआवतसरमाहीं॥ जिमिसदगुणसबसज्जनपाहीं

दो० जोतहिंबबहिंकिसानमहिकरतुकरबीजप्रमान॥
जिमिशुभसाधनकरिकरहिंयुगकरधर्मसुजान॥

चौ० प्रविटपाइवनसंकुलजामा॥ बिषैसंगजिमिबहुबिधिकामा
विविधजीवप्रगटेमहिआई॥ प्रजाबढ़तजिमिनृपबरपाई॥
जलतजवासआपनेदोया॥ जिमिकुलनासहोतद्विजरोया

फल भारि विटप अवनि झुकि आये।। जिमि सुधी बुध सुख सम्पति पावे
लागत मधुर वचन पिक केरे।। जिमि हरि चरित सन्त मुख तेरे।।
प्रगटत कबहुं छिपत रविभानू।। यथा सुसंग सुसंग लेखानू।।

दो० भर्यो जल परि ना जम्यो ऊसर में नू कोइ।।
हत भागिन के ज्ञान जिमि कथो सुने नहिं होइ।।
चली क्षुद्र सरिता उमडि जिमि थोर धन नीच।।
अचल होत जल जलधि महं यथा जीव हरि खींच।।
द्वै महिना की वृष्टि ते भयो अन्न संपुष्ट।। ।।
राम नाम के रटे जिमि होत भक्त जब तुष्ट।। ।।

चौ० यहि विधि बरषा ऋतु के माहीं।। बन बकुल तिन सम कुलाहीं
कबहुं तोरि फल खेलें गोली।। बोलें कबहुं द्विजन की बोली।।
कबहुं करें षटपद गुंजारा।। कबहुं कीस बनि कूदहिं डारा।।
कबहूं बकरहे बेनु बजावें।। देखि सखिन तन सुधि बिसरावें।। ।।
गो वृष आदि विपिन पशु जेते।। सुख तृण दाब सुनें धुनि तेते।।
वत्स गहे मुख थन रहि जावें।। नचहिं मोर सुद छोर न पावें।। ।।
खग सब शब्द सुनें अनुरागे।। यमुना जल बहि सकत न आगे
आतप तेतपावस हू जावें।। पावस से आतप दरसावें।। ।। ।।
उठे फूलि तरु सिला पसीजे।। मुनिजन सकल प्रेमरस भीजे
ब्रजवासी सब रहें निहारी।। फरकि उठहिं सिर छावसिर धारी
बन्द करहिं जब लल सब जागे।। प्रमुदित हैं निज कारज लागें
एक दिन श्याम सखन युत भाये।। चलत मुंज्जावन आये।।
चहुं दिशि ते दावानल लागी।। जाइ कितै बालक भागी।।
शरणा भये [illegible] नयन मुदाये।। देखें सब दव बाहर आये।। ।।
मास दिवस भरि गोप कुमारी।। देवी की पूजा अनुसारी।। ।।
कात्यायनी रूपा अब कीजे।। नन्द सुवन हम का पति दीजे

लालपियसअस सोवतजागत॥हरिपरिहरिचितअंतनलागत
अजहूं जासुमनहोइमगनअस॥कृपासिंधुहरिहोइतासुबस
दो० एकदिनसबकरतीरहैंयमुनामेंअसनान॥
चीरहरेलहैंआइकेऔचटश्यामसुजान॥
चौ० लटकायेपटकदमकिडारी॥मांगहिंसबमिलिगोपदुलारी
चीरदेहुतुम्हरेहमतबहीं॥जलतेबाहरह्वैहौंजबहीं॥ ॥
निकसींसबकरतकरिवोटा॥बोलेबिहँसिनन्दकेढोटा॥
दोउकरजोरिबिनयअबिकीजै॥करतभईसबतबअसलीजै॥
पूजेहुतुमजेहिहेतभवानी॥सोहमअगरभयेबरदानी॥
जबतकजगकीलाजनखोवै॥तबतकमोहिंनप्रापतहोवै॥
असकहिअमितवनायेअंगा॥कीन्होकेलिसबनकेसंगा
कमलाललितलाविमलविशेषा॥चन्द्रावलीसुखमादिकशेषा
जबतबसबकेसदनबिहारी॥जातकहतएकएकहिप्यारी
सपनबयनसुनिगोपिनकेरे॥करिआदरआवहिंचलिनेरे
यकदिनगेराधिकानिकेता॥बैठारीनिजढिगकरिहेता
श्यामबदनलखिआपनिछांहीं॥अपरनारिजानीमनमाहीं
कीनमानहरिनेहजनावा॥दूतीबनिबहुभांतिमनावा॥ ॥
कबहूंबैठेंपनिघटजाई॥काहूकेसिरधरेंउठाई॥ ॥ ॥
काहूकरघटडारेंफोरी॥तेयशुमतिसेकहैंनिहोरी॥ ॥ ॥
यकदिनदधिबेचनकेहेता॥चलींसकलब्रजबधूसचेता
सखनसहितयदुनन्दनहेरी॥मारगबीचलिहिनिसबघेरी
दीजेदानजानतबपैहो॥हठकीन्हेपाछेपछितैहो॥ ॥
डगरडगरमेंचलहुकन्हाई॥समुझिनलागेबहुतमोटाई
गिरधरकंसकबहुंसुनिपाई॥सकलतुम्हेंबंदिमाहिडराई
कंसहिंमारिमिलेहौंछारा॥उग्रहिकरिहौंबहुरिभुवारा॥ ॥

हरिहैं सकल भूमिकर भारू ॥ याही हित भा मम अवतारू ॥
झूठ बात मति बोलौ लाला ॥ धेनु चरावत फिरत बेहाला ॥
लकुटी हाथ कमरिया कांधे ॥ मांगि खात दधि सबके रांधे ॥
तुम ईश्वर न तहौ सोई ॥ बातन ते नहिं भूपति होई ॥
एक युवती पुनि अहिरगंवारी ॥ तुम काजानो भूति हमारी ॥
ब्रह्मादिक ध्यावैं नित हमहीं ॥ ऐसी दशा भई मिलि तुमहीं ॥
तुरत चतुर्भुज रूप देखावा ॥ सखिन विश्वास सबन के आवा ॥
बोलीं सब हम हैं तव दासी ॥ भावै सो कीजे अविनासी ॥
प्रमुदित कीन बिहार बिहारी ॥ फिरि आई निज भवन निहारी ॥
दो० एक सखी उनमत है टेरै सबके द्वार ॥
लेकोई श्यामै मोल दधि लीन्हीं नन्दकुमार ॥
चौ० अति बहु केलि गोपिकन केरी ॥ संक्षेपमें कछुक निबेरी ॥
सुनहु एक दिन एक ठिकाने ॥ गये चरावन सखा भुखाने ॥
द्विज करत रहैं तहं जागा ॥ पठये लावहु मांगि बिभागा ॥
जाइ सखन जब भोजन मांगे ॥ सुनि कटु बचन कहन सब लागे ॥
आये भूम कहिनि सब खोले ॥ अब तुम जाउ तियन ढिग भोले ॥
द्विज बनितन ते भाषिनि जाई ॥ बिपिनि भुखाने राम कन्हाई ॥
तुम्हरे ढिग पठइनि है हमको ॥ सुनि आनन्द भयो अति सबको ॥
बिबिध भांति के भोजन कीन्हे ॥ छिप्र चलीं थारक रलीन्हे ॥
आइ कृष्ण के आगे राखे ॥ प्रेम सहित सब हित मिलि चाखे ॥
एक केर पति रोकि सिधाई ॥ तनु तजि मिली प्रथम सो आई ॥
दरशन पाइ छकित भई सारी ॥ कहत भये तब बिपिनि बिहारी ॥
जाहु भवन अब डेरहु न काहू ॥ तव सेवा करिहैं तव नाहू ॥
सुनि समोद आई अस्थाना ॥ तब सब द्विज लागे पछिताना ॥
हमरे सकल यज्ञ धिरकारा ॥ धिक हमरे बल बुद्धि बिचारा ॥

धृकविद्यापढ़िवोसवजानौ॥ धृकहमरेजपतपव्रतदानौ॥
धृककुलमदअभिमाननिछयनू॥ हाइकृस्णतेविमुखजोभयनू
धनिपत्नीयेहरिमनभावन॥ इन्हैंपरसिहमैंह्वैहैंपावन॥
धेनुचराइजाइजबधामा॥ अवलोकहिंछबिमिलिसबबामा
कार्त्तिकबदीचतुर्दशिआई॥ घरघरउत्सवकरहिंलोगाई
यशुमतिभोजनबिबिधिबनाये॥ कृस्नचंद्रलखिबचनसुनाये
आजुकौनउत्साहतुम्हारे॥ सुरपतिकीपूजनहैप्यारे॥ ॥
ब्रजबासिनकेइष्टबिराजा॥ जासुकृपासुखबाढ़तरोजा॥
बरषतजलतृनजामतजाते॥ चरतधेनुपयप्रगटततातें॥
एहियोदूरिकुयोजनिलाला॥ रूसिरहेंगेइन्द्रबिशाला॥ ॥
बोलेमनमोहनसुनुमाई॥ यामेंहरिकीकौनभलाई॥
ईशरजाइजाहिंमहजोई॥ गिरिधरिसदाकरतसबसोई॥
कोइसिरजेपालेसंहारे॥ कोइबरषेकरतेकोइजारे॥
इन्द्रकहाकरिसकतबिचारा॥ नीकजनूनहाथकरतारा॥
बहुदिनतेपूज्योसुरराई॥ काहुइकबहुँदिन्हिसकछुआई
तेहितेअबछांडोसुरपूजा॥ गोवरधनकीठानहुंपूजा॥
जेहिकेऊपरधेनुचरावत॥ सदातौताहितुमसबबिसरावत
निकटरहतसबतेबड़देवा॥ तेहितजिकरतआनकीसेवा
जबहींतुमपुजिहौमनमाना॥ ह्वैप्रसन्नदेइबरदाना॥ ॥
याहीबातचतुर्भुजरूपा॥ कहीस्वप्नमेंपुरुषअनूपा॥ ॥
निजनिजकर्मबचनकाअपेक्षा॥ तातेतुम्हेंचहीगोरक्षा॥ ॥
सबब्रजमेंयहबातप्रकाशी॥ कौंसलकरनलगेपुरवासी
सबकेमनआईसुनिलीजे॥ जोकछुकृस्नकहैंसोइकीजे
श्यामसमानहितूनहिंकोई॥ प्रभुताईनिजनयननजोई॥
सुनिसबनिजनिजआश्रमआई॥ सकलनमेंसबसौजभराई

नानाविधिपकवान मिठाई ॥ विविधिमूलफलफूलखटाई
सालनसाक अनेक सोहाये ॥ जोलिसबसकट सिधाये॥
बालवृद्धयौवननरनारी॥ चलेसकलमनआनँदभारी॥
बाजेबाजन विविधिप्रकारा॥गावहिंगीतबधूमिलिसारा॥
पहुँचेजवगोवर्द्धनपाहीं॥ टिकेसबपँचयोजनमाहीं॥ ॥
समाचारसुनिजहँतहँतेरे॥ आयेऔरोलोगघनेरे॥ ॥
कार्तिकसुदीप्रतिपदाकेदिन बोलेकृष्णनन्दतेयहिछिन
प्रथमेतुमपूजहुगिरिराजा॥तेहिपाछेसबगोपसमाजा॥
पूजलभयेनन्दसबआगे॥पाछेसकलचढ़ावनलागे॥ ॥
प्रकटेकृष्णस्वरूपधरिदूजा॥ पूर्णकियाल अनेकनपूजा॥
श्यामशरीरमुकटशिरनीका॥कुण्डलमालमनोहरहीका॥
पीतवसनपहिरेसुंदरअंगा॥ चक्षुचपल अलिकंजनुरंगा
लागेखानउठाइउठाई॥लखिहरषेसबलोगलुगाई॥ ॥
तिनतेकृष्णकहतभेतबहीं॥देखहुमेरेससुरकबहीं॥ ॥
जोजत्यस्तवपूजनग्वाला॥तुम्हरीकृपामिलेसबताला॥
ललितासखीगईसबजानी॥ राधातेबोलीमृदुबानी॥ ॥
देखोश्यामकेरिचतुराई॥आपुपुजावतआपुहिखाई॥

दो० भलीवस्तुरघुनाथसोइजोलागैहितश्याम॥
ननतरुभईबादिहिगईज्योंपानीकेदाम॥ ॥

चौ० एकसखीगृहभोगलगावा॥करपसारितातूकरखावा
भोजनकरिबालप्रभुयाही॥मांगहुबरजोभावैजाही॥ ॥
जोजेहिरुचासोइतेहिमांगा॥बोलेनन्दसहितअनुरागा॥
नाथदेहुबरयहममकामा॥नीकेरहेंकृष्णबलरामा॥ ॥
सुनहुनन्दतवपुत्रनकेरा॥सदाहोयकल्याणनिवेरा॥ ॥
सहितसमाजरहौतुमआछे॥एकबालहोईममपाछे॥ ॥

ताको तुम तनकों मोलिडरियो॥ जो कछु कृष्ण कहैं सो करियो॥
अस कहि दिहिनि बांटि परसाद॥ अंतरध्यान भये सहलाद॥
हनुमत बचन लागि यदुराई॥ परसि परवत जि दीन बडाई॥

दो॰ सेतु करन भा पूर मुनि दीन्ह्यो ब्रज मे त्यागि॥
मिले न दरशन मोहिं तोहिं द्वापर में एक लागि॥

चौ॰ ऐसे प्रभु निज जन की बानी॥ करत सांच मुनि कौन प्रमानी॥
जयति॰ कहि करत बड़ाई॥ आये पुर लखि लोग लुगाई॥
तब बासो ऽति कोपत भयऊ॥ बोलि मघ परलय के लयऊ॥
ब्रजबासी सब गये सोटाई॥ देहु बहाइ सहित गिरि जाई॥
टुक टार के कहे हमारी॥ दिहिनि त्यागि भरल गिरिहि ओहारी॥
कौनि बात बड़ि बरनि सिधाये॥ घनघन जात बज्र ब्रज आये॥
घेरि घुमरि जल छाड़न लागे॥ सकल कोप हरि पद अनुरागे॥
तुरत गोबर्द्धन लीन उठाई॥ ब्रज पर दिहिनि छत्र सम छाई॥
नख पर धरे देखि ब्रज नारी॥ एक एक ले कहैं बिचारी॥ ॥ ॥
चोरि चोरि तब माखन खायो॥ सो सखि स्याम काम अब आयो॥
यशुमति कहैं निहारि निहारी॥ सब पर शक्र बिपति यह डारी॥
केहू नहिं गिरिराजहि धारा॥ हमरे सुत भारु कह हहरा॥ ॥
लेहु लेहु अब तें को ऽलेहू॥ लालहि नेकु उसासी देहू॥ ॥
हो ऽसहीर काहे कछु दाया॥ तब मोहन मोले समुझाया॥ ॥
सप्त दिवस मुदिर न बलपीटा॥ काहू के तन परी न छीटा॥ ॥
त्रिभुवन पति जिन कर रखवारा॥ को करि सकै तासु अपकारा॥
हत सब घन चलि भयिल लजाई॥ सहस अक्ष सुनि उठा डेराई॥
आयो तुरत कृष्ण के पासा॥ चरण नाइ शिर बचन प्रकासा॥
नमो कृष्ण भंजन महिभारा॥ अखिल लोक नायक करतारा॥
जगत पिता गुरु अज भगवाना॥ रक्षक धर्म दलन खल माना॥

मैं प्रभु अपराध कीन अति भारी॥ क्षमहु नाथ अब चूक हमारी
जाना नहीं तुम्हें मैं ईशा॥ ताते करन चह्यो व्रज खीसा॥ ॥
जो जाते कछु पावत होई॥ मिलै न ताहि करै रिस सोई॥ ॥
हम तुम्हार सब भाँति बसाये॥ कामधेनु लीजै प्रभु ल्याये॥ ॥
बोले कृष्ण तजहु सब शोका॥ धेनु संग सब जाहु निज लोका॥
भोगौ निज अधिकार सदा हीं॥ भूले मोहिं बहुरि सुख नाहीं॥
आपो सुरपुर आयसु मानी॥ देखि प्रभाव सभा हरषानी॥ ॥
सब मिलि कहैं कृष्ण हैं रामा॥ इन्द्रहु जासु करत परनामा॥ ॥
गोवर्द्धन को आपहि कपारी॥ भुज चूमति जसुमति महतारी॥ ॥
कहै रघुनाथ चरित हरि केरे॥ भवसागर के बोहित बेरे॥ ॥ ॥
इति श्री विश्रामसागर सदमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसने-
ही कृत कृष्णायने चतुर्थ मासा विरह सरा दान लीला गोवर्द्धन लीला वर्णनो
नाम पंचमोऽध्यायः ५॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणनायक गिरा सुखदानि॥
कहौं दशम अस्कंध की रहस बिलास कछु जानि॥

चौ० इन्द्रहि श्याम स्वर्ग पहुँचायो॥ व्रज आये मन लखि अति सुख पाये॥
बसे बहुरि सब निज निज गेहा॥ यक दिन तहाँ चरित भा एहा॥
नन्दहि वरुण दूत लै गयऊ॥ कृष्ण जाय पुनि लावत भयऊ॥
सुनी सबन प्रभुता अभिरामा॥ अब सुनिये जिमि कीन्ह्यो कामा॥
यक दिन देखि सरद उजयारी॥ वनमें आवत भये मुरारी॥ ॥
हरिहित गुनि ऋतुगण तहँ आये॥ सफल विटप नहिं जाहि गनाये
डोलत त्रिविध पवन सुखदाई॥ लखित हैं प्रभु दित हूय दुराई
त्रिभंगी है बेणु बजाई॥ सुनि गोपी सब आतुर धाई॥ ॥ ॥

दो० कोइ सुत तजि कोइ सेज तजि कोइ भूषण कोइ चीर॥
कोइ पय तजि कोइ पाक तजि आई जहँ बलवीर॥

बोलेलखिब्रजराजतुमकीननर्ककाकाम ॥
सासुससुरपितुमातुपतितजिआइउयहिठाम ॥
चौ॰तेहितेअबहींजाहुपराई ॥ सुनिगोपीबोलींअकुलाई ॥
यहतौदोषनाथतेहिलागै ॥ अपरपुरुषतेजोअनुरागै ॥ ॥
हमरेपतितुमहींमहराजा ॥ यामेंकहौकौनकीलाजा ॥ ॥
त्रिभुवननाथप्राणपतिदेवा ॥ कुरमिलितजियेभूठीसेवा ॥
जोइमिरैहैहियेनिठुराई ॥ कैधौंबंशीतुमफूंकिबजाई ॥ ॥
अपावैकोइआसरालगाई ॥ लागैदोषदेइदुहलाई ॥ ॥
तेहितेनाथरहसअबकीजै ॥ सूधेसूधजवाबनदीजै ॥ ॥
बिलपतरुदतबदलइमिबाला ॥ देख्योकृपासिंधुछबिजाला
मायातेसबकह्योगोपाला ॥ रचहुरहसमंडलततकाला ॥
योजनपांचमाहिअभिरामा ॥ रचतभईबंशीबटधामा ॥ ॥
गीतिकाछं॰छबिधामबंशीबटजहांमणिजटितकंच-
नकीमही। तहंरासमंडलरच्योमोहनजातसोकापैकही ॥
नवसातसहसजुगोपिकासजिसाजसबठाढ़ीभई ॥ यकए-
ककेमधिएकमूरतिकामकीशोभामई। रघुनाथतिनकेबीचजोड़ीरा-
धिकानन्दलालकी। बपुएकरूपअनेककीन्हेखबरिनहि
यहिहालकी ॥ मिरदङ्गतालसितारबहुमुरचंगबेणुसरङ्गि-
का। सुरमन्दबाजतबांसुरीगतिमिलतउठततरङ्गिका ॥ क-
रजोरिनिर्त्ततछोरिकहुंमुखमोरिसिरनीचेकरैं। पगभूमि
पटकनिबाहुभटकनिग्रीवलटकनिमनहरैं ॥ मृदुहंसहिं-
हेरहिंघुमरिभुकिमतिघूंघुरुनकीलावहीं। तततताथेईतत-
ताथेईततताथेईकहिगावहीं ॥ कोइडारिकरगरश्यामके-
मुरलीछिनाइबजावती ॥ कोइतानपूरतकान्हसंगकोइप-
करिउरचपटावती ॥ हंसिलेतगोदउठायमोहनहाथअंग-

निपे धरैं। लखिदेव नभपर सून बरषैं हरषि सब जैजै करैं॥
मणि कंठ उर बनमाल बर शिर मोर मुकुट बिराजहीं। पटपीत
किंकिनि काछनी कटि कान कुंडल छाजहीं। अँग अंग प्र-
तिबहु बिधि बिभूषन अलक श्रमकन झलकहीं॥ पद क-
ज नूपुर बेणु कर मुखपान भर छबि छलकहीं॥ यहि भांति ना-
चत गोपिका सब थकित हैं झुकि झुकि रहीं। कहिं भालपा-
यल चंद्रिका खसि परी न कछु बेसरि कहीं॥ अति श्रमित लखि
नंदलाल तिनपर सुपट पवन ढुरावहीं। उर के बिभूषण हा-
र बेनी कमल कर सुरझावहीं॥ श्रमसीति के बस श्याम ल-
खि सुर अगणित मन में कहैं। धनि धन्य गोपी धन्य जिनके सं-
ग हरि क्रीड़त रहैं॥ कर जोरि हृदय निहारि बिधि तकहैं यह ब-
र दीजिये। हम होहिं दासी ब्रज बधुन की कृष्ण पद रति कीजिये॥

दो॰ कृष्णमहिमाकुलकरतजबदेखिबनसबब्रजबाम॥
मनमेंभाअभिमानतबहैं हमरेबस श्याम॥

चौ॰ जानिगये सो मद भगवाना। तुरत भये तहँ अंतरध्याना॥
जेहि पर होत अधिक अनुकूला॥ दलत ता सुहरि मद दुखमूला॥
एक सखी का कर गहि लीन्हा। गोपीबेष संग बन कीन्हा॥॥
तेहि तब निज मन मांझ बिचारी। मैं हौं अयी सब बहुत पिआरी॥
बोली पग न चलान जाई॥ लेहु मोहिं निज कंध चढ़ाई॥ ॥
लीजे चढ़ि बैठे मुसक्याई। चरण उठावत गये हेराई॥ ॥ ॥
बिन प्रभु बाल बिकल भै कैसे॥ जलचर बिन जल ब्याकुल जैसे
शोचत हरिहि न पावत बामा॥ बिकल पुकारत आरत नामा॥
हे ब्रजराज राज दुख मोचन॥ हे गोपीपति बारिज लोचन॥
चरणाशरणमें दासी तेरी॥ कृपासिंधु लीजे सुधि मेरी॥ ॥ ॥
यहि बिधि रुदत परी तरुवाला॥ पछिलनिका अब सुनो हे वाला

ढूंढत फिरहिं सकल उनमत्ता ॥ जड़ जीवन तें बूझहिं रत्ता ॥
हे वट हे पाकरी करीला ॥ तुम देखे मोहन गुन शीला ॥ ॥ ॥
हे चलदल हे नीब विचारी ॥ तुम कतहूं देखे ब्रजनारी ॥ ॥ ॥
हे रसाल हे पनस सुजानी ॥ तुम आवत देखे इत कान्ह ॥ ॥ ॥
हे जामुनि हे गूलरि तूला ॥ तुम देखे यदुपति के पूता ॥ ॥ ॥
हे दाड़िम हे कुन्द चमेली ॥ तुम देखे गिरधर अलबेली ॥
हे गुलाब बेला कचनारा ॥ हे बट्टो हे हरसिंगारा ॥ ॥ ॥
हे नीबू अमरूत सरीफा ॥ तुम देखे गोपाल हरीफा ॥ ॥ ॥
मोलसिरी के कदम तमाला ॥ तुम देखे वनरहो नंदलाला ॥ ॥

दो० हे कुष्माण्ड शाद्विजा पद्मा कुमुदा कन्द ॥
हे बेस्वाल गूलर अरु तुम देखे नँदनन्द ॥

चौ० यहि प्रकार सब वृक्षन तेरे ॥ भेंटि पूछें हरि हेरे ॥ ॥ ॥
जब न कछु उत्तर लहें पावें ॥ निदरि तिन्हें बंशीहि गरिआवें ॥
हे बंशी तें बड़ो गँवारी ॥ अपने कुल की रीति बिगारी ॥ ॥ ॥

सवैया वे मग राह गअन्धन को तुम चालिबो आछे नहू को निवार्यो । वे जल थाह बतावत हैं तुम प्रेम अथाह के बारि-द पार्यो ॥ वे बर बास बसाइ भले तुम बास छेड़इ उजारि भेंडा-र्यो । काहि ये कहा हरि की बसुरी तुम आपन वंश को नाम बिगार्यो ॥

दो० बिरह बन्हि तो में भरी हे तू वंशी सांच ॥
फूंकि फूंकि हरि गहल परि तदपि आंगुरी नाच ॥

चौ० जो तें श्यामें तेन सारानी ॥ तो पर पीर जाइ किमि जानी ॥
आगे चलि सो सखी निहारी ॥ भेंटि कह्यो कित गये बिहारी ॥
तेहिं तब आपनि कथा बखानी ॥ कित धों गये हम हु नहिं जानी ॥
बोली तब ललिता मुरझाई ॥ श्याम सरिस सखनिठुर न कोई ॥
कह राधिका श्याम का कीन्हा ॥ केहि अभिमान दुखहिं दीन्हा ॥

विधिकरिगर्वविपुलविधिदेखे। शंकरभयेकामबसलेखे॥
लोमसत्नरिवासिमरीकीमाला। बसेविपिनिमेंदशरथलाला
नारदज्ञानरकरसुरधपावा। धीमरकरहनुमानबधावा॥ ॥
हरिकेकांहेकथानहिंसुनेऊ। गरुड़भुसुराड़सुरहगिरधुनेऊ
दृगमुरवदरपिपराजेपाई। कुशनेनिजबलरामजुभाई॥
ज्ञानगर्वसनकादिककरेऊ। श्रापदेहुजयमेंअवतरेऊ॥ ॥
गिरियथालिस्वर्गतेभूमा। गजबसग्राहबहुतदिनभूमा॥ ॥
गिरिऽशिरगुरायोनमोसभदूजा। हीनतस्यगोवर्द्धनपूजा॥ ॥
नाथसधरीशिलाशिरफेरे। जेसंपरवसम्पातीकेरे॥ ॥ ॥
बसुबाशिष्ठमुनितेमदकीन्हा। तेहिगांगेयमनुयतनलीन्हा
द्रुपदद्रोणातेअहंमितिठानी। भइतेहिअर्द्धराजकीहानी॥
विद्यामदजबकीलितिबिमाले। रिसकरिशम्भजरायोनाले॥ ॥
शुक्रसुताअरुनृपतियऔड़ी॥। मदतेभइसरेसिथलौड़ी॥
करिकन्दर्पदर्पतनुजरेऊ। जिन्हपानगङ्गाकरकरेऊ॥ ॥

दो॰ प्रभुइहुरिबसलखिब्रजगोकेभयोगर्वतेहिसम।
बिछुरतनारिसनेहबसजरततिनवास्योराम॥

चौ॰ तेहिनिश्यामहिंदोषनदीजे। जसमदकियोतेसफलहीजै
बोलीअपरसखीचलिकेअब। रहसकरैमिलिहैंमोहननव
आयसबनकीन्हीसोइरचना। बिबिधिभांतिकेबोलवचना
कोईकृष्णबनीकोइप्यारी। आदिहिनेलीलाबिस्तारी॥ ॥
लागींप्रेमसहितजबगावन। तुरतहिप्रकटभयेमनभावन॥
अपरकर्मतुरतविरकाला। प्रेमतेप्रकटहोतनंदलाला॥
कविअनपारसकेकोगाई। लखिब्रजवधूउठीहरषाई॥
काहूप्रीतिमकरगहिलीन्हा। काहूबाहुकंधनिजदीन्हा॥
काहूकटिपटपटउरधारे। स्तुतहोयअसबचनउचारे

महाराज तुम व्यास बनो अब ॥ संशै चित हम प्रश्न करें सब ॥
तीनि भांति प्रानी जग बीचा ॥ एक उत्तम मध्यम एक नीचा ॥ ॥
बिन सेवा जो करें सनेहू ॥ उत्तम प्रभु कर लक्षण येहू ॥ ॥ ॥
सेवा लखि जे प्रीति बढ़ावें ॥ तिस मध्यम की पदवी पावें ॥ ॥ ॥
अधम अनन्य दास बिसरावें ॥ बिन सेवा नेहि कोन चलावें ॥
इनके लक्षण कहौ बुझाई ॥ जेहि सुख लहैं न संशै जाई ॥ ॥
गूढ़ गिरा सुनि गोपिन केरी ॥ कृपासिंधु बोले हँसि हेरी ॥ ॥ ॥
बिन सेवा जे प्रीति बढ़ावें ॥ ते सुकृती उत्तम गति पावें ॥ ॥ ॥
सुभे हिये जहँ स्वारथ जानें ॥ तहां न धर्म सनेह पिछानें ॥
जो मया लखि कर बिन सेवा ॥ प्रीति तिन कें सुनो तिन भेवा ॥
तिनमहँ जानहु चारि प्रकारा ॥ आतमराम एक निरधारा ॥
दूसर जानहु पूरनकामा ॥ लेहैं वस्तु तदपि निष्कामा ॥ ॥
तीसर अतिशै मूढ़ बखाना ॥ भले अनभल जेहि परत न जाना
चतुर्थ गुरु द्रोही दुख पावे ॥ जो शठ कृत उपकार मिटावे ॥
तुज सुनत गोपी मुसकानी ॥ सन्मुख श्याम बोले मृदु बानी
अहो प्रिये तुम जस चित आन्यो ॥ तथ्य मोहिं कबहूं भांति जान्यो
मोहिं सेवक प्रभु आगम समाना ॥ करौं वियोग ना सुहित जाना
नाचत रहौं सुवक भजन तब हौं ॥ तुमते उरण नहीं मैं कबहीं ॥
तजि कुटुजन गृह बन्धन घोरी ॥ कीन्हों आय भजन तुम मोरा
कोन वस्तु अस है संसारा ॥ जाहि देय होउँ उद्धारा ॥ ॥ ॥

दो० यहि प्रकार के बचन सुनि पुनि गोपी हरषाये ॥
लागी सोइ लीला करन कृष्ण सहित सुख पाय ॥

चौ० कीन्ही बिबिध भांति तह क्रीड़ा ॥ सो बरनत मोहिं लागत बीड़ा
भय यामिनि अरधावधि केरी ॥ ह्रियत भई सब भांति फेरी
आई भवन होत भिनसारा ॥ बरणी कछु है चरित अपारा ॥

जो यह चरित सुनै तजि मोहा॥ लहै सो प्रेम भक्ति संदोहा॥

इति श्री विश्रामसागरे सकलमतअगमग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास
रामसनेही कृत कृष्ण बाललीला वर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ६॥

दो० सुमिरि राम सिय सनगुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं श्रीभागवत की कथा मनोहर आनि॥
रहस चरित सुनि कह्यौ नृप मुनि प्रति हित पहचान॥
कही हरी परतिय रमी सत्य सुनौ सोउ राज॥
समरथ को नहिं दोष कछु रवि बुध गंग समान॥
जिमि विष कीन्ह्यौ पान हर पै वैसा करत को आन॥

सो० भाव वश्य भगवान कृपासिंधु निष्काम चित॥
तजि कुतर्क मतिमान॥ सुनो चरित हरि के सुखद॥

चौ० केहू भांति हरि पद चित लावै॥ श्याम धाम सो निश्चै पावै॥
एक दिन सुनो गोप मिलि सर्वा॥ गये रहे हर पूजन कर्वा॥ ॥
तहां एक आयो चलि नागा॥ नन्दराय को लीलन लागा॥ ॥
पग सों हरि मारी लाता॥ कुवल भयो विद्याधर ताता॥ ॥
करि दंडवत कथा निज भाखी॥ गा सुरपुर उर मूरत राखी॥ ॥
एक दिवस मोहन ब्रज बाला॥ करहिं केलि आवा तेहि काला॥
शंखचूड़ धनपति कर दूता॥ लै भागा एक सखी अभूता॥ ॥
बध करि हरि लेहि त्रिय सो लीन्ही॥ छीनि सुभग मनि रामहि दीन्ही॥
एक दिन कंस असुर एक प्रेरा॥ आवा धरि वपु वृषभ केरा॥
डहंकत फिरत उड़ावत छारा॥ पकरि सींग भुइं लै प्रभु मारा॥
पुनि केसी आवा हय रूपा॥ देखि डरे ब्रज लोग कुरूपा॥ ॥
घर बाहर निकसै कोइ नाहीं॥ लखि गोविंद आये तेहि पाहीं॥

दो० लोग चलावन चरण दोउ पकरि लीन घनश्याम॥
दिहि निफेंकि बान धनुष पर गिरा जाइ अनुधाम॥

चौ० पुनि रिस करि धावा मुख बाई ॥ कृष्ण दीनि निज बाहँ चलाई
बाढ़ी भुजा तलफि मरि गयऊ ॥ लखि सब ग्वालन के सुख भयऊ
यक दिन श्याम सखन के संगा ॥ खेलत रहे तहाँ धरि रंगा ॥
बालक कर ब्योमासुर आवा ॥ खेलन लाग न जाने पावा ॥ ॥
वृक बनि शिशु यक यक उठाई ॥ सब गिरि गुफा दुराइसि जाई ॥
तब यदुनाथ गये जिय जानी ॥ लरि मारा तुरतै अभिमानी ॥ ॥
सुनि सुनि बध सुभटन कर काना ॥ तब सुभोजपति अति अकुलाना ॥
बोला सकल सभा ते ऐसा ॥ रिपु बध हित अब करिये कैसा ॥ ॥
कहत भये सब मल्ल सँघाता ॥ लेउ बोलाइ यहाँ दोउ भ्राता ॥ ॥
ऐहैं रंगभूमि चलि जबहीं ॥ मल्लयुद्ध करि मारब तबहीं ॥ ॥
सुनि बारता भूप मन भाई ॥ तुरत लिहिसि अक्रूर बोलाई ॥ ॥
मधुबन जाउ तात मम कामा ॥ लावहु बोलि कृष्ण बलरामा ॥
धनुषयज्ञ देखन के काजा ॥ कह्यौ बोलाइनि तुमका राजा ॥
शायद साजि निज स्यन्दन दीन्हा ॥ करि बहु बिनय बिदा पुनि कीन्हा
कार्तिक बदी त्रयोदशि भोरा ॥ चढ़ि अक्रूर चले ब्रज ओरा ॥ ॥
करत बिचार आजु हरि चरणा ॥ देखिहौं जाइ सकल दुखहरणा ॥
अंकुश कुलिश सहित धुज रेखा ॥ ध्यावत जिन्हैं शम्भु अजशेषा
प्रगट शीश मैं नावब जाई ॥ लैंबकि मोहिं उर लैहैं लाई ॥ ॥
दहिने मृग बिलोकि हरषाने ॥ करत मनोरथ ब्रज नियराने ॥ ॥
नित्य निरामय निरमल नीका ॥ परपद ते प्रिय त्रिभुवन पीका ॥
उतरि परे रथ ते नहिं बारा ॥ लागे लोटन धूरि मँझारा ॥ ॥ ॥
यामें परे कृष्ण पद पावन ॥ निकसे हैं हैं धेनु चरावन ॥ ॥ ॥
भेंटहिं पाद पद्म जिय जानी ॥ इनके तर बिहरे सुखदानी ॥ ॥
चलि न सकत तन सुधि न परेखी ॥ दृगजल बहत चहत कब देखी
प्रेम बिचारि कृष्ण बलरामा ॥ लै गौवें आये तेहि ठामा ॥ ॥

पेरवगराऽअक्रूरनिहारी॥ उर लगाइतबलीनबिहारी॥
रूपनिहारिछकितभयेनैना॥ अतिमुखदीनबोलिमृदुबैना॥
लायेभवनहरषयुतलीन्हा॥ नन्दमहरिबड़ऽआदरकीन्हा॥
सेजबिछाइसुभगबैठाये॥ षटरसभोजनमहरिबनाये॥
जेंवतभयेबैठिसबसंगा॥ ऐंचेबहुरिऽआयेपरयंगा॥ ॥
बोलेतबदंपतिहरषाता॥ गवनकवनहितकीन्हौंताता॥
सकुचेकहनरहतनहिंराखा॥ परठवाभूपहमैंऽअसभाखा॥
सहितगोपनन्दहिलैऽआवो॥ दधिघृतक्षीरजहांलगपावो॥
पुनिधनुमखदेखनकेकाजा॥ हरिहलधरहिंबोलाइनिराजा॥
सुनिऽअसबचनबानसमलागे॥ यसुमतिदीखकालजनुऽआगे॥
बोलतभईबिकलहैबानी॥ हेऽअक्रूरभूपमखठानी॥ ॥
तहांकहाममबालनकेरा॥ कौनकामहैजोनृपटेरा॥ ॥
यहांचहाभुजबलजिलमाहीं॥ तेहितेमोसुतजैहैंनाहीं॥
बोलेकृष्णजाबमैंमाई॥ धनुषयज्ञदेखीनहिंकाई॥ ॥
ऽआवबबेगिबबाकेसाथा॥ ऽअसकहिनिठुरभयेयदुनाथा॥
बिकलमहरिबहुबचनबखाने॥ येकोऽअंकरहतनहिंऽआने॥
बृजबासिनसेबोलीबिलखाई॥ लायोसंगफेरिदोउभाई॥ ॥
यहिबिधिभईसकलनिशिनाथा॥ कृष्णपितासेंबचनअकथा॥
लैदधिदूधचलहुतुमऽआगे॥ गोपनसहितसखासंगलागे॥
चलेनन्दसकटनचढ़िगोपा॥ बालकृष्णपथतकेंसचोपा॥
कछुकबारबीतेदोउभ्राता॥ रथपरभेसवारहरषाता॥ ॥ ॥
तेहिक्षणशोकरहापुरछाई॥ महरिदशाकछुबरनिनजाई॥
ब्रजबनितनजबसुनाहवाला॥ धाईंसबैहैनिडरबिहाला॥
ऽआइनिकटबोलींकिनजाहू॥ चलहुभूमिजोनिजभलचाहू॥
सुफलकसुतइनकाकाकहिये॥ नीतिबिचारिमष्टहैरहिये

दो० कामदार कामी कुधिरा कन्या मांगन लोइ॥
ये पर पीर न पेखई होनी होय सो होय॥ ॥

चौ० सुनि गोपिन के बचन बिहारी। रेमा साध्य सुरमुनि हितकारी
बोले बिहँसि बचन जकर जोरी। एक अरज अब सुनिये मोरी॥
धनुषयज्ञ कबहूं नहिं पेखी। जो तुम कहौ तौ आई देखी॥
सुनि सबके मन करुणा आई। आवहु देखि कहेनि अकुलाई
चले तुरत रथ हांकि बिहारी। सकल चित्र सी रहीं निहारी॥
पाद पवोट होइ रथ जब ही। एक एक ते भाषें तबही॥ ॥
देखौ वो हरि को रथ जाई॥ कमलनयन कर पट फहराई॥
जब नभ गरद परी नहिं देखी। फिरीं सकल मन शोच विशेषी
पुनि २ निरखहिं दिशि बनमाली। कहु वृषभानु सुता सुनु आली

कवित्त पीछे हिक चितवत नयन मम बार २ पाछे न परत पग काह मन दीजिये। पवन न भई हौं पताक हू अवर नाहिं रथं के न भई अंग केसी अब कीजिये॥ धूरि हू न भई हरि तन लागि जाती सङ्ग खग हू न भई जो उड़ाय दृग लीजिये। आई। बिलखात जिमि माखी मधु जात छोरि जियो नहिं जात पै दरश आश जीजिये॥

चौ० गोपिन की कछु बिरह बखानी। अब सुफलक की सुनहु कहानी
कृष्णहिं लखि युवतिन आधीना। तब अक्रूर बिचारहि कीन्हा
इन्हें सुनो हम हैं अवतारा। गोपिन के बस निपट निहारा॥
यहि प्रकार की संशय आनी। जानि गये प्रभु अन्तर्यामी॥
लागि जब अक्रूर नहाई। यमुना में निज मूर्ति दिखाई॥ ॥
जल भीतर जब डुब्बी मारी। देखि परे तहं राम बिहारी॥ ॥
शिर निकारि पुनि रथ पर पेखे। केयो बार यही बिधि देखे॥
भये निमग्न दोऊ कर जोरी। दिव्य दरश तहं दीख बिहारी॥

सवत सुर मुनि सिद्ध बिधाता ॥ लागे बिनय करन पुलकाता
नौमि कृष्ण अद्वै अबिनाशी ॥ व्यापक ब्रह्म सकल घटवासी
माया व्यक्त बिरज व्यापीशा ॥ श्रुति कहं सर्ब थापित पद शीशा
यहि बिधि कीन्ह बिनय बहु जबहीं ॥ भये अदृश्य बहु रिहरि तबहीं
व्याकुल है आयेउ रथ तीरा ॥ कहहु हरि किहेउ अस्नान गम्भीरा ॥
तब सुफलक सुत गहि दोउ चरणा ॥ बोले प्रभु मैं तुम्हरी शरणा
तव प्रभाव प्रथमैं नहिं जाना ॥ तेहि ते मैं अभाव मन आना ॥
करत नाथ तुम लीला कैसे ॥ बहु बिधि स्वांग मनुज काजैसे ॥
तब प्रभु दानपतिहिं समुझावा ॥ चले आइ मधुपुर नियरावा
सुफलक सुत बोले कर जोरे ॥ प्रथमैं चलो नाथ गृह मोरे ॥ ॥
आउब एक दिवस तव धामा ॥ अस कहि उतरि परे तेहि ठामा
सहित समाज रहे पुर पासा ॥ तेहि दिन तहां भई निशि नाशा ॥

दो० भोर भये प्रभु नन्द ले बोले श्रम जनाय ॥
मधुपुर आई देखि उपवन सरवन सहित दोउ भाइ ॥

चौ० आवहु देखि ताल हम आई ॥ काहू ते जनि करेउ लराई ॥
आयसु पाइ चले हरषाता ॥ श्रीदामादि सखा संग भ्राता ॥
नवल नारि सम पुरी निहारी ॥ भये मुदित नख शिख सिंगारी
जात रजक लेक हा कन्हाई ॥ देउ हमैं बर पट पहिराई ॥ ॥
बोला निज सुख देखि गंवारा ॥ भूप बसन तुम जाति अहीरा
सुनि बलभद्र बिघल कारि डारा ॥ पहिरिनि पट सब अनुहारा
दरजी वायक नाम बिलोकी ॥ बसन साजि तन भयो अशोकी
आगे मिला सुदामा माली ॥ रचि पहिराय सिहार सुजाली ॥
लीन्हिसि मांगि कमल पद प्रेमा ॥ ज्ञान बिशुद्ध भक्ति दृढ नेमा
आगे लखी कूबरी जाता ॥ कंसहि खब स्लगावन गात्ता ॥ ॥
कहत भये तेहि नयद सुराई ॥ देहु हमारे खबरि लगाई ॥ ॥

कौतुक भई कुबिहेरियगोपालहि॥ निरमयखवरिलगायसभालहि
तब मोहन पगतेपगचापी॥ चिबुक सुकर गहिऊपरथापी॥
मिटिगा नुस्ततहि कूबरतासु॥ भयो दिव्यलनबिमलप्रकासू॥
बोली चलहु नाथ मम गेहा॥ रौरे योग्य भयो बपुएहा॥ ॥ ॥
सुरता प्रीति देखि करजोरे॥ कह्यो अपर दिन आउब तोरे॥ ॥
आगे चले नगर की नारी॥ अवलोकहिं छबि चढ़ी अटारी॥
भूषण पट धरहिं रे बिपरीता॥ कोइ अंग अघट कोइ अगरीता
एक एकंत प्रमुदित कहहई॥ ये देखौ यशुमति सुत अहई॥ ॥
सुन सम सुभग न कोउ संसारा॥ धनि गोपी संगकिहिं निबिहारा
कोइ बसुदेव देवकी केरे॥ कहत दुराइ निय सुमति सेरे॥ ॥
बहुं बिधि बिधि पूजी निज इच्छा॥ अवरा किय अस स्व अप्रतिच्छा
पर कहें अब कंस कुचाली॥ मल्ल युद्ध हित बोलेसि आली॥
कह मुष्टिक चाणूर बिशाला॥ कहँ ये मृदुल नन्द के लाला॥ ॥
आप कहें बल में अति भारी॥ बिपुल असुर इन डारे मारी॥ ॥
मल्ल प्रासा कंस सहु के हरहीं॥ आपुराजि मधुपुर की करहीं॥ ॥
यहि बिधि आपुस में बतलाहीं॥ बरसैं सुमन जहाँ चलि जाहीं
कोइ लख राजा नायक के तूला॥ दक्षिण धृष्ट सग अनुकूला॥
द्वादशहाव भाव कोइ करहीं॥ निज सरूप कोइ रतिमद हरहीं
सब जानत रसिक सिरोमणि कोहे॥ निरखहिं तिय न भाँति बहु नेहे
कुराडलिया कोइ स्वकीय परकीय कोइ कोइ सामान्या जा-
नि॥ बिय असन्धि मुग्धा कोइ मध्या प्रौढ़ा चारि॥ मध्या प्रौढ़ा
चारि कोइ भे ... अन श्रेष्ठा॥ कोइ ज्ञाता अज्ञात कोइ जेष्ठा अजेष्ठा
कोइ धीरा अधीर लखि सिना कोइ गुप्ता पन। मुदित बिदग्धा को-
इ कोइ कुलटा अनुसायना॥ कोइ उत्का स्वाधीन बात सज्या
कोइ दुखिता। कलहंतरिता कोइ बिप्रलब्धा कोइ प्रोषिता।

कोइ खंडिता अभिसारिका आगतपतिका होइ। प्रोषितप-
तिका धनि पतिगर्वितरेखे कोइ॥

चौ॰ यहि बिधि लखि युवतिन के लक्षण। अपु समें बनत लाइ प्र-
तक्षणा॥ रङ्गभूमि आये यदुराया। चक्र धनुष गहि तोरि बिहाया॥
मारनि करे रहे रखवारे। आये बहुरि टिके जहं सोरे। नन्दगो-
प लै असन कराये। पुनि मुनि दोउ भाइन समुझाये॥ ॥ ॥

दो॰ करौ अबगरी मति इहां निरदै नृप को गाउं॥
भले नाथ रघुनाथ भरि मुख मन औरे दाउं॥

इति श्री विश्रामसागर सकल आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम स-
नेही कृत श्रीकृष्ण मथुरागमन बर्णनो नाम सप्तमो ऽध्यायः ७॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं दशम अस्कन्ध की कै सोक था बखानि॥
रजक निपातन धनु दलन अप कुसरता बरजोर
सुनि जहं तहं रघुनाथ जन पर्यो नगर में सोर॥

चौ॰ यह सब खबरि कन्स जब पाई। तब तो अधिक उर भय अकुलाई॥
लीन्हि सि बोलि मल्ल बल भूरी। आवैं तब तुम डारो चूरी॥
द्वार कुवलया गज ठढ़ि आवा। अयुत नाग बल तामें पावा॥
कहि सि महावत ते गोहराई। प्रविसत लै डारें चपवाई॥ ॥
असुर सकल बैठाय ठिकाने। आपु बैठ उत्तम मंचाने॥ ॥ ॥
तब बोलवाइ सिराम गोपालू। नन्द सहित आवें सब ग्वालू॥
कहौ चार मुनि सकल सिधारे। आये रङ्गभूमि के द्वारे॥ ॥ ॥
बोले कृष्ण टारि लपीला। सुनि तेहि हस्ति सामने ठीला॥ ॥
लागे ताहि खेलावन दोऊ। दूरिहि तें देखत सब कोऊ॥ ॥
कबहूं तर ऊपर चलि जावें। कबहुंक पाछे नाहि हटावें॥ ॥
एक बार हनि मुष्टिक मारा। गिरा अवनि करि घोर चिकारा॥

मस्तक बिथकि हंसगत भयऊ ॥ राम उपारि एक रद लयऊ ॥
रंग अवनि तब गये सुभेषा ॥ जेहि जस भाउ तैस तिन देखा ॥
मल्लन मल्ल तियन रस रूपा ॥ गोपन सजन नृपन नर भूपा ॥ ॥
पितन शिशु को बिदन बिराटा ॥ भोजराज निजु काल हिडाटा ॥
योगिन तत्त्व वैश जिन दृष्टा ॥ यामें कही भावना श्रेष्ठा ॥
बैठे सकल सुआसन पाई ॥ बोला तब मुष्टिक ढिग आई ॥
खेलन कुस्ती अरबा ड़ि आवो ॥ भूपहि निज कर तब दरशावो ॥
मम तव धर्म यहै है ताता ॥ भूप प्रसन्न करी सोइ बाता ॥ ॥
बोले प्रभु जानत सब कोई ॥ मल्लयुद्ध बिन भेर न होई ॥ ॥
जो बिचार बिन भूप करावै ॥ अवधि राज ताकी मिटि जावै ॥
देखे ताहि महा अघ लागे ॥ देइ छोड़ाइ न तो उठि भागे ॥ ॥
हम बालक तुम मेरु समाना ॥ कुस्ती कर मर्म तब जाना ॥ ॥
पुनि गरि बिगो चारन हारे ॥ केहि बिधि लरिये सङ्ग तुम्हारे ॥ ॥
हमें कहा अटकावत इतही ॥ खेलत रहत पुलिन में नितही ॥
सभा बीच काहे कहराता ॥ ठाढ़ भये पन बहु नौ भ्राता ॥ ॥ ॥
हरि चाणूर भिरे भुज ठोंकी ॥ मुष्टिक सङ्ग राम रिस रोकी ॥ ॥
लागे लरन पेंच करि नाना ॥ लचक लकटि हरि पट भुर भाना ॥
अति सुकुमार देखि पुर नारी ॥ कंसहि देहिं अनेक नगारी ॥
हाइ दुष्ट के ध्यान आवत ॥ मृग सिंहन कर युद्ध करावत ॥ ॥
सभा मह ऐसा कोइ नाहीं ॥ समुझावे कंसहि छुटि जाहीं ॥
इतने माहिं कृष्ण चाणूरहि ॥ पटकि दीन महि मरा हजूरहिं ॥
देखि राम मुष्टिक कहि पछारा ॥ सल तोसल तब भये तयारा ॥
पटकि निज तुरत तिन्हे सो हिल लागे ॥ अपर मल्ल सब देखत भागे ॥
बोला कंस निरखि भय पाई ॥ करहु नगर बाहर दोउ भाई ॥
दो० नन्द संग जे गोप हैं लूटि लेउ तुम झारि ॥

उग्रसेनबसुदेवको अबहीं डारों मारि ॥

चौ० सुनतकंस सों ह्यां पहुँचे जाई ॥ पकरि शिखा महि दीन्ह गिराई ॥
काढ़ि कृपाण घसीट घसीटी ॥ डारे सकल निशाचर पीटी ॥ ॥
लखि सुर हर्षि सुमन बरषाये ॥ कढ़ि लावत यमुना तट ल्याये
तहँ बिश्राम कीन मन भावा ॥ सोइ बिश्राम घाट कहवावा ॥
सुनि सुत आइ पिता अकुलाना ॥ छोरि बन्दि ते आनि सनमाना ॥
आसु आसु को धंगना दीन्हीं ॥ मात पिता की सेवन कीन्ही ॥
सुनि बसुदेव देवकी हरषे ॥ गोद लगाइ सकल सुख करषे ॥
दीन्हो उग्रसेन राज बहोरी ॥ तब यदुपति बोले कर जोरी ॥ ॥ ॥
कीजै राज कृपा करि आपा ॥ हमरे हय ययाति की श्रापा ॥ ॥
तरुण अवस्था पितहि न दयऊ ॥ तेहि ते यदुकुल महि बिन भयऊ
कीजै तुम निधरक सुख भारी ॥ लैहौं मैं सब काम सँभारी ॥ ॥
बहुरि नन्द ते बोले आई ॥ ग्वालन सहित आपु ब्रज जाई ॥
हम कछु दिन रहिके यहि ग्रामा ॥ आवब चलि तुम्हारे धामा ॥
निज सुत सरिस हमैं तुम पाला ॥ तेहि ते नहिं बिसरब तिहुँ काला
जननी ते कहियो धरनामा ॥ बिसरि जाइ जनि गिरधर नामा ॥
हम तिन को बहु भाँति खिझावा ॥ उनके कबहुँ अभाव न आवा
गोपिन ते कहियो कुशलाता ॥ कछु दिन में ऐहैं दोउ भ्राता ॥
सुनि अस बचन नन्द दुख पावा ॥ ठगि से रहे बचन नहिं आवा
श्रीदामा बोल्यो तब बानी ॥ कृष्ण कहा तव बुद्धि हेरानी ॥ ॥
अपने मात पिता को त्यागी ॥ पर घर रहिहो रातदिन लागी ॥ ॥
कौनि वस्तु कमती घर तेरे ॥ जो नौकरी करब नृप केरे ॥ ॥ ॥
धरवैहो निज पितु कर नामा ॥ तेहि ते चलो आपने धामा ॥ ॥
भल कीन्ह्यो जो कंसै मारयो ॥ उग्रसेन कर काज बिचारयो ॥
राज पराई देखि लुभान्यो ॥ यही एक अनरथ मन आन्यो ॥

जोसुख है हमरे ब्रज माहीं ॥ सोसुख तीनिलोकमें नाहीं ॥ ॥
तनधन जाइ जाइ बरु प्राना ॥ तबहूं है परबस नहिं रहना ॥ ॥
बोले कृष्ण तात तुम भाषी ॥ सोइ सत्य हमहिं रहे राखी ॥ ॥
परि यह राज नहै परकेरी ॥ सबप्रकार तुम जान्यो मेरी ॥ ॥ ॥
आगे चलहु सकल तुम पाछे ॥ सहित राम हम आवत पाछे
सुनत गोप व्याकुल भये कैसे ॥ गइ मणि छीनि फणिकको जैसे
यद्यपि घट पट बहु पहिराये ॥ तदपि विरह बस रुकन भाये ॥
तब प्रभु करि उच्चाटन दीन्हें ॥ चले सकल मन आनंद कीन्हे ॥
आये जब वृन्दावन माहीं ॥ यशुमति दीख कान्ह घर नाहीं ॥
लागी करन विलाप घनेरा ॥ नन्द कह्यो कछु जोर न मेरा ॥ ॥
जोजो यदुपति कहा सो गावा ॥ तदपि न मन में धीरज आवा

दो० यहां कृष्ण बलराम कह यदुपति दीन जनेउ ॥
पुनि पठये दोउ पदन को पुरी अवन्तिका मेउ

चौ० आये चलि संदीपन गेहा ॥ लगे पढ़ावन सहित सनेहा ॥
प्रथम वेद विधि दीन विचारी ॥ पुनि पढ़ाइ विद्या दश चारी ॥

कुण्डलिया ब्रह्मज्ञान यक जानिये दूसरे रसायन तुर्य । ती
सरस्वर धारण निपुण वेद पाठ है तुर्य ॥ वेदपाठ है तुर्य पंच जो
तिष पहिचानो । छठी कहत व्याकरण धनुर्धारी सप्तम जा-
नौ ॥ जानो वसु जल तरण नवम वैदिक दिशि कृषि पर । रु-
द्र को करवि बाजि चढ़न ते रहीं जु नृत्य कर ॥ बोध चतुर्दई चतु-
र्दश विद्या पाइ अपार्म । पढ़ी कृष्ण रघुनाथ अब कहत क-
ला विधि ब्रह्म ॥

चामर छं० वाद्य गीत नृत्य नाट्य लेख वज्र बेधनं । तंदुलाभि
षालि रंगकार्य पर्यिकं धनं ॥ पुष्पतल्प गंध कल्प दंतचपल
राज्यू । दामधारि सेज कर्णि वारि बाद्य वाग ज्यू ॥ नीरघात वि-

अज्ञात माल इन्द्रजालजू ॥ षट्पानि भूषनानि ग्रंथ कीट भा-
लजू ॥ पाककार कों सुमार दीन बेणु जोगजू । करावें धनी सिं-
गार पान रस प्रयोगजू ॥ सूचिकर्म धातु मर्म सुत्र कीड़ नालि-
जू । वाक्य दक्ष कबोल लक्ष सुष्टु बंचकालिजू ॥ ग्रंथ पाठ छिन्न
काठ नृत्य ज्ञान दायकं । काव्य पूरकं नेवार रज्जु रीति नायकं ॥
तर्क रीति वास्तु प्रीति स्वर्णकार कारजू । रंगज्ञान दक्ष थान मे-
खसुर्ग मारजू ॥ कीर सारिका प्रलाप शत्रुधी उचाटनं । केस-
मार्जनं मकर्ष सुष्टि वस्तु डाटनं । देशभाखनी मलेच्छ फूल
संदनानि के यंत्र मंत्र का बिरोध मान सी पिछानि कैं सिंगरा वि-
धान को सशोस कार्य साधनं । कुल उपाद रक्षकाय जय देव
साधनं । द्यूत खेल बाल भेल ऐसेर बैन तोषनं । बासदादिकृत
बिचार सर्व सार कासनं ॥ चौसठ कला कही सुनीश आदि मा-
यजू । सो लिखी बिश्राम सिंधु मध्य देवदासजू ॥

चौ० चौसठि दिन में बिद्या सारी ॥ पढ़त भये श्री कृष्ण मुरारी ॥
विद्यानिधि बिद्या अभिलाखी ॥ संप्रदाय की सीवा राखी ॥
बिदा होत बोले हरि यहू ॥ गुरुदक्षिणा मांगि प्रभु लेहू ॥ "
कहत भई तब गुरु तिय बानी ॥ पुत्र हमार दीजिये आनी ॥
बूड़ेउ सुनि सागर में गयऊ ॥ पंचजन्य कह मारत भयऊ ॥
मिला न तब कीन्हें पछितावा ॥ चले बहुरि यमपुर में धावा ॥
दीन्ह आनि सो दू बालक श्यामा ॥ लहि असीस आये निज धामा ॥
भक्तबसल त्रिभुवन दुतिदीपति ॥ सब उर अन्तरयामी श्रीपति ॥
एक दिवस कुबिजा के गयऊ ॥ अति अद्भुत गृह देखत भयऊ
बिबिध वस्तु संयुक्त सोहावन ॥ धूपदीप मंडित मनभावन ॥
चंदवा सन उपधान बिशाला ॥ पानदान धुनि बिपुल मसाला
श्यामहिं देखि उठी हरषाई ॥ सखिन सहित सुठि सेजहि लाई

आपु सुतन पद भूषरा सजिके ॥ तकत खड़ी षोडशविधि भजिके ॥
प्रथम समागम समुभिः लजानी ॥ अपर अलोगहि प्रभु पहँ आनी ॥
प्रमुदित करि तेहि संग भगवाना ॥ रमे रूपा करि कृपानिधाना ॥
कोक कला करि सरस बिहारी ॥ काम तपनि ताके रिनेवारी ॥
पुनि प्रसन्न ह्वै बचन उचारे ॥ रमो कछुक दिन संग हमारे ॥
पभु प्रेमासिक रूपन गुरा के ॥ वचन विचारि झीलिधुल उनके ॥
एवमस्तु कहि निज गृह आये ॥ उद्धव सहित तस्य गुरा गाये ॥
सुपने खारा महिं लखि मोही ॥ काम सहित कुवरी भइ सोही ॥
कौने उभाउ प्रभुइ जो ध्यावे ॥ लहे सही फल मृधान जावे ॥
दो० जो कछु लीला जगत में सो सब रघुपति केरि ॥
कला अंश कहुँ स्वयं बपु धारि करत हिय हेरि ॥
इति श्रीविश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दासराम सने-
ही कृत कृशालराइ कुवरी गृह आगमनो नाम अष्टमो ऽध्यायः ८ ॥
दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरापगिरा सुखदानि ॥
भंवर गीत हरि मित्र मत शुक कृत कहत बखानि ॥
चौ० हे नृप जानिय यदुन में श्रेष्ठा ॥ सखा श्याम को भाग्य बरेष्ठा ॥
शिष्य बृहस्पति को बड़ ज्ञानी ॥ कृपासिंधु ब्रज की सुधि आनी ॥
तिन उद्धव कहँ लीन बोलाई ॥ ज्ञानमान रावन मन आई ॥
बोले तात जाहु ब्रज माहीं ॥ लाब हुस्ख बरि मिली सुधि नाहीं ॥
नन्द बवा के गहियो पाऊं ॥ बिसरि जाइ जन हमरो नाऊं ॥
मातागन भेंयाते कहियो ॥ कृपा करत बल कन पर रहियो ॥
गोपिन ते सुठि योग संदेसू ॥ बरणियो तुम तजि सकल अंदेसू ॥
जो जे कहे बचन सुनि सहवी ॥ करि विवाद पुनि जरी न दहवी ॥
बरा। परसि चढ़ि रथहिं सिधाये ॥ ब्रज रवि अस्त समय चलि आये ॥
रंजम गिड़त गुसुरभिन पाछे ॥ बषडो लत्त खगबोलत पाछे ॥

राम कृष्ण गुण गावैं पुरजन ॥ धूप दीप करि पूरित लखिवन ॥ ॥
प्रमुदित है प्रविशे पुर माहीं ॥ खबरि पाइ निज पुत्रन पाहीं ॥
पुर नरनारि परम सुख माना ॥ राम कृष्ण आवत हैं जाना ॥ ॥
वैसे स्यन्दन वृषभ विशाला ॥ वैसे मुकुट पीत पट माला ॥
निकट जाइ ऊधो को चीन्हा ॥ हरख शोक मनमें तब कीन्हा ।
नन्द पवरि पहुँचे सुनि जबहीं ॥ निकसि महरि आई ढिगतबहीं
श्याम सखा लखि चरण पखारे ॥ सुन्दर आसन दिये बैठारे ॥ ॥
मुदित बनाइ असन कर धाये ॥ अचवन करि जब मनमहि आये
तब यशुमति बोली जल ढारी ॥ हैं नीके बलकुञ्ज बिहारी ॥
पालि पोषि हम कीन्ह बड़ेरे ॥ बाजत पुत्र देवकी केरे ॥ ॥
जबते गये सुधिउनहिं लीन्ही ॥ धाइउ के नाते तजि दीन्ही
लीन्हि छीनि प्राण बसुदेऊ ॥ तबते तात न आने केऊ ॥ ॥
हमहीं जाइ तासु घर रहतीं ॥ दासी है सुख देखन चहतीं ॥
बैरी भये कुटुम्बी मेरे ॥ जानन दीन्हिनि निरखिनि धेरे ॥
फूल होत नव नीत निहारी ॥ मोहन के सुख योग बिचारी ॥
प्राते खात रहे दधि रोटी ॥ को अबदेत होइ गो ओटी ॥ ॥
कीन्हे चरित लाल मन जोई ॥ सुमिरि सुमिरि अब आवत रोई
निशिन नींद दिन लागन भूखा ॥ हन्त बदन ब्रज पति कर रूखा
गोन अदे पय तृण नहिं चरहीं ॥ बछरन सहित सकल हुङ्करहीं ।
बालक तरुण जठर सब लोगा ॥ भये क्षीण तन श्याम बियोगा
हम आपनि किमि दशा बखानी ॥ दीन्हेंौ काढ़ि नयन निज पानी
ऐसे दुख देने को रहेऊ ॥ तो कत दावा ते निरबहेऊ ॥ ॥
इन्द्र कोपते नाहक राखा ॥ गिरिहि छौड़ि देते करि माखा ॥
कठिन शोक निशि बासर केरा ॥ दीन लाल करि मधुपुर डेरा ॥
जीवत सकल दरश के लागे ॥ पुनि कबहूं देखब हरि आगे ॥

कह्यो तात कब ऐहै भैया ॥ कब मोहिं गोहरैहैं करि मैया ॥
कब गहिकै दधि मथत मथानी ॥ कब मंगि हैं माखन हठ ठानी ॥
एक दिवस मैं रिस बस बाँधा ॥ सो सुधि करि दुख होत अगाधा ॥
कह्यो जाइ आवैं घर अपने ॥ अब कबहूं नहिं बाँधब सपने ॥ ॥
माखन खात न बरजब रोसी ॥ उरहन देत न सुनब परोसी ॥ ॥
जल सुतारि जापति कर जाना ॥ तासु मातु संग पठवब नाना ॥
मैं जानत सुख तिन्हैं न होई ॥ हठि राखत है हैं सब कोई ॥ ॥
कहा करौं परबस भे लाला ॥ कहुं कहुं गुराहु होत दुख ताला ॥
शुक सारिक जो पढ़ते नाहीं ॥ तौ कत परते पिंजर माहीं ॥ ॥
शब्द वेध शर जो न चलौते ॥ अंध श्राप कत दशरथ पौते ॥
रवि शशि जो करत न प्रकाशा ॥ तौ संतत कत फिरत अकाशा ॥
जो न होत रघुपति कै दाया ॥ तौ बन दुख कत सहत निकाया ॥
जो न लाल को आवत जान्यौं ॥ तब देवैं ते बचन बखान्यौ ॥
जो रखती हौ हम पर नेहू ॥ तौ सुत पठइ हमारे देहू ॥ ॥
जो कोइ कोटिन लाड़ लड़ावै ॥ तद्यपि लाल हमैं न संचु पावै ॥
तुमरे पुत्र सही सुनु माई ॥ एकबार मुख जाइ देखाई ॥ ॥
यहि विधि बचन कहत बहु भाये ॥ तेहि छिन नन्द खरिक ते आये ॥
भेटे उठि उद्धव पुलकाई ॥ लीन्हें निज आसन बैठाई ॥ ॥
लागे बूझन कुशल सपीके ॥ हैं बसुदेव देवकी नीके ॥ ॥
नीके रहत कृष्ण बलरामा ॥ कछु आगवन कहिनिज धामा ॥
तोतल बचन बोलि सुख लागी ॥ बड़े भये दुख दीन्हिन त्यागी ॥
हम हू ते कछु बना न जाना ॥ जगत पिता बालक करि माना ॥
कोमल चरण खरस अधि काई ॥ तहं उनते हम गोचर वाई ॥
उन वा हूं मैं कस्यौ न रोषा ॥ गुण गहि जुख मछि पाये दोषा ॥
हरि की बात हरी ले बनई ॥ थोरेहि मैं जरि उड़ते मनई ॥ ॥

दो० नाम लेइ जेहि युवति को नहिं सुहाइ सुनिताशु॥
राम जानकी के कहे तुष्टत तेहि पर आसु॥

चौ० यहि विधि नन्द करत पछितावा॥ तब उद्धव अस बचन सुनावा
अहो नन्द तुम यशुमति दोऊ॥ शील सुकृत की मूरति होऊ।
क्योंकि राम कृष्ण भगवन्ता॥ प्रणत पाल दुष्टन के हन्ता॥
तिनके चरण कमल चितु लायो॥ यहि ते अधिक न कछु श्रुति गायो
हरिहिं आपु सुमिरत हौ जैसे॥ तन मन धन वारण करि तैसे॥
तुम ते तात न बाहर वोऊ॥ बेचौं जहां बिकैं तहं दोऊ॥ ॥
जब तब बात तुम्हारी गावैं॥ कहत कहत गद गद है जावैं॥
चलत कहिनि पालागन बाता॥ उऋण न हम तुम तें पितु माता
प्रति पालन तुम कीन हमारा॥ होइ है युग युग सुयश तुम्हारा
देखो त्रिभुवन पति गिरधारी॥ चाहत करुणा दृष्टि तुम्हारी॥
बातन होइ बोध केहि भांती॥ जाको रहै सकल सुख जाती
हरि गुन कहत भई निशि नाशा॥ बोले द्विज अलिली निसुवासा
दीप जोरि गृह गोप लुगाई॥ लगीं मथन दधि हरिगुण गांई

दो० तब उद्धव वृषभानपुर चले रजा यसु पाइ॥
मारग में अवलो कि रथ मिलीं गोपिका आइ॥

चौ० गिरिधर की अनुहारि निहारी॥ बोलीं तब गोपन की वारी॥
आप गवन इत कित ते कीन्ह्यो॥ जानि परत मोहन सुधि लीन्ह्यौ
बोले तब उद्धव हम आये॥ मधु पुर ते ब्रज नाथ पठाये॥ ॥
परम मित्र हैं कृष्ण हमारे॥ हम हैं उनके बहुत पियारे॥ ॥
सुनि सब बैठि गईं तेहि ठौरा॥ बोलीं कहौ कान्ह कर व्यौरा॥
उद्धव नन्द नँदन हैं नीके॥ हम सब तिन के जीवन जीके॥
कब ऐहैं कछु कहिनि बखानी॥ शोभा शील गुणन की खानी
गिरि अरि सुत रिपु पुरी बिताई॥ अजहूं नहिं आये सुख दाई॥

उद्धव हम सब श्याम बिहीना ॥ विकल रहत जिमि जल बिन मीना
निशि न नींद दिन असनन भावैं ॥ नैन पलक समकलप बितावैं ।
हरि बिन सेज भयानक लागै ॥ कारागार सरिस एह जागै ॥ ॥
शीतल मंद सुगंधित बाई ॥ लागत मनहुं आगिन ते आई ॥ ॥
बिरह बन्हि सब अंग जरावत ॥ जरिन जात लोचन जल नावत ॥
हमते श्याम करी है ऐसे ॥ बधिक करै पक्षिन ते जैसे ॥ ॥
प्रथमै प्रीति आपही जोरी ॥ पाछे नाव मांझ भरि बोरी ॥ ॥
तुम ऊधो आये भल कीन्ह्यो ॥ हम सबका अवलंबन दीन्ह्यो ॥
मुनि यत रहैं संत पर मारथ ॥ करत रहत सोइ दीख यथारथ ॥

दो० सजन स्वारथी नरन की स्वारथ ही तक प्रीति ॥
खग मृग जार असार लखि तजत सुथल सिखि रीति ।
बहु रंगी जित तितहि सुख एक अंगी कर अंत ॥
जिमि गणिका निधरक रहत दहत सती बिन कंत ॥

चौ० तिमि ऊधो हम हरि को जानैं ॥ श्याम चहैं मानै नहिं मानैं ॥
सुनि ऊधो गोपिन की बानी ॥ योग संदेश न सकत बखानी ॥
सुफलक सुतै परी कठिनाई ॥ उत आज्ञा इत प्रेम अधाई ॥
धरि धीरज पुनि काढ़ी पाती ॥ बोले बांचि जुड़ावो छाती ॥
हमते नाहिन बनी बनाई ॥ चितवत गली छुवत जरि जाई ॥
आपु कृपा करि बांचि सुनावो ॥ श्याम सुखा मृत बचन सुनावो
सुनि ऊधो तब बांचन लागे ॥ लागीं सुनन बैठि सब आगे ॥
गोपी सकल सुनो मम बचना ॥ भूलहु मति मायाकी रचना ॥
जो कछु गोगोचर में आवै ॥ माया कृत सो थिर न रहावै ॥ ॥
छांडि हेतु तेहि ते असनाई ॥ निर गुण ब्रह्म जपहु मन लाई ।
पूरण है सब घट में सोई ॥ कौन सो ठौर जहां नहिं होई ॥ ॥
पांच पचीस तीनि घट तेरे ॥ पृथक रहत पुनि बिमल बसेरे ॥

सो हम तुम तुमसे अरु मोसे ॥ छिनहू मात्र वियोग न होसे ॥
आत्म आत्म से हम प्रगटावैं ॥ पालन करि पुनि नाश करावैं ॥
रचत सकल निज माया जाते ॥ कार्य अंत पुनि कारण ताते ॥
कारज तजि कारण मन लावो ॥ जेहि ते सकल परम पद पावो
निरमल नीर भरा तव नेरे ॥ मरत पियासन तेहि बिन हेरे ॥
तजि कुसंग थे कौल प सीजे ॥ द्वादश संयम नियम करीजे ॥
सूक्ष्म भोजन स्वल्पपियासा ॥ करहु त्यागि वसु भोग बिलासा
षटु मासन निरमल करि मनका ॥ शोधन रहो सदा निज तनका
पूरक कुम्भक रेचक करहू ॥ उलटि ध्यान त्रिकुटी को धरहू ॥ ॥
सोहं शब्द माहिं चित राखो ॥ मनते सकल कामना नाखो ॥
दश प्रकार अनहद सुनि पावो ॥ कौतुक विविध देखिछकिजावो
यहि विधि योग ज्ञान जब गावा ॥ तब गोपिन अधिको दुख पावा

दो० यथा बैद औषधि करै बिन पहिचाने रोग ॥
सो औषधि लागै नहीं उलटि बढ़ै तेहि शोग ॥
तेहि अवसर इक मधुप तहँ आयो करि गुंजार ॥
बैठि गयो राधिका के चरण कमल लखि सार ॥

चौ० तब सब गोपी मधुपर टारी ॥ लगीं कहन ऊधो ते सारी ॥
मधुकर तुम पगते उड़ि जाहू ॥ श्याम शरीर निठुर सब आहू
पहुँचत तहां फूल जहँ फूले ॥ सूखी लखन जात नहिं भूले ।
रूप रहसि सब गिरिधर केरी ॥ हेरौं रे मे गुनन हेरी ॥ ॥ ॥
आई बकी पियावन क्षीरा ॥ डारेनि ताहि मारि बल बीरा ॥
सुप नेखा रघु पति पहँ आई ॥ नाक कान तेहि लिहि निकराई
बलि पावनहिं सुसरबसु दीन्हा ॥ तबहुँ तासु तन बंधन कीन्हा ।
ब्याहु किहि नि हारी हरका गांसी ॥ पुनि आपुइ मिलि वनिन हांसी
कोयल सुतहि काग प्रतिपाले ॥ ऋतु बसंत तेहि तजि उड़ि चाले

उरगे दूध प्रीति ते प्यावै ॥ उलटि श्रमी सो विष ह्वै जावै ॥ ॥
केचुलि त्यागि नसुधि फिरि लीन्ही ॥ तैसे श्याम हमैं तजि दीन्ही ।
यामें भूलन उन की भारी ॥ कारेन की करनी है कारी ॥ ॥
पर गट जिन कीन्हे युग ताता ॥ कौंन कहे यहि बिधि कीबाता
तथा तुमहुँ कछु श्रघ देत नाहीं ॥ कूप छुड़ाइ गहा बत छाहीं ॥
ऊधो श्यामहिं लाज न श्रावत्त ॥ तेहि पर सुनि यत्त दूसकहावत्त
हमका ज्ञान योग लिखि भेजा ॥ श्रापु रहत कुवरी की सेजा ॥
जिमि गरिाका निज कसबै ठानै ॥ श्रोरन तै बैराग बखानै ॥ ॥
तेहि के बचन कहौ को मानै ॥ तैसे श्याम देत है ज्ञानै ॥ ॥
यक तौ श्रंध कूप में डारी ॥ हेरत पंथ नपरत निहारी ॥ ॥
तेहि पर तुम निज ज्ञान सुनावा ॥ मानहुँ घुख ऊपर ते तावा ॥
ऊधो तुम हौ चतुर सुज्ञानी ॥ देश काल लखि कहिये बानी ।
जाके मले श्रनल सम तावै ॥ तेहि के कहा गरल लग वावै ॥
हम बनि तन को चाहिय भोगा ॥ तिनका श्राइ सिखावत योगा
धरत मराल नसुत शिर मेरू ॥ जिन ते चलै न पग भरि सेरू ॥
ऊधो कछु तुम्हरी न लगाई ॥ संगति केर दोष लगि जाई ।
रस लम्पट गिरि धरन लवारा ॥ कौंन होउ तिन संग खुवारा

कुराडलिया लम्पट की संगति किहे द्वादश गुरा नशि जात । प्रथम सत्य पुनि स्वच्छता श्ररु संयम की बात ॥ श्ररु संयम की बात मौन ब्रत माया जानो । शम दम दया सुबुद्धि सहन शीतलता पिछानौ ॥ प्रभुता यश नहिं रहत बसत हिरदय महँ कम्पट । कपिल बचन बुधि जानि करत नहिं संगति लम्पट ॥

दो० जो कहो ऐसे पुरुष से क्यों तुम कीन्ह्यो प्रीति ॥
कर्म लिखा तेहि का करै जरै सलभ की रीति ॥
प्रेमिहिं मरन न लखि परै करै हरषि तन श्रर्पे ॥

जिमि गज कुरंग पतंग अलि झष पिक परिवा सर्प॥
मित्रहि चैन न मित्र बिन कैसो करै बिगार॥
जिमि गृह जारै अगिन पुनि होत अगिन को छार॥

चौ॰ बोली अपर सखी सुनि लेहू॥ नाहक दोष श्याम कर देहू॥
उनमें कछु लंपटता नाहीं॥ प्रीति पाइ परबस हैं जाहीं॥
तदपि रहत निरलिप्त बिशेखा॥ पथ लहि यमुना में तुम देखा॥
जो कहौ अब का प्रीति न हममें॥ रहत न कोउ इकरस हर दम में॥
जो कोइ है प्रभुता श्री वाने॥ ते पर वेद न सुने न जाने॥ ॥
देखो शेष धरे महि भारी॥ सोये तेहि पर जाइ मुरारी॥
अब नँद नन्द भये मह राजा॥ जो कछु करैं उन्हें सब छाजा॥
दिन प्रति पावक सरिस सोहावन॥ बोली अपर सखी यहि भावन॥
प्रभुता की कछु लाग न होई॥ चेरी संग गई मति खोई॥ ॥
कैसो चतुर होइ किन कोऊ॥ नीच संग करि बिगरत सोऊ॥
परम प्रवीन केकयी रानी॥ चेरि संग ते मति बौरानी॥ ॥
गृह जल गद पद पवन समाना॥ पाइ कुयोगिन को बिनसाना॥
ऊधो ब्रह्म सबै तुम कहेऊ॥ अबहीं भये कि आगेहु रहेऊ॥

कुण्डलिया॥ ऊधो जब जब पाप ते उठत धरनि अकुलाइ॥ तब तब क्यों सुर मुनि सकल हरिहि पुकारत जाइ॥ हरिहि पुकारत जाइ आपु किन धरि धरि रूपा॥ हरैं बिश्व को भार होइँ जो ब्रह्म सरूपा॥ तेहि ते वाद विवाद त्यागि गहिये पथ सूधो॥ बिन प्रभु सेवक भाव तरयो भव निधि को ऊधो॥ माया वाद मदांध करि भूषित भयो जेहि ज्ञान॥ सोहमस्मि ब्रह्म सो पुनि पुनि करत बखान॥ पुनि पुनि करत बखान कुत्र ऐश्वर्य मतीते॥ कुत्र बिभुता कुत्र भूति कुत्र सरवज्ञ गतीते॥ तेहि ते ब्रह्म न जीव अहो तुम सुख बस काया॥ बुन्द कहे मैं सिंधु होइ किमि बिन हरि माया॥ ।

दो० जो कहो पृथ्वी सम ब्रह्म घट सम जीव अनेक ॥
ताहि लखो वा ना लखो अन्त होव सब एक ॥
एक भयो तो क्या भयो पुनि नाहिं गदी कुरबाल ॥
तेहि ते माया बाद तजि भजो नन्द को लाल ॥
ज्यों तस्कर कयद में परो कहै हो भूप ॥
तो का छूटे करम बस त्यों तुम ब्रह्म सरूप ॥
ईश्वर आपु स्वतंत्र है जिन चाहै तिन जाइ ॥
सर्व शक्ति जाके विषे भाव सरिस दरसाइ ॥
सोहं सोहं जपत हैं जहँ लग यह जग जीव ॥
राम कृष्ण सुमिरे बिना नहिं न कोई पीव ॥
ऊधौ तुम्हरी बात इमि जिमि रोगी हित माड़ ॥
जो जेंवत है सेर भरि सो किमि होवै चाड़ ॥
कर्म योग तब तक करै जब तक प्रेम न होइ ॥
प्रेम पाठ पढ़ि क्यों पढ़ै कक्का किक्की सोइ ॥
ऊधौ तुम्हरी बात सुनि भयो न हमरे रोष ॥
अपनोई खोटो दाम तो परखैये का दोष ॥

चौ० बोली अपर सुना हम ऐसा ॥ कहत श्याम है अज धौं कैसा ॥
गोपिन को सुनि नाम लजाहीं ॥ निज चेतु लखि सकुचत आहीं ॥
भूलि गई माखन की चोरी ॥ खात रहे घर सकल ढिंढोरी ॥
जो यह बात रहे मन माहीं ॥ तो कत किहि निरहम हम पाहीं ॥
पथ मे ज्ञान विराग सिखावत ॥ जेहि ते कछु मन हूं में आवत ॥
जब हम रंगी श्याम के रंगा ॥ तब लखि परत ज्ञान प्रसंगा ॥
मधुकर को तजि सुरसरि बारी ॥ कूप खोदि जल पीवै खारी ॥
सो तजि आक दुहै को बौरा ॥ को तजि पारस मांगै कौरा ॥
को तजि श्याम सगुण मनि चारू ॥ खलत फिरै कलि अगुण पहारू ॥

रूपरेख कछु जाके नाहीं ॥ सो का करब शून्य के माहीं ॥ ॥ ॥
अगुण सगुण युग ब्रह्म कहावत ॥ सो तेहि भजत जाहि जो भावत ॥
दो० यथा विरोधन कुमुद दोउ हैं बिराट के नैन ॥
काहु इ भावत दिवसपति काहु इ शशि में चैन ॥
चौ० नहि प्रकार हम श्याम उपासी ॥ हैं सब विधि उनहीं की दासी ॥
मुक्ति भुक्ति हम को नहिं चहिये ॥ प्रेम भक्ति किरपा करि कहिये ॥
जो कल्याण केहं बिन नाहीं ॥ तो चलि जाउ बनारस माहीं ॥ ॥
हमरे तो मन एक रहावा ॥ गयेउ श्याम संग बहुरि न आवा ॥ ॥
को अब अगुण ईश अवराधे ॥ को एकान्त में आसन साधे ॥
तलफत दृग बिन लखे किशोरा ॥ को चितवे भृकुटी की कोरा ॥
जरत रहत निशि बासर अंगा ॥ कीन्हें बिन गिरिधरण प्रसंगा ॥
तुम जो कहत हरि हिरदय माहीं ॥ सो तन्न हैं में दरस कल नाहीं ॥
ब्रह्म अंश कैसे हैं कान्हा ॥ माने भुवन बादर में नान्हा ॥ ॥ ॥
मुख पसारि देखरावत भयऊ ॥ तब का ब्रह्म प्रथक रहि गयेऊ ॥
कारण ते कारज है नीका ॥ यथा कंद ते रस फीका ॥ ॥ ॥
कारण अगर रहत है संगा ॥ कारज अतर बिकस सो महँगा ॥
तुमही कारण में मन लावो ॥ हैं में श्याम में प्रीति दृढ़ावो ॥ ॥ ॥
जो हरि तजि करि ध्यान हि धरहीं ॥ तो हम हूं जग या महँ करहीं ॥
भदा हि हंस मीन तजि मोती ॥ तो हम हूं सब ध्यावत ज्योती ॥
जो रन सूर तेग तजि देवैं ॥ तो हम हूं तुम्हरो मत लेवैं ॥ ॥
खडल बिहंग महि बैठैं हारी ॥ तो हम हूं निर्गुण मत धारी ॥ ॥
जो चातक सर कर जल पावे ॥ तो हम अब श्याम न जिय ध्यावें ॥
पशु पक्षी निज टेक हि करहीं ॥ हम मनुष्य कैसे परिहरहीं ॥ ॥
ऊधो तुम बिरही हो नाहीं ॥ नहिं दरस नहिं मिलन माहीं ॥ ॥
बिरही मीन जलहि अनुरागी ॥ बिकुरत प्रीतम के तनु त्यागी ॥

हासभावपपिहा मैं जाने ॥ विनस्वातीजल करै न पाना ॥ ॥
गरजि तरजि पयविंदा रतमेहा ॥ तदपि बढ़त दिन प्रतिनयनेहा ॥
मिचक मल्लविन लखे तमारी ॥ तुरतजात है संपुटमारी ॥ ॥
मधुकर हम चाचिक सम अहईं ॥ विना श्याम के छुओर न चहईं
मानव कोबधिफिरिखनावे ॥ तबहूं मोहन मोहनलावे ॥ ॥ ॥
जो तुवकादि दुंदभी साजे ॥ सोऊ लाललाल कहिबाजे ॥ ॥
गाढ़ि देइ मृत्तिका है जामें ॥ तिछ फूल फलउचरे नामें ॥ ॥ ॥
मुये अंग की है यह रीती ॥ जीवत्त किमि छूटत है प्रीती ॥
कोली मधुर भली विधि हेरे ॥ कठिन लोग हैं मधुपुर केरे ॥
जिनकी संगति परि नंदलाला ॥ सीखत भयो योग कर हाला ॥
हमहूं को आयेबहु कावन ॥ फूंकन चहत सुमेरु उड़ावन ॥
मधुकर आपन योग दुरावो ॥ हम पूछें सो वर्नि सुनावो ॥
ब्रजमें कब ऐहैं बनवारी ॥ कबहरिहैं चूनरी हमारी ॥ ॥
कब दधि दान मांगि हैं रोकी ॥ हमहूं अबहट करबन कोकी
करिहैं रहस केलि फल पाई ॥ खैहैं माखन कबै चोराई ॥
कब बजाय मुरली मन लैहैं ॥ कब दुरि के हमरे घर ऐहैं ॥
जेहि सुखहित हम भइलु कमोड़ी ॥ सो सुख अब लूटत है चेरी
कौनि निसि कौन तपस्या भारी ॥ जेहि ते पाइसि पति गिरिधारी
कब्ब सब सुनब हमार लागी ॥ दीन्हें श्याम कूबरी त्यागी ॥
कहियो मधुप श्याम ते जाई ॥ कहां गई ब्रज की चतुराई ॥
कि है सनेह सयानप इकवा ॥ रहत न सुमति सयानप सुकवा
हम युन तिन कहं लिखत बिरागा ॥ आप परे चेरी के रागा ॥
अपना गुरू भये मैं योगी ॥ केहि प्रकार हम होई योगी ॥ ॥
जो गुरू ही निज भइन चीन्हा ॥ तिन शिष्यन को कब सुख दीन्हा
जो गुरु कुटम्ब जाल में बांधे ॥ सो शिषि के किमि काटे फांदे

जो गुरु काम क्रोध में जरई ॥ सो शिषि को कब शीतल करई ॥
जो गुरु है तृष्णा बस लोभी ॥ सो शिषि को केसि करै अछोभी ॥
जो गुरु है पाथर की नावा ॥ सो सिषि को कब पार न घावा ॥ ॥
जो गुरु को कछु पढ़ि नहिं आवे ॥ सो शिषि को केहि भांति पढ़ावे ॥
तेहि ते आपु दशा पर आवैं ॥ तब हम को लिखि योग पठावें ॥
जेहि ते कछु लागै उपदेशा ॥ करहिं सकल योगी कर भेषा ॥
जो जल जरन आप ही लागे ॥ सो तजि मीन कहां को भागे ॥
लखि गोपिन को प्रेम प्रमाना ॥ बिसरि गयो उद्धव को ज्ञाना ॥
करत भयो गुरु गोपिन केहां ॥ पाइनि एक अनन्य ब्रत तेहां ॥
रहि मास षट तिनके पासा ॥ देखत डोले कुञ्ज बिलासा ॥ ॥
प्रेम मधुवन की श्रोलि बहोरी ॥ बोले गोपिन ते कर जोरी ॥ ॥
तुम सब अहो प्रेम की खानी ॥ केहि बिधि हम उतकर्ष बखानी ॥
चातक मीन चकोर मृगाऊ ॥ धारण कीहिनि तुम्हार सुभाऊ ॥
हमते जबतब प्रीति तुम्हारी ॥ बरनत रहै मुदित बनवारी ॥
उद्धव हमतन कोटि बनाई ॥ करैं गोपिकन की सेव काई ॥
तबहूं कछु उद्धारन मानी ॥ ऐसी मम सेवा उन ठानी ॥ ॥
ज्ञान के मिसि तिन मोहिं पठावा ॥ भांई तजि हरि रूपहिं पावा ॥
अब करि कृपा देहु बर एहू ॥ चढ़े कहत पद लिन नव नेहू ॥
खग पशु बिटप लता तनु पाई ॥ जन्म जन्म ब्रज बसिये आई ॥
तुम्हरे चरण कमल की धूरी ॥ प्रापत होइ भाग ते भूरी ॥

दो० जो मैं कीन्ही ढीठता हरि को आय सुमानि ॥
करेहु क्षमा अपराध सो अनुग आपनो जानि ॥

चौ० उद्धव तुम जानत सुखदायक ॥ हम हैं कौन बड़ाई लायक ॥
लोक वेद तजि कर तव ठाना ॥ तेहि ते निन्दत सकल जहाना ॥
तुम्हहो तात सराहन योगा ॥ क्षमावन्त सब भांति बिसोगा ॥

हम अहीर बहु भाँतिन केरे ॥ कहे कठोर वचन बहु तेरे ॥
तुम्हरे मारवन तन कहु आवा ॥ धन्य २ जननी जिन जावा ॥
उद्धव कृपा श्याम की चाही ॥ निकट हु दूरि उभै भल आही ॥

दो० बन बरही बारिद बियत लखि चातक रविपद्म ॥
बिलखकुमुद शशिसुख लहत लखि सनेह निजसद्म ॥

चौ० बिन सनेह उप दूरि बिरोधी ॥ युग अँगुल श्रुतिपरत न देखी ॥
चिरं जीव रहैं दोउ भाई ॥ मधुपुर करहिं राम सुख पाई ॥
उद्धव हमरे दोउ कर लाहू ॥ मिले सो आनि भलहरि तजि आहू ॥
जो न मिलब तबहू भल जानो ॥ भयो सुयश तिहुँ लोक पिछानो ॥
कह हम जाति बरन कुल हीना ॥ श्रुति मर्याद सोउ तजि दीना ॥
कहें हरि श्रीपति पालक सारे ॥ सो सब विधि कहवावत हमरे ॥
इत उत फिरि २ ब्रज ही आवे ॥ जिमि परिवा छतुरी पर आवे ॥
सत्य बचन तव झूँठ न आही ॥ हरि निज जन बस सदा रहाही ॥
कह उद्धव अब आज्ञा दीजे ॥ तो हम गवन मधुपुरी कीजे ॥
तीनि दिवस कर आयसु भयऊ ॥ तेहि के बीति मास षट गयऊ ॥
हमरी सुधि न बिसारब देवी ॥ सब बिधि जानि आप नो सेवी ॥
बिकुरत बिरह सबन के जागा ॥ कीन्हिन बिदा सहित अनुरागा ॥
रथ चढ़ि चलि निज आश्रम आये ॥ समाचार यदुनन्दन पाये ॥
पठवत भये दूत यदुनाथा ॥ आये भवन तुरत तेहि साथा ॥
भेटे श्याम सखै मन लाई ॥ बूझत भे ब्रज की कुशलाई ॥
सुनि उद्धव सब बात प्रकासी ॥ तुम बिन दुखित रहत ब्रजवासी ॥
एक दिन आपो दरश दिखाई ॥ सुनत वचन बोले यदुराई ॥

गीतिकाछं० यदुनाथ बोले सुनहु उद्धव घोषवासी जे-
अहैं । तिन पास मैं तिन रहत हौं वे ने कुन्यारे नार हैं ॥ मम-
स्वास बेदन की चिता है गोपिकन के दुख कहा । सुनि हैं जे-

कहिहैं चरित तिनके नाशिहैं संकट महा ॥ जो कहौ रहन-
बियोग केहि हित सुनहु सोउ निका सहू । यक दिन गयो-
यक सखी घर हौं द्वार राखि सिदामहूं ॥ तहं आइ प्यारी
च हत प्रविशो सखा रोकत रिस उई । नहिं मिलहिं हरि श-
त वर्ष तोहिं तेहुं कही सोइ सोई भई ॥

सो० यद्यपि हौं तिन तीर । तदपि न देखत श्रापबस ॥
धरिहौं विविधि शरीर । करत चरित बहु भांति के ॥

दो० उद्धव गोपिन केर कछु कह्यो ज्ञान दृढ़ नेम ॥
पढ़ै सुनै रघुनाथ तौ बढ़ै इष्ट पद प्रेम ॥
प्रेम बिना पावै नहीं प्रीतम को दीदार ॥
तातें जन रघुनाथ तें करु उद्यापन सार ॥
प्रेम नवारी ऊपजै हिये न आवै राम ॥
प्रेम जगत रघुनाथ तब जब सुमिरै हरि नाम ॥

इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास-
राम सनेही कृत कृष्णायन गोपी उद्धव सम्बाद वर्णनो नाम नवमो ऽध्याय-

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुख दानि ॥
दशमस्कन्ध भागवत की अब कहौं कथा बखानि ॥

चौ० गये कृष्ण सुफलक सुत गेहा ॥ पूजा लहि कहि सहित सनेहा
चाचा तुम हस्तिनपुर जावो ॥ बोध देइ कुन्ती को आवो ॥
असमय परे पांडु सुत छोटे ॥ परबस परि सुख लहत न पोटे
चले पांडु घर आये सोई ॥ देखि मिली कुन्ती उठि रोई ॥
आसन देत भई अनुरागी ॥ पूछन लागि नैहर की लागी ॥ ॥
नीके हैं पितु मात हमारे ॥ भाभी भ्रात कृष्ण बल प्यारे ॥
करत कबहुं सुधि भाइनि केरी ॥ देत त्रास धृतराष्ट्र घनेरी ॥ ॥
सुनि बोले अक्रूर बिहारी ॥ सुखी सकल सुधि करत तिहारी

कहिनि कुशल फूफू से कहियो ॥ चिन्ता कछु चित में जनि गहियो
आवत हैं हम कछु दिन माहीं ॥ चली गयारि तिनकी तब नाहीं
पुनि धृतराष्ट्र पास चलि गयऊ ॥ सुहृद वचन जस बोलत भयऊ
पांडु मरे तुम गादी पाई ॥ पालहु सबहि एक सम भाई ॥
चलि अनीति अयशा जग पैहो ॥ देह तजे ध्रुव नरक सिधैहो ॥ ॥
करै जो पाप सुमति भ्रम पाई ॥ तेहि फल होत नाहि दुखदाई
अपर जे अहें कुटुम्बी सारे ॥ अन्त रहत हैं सबही न्यारे ॥ ॥
खलभल पाप धरत सिर अपने ॥ तेहिते पाप करेहु जनि सपने
इमि बहु कह्यो तासु हितबानी ॥ सुनि धृतराष्ट्र नाहि यस मानी
बोला गर्वे अंध बहु माना ॥ होई जो करिहैं भगवाना ॥ ॥ ॥

दो० यहि बिधि सुनि समुझाय पुनि पंचहु नव सुख हेरि ॥
बिदा भये धृतराष्ट्र ते आये मधुपुर फेरि ॥

चौ० समाचार यदुपतिहि सुनाये ॥ तेहि छिन अपर बिघन कछु आये
रथ चढ़ि उभै कंस की बामा ॥ मगधदेश आई पितु धामा ॥
बिबिध भांति ते रोदन कीन्हा ॥ जरासिंध सुनि धीरज दीन्हा
यदुन सहित सब हरि बल रामा ॥ पठवों कंस निकट तब नामा
अस कहि दल तेइस अक्षौनी ॥ लै कै चला प्रबल है होनी ॥
अक्षौनी द्वै भांति बखानी ॥ लघु दीरघ सोउ दीजे जानी ॥

लघु अक्षौहिणी कुर्मी छं०

यक इस सहस आठ सौ सत्तरि रथ होइ अहं जानौ ॥ तेत
नेहीं गजनाथ अश्व पति कोकाठे सहस पिछानौ ॥ एक
लाख नव सहस तीनि शत साठ पैदर जोई । जन रघुना
थ बिचारि कहत तब एक अक्षौहिणी होई ॥

दीर्घ अक्षौहिणी दो०

अयुत नाग तें अयुत रथ योधा लख दश लक्ष ॥

तुरंग कोटि छत्तिस कहल पर चरयह दिरघास॥

चौ॰ आइम धुपुरी लीन्हिसि घेरी॥ सुनि पहुँचे हीं बल तेहि बेरी
देखत ते कहन लागी कटु भाषा॥ बंध बधिक मुनि बचन सुनावा
तात सुनहु तुम नीति निधाना॥ हम सम क्षमावन्त नहिं आना
निज बहु बार कंस के टारे॥ अपने पाप गये पुनि मारे॥॥
पर अपकार किहे दुख भारी॥ खनत गाढ़ तेहि कूप लयारी॥
तेहि पर आपु चढ़े अति रोसी॥ हानि काँहि क कुलाभन दोसी

दो॰ कीन्हि कुनह बिन गुनह जिन ति मुख सुना न पाव॥
सहस्रबाहु सुरनाथ भृगु औ मैसुत नृगराव॥

चौ॰ तेहि ते सुपुर जाहु फिरि अब ते॥ बोला मूढ़ साधु भय कब ते
सूर सुमुख नहिं सुयश सुनावें॥ पुरुषारथ करि प्रगट देखावें॥
जाना काल निकट तब आवा॥ तानें बाध बिपरये पावा॥
कहहल धर यह सब कोइ जानै॥ लातक मनई बात नहिं मानै

कुंडलिया सुर तुष्ट है भक्ति ते द्विज तुष्ट लखि दान। सुहृद तुष्ट उपकार लखि खल तुष्ट पर हान॥ खल तुष्ट पर हान प्रीति ते तुष्ट नारी मेवा बस सुचि खसि साधु आदर बस भारी। नृप तुष्ट गुणगान कथन रिपुष्ट भुजबल अतुर। तेहि ते यहि पर गेपि समर युद्ध करि सूरे सुर॥

चौ॰ सुनत जरा सुत उठा रिसाई॥ डारहु मारि सैन कहे राई
चहुँ दिशि घेरि लिहिसि रिपु कैसे॥ रविहि धूम घन पावक जैसे
लागे चलन बिबिध हथियारा॥ शक्ति शूल असि बान कुठारा
इत उत भिरत गिरत कोइ लागे॥ कोइ भट भुवन सुवत को भागे
चढ़ी अटारिन पुरन्नर नारी॥ लखि शोच करें अति भारी
कोइ सूरा इमि बिचलाये योधा॥ पुनि दोउ बंधु करन में क्रोधा
रहा। मैं दरि लिसव सयन सोवाई॥ जरासंध कहँ दीन बचा॥
जेहि ते बहु मिलयावे पापी॥ बही रुधिर की सरित अपनापी

रथसुरेथ भुजमीन समाना॥ सिर कच्छप गज ग्राह प्रमाना॥
कच्छसे वार सम धनुक तरंगा॥ आयुध परे बिटप जनु भंगा॥
भंवर चर्म मनि कंकर भारी॥ प्रगटी सरि जल कृष्ण बिहारी॥
दै दै ताल योगिनी नाची॥ प्रथम मनकी परबीसी माची॥ ॥
एहप गीध गोमाय कलोलें॥ छांटत मूंड कपाली डोलें॥ ॥
डुमि दल दलि प्रभु मथुरहि आये॥ मागध सूत बिजै गुण गाये॥
बरषि सुमन सुर पुर नरनारी॥ बसु बलि करि आरती उतारी॥
मगधाधिप की लूटि जो पाई॥ सो सब यदुपति पास पठाई॥
नृप जो जाहिं दीन सो लयऊ॥ सुखिया सुख सम वहीं सो भयऊ॥
जरासिन्धु निज नगरहि आवा॥ दल बटोरि पुनि लरन सिधावा॥
दो॰ तेइस तेइस क्षोहनी लै लै एक इक बार॥
आवा चढ़ि बल कृष्ण सब करत भये संहार॥
चौ॰ यह यश काल यमन सुनि पावा॥ तीनि कोटि यमन लै धावा॥
तब बिसुकर्मा ते यदुराई॥ सागर बीच पुरी बनवाई॥ ॥ ॥
द्वादश योजन मधि हेम सलै॥ त्रिविधि बतास काल तिहुं चालै॥
चौहट हाट सुगंध निकिरिकी॥ लागे जहं तहं फाटक खिरकी॥
दामिनि सी पताक फहराहीं॥ जल थल बरनि जात सो नाहीं॥
बन उपबन बाटिका अनेका॥ रतन सुसर्व एक ते एका॥
सोवत यदु सब तहां पठाये॥ अपना राम यमन पह आये॥
कृष्ण अब देखिवसि निज आगे॥ काढ़ि खड्ग धावा प्रभु भागे
धौला गिरि कंदर में जाई॥ मुचुकुन्दहि पट दीन्ह ओढ़ाई॥
आपु रहे छिपि सो चलि आवा॥ पीताम्बर लखि चरण चलावा॥
दो॰ जो नहिं जानत जासु गुण सो शठ निंदत ताहि॥
सब जग पूजहि जो लहि जिमि स्वान देखि धरि खाहि॥
चौ॰ लागत लात खोलि दृग दयऊ॥ कान्ह नेम सुत तहिं जो सियऊ॥

सबा दीन तब यदुपति आई ॥ जटित बसन भूषण छबि छाई ॥
अद्भुत रूप निरखि नृप बोला ॥ नाथ अहो तुम कौन अमोला ॥
की देवन में कोइ होऊ ॥ की रबि अग्नि चन्द्रमा कोऊ ॥
पूजन के तुम योग गोसाईं ॥ मैं हौं निशिदिन तब शरनाई ॥
मोहि जगाइ जग कोइ प्रानी ॥ भयो हमार परम हित जानी ॥
कहैं प्रभु हे नृप प्राण पियारे ॥ जन्म कर्म मैं बहु बिस्तारे ॥ ॥
नाम अनन्तान संख्या कोई ॥ गनत थके बहु कविता सोई
भे रितु गति गनने की नाहीं ॥ कहत सुनत ऋषिमब तरि जाहीं
अब जन हित भंजन महि भारा ॥ भयों आइ बसुदेव कुमारा
कंस आदि बहु शत्रु निपात्ते ॥ यमनेमोहि लायो तेहि नाते ॥
रिपु मराइ पुनि तुम्है निहार्यो ॥ एक पन्थ है कारज सार्यो
अब बरु मागु रुचै जो तोहीं ॥ नाथ भक्ति दीजै निज मोहीं ॥
भै निद्रा बिषया सन करिकै ॥ बादि बयस खोई अव तरिकै ॥
तब प्रभु भजन भाव समुझाई ॥ पुनि बद्रीबन दीन पठाई ॥
कह नृप कौन रह्यो बड़ भागी ॥ बोले ब्यास सुवन अनुरागी ॥
नृप मुचकुन्द अवधके जानो ॥ पर उपकारी एकहि मानो ॥
कीन्हि देवनन केरि सहाई ॥ बहु दिन गये रहा कोइ नाई ॥
इन्द्र मुदित होय कह बर लीजे ॥ बोल्यो महिप मुक्ति मोहि दीजे
भूपति मोक्ष कहां हम पावै ॥ एतो हरि के पास रहावै ॥ ॥ ॥
तोपिकिरि नीद घनेरी देहू ॥ जो जगावै जो सुनि लेहू ॥ ॥ ॥
मुनि तिन एवमस्तु कहि दीन्हा ॥ तबते यहां शयन इन कीन्हा
दो० निद्रहि कह सुख सेज महि त्रषितहि कह घट सुद्ध ॥
कामिहि कस भय लाज जग क्षुधितहि कस बल बुद्धि ॥
चौ० सोवत काल यमन पग मारा ॥ तेहि अघ अधम भयो जरि छारा ॥
पुनि प्रभु गे मधुपुर मिलि दोऊ ॥ मारे मुसलमान सब सोऊ ॥

तेहि छिन जरासंध चढ़ि आवा ॥ रामकृष्ण सो दल लखि धावा
लै रंक छुक पुनि भागत भयऊ ॥ गोतम गिरि ऊपर चढ़ि गयऊ
गेरा योजन केर निहारी ॥ जरासिन्धु तब दीन्ह प्रजारी ॥ ॥
निकरि द्वारि कै गे दोउ भाई ॥ है गा भूधर भसम बनाई ॥ ॥
जरि गे जरासिंध अस जाना ॥ आवा बहुरि भवन हर्षाना ॥
इहां सकल यदुबंशिन काहा ॥ चही कीन हलधर कर ब्याहा
शहर अनरताली रैवत भूपा ॥ तासु सुता रेवती अनूपा ॥ ॥
ताके संग होत भा ब्याहू ॥ वेद बिधान सहित उतसाहू ॥ ॥

दो० संसकार जाकर जहां मिलत सो ताहि बिशेषि ॥
त्रेता की कन्या बरी द्वापर में बल देखि ॥

इति श्रीविश्रामसागर सकल शास्त्र ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासरामसने-
ही कृत कृष्णायन जरासिन्धु समर बर्णनो नाम दशमो ऽध्यायः २०॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
नीति सहित रुक्मिनि हरण हरि कृत कहत बखानि ॥

चौ० अब बिवाह रुकमिनि कर सुनहू ॥ सतत सुभय कृष्ण हरि गुनहू
कुण्डिनपुर भीषम नृप हेरे ॥ जनमी एक सुता तिन केरे ॥ ॥
रुकमिनि नाम ज्योतिषिन राखा ॥ सब गुण धाम श्यामपति भाखा
दिन दिन कन्या बर्द्धत कैसे ॥ शुकल पक्ष कर चन्दा जैसे ॥
खेलन संग सखिन के लागी ॥ इक दिन यक बोली अनुरागी
रुकमिनि ने नित खेल बिगारा ॥ लुकन कि ठौर करत उजियारा
सुनि हंसि यह गौनी सुखपाये ॥ तेहि छिन तहं नारद ऋषि आये
देखि रूप गुण मन में जाने ॥ कृष्णचन्द्र से आइ बखाने ॥
कुण्डिनपुर मह भीष्मकुमारी ॥ रुकमिनि है सो योग तुम्हारी
तब ते बसी हृदय पति सुरकी ॥ सुनहुँ कथा पुनि कुण्डिनपुर की
इक दिन सुयश याचक तब गावा ॥ कृष्ण केर भूपति सुनि पावा ॥

तब निज भवन गयो बतभयऊ ॥ सुनि रुकमिनि निज उर धरि लयऊ
करत भई संकल्प अभंगा ॥ बरिहौं मैं इनही के संगा ॥ ॥
इक दिन भीषम देखि बिचारी ॥ भई बिवाहन योग कुमारी
सब भाइनि ते पूछेसि बोली ॥ बरिये काहि रुकमिनी खोली
तब सब लोगन भूप गनाये ॥ नाना देशन के नहिं भाये ॥ ॥
तब छोटा बालक नृप केरा ॥ रुक्म सेन बोला यहि बेरा ॥
तासु रुकमिनी कृष्णहिं दीजै ॥ नथल नात बसुदेव ते कीजै
सुनि नृप सहित सकल पुर बासी ॥ बोले बात कही इन खासी
सेवक सुत बड़ छोटहु जानी ॥ छिल की बात कहे सो मानी ॥
आदि पुरुष जिनके घर जनमें ॥ मारेनि कंस असुर बहु बनमें
को मिलिहै इनते भल भाई ॥ सुनि बोला बड़ पुत्र रिसाई ॥
बोलहु बचन संभारि सुनीती ॥ जानत तुम न कृष्ण की रीती ॥
षोड़स बर्ष नन्द के राहा ॥ तब अहीर सब काहू काहा ॥ ॥
चोटी कामरि गाय चराई ॥ जानिहु तासु न जानी जाई ॥ ॥
कोऊ नन्द केर सुत गावै ॥ कोई यदु पति केर बतावै ॥ ॥
अब तक भेद न काहू पावा ॥ यह धौं कृष्ण कौन को जावा ॥
प्रभुता देसन लेश में नासी ॥ उग्रसेन की करत खवासी ॥ ॥

दो० तिनके संग बिवाह करि कहौ मिली फल कौन ॥
लायक ते कीन्हों चहौ बैर प्रीति अरु गौन ॥

चौ० लोभ से भल जहँ फल अधिकाई ॥ चोट ओस पियास न जाई
नगन न्हाय सो काह निचोवै ॥ जेहि धन नाहिं सो का कोउ खोवै
तेहि ते भूप चंदेली केरा ॥ है सिसुपाल प्रतापी हेरा ॥ ॥
जेहि घर धरम परा ते गादी ॥ आवत होत राज नहिं बादी ॥
ताको ब्याहि रुक्मिनी दीजै ॥ कृष्ण केर अब नाम न लीजै
सुनि नृप सहित लोग पछिताने ॥ रहे साधि चुप सकल डराने

मबल शत्रु नृप नीच गोसाईं ॥ इनते हठ कीन्हे न भलाई ॥
मूरख ते न कही हरिगाथा ॥ गिरि खोदे परे पाथर हाथा ॥
अस मन गुनि गवने कहि बीसा ॥ जबर कि राह कहन फुरशीसा
तब तहँ रुक्म बोलि बटु लीन्हा ॥ लगन सोधाइ पत्र पुनि दीन्हा
जाइ विप्र शिशुपालहि दीन्हा ॥ टीका बड़े भाव ते लीन्हा ॥

दो० यदपि कह्यो बहु भीष्म नृप चह्यो कृष्ण को देन ॥
तदपि न बूझ्यो बैर खल लालच ग्रसित सुखैन ॥

चौ० तब शिशुपाल व्याह हित फूली ॥ लोक वेद विधि करी समूली
दैके भेट बिदा करि ताही ॥ न्यौत्यो बड़े बड़े नृप चाही ॥ ॥
आइ विप्र भीषमै सुनावा ॥ बड़ी धूम ते आवत लावा ॥ ॥
वेगि व्याह की करहु तयारी ॥ तुरत गुनी जल लीलहँ कारी ॥
अति विचित्र माड़ो तनवावा ॥ मंगल गान सकल पुर छावा
एक सखी बोली मृदु बानी ॥ रुक्मिणि भई बड़ी तुम रानी ॥
अस सुनि कहत महीप कुमारी ॥ मनबच कर्म मम पति गिरधारी
क्षिप्रहि विप्र बोलि यक लीन्हा ॥ लिखि के पत्र तासु कर दीन्हा
दीजे जाइ कृष्ण के हाथा ॥ बहुरि उन्हे लायो निज साथा
तो मैं बड़ तुह्मार हित मानो ॥ मोरे दीन सखा पति जानो ॥
यह सुनि चला द्वारिके आवा ॥ कृष्णचंद्र को पत्र देखावा ॥
महाराज सुनि सुयश नवीना ॥ तबते मैं तुम को पति कीन्हा
मिलन केर आशा दृढ़ भावा ॥ वेदनहूँ याही विधि गावा ॥
जाकर प्रेम सत्य है जामें ॥ सो तेहि मिलत न संशय यामें ॥
अब मोहिं लेन चहत शिशुपाला ॥ जिमि मृग पति कर भाग शृगाला
तेहि ते सत्य बचन अविनाशी ॥ कीजे मोहि आपनी दासी ॥
जो नहि लेहो खबरि हमारी ॥ तो तन त्यागब सपथ तुम्हारी

दो० जिमि रघु रची सुरभि बन रची मृग पति भाग

तेहि प्रकार मोहिं रक्षिये प्रगत पाल प्रभु लेख ॥

चौ० ऐसे बचन बाँचि द्विज बानी ॥ आपा भरि नृप नैनन में बारी ॥
तुरत उभे ते आयसु लीन्हा ॥ रथ चढ़ि गवन सहित द्विज कीन्हा ॥
पहुँचे जब कुण्डिनपुर जाई ॥ उतरे भूपति की फुलवाई ॥

त्रिभंगी छं० देखीवन वारी जनु नृप नारी अपचल आगा-
री थिर नाहिं। परि रहत दिगम्बर पुष्प पती वर निरखि रूप
नर मोह लहैं ॥ लैहैं गर्भिन गभ दिन प्रति आभै अर्पत स-
वै पर्स धरै। परसत पनि पावै नदसि सोहावै सवति न भावै था-
नय धरै ॥ बोलहिं बहु बोला निज निज टोला धरि धरि चोला
विपुल सखी। श्यामहिं जनु मारी रही हैं क्वारी हर्षित प्यारी प्रेम लखी ॥

चौ० इहां रुक्मिणी करत विचारा ॥ अजहूं नहिं आये करतारा ॥
पुनि पुनि चढ़ि महलों पर जावै ॥ चहुं दिशि चितै विकल फिरि आवै ॥
इतने में द्विज आइ बखाना ॥ मनहुं लह्यो जल सालि मुखाना ॥
प्रमुदित ह्वै दीन्हो वर दानू ॥ जाहु सदा रहिहौ धन वानू ॥
बहुरि कह्यो हरि ते उर धारियो ॥ देवी पूजन में मोहिं हरियो ॥
याकेते आये बलदेऊ ॥ छप्पन कोटि यादव तेऊ ॥ ॥
सुनि मोहि पाल मिलन चलि आवा ॥ सो सब हाल रुक्म सुनि पावा ॥
बोला नृपन ऐसे दिन का ॥ कौने इहां बोलायो इन का ॥
जहँ जान नहं करत बखेरा ॥ भीष्म कहा कछु मोहिं न बेरा ॥
मिलने पहर नगर दोउ भाई ॥ आये लखि कहैं लोग लोगाई ॥
जस सुराग रूप तैसि सनबंधा ॥ जिमि द्युति सोने माहिं सुगंधा ॥
इनके दरश माहिं सुख जैसो ॥ मुक्तिहु माहिं न होई ऐसो ॥

दो० गौर श्याम सुखमा सदन बदन विलोचन चारु ॥
सहित बसन भूषण बसहु उरसि सहं जिमि हारु ॥

चौ० यहि विधि कहि सब दिन सुख पावा ॥ शिशुपाल हित बरु [illegible] जनावा ॥

अब सब खबर हम तेरहना ॥ आये हैं उपाधि के गहना ॥ ॥
तब शिशुपाल समूह सिपाही ॥ पठइ दिये रक्षा हित ताही ॥
दूत उतगई कनात तनाई ॥ देवी पूजन कुँवरि सिधाई ॥ ॥
संग सखी सोहैं बिधि बारा ॥ कीन्हे तन षोडश सिंगारा ॥

कुण्डलिया मंजन पट अंजन तिलक मुक कुण्डल ताम्बूल । बेसरि अँगिया किंकिणी कंकन पायल मूल ॥ कंकन पायलमूलसुनूपुर कुंकम बेनी । यह षोडश शृंगार त्रियनके औरहु मेनी ॥ मेनी मानहुं मदन केरि निकसी मद गंजन । गलि साथ रघुनाथ करतमुनि मुनि मन मज्जन ॥

रोला छं० कोइ पद्मिनि सुकुमार लाज युत सहित सुगंधा । कोइ चित्रिनि सम रूप चहत उपबोध प्रबंधा ॥ कोइ संखिनि पुन रोस दया बिन बेगि श्रचाले । कोइ हस्तिनि बड उदर पयोधर कमर कराले ॥ कोइ स्वकीय सुख दुःख माहिं निज नाथै जानै । कोइ पर किय पर पुरुष कर संग छिपि कै ठानै ॥ कोइ गुणा रूपा शक्त प्रेम बस कोइ रस छावै । कोइ सामान्या दर्व लोभ बस प्रीति बढावै ॥ संधि भयः कोइ अकुचजनाते योवन कोइ मुग्धा । कोइ ज्ञाता अज्ञान वपु षवय भोग निरुग्धा ॥ कोइ मध्या सामान्य काम पुन लाज जनावै । कोइ प्रौढा परबीन अधिक रस केलि सोहावै ॥ कोइ धीरहृत बिंग कोइ अधीर रिसानी । कोइ ज्येष्ठा पनि प्रीय कनिष्ठा कोइ कम चहती ॥ कोइ गुप्ता गनि उपलख कोई पर प्रीति लसिता । कोइ मुदिता सिक मिलन विदग्धा कोइ सुरसिता । कोइ अनुसयना दुरिबल जासु संकेत नमान्यो । कोइ कुलटा आतुन्न चिन चिरठौर लोभान्यो ॥ कोइ साधानास्व वस कीन नहिं निज गुनते । कोइ उत्का कोहि हेत न आयो पी-

तम सुनते ।। वासक सज्या कोइ कंत को आगम देखै। कोइ क-
लहंतरितादि निदरिकरि शोच बिशेखै ।। कोइ खंडिता।
अपर पास लखि पतिहि रिझावै । द्विजलब्धा कोइ जौन
पतिहि संकेत न पावै ।। कोइ अभिसारिनि आपु जाइ की
हरिहि हंकारै। प्रवत्स्य पतिका कोइ जासु पति गवन बिचारै
कोइ प्रोषित पतिका हि कंत परदेश म जाको। आगत पति-
का कोइ होइ उत कंठा ताको।। कोइ दूखिता दुखित होत ।
लखि बाधक जानै कोइ गरबित पति रूप अधिक कोइ जे
उर प्रमानै ।। आईं करत कलोल सकल देवी के पासा। पूज-
न कीन्ही कुंवरि कृष्ण की करि उर आसा ।।

दो॰ और सखी जे संगकी करि प्रणाम कहैं बात।।
यहि कन्या के कृष्ण पति देहु दयाकरि मात।।
पूजन करत न पतिहि जब पेख्यो महिपकुमारि।।
लगी करन अति शोच तब यहि बिधि हृदय बिचारि।।

कुण्डलिया बीसनबुड़ की मैं दई मुकता लग्यो न हाथ।
सागर के न दोष यह निज अभाग रघुनाथ। निज अभाग र-
घुनाथ नाथ खलु सबहि कुलावै। पातन लहैं करील ढील को ता-
की गावै ।। गावत सुनै न बधिर भानु दुति तमचर दीसन । रहत
गंध बिन बेनु मलय ढिग यहि बिधि बीसन मन चाहत है मि-
लन को मुख देखन को नैन ।। श्रवण चहत सुखप्रद सुन्यो श्या-
म सुन्दर के बैन श्याम सुंदर के बयन सैन बस होन न पावत। हाय दई
का करौं यतन एकौ न लखावत आवत एक प्रतीत रुपहि प्रभु प्रणत
पाल घन ।। शरणासमुझि सुधि लैहैं लैहैं पुनि लैहैं ठीक मन ।।

दो॰ यहि बिधि मन में ठीक दे चली चहूं दिशि हेरि।।
इतने में हरि आइ तहं परदा दीन्ह्यो गेरि ।।

कुंवरि कुंवर को रूप लखि विवश भे मुरछित भट सर्व ॥
कर गहि रथ बैठाय प्रभु चले गंजि नृप गर्व ॥
औरावर ते नहिं चलत छल बल बुद्धि उपाव ॥
टटकन टरै न गाज जिमि मेरवन ते मृगराव ॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत कृष्णायण रुक्मिनी हरण वर्णनो नाम एकादशोऽध्यायः ११

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखखानि ॥
नीति सहित रुकुमिन कथा हरि कृत कहत बखानि ॥

चौ० यहि बिधि जब श्रीकृष्ण मुरारी ॥ हरि चलि भे भीष्मक कुमारी
तब तो जरासंध अस कहई ॥ धृग धन्वी हम सब को अहई ॥
जिन के जियत गोपनृप वारी ॥ हरि लै गो जिमि शिव हरि नारी ।
यशी पुरुष कहँ अपयश होई ॥ मरन नीक भल जियत न सोई
अस कहि गहि आयुध सब दौरे ॥ धरु धरु मारु मारु कहि बौरे ।
इत हलधर यादौ लै धाये ॥ भिरि गये ठौर ठौर भट घाये ॥ ॥
पैदर ले पैदर हय ले हय ॥ रथिन ले रथि जूटे गय ते गय ।
छूटे चक्र बान बिकराला ॥ तोमर परशु शक्ति सम काला
मुद्गर शूल भुशुण्डि सोहाई ॥ पुनि कृपान ते मची लराई ।
कोटिन मुण्ड धरणि पर गिरहीं ॥ धरु २ कहि कबंध बहु फिरहीं
भूत प्रेत योगिनी कराला ॥ मुदित भये खग स्वान शृगाला
यहि बिधि सेन नृपन की नाशी ॥ शंख शब्द कीन्हो बल राशी

दो० जरासंध शिशुपाल दोउ गये तुरत ही भागि ॥
धीरज दै सठ रुक्म तब चढ़ा रुक्मिणी लागि ॥
जैसे पाँखी की दशा देखत पाँखी आन ॥
तद्यपि कूदत दीप में अस बिमोह बलवान ॥

चौ० आगे बढ़ि कृष्णहि ललकारा ॥ जान कहाँ करि विप्र हमारा

एहौ डहँकि कदन के बीचा ॥ जानहुँ आजु आपनी मीचा।
अस कहि निकट आइ प्रभु पाहीं ॥ मारेसि गदा माँझ उरमाहीं
पकरि कृष्ण शिर काटन लागे ॥ कह रुक्मिणी जोरि कर आगे
बंधु भीख मो कहँ प्रभु दीजे ॥ इतना कहा चेरि कर कीजे ॥
मोछ मुड़ाइ राखि पुनि चोटी ॥ पाछे बाँधि लिहिनि निज जोटी
कटक निधनि आये बलभाई ॥ सनेमान करि दीन छुड़ाई।
बोले हरिते उचित न कीन्हेंउ ॥ बंधु विरूप बिरचि दुख दीन्हेउ।
राजा सुत दुख पावा होई ॥ लघु मति हँसि कहब सब कोई।
बंधु कौ जो बध कर कामा ॥ तदपि नहतिये हित परिनामा
जो बहु लाभ कुसंगम होई ॥ तदपि न कीजे संगति सोई ॥
होइ धनी धन रहित जो कीजे ॥ तदपि नाहि लघु प्रकृति न लीजे
जोन होइ बल देन को दाना ॥ तदपि न तजिये सम सनमाना
घटे प्रीति जो मित्र ते कबहूँ ॥ मुख ते उघरि न जूठिय तबहूँ
जो निशि दिवस न हरि सिजिये ॥ तदपि न साँझ सबू बिसरैये
जो नर नारि होइ दोउ त्यागी ॥ तदपि रखिये जिमि तृण आगी
पर हित करत प्राण जो जाई ॥ तदपि न तजिये कबहुँ भलाई

दो० राति रोग रिपु अग्नि नृप करत तपोधन ब्याल ॥
जो ये होवें लघु तदपि सजग रहिय सब काल ॥
बनिक बाम बैरी बिकल बिसनी चुगुल अजान ॥
करैं कोटि सोहें तदपि इन बिश्वास न आन ॥
जो कामी नर कपिरा कहि करै आपनी निन्द ॥
तदपि अकार्थ न दीजिये विद्या बिंदरु जिन्द ॥
जो सुर भूसुर साधु की सधै न सेवा भाव ॥
तदपि न निन्दा कीजिये नाहि सुनिय करि चाव ॥
उत्तम विद्या नीच ते मिले जो दीन्हे मान ॥

तदपि तासु ते लीजिये सिर पर धरि आसान॥
जो कबहूं सत संग ते उदय होय वैराग॥
तदपि एकही बार कुल धर्म न कीजे त्याग॥
चौ० जो सब तीर्थन मिले करारी॥ तदपि न तजिये हरि पद वारी
जो कबहूं गुरु रहैं रिसाई॥ तदपि निहोरि चूक बक साई॥
जो धन हित विद्या लघु केरी॥ पढ़ि तद्यपि लीजे निज हेरी॥
जो सुचि दास कबहुं फिरि जाई॥ तदपि ताहि हू नर्म मनाई॥
जो अपने ते बने न नेकी॥ तदपि अपर को करत न छेकी
जो श्रुति शास्त्र मुखाग्र नहिये॥ पढ़त सुनत नित तद्यपि रहिये
जो अति कष्ट हु ते सत्संगा॥ मिले तदपि नित करिय अभंगा
सुरस सन्त कछु कहैं न यद्यपि॥ करिये आदर मान लखि तद्यपि
दो० कबि बुध गुरु तिय सुत सुहृद द्विज मरमीपरभाय॥
जो यह करें अनीति कछु तदपि लरहु दै जाय॥
चौ० पुनि रुक्मिणि ते गिरा उचारी॥ तजहु शोच निज बंश विचारी
छत्री कुल विधि अस निरमायो॥ अवनि खनि धन धाम लेआयो
भ्राते भ्रात हने करि कोहा॥ भूप कने अस पालक मोहा॥
सो गुण हममें एको नाहीं॥ सबकर हित चाहें मनमाहीं
हिनू अराते प्रिय अधिकाई॥ सलभ जरे नहिं दीप लगाई
बहुरि विवाह आठ विधि तेरे॥ धर्म शास्त्र में मुनिन निवेरे।
दो० ब्राह्म दैव परजापती आर्ष असुर गन्धर्व॥
राक्षस बहुरि पिशाच अब सुनहु ब्याह बिधि सर्व॥
कुकुभीछं० सालंकार दान कन्या को ब्रह्म कहावै सोय।
दान दक्षिणा में कन्या को देत दैव सो होय॥ तुम दोउ मि-
लि सब धर्म करो कहि देइ प्रजा पति जानो। लै द्वै धेनु दे-
त दुहिता जो सोई आर्ष पर मानो॥ सुन्न प्रसन्न की क-

न्यन को हरि बो सोइ पिशाचा। बेरै कुँवरि बधि बंधु सोरा-
क्षस नृपे परत यह राचा॥ है सकाम कन्या कर पकरै ब्याह
सो गंधर्व कहिये। असुर अनीत प्रीति नहिं पौरुष यह उत्त-
महि नचहिये॥
चौ॰ तेहिते हम क्षत्री के बालक। कीनि अनीतिन निज कुलचालक
सुनि बैदर्भी अति सुख पायो॥ मोह जनित विषाद बिसरायो
रुक्म लाज बस भवन न गयऊ। निज आसन ते बोलत भयऊ।
पहिलि प्रुरुष से बात जो कहिहै॥ कुत जिन मुखन देखा चहिहै
ताही ठौर नगर यक डारा॥ नाम भोज कटु ताकर धारा॥
सब जाती सन मानि बसाई॥ रह्यो तहां सुन नारि बोलाई
इत शिशुपाल कह्यो बिलखाई। अब हम जावन निज कुआई
हँसी की बात कही नहिं जाई॥ मूरुख चन्द बने इत आई॥
जरा संध कह भूपन तीरा। हानि लाभ रह ते हैं बीरा॥॥
हम नहिं प्रथमे इनते हारे॥ पुनि दोउ बंधु शैल पर जारे॥
तेहि ते तात तजहु गति मन की॥ दारु यो पितावत गति तन की
समुझि सो कबि सुख शोक न गहई। वर्त्तमान सम वर्तत रहई
मूरुख गई वस्तु को सोचें। द्रव्य पाय जेहि धर्म न रोचैं॥
मूरुख करी कृत्य को मानें॥ हित की बात न मन में आनें॥
मूरुख पंथ चलत में खावैं॥ मूरुख हँसत माहिं बत लावैं।
मूरुख सदते करैं बिवादा॥ खरचैं द्रव्य बित्त ते ज्यादा॥
मूरुख करै सबल ते बैरू॥ मूरुख बर राखैं अपन गेरू॥
मूरुख बिन मतलब कटु बोलैं॥ मूरुख पाप अपर के खोलैं
मूरुख द्वै बिच तीसर फांदें॥ मूरुख बात बाम की कांदें॥
मूरुख निरधनि के धन धरई॥ मूरुख रहु माहिं तिय बरई
मूरुख बहिनि सार संग भेजें॥ मूरुख जाइ पराई सेजे॥॥

मूरुख कर्म क्रिया ते हीना॥मूरुख चलै न पनि आधीना।
मूरुख मद माँगन में करई॥ मूरुख प्रीति जोरि पुनि लरई।
मूरुख निज मुख निज गुण गावै॥मूरुख बालक मुंह लगावै
मूरुख त्यागी है धन जोरै॥ मूरुख बिन मतलब फल तोरै।
मूरुख हरख लदेइ बिन जाने॥गहे चपलता गुरु अस्थाने
सबते बड़ मूरुख तेहि चीन्हा॥ नर तन जिन हरि भजन न कीन्हा
तेहि ते तुम मूरुख के लेखे॥ मिली न मिली वस्तु अपान मेखे
यहि बिधि सब भूपन समुझावा॥तब लजात निज भवन सिधावा
पहुंचे कृष्ण द्वारका तीरा॥सुनि के उग्र लई बहु भीरा॥
आगे लिहिनि धूम ते आई॥राजमहल लाये सुख पाई॥
कीन्ह विवाह वेद विधि लेरे॥लागे रहन सकल सुख मेरे॥
कह नृप रुक्मिणि पूर्व मझारी॥करी पुराय अस्सि को निकुमारी

दो० तीनि अंश ते जानु की लीन रहे औतार॥
वेदवती सोइ रुक्मिणी सत भामा महि भार॥

चौ० कृष्ण रुक्मिणी केर शृंगारू॥कहन शेष नहिं पावहि पारू
तोमें कि मैं कि कहौं मति थोरी॥थाय पपील कि सागर बोरी।
कछु दिन बादि रुक्मिणी जाला॥बालक नाम प्रद्युम्न पाला
शोभा सदन मदन अवतारा॥हरि प्रति बिंब मनहुं अपतिधारा

दो० सम्बर राजा यवन है हरि लैगा रिपु जानि॥
दीन्हिसि डारि समुद्र महं लील लीन मीनानि॥

चौ० धीमर मीन पकरि सोइ लीन्हा॥जाइ भेट संबर को दीन्हा
चीरत सुत निकसा महिपाला॥सौंपि दीन रति का तेहि काला
पाँच बरस का भा जब बारा॥भेद पाइ सबर को मारा॥ ॥
लैरति संग द्वार के आये॥मानहुं प्राण रुक्मिणी पाये॥
भा तब आनद सहित बिबाहू॥बसी सदन रति सह नरनाहू

दो॰ श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
कृष्णायन यह ऐन को पूर कीन्ह रघुनाथ॥

चौ॰ दुनिया ऐन कहों समुझाई॥ पन्द्रह से पचास चौपाई॥
दोहा एक से सताइस जानो॥ सोरठ चारि सोऊ पहिं चानो॥
रोला छन्द नवे हैं सोई॥ नवे कुण्डलिया यामें जोई॥
कुकुभा छन्द तीनि हैं भ्राता॥ तीनि गीतिका यामें ताता॥

दो॰ भुजङ्ग प्रयाता एक हैं एक सवैया छन्द॥
एक कबित चामर सु एक एक त्रिभंगी केंद॥

इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास राम सनेही कृत कृष्णायन रुक्मिणी मङ्गल प्रद्युम्न उत्पत्ति अरु रति सङ्ग बिबाह बर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः १२॥

इति कृष्णायन समाप्तः

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर

श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत रामायणबाल काण्ड प्रारम्भः

श्लोक

बपुनव जलद नीलं लोक लावण्य धामं॥
सुख निधि समशीलं सोहिता ङ्ग बिशालं॥
कर धनुशर धारी क्रीट कं पिङ्ग वस्त्रं ॥ ॥
बिधि हरि हर मीशं जान कीशं नमामि १॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखखानि॥
कहौं ब्रह्माण्ड पुराण मत रघुपति खण्ड बखानि।
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
बरणत सीता राम गुण सुख प्रद जनरघुनाथ॥
कथा अलौकिक कुशल सुनि करैं नमनसंदेह।
राम अनन्त अनन्त गुण कलहुं होइ गो एह ॥
हाथ जोरि बोले वचन मुनि शौनक अभिराम॥
केहि कारण अवतार जग लीन परात्पर राम ॥

सो॰ सुनि सुमन्त सुखपाइ॥ बोले मुनि हरिगुण सुनहु।
जो बरणे गिरि राइ ।गिरजा प्रति सोई कहब ॥

चौ॰ एक समय कैलाश मंझारी॥ बैठे रहे उमा त्रिपुरारी ॥ ॥
मन प्रसन्न शंकर कर जानी। बोली शिवा जोरि युग पानी।

राम सच्चिदानन्द निकेता॥ नर तन धरनि नाथ केहि हेता।
कीन्हिनि चरित कौन विधि केरे॥ सो सब नाथ कहौ हित मेरे।
ज्ञानहु तेपि श्रवरा सुखभारी॥ सनकादिक जहँ रमें विचारी।
मुनि शंकर बोले मृदुवानी॥ धन्य२तुम धन्य भवानी॥ ॥
राम चरित पूछ्यो सुखदाई॥ सो-अबसुनो कहौं मैं गाई॥
कौन चहत लीला हरि जबहीं॥ ठाट करत हैं कारण तबहीं।
जैसे बिशिष चलावै कोई॥ प्रथमें धरत निशाना सोई।
उभै देव जाने अभिमानी॥ अरि करि शरण भये भयमानी
तीसर हेतु मनुहि बरदाना॥ दीनरहनि प्रभु कृपा निधाना
तूर्य युद्ध जानु किहि देखावन॥ पंचम जग विराग उपजावन
षष्ठम मुनि जनसुमिरन कीन्हा॥ भक्त बसल लखि दर्शन दीन्हा
सप्तम देखि धरम की हानी॥ अष्टम प्रीति जनक की जानी
नवम बचन विधि के बहुतेरे॥ कीन्हे चहैं साँच नेहि तेरे॥
दशम दशानन सबै सताया॥ बधन हेत प्रगटे रघुराया॥
यहि विधि हेत हजारन जानौ॥ इतने ही हित जन्मन मानौ।
पुनि गिरिजा बोलीं करजोरी॥ राम कथा पर प्रीति न थोरी
नाथ कहौ केहि विधि जगदीशा॥ वपु धरि निधन कीन दशशीशा
केहि विधि भवन बसे सुखकारी॥ सुनि लागे तब कहन पुरारी

दो॰ इक रावरा जय विजयमें युगुल जलंधर श्राप॥
तीसर रावण शंभुगण चतुरथ भानु प्रताप॥

चौ॰ यहि विधि कल्प२ प्रति रवण॥ होत करत हरि वपुधरि पावन
जेहि कारण साकेत बिहारी॥ प्रगटे तासु कथा सुनु प्यारी।
नाम प्रताप सखा प्रभु केरा॥ महि अवतरयो आइ प्रभुप्रेरा
सत्य केतु नृप केकै देशा॥ तस्य भवन जनु उयउ दिनेशा
नाम प्रताप भानु बलधामा॥ कीन राज रिपु दल अभिरामा

एक बार बन गयो शिकारा॥ तहां कपट मुनि असुर निहारा
तिन्हें लोभ बस चीन्हेउ नाहीं॥ गुरु बनि किहि सिपल घरमाहीं
गोपल असन भई नभ बानी॥ विप्रन श्राप दीन दुख मानी।
राक्षस होउ कुटुम्ब समेता॥ ते जहँ भये सुनो सो हेता॥
ऋषि पुलस्त सुत ब्रह्मा केरे॥ रहे तप करत मेरु के नेरे॥
तहँ तृण बिन्दु राज ऋषि रहेऊ॥ कन्या तासु कान्ति कर कहेऊ
सखिन सहित सो दिन प्रति आवै॥ कलबल मुनि के निकट मचावै
सुमिरन ध्यान बनै नहिं गाईं॥ तब पुलस्ति अस कहा रिसाईं।
श्राप पास जो हमरे आवै॥ प्रमदा पुत्रवती है जावै॥॥
कन्या गई रहा अब धाना॥ जब तृण बिन्दु ध्यान करि जाना
तब सोइ सुता मुनिहिं बरि दयऊ॥ तेहि ते बिश्व श्रवा सुत भयऊ
बड़े भये पितु आयसु पाई॥ करन लाग तप कानन जाई

दो० भरद्वाज मुनि के रहै कन्या सुयशा नाम॥
बिश्व श्रवहि बर दीन तिन नेह सहित अभिराम॥

चौ० तिनके भये कुबेर बिधाता॥ कीन्हेउ ताहि यक्ष पति ताता
तदपि एल बिल दिन प्रति आई॥ करहिं मातु पितु की सेवकाई
यहि बिधि बीते बरष अठारा॥ तब कुबेर निज हृदय बिचारा
जो मम पिता अपर तिय बरहीं॥ तो इन हुन की सेवा करहीं।
मय दानव याच्यो अभिरामा॥ माया दीन सुबक्षा नामा॥॥
तिन के हित निज दूत पठावा॥ सुनि मय दानव बचन सुनावा
विप्रे भिक्षा मांगन चाही॥ हम निज सुता बिवाहब नाही
और बचन कहै कटु नाना॥ दूत धनद ते आइ बखाना॥
सुनि कुबेर निज सेन बटोरी॥ चढ़े तहां भइ मारु न थोरी॥
लाये तिन्हहि जीति यहि रीती॥ दीन्ही पितहि परम सह प्रीती
विविध भांति कीन्ही तिन सेवा॥ देखि प्रसन्न भये मुनि देवा।

सांझ समय सोवहिनि रतिदाना॥ यद्यपि मुनिवर दोषबखाना
भई गरभ संयुत यहि भावा॥ जन्म समय कर औसर आवा
उलका पात होन तब लागे॥ गर्जे मेघ समय बिन आगे॥
रवि शशि ग्रहन पवन चलि जोरा॥ दिनकी राति भई अतिघोरा
कांपि उठी महि देव डेराने॥ सब बिप्रन के पेट पिराने॥
दुखी मुदित मुनि भये मलीना॥ अग्नि तेज हत गत द्युति छीना
उदित केतु नभ जंम्बुक बोले॥ मुनिदल कोर लोकबिधि डोले
प्रथमें सुत देवी युग जाये। रावण कुम्भकरण कह गाये।
कहुं २क हत केकसी माता॥ सो जय विजय समय की जाता
भये सुबक्षा के सुत पाछे॥ त्रिजटा अग्र बिभीषन आछे
माया सुत जन्में कर लेखा॥ खर दूषण त्रिशिरा सुप नेखा॥
जब कछु भये सयाने नीचा॥ करैं उपद्रव कानन बीचा॥
खग मृग गकहु बनन न पोवें। तपत मुनिन कहँ जाइ सतावें

दो० मारन मोहन बस करन उच्चाटन अस्तम्भ।
यह कर परा सब भाँति के पढ़ें सदा कौतम्भ॥

चौ० निश्चर प्रथम सुरन रण भाने। बचे ते रहे पताल दुराने॥
तिन निजबंश अवनि पर जान्यो॥ छिपि कर आवा गर्ब्ब सुठान्यो
एक दिन दनुज पूज्य अस कहेऊ॥ करहु तपस्या जो सुख चहेऊ
अमर बिना जरा व्याग्र सरीखा॥ लागे तपन सकल मुनि सीखा
अरध अधि रवि दिशि हग दयऊ॥ दिव्य सहस दश संवत गयऊ
महा कठिन तप लखि बिधि आये॥ दश मुख खल लखि बाग बोलाये
बैठि गिरा तेहि जीह मंझारा॥ तब बिरंचि बरु मांगु उचारा।
बोला सुनि रावन हम नाहू॥ नरहरि तजि न मरें कर काहू
एव मस्तु कहि अज तहे आये॥ जहाँ बिभीषण ध्यान लगाये
सुजन जानि बोले अनुरागी॥ भावै सो लीजे बरु मांगी॥

कह्यो बिभीषण दोउ कर जोरी॥ हरि पद प्रीति बढ़ै प्रभु मोरी।
एवमस्तु कहि पुनि धरि धीरा॥ पहुंचे कुम्भकरण के तीरा।

दो० ताहि देखि बागीश निज मन में कीन बिचारि॥
जो यह नित भोजन करी नाशी सब संसार॥

सो० करि यहि भांति बिबेक। प्रेरि गिरा फेरी उपल॥
मांगि सिवा सर एक। जागहुं सोवहुं मास षट॥

चौ० कहि अस्यातु बहुरि बिधि डोले॥ खर दूषण त्रिशिरा ते बोले
तिन मांगा हम होइं बीरा॥ अन्त समय जाइ हरि तीरा॥
देखि सो त्रिजटा शीश नवावा॥ होइ प्रीति हरि पद बरु पावा
पुनि लंकिनी नवायो शीशा॥ बोले तब तेहिं ते बागीशा॥
शाखा मृग तुम का जब मारी॥ तब छूटी यह देह तुम्हारी।
दिव्य रूप धरि हरि पुर वासा॥ होई तब निश्चर कर नासा।
यहि बिधि बिधि सब का बर दीन्हा॥ पुनि निज लोक पयाना कीन्हा
दश मुख जो अजते बरु पावा॥ प्रभु दित हूँ सो द्कविहि सुनावा
कह्यो शुक्र हैं रे बड़ि भूला॥ नर बानर क्यों तज्यो समूला
बोला कौन चूक इन लागी॥ डेरे बृथा तृण दारुहि आगी।
अस कहि लाग करन ठकुराई॥ निश्चर निकर रहे तहं आई

दो० मय तनया मंदोदरी है माते संजात॥
बरि दीन्हीं तेहि रावरी समुझि सबल भलनात॥
नारि मनोहर पाइ के उठा अधिक हरषाइ॥
कुम्भकरण त्रिशिरादि पुनि ब्याहे पांचौ भाइ॥

चौ० सानंद निब्रक दंत कुमारी॥ सो भइ कुम्भकरन की नारी
गन्धर्वी के हरि मख जाई॥ सो वज्रभा बिभीषण पाई॥
रद भख के कन्या त्रै बरणी॥ खर दूषण त्रिशिरा की घरणी।
बनि तन सहित सु पांचौ भाई॥ करहिं भवन सुख शोक बिहाई

यक दिन दश मुख पितु पहँ गयऊ। तेहि क्षण धनपति आवत भयऊ॥
बैठे धनद पितहि सिर नाई। मुनि कीन्ह्यो आदर अधिकाई॥
कछुक काल रहि आयसु मांगी। गये कुबेर भवन अनुरागी॥
आदर अधिक पिता कृत देखी। रावण उर भा क्रोध बिशेखी॥
खलन केर यहँ लक्षण आही। पर प्रभुता लखि जरिबरि जाहीं॥
उठि ऋषि ढिग ते मन्दिर आवा। जननी ते वृत्तान्त सुनावा॥
तेहि तब कहा धनद येआही। कंचन की लंका में रहई॥
चारो तरफ सिंधु है जाके। अमर पुरी नहिं सम सरि ताके॥
सो लंका तव नाना केरी। बसे आपु मम पितहि खदेरी॥
सुनि दशमुख अति उठा रिसाई। दल लै लंक गयेउ रिसि जाई॥
प्रथम कुबेर युद्ध अति कीन्हा। पुनि है भ्रमित त्यागि गढ़ दीन्हा॥
भागत देखि निशाचर राई। लीन्हिसि पुष्पक यान छिनाई॥
लंक बिलोकि परम सुख मानी। कीन्हीं तहँ रावन रज धानी॥
यथा योग्य पुनि निश्चर नाहू। दीन्ह भवन बांटि सब काहू॥
तब कुबेर निज कुटुंब समेता। अलका पुरी बसाइ सचेता॥
आपु गये सुर पति के तीरा। सकल बिवस्था कही अधीरा॥
सुनि सुरेश सब देव बोलाये। हनि निशान लंकहि चढ़ि आये॥
दश मुख लै निकसा कटकाई। होइ इन्द्र ते लगी लराई॥
अस्त्र शस्त्र छूटें बिधि नाना। अगिणित असुर होंइ बिनशाना॥
बासव कोपि बज्र यक मारा। गिरा मूर्छि तब अवनि मँझारा॥
निज गज ते तनु मर्दन लागेयो। मानहुँ भ्रमति जानि अनुरागेयो॥
कुंभ करण तब भिरयो प्रचारी। ब्याकुल भये अदिति सुत भारी॥
रबि सुत सेन बिचलनि जानी। झपटि दंड मारयो उर तानी॥
राक्षस अनुज दंड गहि लयऊ। सहजे निज मुख मेलत भयऊ॥
रवि उदर शठ सोवन लागा। षट महिना बीते पुनि जागा॥

दो॰ भयो तासु उर दाह तब उगिलि दिहिसि यमदराड॥
नमकि लीन महिषेश पुनि मारेहु दराड प्रचराड॥

चौ॰ लागत सिर तेहि पीर न ब्यापी। भयो नींद बस मुनि खल पापी॥
तब हरि हने दराड अधिकाई। सोवत मो अधिक कछु सच्चु पाई॥
मुरछति तब रावरा जागा। पुनि देवन सें जूझन लागा॥
नख भुज दराड धनुष सर लीन्हे। मारि बिबुध सब ब्याकुल कीन्हे॥
लखि दिग्गज चिक्करि दिग आये। धनुष बान सब काटि बहाये॥
गहिसि तिन्हें तब भुजा पसारी। मारे दुरदन दशन प्रचारी॥
दश मुख के उर लगा महिं कैसे। शिला मांक बिनफर सर जैसे॥
लखि रावरा तन की कठिनाई। तब सब दिग्गज चले पराई॥
धनद इन्द्र तब गे बिधि पासा। शीस नाइ सब हाल प्रकासा॥
कह बिरंचि सुनु शक्र सुजाना। रावरा है तप बल बलवाना॥
तेहि ते तुम जनि करहु लराई। गिरि खोहन मा जाहु पराई॥
सुरन सहित सुमिरहु करतारा। बिन हरि को दुख मेटनहारा॥
स्रष्टा बचन सुनत मन माने। देवन तें तब आइ बखाने॥
सीख पुरंदर की लहि काना। सब हुन गिरि बन कीन्ह पयाना॥
जाय दशानन सैन समेता। मो धोसि देवन केर निकेता॥
जो सुर पुर धर मारन पावा। तिन्हें पकरि निज लंकहि आवा॥
रावरा लंकहि गा सुनि काना। बसे अमर पुनि निज अस्थाना॥
सुर पुर बिबुध बसे सुनि पावें। तब खल दल लै आतुर धावें॥
रहैं सजग जब आवत जानें। भागि जाहिं सुर समर न ठानें॥
एक दिवस अहमिति अधिकाई। सत दीप में पहुंचा जाई॥

दो॰ युवतिन ते बोला बलकि कहां गये सुरबंक॥
तिन्हें जीति संग्राम में तुम्हें जाहुं लै लंक॥

सो॰ सुनि एक जठर रिसाइ। पकरि पछारि उछारि भ्रम॥

दीन्हिसि सिंधु बहाइ। है अचेत निकसा सुकल॥
चौ० पुनिधरि धीर ठोंकि भुजबीशा। बलि ढिग जाय नवा दशशीशा॥
वैरोचन सुत आदर दयऊ। कुशल बूझि तब बोलत भयऊ॥
तव प्रसाद सब आनंद होई। सुर सन्मुख होइ सकत न कोई॥
तुमहूं निज रिपुहिं गहि लीजे। चलि महि लोक राज निज कीजै॥
कह बलि कान ककसिप के मंडन। पहिरि लेहु तुम सुत दुख खंडन॥
लाग उठावन उठा न कोई। याही पौरुष ते जय होई॥
जिन ये अलसम अंग न धारे। ते भट ये एक छिन मा मारे॥
तेहि ते भवन जाहु ले थाना। चला तुरत मन माहिं लजाना॥
रावन दीरघ जान अभिमानी। लीन धरा दुसि सुनिके वानी॥
मारत लात जात गरि आवत। निज द्वार फिरैं देखावत॥
दीन देखि प्रभु दीन छुड़ाई। पंपा पुर तब गरजा आई॥
प्रथमे बालि बहुत समुझावा। सुनेसि न तब गहि बगल दबावा॥
संध्या करि धर बाँधिसि आनी। छोरि दीन लखि तारा रानी॥
तब हरि पुर खरातट गयऊ। सहस बाहु तहँ क्रीड़त रहेऊ॥
जल अस्थंभ किहिसि तेहि जाना। पकरि पाश है शाले आना॥
शिरनि दीप धरि नृत्य करावा। सुनि पुलस्ति मुनि जाय छुड़ावा॥
लज्जित है कुल गुरु ढिग गयऊ। निज बिरतांत सुनावत भयऊ॥
कह कबि नर हरि दिहेउ बराई। तेहि ते तुम बर बिजय न पाई॥
तासु शोच चित धरहु न ताता। मैं जो कहौं करहु सो बाता॥
अब तुम निज उर शिव पद धरहू। जप तप जाल माल सब करहू॥
अभिमत बरु शीकर ते लीजे। विश्व सुबस करि पुनि सुख कीजे॥
सुनि तुरतै गा सिंधु समीपा। लाग करन तप दनुज महीपा॥
बीस सहस्र वर्ष तप कीन्हा। साल यज्ञ में पुनि मन दीन्हा॥
बरष पांच मन निज कर लीचा। हुते शीश पावक के बीचा॥

यहि विधि मख कृत देखि पुरारी। कहि निमागुं बर रुचि अनुहारी
सुनि बानी बोला दश भाला॥ अजर अमर मोहिं करहु कृपाला
कह शंकर सुनु बचन हमारे॥ बिधि के अंक टरहिं नहिं टारे।
तेहि ते जो तप कीन्हेउ भारी॥ तुव तन बल होई अधिकारी
शीस समर्पि दिहेउ तुम मोहीं॥ एक के कोटि देव मैं तोहीं।
शिव बर अचल पाइ मन भावा॥ हरष सहित निज मन्दिर आवा
हरि गीतिका छं॰ आवा भवन निज कटक साजि सुरेश पर धावत भयो। गय भागि हरि बैकुंठ तजि लखि छीर दधि तलि छिग गयो॥ सोइ पहिरि भूषण सकल तन मन मारि कपि पति पुर ढर्यो। मिलि बालि जोरी मित्रता सुनि सहस भुज ह्वै सोइ कर्यो॥

सो॰ अमर नाग नर यक्ष। गंधर्व किन्नर बर सुता॥
जीति बरसि पर तक्ष। बचैन लागी हाथ जे॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत रावणोत्पत्ति अरु युद्ध विषे जय पराजय वर्णनो नाम प्रथमो ऽध्यायः १॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं बृहद सम्मत कछुक कौशिल काव्य बखानि॥

चौ॰ यहि विधि रावण बिगत बियोगा॥ करै लाग सुर दुर्लभ भोगा॥
फल भक्षै अरु मदिरा पावै॥ सन्तत सुर मुनि मनुज दुखावै
मय जेहि पति कृत रुचै न लेशा॥ जब तब करै नीति उपदेशा
सो शिष दशकंधै नहि भावै॥ नीच नीच ही कर्म सोहावै॥
एक दिवस नारद तहँ आये॥ प्रथमै दश मुख सभा सिधाये
दण्ड कीय ताकी रुचि गाई॥ पुनि मय जाधर गे ऋषिराई
करि प्रणाम सब बिधि सनमानी॥ आसन दै बोली मृदु बानी

देव देखि मोहिं निज पति करनी ॥ सेवो होत जात नहिं बरनी
ताकर होइ कौन हवाला ॥ त्रिकालज्ञ पुनि कहें कृपाला
बोले मुनि तप बल बिबुधारी ॥ करत और करिहैं सुखकारी
पुनि सुर मुनि हित त्रिभुवन राई ॥ सूर्य बंश औतरिहैं आई ।
पितु निदेश करिहैं बन पावन ॥ तिन की रवनि हरी तब रावन
लंकहि जब जगदम्बा आई ॥ तूल सरिस कपि लंक जराई
सेतु बांधि ऐहैं प्रभु पारा ॥ कुटुम्ब सहित करिहैं संहारा ॥
होब सुखी सुर विप्र समाजू ॥ करिहैं अभय विभीषण राजू
अस कहि कुंभकरण हिंग गयऊ ॥ सुनि भय आतुर अति दुख भयऊ
करि विचार मन राखिसि गोई ॥ हरि इच्छा होइ सो होई ॥
कुम्भकरण तेहि औसर जागा ॥ मुनिहिं देखि उठि चरणन लागा
कछुहीं गुण अखित ताहि सुनाये ॥ पुनि मुनिवर विधि लोक सिधाये ।
कुम्भकरण पुनि सोवत भयऊ ॥ यहि विधि कछुक काल चलि गयऊ
विपुल पुत्र भे रावण केरे ॥ सब विद्या बल बुद्धि घनेरे ॥
बारिद नाद जेठ सुत ताका ॥ प्रथम जासु सुभटन महं साका
सो जब बीस अब्द करि भयऊ ॥ तब तप करन हेत बन गयऊ
बरस सहस्र किहिसि तप भारी ॥ आद्य शक्ति तब गिरा उचारी
मांगु तात बर निज मन भावा ॥ मेघनाद अस बचन सुनावा
यान लोप सब साज समेता ॥ देहु एक मोहिं कृपानिकेता
जेहि पर चढ़ि करि मैं मैदाना ॥ जीतहुं सकल बीर बलवाना
सुनि स्यन्दन तब दीन्हो देवी ॥ बोली बचन जानि निज सेवी
यहि रथ का तुम धरेयो छिपाई ॥ अति रण कठिन परै जब आई

दो॰ तब यहि पर आरूढ़ है जायहु व्योम मंझार ।
सुगुल जाम करि युद्ध नहं जीतिहो सुभट अपार ।
जो त्यागी द्वादश बरष नींद नारि अरु अन्न ।

सो सुत मारी तोहि जग अपर न मारी जन्न ॥
चौ०सुनि शिर नाइ मुदित गृह आवा॥ ग्रथ दूरी धरि पुनि बनहि सिधावा
तप करि वर लीन्हि सि शिवतेरे॥ समर समय भय होय न मेरे ॥
एव मस्तु कहिगे गिरिराई ॥ पुनि आवा गृह शोच दिहाई ॥
एक दिवस लै सुभट अपारा॥ सुर पति कंवल ठनि सि सिकारा
सुनि बासव अति बहुत रिसाना॥ चढ़ि ऐरावत कीन पयाना।
मेघनाद लखि चाप चढ़ाई ॥ मारे सर गजके बहु घाई ॥
लागत सर बिद्रुम करि क्रोधा॥ धावा पटल मेरे तहँ योधा
पुनि गज झपटि धरनि तेहि गयऊ॥ बारिद नाद तुराइ गहि लयऊ
सुरपति मारे बज्र घनेरे ॥ लागत मनहुँ कुसुम करि केरे।
नाग सूँडि तेहि छांड़ी नाहीं॥ लावा गहि लंकहि पितु पाहीं
देखि पराक्रम निज सुत केरा॥ दशमुख के मुख भयो घनेरा
बोलि सकल बाजन बजवाये॥ उत्सव करि बहु रत्न लुटाये।
लंकहि गहरि बांधि सानै आना॥ आये जहँ रावण बलवाना
हंसा रूढ़ बिधातहि देखी॥ दशमुख उर भा हर्ष बिशेषी
पुत्र सहित उठि नाया माथा॥ दर्शन दै मोहिं कियो सनाथा
अबसो कहो आयो जेहि हेता॥ तब बोले अज कृपा निकेता
बारिद नाद धन्य बल धामा॥ अबते इंद्रजीत भा नामा ॥
शक्रहि देउ अमर पुर जाई ॥ अब तुमते नहिं करी लराई।
ब्रह्म वचन सुनि कह्यो सुरारी॥ बचन तुम्हार सके को टारी।
कहिसि जाउ सुरपति निज गेहू॥ प्रभु प्रसाद कछु पुत्रहि देहू।
तब विधि वारा शक्ति एक दयेऊ॥ निरफल होव न अस कहि गयऊ
सुनि घननाद बहुत हरषाना॥ नाग लोक बत किहिसि पयाना
जहँ बासुकी तहां चलि गयऊ॥ देखि नगर अति गर्जत भयऊ
सुनि धुनि अहि पति ब्याल बंदारी॥ आइ घेरि लीन्हिनि चहुंवोरी

दोउ दिशि ते शर छूटन लागे ॥ भीजे सकल रुधिर ते बागे।
चौदह दिन नहिं भई लराई ॥ तब सब पन्नग गये पराई ॥
रहि अकेले अहिपति जाना ॥ गहिसि झपटि लघुदाम समाना
तुरतहि निज लंकहि लेगयऊ ॥ रावण कहँ दशावन भयऊ
पुनि लावा निज मंदिर बीचा ॥ बाँधेसि सेज सिरने नीचा ॥
वासुकि उर बहु पीर अपारा ॥ तब फनीश अस वचन उचारा
दंड चहौ सो हमसे लीजे ॥ जीवत मोहिं छाँड़ि अब दीजे
कह धन नाद सुनहुँ अहिनाहू ॥ कन्या दंड देहु घर जाहू ॥ ॥
उरग राज तेहि जानि प्रचंडा ॥ देन कही निज दुहिता दंडा।
सुनि घन नाद छाँड़ि तब दयऊ ॥ हरष वासुकी के बहु भयऊ।
ले आये निज लोकहि ताही ॥ दीनि सुता चनि सुता विवाही
अति सुन्दर घरनी जब पाई ॥ आवा तब लंकहि हरषाई।
मात पिता पद शीस नवावा ॥ पुनि पत्नी युत निज गृह आवा
लाग करन सुख शोच बिहाई ॥ अपर सुनो अब ताकर भाई।
अहै कुमार सघन बन गयऊ ॥ महा कठिन तप साधन भयऊ
सहस वर्ष बीते हर आये ॥ माँगु तात बर वचन सुनाये ॥
तब तेहि कहा सुनहुँ भगवाना ॥ देहु मोहिं एक तीक्षण बाना
जेहि ते रण रिपु जीतहुँ भारी ॥ दै कर सर अस कह्यो पुरारी
यहि बिशिखेले घर सुत जाहू ॥ कहि यक तजि जितिहौ सबकाहू
सुनि समाद निज मंदिर आवा ॥ तेहि क्षण महोदरि सुत पावा
बीस व्याल युत सुनि विबुधारी ॥ रावण योग न मन सि विचारी
स्वाना नन ते कहेउ बोलाई ॥ आवहु याहि गाड़ि कहुँ जाई
दूत दाबि नैऋत्य सिधावा ॥ पृथ्वी खोदि तोपि तर आवा
रघुपति चरित करन हित आंग ॥ मरा न सो बालक तेहि लागे
खाइसि खनि माटी एक मासा ॥ पुनि गा निकरी नीरनिधि पासा

तेहि लखि बहु जननि अनुरागी। भवन लाइ निज पालन लागी॥
एक दिन तहाँ शुक्र चलि आये। बोले पुत्र कहाँ यह पाये॥
छाया ग्रहनि कह्यो तब गाई। जेहि बिधि उदधि नीर ते आई॥
हनुज पूज्य पुनि बचन उचारा। यह है रावण केर कुमारा॥
आदिहि ते सब चरित सुनाये। अहि रावण धरि नाम सिधाये॥
निज उतपत्ति सुनी तेहिं जबहीं। कूदि परा सागर महँ तबहीं॥
निकसा तुरत बिलल महँ जाई। तहाँ रहै अहि पुरी सोहाई॥
सत्तरि योजन बसत ललामा। चामीकर के अति सुठि धामा॥
दर्वीकर तहँ रहै भुवारा। सो बासुकी केर सुत मारा॥
तासु पुरी लखि कौतुक नाना। पुनि गा जहँ नित होत पुराना॥
तप प्रभाव तहँ सुनि अधिकाई। सपदि बिपिनि पहुँचा हरषाई॥
बन में लखी नदी एक बहई। कामदना देवी तहँ रहई॥
सुथल समुझि तहँ ध्यान लगावा। संवत चौदा सहस बितावा॥
सब बिधि देखि समाधि अडोली। बरं ब्रूहि तब देवी बोली॥
इष्ट बचन सुनि बिबिधि कर जोरी। माँगेसि बर करि बिनय बहोरी॥
अमरन ते अधिकी सुख करहूँ। जीतहुँ तेहि जेहि के संग लरहूँ॥

दो० शेष महेश दिनेश सुर ईश अजीश अनन्त॥
मरौं न काहू हाथ मैं होउँ निशाचर कन्त॥

चौ० पितहि कीन्ह अपमान हमारा। सोऊ माहिं याँचे एक बारा॥
सुनि देवी बोली सुनु ताता। करि हो तुम बहु बिधि सुख गाता॥
त्रेता शेष समय दश शीशा। याची तोहिं जोरि भुज बीशा॥
मारी तुम्हैं न कोउ जग माहीं। कपि एक मम बाचा बस नाहीं॥
तेहि प्रभु ते जनि कहिउ कुचाली। तो तू अजर अमर कहि चाली॥
रहन लाग तहँ दनुज कुमारा। असा तान खग मृग करि अहारा॥
यहि बिधि बरष पाँच शत बीती। तब खल करन लाग अनीती॥

विविधि भेष धरि यहि पुर जाई ॥ अज गज हय खर डारहि खाई
एक दिवस दर्वी कर राजा ॥ धरन गये तेहि सहित समाजा ।
यहि रावण करि कठिन लराई ॥ दीन्हे सकल नाग चिचलाई ।
तब दर्विक अनन्त पहँ गयऊ ॥ सब वृत्तान्त सुनावत भयऊ ।
सुनि बोले करि शेष बिचारा ॥ यहि रावण तप बल अधिकारा
तेहि ते नहिं ऐहो दरि आई ॥ कन्या दै मिलि रहो जाई ॥
तब दर्विक बोल वावा माही ॥ दीन्ही विधिवत सुता बिवाही
कुन्दनि नाम पाइ वर नारी ॥ हस्तिनते तब गिरा उचारी ॥
अब सब होउ विगत संदेहू ॥ करिहों मैं कानन महँ गेहू ।
अस कहि कामदना हिय आवा ॥ योजन नव कर नगर बसावा
असुरन सहित रहै तेहि माहीं ॥ करन लाग सुख सांगिन जाही
इन्हं चरित जवन में गावा ॥ आदि रमायन में सो पावा ।
जो रिपु कर प्रभाव कहै कोई ॥ सो तेहि घातक कर यश होई
तेहि ते राम लषण हनुमत का ॥ बरन्यों बीजन असुरन कथा
यहि विधि सुत दशकंधर केरे ॥ भये भूरि रिपु देवन केरे ॥
जो सब तिन के चरित सुनावों ॥ बाढ़े कथा पार नहिं पावों ॥
औरों निकर निशाचर वीरा ॥ मेघनाद आदिक रण धीरा ।
कुरु मुख खर मुख करि बानारा ॥ जंबुय भाल कुमुद कर वादा ।
कुलिस दन्त स्वाना नन पापी ॥ अधम केतु सूकर मुख दापी
कुम्भनि कुम्भ अकम्पन सूरा ॥ केस प्रकेस महिष मख क्रूरा
कूट प्रहस्त समान न रोषी ॥ तारा बरवत अस्त्र भष दोषी
खर दूषण त्रिशिरा मति अंधा ॥ वक बिराध रूपनि काय कबंधा
काल नेम सुबाहु मारीचा ॥ उर्ध्व केश मंजारा नीचा ॥
धूम्र केतु लवना सुर सारे ॥ एक एक जग जीतन हारे ।
इन सब के संयुत दशभाला ॥ कीरे लङ्क बसि राज बिहाला

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम
सनेही कृत मेघनाद अहिरावण विजय वर्णनो नाम द्वितीयो ऽध्यायः २।।

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि।।
वृहद रमायण कहौं कछु कौशल चरित बखानि।।

चौ० एक बार संग लै कटकाई।। विश्व विजय हित चला बजाई
फिरि आवा तीनों पुर माहीं ।। सन्मुख समर कीन केहु नाहीं ।।
तब रावण मन कीन गुमाना ।। हम सम सुभट न जग में आना
तब सब योधा लिहिसि बोलाई।। आदर करि निज ढिग बैठाई।
त्रिभुवन भेद लेन के हेता ।। बाटन लाग्यो देश निकेता ।।
निखर्व अर्व पचास समेता ।। काश्मीर पठवा खर केता ।।
सोरठ देश दशानन गयऊ ।। नव्वे अर्व असुर संग दयऊ।
मूक देश करनाटक दीन्हा ।। खर्व सवाउ असुर संग कीन्हा
मंजारा मालवे पठावा ।। उभै अर्व तम चर लै धावा ।। ।।
वक वकच निशिचर रण धीरा।। खर्व अढ़ाई संग लै बीरा।।
मारवाड़ कर कानन बीचा ।। आय रहा अधमा धम नीचा।
भेषा सन भट लै दश अर्वा।। चला कलिङ्ग देश सह गर्वा।
गेरा अर्व असुर लै तारा ।। बङ्ग देश कहं मुदित सिधारा
बीस महस्र असंख्य भरव लयऊ।। अकरा मृत्तिका देशहिं गयऊ
अर्व ऊर्द्ध कच नर भख पाई।। मगह देश आवा हरषाई।।
चौदा अर्व खुजें नरव पाये ।। मुख बिख लै गुज्ज रात सिधाये
असित कोटि षोड़श खल लीन्हो।। आरब देश पयाना कीन्हो।
अयुत कोटि भट लै मारीचा।। संग सुबाहु ताड़का नीचा।।
गाधि पुरी ढिग कानन भारी।। रहे आय तहं खल अघकारी
लख अठारह सहस छियासी।। लवना सुर लै खल बल रासी
घन बन कोलपुरी के पासा ।। हर्ष सहित तहं कीन्हेंा वासा

मनु सहस्त्र ले भट बलवाना ॥ दण्डक बन ढूंढ कीन पयाना

दो० प्रथमे खरदूषन उभे तीसर त्रिशिरा बीर ॥
चौथ बिराध कबंध कहि पंचम सबसाधीर॥

चौ० याल शत योजन बन बिलगाई ॥ रहे कटक ले पाँचों आई।
यहि बिधि सकल देश दशशीशा॥ दीन्हें बाँटि अधम रजनीशा।
जहँ तहँ बिबिधि भेष धरि चरहीं॥ हिंसा करत न नेकहु डरहीं
कोनिउ बात कतहुँ लखि पावें॥ तुरत आइ रावणे सुनावें।
भुजबल बिश्व स्ववस करि मारवा॥ सुभट स्वतंत्र न एकहु राखा
मराड लोक पति पाय प्रकाशा॥ कीन्हिसि सकल देव निज दासा
आयसु जाहि दिहिसि करि जोई।सन्तत सभय भजे तेहि सोई
साहर वेद बिरंचि सुनावे ॥ दरशन देन पुरोतक आवें ॥
यम प्रतिहार पाक भखकरई॥ सक्रा पयद छत्र शशि धरई
झारू दार पवन बल रासी ॥ महा मृत्यु धोवत पग दासी
बरुण कुबेर नाग नर देवा ॥ आइ करें सब यहि बिधि सेवा
एक बार कैलाशै गयऊ ॥ सुमन समान सुकर धरि लयऊ
मनहुँ जोखि भुजबल थल राखी॥ आवा भवन गवन अभिलाखी
यहि प्रकार बीते बहु काला ॥ एक दिवस कर सुनहु हवाला
घननादादि रहे जे बीरा ॥ तिन्हें बोलि बोला रण धीरा॥
सुनो रहे सुर शत्रु हमारे ॥ ते तो भे सब बिबस बिचारे ॥ ॥
बिष्णु बिबुध दिशि बारक बारा॥ आये तहँ मैं मुष्टिक मारा।
शत योजन पर गरुड़ समेता ॥ गिरे जाइ फिरि फिरे न रेता
सुख सहाय बिन सन्मुख तेऊ ॥ कब तक रहि हैं दुरे दुरेऊ।
अब एक बचा रहत भगवाना॥ जाहि जपत मुनि सन्त सुजाना
सोन परत कहुं दृष्टि हमारी॥ तेहि जीतन हित बात बिचारी
साधुन बस सो रहे श्रुति गावे॥ जो वे अर्पन सो वो पावे ॥

नहि ते सन्त सतावो जाई ॥ जप तप करनन पावैं भाई ॥
जब है हैं यहि बलते हीना ॥ तब तेउ मिलिहैं आइ अधीना
तब मरि हौं की छंड़िहौं देखी ॥ कीन चही रिपु सुवस बिशेखी
सुनि धाये जहं तहं तमचारी ॥ लागे करन उपद्रव भारी ॥
योग यज्ञ कोइ करन न पावैं ॥ विप्र धेनुजन धरि धरि खावैं ।
हरि हर घर पुर देहिं जराई ॥ श्रुति पुराण कोइ सकै न गाई
जो जग दान पुराय परकासै ॥ पकरि ताहि खल बहु विधि त्रासै
जेहि विधि होइ धर्म के हानी ॥ सोई करैं अह निशि अभिमानी
बाढ़े पतित पाप समु दाई ॥ तब तो अवनि उठी अकुलाई
धेनु धाम धरि गइ विधिलोका ॥ कहत भई निज बिपति सशोका
धीरज दै अज कह्यौ बुझाई ॥ यामें कछु नहिं मोरि बसाई
तेहिते सकल देव यक बेरी ॥ करहु सप्रेम बिनै प्रभु केरी ॥
दीन दयाल दीन जन जानी ॥ करब कृपा मिलि अस्तुति ठानी
जय जय जय जग पति सुखकारी ॥ जय जय करुणा सिंधु मुरारी
जय जय माया रहित अनन्ता ॥ जय जय दुराधर्ष भगवन्ता ।
जय जय अविगत अलख अनूपा ॥ जय जय सत चित आनँद रूपा
जय जय वेद भूमि उद्धरता ॥ जय जय बिबुध संत हितकरता
जय जय सृष्टि उपावन हारे ॥ जय प्रभु संकट हरो हमारे ।
रावण असुर देत दुख भारी ॥ पाहि नाथ हम शरण तुम्हारी
इमि अमरन जब विनय सुनाई ॥ गई गिरा नभ गगन सोहाई

दो० अब सब निरभय होउ सुर भूसुर सत सुभाय ॥
तुम्हर हित कोशल पुरी धरिहौं नर तन आय ॥
कौशिल्या दशरथ भवन लै स्वछन्द अवतार ॥
करि तहँ बाल चरित पुनि मरिहौं शत्रु तुम्हार ॥

चौ० मुनि नभ गिरा सकल सुखदाता ॥ हर्षे सुर मुनि सहित बिधाता

तब ब्रह्मा देवन ते भाखा ॥ अब सब होउ जाइ मृग साखा
हरि हित सदल बिबिध हरषाई ॥ प्रगट भये कपि मनुज आई
जो अवतार सबन के कहऊँ ॥ बाढ़ै ग्रंथ पार नहिं लहऊँ ॥
रहे पुरी महिं गिरि बन नाना ॥ प्रभु मारग चितवैं बलवाना ॥
यह सब चरित सुना बिबुधारी ॥ जन मत ही हन करब बिचारी
बसत सकल मम नगरहि बसी ॥ तेका सकिहैं मोहिं बिध्वंसी ॥
तद्यपि सजग रहे का हानी ॥ दिये असुर कोरि कछु तहँ थानी
उतपति मरण आदि कछु होई ॥ कर समेत पहुँचावै सोई ॥
भये दलीप भूप जब आई ॥ जानि असुर सब दिये उठाई ॥
सुनि रावण बल देखन आवा ॥ द्विज लखि सब रानिन बैठावा
पूजत पद प्रगटेसि निज रूपा ॥ भागी भवन भीरु मनि भूपा ॥
तब रावण सरयू तट आयो ॥ अर्चत तंदुल नृपति चलायो
पूछा लोगन ते तब कहेऊ ॥ धेनुहिं हरि एक मारन चहेऊ ॥
सुमिरत सपदि सालि हों पेरे ॥ सत सर है लागे हरि केरे ॥
सुनि दसमुख मन अचरज आवा ॥ देखा जाय मृतक बन पावा
समुझि प्रताप गयो निज धामा ॥ नृपते हाल कहा नृप बामा

दो० रावण कृत मुनि अवध पति चंगुल भरि जल लीन ॥
पवन मंत्र पढ़ि क्रोध युत दक्षिण दिशि तजि दीन ॥
भये बिशिख दश लाख लखि कह नृप लंक हि जाहु ॥
सहित त्रिकूट समुद्र महँ बोरि फिरहु तेहि नाहु ॥

सो० चले पवन गति मोरि । जाते उलटावन लगे ॥
मय तनया कर जोरि । दीनि दोहाई नृपति की ॥
इहाँ न कोउ नृप आहि । सुनि आये महिपाल हिग ॥
प्रकनि कह्यो गुरु पाहिं । [illegible] मुनि रह्यो सुपाइ अस ॥

चौ० इमि दश सहस बरष चलि गयऊ ॥ रघु राजा तब [illegible] दयऊ

मारुत बान दहन गृह लागे ॥ बनिता बिनै बचन सुनि त्यागे
बहुरि भये अज अवनि पकानन ॥ मांझ देखि रण च्यौ दशानन
अनिल अस्त्र ते कटक समेता ॥ दीन नाहि पहुंचाइ निकेता
तेज बान लखि रहा चुपाई ॥ तेहि पाछे भे दशरथ राई ।

दो॰ दश सहस्त्र रवि कर लखे दशो दिशा रथ जाहि ॥
दश शिर रिपु प्रगटे सुवन कहिये दशरथ ताहि ॥
सुनि रावण निज दूत मुख मांगि पठायो दंड ॥
हरि सर घेरे भूप कहि जड्यो कपाट प्रचंड ॥

चौ॰ जो रावण पट लेइ उघारी ॥ तौ हम कर देई बिन रारी ॥
मन्दिर द्वार गये सब मूंदी ॥ रहा उघारि असुर पति खूंदी
दस करो पटन भटन मुख मोरे ॥ मिली मार्ग मय जाकर जोरे
तब रावण नभ बात बिचारी ॥ विपिनि जाइ कीन्हिसि तप भारी
वरं ब्रूहि ब्रह्मा जब भाषा ॥ बोला तब दश मुख अभिलाषा
दशरथ नृप बीरज ते सोई ॥ जग में पुत्र न प्रगटे कोई ॥
सुनि स्रष्टा मन में दुख माना ॥ एवमस्तु कहि कीन पयाना
तब दश मुख कोशल पुर गयऊ ॥ कौशिल्ये हरि लावत भयऊ
सहित मजूषा सागर जाई ॥ राघौ मच्छ दिहिसि सौंपाई
चतुरानन धरि रावण रूपा ॥ लाये मांगि सुता सोइ भूपा ।
बन में धरि बिधि गे निज लोका ॥ तहं सुमंत्र पट खोलि बिलोका
कन्या ते बोले मृदु बानी ॥ तुम हो किनकी सुता सयानी
तब कौशिल्या गिरा उचारी ॥ हम हैं कोशल राज कुमारी
नहिं जाना को बन में लावा ॥ सुनि सुमंत्र तुरते उठ धावा
ले आये कौशल पुर तामा ॥ रोदन होत रहे नृप धामा ॥
जाय मजूषा भूपहि दीन्हा ॥ जेहि विधि मिला सो बरणन कीन्हा
बोले नृप तुम को हो ताता ॥ कह सुमंत्र सुनिये प्रभु बाता

अवध पुरी नृप दशरथ नामा ॥ धर्म धुरंधर सब गुण धामा ॥
कल निधि ले निधि रघुकुल दीपा ॥ ताशु सचिव सुमन्त्र महीपा ॥
सुनि राजा बोला कहि धन्या ॥ नव नृप का बरिहौं मैं कन्या ॥
तुरते नाऊ बिप्र पठावा ॥ नृप के टीका आइ चढ़ावा ॥
चली बरात बिपुल नरनाहा ॥ बड़ी धूम ते भयो बिवाहू ॥
बिदा कराइ फिरे जब धामा ॥ मग खादि रोक्यो मुनि नामा ॥
को शिल्ये परं मुनि पलराख्यो ॥ शिव बरदान अभय गुरु भाख्यो ॥
आपु समर करि असुर बिडाख्यो ॥ देखि बिजे सुर जय ति उचाख्यो ॥

दो० तहँ बिरधासन सुत सुता नाम सागरा आनि ॥
दीन्ही ब्याहि सुमंत्र कहँ सुभग गर्ग कुल जानि ॥

चौ० दीन्ह्यो दायज बिबिध प्रकारा ॥ भये मुदित मुनि सहित भुवारा ॥
पुनि ह्वै बिदा निले निज आये ॥ बहु बिधि दान याचकन पाये ॥
तब केकई सुमित्रा घरनी ॥ तिन पाछे ब्याही बहु घरनी ॥
करहिं सदा सेवा सब रानी ॥ पालैं भूप प्रजहि सन मानी ॥
नव सहस्र सम्बत चलि गयऊ ॥ तब नृप के मन बिसमै भयऊ ॥
त्रेपन गे चौथो अब जाता ॥ हैमें पुत्र नहिं दीन्ह बिधाता ॥
बिन बालक सुख कौने काजा ॥ सकल जानि दुख केर समाजा ॥
जल बिन सर जिमि गृह बिन दीपा ॥ तिमि बिन अंगज मलिन महीपा ॥
यहि बिधि करि बिचार मन माहीं ॥ आये चलि बशिष्ठ के पाहीं ॥
माता पिता गुरू बड़ भाई ॥ साधुन के ढिग आपुइ जाई ॥
चरण नाइ सिर आयसु माँगी ॥ निज कामना कही अनुरागी ॥
दुख सुख मंत्र औषधी दाना ॥ सुहृद बिना नहिं करिय बखाना ॥

दो० मुनि बशिष्ठ बोले सुदिन भूप धरहु मन धीर ।
ह्वै हैं तुम्हरे चारि सुत गुण सागर बर बीर ।

चौ अब तुम सुत बिभांड के जावो ॥ शृंगी ऋषि इहाँ ले आवो

हैं नृप निकट आग में आये ॥ लोम पाद मख हेत बोलाये ।
पठै अप्सरा कानन माहीं ॥ छल करि सो लाई नृप पाहीं ।
रहे अस्तुरि तासु के देशा ॥ मख कराइ भे सुखी नरेशा ॥
ऋषिहि श्राप डर जेहि विधि चाही ॥ दीन्ही शांतासुता बिवाही ।
सुनते नृप निज मंदिर आये ॥ हय गय बाहन बिपुल सजाये
रहीं सात से साठि उ रानी ॥ द्वादश तीनि नायका जानी ॥
मंत्री मित्र सेन सब गाहा ॥ सब के सहित चले नर नाहा ।
पुर बाहर निकसे नृप जैसे ॥ लागि होन सगुन तहं ऐसे ।
देखा नकुल निडर दधि मक्षा ॥ विप्र तिलक युत गो सह बक्षा
पूरण घट पट पीत निहारा ॥ बायें मधुप करत गुंजारा ॥
दीप अन्न गणिका फल माना ॥ औ हाती त्रिय खाये पाना ।
नारि ससुवन फूल फल देखे ॥ दहिने पग बग ठाढ़े पेखे ॥
चील स्वान सुख भक्ष समेता ॥ श्रुति धुनि आनंद होत निकेता
दहिने मृग मिल तीतुर कागा ॥ सारस मोर सोर भल लागा
खंजन उत्तर दक्षिण प्राची ॥ बांयें दिशि खर जंबुक राची
मन महं हर्ष चलत पर होई ॥ तेहि सम सगुन और नहिं कोई
हरि उत्पति कर कारण पाई ॥ मानहुं सोच भये सब आई ।
यहि विधि दशरथ आगहि आये ॥ लोम पाद मुनि लेन सिधाये
लाये निज मंदिर सन मानी ॥ तब नृप नृपते बात बखानी
लोम पाद सुनि अति सुख पावा ॥ शृंगी ऋषिते जाइ जनावा
तुम्हैं लेन आये अवधेशा ॥ जाहु नाथ अब इन के देशा ॥
राम जन्म कर आगम जानी ॥ भूप संग चलि भे मुनि ज्ञानी ॥
अवध नगर आये ऋषिनाथा ॥ पुर बासी सुनि भये सनाथा ।
सरयू तट तहं भा मख साजा ॥ जुरे बिपुल बैखानस राजा ।
गीतिका छं० नृप सरयू के तट कियो आरम्भ जब मख

केर जू। मुनि रत्न नाना भाँति हय गय भूप लाये ढेर जू॥ महँ लिखे अग-
णित हेम घट द्विज भरे उदक ललाम जू। यज्ञान्त के अस्नानकारक
महा मंगल धाम जू॥ अरु औषधिन को सुरस दीन्ह्यो औघ धोय
पगाइ जू। विधि विष्णु औ सलिलेश सिद्धी शंभु गन सुख पाइ जू।
दिसि पूर्व पश्चिम और दक्षिण सिंध को वर वारि जू॥ नव रत्न
खचित सुकुंभ आये भरे सहस नभारि जू। धन दियो धनद प-
ठाइ बहु रहे यद्यपि इन कम नाहिं जू॥ अमरेश पठये देवतास
ब गुप्त रक्षक ताहि जू। अति ऋद्धि में महिपाल शोभित भ-
यो वरुण समान जू॥ जब तब यथा चित कर्म कृत किय
गुरु निदेश प्रमान जू। महि देव भोजन रत्न दान सुदेइ आहु-
ति पर्म जू। यजि त्रिपित कीन्ह्यो सुरन कहँ सब भाँति सों-
सह धर्म जू॥ सुर विप्र आदिक बरण चारों भरे मोद लला-
म जू। बसु अन्न दान महान आहुति पाइ के अभिराम जू॥
ऋषि नारदादिक वेद विद बहु लसत बेदी पास जू। ल-
खि पूर्ण मख दिन अग्नि की नृप करी विनय प्रकाश जू। जय
यज्ञ पति तुम देव तन के वदन हो अभिराम जू। तुम करत पा-
वन जगत ताते अहै पावक नाम जू॥ हो वहत हव्य सु कहत ता-
ते हव्य बाह समर्थ जू॥ पुनि जात वेदस नाम याते भये वेदस्व-
दर्थ जू॥ हरि चित्र भानु सुरेश अन लहि रन्य रेता राम जू। हो
स्वर्ग के तुम द्वार दाता ज्वलन सिखि सुख धाम जू॥ विंगेश
बिस्वा नरश्रवंग सुभूरिते जस सर्व जू। सुकुमार सुभगवान
रु द्रहिरराय गर्भ असर्वबजू॥ ऋषि विप्र देवन दनुज के तुम य-
ज्ञ कारक आम जू। जग धूम केतु अहेतु हे नव पाप ना-
शक नाम जू॥ हे सार भुक तुम देहु हम का सुमन बाँछित फल
जू। करें होम जो मंत्र पढ़ि यह होय तो कर भल जू॥

दो० शृंगी ऋषि तब प्रीति ते दीन्ही आहुति सार॥
प्रगटे पावक तेज निधि लीन्हे हवि कर थार॥
चौ० बोले रवि नृप हवि यह लीजै॥ यथा योग निज रानिन दीजै
ह्वै हैं बालक चारि अनूपा॥ जो प्रथमै बरणों ऋषि भूपा।
अस कहि मे शुक अंतरध्याना॥ सुनि समाज सकलौ सुखमाना
तब नृप लीन्हों बोलि विचित्रा॥ कौशिल्या केकई सुमित्रा।
गुरु वशिष्ठ हवि बाट बताये॥ चारि भाग भूपाल लगाये।
उभै दीन कौशिल्ये तहियाँ॥ तीसर भाग केकई कहियाँ॥
चौथ भाग के युगुल बनाये॥ कौशिल्या केकई गहाये॥
तिन मन मुदित सुमित्रहि दीन्हे॥ निज निज भाग पाइ सो लीन्हे
यहि विधि रूप शील गुणखानी॥ भई गरभ संयुत तिहु रानी।
दिन दिन तेज बदन तन जाई॥ मनहु उभे विधु मंदिर आई।
सुख समेत कछु काल बितावा॥ रामजन्म कर अवसर आवा।
भे अनकूल सकल शुभ योगा॥ प्रमुदित विश्व चराचर लोगा
बन उपबन फूले तरु नाना॥ शीतल मंद चले पौमाना।
ब्रह्मादिक नभचर नभ आई॥ बरषि सुमन दुंदुभी बजाई।
गावहि गुण गंधर्व सरागा॥ अस्तुति करहिं देव मुनि नागा
चैत शुक्ल शशि कर्क प्रमाना॥ नखत पुनर्वसु अभिजित जाना
मध्यदिवस विश्रामद जानी॥ प्रगटे तब त्रिभुवन सुखदानी
चौबोला छं० चैत्र मास सित पक्ष कृपाकर वार जू। नौ-
मी दिन श्रीराम लीन अवतार जू॥ नील जलद तन श्याम-
काम छबि कोटि जू। अरुन अलक बिच सुमन धरे जनु खो-
टि जू॥ शीस मुकुट मणि जटित जग मगत जालजू। स्रुति-
में कुंडल ललित तिलक दिह भालजू। कमल नयन नासि
का समेत बुलाक जू॥ जनु कवि कुज गुरु राहु बसे सु कहा

कजू। बिंबाक्षर वर अदन रदन दमकें घने। भृकुटी कुटिल कपोल गोल गह वर बने। कंबु कंठ कल बचन बिसद कौस्तुभ लसे। उर मोतिन की माल मनहुँ मन में बसे॥ भुजग भोग भुज दराड चराड धनु सर लिहे। कटि निषंग सब अंग अलंकृत हैं किहे॥ पर देहीं पट पीत पिछोरी पाटकी। युगुल जर कसी जाम दाम अनधार की॥ चरण कमल मुनि बिमल जिन्हें नित ध्यावहीं। अंकु शादि बहु चिन्ह सरा मोहिं भावहीं॥ देखि अलौकिक रूप भूप कोशलसुता बोली जय जगदीश चरित तव अप कुता॥ बरणि न जानें बेद भेद बिन खेद जू। प्रणतपाल सब काल कुटिल कुल छेद जू॥ जय अनन्त सुर सन्त कंत भगवन्त जू। जन मन मानस हंस बंश बिसरन्त जू॥ कोटि कोटि ब्रह्माराड रोम प्रति जासु जू। सो मम जठर निवास बड़ी उपहास जू॥ तब प्रभु पूरब केरि कथा सकलो कही। पुनि है बालक रूप लगे रोदन सही॥ सुनि नृप रानी सकल उठीं हर षाइ कें। कौशिल्या पहँ तुरत पहूँची आइ कें॥ देखि सुवन सुख राशि सकल सौं दर्य की। कीन कृतारथ हमें कृपा मुनि वर्य्य की॥ खबरि पाइ अवधेश परम आनंद लह्यौ। बाजहिं बाजन बोलि बजनि हम ने कह्यौ॥ आप सुमंत्र समेत गये चलि धाम को। शिशु सुख सुखद बिलो किकै यो परनाम को॥ पठये कुल गुरु बोलि सहित मुनि आयहू। त्रिभुवन पतिहि निहारि महासुख पायहू॥ करि मज्जन महिपाल लीन कुस हाथ में। मुदित लगायो तिलक द्विजन के माथ में॥ नंदी मुख निज पितर पुजाये हित बरे। गुरजन द्विज पहिराइ पाँइ सब के परे॥ गोग-

ज हैं रथ हेम रतन बांछित दये। बहुरि बन्धु वर मित्र मा-
न मंडन भये॥ मागध बंदी सूत जाहि जिन यांचहू। सोइ
सोइ दीन्ह्यो नाहि नकोइ बाँच हू॥ विप्र बयस्त नृप शू-
द्र निधन धाधन भये। राम निछावरि लेन भिखारी सब
भये॥ नगर नारि नर बृंद बिलोकन धावहीं। सहज सिंगा-
र सवाँरि मनो जल आवहीं॥ अंतह पुर धुर जाइ उतारैं आ-
रती। निरखि पुत्रको रूप सरूप बिसारती॥ धन्य आजुको
दिवस धन्य अब की घरी। धनि रानी की कोखि जहां ज-
न्मे हरी॥ धन्य हमारे भाग लाग फल फूल में। करैं निछा-
वरि छोरि गहन अन कूल में॥ पुरुषोत्तम परसाद चुके न-
हिं नेकहूं। याचक ह्वै ह्वै भूप गये बहुतै कहूं॥ बाजैं बाज-
न बिपुल अपसरा नाचहीं। गावैं गंध्रव गीत समय सुख
सांचहीं॥ देव दुंदुभी देइ सुमन बरसावहीं। मृग मद कुं-
कुम नीर अबीर उड़ावहीं॥ बंदन वार पताक केतु सज वा-
यहू। गोपुर कलश सुरंग अधिक छबि छायहू॥ बालक
वृद्ध जवान जहां तहँ डोलहीं। सुर धरि मानुष रूप भूप ज-
य बोलहीं॥ तेहि क्षण डाबर केर दाढ़ि एक आय हू। रा-
जहि सीस नवाइ सुबचन सुनाय हू॥ सुनि गोरे कर सुयश
पेज हमहूं करी। निज भूषन सब देहु रुकुम गराधरी॥ चल-
त देखि बड़ पुत्र कह्यो अस टेरि कै। दश दन्ती मम हेत
लया यो हेरि कै॥ बोला मोंझिल तनय तुरग ते तीस जू।
लायहु मम हित मांगि ग्राम गुरु बीस जू॥ पाछे छोटा डिं-
व कह्यो डंड भरन को। लायहु महिरवी मांगि बयालिस-
लरन को॥ तब बोली माता सु ऐसही आय हू। मम हित
लेहु थान पालकी लाय हूं॥ पान दान पर धान टह लुई

लीनि जू। सुनि नृप हर्ष समेत सोउ सब दीनि जू॥ यहि बि-
धि दानी देखि दास रघुनाथ जू। लीनि भक्ति वर मां-
गि लागि गे हाथ हू॥ जो यह मंगल गावै सुनै सप्रीति जू।
बसै सो हरि पुर जाइ मिटै भव भीति जू॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रन्थ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत राम जन्मउत्सव वर्णनो नाम तृतीयो ऽध्यायः ३॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु प्रताप गिरा सुखदानि॥
कहौं भुशुण्डी चरित कछु लोमस भणितबखानि॥
राम जन्म के समय की उत्सौ शोभा सुक्ख॥
बरणि सकैं नहिं शेष में कहा कहौं एक मुक्ख॥

चौ० जो यह नौमी रहे उपासा॥ अन्त बसै राम के पासा॥
वेद पुराण कहत सब कोई॥ यहि सम व्रत अपर नहिं होई॥
जन्म स्थान दरश जो करई॥ सो नहिं पुनि पुर पाउँन धरई।
जन्म भवन के उत्तर कोना॥ बीस धनुष पर महल सलोना॥
नाम पुत्र कैकई जाया॥ दशमी के दिन परम सोहाया।
दक्षिण वार सुमित्रा धामा॥ तीस धनुष पर अति अभिरामा।
जन्मे उभे सुवन तिन नामे॥ तीसर दिवस हरि तिसरे जामें
षट तिल जव मे अंगुल होई॥ चतुरंगुल कर मुष्टिक सोई।
षट मुष्टिक का दण्ड बखाना॥ अष्ट दण्ड का धनुष प्रमाना
कैकै भवन सुमित्रा केरे॥ भई भीर मग मिलत न हेरे॥
यहि अवसर मुद मंगल शोभा॥ कहि को सके देखि मनलोभा
दश स्यन्दन उरभा सुख जैसा॥ बरणि सके को जग में ऐसा
तेहि क्षण जोजन मांगत जोई॥ ताहिं देत हंसि भूपति सोई।
देश देश के याचक आये॥ हय गय रत्न अनेकन पाये।
भये रंक ते सब धन वाना॥ जहं तहं करें बड़ाई नाना।

अति प्रसन्न ह्वै देहिं असीसा ॥ जियें सकल सुत कोटि बरीसा
अवध पुरी शोभा अधिकाई ॥ जनु देखन बरषा ऋतु आई
अगर धूम घन घटा समाना ॥ बाजन बाजत गरजत जाना ।
बंदी गण गुन बरणत मोरा ॥ भवन वेद धुनि दादुर सोरा ।
बरषत सुमन देवगण भूरी ॥ कर्दम मन कुंकुम कस्तूरी ।
बिबिधि जीव नर संकुल राजैं ॥ बिपुल बिटप तृण हरित बिराजैं
जहं तहं कलश दामिनी चमकैं ॥ मन्दिर मनि खद्योतो दमकैं
मुदित धेनु सुर नर मुनि धरनी ॥ आनँद जल असु छय करनी
सरिता पाथ बढ़ि पुर लागा ॥ ठाँवक पूरण भये तड़ागा ।
बचन बदत सब जहं तहं डोलैं ॥ झल्ल झल्ल जनु झींगुर बोलैं
यह सब चरित आय नब जाना ॥ जब उर बसे आय भगवाना
निज निज नगर देव मुनि भूले ॥ देखत फिरें बौधिक न फूले ।
नाचहिं चपल अपसरा नाना ॥ हरष समेत देहिं नृप दाना ।
रत्न जटित पलना लै आवा ॥ बढ़ई नेग सुइच्छित पावा ।
कञ्ज रोटा ले दीन लोहारा ॥ देखि भूप नग दये अपारा ।
माला कर अग्र धरि डाली ॥ पायि जलज थार भरि माली ।
नृप कर बाल सुवनिक मसाला ॥ मन भावत बर दीन भुवाला
यहि प्रकार ते सब पुर बासी ॥ पाइनि नेग दास अरु दासी—
कौतुक देखि भूलि रबि गयऊ ॥ मास एक कर बासर भयऊ·
खबरि पाइ उर धरि नृप ढोटा ॥ विमन गये रवि पावत खोटा
अस्त भये रजनी तब आई ॥ बाजहिं घर घर अवध बधाई
गई रोशनी सब पुर साजी ॥ लागी छूटन आतस बाजी ।
और कमल फानूसें झाड़ें ॥ मानहुं भये नदिन मनि आड़ें ।
स्वांग अनेक विदूषक करहीं ॥ सब नर मगन बिलोकत फिरहीं
जासु उदर बस भवन अपारा ॥ सोवत सो प्रभु रूप मझारा

सपनेहु जेहि मन खेद न होई ॥ कहौं करि रोवत सोई ॥
पालत विश्व सकल सुख पावत ॥ कौशिल्या तेहि क्षीर पियावत ॥
महिमा जासु जान नहिं ज्ञानी ॥ तिन्हें गोद लै बैठत रानी ॥

दो० जाहि महेश विरञ्चि मुनि सुमिरत ध्यान लगाइ ।
तिन के तन तिन सर मरी तेल लगावत आइ ॥

चौ० सुनो शिवा सन्तन सुखदाई । भक्ति वछलता प्रभु दिखराई ॥
यहि विधि वासर पांच बितायो ॥ छठयें दिवस छठी करवायो ॥
जाति बंधु नृप नेवति जेंवाये ॥ भूसुर सकल दक्षिणा पाये ॥
दीन्ह महानो सुरमुनि सारे । प्रमुदित निज निज भवन सिधारे ॥
बरहें दिवस जो बरहौं कीन्हा ॥ पुनि बहु दान द्विजन कहँ दीन्हा ॥
कछुक काल सुख सहित बितावा ॥ नामकरण का अवसर आवा ॥
गुरु वशिष्ठ नृप बोलि पठाये ॥ विप्रन सहित तहां चलि आये ॥
उठि नरेश सबहिन शिर नावा ॥ षोड़श भांति पूजि सुख पावा ॥
लोक वेद विधि मुनि करवाई ॥ शिशुन सहित तिहुं रानि बोलाई ॥
आईं सुदित सुता मिथिलेश ॥ उमा रमा शारद धरि अङ्ग ॥
मिलि सलनना भई थरीका ॥ देखैं बाल विनोद हरीका ॥
चारु चौक बैठीं सब रानी ॥ शोभा शील सुकृत की खानी ॥
गोद मोद निधि बालक लीन्हें ॥ चितवत बड़ भागी मन दीन्हें ॥
रक्षा ऋचा ऋषिन उचारी ॥ गणप गौरि द्विज साधु पुरारी ॥
सब सब विधि पुजाइ अनुरागे ॥ गति सुमति नाम धरन मुनि लागे ॥

दो० जासु तेज चर अचर में व्यापक व्योम समान ॥
तासु राम अस नाम जो सुख सागर भगवान ॥
विश्व भरत सोइ भरत भनि भव भंजन गुण जासु ॥
जेहि सुमिरे रिपु होइ हत नाम शत्रुहन तासु ॥
सब लक्षण युत होइ जो जानै जिय के काम ॥

रामानुजप्रिय भूमि धरतस्यलखनअसनाम॥
ते बड़भागी जीवजे करिहैं इनते प्रीति॥
पैहैं बिन श्रम सकल फल जैहैं जगरिपुजीति॥
यहि विधि सुन्दर नाम सुनि हर्ष्यो सबरनिवास॥
दीन दान सनमान निज गे मन मुदित निवास॥

सो० पुनि कछु दिन में आइ। पहुँच्यो प्रासन अन्नकर॥
सुनि पुर लोग लुगाइ। हरष सहित सब से कहैं॥

छं० सखि आजु श्री अवधेश सुत को अन्नप्रासन आहि जू। चट चलहु चलि अवलोकिये चख चहत चाहत काहि जू॥ सुन सकल साजि सिंगार आई अमित मुद मङ्गल ज हैं। लखि ललकि लीन्हीँ लाइ रानिन दीन आसन जस च हा॥ बहु भाँति के भये सकल व्यञ्जन विविधि विधि मिष्ठान्न जू। नृप जाति बंधु बोलाइ पठये परत पहुँचे कान जू॥ तब कौशिला कैकै सुमित्रा सुवन निज निज उबटि के। अन्हवाइ तन पहिराइ भूषण बसन सुन्दर डुपटि के॥ पुनि कनक थार भराइ जाउरि धरी घृत मधु लाइ के। महिपाल लैनैं मुख जुठारत उठी युवतिन गाइ के॥ परकार षटरस केर जहँ लौं सकल अधर छुवायहू। पुनि तनक जलते पोंछि आनन जननि ढिग पहुँचायहू॥ हिय हरषि शिशु मुख चूमि सुन्दरि सकल दुलरावैं लगी। अनपार भै जेवनार निज रुचि सरस नहिं कहैं का खगी॥ यहि भाँति सुख दिन राति भोगत धन्य पुर नर नारि जू। रघुनाथ कौशिल नाथ सुत छवि नाम पर बलिहार जू॥

दो० बरष गाँठि पाछे भई गई दगाई बादि॥
विप्रन दीन्ही दर्बबहु लीन्ही कीरति गादि॥

बारे हिते पति भृत्य ज्यों राम लषण के प्रीति ॥
भरत शत्रुहन की रहत तेही तरह की रीति ॥

चौ० श्यामगौर जोरी दोउ देखी ॥ जननि जनक सुख लहें विशेषी ॥
ले उछंग बहु विधि दुलरावें ॥ छबि विलोकि तृण तोरि बहावें ॥
रूप शील निधि चारों भाई ॥ तदपि राम शोभा अधिकाई ॥
मेचक मुदित कलेवर पीना ॥ पहिरे पीत झंगुली झीना ॥
उन मुख चिकुर चिक्कने सोहें ॥ शिर चौतनी अमोलिक मोहें ॥
ललित भाल मसि बिंदु बिराजे ॥ भृगुटी कुटिल श्रवण अति भ्राजे ॥
कठुला कंठ बाघनख नीका ॥ नीरज नयन मयन शर सीका ॥
द्वै द्वै दसन कपोल अनूपा ॥ बिम्बाधर आनन द्विज भूपा ॥
चिबुक चारु नासिका सोहाई ॥ लट कुन की लट कनि मोहिं भाई ॥
पंकज पानि पहुँचियाँ राजें ॥ नख दुति लखि मुकताहल लाजें ॥
उर बर वाल विभूषन पेखा ॥ नाभि गम्भीर उदर त्रै रेखा ॥
कटि किंकिनी कुधरि डगडोलें ॥ झुनु झुनु झुनु नूपुर बोलें ॥
पद पाथोज जनित तल जोहें ॥ चारु चिन्ह अरुनारि ससोहें ॥
स्वस्तिक अष्ट कोन श्री केरा ॥ हल मूशल पन्नग शर हेरा ॥
नभ नीरज रथ बज्र अघाता ॥ ऊर्द्ध रेख सुरतरु सुखदाता ॥
अंकुश ध्वज अरु मुकुट छबीला ॥ चक्र सिंहासन दण्ड नवीला ॥
चमर छत्र नर जव अरु माला ॥ दक्षिण पद ये चिन्ह विशाला ॥
गोपद पृथ्वी कुंभ पताका ॥ जम्बू फल अर्धा चक बांका ॥
दर षट कोन त्रिकोण गदारा ॥ जीव बिंदु मत्स्य सरि आरा ॥
शक्ति सुधा थल त्रवली मीना ॥ पूरण विधु बंशी वर बीना ॥
धनुष तूण चंद्रिका मराला ॥ बायें पद ये चिन्ह विशाला ॥
एक एक कर अमित प्रभावा ॥ महा रमायण में शिव गावा ॥
सन्त सहाय करन के हेता ॥ हृद करि धारे कृपा निकेता ॥ ॥

इन सब चिन्हन युत रघुराई। बिचरत अजिर जननि सुखदाई॥
जानु पानि किलकत तहँ डोलैं। कल बल बचन मधुर हँसि बोलैं॥
कहे मातु कब चारिहु भैया। हँसैं बोलैं हैं कहि कहि मैया॥
कब कर बाण धनुहियां गहिहैं। कब चलि राजसभा में जैहैं॥
कबहुँक कर मोदक पकरावैं। जो मांगें हँसि नाहि खवावैं॥

दो० जासु शक्ति ते चराचर चलत रहत हरि गात॥
तासु पाणि गहि आंगुरी अजिर चलावत मात॥
कला रूप धरि धरणि जिन लीनि रुख ग्रनाथ॥
मोद बढ़ि सकत न पलंग पर रहत देहरी बाथ॥

चौ० कबहुँक हँसि नृप गोदे आवैं। कबहुँक किलकि मातु ढिग जावैं॥
कबहुँक परि पेलना में फेलैं। कबहुँक विविध खेलौना खेलैं॥
जिन्हैं काल सब काल डेराई। सो प्रभु हेरि डेरत निज झांई॥
जासु भजन बस शिव चतुरानन। नाँचत सो प्रभु नाचत आंगन॥
दंपति प्रेम विवस भगवाना। बाल बिनोद करत बिधि नाना॥
एक दिवस करि मातु विवेका। अस्नन संवारि भांति अनेका॥
इष्टदेव श्रीरंग सभाया। बसन ओट करि भोग लगाया॥
तेहि छण तहँ शिशु पावत देखा। पलना निकट गई तहँ पेखा॥
पुनि इत लखि पुनि उत लखि पावा। कौशिल्या के मन भ्रम छावा॥
मातहि बिकल जानि रघुबीरा। देखरावा निज थूल शरीरा॥
रोम रोम प्रति लागे कोटि बहु धारा। कच्छ कच्छ प्रति ब्रह्माण्ड निहारा॥
अगणित रवि शशि अनि बितान। अपर विष्णु शिव सुर दिशि त्रान॥
सागर गिरि सरित तड़ागा। किन्नर खग पशु नर मुनि नागा॥
पितर पिशाच निशाचर जाली। काल कर्म गुण नाना भांती॥
देखी माया सबै नचावै। लखी भक्ति जो तिन्हैं छुड़ावै॥
देखे द्वीप उदधि नद खंडा। देखी अवधि सकल ब्रह्मंडा॥

अंड कोस प्रति अपन रूपा। देखा माइ शिशु चरित अनूपा
हाथ जोरि तब बिनती ठानी ॥ जय प्रभु गुणातीत गुण खानी
जगत पिता तुम अज भगवाना। मैं बिन ज्ञान पुत्र करि माना।
सुनि बिनती बोले रघुराई ॥ हमैं छांड़ि केहि पूजन माई ॥ ॥
हम तव भक्ति विवस तव नीरा। गइउ भूलि लखि बाल शरीरा
तेहि तें मैं निज भूलि देखाई ॥ काहू ते जान दियो बताई ॥
कौशिल्या तब बचन सुनावा ॥ अब मोहिं ज निव्यापै नव माया
एव मस्तु कहि पुनि भगवन्ता। है गे बालक रूप तुरन्ता ॥ ॥
देखि मातु फिरि क्षीर पियावा। ईश जानि अति प्रेम बढ़ावा ॥
कबहुंक ले पौढ़े सुठि सेजा ॥ कबहुंक लेहि लगाइ करेजा।
कबहुंक कहै नींद किन आवै ॥ हित करि मेरो लाल बोलावै।
कबहुंक करि सब तन शृंगारा। पठवैं जहां भूप दरबारा ॥ ॥
देखि नरेश लेहिं उर धारी ॥ चितवैं नर सब पलक बिसारी ॥
जो कोई निज निकट बोलावैं। प्रीति परखि ताके ढिग आवैं
मुनि जन ध्यान लगावत जाही। पुरजन अछत खेलावत ताहीं
सबै सुलभ तिन का सब नीरा। जिन पर कृपा करैं रघुबीरा ॥
एक दिन काग भुशुंडी तेरे ॥ किये चरित अति अद्भुत हेरे ॥
कछु दिन में कन छेदन आवा। हरषि सखिन ते सखिन जनावा

गीतिका छं॰ सखि आजु नृप सुत केर है कनछेदनो च-
लि देखिये। दम दान हरि गुण गान जीवन जन्म कर फल ले-
खिये। नव सात साजि शृंगार आई अयन जहि रचना रची
बहु भाइ करन गहाइ दीन्ह्यो माल पूरी गुर सची ॥ हरि हँस-
त बिहँसत बब्ब लखि धक धकी मातन के हिये। भरि देत रो-
चन सीक ते श्रुति नीर धूरे करि लिये। अति चतुर लीन्हे के-
टि छिपे उठे शिशु अकुलाइके। भरि नयन नीरज नीरज जन

निन लीन हृदय लगाइ कै ॥ मणि बस्त्र मुक्ता करि निछा-
वरि दीन महि देवन घने । पहिराइ पुरजन सकल मानहुं अ-
रति वपु बहु बने ॥ सुर अंग नामी अवधबासी सब सदासी-
के नहीं । रघुनाथ उपमा देहु तब जब होइ त्रिभुवन में कहीं ॥
चौ० यहि प्रकार जब चारिउ भ्राता ॥ बढ़े मंथ परिजन सुखदाता
चूड़ा कर्म आदि गुरु कीन्हा ॥ नृप बहु दान द्विजन कहं दीन्हा
अनुज सखा सब मिलि निजसेरे ॥ खेलहिं खेल महीपन केरे ।
भूप रसोई जीमन आवे ॥ जब तब मातु बोलावन जावे ॥ ॥
क्रीड़ा शक्त देखि सब भाई ॥ बोली तब कौशिल्या माई ॥
अहो लाल हे लछिमन भैया । भरत बत्स रिपुसूदन छैया ॥
अब क्रीड़ा दिशि चित्त न दीजे ॥ देर भई चलि भोजन कीजे ।
बैठ बाट बिलोकत राजा ॥ क्षुधित भये सब सखा समाजा ॥
तुमि सुनि प्रेम बचन चलि आवो ॥ बैठि भूप ढिग भोजन पावैं ।
कौनेउ दिन आवें नहिं टेरे ॥ जननी धरन जात तब नेरे ॥

दो० मातहि आवत देखि प्रभु ठुमुकु ठुमुकु चलि देत ॥
झपटि कहत तब भूप पहं लै आवत करि हेत ॥

चौ० सुभग शरीर सुरभि रज लागी ॥ झारि सुअंचल ते अनुरागी
लखि नृप निकट लिये बैठाई ॥ मिलि जेंवत सब चारिउ भाई
दूत उत चिते चले पुनि भागी ॥ अरुण अधर हंसि जाउ लागी
पुनि आवे जहं बालक सारे ॥ देखि मात पितु होहिं सुखारे ॥

दो० नृप रानिन कर भाग सुख संपति सुयश सुभाउ ॥
मैं का बरणों एक मुख कहि न सकें अहिराउ ॥

चौ० खेलत देखि नारि पुर केरी ॥ जाइ भवन भजि आवे फेरी ॥
पुनि घर भूमि सखिन तें कहई ॥ जेंवत द्वार पवरि परो को रहई ॥
जब तें मैं भूप सनय निहारा ॥ तब ते रुच तन जग शो हमारा ॥

अस मनु होइ खेलावहि करहूं ॥ रोौं न परि गुरुजन कहं डरहूं ।
कबहुंक निकसि दुवारे आवैं ॥ ले उछंग पुरजन घर लावैं ॥
वदन चूमि कर राखि मिठाई ॥ रुख लखि महलं देइ पहुंचाई ।
कबहुंक चुनत विहंग लखि पावैं ॥ हाथ पसारि धरन तब धावैं ।
उड़ि जब जात करत मचलाई ॥ सुकशारिका दै राखत माई ॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगार ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास ।
रामसनेही कृत श्री रामचन्द्र बाल लीला वर्णनो नाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
कहौं भुशुण्डी के चरित कछु रघुवंश बखानि ॥

चौ० यहि विधि बाल चरित प्रभु करहीं ॥ देखि लोग अति आनंद भरहीं
यक दिन एक मलूका आवा ॥ नृप के द्वारे कीस नचावा ॥ ॥
देखि राम ठानी मचलाई ॥ कहै कि मोहिं कपि देहु मंगाई
भूप मंगाइ देन बहु लागे ॥ तदपि न लेत रुदत पुनि आगे
तब नृप भाख्यो गुरु ते जाई ॥ मुनि वशिष्ठ बोले हरषाई ॥

दो० जेहि हित रोवत रामजी सो मरकट है आन ॥
सुनो तासु उत्पत्ति मैं तुम ते करौं बखान ॥

चौ० उत्तर दिशि सुमेर गिरि भारी ॥ तहं केशरी रहत बन चारी
तासु परम पतिव्रता नारी ॥ नाम अंजनी छवि अधिकारी
तेहि एक बार कीन श्रृंगारा ॥ ठाढ़ी गिरि पर पवन निहारा ॥
वपु धरि तन अपस्पर्श सु कीन्हा ॥ लखि सो चही श्राप कहुं दीन्हा
बोले तब नभसुत सुनु प्यारी ॥ मम अस पर्श सकल तनु धारी
तेहि ते मोहिं श्राप जनि देहू ॥ हम बरदान देनु सो लेहू ॥ ॥
होई तुमरे सुत बलवाना ॥ राम भक्त गुण रूप निधाना
अस कहि अनल अदर्शित भयऊ ॥ सुरवसुत कछुक काल चलि गयऊ
कार्तिक वदी चतुर्दशि बारा ॥ शनिक दिन भा प्रगट कुमारा

तारव पितु मातु कीन उतसाहा॥ लागे सुत सेवन जस चाहा
प्रात अरुण रबि निरखि फलंगा॥ ग्रसत भयो फल सरिस पतंगा
झपटि वज्र मारा सुरराई॥ चिबुक मध्य तेहि मुरछा आई।
देखि पवनसुत लीन उठाई॥ रुखी रोकि समीर रिसाई॥ ॥
बंद उदर सब देवन केरे॥ आये तब आसुग के नेरे॥ ॥ ॥
करि विनती सुर सकल सुजाना॥ लागे देन सुतहिं बर दाना॥
कह ब्रह्मा होई बजरंगी॥ लगी न मम सर शक्ति अभंगी॥
बोले ध्रुहद जरी नहिं आगी॥ इन्द्र कह्यो मम कुलिश न लागी
हर त्रिशूल यमदंड सुनावा॥ वारि न बूडं वरुण बतावा॥ ॥
बाली शक्ति भक्ति लखि नेकी॥ वचन मोर यहि सके न छेकी।
दो० यहि विधि सब विबुधन दये वर बरदान निहोरि॥
सुनि प्रसन्न भे स्वसन तब छूटी पवन बहोरि॥
चौ० शरा दान देवन जब पाये॥ महावीर कहि भवन सिधाये।
हनोमान हनि दूसरि नासा॥ लागे रहन मातु पितु पासा॥ ॥
जब तब जाइ मुनिन के तीरा॥ डारे फोरि कमंडल नीरा॥ ॥
बिटप तोरि गिरि सिखर ढहावे॥ बल अति भूरि अंग धुनि हावे
ऋषिन श्राप तब दीन बिचारी॥ भूलि जाहु निज पौरुष भारी।
जब जब कोइ सुरति कराई॥ तब फिरि तुमरे बल है आई॥
रहे तहाँ कछु दिन हरि आसा॥ पुनि गे पढ़न सहस गो पासा॥
लागे पढ़न जोरि कर आगे॥ करत मुखाग्र उन्मुख भागे॥
विद्या सकल पाइ अस भाषा॥ मांगो जो तुमरे अभिलाषा॥
बोले रवि मम सुत सुग्रीवा॥ रिक्ष मूक पर रहत सदीवा॥ ॥
तिनके तीर रहो तुम जाई॥ मिलि हैं तहाँ तुम्हे रघुराई॥ ॥
गुरु अनुसासन मानि विधाता॥ रहन भानुसुत के ढिग लाता
राम लालम चले तेहि हेता॥ तेहु गमारु तारि करि देता॥ ॥

तुरत भूप भट भूरि पठाये ॥ सकल सुकंठ पास चलि आये ॥
जो नृप कह्यो सो बखान कीन्हा ॥ सुनि सुकंठ तुरतै कपि दीन्हा
लै आगे मन्दिर हरषाई ॥ देखि राम उर लीन लगाई ॥ ॥
हनो भान के अति सुख भयऊ ॥ मिलि रघुरूप नहीं होयगयऊ
जहँ जहँ खेलैं राम सुसंगा ॥ तहँ तहँ कपि राखे निज संगा।

दो० एक दिन एक शिशु अंध को डारी रज प्रभु दृष्टि ॥
बोरहन दै रघुनाथ तेहि देखरायो दै दिष्टि ॥

चौ० एक दिवस एक बानिक आवा ॥ बेचन हित नग नृपहि देखावा
लै रघुनाथ कूप में डारा ॥ देहु वहै हँसि भूप उचारा ॥ ॥
तुरतै वृक्ष कूप ते जामा ॥ लागे लाल असमा नक तामा ॥
फरन झरन पुनि लागत भारी ॥ लैलै जात सकल नर नारी ॥
सात दिवस भे लूटि बिशेषी ॥ पुनि सो बिटप पुनि नहिं देखी
यह लीला लखि भूपनि साहू ॥ चकितरु मन परम उछाहू ॥
एक दिन एकु बांधिक चलि आवा ॥ अद्भुत पक्षी नृपहि देखावा
देखि राम लै दीन उड़ाई ॥ बोला खग सोइ देहु मँगाई ॥ ॥
सुनि प्रभु तासु पक्ष महि गाड़ा ॥ भा तरु तुरत जबै जल डारा ॥

दो० लागत फल फूटत तुरत निकसत उड़त बिहंग ॥
बैठत महतन पर धरत धावत बालक संग ॥
पुरवासिन पाले सबनि देखि बिहंग अनूप ॥
सुनि सुनि तहँ लै लै गये देशदेश के भूप ॥
बांधिक दीन्ही दर्बि बहु भा सब के सुख सोत ॥
यह प्रभु ना कछु बहुत नहिं इच्छा तें जग होत ॥

चौ० यहि बिधि मानुज राम सुशीला ॥ आठ बरष कीन्ही शिशु लीला
जब पौगंड भये सब भाई ॥ पढ़न हेत पठये रघुराई ॥ ॥
गुरु पद जाइ नवाय शीशा ॥ लगे पढ़ावन मुदित मुनीशा ॥

पढ़न भये प्रथमे बिन खेदा ॥ साम दाम अरु दंड बिभेदा ॥
मिलि सनेह कीजे सोइ सामा ॥ खान पान धन दीजे दामा ॥
भेद सो सबलहिं फोरि मिलावै ॥ दंड मार दुख त्रास देखावै ॥
राजन के लक्षण ये जानौ ॥ तिन पाछे अस पढ़ो बखानौ ॥

दो० बरणा वेद उपवेद अंग आदि शास्त्र उपशास्त्र ॥
सकल पुराणे संहिता तंत्र सुमंत्र कलास्त्र ॥
निकस्यो नहीं नवर्ग के अंत को अक्षर शुद्ध ॥
जान्यो नव रघुनाथ मुनि हैं गुण बिश बिरुद्ध ॥

चौ० अचिर काल सब विद्या लीन्ह्यो ॥ बहु बिधि गुरु दक्षिणा दीन्ह्यो ॥
भये मुदित मन पितु अरु माता ॥ खेलन जाहिं जहां सब भ्राता ॥
हेरि लोग सब होहिं सुखारी ॥ थकित बिलोके कोबिन नारी ॥
जोबन जेठर अपर जे बारे ॥ लागहिं सबन प्राण ते प्यारे ॥
सुदिन समुझि इक दिन नरनाहा ॥ दीन जनेऊ सहित उछाहा ॥
नित्यानन्द निरोधि अपारा ॥ छिन छिन बाढ़त अवध मझारा ॥
पुरबासी सब ताके माहीं ॥ रहैं निमग्न सुगति कछु नाहीं ॥
नारदादि मुनि दिन प्रति आवैं ॥ चारु चरित चहि चहुँ दिशि गावैं ॥
मुनि सुर सकल सराहिं सि प्रेमा ॥ सुमन चढ़ावैं हित निज क्षेमा ॥

दो० एक दिन ध्यान बशिष्ठ मुनि करत देखि अबिवेद ॥
कह्यो बिघन कर वाइ के प्रगट गाद किन खेव ॥

चौ० एक दिवस प्रभु सरयू माहीं ॥ अनुज सखन युत सुदिन नहाहीं ॥
असुर एक रावण कर प्रेरा ॥ मगर रूप धरि मुखमें गेरा ॥
निकसे सपदि ताहि हरि मारी ॥ सुनि पुरजन सब भये सुखारी ॥
जिन जिनके बालक तेहि खाये ॥ दीन्हें काढ़ि मनहु धरि आये ॥
भूपति दीन्ह्यो दान अपारा ॥ गुरु प्रसाद कल्याण हमारा ॥
इमि पोगण्ड अवस्था माहीं ॥ किये चरित बहु बरणि न जाहीं ॥

पुनि सब बंधु भये के घोरा ॥ रूपराशि पुरजन चित चोरा ॥
दिन प्रति सरयू करि अस्नाना ॥ बहुबिधि देहिं द्विजन कहँ दाना
कबहुँक चढ़ि निज नाउ मँझारा ॥ खेलैं दूग जामध्य मँझारा ।
कबहुँक सानुज सखा सुजाना ॥ खेलैं गेंद जाइ चौगाना ॥ ॥
कर कर कंदुक सूमत कैसे ॥ हरि पद बिमुख जीव जग जैसे
कबहुँक चढ़ि बर बाजि नचावैं ॥ पुर बासी लखि अति सुख पावैं
कबहुँक बढ़ि ठानैं घोड़ दौरा ॥ धरि निज निज मोहरें इक ठौरा ॥
भरत संग जब बाजी लागै ॥ तब प्रभु कस रहैं निज आगे ॥ ॥
कहैं सकल हारे रघुराई ॥ जीते भरत भावते भाई ॥ ॥ ॥
सुनि बकसत हय गय पट हीरा ॥ प्रमुदित होइ पाइ सब बीरा
कबहुँक अनुज सखन के साथा ॥ बिचरहिं पुर धनु शर गहि हाथा
इक दिन इक मज्जन कृत नारी ॥ देखन लगी तासु महतारी ॥
बोली बसन बिना कोइ देखी ॥ को अस इन्हें छाँड़ि मोहिं पेखी
तें नृप तने न अबै निहारे ॥ परे दृष्टि नहिं अंग हमारे ॥ ॥
कबहुँक जाइ अखारे न लरहीं ॥ अनुज सखन युत कसरत करहीं
कबहुँक गहि निशाना मारैं ॥ मज्जन करि पुनि गृह पगु धारैं
देखि मातु अतिशय सुख पावैं ॥ नृपसुत भोजन हेत बोलावैं
मंजुछंद ० जेवन बैठे भूप मौलि निज संग सुवन लै चारी जी
सहित सनेह परूसन लागीं लषन लाल महतारी जी ॥ मोह-
न भोग मखाने की हवि मधुर मलाई धारी जी । खोवा खाँड़
खीरक खर पूरी खाजा खुरमा खारी जी ॥ मालपुवा माधुरि
मधु मिश्री मलि माखन में डारी जी । पन्नी धूप घर घरी पापर
पाक पिराक पनारी जी ॥ मोती चूर मूर के मोदक बोदक की
उजियारी जी ॥ मेमई सेव सेंजना सूरन सोवा सरस सोहारी
जी ॥ उज्जल भातु भटाकर भरता भाँति भाँति तरकारी जी ।

मूंग साबव मरहरकी पांहनी चनक कनक सम दारी जी। ब-
रीबरीक बरा बहु बिधि के कबरी कहु कर हारी जी। पाकरि
कन्नी फन्नी मुनि तरुकी कूष्मांड कच्चनारी जी॥ पानवर पाइ
पकोरी पालक पेठासन रुचिकारी जी॥ अरुई आंब अंबिर-
ती अरबस अंवरा अमित अचारी जी॥ गेटी रुचिर मिही मे-
दाकी छूनमें बोरि निकारी जी। मेथी मरस सोमिदल सरसों
मावा मुचि सुखारी जी॥ चौराइ लौराइ तोरई मुरइ मुख्वा
भारी जी। हुभ कौरी मुग छौरी रिकवछ इंड हरहीर छंछारी
जी॥ रवट्टी कढ़ी करेला कुंदरू केला फल फलहारी जी॥
गरी बदाम छोहारा किशमिश पिस्ता दाख अपारीजी॥ खिखसा
खीव चेड़ा घेवर धन गुञ्झा गुदि यारी जी। फनी फूल निमोना
डिंडसा रूसरलालू ग्यारीजी॥ जलित जलेव अंदरसा बुकुनू
दधि चटनी चट कारीजी। यहि विधि चारि भांति षटरस के व्यं
जन बिपुल सँवारीजी। कनक थार मनि जटित कटोरनि भरि
भरि धरे अगारीजी॥ पंच कवर करि जेवन लागे लखि हरषी
नृप नारीजी। शीतल जल सरयू कर बासित पीवत बारहु बा-
रीजी॥ कहत कौशिल्या भोजन कीजे बहुरि न पीजे बारी-
जी। गयन अघाइ माइ अब हमते तनको टरत नटारी-
जी॥ दशस्यंदन नन्दन सुखकारक जेंवि उठे उलिह बिचारी जी॥
अनुग आइ अचवन करवायो कर अंगुछायो भारीजी॥
दीन तंबूल अरगजा कुमकुम लीन्हीं अवध बिहारीजी। मीत अ-
साद दास दासिनि मिलि पायो सरब पछारीजी॥ जेहि जूठनिको
सुर मुनि तर मन पन मल कबहु न डारी जी॥ सोई जन ल
रघुनाथ भाव धरि पावत आरहु बारीजी। देव दनुज नर नाग राम युत ज-
न जग दाया अगारीजी॥ जो जेवनार राम की गावै तामुख की बलिहारीजी।

तोटक छं॰ कबहू बन जाइ सिकार ठनें। मृग यादि-क साउज नाहि हनें॥ जब सूकर नाहर दृष्टि परे। तुरते नि-ज बाजिन तें उतरें। लखि राम कहें हथियार धरो। यहि ले-ग्रब एकहि एक लरो॥ करि युद्ध पछारत जौन सखा। ते-हि देत इनाम श्रीराम लखा॥ निज धाम पठावत साउज-सो। घर आवत गावत राउज सो॥ रघुनाथ कहें यहि भाँति प्र-भू। नव नित्त चरित्त करें बरभू॥

चौ॰ एक दिन यक सूकर बन आवा॥ घुरघुरात प्रभु सन्मुख धावा॥ गहि पद पटक्यो भूमि भुजासू॥ छूटत भयो दिव्य बपु तासू॥ अस्तुति करि अस बचन उचारा॥ पूरब प्रभु मैं रह्यों भुवारा॥ एक दिवस तब जन लखि पावा॥ बस अभिमान न शीश नवावा॥ निन्दा करि निज मंदिर आयों॥ तेहि अपराध कोल तनु पायों॥ अब लख दरशा दूरि दुख भयऊ॥ अस कहि परम धाम कहँ गयऊ॥ एक दिन मैं नाहर ते भेटा॥ तेहि शठ प्रभु पर कीन चपेटा॥ साधि बाण मारा रघुराया॥ तनु तजि सो हरि लोक सिधाया॥ यहि बिधि बन सिकार मिलि जाई॥ पावन करें जीव रघुराई॥ खग मृग निरखि निकट चलि आवें॥ तिन्हें न कबहूं भूलि सतावें॥ जे उत्पात करें गति हेता॥ तिन्हें देइं हनि कृपा निकेता॥

दो॰ एक दिवस इक सिंह ने बधी बिप्र की गाय॥
गरजत डोले पुर निकट कोई पास न जाय॥

चौ॰ सुनि रघुपति कसि कटि पर बाधा॥ धनुष चढ़ाइ पानि सर साधा॥ मुदित जाइ सन्मुख ललकारा॥ खल हो सजग तोहि मैं मारा॥ इतना सुनि सन्मुख सो धावा॥ पंच बान मुख मारि गिरावा॥ तुरत भयो सो गंध्रब रूपा॥ बिनती करि निज हाल निरूपा॥ महाराज मैं गंध्रब अहऊं॥ इन्द्र सभा नित गावत रहऊं॥

एक दिवस नारद तहं आये ॥ नाथचरित तब बरणि सुनाये
तेहि समाज में हंस्यो ठठाई ॥ सुनि मुनि बोले बचन रिसाई

दो० सिंहनाद सम करत सठ होउ जाइ हरिहार ॥
मरिहैं निज कर राम जब तब होई उद्धार ॥
यहि तन पायों अमित दुख अब सब नाशे शोक ॥
अस कहि पद शिर नाइकै जात भयउ निज लोक ॥

चौ० तब नृप पहं आये रघुराई ॥ तहां विप्र ठाने मच लाई ॥
कहत सुरभि सोई मम दीजे ॥ भूपति भनत अपर बहु लीजे
तब रोषो बोले सुनु लाला ॥ करि तरु बहु दिन लागे पाला ।
गई बीति वय पुनि कहं आवे ॥ समय चूकि फिरि कापछिताबे
तेहि ते तजहु आस तेहि केरी ॥ अपर धेनु लीजे बहु तेरी ॥
तदपि न विप्र तजो हठ लाई ॥ देखा चहत राम प्रभुताई ॥
तब प्रभु कहा लषन ते जावो ॥ विप्र समेत ढूंढ़ि गो लावो ॥
चढ़ि रथ गये प्रथम यम लोका ॥ लखिउर भांतिन के सुख शोका
षोड़श भांति पूजि सनमानी ॥ हाथ जोरि बोले मृदु बानी ॥
नाथ कोन हित आयहु आजू ॥ आयसु होइ करिय सोइ काजू
बोले लषण विप्र की गाई ॥ दीजे आनि होइ जो आई ॥

सो० सुनि बोले यमराय । पांच कोस तक अवधमें ।
जो कोई मरि जाय । सो नहिं आवत धाम मम ॥

चौ० करम करत भल पोच घनेरे ॥ तिन कर न्याउ हाथ हरि केरे
जैसे राज सभा कर कोई ॥ तेहि ते कछु भल अनभल होई
तासु निसाफ करै सोइ राजा ॥ नाहिंन कछु कोतवालन काजा
सुनि रथ चढ़ि चलि भे तत काला ॥ जाइ बिलोके सकल पताला
पुनि चढ़ि सातों स्वर्ग ढुढ़ाये ॥ तेहि पाछे बैकुण्ठहि आये ।
रहत जहां श्रीपति भगवाना ॥ कीन दण्डवत तिन सनमाना ।

पूंछेते बरण निज हेता ॥ तिन तब कहा जाउ साकेता ॥
जोजन कोटि पचास अगारा ॥ रहत राम इच्छा आधारा ॥

दो॰ जहां न पावक पवन पवि चन्द्र सूर्य्य नहिं कोय ॥
रहत एक रस सर्बदा राति दिवस नहिं होय ॥

चौ॰ सुनि चलि भे देखा सो इ जाई ॥ बसत रतन मय छबि अधिकाई ॥
चारि द्वार तेहि पुर के हेरे ॥ बाजत बाजन भांति घनेरे ॥ ॥
उत्तर बसत महा बैकुण्ठा ॥ महा बिष्णु जहँ रहत अकुण्ठा ॥
बिरजा बिमल बहत पुर तीरा ॥ मज्जत सन्त सकल मति धीरा ॥
ज्योति एक जहँ जरत निराशा ॥ कोटि भानु सम तेज प्रकाशा ॥
योगी जन जेहिं सादर ध्यावें ॥ अन्त समय तेहि माहिं समावें ॥
पूरब द्वार जनक पुर सोहै ॥ दक्षिण चित्र कूट मन मोहै ॥
पश्चिम दिशि गोलोक निहारा ॥ जहां करत गोपाल बिहारा ॥
षोड़स संवत केरि अवस्था ॥ बपु छबि लखि मोहत मन स्था ॥
पहिरे भूषण बसन अमोला ॥ मृदु मुसक्यानि मनोहर बोला ॥

दो॰ पीत बसन बन माल उर कर मुरली मुखपान ॥
परिकर सहित समूह सखि सोहत श्री भगवान ॥

चौ॰ रहती हैं सुरभी तेहि माहीं ॥ पूछा जाइ लखन तिन पाहीं ॥
ब्राह्मण की कपिला इत आई ॥ सुनि दीन्हीं गिरधरन मंगाई ॥
मुदित मध्य साकेते आये ॥ मंदिर बिपुल बिचित्र सोहाये ॥
सो रचना निरखी कहुं नाहीं ॥ सो सब देखी ताके माहीं ॥
दिव्य रूप सब तहां के बासी ॥ षट बिकार बिन नित्य सुपासी ॥
आगे सीतहि देख्यो जाई ॥ रूप अनूप अमित प्रभुताई ॥
जासु अंश उपजे गुणखानी ॥ अगणित लक्ष्मि उमा ब्रह्मानी ॥
अगणित सखी करें सुठि सेवा ॥ अगणित अली लिहे कर मेवा ॥
अगणित अनुग करें परनामा ॥ अगणित सन्त उचारहि नामा ॥

अागरोत्त शक्ती हरि गुण गावें ॥ तिनमानेंतिस मुख्य कहावें ।
रोला छं० श्रीभू लीला क्रांति कृपा जोगाई ध्याना । उत्कृ-
ष्टा भीयनी चंद्रिका कूराज्ञाना ॥ पुन्या पर वी कला कीर्ति-
अह्लादिनि क्रांता । मा बिन्या शोभला लंविनी विद्यासाता
ईलानु ग्रह महोद्दया उन्नती सुबिमला । छाता नंदनि शुभद
सत्य सोका हित बिमला ॥ एशक्ती नेनींस सदा सिय भृकुटी
दिशिलरिव । करैं विश्वका काज सवन के महस महस सरिव ॥
चौ० इनसबहिन की कीरतिकरणी ॥ महारसायन में शिवबरणी
सहित विप्रललना शिर नावा ॥ करि सनमान निकट बैठावा
प्रीतम के गुण पूछन लागी ॥ कहे सकल लखमण अनुरागी
हाथ जोरि द्विज बूझत भयऊ ॥ स्वामी कोन कहो तब गयऊ ।
हमरे पति महि अवध मंझारा ॥ लील जासु नृप गृह अवतारा
कछु दिन में हमहूँ तहँ आई ॥ जनक नगर प्रगटव रूपगनाई
सुनि शोभन अति ही हरषाना ॥ रामें सकल लोक पतिजाना
अब तुम जानि भरमो मवधामा ॥ मूँदो नैन जाहु निज ग्रामा ॥
नयन मूंदि देरवें तहँ नाहीं ॥ बैठे राज सभा के माहीं ॥ ॥
बोले राम धेनु निजु पायो ॥ तब शोभन चरणन शिर नायो
धन्य धन्य तुम धन्य नृपाला ॥ धन्य तुम्हारे चरित कृपाला
प्रथमे में तब सुना प्रभावा ॥ जड़मति मन बिश्वास न आवा
ताहीं ते ठान्यो हठ भारी ॥ देरव्यों प्रभुता अमित तुम्हारी ॥
दो० तब सम दूसर न ईश कोइ तबपुरसरिसनग्राम ॥
तब चरित न सम चरित नहिं तवजुनामसमनाम ॥
चौ० मैं प्रभु कीनि ढीठता भारी ॥ सो क्षमिये जन जानअनारी
सुनि प्रभु हँसि बहु बिधि सनमाना ॥ तात करेहु जनि अनतबखाना
भले नाथ कहि निज गृह गयऊ ॥ पुरबासी सब हरषत भयऊ

यहि बिधि राम चरित्र निकेता ॥ करत चरित भक्तन सुख हेता ॥
एक दिन सुर ऋषि आवत हेऊ ॥ मग मिलि लोमस से अस कहेऊ ॥
चलो आजु श्रीरामहि देखो ॥ जीवन जन्म सुफल करि लेखो ॥
सुनि मुनि कह्यो सहित अभिमाना ॥ थिर ह्वै करो ब्रह्म कर ध्याना ॥

दो० यहि बिधि आवत जात बहु बिश्व बिषे रघुराइ ॥
इनते तो हमहीं भले अचल ब्रह्म रहे ध्याइ ॥
परब्रह्म श्रीराम हैं हरता अखिल दुख भार ॥
सुन्यो न जब तब देव ऋषि आये अवध मझार ॥

चौ० तेहि छन तहँ रामकी माया ॥ ब्यापी लोमस को यहि भाया ॥
उमड़े सिंधु सकल दिशि तेरे ॥ बहे ऋषि परि तिन के फेरे ॥
प्रथम प्रलय सम बच्यो बिचारा ॥ पैरत आये प्राग मझारा ॥
लख्यो अछै बट में हरि रूपा ॥ कह्यो मोहिं राखो सुर भूपा ॥
बोले हरि राखन हित तुमका ॥ है न राम की आज्ञा हमका ॥
इतने माहिं लहरि के साथा ॥ अपर अंड में गे ऋषि नाथा ॥
तहाँ अछै बट पर हरि पाई ॥ कह्यो कह्यो नहिं राम रजाई ॥

दो० ईमि अगणित अंडन बिषे गे लखि गहे न कोइ ॥
यमजातना सरीर सम पायो दुख अति सोइ ॥
तब मुनि कह्यो श्रीराम को जिनकी आज्ञा नाहिं ॥
लीन्ह्यों जिन साकेत पति जन्म अवध पुर माहिं ॥

चौ० तिनकी जाय बिनै जब करिहो ॥ तब तुम दुख सागर ते तरिहो ॥
नाम रूप अरु लीला धामा ॥ रहत नित्य ये होत न वामा ॥
हमें न ढूंढ़े मिली कृपाला ॥ लहरि संग पठयो तब काला ॥
जल आवरनु अवध चहु फेरा ॥ तंबू सम तानो तहँ हेरा ॥
पुरबासी सब सुख सों जहवाँ ॥ रहत बहत नहिं दुख कस कहवाँ ॥
तब लोमस ऋषि रघुपति केरी ॥ कीन्हीं बिनै भाँति बहु तेरी ॥

मुनिप्रभुसेवक लै बोलवायो ॥ रामहिं लखि मुनि शीस नवायो ॥
कह्यो नाथ बिनकृपा तुम्हारी ॥ कोइ कर तृन न सकै उठारी ॥
तुम सब नाथन के हो नाथा ॥ जीव दशा सब तुम्हरे हाथा ॥ ॥
चहो मसक को अज बनावो ॥ विधिहि मसक करि लोक भ्रमावो ॥
दो० अस कहि लहि आनन्द मुनि गौने निज थल फेरि ।
पंचसयंसिर लखि किये नारद को गुण हेरि ॥
सो० राम मंत्र को पाइ । आदि चरित रघुनाथ के ॥
बरयो तब ऋषिराइ । अस प्रभाव श्रीराम को ॥
चौ० एक दिन राम पतंग उड़ाई । देवलोक सो पहुंची जाई ॥
तहँ हरि सुत जयंत की नारी ॥ अति बिचित्र तेहि चंग निहारी ॥
दो० मन में किहिसि बिचारइय जासु गुड़ी अस आहि ॥
सो पूरुषरूस होइ धौं हँसि गहि लीन्हिसि ताहि ॥
चौ० तब प्रभु हनूमान ते भाखी ॥ देखो केहि पतंग गहि राखी
तुरत पवन सुत जाइ निहारी ॥ देहु छाड़ि पुनि गिरा उचारी ॥
बोली जासु चङ्ग यह आही ॥ दरशन तासु कीन्ह हम चाही ॥
नाही ते याको हम गहेऊ ॥ आइ अनिल सुत प्रभु ते कहेऊ ॥
सुनि हरि कहा कहो तुम जाई ॥ चित्रकूट महँ देब देखाई ॥ ॥
हनूमान चलि तासों भाषा ॥ दिहिसि छांड़ि मनकर अभिलाषा
तब रघुनाथ खैंचि सो लीन्ही ॥ निशि गृह आइ बियारू कीन्ही
मणिमें पलंग गयो बिछावा ॥ छीरफेनु सम बसन सोहावा ।
कीन शयन तापर जग त्राता ॥ प्रात जाय बोली दिगमाता ॥
भोर भयें जागहु रघुराई ॥ मुख छबि पर जननी बलि जाई ॥
रबिहि बिलोकि गयो तम भागी ॥ ज्ञान उदय जिमि मोह बिरागी
शशि नक्षत्र भे मलिन सुभाये ॥ जिमि सब गुण दालिद के आये
लागे लुकन निशाचर कैसे ॥ हरि सुमिरण ते पातक जैसे ॥ ॥

उठे फूलि सरसिज रबि देखी ॥ जैसे सुजन सुजन कहँ पेखी ॥
तिनपर मधुप करत गुंजारा ॥ जनु तम बपुधरि शरण पुकारा
बोलत बिहंग बिबिध बिधि टेरे ॥ मानहु मुनि बहु गुणगण तेरे ॥
प्रमुदित कोक कुमुद बिलखाने ॥ हानि लाभ जिमि पाइ सयाने ।
अनुज सखा बोलत यहि भाँती ॥ जिमि चातृक चाहै जल स्वाती
बन्दीगण बिरदावलि भाषें ॥ याचक द्वार खड़े अभिलाषें ॥
सुनत उठे तब अवध बिहारी ॥ देखि मातु आरती उतारी ॥ ॥
मित्र बंधु सेवकन पद बन्दे ॥ दानपाइ याचक आनन्दे ॥ ॥
पुनि सरयू तट जाइ नहाने ॥ सब बिधि साधु बिप्र सनमाने ॥
जहँ तहँ सुनें कथा करि नेहा ॥ करि प्रणाम आवें पुनि गेहा

दो० एक बार रघुनाथ लै संग सुजन समुदाइ ॥
तीर्थाटन करि सबन को दीन्ही बिशद बड़ाइ ॥

इति श्रीविश्रामसागरसबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासराम
सनेही कृत रामचरित्र बर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
घटजसंहिता कर मत कहौं कछुक रुइ बखानि ॥
एक दिन प्रभु लागे करन निज स्वरूप कर ध्यान ॥
पवन तनै अवलोकि इमि मन में कृत अनुमान ॥

चौ० इन्हें सुना हम सब के स्वामी ॥ ब्रह्मादिक जाके अनुगामी ।
सुमिरण ध्यान करत हैं सोऊ ॥ इनहु के ऊपर है कोऊ ॥ ॥
पूछत प्रभु ले तिन हँसि काहा ॥ परब्रह्म किमि जानै चाहा ॥ ॥
निकटौ दूरि निबाहु न होई ॥ जैहौ क्षिप्र न मग कछु कोई ॥ ॥
मुंदरी दे उत्तर दिशि पेरा ॥ कुधर खण्ड बन हले घनेरा ॥
लोकालोक अद्रि के आगे ॥ अंधकार पावक थल त्यागे ।
सत संवत परगये निकेता ॥ बुढ़िया एक मिली तहँ सेता ॥

ब्रह्म कहां मृतलोक पधारे ॥ सहस मांज भे दशरथ बारे ॥ ॥
पुनि देखे रघुपति आसीना ॥ विधि हरि हर सेवत पद लीना ॥
दो० करत दण्डवत पुनि तहां कोई परयो न देखि ॥
पीताम्बर को खूंट ले आये अवध बिशेषि ॥
चौ० करत प्रणाम राम हंसि कहेऊ ॥ आयो देखि ब्रह्म कस रहेऊ
कह कपि तुमही हो सब ठौरा ॥ तुमते परे न है कोइ औरा ॥
बोले प्रभु तुम पहुंचे नाहीं ॥ अबहीं फिरि आयो मोहिं पाहीं ॥
तब पवनज पद चिन्ह देखावा ॥ रघुपति कर खरिडत तेहिपावा ॥
गिरे चरण कहि धनि तब लीला ॥ जन मन संशय शमन सुशीला ॥
दो० एक दिन पद चापत गुन्यो इन्हें श्रुति कहे अरूप ॥
हे अरूप पुनि श्रुति विनय देखरायो निज रूप ॥
चौ० एक दिन सखन सहित रघुबीरा ॥ खेलत ते सरयू के तीरा
बिहंग रूप धरि रावण आवा ॥ घात पाय प्रभु चहत उठावा ॥
जानि राम बिन फर सर मारा ॥ गिरा जाइ निज लंक मझारा
सात दिवस पर मुरछा जागी ॥ समुझि प्रताप लाज उर लागी ॥
तब दूतन ते कहि सि बोलाई ॥ तपसिन ते लावहु कर जाई ॥
आयसु पाइ आइ हठ कीन्हा ॥ मुनि भरि कुम्भ रुधिर तिन दीन्हा ॥
कह्यो जाइ रावण के पासा ॥ यहि घट ते होई कुल नासा ॥
गगन जाइ दसमुख सुनाई ॥ आवहु गाड़ि जनक पुर जाई ॥
शंभु सभा श्रुति बाद मझारा ॥ प्रथम रहा जनक से हारा ॥
तेहि गसते तहं कुम्भ पठावा ॥ दूत गाड़ि मिथिला पुर आवा ॥
हरि इच्छा तहं परयो दुकाला ॥ बिन जल भे सब जीव बेहाला
लखि बिदेह बुध लीन बोलाई ॥ बूझे ते तिन युक्ति बताई ॥
उदक हेत शुभ यज्ञ करावो ॥ कनक केर ले हल बन वावो ।
जोतो अजिर सहित निज रानी ॥ होई वृष्टि सकल सुखदानी

दो० सुनि नृप कीन्ही युक्ति सोइ जोतत अवनि प्रकार॥
प्रगट्यो सिंहासन सुभग अद्भुत तेज अपार॥
चारि सखी चारों तरफ लीन्हें मुरछल हाथ॥
मध्य विराजत भूमिजा रूप राशि रघुनाथ॥
वेदवती रिपुबधन हित तजन देह तम्हि अंश॥
एक रूप है प्रगट भइ आदिशक्ति निमिवंश॥

चौ० देखि विदेह बिनय तब ठानी॥ भई तुरत कन्या लघुजानी
सखिन सहित सिंहासन सोई॥ अंतर ध्यान गयो तब होई॥
रोदन सुनत सुने ना रानी॥ लीन उठाइ गोद सुख मानी॥॥
सुनि पुरजन सब भये सुखारी॥ देखन उठि धाये नर नारी॥
भूपति दान दीन विधि नाना॥ यथा मनोरथ जाकर जाना॥
दिन दिन कन्या बर्धत कैसे॥ शुक्ल पक्ष कर चन्दा जैसे॥
छठीं बारहीं अन्न परासन॥ कीन नरेश निगम अनुशासन
नामकरण दिन नाम कढ़ावा॥ बुधन जानकी नाम बतावा॥
नारद आइ धर्यो तब सीता॥ जगत जननि सब भाँति पुनीता
सुररंजन भंजन खल हेता॥ प्रगट भई नृप तव संकेता॥
सकल लोक पति प्रभु सुखराशी॥ मिली इन्हे बरसों अविनाशी
औरो लक्षण युक्ति समेता॥ कहि मुनिवर गे ब्रह्म निकेता।
सुनि ऋषि बचन माल गुहि लीन्ही॥ सो निज उर सिय धारण कीन्ही
जनक बंधु जा सखिन समेता॥ देखें जहं तहं रूप निकेता।
बाल वृद्ध यौवन नर नारी॥ लागहि सबै प्राण से प्यारी॥॥
पुनि नृप शिपुरा पद लबैठाई॥ अचिर काल सब विद्या पाई
यह चरित्र भाख्यो भव सेतू॥ अब सुनु सिया स्वयम्वर हेतू।

दो० एकसमय मिथिलेश प्रति प्राकर कर तप कीन॥
आइ कह्यो हर मैं गुबर तब नृप बोलय लीन॥

नाथ इष्ट जो आयुकर जेहि श्रुति नेति बखान॥
तहिं देखों भरि नयन में यह बर देहु निदान॥
सुनि शिव दीन्ह्यों धनुष जो मिला रहे शिवसाथ॥
कह्यो कि पूजेहु यही ते मिलिहैं आइ ममनाथ॥

चौ० सुनि विदेह प्रभु हित अनुरागे। नित नेम करि पूजन लागे।
यक दिन सिय सेवा ढिग जाई॥ लीलें लीन्ह्यों धनुष उठाई।
देखि जनक अति अचरज माना॥ तेहि छिन नृपहिं कठिन प्रण ठाना
जो लेई शिव चाप चढ़ाई। सो नृप मम कन्या बरि पाई॥
लिये बोलि कारीगर भूरी॥ रंगभूमि रचि तिन रूरी॥॥
चहुं दिशि चामीकर अस्थाना॥ तासु मध्य मणि मय मंचाना
दश सहस्त्र मिलि मल्ल बिशाला॥ लावत भय धनुष मखशाला
देश देश प्रति पत्र पठाये॥ सुनि सुनि भूप अपने गन आये
बन उपवन पुर पंथ निकेता॥ उतरे निज निज सैन समेता॥
सुनि दश मुख बाणासुर आवा॥ प्रथमे निज निज पौरुष गावा
रावण धस्यो धनुष तब जाई॥ बहु बिधि बल करि रहा उठाई
उठा न नेकु चप्यो कर गाढ़े॥ अति बल कीन कढ़ा तब काढ़े
सभा मध्य करि कपट बहाना॥ जात भये निज निज अस्थाना
भूपहु दिन प्रति बिपुल उठावैं॥ टरै न जब तब दुंदि मचावैं॥
यहि बिधि बीते कैयो मासा॥ अब सुनु मुनिवर की इतिहासा
गाधिसुवन नन्दन बन रहहीं॥ यज्ञारंभ कीन जब चहईं॥॥
तब तब असुर करहिं अपकारा॥ लखि मुनिवर निज हृदय बिचारा
भानुवंश प्रगटे रघुराई॥ लोचन सफल करहु तहँ जाई
लावहु मांगि सुभग दोउ भ्राता॥ ते दलिहैं खल हैं मखत्राता
क्वार कृष्ण ऋषि दिवस सिधाये॥ नौमी दिन कोशलपुर आये
देखी बनानि अवधपुर केरी॥ तीनि लोक ते सकल अघेरी॥

पुर चहुं ओर कनक कर घेरा ॥ उपवन बाग मनहु मधुसेरा ॥
बसुदिशि बसु दरवार बिराजै ॥ आठ आठ सेना पति राजै ॥
रहैं बेद घाट का परमाना ॥ जाहिं भवन जब आवैं आना ।
बिधि हरि हर धनपति रह एका ॥ बसत मनो धरि रूप अनेका ।
वापी कूप तड़ाग घनेरे ॥ मणि सोपान मधुर मधु नेरे ॥ ॥
बिस प्रसून बिकसे बहु रंगा ॥ कूजत खग गन गूंजत भृंगा ॥
मणि मय महल बिशाल अपारा ॥ मानहुं नभ तिन ऊपर धारा
चित्र बिचित्र अनेक बनाये ॥ कनक कलस शशि सरिस सोहाये
ध्वज पताक तोरण नव टाटा ॥ देहरी बिद्रुम कुलिश कपाटा
चहुं हट हाट फराकन हींची ॥ बीथी सकल सुगंधनि सींची
आवत जात निकर नर नीके ॥ गज रथ बाजि भावते जीके ॥
बाजन बिबिध भांति के बाजैं ॥ मत्त गयंद अनेकन गाजैं ॥
कतहुं मल्ल गण भिरैं प्रचारी ॥ कतहुं गीत गावैं मिलि नारी ।
कतहुं बिप्र बर बेद बिचारैं ॥ कतहुं सन्त जन नाम उचारैं ।
कतहुं हंस सुक सारिक बोलैं ॥ कतहुं केकि पारावत डोलैं ।
मध्य ग्राम नृप धाम अनेका ॥ बननि बिशाल एक ते एका
भूप सभा शुभ की रुचिराई ॥ देखत बनै बरणि नहिं जाई

दो० आवैं जांइ अनेक नृप झुकि झुकि करैं प्रणाम ॥
राजत कोशल राज जहं सुरपति ते अभिराम ॥

चौ० उत्तर दिशि सरयू सरि बहई ॥ अमल अपाप आप सो अहई
आशु अधोगति कुचित बचाले ॥ औरहि देत ऊर्द्ध पद हाले
बांधे घाट मनोहर नाना ॥ जहं तहं जीव करैं असनाना ॥
निकट निवास मुनिन के रूरे ॥ सुमन बाग तुलसिका हजूरे
देखत मुनि बर पुर की शोभा ॥ सरयू तट आये मन लोभा ।
मज्जन कीन मुदित जल खावा ॥ हरषि आगमन स्तुति सुनि पावा

सचिव सहित तहँ आवत भयऊ ॥ कौशल मान मदन लै गयऊ ॥
नाये सब शाखिन पद शीसा ॥ दीन्ही मुदित मुनीश असीसा ॥
गहे चरण पुनि चारों भाई ॥ पृथक पृथक है आशिष पाई ॥
भये प्रेम बस रामहि देखी ॥ चपल दृगन परिहरी निमेखी ॥
जोड़ि भाँति पूजि महिपाला ॥ बोले वचन नाइ पद भाला ॥
भूरि भाग हम तुम्हें निहारा ॥ कृपा करि कहौ केहि हित पगु धारा ॥
सुनहु नरेश तपोवन माहीं ॥ करन देत मख निश्चर नाहीं ॥
तेहि हित याचन आयौं ताता ॥ दीजे राम लखन दोउ भ्राता
सुनि मुनि वचन बान सम लागे ॥ बोले भूप सँभरि भय त्यागे ॥

दो० याचक जन नाहक किये जगत पिता संसार ॥
हित अनहित न निबाह कछु माँगन ही को कार ॥
विविध यतन कीन्हें मिले चौथे पन सुत चारि ॥
निपट निठुर निरमोह तुम माँगहु नाहिं विचारि ॥

चौ० कहँ सुकुमार सुवन मम बारे ॥ कहँ गिरि सरिस असुर भयकारे
जे धनुसर गहि जानत नाहीं ॥ ते कैसे लरिहैं रण माहीं ॥
राम सनेह सहित सुनि बानी ॥ हँसे प्रसन्न पुनि कह मुनि ज्ञानी
नृप देखत हैं राम नन्हाले ॥ अहहिं सबल अति चतुर सयाने
इनकर रूप प्रताप जहाना ॥ जानत तव गुरु सरिस महाना ॥
तिहि ते देहु लेहु करि नामा ॥ याही हेत धर्यो वपु रामा ॥ ॥

दो० तुम कहँ याचक जगत में आदि बिधाता कौन ॥
मानहिं भूपण दानि के को बरतास लघु पौन ॥

चौ० कह नृप सत्य झूठ कछु नाहीं ॥ राम प्राण प्रिय दिये न जाहीं
हम तव संग चली सजि साजा ॥ तुम ते नहिं होई यह काजा ।
धरणि धाम धन चहो सो लीजे ॥ केवल त्यागि राम कहँ दीजे
मोह विवश है करत विवादा ॥ त्यागत निज कुल की मर्यादा ॥

इतना कहत क्रोध उर जागा॥ महि पताल नभ हालन लागा॥
सुनत अहि सब उठे डराई॥ चाहत होन प्रलय का भाई॥
तब वशिष्ठ मृदु वचन प्रकासा॥ कीजै कृपा जानि निज दासा॥
राजा से बोले सुनि लेहू॥ बालक इन्हें मुदित मन देहू॥

दो० इन ही के तप तेज बल बधित मच यमखलरासि॥
ऐहैं अल मंगल सहित सर्वे विजय शिव सासि॥

चौ० सुनि नरेश तब सहित सनेहा॥ दीन्ह सौंपि सुवन कहि येहा॥
नाथ हाथ वारन मम जाता॥ तुमहीं हो इनके पितु माता॥
विश्वामित्र लेहि दोउ भाई॥ मानहु रङ्क महा निधि पाई॥

छं० मानो महा निधि पाइ तब मुनि रायहू संतुष्ट जू॥ बोले अहो तुम धन्य नृप निज राज नव में पुष्ट जू॥ हे अर्थ सब तव सिद्धि याते धर्म रत चित जो अहो॥ मुनि सुख लीन स्वधीन दीन मलीन पथ नाहीं गहो॥ जो पूर्व पित्र पिता महादिक कीरही सद्वृत्ति जू॥ सो अर्थ धर्म सुकाम में तब भई नहिं निरवृत्ति जू॥ मोहि देत रामहिं किहेउ कष्ट सो नष्ट पथ नाहीं अहे॥ रघुनाथ प्रेम बिहीन कोऊ धर्म फल पायो अहे॥ तुम गहत हो नहिं काल कोन्यो सूद्र मूढ़न की दसा॥ पल्लवत फूलत फलत मुख सों सर्व रस तुम्हरी रसा॥ सत शौच धीरज दया मृदु तप तोष क्षमा गम्भीर हो॥ निरमान मति बलवान ज्ञान निधान हर पर पीर हो॥ वश करत भीति देखाइ भीरु अस्त हित गहे बिनय हो॥ समनून को करि तेज रावत स्ववस तुम दिन दिने हो॥ तुम भ्रात पितु गुरु मित्र को रिपु वीर लखि वधकरत हो॥ अरि अन्त लक सम सन्तनति बचन प्रिय अनुसरत हो॥ तुम मारि प्रनि पक्षीन पाछे कृपा करि कृत बोध हो॥ मुनिच-

लत पथ को कर्म लायक देत फल करि सोधहो ॥ जिश्वा
स हू के मरन ते नहिं रहत कबहुं निधंक हो । है जासु नहिं
बिश्वास तासों सदा शंकित अंक हो ॥ जे चार लायक ति-
न्हें करि के चार भेजत देशहो । बहु भेष धरि ते खबरि ला-
वत लखत तेहि तुम बेस हो ॥ तुम सदा रहत प्रसन्न सब
से निठुर कारज काल हो ॥ करि मंत्र राखत गुप्त सन्तत सा-
व धान न्पाल हो ॥ तुम जात दीन नदीन पै कुल कार्य्य च-
हत न साथ हो । निःशेष कार्य्यन करत पर को रखत कछु
निज हाथ हो ॥ तुम प्राप्त भय को देखि तासों होत अभय सं-
हारि हो । जो कार्य्य आगे हेतु गतिहि प्रथम लेत बिचारि
हो ॥ पुनि देश काल स्व भाग्य माफिक कार्य्य में मनु दे...
हो । करि साधु बिप्रण तोष आशिर बाद तिन सों लेत हो ॥
तुम त्यागि मत नास्तीक तालस लखत आमद खर्च हो ।
गज अश्व गढ़ भट कामकारक आदि सुरकी अर्च हो ॥ श्र-
म घोर फल बहु बिधि सो जानत प्रजन के पुर नाम हो ॥
रघुनाथ माला कार सम तुम करत जग को काम हो ॥ जल
असन धन पट अश्व अतुपम किये बहु अर्जिन सही ॥ हैं
भूप जे तब वश्य तिन को संग नित लीन्हे रहो ॥ निरबंधु पं-
गु अनाथ इन को करत नित पालन अहो । बुध बेद मंत्र
न को भिवादन करत करि लालन चहो ॥ कर लेत बनिक-
न ते तिन्हे घर कुशल पहुँचावत अहो । रण दान में नहिं
गहत लालच चपलता मन में गहो ॥ हो लेत कारज जासु से
तेहि देत सम्पति भूरि हो । हरिभक्त मन बच कर्म रहत अध
में ते निन दूरि हो ॥ निज कुटुम्ब पाल समाज सुखप्रद भये
सुत जिनके हरी । हौं सकत तेहि न प्रशंसि देत अशीश जीय हुलस भरी ॥

चौ० पुत्रन हित करो शोच न किनका ॥ कोऊ न है दुखदायक इनका
सुनिकै सकल मातु अकुलानी ॥ करि हैं विघ्न न राम जिय जानी
तुरतै प्रभु निज माया पेरी ॥ तेहि तब हरी प्रीति सब केरी ॥
दुखा रही दिन धारणा करिकै ॥ पुरवासिन के धीरज धरिकै ।
पहिरि वसन भूषण प्रति अंगा ॥ कटि तरकस कर सर सारङ्गा
जननि जनक पद शीश नवाई ॥ पाइ अशीश चले हरषाई ।
चलत दीन हनुमानै छोरी ॥ कछु दिन में बन मिलब बहोरी
कहत सुनत इतिहास हरी का ॥ देख्यो आइ तपोवन नीका ।
परि गा दिवस ताड़ुका धाई ॥ रामहि मुनिवर दीन देखाई ।
लखिगे प्रभु अब लोकत नारी ॥ द्विज द्रोही बध दोष न भारी
बैरोचन जा दीरघ जिह्वा ॥ सुरपति तेहि मार्यो लखि लिह्वा
भृगु भामिनि निष्ठुर हितकारी ॥ नारायण तेहि आपु संहारी
परसराम गंजी निज माता ॥ तिमि तुम याहि हतो गनि दाता
गुरु आयसु सुनि नीति निधाना ॥ बरजि तून ते काढ़ो बाना ।
दो० कढ़त एक धनु चढ़त दश कर्षत भे शतबाण ॥
तजत सहस तन लाग हे लक्ष गये तेहि प्राण ॥
चौ० तनु छूटत भे सुन्दर भामा ॥ अस्तुति करत गई हरि धामा
लखि प्रभाव मुनि माया कीन्ही ॥ विद्या निधि का विद्या दीन्ही
जेहि ते लागन छुधा पियासा ॥ अस्त्र शस्त्र विधि तेज प्रकासा
पुनि मुनि ते बोले रघुराई ॥ निरभै यज्ञ करो तुम जाई ॥ ॥
आयसु पाइ करन मख लागे ॥ बैठे प्रभु रक्षा हित आगे ॥
खबरि पाइ सुबाहु मारीचा ॥ धावा बिपुल संग लै नीचा ॥
गीतिका छं० धावा बिपुल लै नीच बीचहि राम बिन फ-
र सर हन्यो । शत योजन नाग्र बिचारि कारज पार सागर के ग-
यो ॥ पुनि अग्नि अस्त्र सुबाहु मार्यो लषण सब सैना हनी ।

हरषे सकल सुर सन्त बरषि प्रसून कहि रघुकुल मनी ॥
इति श्री बिश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दा-
स राम सनेही कृत विश्वामित्र मखरक्षणो नाम बरवो ऽध्यायः६

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ।
अगिनि बेष मत कहौं कछु पद्म पुराण बखानि ॥
करि अबिघ्न मख अथ दोउ मैथिल हेनि ग्रंथीश ॥
रहे तहाँ निज दूत सुनि पठयो निरहुत ईश ॥ ॥

चौ० दूत आइ मुनि बैर सुनायो ॥ मिथिल समाज बिदेह बोलायो ॥
हेत समुझि बोले मुनि बाता ॥ देखन चलहु धनुष मख ताता ॥
भले नाथ कहि कृपा निकेता ॥ चले गाधि सुत ऋषिन समेता ॥
हरि दिन एक शिला लखि पाई ॥ कह मुनि पद प्रभु देहु छुआई ॥
कारण कौन सकल मुनिराणी ॥ गौतम श्राप पाक रिपु करणी ॥
एक दिन इन्द्र सुरन ते कहेऊ ॥ मम त्रियते बरतिय कहुं चहेऊ ॥
देखन रवि रबि शशिहि बतायो ॥ अधिक अहिल्या मुनितहं आयो ॥
सुनि सुनि गे तम चुर समबानी ॥ गौतम बपु बासव रति ठानी ॥
कह्यौ गंग छल तुमरे गेहा ॥ भवन आइ लखि कह बच नेहा ॥
एक भग हित तुम आयो हमेरे ॥ होइ सहस भग सब तन तुम्हरे ॥
कह्यौ अहिल्या ते पवि रूपा ॥ है मन कष्ट सहौं सुर भूपा ॥
बिनय सुनत बोले हरि चरना ॥ छुवत तोर होई निस्तरना ॥
इन्द्र स्तुति सुनि कह मुनि भारी ॥ धनु धुनि सुनि होइहैं सब आँखी ॥
बहु दिनते पथ लखत बिचारी ॥ सुनि प्रभु पदरज दीन निहारी ॥
परसत चरण भई बर नारी ॥ सन्मुख है अस्तुति अनुसारी ॥

दो० जय जग दीपक सर्व पर प्रेरक प्रकृति प्रभाव ॥
अद्वै ब्रह्म अनादि सुर राम अकाम सुभाव ॥
त्वत्पद पल्लव महत्पद पुराण यश श्रित जेव ॥

भवंधिबत्स पद परम्पर पद बिपदानहिं नेशु ॥
जे बिषइक जग जीव जड़ कर्म क्रिया युत भक्त ॥
ताही के मद ते छके माया मोहित ज्ञान ॥ ॥
तेनर आश्रित होत नहिं तव पद पङ्कज नाथ ॥
भूली सुधि शुभ पन्थ की बिचरत कुपन्थ सेहाथ ॥
चौ० पुनि करि बिनय भक्ति बरपाई ॥ हरष सहित पति लोक सिधाई ॥
मुदित सकल लखि गौतम अभिरामा ॥ जाइ गंग तट कीन प्रनामा ॥
पूंछा प्रभु किमि आई गंगा ॥ कौशिक मुनि कह सकल प्रसंगा ॥
भूप भगीरथ तप करि लाये ॥ पुरिखा जेहि बिधि स्वर्ग सिधाये ॥
जासु प्रभाव मुनिन बहु गावा ॥ सोइ सुबोधि ताके हिं नहिं पावा ॥
मुनि समाज सप्रेम नहाने ॥ दीन दान भूसुर सन माने ॥ ॥
मुनि सब ऋषिन सहित रघुबीरा ॥ पहुंचे जाइ जनक पुर तीरा ॥
दो० देखे बन उपबन बिबिधि बापी कूप तड़ाग ॥
मानि सो पान पियूष जेहि पान करत श्रम भाग ॥
धामी करबर सबन के चोहट हाट अनूप ॥
धनिक बणिक बैठे मनहुं धनद धरे बहु रूप ॥
मिथिला नृप के महल की शोभा किमि कहि जात ॥
जहं बिहरत श्री जानुकी अखिल लोक की मात ॥
दमयन्ती रति बिधु मती जान रूप भुलि जात ॥
लाजत मदन मयंक लखि सीता जू को गात ॥
रबि ते मरी शशि शम्भु ते जो बावन ते गंग ॥
लही अधिक छबि त्यों लही निमि कुल सीय जसंग ॥
जहं तहं टिके नरेश बहु बाल बाहन जिन साथ ॥
शुचि आश्रम लखि मुनिन युत उतरे तहं रघुनाथ ॥
सो० खबरि पाइ मिथिलेश ॥ सहित सचिव भट भूरि द्विज ॥

आये जहां अयधेश। नाये मुनिपद शिर सबन॥
चौ० दीन असीस निकट बैठाये। बूझी कुशल दरश नव पाये
रामलषरण कर रूप निहारी॥ जनक सहित सब भये सुखारी
जोरि पाणि बोले मुनि नेरे॥ नाथ कहो ये सुत किन केरे॥ ॥
मुनि कुल तिलक कि नृप कुल जाये॥ कीदोउ ब्रह्मरूप धरि आये
इन्हे देखि मोहि भा सुख जैसा॥ नहिं प्रथलाग ब्रह्म सुख तैसा
की भरि जन्म योग हम कीन्हा॥ ताका फल बिधिवत बिधि दीन्हा
कह मुनि सत्य कह्यो तुम ताता॥ येप्रिय सबै जहाँ लगु गाता॥
कोशलेश दशरथ बल जाका॥ जानत दश मुख सुरपुर साका
तिन के तनै मनोहर चारी॥ लक्ष्मण राम भरत रिपु आरी॥
उभै रहे अवधेश निकेता॥ लायों मांगि मिथुन मखहेता।
असुर मारि मम यज्ञ कराई।पद परसत मुनि तियगति पाई
धनुष यज्ञ सुनि नव पुर आये॥ भले नाथ दृग सफल कराये
निज समाज ते पुनि सुख दानी॥ गाधि सुवन की कथा बखानी
इनकर बिभौ जात नहिं जाना॥ तेज पुंज अति क्रोध महाना
जासु समुझि तप तेज बिधाना॥ अजहूं डरत रहत सुर नाना
मुनि बशिष्ठ के पुत्र अनेका॥ जिन मारे नहिं छोड़े एका॥ ॥
जन्मि क्षत्रि कुल भे द्विजबर्णा॥ सृष्टि दूसरी लागे कर्णा॥
तप बलते जिन नदी अमाना॥ करी कौशकी पुराय महाना
गोत्र संकु करि गुरु अपराधा॥ दियो शरण ताको निरबाधा
ऐसे जिनके कर्म अनेका॥ सुनि मुनि बोले सहित बिवेका
दो० एक लोक परलोक नहिं यक परलोक न लोक॥
एक सुखी दोउ लोक में तिन मा तुम गत शोक॥
चौ० सुनहु भूप सब भूप कहावैं॥ निज रक्षा कोइ करि न सकावैं
तुम साधे नृप दूनहु लोका॥ करत भयो सब प्रजा बिशोका

नाथ कृपा कहि सहित समाजा ॥ आनि उतारे शुभ थल राजा
षोड़श भाँति पूजि सह चेता ॥ हरष सहित तब गये निकेता

दो० पहर तीसरे कह्यो प्रभु मुनि पद शीश नवाइ ॥
लषण दीख चाहत नगर आवहु तात देखाइ ॥

चौ० आयसु पाइ चले दोउ भाई ॥ खबरि सकल पुरबासिन पाई
बालक वृद्ध तरुण नर नारी ॥ धाये निज निज काज बिसारी
देखें जब रघुपति बपु आई ॥ अंग अंग प्रति रहे लोभाई
करहिं बात सब आपुस माहीं ॥ इन सम रूपवन्त कोउ नाहीं
विधि हरि हर हैं विश्व विशाला ॥ ते मुख चारि भुजा बिकराला
मदन अतनु शशि रहत न पूरा ॥ अपर जीव अस को है रूरा
कोइ कहै धन्य नगर इन केरा ॥ संतत जहं ये करत बसेरा ॥
धन्य सकल पुर बासी अहहीं ॥ जब तब जे अवलोकत रहहीं
कोइ कह धन्य मातु जिन जाये ॥ कोइ कहै धन्य दरश हम पाये
कोइ कहै भागवती नृप जाई ॥ विधि जस कातस देत मिलाई
कोइ कहै अबै कठिन है कामा ॥ कोइ कहैं धनुष तोरिहैं रामा
कोइ कहै ए बालक महि घोरा ॥ देखन छोट अहैं बरजोरा ।
जिन मग शिला उधारी एका ॥ मख हित मारे असुर अनेका
कोइ कहै एसहि करे विधाता ॥ तो हम का सबका सुखदाता

दो० बारागी रूप अनूप बर बरता बाम ते बाम ॥
कहैं बाम विधि विधि करी बाम देव धनुबाम ॥

चौ० कोइ कहै इन्हे भूप जब देखी ॥ तजि प्रण करी विवाह विशेखी
कोइ कहै प्रथम नरेश निहारे ॥ प्रण नहिं तजी लाज के मारे ।
कोइ कहै धर्म कर्म भल सोई ॥ जेहि पाछे पछिताव न होई ।
कोइ कहै मनमे करो उछाहू ॥ होइ राम सिया कर ब्याहू ।
कोइ कहै जो विधि बम अस होई ॥ तो कृतकृत्य होइ सब कोई

बार बार नृप सुता बोलेहैं ॥ देखब जन तब चालन सेहैं ॥
कोइ कहै हम चाहैं नृप ढोटा ॥ होइ न कबहूं नयनन ओटा
कोइ कहै भाग बड़ो अस माई ॥ सूची में नहिं सिंधु समाई ।
जौ न होत बड़ि भाग्य हमारी । तौ न मिलत मिथिला पुर प्यारी
दो० फिरि कीसी थिरकी फिरैं बिरि फिरत अति नर नारि ।
थिरि किनि तजि रघुनाथ छबि निरखैं पलक बिसारि ।
चौ० जब जेहि नयन ओट चलि जावैं । भई हानि अस बचन सुनावैं
एक कहै तुम भले निहारे ॥ भइ सखि बैरिनि लाज हमारे ॥
आवत निकट बदन पट दीना । भरि नयनन अब लोकिन लीना
एक कहैं बर बस मन मोरा ॥ हरि लीन्ह्यो सांवरो कि गोरा
एक कहै अस जग में को है ॥ इन्हे बिलोकन जो न बिमोहै ।
कोइ कहै सत्य बचन सखि तेरे ॥ इन चित चोरि लियो सब केरे
अब धौं बिधि कब दरश देखाई ॥ रंग भूमि फिरि देखब जाई
कोइ कहै सपने की निधि जानो ॥ बिन श्रम अंध बादि सुख मानो ।
कोइ कहै जो बिधि होई दाहिन ॥ तो इन ते धनु उबरे चाहिन
नाहित दरश दूरि इन केरे ॥ अबला बपु कछु होत न हेरे ॥
यहि बिधि निज निज मति अनुहारी ॥ करैं बात जहं तहं नर नारी
शोभा सागर अनुज समेता ॥ सुलभ दरश सब काहु देता
रंगरास पुनि देख्यो आई ॥ रुचिर बिचित्र रचना मन भाई ॥
बालक जो जेहि ओर बोलावैं ॥ प्रेम बिबस प्रभु तेहि दिशि जावैं
सब के नाम कहैं मृदु बचना ॥ तुम भलि तात देखायो रचना ।
दो० जाकी इच्छा ते रचत माया अंड अनेक ॥
सो प्रभु चितवत चकित चित भक्त बत्सल हित एक ॥
लोचन सब के सफल करि लक्षण सहित रघुनाथ ॥
उतरे जहं तहं आइके मुनि पद नायो माथ ॥

गई निशा सोयि सकल शौचक्रिया करि प्रात॥
समै पाय आयसु चले सुमन लेन दोउ भ्रात॥

त्रिभंगी छं॰ पहुँचे नृप बागा सह अनुरागा देखन लागा अति नीका। जामें ऋतु राजा सहित समाजा रहत विराजा नित हीका॥ नाना तरु फूले सफल समूले मधुकर भूले गुंजारें। खग विविधि कलोलें जहँ तहँ बोलें जनु निज टोलें हंकारें॥ सर मध्य सोहाना मणि सोपाना जलचर नाना नाक मल लसें। तेहि तट अति नीका सदन सती का छबि जन जी का चोरि बसें॥ अतुलित फुलवाई सकल मझाई पुनि दोउ भाई प्रेम पगे। माली गण जेता पूछि सचेता मुदित सुमन दल लेन लगे॥

दो॰ तेहि अवसर सीता तहँ आई सखिन समेत॥
मातु पठाई मुदित मन गिरिजा पूजन हेत॥
मज्जन करि सर सखिन युत गई गवरि के धाम॥
पूजि यथोचित मनहि मन माँग्यो बर अभिराम॥

सोरठा एक सखी तजि संग। देखि बालक जाइ दोउ॥
आई सहित उमंग। बूझे ते बोलत भई॥

चौ॰ सुनहु सखी यहि बाग मँझारा॥ आये हैं द्वै सुभग कुमारा॥
गौर श्याम छबिधाम किशोरा॥ चितवत चित चोर्यो जिन मोरा॥
रूप अनूप सकों किमि भाषी॥ नैन अबैन बैन बिन आँखी॥
कह्यो एक हे हे सखि सोई॥ जिन मोहे पुरजन सब कोई॥
बर्णत जहँ तहँ रूप विशेषी॥ देखन योग चलहु सखि देखी॥
आगे करि सोइ सखी पियारी॥ चली सकल चहुँ ओर निहारी॥
बिटप ओट जब देखे जाई॥ गई अपनपौ सबै भुलाई॥
वैदेही जब रामहि देखा॥ गिरी मूर्छि सहि प्रेम बिशेखा॥

रूप शिखिरव विष बिकुरन रागा॥ जोन गिरे अथतो नहिं लागा
धरि धीरज सब सखिन उठाबा॥ लेहु देहु नृप सुत सुनि भाबा॥
पुनि सन मुख दरसे दोउ भ्राता॥ सहज सो हाव न पावन गाता॥

दो० सारंग दृग सुख धारि पर सारंग कटि वपु धार॥
सारंगधर रघुनाथ छबि सारंग मोहन हार॥

चौ० संग अंग छबि देखि जुड़ानी॥ पितु प्रण समुझि बहौरि रिसानी
सकल सखिन निज मन अस चाहा॥ हर धनु तोरि नृपके रघुनाहा॥
तो सब के मन होइ अनंदा॥ अपर अधिप संग काज मंदा॥
इत जानकिहि देखि रघुबीरा॥ बोले लक्ष्मण ते धरि धीरा॥

दो० तात तकहु छबि राशि यह जनक सुता है सोइ॥
जेहि हित धनुमख होत सुनि बहुरे नृप सब कोइ॥
जासु अलौकिक रूप लखि सहस सकुच मन मोर॥
भयो क्षुभित निज सील तजि सो गति जानै कोर॥
कहौं लषण हौनब्य जो सो प्रथमै दरशात॥
करत बात इमि तात लन मन अटको सिय गात॥
इतै सखिन लखि गहक निज उर हरि मूरति लेखि॥
आई गवरि निकेत पुनि खग मृग मिसि दिशि पेखि॥
यथा पुत्र पितु प्रातकते चिन्ता भरी माहि देह॥
दृगो दीरघ धाम कहु फिर आवै कहैं येह॥

कमल छं० तिमि सीया। लखि पीया॥ हित वरी।
लगि करी॥

त्रिभंगी छं० जयजय भव भामिनि त्रिभुवन स्वामिनि मृगपतिगा-
मिनि ज्ञान निले। तड़ि तांग स्वरूपं अतुल रूपं मुख द्विजभूपं पाक
दिले॥ भुज चंड त्रिकालं धृत करवालं कृत जनपालं कामप्र-
दं॥ सुर नर मुनि बंदनि असुर निकंदनि भूधर नन्दिनि

कूट कुटं ॥ जयजलजन बिलोचनि रतिमद मोचनि परहित
सोचनि कंक विधे । भवविभव प्रकाशिनि कलिमल नाशिनि
स्ववस बिलासनि नीति निधे ॥ श्रुति अमित प्रभावा बेद न
गावा तदपि न पावा पार कुतं । बिधि शिव बुधजन मम मतिम
जन रिधि सिधि सासन नेम युतं ॥ जे ते तव चरणां स्मृति नि
रतां तेवर बरतां लब्ध फलं । पति पद रतिरागी निय अनु
रागी सो बड़ भागी होत हलं ॥ अब मैथिल दासा कुरु मह
माया प्रगटन गाथा पुन आली ॥ सुनि इत्यं बचनं गौरि सु
[illegible] बोली बचनं मृदु बानी ॥

चौ० जय जय श्री मिथिलेश दुलारी ॥ जय जगजननि अनघ मनुहारी
जय जग मयात त्रिभुवन वीरा ॥ तड़ित बरन बपु छबि गंभीरा ।
जय जग दुस्तर तरण तुम्हारे ॥ कोटि कृपा विचरत नृपद्वारे
जय भव भय भंजनि सुख देनी ॥ बिधि हरि हर बन्दत सुखश्रेनी
जय जप तप करि सुगति जे चहईं ॥ बिन तव कृपा न कोय न हु लहहीं
सबके पर बेद जेहि गावै ॥ सो तव सुमिरन ते फल पावै ॥
दिव्य बरष शत शंकर ध्यायो ॥ राम गुरू ह्वै पंथ बतायो ॥
तव तव दरशन ते सुख लहेऊ ॥ पूर्ण भ शास्त्र संहिता कहेऊ
शेष सहस मुख दश मुख बानी ॥ तव महिमा नहिं सकत बखानी
हम समान तव कोटिन दासी ॥ नयन निमिष मिल करैं खवासी
सो तुम मातु बिनय मम कीन्ही ॥ निज जन जानि बड़ाई दीन्ही
चतुरकाल्ह काके जव जैसा ॥ तब तहँ नाच नचावति तैसा ॥
तेहि ते देहु असीस हमारी ॥ पूजे मन कामना तुम्हारी ॥
नारद बचन सदा उर धरेऊ ॥ पाइ परीक्षा पुनि परि हरेऊ ॥
सुनि सिय सकुचि सहित अनुरागी ॥ चली पूजि पुनि गृह अभिलाषी
मीतहि जात जानि रघुराई ॥ चित्र चारु इक लीन बनाई ॥

अनुज सहित आये गुरु पासा ॥ सुमन दीन सब हाल प्रकासा ॥
अरचन करि मुनि बचन उचारे ॥ होइ मनोरथ सिद्ध तुम्हारे ॥
सुनि मन मुदित भये दोउ भाई ॥ भागत दिवस निशा तब आई ॥
प्राची दिशि शशि देखि सोहाना ॥ सिय मुख सरिस न पुनि अनुमाना ॥

दो० बढ़त घटत नित मढ़त नभ दिन मलीन रिपुराहु ॥
सिय मुख सम किमि होइ शशि दीन दुखद सब काहु ॥
गवरि गिरा सम कहिय किमि शैल सुता वाचाल ॥
रति अनङ्ग पति सिंधुजा चपला नृप जेहि काल ॥
छवि पयोधि गिरि कूर्म अहि शभासुर सब जोइ ॥
इमि मथि काढ़ै लक्ष जो सोउ न सिय सम होइ ॥
यहि विधि ते अंग अंग की उपमा करत विचार ॥
भई निशा सब नाश पुनि देखि परा भिनसार ॥
बोलि लक्ष्मण ते लखहु भयउ अरुणोदय तात ॥
काहुइ लौ अति सुखद है काहुइ दुखद लखात ॥

चौ० सुनि सौमित्र कह्यो मृदु बानी ॥ प्रभु प्रताप पूरब परआनी ॥
जिमि रवि लख गंज्यो करि दापा ॥ तिमि तब बल बिदली भव चापा ॥
उठि हैं फूलि कमल सब सन्ता ॥ होइ हैं पुरजन मुदित अनंता ॥
भृगुपति गति मयंक दुति छीना ॥ नृपगण ह्वै हैं नखत मलीना ॥
खल उलूक दुरिहैं तजि धीरा ॥ ह्वै हैं चक्रवाक यक तीरा ॥
गूढ़ गिरा सुनि प्रभु मुसक्याने ॥ एका दिन बन जाइ नहाने ॥
नित्त नेम करि सहित समाजा ॥ तेहि क्षण बोलि पठाये राजा ॥
सतानन्द तहँ आइ बखाना ॥ उठि तिन सहित मुनि कीन पयाना ॥
लागे लोग अनेकन संगा ॥ धाये विपुल प्रथम महि रंगा ॥
चहुँ दिशि फिरत विचार समेता ॥ तेहि अवसर आनन्द निकेता ॥
रंग भूमि आये दोउ भाई ॥ जनु शोभा मधि शोभा छाई ॥

जिन जेहि भाँति भावना आनी॥ तिन तस देखे सारंग पानी॥
योगिन तत्व नृपन नृप श्रेष्ठा॥ बुध विराट भक्तन निज इष्टा॥
सुरन नाथ असुरन सम काला॥ सिसुन सुहृद मनसिज वपु वाला॥
जनक जनक रानिन जामाता॥ मिथिला पुरवासिन बहु नाता॥
वैदेही देख्यो जेहि भाँती॥ उर अनुभवतन सो कहि जाती॥॥
सबके मन भरोस अस आया॥ अवशि चाप तोरिहैं रघुराया॥

दो० भई भीर अति जनक लखि सेवक दिये पठाइ॥
यथा योग सब काहु तिन आसन दीन्ह्यो जाइ॥
रंग भूमि मुनिनाथ कहँ सकल देखाई भूप॥
बोले कौशिक धन्य नृप रचना कियो अनूप॥
सब मंचन में मंच यक अद्भुत बनानि विशाल॥
तेहि ऊपर सब मुनिन युत बैठाये नरपाल॥
धनुष ध्वंस नभ रंग महि उडुगन लोग अपार॥
राम लषण युग चन्द्र सम ऊगे सभा मँझार॥

चौ० चितवैं सकल राम की ओरा॥ जिमि मयंक दिशि विपुल चकोरा॥
कोइ कोउ नृपन नृपनते भाषा॥ चलहु भवन परिहरि अभिलाषा॥
धनु दलि सिय बरिहैं रघुराई॥ तुम कत तजि हौ मान वड़ाई॥
बिनहु दले पैहैं जय माला॥ सुनि बोले तब कुटिल नृपाला॥
टूटे धनुष कठिन है ब्याहू॥ बिन भंजे को वरी कुजाहू॥
कालहु कस न होइ यक जोरा॥ सिय हित समर करब हम घोरा॥
सुनि बोले तब सज्जन राजा॥ गाल बजावत तुम्है न लाजा॥
कनक कशिप खर नावक बीरा॥ सहस बाहु मधु कैटभ धीरा॥
जिनते विजय न काहू पाई॥ तुम जिति हौ अस बल अधिकाई॥
परम सुभट अवधेश कुमारा॥ बरिहैं सिय मथि मान तुम्हारा॥
जीतन हार न कोउ जग जावा॥ कोरे चहै सो गाल बजावा॥॥

जगत पिता रघुपति कहँ जानौ॥ जग जननी जानुकिहि पिछानौ
तेहि ते दुर बासना नेवारी॥ भरि लोचन छवि लेहु निहारी।
नहिं मानो तो रवंधक जाहू॥ हमैं मिला नरतन कर लाहू।
तेहि अवसर मिथिलेश पठाये॥ सभा मध्य बन्दी गण आये
भुज उठाइ बोले तहँ दोऊ॥ सुनहुं सुप्रण नृप कर सब कोऊ
भुवन चतुर्दश केर भुवारा। बैठे हैं यहि सभा मंझारा॥ ॥
जो लेई शिव चाप उठाई॥ सो बर बिजय सहित सिय पाई॥
सुनि हरषे अवि बेकी भूपा॥ कसि कसि कमर चले अहिरूपा
निज निज इष्ट सुरन थिर नाई॥ हुमकि धरहिं धनु उठै नराई।
बल विवेक गरुवातम शोभा॥ फिरहिं हारि धनु कर बस लोभा

दो॰ लज्जित है दश सहस नृप मिलि करी किहिनि बिचार॥
लावहु डारी तोरि धनु पुनि लखि रनेव पछार॥

चौ॰ दश सहस्र इक संग भुवाला॥ रहे उठाइ न नेकहु हाला॥
हसन योग भे ते नृप कैसे॥ बिन बिराग संन्यासी जैसे॥
जे नृप रहैं चतुर मति धीरा॥ तेनहिं जाइँ शरासन तीरा॥

गीतिका छं॰ नहिं जाइं ते धनु तीर देखि बिदेह बद गह वर हियो। सुर नाग नर नृप असुर आये सुनत जो हम प्रण किये॥ को कहै कर रवन केर काढुन अवनि अल्प छुड़ायहू। बर बिजै कीरति कुंवरि पाव नहार ब्रह्म न जायहू॥ तेहि ते सकल तजि आश निज निज भवन गवनव सर्वजू। भट हीन महि कहि अबन कोइ बीर ठाने गर्व्वजू॥ जो बात यह जनत्यौ प्रथम तो नेम नहिं करतो मिदं। किन रहे कुंवरि कुमारि कर्म न धर्म त्यागत कोपि इदं॥

चौ॰ सुनत बचन पुर जन अकुलाने॥ सकल सभा के नृप सकुचाने
मरमसम बचन लषण के लागे॥ बोले उठि रघुपति के आगे॥ ॥

नाथ जनक अति अनुचित भाखी। काहू की कछु कानि न राखी।
तेहि ते जो नव आयसु पावों। तौ इनको बीरता देखावों ॥
कंदुक इव कर गहि ब्रह्मंडा। धनुष समेत करहुं सत खंडा॥
नाथ सपथ जो अस नहिं करहूं। तौ फिरि हाथ न धनुसर धरहूं ॥
दो० यहि प्रकार के बचन जब बोले लषण सरोष॥
डग मगानि महि कुधर सुनि पायो सुरमुनि तोष॥
चौ० जनमन मुदित जनक सकुचाने। सियसमेत पुरजन हरषाने।
सयनन प्रभु अनुजहि चुप कावा। सहित सनेह निकट बैठावा।
तब बोले ऋषि प्रभु ते बाता। अब उठि शिव धनु तोरहु ताता।
उठे तुरत गुरु आयसु पाई। सहज सुभाय चले शिरु नाई ॥
हरषे सुनि मुनि जन प्रभु केरे। देखि बिदेह कही ऋषि तेरे ॥
नाथ राम जो ते मन लोभा। तेहि ते भई अधिक तन शोभा।
धनु के करषण योग न आहीं। बरजि लेहु तेहि ते जनि जाहीं।
भूप करहु मति बिसमै कोई। इनते कठिन को दंड न होई ॥
रामे चितै जनक की रानी। बोली बिलखि सखिन ते बानी ॥
देखो सखि यहि सभा मंझारा। बैठे हैं बुधिवन्त अपारा ॥॥
यहि अवसर सब की मति खोई। उठि रघुपतिहि न बरजत कोई
गरुव कठोर कहां शिव चापा। हारे सकल भूप करि दापा ॥॥
तेहि हित अब बालके पठावें। हंस सुवन कहु मेरु उठावें ॥
सुनि बोली गुरु तिय तिन पाहीं। तेजवन्त लघु गने न जाहीं।
कहं पावक बन दहन प्रचंडा। कहं वामन नाप्यो ब्रह्मंडा
कहं रवि कहं तम तोम बिनाशै। कह अंकुश कहं करिहि सवाशै
थोरो मंत्र यक अक्षर जाके। बिधि हरि हर सुर सब बस ताके।
भृगु सुत च्यवन पेट ते काढ़ि कै। असुर पुलो महि जारयो बढ़ि कै
बाल खिल्य अंगुष्ठ प्रमाना। सुरपति को मरद्यो तिन माना

जिमि कुंभज दधि पीन पिछानो॥ तेहि बिधि तुम धनु रामहिं जानो॥
सुनि भरोस रानी मन आवा॥ तब तहँ लखि सीता दुख पावा॥
कमठ पृष्टि सम धनुष कठोरा॥ कहँ श्यामल मृदुगात किशोरा॥
कथम जाइ धरिज उर आना॥ कहत तात प्रण दारुण ठाना॥
हे गणेश गिरिजा गिरि राई॥ राम भुजन पर होउ सहाई॥
हे पिनाक तव काज बिशेषी॥ होउ हल्लुक रघुपति तन हेरी॥

दो० जो हमरे मन क्रम बचन गति न अपर सुर केरि॥
तो करिहें भगवान मोहिं रघुनन्दन की चेरि॥

इति श्री बिश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथउजागर श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत रामरंगभूमि आगमनो नामसप्तमो ऽध्यायः ७॥

दो० बेदन मुख रघुनाथ मुनि करी निवेदन देह॥
बेदन मग भेदन करों जो बेदन सों नेह॥

चौ० जो निज बेरि करब प्रभु नाहीं॥ तो तजि तनु मिलिहों तुम काहीं॥
यहि बिधि सिय प्रण कीन्ह्यो जबहीं॥ धनु दिशि प्रभु अवलोके तबहीं॥
लषण लख्यो अब चाहत तोरा॥ दियेसजग करि कुधर कठोरा॥
आपु चापि महि ब्योम सो हावा॥ तब रघुपति हर चाप उठावा॥
प्रथम सो शशि मंडल सम भयऊ॥ पुनि तेहि तीनि खंड है गयऊ॥
एक गयो नभ एक पताला॥ एक गिर्‌यो तेहि ठौर कराला॥
गहत उठावत तोरत माहीं॥ रहे सब ठाढ़ लखा केहु नाहीं॥
यह शीघ्रता बहुत नहिं तासू॥ पलमा कोर बिश्व चहु नासू॥
पाछे तासु भई धुनि घोरा॥ रही पूरि त्रिभुवन महं सोरा॥
गड़गड़ात गिरि तर महि खसेऊ॥ कमठ कोल अहि पति कसमसेऊ॥
दिग्गज गिरत भिरत नभ लागे॥ सुरबिवान रबि चलत न आगे॥
चपिगो महि लखि सकल भुवारा॥ जनक हृदय सुख भयो अपारा॥
हरषे सब पुरजन नर नारी॥ सिय हिय भा अति आनंद भारी॥

जय जय जय कहि सुरसमुदाई ॥ बरषि सुमन दुंदुभी बजाई ॥
तब बिदेह रामहि सहप्यारा ॥ सिंहासन ऊपर बैठारा ॥ ॥
पुनि तहँ तनया बोलि पठाई ॥ सखिन समेत सभा महँ आई
पहिरे बसन बिभूषण नाना ॥ दहिने कर जय माल्ल सोहाना
सिय शोभा लखि सकल भुवाला ॥ भये श्रपन यो रहित बिहाल
रामै चकित चितव बैदेही ॥ कहाँ गये मम परम सनेही ॥ ॥
रघुपति ढिग लै गई सहेली ॥ देहु माल प्रीतम उर मेली ॥
प्रभु छबि लखि सिय कंकन माहीं ॥ रही टेकि करटारत नाहीं ॥
धरि धीरज पुनि माल उठाई ॥ सकुच सहित हरि उर पहिराई
देखि देखि रघुपति उरमाला ॥ सुरनर मुनि सब भये निहाला
पुनि सिय कर गहि कंचन थारी ॥ हरष सहित आरती उतारी
सखिन कह्यो पति पद गहु बाला ॥ छुवत न गुनि मुनि तिय कहाला॥

दो० पहिरे कर नवरतन प्रिय तिय भय धरत न हाथ ॥
प्रीति अलौकिक समुझि कै मन बिहँसे रघुनाथ ॥

चौ० सखिन सहित पुनि चली निकेता ॥ तब सब भूपन कभा चेता
कुटिल महीप स्वान ज्यों जागे ॥ जहँ तहँ गाल बजावन लागे।
कोइ कहै सीतहि लेहु छिनाई ॥ कोइ कहै धरि मारो दोउ भाई
जो बिदेह बरजे कछु लेखा ॥ लेहु लूटि तिनहूं कर देशा ॥
सुनि अनल करि सरिस मत कहीं ॥ सरिस बंधु भय बोलि न सकहीं
बोले तब नृप साधु सयाने ॥ समुझि बूझि मति होउ अयाने
जो लक्ष्मण मुनि पैहैं कबहीं ॥ भये न रहो मनों तुम तबहीं ॥

दो० बाणा ते बाणा कहूं होइ जुबारण नाहिं ॥
लागी बाणा बधत रिपु इन्है सुबारण माहिं ॥
दुति दिमाक बल बांक पन मान सहित तव नाक ॥
कीन्ही नास अनास ही दै कै हांक पिनाक ॥

चौ० तहिते तजि कटु बचन उछाऊ। देखौ रामसिया कर ब्याहू
यहि बिबि वादें बिपुल नृपाला॥ अब सुनु परशुराम कर हाला
रोला छं० गाधि राजकी सुता रूपकेसी अस नामा। भृगु
सुत रिचिक हजाइ अश्व देवरी ललामा। भृगु बोले बरु मांगु
उभे सुत दीजे देवा। यक हमका यक पितहि भले करि यज्ञ क
रेवा॥ हवि कर करि द्वै भाग कह्यो याको तुम खायो। होइ सुत
द्विज प्रकृति मातु के नृप गुण गायो॥ दैत भाग गा बदलि वहुरि
तपसी बर मांग्यो। सोई भये यमदग्नि जननि के कौशल राख्यो॥
तिन को सदल बशिष्ठ जेंवायो नंदनि बलते। गोमागत गे हा
रि भयो तापस तेहि चलते॥ तप प्रभाव ऋषिराव ऋषिन में प्र
गट कहाये। रच्यो स्वर्ग मख हेत मांगि रामैं जे लाये॥ यमदग्नि
हि परसेन रेणुका सुता बिवाही। भे सुत सरमें बड़े परशुधर बि
ष्णु कलाही॥ यक दिन तिनकी मातु चित्र सेने लखि मोही।
कह्यो पिता सिर काटु केहू नहिं काट्यो वोही॥ होउ सकल
जड़ रूप राम मुनि शीश निपाता। बरलै चेतन बंधु करे ज्याई
पुनि माता॥ एक दिन सहस सुभाय हरी गौराम हत्यो तेहि॥
पितु अरि भो सुत तासु तेहीते बिपुल बार महि बिन क्षत्रिन के
करी वरी बिप्रन कहं सोई। रहि महींद्र गिरि मध्य सिंधु ते सु
नत चलोई॥
चौ० इत नृप मूढ़न की गल मदरी॥ मिटन न पाई जब तक सगरी
तेहि अवसर आये भृगुनाथा॥ लीन्हें धनु सर परशा हाथा॥
गौर बरण शिर जटा बिशाला॥ अरुण नयन उर तुलसि कमाला
सहजहु चितवें जासु कि ओरा॥ सो जानै जिव लीन्हेसि मोरा॥
जहं तहं देखि देखि नृप भाजे॥ बहुतेन रूप नारि के साजे॥॥
बहुत समय चरणन शिर नावें॥ पिता सहित निज नाम बतावें।

जनक सहित सिय नायो शीशा ॥ भृगुनन्दन लखि दीन अशीशा ॥
कौशिक ऋषि ले दोनो भाई । मुनिपद मेले नाम बताई ॥
रामहि देखि रहे ठगि ऐसे ॥ बोले पुनि अनजानत जैसे ॥
जनक पुरी केहि हेत समाजा ॥ सीय स्वयम्बर है महराजा ॥
आगे धनुष टूट महि देखा ॥ बोले तब करि क्रोध विशेषा ॥ छं॰ ॥ रे जड़ जनक बताउ धनुष केने यह तोरा ॥ सो तजि समाज निकसि आवै मम ओरा ॥ नाहित नृप सब मारि देश तव चौपट करिहों ॥ तीनि लोक में ढूंढि तासु कु रमद संहरिहों ॥ सुनि बिलखे पुरनारि नर डरे कुटिल नरेश सब । हृदय नहायि विषाद कछु बोले श्री रघुनाथ तब ॥ सुनहु नाथ सब साथ प्रबल भावी लखि परई । जो कृत तिनु के कुलिस कुलिस तिनुका सम करई ॥ कहां शंभु को दंड कहां हम बालक बारे । होन हार कर रोस दोस शिर परयो हमारे ॥ यथा तार फल पाकि के पतित होत खग नामभव जो भावै सो कीजिये सब प्रकार हम दास तव ॥ सुनहु राम सो इ दास सदा जो सेवा ठानै । करै शत्रु कर काम ताहि को दास बखानै ॥ तेहि ते हर को दण्ड आजु जेहि खण्डा होई । सहसबाहु सम समुझि तासु गति करिहों सोई ॥ भृगुपति केर सुभाव सुनि भई सिया अति शोच बस । तब तिन ते मुसक्याइ के बोले लषण कुमार अस ॥ सुनहु विप्र पन बाल बहुत धनुहीं हम तोरी । तब न किहेउ रिस कबहुं आजु केहि हेतन थोरी ॥ तव जननी कर पाप पाप त्रिपुरासुर केरा । अपर नृपन कर पाप चाप चित चेति सबेरा ॥ रघुपति भुज तीरथ विषै तजेसि प्राण गति हेत नहिं । बिन समुझे रघुनाथ पर करत रोष परि सोच नहिं ॥ रे बालक मति मन्द माहिं

तूत्रान सिखावत। सब धनुहिनि की सरिस शंभु को दराड बतावत॥ सहित राम सिय तोहिं खेदि बन मांझि जुझै हीं। नृप दशरत्थे मारि सकल पुरजनहिं रोवैहों॥ मरले भूतल तोपिके बहुरि तपैहों तापबहु। जान केहुँ अस शिवस पथ तोन कहोवों नाम यहु॥ सुनि बोले पुनि लषरा मृखाकन भारत गाले। ईश चहे सो करै अस ते रोमन हाले॥ सब धनु एक समान कोन यामें अधिकाई॥ छुवंतै टूटपुरान घुनन डारा रहे खाई॥ जोनहिं प्रिय यह नाम तो लीजे अपर धराइ मुनि। विप्रन की कछु कमी नहिं सुनि बोले भृगुनाथ पुनि॥ रेनृप बालक मंद देखु परसा को ओरा। जेहिते बधि बहु भूप छीनि छोनी बरजोरा॥ को जानै केबार सौंपि विप्रन कहँ दीन्ही। तोको बालक समुझि ढील यतनी हम कीन्ही॥ अबते परखु प्रभाव मम यम जनि पितरएवाउ निज। नाहित डरिहौं मारि फिरि निपटहि जानुन मोहिं द्विज॥ हे मुनिकत हरबार देखावत मोहिं कुठारी। फूकनते तृरा उड़त उड़त नहिं भूधर भारी॥ जोतुम होतेउ सुभट तदपि हमरे कुल माहीं। विप्र धेनु सुर साधु लरत इन ते कोइ नाहीं॥ बधे पाप हारे अथश सब विधि भला जो खाइ गम। अस बिचारि मन मारि तव सहियत हैं कटु बचन हम॥ गाधि सुवन सुनि लेहु अहे या बालक खोटा। जान चहत यमलोक ललित परि हरि निज ओटा॥ तेहि ते लीजे बरजि कछुक कहि सुयश हमारा। नाहित सब के अछत आजु खल जाई मारा॥ कौशिक समुझेउ मन बिषे मुनि जानत हैं बाल ये। असन बिचारत जगतपति हैं कालहु के काल ये॥ हँसि बोले पुनि लषरा सुनहु मुनि सुयश तुम्हारा। तुम्हे असत को कहै अहे अस को

सब नारा ॥ जोन एक मुख चुके करो दश बीस मजूरा । जेहि ने सब सुनि लेइ सपदि है जावे पूरा ॥ सूर न बरनत सूरता कादर करत कलाप घर । समुझि परत मोहिं कछुक दिन कीनि मरेहुगी आप वर ॥ सुनि लक्ष्मण के बचन जनक मनमाहिं डेराहीं । पुरबासी है बिकल बदैं आपुस के माहीं ॥ देखो भूप किशोर गोर जेतने है छोटा । तेतने खोट लखात डेरत नहिं मन कर मोटा ॥ भृगुनन्दन करि कोप तब परशु सुधारउ हाथ गहि । बालक करू समर इत नाहित धरू धनुबाण महि ॥ कह अनन्त यहि भाँति हमैं जो अपर प्रचारत । तौ फिरि के कहो समर बहे सो हुँ मा हारत ॥ भूजे पर बिस करे गुरु कर पद लोपे पुनि । पचुपरि रोपे पाँव नीच के करम मिटं सुनि ॥ बोले बिश्वामित्र तब समहु जानि अज्ञान जू । बालक के गुण दोष होउ गणतन जे बुधिवान जू ॥ सुनि बोले भृगुनाथ याहि जो अबलक राखा ॥ सो सब शील तुम्हार भारते कौन न माखा ॥ नाहित काटि कुठार उरिन होतेउं गुरु नेरे । तब मन में सुख होत मोन मिटते उरकेरे ॥ गाधि सुवन मन में कह्यो मुनिसम अज्ञ न आन कोउ । इन्हे बिचारत खाण्ड मय अय मय जानत नाहिं दोउ ॥ कह्यो लषण पितु करु करज जननी शिर दीन्ह्यो । गुरु करज रन रहिगयो चहत हमते सो लीन्ह्यो ॥ गये बहुत दिन बीति ब्याजु बढ़िगा बहु भाई । लीजे ब्योहर बोलि तुरत मैं देहुं गनाई ॥ चराहि सकल करि अचर प्रभु अचरहि जो करि देत चर । तासु अनुज पर परशु धर कैसे सके चलाइ कर ॥ सुनो जनक मुख तनक अहै बालक कटुबादी । मरन कहत मम हाथ चहत नहिं देखन सादी ॥ बेगि करो हग ओट चहो जो याहि बचावा । पाछे दिहेउ

न होय काल याकर चलि आवा ॥ परम कठिन मम नाम सुनि गर्भ श्रवै नृप रवनि सब । ताहि जरावत जंतु जड़ सुनि बोले हँसि लषण तब ॥ सुनो बिप्र जो तुम्हें नीक उतसाह न लागे । तो लीजे दृग मूंदि देखि कोइ परै न आगे ॥ नाहित बन भजि जाहु बोलि पठवा नहिं काहू । जरत होय जो गात पैठि जल मांझ नहाहू ॥ बैदहि बोलि देखाइये ज्वर कर होइ न दोष उर । सुनि कोपे भृगुनाथ अति डरे नारि नर जानि फुर ॥ लखि बोले तब राम काम हौं नाथ बिगारा । मोपर कीजे रोष दोष बिन बालक बारा ॥ देखि धरे धनुबान कहिसि कटु जात सुभायन । जो ओत्यो मुनि भेष परत प्रमुदित तव पायन ॥ हमरे कुल की रीति यह कालहु ते नाहीं डरैं । क्षमहु चूक अनजान की संत सदा दाया करैं ॥ सुनि बोले भृगुनाथ राम रिस जावै कैसे । अबहूं तक तव बंधु बिलोकत टक्वार जैसे ॥ जो न याहि फल दीन कीन करि रोस कहा हम । गर्भ श्रवै नृप नारि निकट ठाढ़ो बैरी मम ॥ बहत न करबर दहत तनु कटु कुठार कुंठित भयो । किधौं बसी करुणा हिये की सुभाउ सो फिरि गयो ॥ सुनि बोले पुनि लषण नाथ मैं दास तुम्हारा । टूट धनुष नहिं जुरी किहे रिस बारहि बारा ॥ जो अति ही प्रिय होय कछुक तो करिय उपाई । बोलि गुणी द्वै चारि बहुरि दीजे जोर वाई ॥ बैठि जाहु करि कृपा अब पायन के रिपु होउ जनि । नयन तरेरे राम तब गे गुरु पहँ तजि कटु बकनि ॥ सुनि भृगुपति तब कोपि बचन रघुपति ते भाषा । छल शठ विनवत मोहिं भुरै उत सोदर राखा ॥ करु मम सन्मुख समर न तो तोहिं डरिहौं मारी । छिपटे विप्र न जानु अहौं मैं रिपु मद हारी ॥ धनुष तोरि अह-

मित भई मानहुं जीत्यो जगत सब। सो तब अकड़ मिटाइहौं मुनि बोले रघुनाथ तब ॥ हे मुनि कहौ बिचारि बड़े जनि अब अधिक काई। जो हम निदरब बिप्र अपर को शीश नवाई॥ परसत टूट पिनाक करब हम मद केहि हेता। स्वामिहि सेवक समर कहौ कस हेत निकेता॥ यह प्रभुता प्रभु वंश की अभै होय तुमते डरै। गूढ़ गिरा सुनि राम की भयो ज्ञान परसा धरै॥ तब बोले हे राम धनुष श्रीपति कर येहू। आकर्षहु गहि पानि मिटे जेहि मम संदेहू॥ छुवत ते चढ़्यो पिनाक देखि भृगुपति पछिताने। मारहु मम गति कूट छूट सर सकल नसाने॥ जानिहु राम प्रभाउ तब पुलकि गात युग जोरि कर। लागे मुनि अस्तुति करन जय रघुकुल मणि मान हर॥ जय जगदीश दयाल जयति सुर द्विज प्रतिपालक जय मुनि मानस हंस जयति तमचर कुल घालक॥ जय शोभा सुख सिंधु जयति करुणा गुण आगर। जय बल बिपुल बितंस जयति रघुबंश उजागर॥ जय जग जावत जीव की तव पद प्रीति न होइ है। तावत संश्रित शोक ते छूटि न सुख में सोइ है॥

दो० जो मैं अन जानि कहा सो क्षमियो दोउ भ्रात॥
अस कहि शीश नवाइ मुनि मुदित भये बन जात॥
हरषे लखि पुर लोग सब बरखे खेचर फूल॥
बाजे बाजन बिबिधि बिधि भाजे प्रति अनकूल॥

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत परशुराम बन यात्रा बर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ८॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणो मानस मन कछुक नाटक चरित बखानि॥

तब बिदेह मुनिते कह्यो होइ जो आयसु नाथ॥
करों सो मुनि कह गाधि सुत भयो ब्याहु धनुहाथ॥

हरिगीतिका छं० भयो ब्याहु यद्यपि साथ धनुके तदपि दूत पठाइ कै। लीजै दशरथहि बोलि सहित बरात ब्याहें आइकै॥ भल देव कहि लिखि भेद दीन्ह्यों पत्र ले धावन चले। कार्तिक बदी पुनि पद्म दिन लिय बोलि कारीगर भले॥ तिन ते कह्यो पुर सकल साजहु सुभग भवन बितान जू। शिर राखि मन अभिलाष लागे करण गुण निदान जू॥ बिरचे कनक मय रत्न खंभ अचंभ मरु मणि पाल जू। तिमि धौंरि पुनि कणि बोलि लोहित सुमल मंजु लरवान जू॥ सुरचित्र मित्र सरोज धारे वृक्ष कलि अलि धेनु जू। असितार बन्दन बार मुकता हार हरित सुवेनु जू॥ बहु और हीय अजोर कुलिकारि गुलिक चौक पुरायहू। ध्वज कलस चामर छत्र सौरभ परिस तरण तुरायहू॥

दो० जिमि सरगत सोपारण मणि जटित लसे दिशि चारि॥
विधिवत कीन बितान तिमि निरखन हित नरनारि॥

चौ० कहंतक कहौं तहांकी सामा॥ जहँ दुलहिन दूलह सियरामा॥ नृप गृह सरिस सवन निज साजे॥ शोभा निरखि देवपति लाजे॥ बसन लसहि जहँ कपट सरूपा॥ तहँकर बिभौ कि जाइ निरूपा॥ कौशल नगर सकल नरनारी॥ रामलखण बिन रहे दुखारी॥ कौशिल्यादि कहैं नृपरानी॥ वीर जननि सुत बादि बियानी॥ राजहु के रहे प्रिय अधिकारी॥ मुनि लैगयो ठगो रिसि डारी॥ तबते मिली नरखबरि यथारथ॥ दलन दोष दुखप्रद परमारथ॥ यकुत्तो बन पुनि अनुगण लीन्हे॥ ऋषि प्रसन्न हित हमहुन दीन्हें॥ केहि पठई जो खबरि लयावे॥ भेदिन बहु अब कछू न भावे॥

तेहि क्षण दूत अवध पुर आये। फणि दिन मुनि नृप निकट बोलाये करि प्रणाम पाती तिन दीन्ही ॥ लागे पढ़न प्रेम रस भीनी ॥ ॥

चौबोला छं० स्वस्ति श्री श्री पत्री सुभस्थान जी। कोशल पुर धुर पहुंचे नृप कर कानजी॥ लिखी विदेह नगर ते विश्वामित्र की। मिलि बाचने अशीस सहित सुर पित्र की॥ कुशल क्षेम तव तनै अहैं मम साथ जू। तिन हूं केर प्रणाम चरण धरि माथ जू॥ तेरे पुराय प्रताप अचल मम मख करी। तारिनि पदरज डारि अहिल्या अघ भरी॥ धनुष यज्ञ पुरजनक जुरे नृप भूरिजू। गज इव पंकज राम सो डार्‍यो तोरिजू॥ सीता हू जयमाल तिन्हें पहिराय हू। भृगुपति करि अभिवादन बनहि सिधाय हू॥ अब शुभ साजि बरात आइ सुत परणिये। सुनि नृप मुद यश लह्यो सो कैसे बरणिये॥ जिमि काहू के क्षेत्र क्षीण सब लै लये। ह्वै प्रसन्न तिन सहित ग्राम के यो दये॥ धरि धीरज पुनि कह्यो जनक कैसे लखे। महाराज कहु छिपत कुमुद पंकज सखे॥ सुनत भरत रिपुदवन दौरि आये तहां। पूछत प्रिय दोउ बंधु कुशल युत हैं कहां॥ तब भूपति पत्रिका दई सो बांचेऊ। भये प्रफुल्लित गात अधिक सुख माचेऊ॥ लागे निछावरि देन मुकर कानन दये। लखि समोद नृप सचिव सहित गुरु पहं गये॥

दो० दीन पत्रिका बन्दि पद बांची मुनि सह मोद॥
कह्यो कि सुकृती नरन कहं अवनि अम्ब की गोद॥
जिमि सब सरिता सिंधु में जाहिं यदपि अनयास॥
तिमि सुख सम्पति आवहीं धर्म वान के पास॥
तुम सम सुकृती पुरुष को भयो अपर तनु धारि॥
राम सरिस सुत जासु युग कौशिल्या सी नारि॥

सपदि सजाइ बरात वर चलहु भले कहि तत्र ॥
पुनि आये रनिवास सब बोलि सुनायो पत्र ॥
भईं मुदित रानी सकल दीन्हिनि विप्रन दान ॥
पुरबासिन के हरष सुख को करि सकै बखान ॥

हरिगीतिका छं० करि सकै कौन बखान सरिस देवान गृह सबहिन सजे। रचना अलौकिक हेरि निज चित लोरि चतुरानन लजे ॥ नृप धाम अति अभिराम तामधि बन्यो दिव्य बितान जू। बिधुबदनि शोभा सदनि सुन्दरि करहिं मङ्गल गान जू ॥ कतहूँ पढ़ैं बटु बेद कतहूँ बन्दि गण बिरदावली। कतहूँ टिके रूपवनीप आये नेवत नृत्य करावली ॥ देखत फिरैं पुर लोग बन्दन योग सुर मुनि गात को। तब अवधनाथ बोलाइ सचिवन कह्यो सज्यो बरात को ॥

त्रिभंगी छं० दीन्ह्यो जब आयसु मंत्रिन कायसु धाइ रजायसु सबधाये। लागे हरषातहि सज्जन बरा तहि बराति न जानहि जो ल्याये ॥ कुंजर बहु कारे बड़ मतवारे परे वोहारे लकलक्के। गज घंट जो बाजै जनु घनु गाजै अति छबि छाजै धकधक्के ॥ कंचन की ढारी कसी अँबारी मणि मय सारी पचरंगी। बैठे तिन माहीं नृप हरषाहीं देखि लजाहीं निरअंगी ॥ वर बाजि अनेका एकते एका चलनि विवेका जिन माहीं। कबरे कोइ कारे सेत ललारे बिबिधि सँवारे ठहनाहीं ॥ छम छम्म छमक्कैं कुवन चमक्कें फुरकि धमक्कें पग भूसैं। अरतादि नवीले कुँवर छबीले धनुसर कीले चढ़ि झूसैं ॥ गजरथ बहुतेरे अश्वन केरे वृषभ घनेरे अति सोहैं। सुखपाल अपारा सुतरसवारा परे वोहारा मन मोहैं ॥ भालेबरदारे अंडिन वारे अग शीत धारे फुलवाई। लीन्हे बहु ताज़ी आतश

बाजी बिपुल समाजी गुन गाई ॥ सुंदर चौपाला एक बिशाला अलज प्रबाला मगिन मयो। ता मध्य बिराजे बालक छाजे चमर हुराजे इन उनयो ॥ बाजें बहु बाजन बिविधि सबाजन आरिाक नाजन पे धमके । बाँधे हथियारा बीर अपारा तुपक तयारा असि चमके ॥ पकवान मिठाई रुचिर बनाई सकट लदाई निज संगा । चौपे समि याना तंबू नाना छकरन पाना अरु भंगा ॥ रेसमी गलीचा दीरघ बीचा छकड़न बीचा लद वाये । कंचन के थैला अतर भरेला सुमन सजेला धँधवाये ॥ धन बिपुल संदूखन भरे बिभूषन बसन अदूषन अति नीके । अपसरा अनेका नृत्य करेका भांड भेडेका हद जीके ॥ यहि भाँति बराता सजि भे ताता चली समाता नहि मगमें । सुनि सुनि नर धावहिं देखन आवहिं शीस नवावें नृप मगमें ॥ भये सगुन अनंता हित भगवंता सुर मुनि संता तिन माहीं । गुरु सहित नरेशा मनहुं सुरेशा लसत बिशेषा लघु नाहीं ॥

कवित्त करन बरात को पयान नरनाह जब सुरगण आसमान देखत बहार हैं । डेढ़ कोटि हैं मतङ्ग औ तुरंग तीस कोटि पालकी पचीस कोटि पैदर अपार हैं ॥ भारबरदार सवा सात कोटि ऊंट जाति सेवक समूह पाँच कोटि बाजदार हैं । रथ सवा तीन कोटि दशरथ राय जीके साठि लाख नौहजार साँड़िया सवार हैं ॥

दो॰ जहं तहं करत निवास मग पहुंचे पुरमिथिलेश ॥
लेन चले अगवान सुनि साजि समाज सुवेश ॥
कनक कलस की परा भरि भोजन विविधि प्रकार ॥
दधि चूरा भूषण बसन लैलै चले कहार ॥ ॥

चौ० बरबरात आगवानिन देखी॥ इतउत भये अनन्द विशेखी
हरषि परस्पर भे एक मेला॥ पुनि कछु दूरि चले बग मेला॥
जनु पश्चिम कर सागर भारी॥ आवत ताहि चला लै टारी॥
सकल सोज नृप आगे कीन्ही॥ लीन्ही हरषि याचकन दीन्ही
पूजन करि सब भाँति सोहावा॥ जनवासे मह आनि टिकावा
सुनि सिय सिद्धी सकल बोलाई॥ भूप पहुनई करन पठाई॥
सुर पुर के जे भोग बिलासा॥ दिये पूरि तिन सब के पासा॥
सिय प्रभुता रामेलखि पाई॥ अपर जनक की करें बड़ाई॥
पितु आगमन जानि दोउ भाई॥ मुनिवर संग चले हरखाई॥
आये जहं जन वासे भूपा॥ चले बिलोकि तृषित जनु कूपा
कीनि प्रणाम मुनि पद धरि शीशा॥ नृपहि गाधि सुत दीनि असीशा
पुनि पितु चरण परे दोउ भाई॥ मुदित भूप उर लिये लगाई॥
विप्रन सहित वशिष्ठे बन्दे॥ पाइ अशीश भये आनन्दे॥
भरत सबंधु मिले सुखमानी॥ सकल समाज भेंटि हरखानी
कुशल प्रश्न कहि तिष्ठत भयऊ॥ सहित देव जनु मन्दिर नयऊ
नाक नटी नृत्तहि करि गाना॥ कौतुक करहिं विदूषक नाना
भूप निकट सोहें सुत चारी॥ मुदित भये लखि पुर नर नारी
विधि के वेद भये कोइ कहई॥ अपर कहे अब आये अहईं॥
दहिने दिशि हैं लछमण रामा॥ बायें भरत शत्रुहन नामा॥
धन्य भूप भल देव मनाये॥ जो सुत चारि मनोहर पाये॥
धन्य बिदेह सुनैना दोऊ॥ धन्य सुता सुत हम सब कोऊ
नित्त सिय सहित सुवन चहुँ हेरे॥ पुनि देखब विवाह इनकेरे

दो० तीन तालिस दिन लगन ते आई प्रथम बरात॥
तेहि ते पुर आनन्द अति सकल लोग हरषात॥

चौ० विधि ते विनय करैं यहि भांती॥ देहु बढ़ाइ दिवस अरु राती

गये बीतिवासर यहि भाँती ॥ लगन केर दिन जादिन आवा
हिम ऋतु मार्ग मास सुखमूला ॥ ग्रह तिथि नखत योग अनुकूला
लगन शोधि बिधि नारद हाथा ॥ पठै दीनि जहँ तिरहुतनाथा ।
गर्नी जनक के ग निकन खोली ॥ हरषि कही तिन अहै अमोली
सुनि बिदेह बोले सुखपाई ॥ अवध पतिहि लै आवो जाई
सतानन्द तब साजि समाजा ॥ आये जहँ जनवासे राजा ॥
कोशलेश कर विभौ बिलोका ॥ अति लघु लाग तिन्हैं सुरलोका
भयो समय पग धरिये नाथा ॥ साजि समाज चले तिन साथा
लखि सुर सकल सुमन बरषाये ॥ चढ़ि चढ़ि जान जनकपुर आये
पुर शोभा लखि देव लोभाने ॥ निज निज लोक सबन लघु जाने
विधिहि भयो अचरज अतिभारी ॥ निज करनी नहिं कतहुँ निहारी
शंभु कह्यो जनि भर्म भुलाहू ॥ देखहु राम सियाकर ब्याहू ॥
जासु किये हम तुम सब कोई ॥ यहि पुर आजु विराजत सोई ।
सुनि सुवचनु सुख लह्यो बिधाता ॥ आगे देख दशरथै जाता
सबन बीच नृप सोहत कैसे ॥ अमरन मध्य अमर पति जैसे
चढ़े तुरङ्ग तेरम माहीं । विवि कर कनक लुटावत जाहीं
चौपालि मधि रघुपति सोहे ॥ विधि हरि हर सुर देखि विमोहे
विशु विधिहि विधि भवै सराहें ॥ बसु द्दग लखि दिगि सरसु निबाहें
बड़भागी भे चखु हजारा ॥ अस कहि मिले बरात मझारा ।
रामहि देखि नगर नर नारी ॥ करहिं आरती हाथ पसारी ॥
आवत जानि बरात सुनैना ॥ लागी साज सजावन ऐना ॥
विविध बधू धरि कपट सरूपा ॥ मिली मादिर निवासे भूपा ।
देखि सबन सन मान्यो रानी ॥ चीन्हे बिना आत्मसम जानी ।
सबै समुझि सब सखिन समेता ॥ चलीं मुदित बरु परछन हेता
गावें गीत मनोहर नाना ॥ सुनि छूटें तपसिन के ध्याना ॥

दुलहे देखि अधिक हरषानी॥ भई प्रेम बस प्रफुलित रानी॥
लोक वेद विधि करि सुखपाई॥ अर्घ देत नर मंडफ लाई॥
प्रीति सहित आसन बैठारी॥ कनक थार आरती उतारी॥
मणि मय मांडव छबि यहि भांती॥ देखि परी तहँ अगणित बाती॥
भूषण बसन निछावरि करहीं॥ याचक पाइ मोद उर भरहीं॥
मिले मुदित मन समधी दोऊ॥ सो उपमा कहि सकै न कोऊ॥
देत पावड़े अर्घ सोहाये॥ सादर जनक मंडपै ल्याये॥
आसन दीन सबहि मनमानी॥ पूजे विप्र वृन्द मुनि ज्ञानी॥
सहित बरात दशरथै पूजा॥ मानि ईश सम भाव न दूजा॥
रामचंद्र मुख चन्द सोहाना॥ चितवैं सकल चकोर समाना॥
समै समुझि बोले ऋषि राई॥ बेगि कुंवरि अब आनहु जाई॥
मुनि उपरोहित की बर बानी॥ चली सिये लै सखी सयानी॥
पद कमल स्यनारव छाई॥ मनहुं मदन मोहनी सोहाई॥
चंद्र मुखी तड़ित इव मृगनयनी॥ सकल मनोहर कोकिल बयनी॥
सिय शोभा नहिं जाइ बखानी॥ जगदंबिका रूप गुण खानी॥
आवत देखि बरातिन सीता॥ कीन मनहिं मन प्रणाम पुनीता॥
सुतन सहित दशरथ हरषाने॥ बरषि सुमन सुर हने निशाने॥
पहुंची जब मंडफ बैदेही॥ लागे सांति पढ़न मुनि नेही॥
कुल गुरु गौरि गणेश पुजाये॥ प्रगट लेन पूजा सुर आये॥
सुर भुजाइ शुभ आसन दीन्ह्यो॥ पुनि मुनि बोलि सुनैने लीन्ह्यो॥
जनक सव्य दिशि सोहत सोई॥ मनहुं सुकृति छबि मूरति जोई॥

दो० कनक कलस कोपर रुचिर भरि पियूष निज पानि॥
लागे धोवन बर चरण नृप रानी सुख मानि॥
जे पद बसत महेश उर ध्यावत मुनि जन देर॥
ते पद पद्म पखारहीं धन्य भाग नृप केर॥

चौ० करतल जोरि कुँवरि बर दोऊ॥ शाखोच्चार कीन मुनि सोऊ॥
पानि ग्रहण तिहि पाछे भयऊ। कन्यादान भूप बर दयऊ॥
करि सुहोम गठि बंधन लागी। प्रमुदित होन भाँवरें लागी॥
मणि मय थंभ रही छबि पूरी॥ निरखत मनहुँ मदन रति भूरी
भये छकित सब देखन हारे। फिरा फेरि करि थिन बैठारे॥
राम सिया सिर सेंदुर दीन्हा॥ मनहुँ उरग शशि भूषित कीन्हा
पुनि दोउ एक आसन बैठारी॥ देखि लोग सब भये सुखारी
कहँ रघुनाथ तहाँ की शोभा॥ बरणि सकै जग अस कवि को भा
दो० बनी बनी जाकी जनी लगत जनी दृषि केरि॥
बनो बनो जाको जनो कृष्ण जनो जनु हेरि॥
चौ० तब बिदेह मुनि आयसु पाई॥ लीन्ही तीनिहुँ कुँवरि बोलाई
नाम मंडवी गुण मय चीन्ही॥ सो नृप ब्याहि भरत कहँ दीन्ही
परम सुशील उरमिला नामा॥ सो लक्ष्मणहिं बरी अभिरामा
श्रुति कीरति छबि जाइ न बरणी॥ रिपुसूदनहिं भूप सो परणी
राम सरिस भे सकल बिवाहा॥ त्रिभुवन में भरि रहा उछाहा
सबर सुन्दरी राजहिं कैसे॥ जिय युत बिभु न अवस्था जैसे
कुण्डलिया बपुष बितान बिचित्र मधि जीव अवध अवधेश। जाग्रत अवस्था श्रुति सुयश विभु विश्वक रिपुदेश॥ विभु विश्वक रिपुदेश स्वपन मंडवी विमल मति। विभु तैजैक सो भरत उरमिला उदित सुखोपति उदित सुखोपति केर विभु प्राग्य के लक्ष्मण अदुख। तुरी सिया बिभु राम जी अन्तरयामी दिवि बपुख॥
चौ० कुँवरि कुँवर अन रूप निहारी॥ मुदित भये सुर नर मुनि नारी
अवध राज लखि अति मन भाये॥ क्रियन सहित जनु चहुँ फल पाये
दो० अर्थ क्रिया आधीनता धर्म कि श्रद्धा शक्ति॥

कामक्रिया करतव्यता मोक्ष केकेवल भक्ति॥
श्रुति कीरति रिपुहन भरत भरत मंडवी काम॥
धर्म श्वरणी धर उर मिला मोक्ष जानुकी राम॥
नृप मणि दायजु दीन अति हय गय रथ हथियार॥
भूषण पट गोरतन गणदासी दास अपार॥
लीन अवधपति मुदित मन दीनजाहिं जो आस॥
उबरि रह्यो याचकन ते सो आवा जन वास॥
तब बिदेह तहं सबन की बहुविधि बिनती कीन्ह॥
मुनिसन मान्यो अवधपति मुनिन आशिष दीन्ह॥

चौ० पुनि दशरथ जनवास सिधाये। देवन देखि सुमन बरषाये॥
तब बनितन मुनि आयसु पाई। लरिकन कोहबर चलीं लेवाई॥
गौर श्याम छबि अमित अनंगा। ब्याह साज सोहै सब अंगा॥
कमल नयन चितवन चित चोरें। देखि देखि युवती तृण तोरें॥
कोहबर लाइ सकल अनुरागी। लौकिक रीति करन तहं लागी॥
प्रभुइ उमा लहकवरि सिखावें। सीतै श्री शारदा बतावें॥
निजकर मणि बहुरूप निहारी। प्रेम बिबस सिय सकल नारी॥
हास बिलास भयो बहु भांती। पुनि आये जहं सकल बराती॥
बहुरि रसोई भई तयारा। बोलि पठाये जनक भुवारा॥ ॥
परत पावड़े मंदिर आये। चरण छालि चौकिन बैठाये॥
सुतन सहित दशरथ पग धोये। आसन देइ सुवारन जोये॥
लागे ते परसन पनवारा। षटरस ब्यंजन बिबिधि प्रकारा॥
नाना बिधि पकवान मिठाई। दधि गोरस फल फूल खटाई॥
बरणि न जात देखि अनुरागे। पंच कौर करि जेंवन लागे॥
वधू बिलोकि लगीं गारि यादन। सुनहु राम दूलह मन भावन॥
दो० बने फिरत जो आपके गुरुही विश्वामित्र॥

तो कहि विधि रघुनाथ तुम कारज करो पवित्र॥
जनक सुता के जनक को जनक कहत सब काहु॥
कौन कौन के जनक ये याको करो निबाहु॥

चौ० सुनियत अज के सुत दशस्यन्दन॥ दशस्यन्दन के भे जननन्दन
यह अवरेव परी केहि भांती॥ समुझि परत अस मकल बराती॥
मुदित होइ सब सुनि इमि गारी॥ समुझे परसों कहें पुकारी।
यहि बिधि सब हित भोजन कीन्हा॥ आदर सहित आचमन लीन्हा
देइ पान पूजे मिथिलेशा॥ जनवासे आये अवधेशा॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास-
राममनेही कृत रामचन्द्र बिवाह वर्णनो नाम नवमो ऽध्यायः॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गरापगिरा सुख खानि॥
कहौं कछुक मत कछुक कौशल खंड बखानि॥

चौ० निशानि रखि सब सोवन लागे॥ बड़े प्रात कौशल पति जागे
प्रात क्रिया करि आयसु पाई॥ चारि लाख बर धेनु मंगाई॥
विप्रन का दीन्हे नरनाहा॥ गज रथ बाजि जाहि जेहि चाहा
कीन्ह याचक सकल सुखारी॥ यथा अभ्र हैं सेचन वारी॥
तेहि अवसर नृप मंत्री आये॥ करन कलेवा भूप बोलाये॥
उठे कुंवर पितु आयसु पाई॥ चढ़ि चढ़ि घोड़ नचले सिधाई
कोइ अरबी जंगली पहारी॥ चिर चेचक चपार खंधारी।
कोइ कबली अंबोज कोइ कच्छी॥ बोतमसना मुंजी लक्खी
कोइ किसमी भुठार फुलवाई॥ गरी गुराठ जुमिल दरिआई
श्याम करण कुम्मैद पठानी॥ टांघन तुरकी पच कल्यानी।
सुसकी सबज इराकी पोये॥ पील नबीन बिशाल अदोषे।
सकल अलंकृत चलनि सुठीका॥ सबते तुरंग राम कर नीका
बिप्रव बिमोहन हेतु बिचारयो॥ बाजि भेय जनु मनसिज धारयो॥

पहिरे पट भूषण तन माहीं॥ चपल तुरंग नचावत जाहीं॥
मनहुँ मेघ युत उडु गण हामा॥ जात नचावत छवि अभिरामा॥
देखें जहँ तहँ लोग लुगाई॥ कहें जात हैं चारो भाई॥॥
पहुंचे जब सब जनक अगारे॥ कनक पलंग रानिन बैठारे॥
बहु विधि के भोजन धरि आगे॥ नेग पाइ निज जेवन लागे॥
अचवन करि बैठे तिन पासा॥ लगीं करन तिय हास बिलासा॥
एक सखी बोली तुव माई॥ केहि हित सुत जनमें ह्वै बिरवाई॥
कह्यो राम कत बूझत येहू॥ निकट नरेश परीक्षा लेहू॥
अपर बसन करख्यो निज ओरा॥ मिले चोर तुम सब चित चोरा॥
तेहि क्षण लक्ष्मी निधि की नारी॥ सिद्धि नाम ले सखिन सिधारी॥
सहजानन्दनि मदन मंजरी॥ चंद्र कला कमला सुसुन्दरी॥
चन्द्र मुखी चंद्रावलि योगा॥ वि मला उत कर्षिन प्रियभोगा॥
चित्रा चित रेखा ईशाना॥ कृपा कांचनी सत्या ज्ञाना॥॥
सुदर्शना चंद्रानन हंसी॥ सुधा मुखी मुख मंजु प्रशंसी॥
माधुर्या उज्वल विमदाक्षी॥ चारुशिला अति शोला साक्षी॥
औरौ सखी अनेक अनूपा॥ सहित सिद्धि आई अलभूपा॥
रघुपति छवि अवलोकि लुड़ानी॥ बोली बिहँसि हास की खानी॥
सुनियत लाल काम अति नीका॥ लव अंवनि कीन्यों तेहि पीका॥
हम चित चोरि सासु पहँ आये॥ तुमही देखत बदन दुरायो॥
बोली सिद्धि रावरे भगनी॥ ऋषि किमि बरी हरी नत मगनी॥
कह्यो लखण जस लिख्यो लिलारा॥ तैसे होत टरत नहिं टारा॥
हम नरेश सुत जनक योगीशा॥ भयो व्याह भावी बस दीशा॥
कवते राजकुमार कहाये॥ पाल्यो ऋषि ऋषि उपजाये॥
हलते भल तापस सब दिन के॥ लेबो लाल हम हुँ शिषि तिनके॥
बोली कलावती सिधि भगनी॥ लक्ष्मी निधि की सारि सुलगनी॥

दो० एक कुमार पुनि मुनिन संग रहियहि रस की बात॥
सिख्यो कहां कराथि तियन पहं की दारक ढिगतात॥
कह्यो शत्रुहन सत्य परि तुमहं कुमारी आहु॥
तुम कहुं पायो ज्ञान यह की कोउ करि असनाहु॥

चौ० बोली चन्द्रकला कर टेकी॥ तुम साधुन के बंधु विवेकी
शेरे को रस हासन चाही॥ परस्वारथी संत गति आही॥ ॥
हमहू सुनि अस नेह तुम्हारा॥ दरश हेत द्वारे पग धारा॥ ॥
गहउ चीन्हि बिन कहे पतीजै॥ तन धन ते सेवा अब कीजै॥
सर्प डसित को जो नहिं भावे॥ लगे दोष नल मंत्र विसारे॥
यहि विधि बदि बाते सुख लेवे॥ निज निज रुचि सब रामहि सेवे
कह्यो सिद्धि हम नारि अपावन॥ पर एक गुण हु दीन्ह जग जावन
जेहि ते नेह करे अनुरागी॥ सर्व सुजाहु सकें नहिं त्यागी।
तिमि तुम ते ठानी हम प्रीती॥ करो निबाह समुझि निज रीती
कह प्रभु मोहि सनेह समाना॥ प्रियन कछू यह जान जहाना
तुम प्रिय प्राण सरिस मोहि मांसे॥ मांगि बिदा गवने जन वासे
बोली बहुरि जीति हम लीन्हा॥ दिहल फेरि सुख हम तजि दीन्हा
यहि विधि बातन सबन हराई॥ जन वासे आये सब भाई॥
इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास
रामसनेही कृत राम बिवाह कलेऊ करन विधि बरनो नाम दशा-
मो ऽध्यायः १०॥

दो० राम रमत जो सबन में सब जहं रमे सो राम॥
रामहि लखि रघुनाथ जन लहत स्ववाञ्छित काम॥

चौ० नित नव आदर करे नरेशा॥ भूपै चलन देत नहिं देशा॥
कौशिक कही जनक मुनि लीजै॥ बहु दिन भये बिदा अब कीजै
भले नाथ कहि सभा मंझारी॥ जहं तहं लागी होन तयारी॥

सुनि निदेश पुरजन अकुलाने ॥ जिमि चकवाक जात रवि जाने
जनक विविधि मेवा पकवाना ॥ दीन्हें धरे पंथ प्रस्थाना ॥
बीस सहस सेंदुर सज बाये ॥ स्यंदन सहस पचीस सोहाये ।
तुरंग लाख सुरभी युग लाखा ॥ महिषी लक्ष सवाई भाखा ।
कनक बसन मणि भूषण भूरी ॥ अनगन भाजन सिविका रूरी
ऐसी वस्तु अनेक प्रकारा ॥ प्रथम पठाई अवध मंझारा ॥
तब विदेह गुरु सचिव बोलाई ॥ कह्यो लयावो भूपहिं जाई ।
मुनि मंत्री तिन आइ सुनायो ॥ विदा हेत मिथिलेश बोलायो
दशरथ मुनि ले दूलह संगा ॥ तथा बरात साजि बहु रंगा ॥ ॥
राजभवन गवने लखि लोगा ॥ हरष शोच बस भये वियोगा
एक एक ते कहैं विशेषी ॥ आकुलेहु भरि दृग छवि देखी
भूरि भाग विधि दरशन दीन्हें ॥ सो अब जात नयारी कीन्हें ।
भूप भवन जब पहुंचे आई ॥ बैठारे सबहिन सचु पाई ॥ ॥
विनती भई परस्पर नाना ॥ सब समधी तिन सम को आना
जनक विदा हित सौंज मंगाये ॥ देखि सभा सब अचरज पाये
मणि गण मोल अनेक अपारा ॥ कनक गने को केतने भारा
भूषण सुभग एक ते एका ॥ भरे मजूषा चित्र अनेका ॥ ॥
बसन रत्न पट पाट अपारे ॥ परम रम्य अतिशै गुण भारे ।
भाजन मणि हाटक रजु केरे ॥ रूपति विचित्र बहु भांति घनेरे ।
मेवा विर् उत्तम पकवाना ॥ धरे कूट इव सुख प्रद नाना ॥ ॥
शस्त्र सकल स्यंदन गज पांती ॥ सिविका सुतर सुहैं सब जाती
ऐसी वस्तु भांति बहु राखी ॥ हाथ जोरि अस्तुति तब भाखी ।
हे अवधेश विमल यश केतू ॥ सकल काम परिपूरण सेतू ॥
मैं मिथिलनाथ यह सौंज देखाई ॥ जिमि कोइ स्वर्ण सुमेरहिं लाई
रमसुर ईश वदे जे अहई ॥ तिन की रीति बेद इमि कहई ॥ ॥

दास फूल फल जल जो देहीं। प्रभु तेहि अधिक प्रीति से लेहीं
अस बिचारि मोहिं दृढ़ विश्वासा। पुजिहैं मम मन की तुम आसा
सुनि नरेश निज कर सिर धारी। गद गद है अस गिरा उचारी
करिय कहा मिथिलेश बड़ाई। जिन घर हमहु प्रतिष्ठा पाई।
निज सम सब बिधि मोहि करि लीन्हो। उभै लोक अनवधि यश दीन्हो।
यामें अचरज अहै न कोई। मलय समीप कुतरु हरि होई॥
जो गुरु लघु लघुता न नेवारी। सोउ छोट कछु होत न भारी॥
मिले परस्पर कंठ लगाई। जय जय धन्य धन्य धुनि छाई॥
यथा तथा विधि विधि बिलगाने। बरषे सुमन देव सुख माने॥
तब विदेह लहि आनंद भारे। निज कर सब दूलह सिंगारे।
मनि भूषन पट परम सोहाये। नख सिख कवर विचित्र बनाये
यद्यपि सब अंग प्राकृत सामा। तदपि लगत लघु तन अभिरामा
पुनि नरेश प्रभु पद सद गहेऊ। नर तन धरे केर फल लहेऊ।
मन में कहत लोग सुत चाहे। कन्या का कछु कमती आहे।
जो जानुकी न होत हमारे। रामचन्द्र किमि आते द्वारे॥ ॥
विप्र वेद धुनि करि हरषाने। दान मान दै नृप मन माने॥
सकल बराती तब पहिराये। यथा योग्य जो जेहि जस भाये
बंदीजन गन गुणी अपारा। रुचि लखि दान दीन अनपारा
लेतहुँ सकल अनूप सोहाहीं। लोकपाल लखि जिन्हें लजाहीं
रघुपति छवि माधुरी अनन्ता। रहे देखि सुर नर मुनि सन्ता
बहुरि सुनैना धाम हँकारे। मित्र मंडली सहित पधारे॥
रानिन देखि लह्यो सुख भारा। बैठारे सब करि सतकारा।
दिव्य जलज मनि कनकाभरना ॥बसन रम्य उत्तम वर बरना
नख शिख दूलह सकल सजाये। सखन समेत विचित्र सोहाये
नारि वृन्द जिमि शशिहि चकोरी। निरखहिं प्रभु छबि पलक न मोरी

सिया मातु कर जोरि रसाला। कह्यो बत्स तुम दोउ कुलपाला॥
सुनिये जीवन प्राण अधारा। बिनती यह मम बारहि बारा॥
भूप सचिव हम सब चर दासी। जाति बंधु जहं लग पुर वासी॥
सबहि प्राण प्रिय सुता हमारी। कबहूं लागि न ताति बयारी॥
दृग पुतरी इव सब दिन पाली। निरखत रहिनु यथा मनि व्याली॥
तुम्हरे कर निबाहु तिन केरा। करहु सो मोद लहे मन मेरा॥
अस कहि कुंवर लगाये छाती। कीनि निछावरि नाना भांती॥
धरी चरण सुभाइ सुभाये। पाइ असीश मंडपै आये॥
तब नृप विदा किये शितलाई। जनवासे आये हरषाई॥

दो० आलह पुर रानी सकल बिकल नारि ले संग।
मणिगण पट दिव्य अमाप बर सजे सुतन के अंग॥
सब शिख साजि सरूप सखि लखि वारे तन प्राण।
चलन निकट सुनि लहें दुख कोटिन मरण समान॥

सो० सासु ससुर गुरु देव। भूसुर सन्त अनन्त हित॥
करेहु सुपति की सेव। अस कहि लिहि निलगाउर॥

चौ० जे मति धीर नारि वय भोरी। तिन मन अति कठोरता धारी॥
कीन्ही बिलग सुता महि तेरी। रोवैं मिले अपर स्वर टेरे॥
सुनि धुनि द्रवे दारु पाखाना। चेतन की को करे बखाना॥
सुता कहें मेरी महतारी। लीजे सुधि लखि दीन हमारी॥
सुनि महि मातु गिरी मुरझाई। दोरि रवनि टेकिन समुदाई॥
सुक सारिक जे पिंजर भीरा। हाय सिया कहि तजें शरीरा॥
तिनकी दशा अपने सी देखी। दियं संग करि प्रेम विशेषी॥
पुरजन बिकल बियोग घनेरे। मृत्यु मिले मांगें विधि तेरे॥
जनक हि देखि मिली लपटाई। हे अधीर धरि धीर छुड़ाई॥
मंत्रिन दिव्य बेवान सजाये। मनहुं मोहप गृह अपर सोहाये॥

असन बसन आदिक बहु सामा। सेजपीठि लोचरसुख धामा।
वस्तु समस्त अनूपम सारी। आनि जान महँ धरी सुधारी॥
तिनमा आनि कुँवरि बैठाई। दैलरव नृपजा हित सेब काई॥
अरु दीन्हे बहु दास पुनीता। विकल लोग गावहिं गुनगीता।
उठे बेवान देखि सुर हरखे। हनि निशान कुसमावलि बरखे।
पाछे भूप चले पद चारी। पठवन कन्या प्राण पियारी॥ ॥
मंत्री पुरजन जे गुण भारे। नृप सँग सकल जात मनु मारे।
आवत पुरपथ चले बिवाना। सिबिका करि हरि धेरे नाना।
नगर नारि नर निरखि मनावे। हे विधि कुवरि बेगि फिर आवे
बाहेर नगर रुकेउ जब जाना। नृप ढिग आइ कीन सनमाना
बत्सन रोवहु रहो चुपाई। बेगि लेब मैं तुम्हे बोलाई॥ ॥
ज्यों त्यों करि धीरज उरधारा। बिदा कीन मन कछु अधारा।
पूजि विप्र अवधेश सिधाये। मंगल मूल सगुन बहु पाये॥
जय जय कहि सुर बरषहिं फूला। बाजे बाजन विविध समूला
नृप करि विनय महाजन फेरे। याचक सब परतोषि निवेरे।
तब बिदेह बोले अनुरागी। नाथ मोहिं कीन्ह्यो बड़ भागी
कोश लेश समधिहि सनमाना। पुनि प्रभु ते मिलि वचन बखाना
राम करहु किमि सुसुख बडाई। चितानन्द तुम सब सुखदाई।
सेवक समुझि दरश मोहिं दीन्ह्यो। सब बिधि ते आपन करि लीन्ह्यो
तदपि एक बर दीजे अबहूं। मनतव पद परि हरे न कबहू॥
सुनि रघुपति ससुरे सनमान्यो। पितु वशिष्ठ कौशिक सम जान्यो।
दो० भरथ लषण अरिसूदन हि मिले विनै करि राय॥
शीश नाइ बापाइ सब बंधु चले हरषाइ॥
कौशिक मुनि पद नाइ शिर बोले तिरहुतराज॥
नाथ कृपा तब दास के भये सिद्ध सब काज॥

सो० सकल मुनिन शिरनाइ पाइ असीस विदेह सब॥
फिरे भवन पछिताइ। प्रमुदित चली बरात इत॥

गीतिका छं० इत मुदित चली बरात बालक बाजि जानन नावहीं। मग लोग लखि रघुनाथ छबि निज जन्म को फल पावहीं॥ बरवास करत निवास शुभदिन अवध पहुंचे आइके। पुर नारिवर मुनि सकल जहँ तहँ चले देखन धाइके॥ नृप धाम अति अभिराम कौशिल्यादि रानिन नानेहूं। अनुराग बस है शिथिल मंगल चार पुनि सब ठानेहू॥ दधि दूब तन्दुल तुलसि दल फल फूल धन निशि आरती। धरि थार खनि अपार गावत चली मानहु भारती॥ जबद्वार गई बरात प्रमुदित मातु सब परछत भई। करि वेद विधि कुल रीति पांउड़ देत मंदिर लैगई॥ तहँ चारि सिंहासन सुतिन पर कुँवरि कुँवर पधारेऊ। पग धोइ करि आरति निछावरि विविधि वस्तु उतारेऊ॥ सब लोकि सुतवर बधुन युत आनन्द बस जननी भई। जिमि मूक पावे वाक्य पार सुरंक अंधा खी गई॥ मिलि करें लौकिक रीति तब सुत अस्नुषा सकुचावहीं। सुर पितर पूजि पुजाइ मागें नीक सकल रहावहीं॥ महिपाल बोलि बरात दीन्हे जान पट भूषण भले। सिर नाइ पाइ रजाइ रामै राखि उर निज पुर चले॥ पुर नारि नर पहिराइ सेवक छकित सब याचक भये। तब भूप सहित वशिष्ठ भूसुर संत अंतह पुर गये॥ शिर नाइ सब अन्हवाइ रानिन विविधि असन जेवांये हू। करि दान अति सनमान देत असीस सकल सिधाय हू॥ पुनि पूजि गुरुहि नवाइ शिर सुत संपदा आगे धरयो। निज नेगु मांगि वशिष्ठ रामहिं राखि उर घर को

ढ स्यो ॥ तब भूप रानिन सहित विश्वा मित्र की पूजा क-
री । कर जोरि दीन निवास भीतर भवन निरखत हरिवरी॥
पुनि पूजि द्विजपाहुन अपर गरा। सुमन बरषि सिधायहू॥
तब बोलि द्विजगुरु ज्ञाति सुतन समेत भोजन पायहू ॥
गावैं वधू मिलि गीत अचवन कीन निज धामन गये ।
तब भूप रानिन ते सकल मिथि लेश गुन बरणत भये ॥
भये मुदित सब तब कह्यो लरिका श्रमित उसनीदे अ-
हैं ॥ कर वाइ ये अब शैन गे बि श्राम मंदिर जहँ रहैं ॥ मनि
जटित पलंग बिछाइ पटु मृदु शुभ्र सींच सुगन्ध सों ।
पोढ़ाइ चारो माइ बोली माइ करुणा कंद सों ॥ किमि-
तात मारेहु असुर गण किमि विप्र वनित हि तारेहू ॥
किमि कठिन भंजेउ शंभु धनु किमि परशु धरहिं नेवारे-
हू ।भय काज सब मुनि कृपाते बलि जाहु भुज चापन
लगी । पर तोषि प्रभु सब मातु पुनि भे नींद बस ते रंगर-
गी ॥ वर बधुन ले सब सासु सोईं नाग मणि सम गोइ
के । भे भोर लागे पढ़न बन्दी राम जागे सोइ के ॥ करि
शोच विप्रन दान दे सहबंधु नृप जहँ तहँ गये । अवलो-
कि बिधि सुत गाधि सुत सब सभा युत हरषत भये॥ शि-
रनाइ बैठे गुरु पिते इतिहास मुनि लागे कहे । यहि भाँ-
ति नित नव होत मङ्गल बरणि को पारै लहे ॥ मांगे
बिदा ऋषि नाथ नित करि बिनय रघुपति राखहीं।
समुझे बिशेषि तयार तब कर जोरि नृप अस भाषहीं।
सुत धाम धन लवनाथ रानिन सहित मैं सेवक सदा ।प्र-
भु करत रहियो छोह सब पर दरश देब जदा तदा ॥ पु-
नि परे चरण सनेह सहित अशीश मुनि सबको दई ।

सिय राम छबि उर राखि ऋषि बन चले बरात पहुन-
ई ॥ रघुबीर पंद्रह बर्ष के षट अब्द की श्री जानकी।
भये ब्याह द्वादश वर्ष रहि पुर राम लीला आन की ॥ म-
हि देव सन्तन हेत सो समुझत सुखद मन भावनी।
अबिबेक वन्तन मोह प्रद को विदन बिरति बढ़ावनी॥
सिय राम जन्म विवाह मङ्गल मुदित सुनहिं जे गाइ-
हैं। रघुनाथ ते प्रभु कृपा करि हरि जगह में सुख पाइ हैं॥

दो० श्री गुरुदेवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
बाल काण्ड संक्षेप करि बरणा जन रघुनाथ॥
दधसुत भगनी पति तनय तासुत जननी श्रन्त॥
सैल सुता पति आदि भुज कहैं साधो सब सन्त

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ
दास राम सनेही कृत बाल काण्ड समाप्त
नाम एकादशो
ऽध्यायः॥११



श्रीगणेशायनमः

अथ विश्रामसागर

अयोध्या काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणों मानस मत कछुक अध्यातमहिं बखानि ॥
जबते आये ब्याहि प्रभु नित नव मङ्गल होत ॥
मुदित रहत पुरनारि नर तात मात गुरु गोत ॥
इक दिन विश्वा बसु तहां कियो गान गन्धर्व ॥
मुनि प्रसन्न है स्वपुर तेहि कह्यो रहन हित सर्व ॥
तेहिं कह इन्द्र निदेश बिन मैं न सकत रहि अन्न ॥
कह्यो केकई बसत है हमरे बल सुर कन्त ॥
हमरे आवत रिस करत अस तुम गये मोदाइ ॥
पठइ पत्रिका बानकर लखि [illegible]प रहे चुपाइ ॥
मन में समुझे केकई लिखि पठये बच बङ्क ॥
हमरिउ लागी घात तब हमहूं देब कलङ्क ॥
लिखि पठयो बिश्वा बसुहि कह्यो जो कहे भूप ॥
यह सत्यो पाख्यान की मैं कहि कथा अनूप ॥

चौ० यहि बिधि द्वादश बरषै बीती। एक समय की सुनिये बीती
केकै नृप सुत केकय नामा ॥ अवध आइ कह्यो नृपते कामा
सर सुख देश हमार उजारा ॥ तेहि हित दीजे भरत कुमारा
गुरु निदेश सुनि भरथै दीन्हा ॥ केकय सुवन गवन तब कीन्हा
बिदा होत पर राम लषण दोउ ॥ सचिव सुतन संग सुख[illegible]

गे कछु दूरि पठे फिरि आये ॥ सानुज भरत नगर निय राये ॥ ॥
केकय चलि आगे लय गयऊ ॥ लखि आनन्द सबन सुख भयऊ
बिप्रन ते तब होम करावा ॥ खर मुख सुनत सेन लय धावा ॥
भरथ समर करि मारयो ताही ॥ निरभय भये देश जस चाही ॥
नेह बिबस है मातुल केरे ॥ रहत तहां सो चरित निबेरे ॥ ॥

दो० यहां राम सिय लषण लखि सगुन कहैं यह बात ॥
समुझि भरत आवत भरथ भये बहुत दिन जात ॥
बरष अठारह की सिया सत्ताइस के राम ॥
कीन्ही मन अभिलाख तब कर नोहे सुर काम ॥
ताही क्षण तहं देव ऋषि बिधि संदेश कह्यो आइ ॥
पूजी शतिमा सहित प्रभु बिदा किये समुझाइ ॥
एक दिवस श्री अवध पति मनमें कीन बिचार ॥
रामहिं दीजे राज अब आपन चौथ हमार ॥

चौ० गुरुहि पूछि नृप कीन तयारी ॥ मङ्गल सामा सकल संवारी
जो कछु नृप अभि षेक सचाही ॥ फल दल जल मंगवायो ताही
बाजहि पुर गह गहे निशाना ॥ नाक नटी नाचैं करि गाना ॥
सेवक सचिव कहैं नर नारी ॥ धन्य भूप भलि बात बिचारी ॥
प्रभु दिन बढ़े एक ते एका ॥ देखब काल्हि राम अभि षेका ॥
अमरन सो उत्साहन भाई ॥ बोलि बिघन हित बाग पढ़ाई ॥
नाम मन्थरा केके चेरी ॥ आइ गिरा ताकी मति फेरी ॥ ॥
पुर रचना तेहि दीख नबीनी ॥ पूछेते काहू कहि दीन्ही ॥ ॥
राम राजि सुनि शर सम लागे ॥ अनमनि गई केकई आगे ॥

दो० मम सोदर की राज जिन बाबन है हरि लीनि ॥
करों बिघन तिमि महूं अब जेहि लगि सेवा कीनि ॥

चौ० यहि बिधि करत बिचार कुबूड़ी ॥ तजत अंसु करि अधम कीमुड़ी

भरथ मातु बोली का भयली ॥ जानि परत लक्ष्मण सिय दयली
हमे सीख देई कत कोई ॥ तब दुख लखि मोहिं भा दुख सोई
बरत अगिनि शिर ऊपर आई ॥ सो तुम अभय जानि नहिं पाई
कौन वृहद बीते दिन आजू । पैहैं काल्हि राम युव राजू ॥ ॥
सुनि रानी अति शय हरषानी ॥ लगी देन भूषण निज पानी ॥
जो तव वाक्य सत्य यह होई ॥ फिरि देहों जो मगिये सोई ॥
हमें रीझ तुम देहो काहा ॥ तुमहीं का नहिं होई लाहा ॥
रामचंद्र जब राजिहि पैहैं ॥ कौशिल्या तव तुम्हें सतैहैं ॥
जिमि कद्रू बिनते दुख दीन्हा ॥ चित्र केतु तिय अनभल कीन्हा
सुरुचि सुनीता को सुत बनमें ॥ पठइ दीन्ह सुख नाहिं सपन में ।
शुक्र सता सर मिष्टे कष्टा ॥ दीन कीन निज पति को नष्टा ॥
सहित गरल भे सगर सयानी ॥ भई बाँझ सब शशि की रानी
यदपि सवति तव सरल सुभाऊ ॥ कर परि कु असि करत कुघाऊ
भूप करत तब आदर भारी ॥ देखि सखी नहिं सवति तुह्मारी
तब सुत पठै नन्यौरे दीन्हे ॥ लेत राज निज पुत्रहि लीन्हे ॥
सुवन सहित करिहो सब काई ॥ नाहित रहि हो पितु घर जाई ॥
समुझि परत मोहिं बिश्वा बीशा ॥ परी बिपति सब तुम्हरे शीशा
जो कहो राम चहत अति मोहीं ॥ निर बल में रिपु मित्रहु होहीं ।

दो० जिमि बन जारत अगिन तब पवन सखा होय जाइ ॥
सोई मारुत कृश देखि कै दीपै देत बुझाइ ॥ ॥

सो० सुखद दुखद शशि होइ । लहि रवि बसु श्रुति योथ गृह ॥
मृग मधु जाहि बिन तोइ । दहत कहत मग छुत ज जम ॥

चौ० तेहि ते अबहीं करहु उपाऊ ॥ जेहि न होइ पाछे पछिताऊ ।
द्वै बर नृप थाती सो लेहू ॥ सुतहि राज रामै बन देहू ॥ ॥
एक तो दुर्दिन काज सुख दारी ॥ दूसर सुर संग्राम मझारी

सुनि प्रतीति रानी मन आई ॥ हरि इच्छा तुम जानहु भाई ॥ ॥
कोपभवन पहुँची तजि साजा ॥ भावी बस आये तहँ राजा ॥
कोपभवन मंथरहि बतावा ॥ सुनि नरेश मन में भय पावा ॥
सुरपति सुहृद दनुज अरि जोई ॥ कालहु ते न डेरहि रण सोई ॥
तियरिस सुनि भे कंपित गाता ॥ काम कृशान निमित अति नाता
धरि धीरज रानी ढिग गयऊ ॥ शीश परसि कर बोलत भयऊ
केहि कारण कीन्ह्यो रिस प्यारी ॥ कोतव दूसर है तनु धारी ॥ ॥
दो० कहु कहि रङ्कहि नृप करों नृपै रङ्क करि देउं ॥
तव अरि अमरहु होइ तेहि बध करि पाछे पेउं ॥
चौ० कहों खोलि निज कोप प्रसंगा ॥ भूषण साज हु मनोहर अङ्गा
है प्रसन्न चितवहु मम ओरा ॥ आजु भयो मनभावन तोरा ॥
है है कालिह राम युवराजा ॥ हरष समय तुम दुख उपराजा ॥
सुनि नृपबचन भयो दुखभारी ॥ दिहिसि पारि निज सिर ने टारी
पुनि धरि कर बोले अनुरागी ॥ जो भावै सो लीजै माँगी ॥ ॥
तव हित कछु न अदेय हमारे ॥ सुनि केकै तब बचन उचारे ॥
मांगु मांगु बर जब तब कहऊ ॥ लेत देत फिरि कछु न लहऊ ॥
आगे देन कह्यो बर दोई ॥ अब तक मोहिं मिले नाहिं सोई ॥
सुनि नरेश हँसि बोले तीन्हा ॥ कब मांगेहु कब हम नहिं दीन्हा
हमरे कुल यह प्रकट प्रशंसा ॥ बचन न जाइ जाइ बरु हंसा ॥
झूठे दोष देहु जनि प्यारी ॥ लेहु मांगि किन द्वै के चारी ॥ ॥
जो पति शपथ राम की कीजे ॥ तौ हम मांगि उभै बर लीजे ॥
हँसि नृप राम सपथ तब खाई ॥ सुनि त्रिय सरिस उठी हरषाई
प्रथम देहु बर यही समाजा ॥ भरथहि बोलि करहु युवराजा ॥
दूसर राम धाम तजि राई ॥ चौदा बरष बसैं बन जाई ॥ ॥ ॥
भनि नरनाह मूर्छि महि परेऊ ॥ मनहुँ तरङ्गिनि ते तरु गिरेऊ ॥

धरि धीरज पुनि आंखि उघारी॥ पुरह किरातिनि सरत निहारी
बोली बहुरि सुनो नर नाहा॥ भरत तने तब होई न काहा॥
जासु राज सुनि भा दुख भारी॥ प्रथम देन कत कहेउ पुकारी
कहु नृप सत्य कहौं तोहिं पाहीं॥ भरथ राज सुनि दुख मोहिं नाहीं
दूसर बरु मांगेहु दुखरासी॥ सांचहु सांच कि कीन्ह्यो हांसी
तोहिं प्रिय राम रहैं अति आगे॥ आजु कठिन केहि कारण लागे
जो कृत वैरिहु कर उपकारा॥ सो किमि करी मातु अपकारा
जेहि दुख दुसह देत सब काऊ॥ मैं तोसे निज कहौं सुभाऊ

दो॰ रहै भानु बिन दिवस बरु रहै मीन बिन नीर॥
राम बिना मम प्राण नहिं रहि हैं सुमुखि शरीर॥

कुण्डलिया नारद ऋषि प्रभाव नृप संजे सुत मल्ल हेम। हो-
त जानि हरि रहि हलन करि कछु लह्यो न नेम॥ करि कछु
लह्यो न नेम तर कि तल्प फुनि भलते। हरि परि भव हित
गोप गृह पाल्यो गोपल ते॥ तेस्था सिंहहि देखि दबकि-
बिल माहिं लुकान्यो। मिल्यो सुरभि को पाप स मुक्ति पाछे
पछितान्यो॥ पछितान्यो तिमि तुम्हें शोच तो धरी विचार-
द। मूरख की रघुनाथ इमपि कृत होत न नारद॥

चौ॰ तेहि ते पुनि मागहु मोहिं पाहीं॥ रहें राम पुर बनहिं न जाहीं
जेहि ते हमहु बरष दुइ एका॥ देखें भरथ राज्य अभिषेका
सुनि बोली बोढर जनि करहू॥ निज कुल रीति हृदय महं धरहू
देखो शिबि दधीच हरि चंदा॥ सहे धर्म हित दुख अति मंदा
मधु कैटभ सिर बिष्णुहिं दयऊ॥ बिट बहु ले कछु कष्ट न भयऊ
बालि बचन जिन नहिं प्रतिपारे॥ कहत बेद तिन के मुख कारे
तेहि ते तजहु सत्य जनि नाथा॥ पठवहु जाहि विपिन रघुनाथा
जो न प्रात जैहैं मुनिबरणा॥ तुमहिं अयश होई मम मरणा॥

सुनि पुनि नृप बहु बिधि समुझावा ॥ होनहार तेहिं तन कन भावा ॥
गिरयो भूमि ह्वै बिकल भुवाला ॥ जानेहु तिय मिसि आयहु काला ॥
हृदय मनावत शंभु बिधाता ॥ करहु कृपा जेहि होइ न प्राता ।
गुरु गणेश शारदा भवानी ॥ रहैं राम तजि घर मम बानी ॥

दो० भेषज सुर अभिषेक जन नेकन निरफल जात ॥
काल बिबस जग जाल जिमि नौ चढ़ि जल बहि जात ॥

चौ० यहि बिधि बिलपत भयो बिहाना ॥ बाजे जहँ तहँ तूर निशाना ॥
बंदी गण गुण गावन लागे ॥ अनुदित प्रिय पुर बासी जागे ।
सुनि नर पतिहि न नेकु सोहाई ॥ समर समय जिमि गारी गाई ॥
प्रात बशिष्ठ सभा महँ आये ॥ लखि सुमन्त्र ते बचन सुनाये ।
सदा प्रथम आवत नरनाहा ॥ आजु गहर भे कारण काहा ।
वेगि खबरि तुम लावहु जाई ॥ चले सुमंत्र परम चपलाई ॥
गये कोप मंदिर सुनि बाता ॥ सभय उलंघी ड्योढ़ी साता ।

दो० प्रथम तरुण युग जेठ पुनि बालक छौ बाचारि ॥
पंचम यौवन बिरध घट सप्तम गौरी नारि ॥

चौ० आगे जाइ केकइहि देखा ॥ परे बिकल तहँ भूप बिशेषा ॥
शीश नाइ बोले मृदु बानी ॥ भूप परे कस बिबरन रानी ॥ ॥
रामहि प्रथम लयावहु जाई ॥ भूप कृपाल तब बूझियो आई ।
नृप रुख पाइ सुमंत सिधाये ॥ बेमन राम के मंदिर आये ॥
देखि पिता सम प्रभु सनमाना ॥ पूछे ते तिन हाल बखाना ॥
चले तुरत प्रभु संग उघारे ॥ देखि लोग सब भये दुखारे ॥
पहुँचे जाइ जहाँ नृप रानी ॥ बोले राम जोरि युग पानी ॥ ॥
जननि जनक को हि हेत दुखारी ॥ करिय सो कृत्त जेहि होइ सुखारी
सुनहु राम दुख मूल सनेहू । बड़ी न सुख यहि कहौं न येहू ॥
हानि लाभ सुख दुख किन होई ॥ कहिये देन तेहि दीजे सोई ॥

तिबिवर मैं मांगे इन पासा ॥ भरतहि राज तुम्है वन बासा ॥ ॥
धर्मकेतु कछु कहत न बानी ॥ तुम तें सधै करो सोइ जानी ॥
सुत सोइ जो पितु सुयश बढ़ावै ॥ आपशदेइ तेहि सुत को गावै
सुनि कैकै के वचन कठोरे ॥ बोले राम अमीजनु बोरे ॥ ॥ ॥
अनिल सुवात पितै दुखभारी ॥ अपरहेतु कछु है महतारी ॥
भरत सपथ मैं सत्य बखाना ॥ कारण आन मोर नहिं जाना ॥
तब रघुपति गहि नृपहि आवा ॥ हाथ जोरि अस बचन सुनावा ॥
तात तजिके तन तजहु गिलानी ॥ मंगल समय मोद उर आनी
जो जननी जांचे वर दाना ॥ तामें अति हमार कल्याना ॥ ॥

दो० एक तौ बन मुनिजन दरश भरत प्राणप्रिय राज ॥
पुनि निदेश पितु मातु कर मोहि विधि दाहिन आज ॥

चौ० ऐसहु पर निज करहु न काजा ॥ जानेहु मोहि मूढ़ नरराजा
मूढ़ सो सत्रा विधि के जानो ॥ कहे पूर्व मनु तैस बखानो ॥ ॥
मोहिं षशी छं० कहैं इमपि पूरब मनु स्वयंभू मूढ़ सत्रह होत जू। जन जो अशिष्यहि करत शिक्षा तौन पहिले पोत जू ॥ है जौन सेवन दार दिहि धन देत दूजो तौन जू। करि तौन सो जो रहित शत्रुहि कुशल चाहत जौन जू ॥ है सो चतुर्थ जो कथत निज मुख कर्म कारज पूर्ष जू। जो बैर ठानत प्रबल सो है निबल पंचम मूर्ख जू ॥ मूढ़ छठवां करत कुत्सित कर्म जो गुरु ज्ञान जू। गुण कहत सरधा हीन में सो मूर्ख सतवां ख्यात जू ॥ गुरु गोत्र तिय सों करत निन्दित कर्म अठवां तौन जू ॥ जो पुत्र तिय गत्ति मान चाहत नौम सो अधा भौम जू। निज बीज जो पर खेत डारै दशम मूरख खेद जू। है सो एकादशम मूर्ख तिय सो कहत जो निज मंत्र जू ॥ अपरदेन कहि नहि देत जो सो मूढ़ द्वादश गंग्य जू। जो भेद जानो बिना जल पत तौन ते रहो अन्य जू ॥ जो चतुर दशवां मूढ़ गुण तन कर्म को फल पाय जू। अरु पंचदश जो याचक न

सो कहत कटु रिस छाय जू॥ जो दान भोगन करत सो रहैं मू-
ढ़ सो धनवान जू। निज बंधु भागहि हरण चाहत सत्र दश-
मन दान जू॥ जो लखत लोक प्रलोक नहिं सो मूढ़ सब में
श्रेष्ठ जू। सोउ पाइ ऐसो समय तजवन भजवहे असपष्ट जू॥

दो० धृति सम दम सुचिता दया सति प्रिय सुबचन नेम॥
आनंद बरधन समन अघ दोउ दिशि दायक छेम॥
मोह दीनता भूप के करत सकल गुण नास॥
ताते दोउ तजि राखिये स्वधरम सहित हुलास॥
सुत तिय तन धन धाम सोइ जासों सधै स्वधर्म॥
ताते देहु निदेश मोहिं बन हित परिहरि भर्म॥

चौ० सुनि नरेश अति ही अकुलाने। मोह बिवस रघुनायक जाने
करि प्रबोध पर्य्यंक सोवाये॥ बिदा होत हित हर्षि सिधाये।
आये प्रथम जानुकी धामा। देखि दीन आसन अभिरामा
बोले प्रभु मोहिं पितु अरु माई॥ आयसु दीन बसहु बन जाई
धर्म हेत धर मत्त नृपाला॥ प्रगट सुरायसु चाहिय पाला॥
चौदा बरष बास करि ब्यारी॥ ऐहों फिरि तुम रह्यो सुखारी॥
सासु ससुर की सेवा करेऊ॥ नारि धर्म मो हिरदय धरेऊ॥
कानन भय दुख नाना रंगा॥ नाहित लेल्ले त्यों निज संगा॥
जो हठ बस चलि हो संग प्यारी॥ तो गालव सम होब दुखारी

दो० गालव कौशिक केर शिषि कह्यो दक्षिणा लेहु॥
सेवा ते संतुष्ट हम हर्ष तुष्ट नहिं एहु॥
श्याम करण हय आठ शत हठ लखि बोले लाउ॥
सुनि मुनि गयो ययाति नृप निकट बिचारि प्रभाउ॥
पूछि प्रयोजन तिन दई कन्या सो लै बिप्र॥॥
नृप हरश्व ते कह्यो यह लेह देहु हय छिप्र॥॥

एक भुवन जन माइ तिन दीन्हे दुइ शतबाज॥
तिमि काशीस उसीराँपति अरप्यो अर्भककाज॥
दुइ शत मिले ननेहु पर तब मुनि मानि गिलानि॥
गये विश्वामित्र ढिग अस है हठ दुखदानि॥

चौ० सुनि बोली नवजनक दुलारी॥ सुनहु भरत पति विनय हमारी
अनुज अम्बपितु सुत सुखनाना॥ पिय बिन प्रमदै प्रेत समाना
तेहि विधि नाथ मोहिं जगमाहीं॥ तुम बिन सुख कतहुं कोउ नाहीं

दो० ॥ रहै चंद्र बिन चन्द्रिका रहै मीन बिन पाथ॥
तो घरमें मोहिं राखिये बहुत कहों का नाथ॥
देखि प्रीति बोले चलहु संग चली हरषाइ॥
सुनेहु लषण बन जात प्रभु ढिग आये बिलखाइ॥

चौ० आश नाइ शोचत मनमाहीं॥ मोहिं प्रभु संग लेहैं की नाहीं
देखि बिकल बोले रघुराई॥ धीरज धरि रहो घर भाई॥ ॥
भवन भरत नाहिं प्रिय रिपुआरी॥ तात मातु मम बिरह दुखारी
जो मैं तुमहिं चलों ले साथा॥ हैं हैं पुरजन निपट अनाथा
जेहि नृप राज प्रजा दुख पावे॥ अवशि अधिप सो नर्क सिधावै
अस बिचारि रहिये गृह भाई॥ करहु मातु पितु की सेवकाई॥
भव भय हरनि मातु पितु सेवा॥ बिमुख निरय भाषत महि देवा
सुनि लक्ष्मण अतिशै दुख पावा॥ पद शिर धरि अस बचन सुनावा

दो० नाथ बात जो कही तुम नाहि करै नर सोइ॥
कीरति सुगति बिभूति तिय तनुज जाहि प्रिय सोइ॥

चौ० मोहिं एक प्रभु तुम तें नाता॥ अपर न जानहुं गुरु पितु माता
तेहि ते तजहु न किंकर जानी॥ सुनि रघुपति बोले मृदु बानी

दो० तात मातु ते बिदा है आइ चलो मम साथ॥
जाय सुमित्रा के चरण भय युत नायो माथ॥

चौ० बोली देखि दुखित कसताता॥ तब तहँ लषण कही सबबाता
सुनि गइ सहमि सुमित्रारानी॥ धरि धीरज बोली मृदु बानी॥
तात राम सिय तव पितु माता॥ रहैं जहां अवध सुखदाता॥
जो बन जात राम सुकुमारा॥ तो घर में का काज तुम्हारा॥ ॥
तेहि ते बन तिन के संग जाहू॥ लेहु वत्स जगजीवन लाहू॥ ॥
मोहिं समेत भयो बड़ भागी॥ जो तव राम चरण रति जागी॥
करेहु तात सोइ बात बिचारी॥ जेहि न राम सिय होइं दुखारी॥
सुनि लक्ष्मण उठि शीस नवायो॥ पाइ असीस राम ढिग आयो
तब प्रभु सहित जानकी भ्राता॥ आये जहँ कौशिल्या माता॥
चरण छुवत निज उर बैठारे॥ भई गहर कल बचन उचारे॥
बोले तब रघुपति सुनु माता॥ बनकी राज दीन मोहिं ताता
आयसु देहु मुदित मन ताते॥ कुशल आइ पद देखिय जाते
कौशिल्या सुनि अति दुख भयऊ॥ मनहु छीनि सुख सर्बसु लयऊ
बोली केहि अपराध भुवारा॥ राज देन कहि बिपिन निकारा
सचिव सुवन सब बात बखानी॥ सुनि व्याकुल है बोली बानी

दो० सुर अरि ते दधि मस्त ते रावन पिता निकेत॥
हे विधि राख मोहिं तू यही देखावन हेत॥
धरि धीरज बोली बहुरि तात किहेउ अति नीक॥
पितु आयसु सब धर्म मय वदत वेद है ठीक॥

चौ० जो मैं कहौं रहो सुत घरमा॥ बढ़ै वयरु शिर चढ़ै अधर्मा
तेहि ते अवशि जाहु बन भैया॥ आयहु वेगि जाइ बलि मैया
सिय एकहु दुख जानत नाहीं॥ इनकर लाड़ सह्यो बन माहीं
मैं बहु भांति सिखावन दीन्हा॥ तदपि चलन हित हठ प्रण कीन्हा
लषण लाल अति से सुकुमारे॥ रहत न तेउ संग जात तुम्हारे।
रूप [illegible] मुख इनकर देखी॥ सहि न सक्यो सुधि लिहेयो विशेषी

है स्वतंत्र वन दूनो भ्राता ॥ करेउ न कबहुं जीव कर घाता ॥ ॥ चलेहु साईं जेतना चलि जावे ॥ कह्यो संदेश इते कोइ आवे मोहिं सम नारि अभागिनि कोई ॥ भई न अहै न आगे होई ॥ जो जन तिउ आगे दुख एहा ॥ तो नहिं कर तिउं नृप ते नेहा ॥ जात बिपिनि मम बालक वारे ॥ देखि न निकसत प्राण हमारे अस कहि अवनि गिरी मुरझाई ॥ प्रभु जननी बहु बिधि समुझाई पुनि धरि धीर भाषि सुत बक्षा ॥ लागि करन अंगन की रक्षा ॥

रोलाछंद॰ नमो विष्णुपद पातु जानु तिविक्रम बीरा ॥ कटिहि रक्ष गोबिंद नाभि अच्युत रणधीरा ॥ गुल्म पातु पद्मास्य उदर हरि उर श्री नाथा ॥ भुज मधु सूदन पातु कुक्ष पृथ्वीधर साथा ॥ कंठ जनार्दन पातु कृष्ण मुख मंडल सोहै ॥ करणा मूल बाराह घ्राण दामोदर जोहै ॥ नेत्र निरंजन पातु भाल लक्ष्मी नारायन । केशो पातु कपोल सर्व तन चक्र धरायन ॥ पूर्व पातु पुरुषोत्तम सदा अग्नि गरुड़ध्वज । दक्षिण दिशि नरसिंह पातु नैऋत्य चतुर्भुज ॥ वासुदेव बारुणय पातु बायव्य विप्रंवभरणामरक्ष कौबेर्य शंख ईशान गदाधर ॥ कमलनाभि अध ऊर्ध पातु जल गिरि बन बावन । व्याघ्र सिंह ते पातु सदा शंकर मन भावन भूत प्रेत बैताल [illegible] राक्षस छल का[illegible] ॥ अगिनि चोर बिष बीछ सर्प ते पातु मुरारी ॥ पर विद्या उभ यंत्र मंत्र पर तंत्र जहाँ लौ ॥ माधो सकल निवारु मारु रुज शूल तहाँ लौ ॥ यहि बिधि रक्षा कीनि दीनि पुनि दुख दुअशीषा ॥ सहित लखण सिय चले नाइ जननी पद शीशा ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत बनयात्रा नृप बिषाद वर्णनो नाम द्वादशो ध्याय: १२॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणों मानस सहित कछु अगिनि बेस कृत आनि॥
चौ० कछुक शोच चित कछुक उछाहा॥ आये रघुबर जहां नरनाहा
भे सुनि विकल सकल पुरवासी॥ मनहुं दवाहु दिशि लागि दवासी
कर थिर धुनहिं भागि बिन जानी॥ मन मलीन तन दशा भुलानी
कोइ कहै भल न केकई कीन्हा॥ कोइ कहै नृप काहे कबर दीन्हा
कोइ कहै बिधि चाह सो करई॥ कोइ निज कर्मन के सिर धरई
कोइ कहै भरतहु कर मत होई॥ सुनि कर कान्ह राखि कहै कोई
लागत श्रवण असकिय बखाना॥ राम भरत कहँ भ्राता समाना
अगिनि होइ जल बरु नभ फूला॥ भरत न होब राम प्रतिकूला
यहि बिधि कहत सुनत सब धाये॥ विरह विकल नृप मंदिर आये
भइ अति भीर भूप दरबारा॥ बरणि न जाइ बिषाद अपारा
तेहि अवसर कै सुधि जब पावै॥ अजहुं दरार अवनि उसावै
दो० तब रघुबर सिय लखण सुत नृप पद शीश नवाइ॥
कह्यो बिदा मोहिं कीजिये तात बिषाद बिहाइ॥
निरखि भूप शिशु रूप उठि लीन्हे हृदय लगाइ॥
है बस धर्म सनेह कछु कह्यो न रह्यो चुपाइ॥
देखि केकयी तमकि कै मुनिपट भाजन दीन॥
बोली पहिरहु जाहु बन जो चाहौ हित कीन॥
अनुज सहित बलकल पहिरि करि पितु मातु प्रणाम॥
कृष्ण पक्ष बैशाख दिन छठे चले बन राम॥
विप्र वधू बर के कयिहि रहीं बहुत समुझाइ॥
तेनहिं कीन्ह्यो कान तब चलीं अधिक दुख पाइ॥
कह्यो भूप तब सचिव ते रथ पर लेहु चढाइ॥
बन देखाइ अन्हवाइ सरि लावहु तात फिराइ॥

तुरत बाजि रथ साजि कै गये राम के तीर ॥
सुनि बिनती आरूढ़ भे सिया सहित दोउ बीर ॥
चले अवध शिर नाइ सब पुरजन लागे साथ ॥
प्रभु फेरत नहिं फिरत सो खग मृग बिकल अनाथ ॥
आइ रहे तमसा निकट प्रथम दिवस बिन नीर ॥
करुणामय भे दुखित तब देखि सकल के पीर ॥
लोग श्रमित गे सोइ सब कह्यो सचिव तें राम ॥
खोज मारि रथ हाँकिये नाहित बिगरत काम ॥
आयसु पाय चढ़ाइ रथ हांक्यो खोज दुराइ ॥
जागि लोग भे बिकल तब जब न लखे रघुराइ ॥

चौ० राम राम कहि खोजन लागे ॥ रथ कर चिन्ह न देख्यो आगे
फिरि आये गृह आपुहि जानी ॥ करहिं मौन धन्य करि मानो
राम दरश हित जप तप नेमा ॥ लगे करन पुरजन युत प्रेमा ॥
इहां राम सिय सचिव सभाई ॥ शृंगबेर पुर पहुंचे जाई ॥
उतरि कीन सुरसरि असनाना ॥ यतने माहिं भील पति जाना
लै फल फूल भेंट तहँ आवा ॥ कीन्ह दण्डवत लखि सुरराया
उठि रघुनाथ लीन उरलाई ॥ पूछी कुशल पास बैठाई ॥ ॥
नाथ कुशल सब बात हमारे ॥ पद पंकज दुख दलन तुम्हारे
आपु कहां इत कीन पयाना ॥ तब रघुपति सब हाल बखाना
सुनि निषाद मन भयो बिषादा ॥ बोल्यो बहुरि सहित अहलादा
तुम प्रभु होउ इहां के राजा ॥ हम सब सेवक सहित समाजा
चलहु भवन प्रभु कह तिन पाहीं ॥ ग्राम जान की आज्ञा नाहीं
तब सिंसुपा तीर लै गयऊ ॥ कुश साथरी बिछावत भयऊ ॥
तेहि पर उतरि सबन फल खाये ॥ पौन कीनि पुनि सहज सुभाये
सोवत प्रभुहि निषाद निहारा ॥ दुखित लषण ते बचन उचारा

दो० जे सोवत रहे मणि पलँग पुरट महल के माहिं॥
ते पौढ़े कुश साथरी विधि जु वाम केहि नाहिं॥
सुनि बोले सौमित्र कछु विधि कर दोष न होइ॥
निज कृत कर्म अभंग फल भोगत हैं सब कोइ॥
राम सच्चिदानन्द घन रहित समस्त विकार॥
करत चरित सुर सन्त हित धरि स्वतंत्र अवतार॥

चौ० अस विचारि दुख परिहरि नेहा। करहु राम पद पदुम सनेहा॥
मृगतृष्णा सम जग व्योहारा। सत्संगति हरि सुमिरन सारा॥ ॥
तात परम परमारथ सोई। जो रघुबीर चरण रति होई॥ ॥ ॥
यहि विधि कहत सुनत भा भोरू। जागे सकल सुनत खग सोरू॥
करि स्नान सिर जटा बनाये। लखि सुमंत्र तब बचन सुनाये॥
नाथ कह्यो मोहिं कौशलनाथा। बन देखाइ ले आयो साथा॥
कह प्रभु तात सकल तव जानी। धर्म न दूसर सत्य समाना॥
सो मैं सत्य तजहुं किमि जानी। अयश होइ पुनि धर्म कि हानी॥
तेहिं ते तात जाहु घर आजू। नाहित होई अवध अकाजू॥
कह्यो पिता सन बिनै हमारी। मम हित करैं न संशय भारी॥
जननिन ते कहियो शिर नाई। आवत सपदि फिरि दोउ भाई॥
कह्यो भरथ जब मंदिर आवैं। करहु राजि जेहिं सब सुख पावैं॥
गुरु पितु मातु बचन अनुहारी। करत कछू तेहिं लागि न ख्वारी॥
यदु यमदग्नि गणेश हरी के। चरित चारु जग प्रचुर परीके॥
तुम पितु सम मम बिनै तुम्हारी। करेहु सो जेहि नृप रहैं सुखारी
अस कहि चले सबै शिर नाई। सुरसरि तट आये रघुराई॥ ॥
माँगी नाव न केवट लावा। कहै तुम्हार मरम मैं पावा॥ ॥ ॥
पाहन ते कीन्ह्यो मुनि नारी। तेहि ते कठिन न नाव हमारी॥
यहिं ते चलत मोर परिवारा। नाथ न जानहुं अपर प्रकारा॥ ॥

सुरसरि पार जान जो चहहू ॥ तो प्रथमै कछु लेग कछु महऊ ॥
लेन देहु मोहिं पगरज धोई ॥ मानुष करणी सूझहि सोई ॥ ॥
धोय बिनन देहीं अन्न जाना ॥ लषण कोप किन मारहिं बाना
सुनि वाणी प्रभु केवट केरी ॥ बिहसे सिय लक्ष्मण तन हेरी ॥
बोले पुनि लीजे पग ढाली ॥ कमठ दृश्य लावा जल हाली ॥
पदपखारि जल कीन्ह्योपाना ॥ सुरन देखि बड़भागी जाना ॥
नाव चढ़ाइ पार तब कीन्हा ॥ शीस नाइ जब चाले लीन्हा ॥
सिय मुद्रिका देन प्रभु लागे ॥ बोला सहित जोरि कर आगे ॥
तुम केवट भवसागर केरे ॥ नदी नार के हम बहु तेरे ॥ ॥
हमरी तुमरी कसि उतराई ॥ नापित नापित की बन बाई ॥ ॥
सुनि प्रभु ताहि भक्ति बर दीन्हा ॥ पुनि सुरसरि महँ मज्जन कीन्हा
करि बिनती सिय नायहु शीसा ॥ दीन मुदित मन गंग असीसा
तब प्रभु संगे कह्यो घर जाहू ॥ बोला तब भीलन कर नाहू ॥
जैहों जहँ तहँ तक पहुँचाई ॥ फिरिहौं तब प्रभु कुटी बनाई ॥
सुनि चलि भे प्रभु सहित हुलासा ॥ तेहि दिन भयो पथ में बासी ॥
नौमी दिन तीरथ पति गयऊ ॥ तिरबेनी जल मज्जन भयऊ ॥
विप्र वृन्द सनमानि सिधाये ॥ भरद्वाज के आश्रम आये ॥ ॥
कीन दण्डवत सहित समाजा ॥ उठ लगाइ बोले ऋषि राजा ।
आजु सफल मम जप तप ज्ञाना ॥ तीरथ बसन योग मख दाना ।
धन्य जन्म जग जीवन भारी ॥ भयो कृतारथ तुम्हें निहारी ॥
अब करि कृपा देहु बर मोहीं ॥ काय बचन मन सुमिरों तोहीं
जबतक तव पद प्रेम न होई ॥ तब तक सुख न लहै नर कोई ।
अस कहि मधुर मूल फल दीन्हे ॥ सबन सहित प्रभु भोजन कीन्हे
तेहि निशि रहि करि प्रातस्नाना ॥ मुनिहिं नाइ शिर कीन्ह पयाना
ग्राम निकट जेहि निकसहिं जाई ॥ थकित होहिं लखि लोग लुगाई

एक एक ते कहैं बिचारी ॥ ए बालक बन योग न प्यारी ॥ ॥ ॥

दो० कोइ कहे इनके मात पितु हैं कठोर मम जानि ॥
कोइ कहैं हाय न होय हरि निकसे मानि गलानि ॥

चौ० कोई कहैं नृप सुवन शिकारी ॥ बन बिचरत मिलिगे सुरनारी ॥
कोइ कहै बरबस भूपकुमारी ॥ बरि भाग बन भवन बिसारी ॥
कोइ कहै काम बाम ले रूरी ॥ चढ़े शम्भु पर बैर बिसूरी ॥ ॥
कोइ कहै विप्र शापबस आहीं ॥ सिद्ध समन सिद्ध कोइ जाहीं
कोइ कहैं हैं ठग लिहे ठगोरी ॥ ठगत फिरत मन मति करि भोरी
कोइ कहै ए सुकृती हैं कोई ॥ निज परलोक सुधारत सोई ॥
उदय भये कछु भाग हमारे ॥ भरि नयनन जो इन्हें निहारे ॥
यहि बिधि कीतरकैं करि भूरी ॥ पूंछे निज निज जाइ हजूरी ॥
कह्यो राम सति बचन तुम्हारे ॥ फलत भाउ जस बैर हमारे
तेहि अवसर तापस एक आवा ॥ करि बिनती हरि धाम सिधावा

दो० भगवासिन सुख देत इमि उतरे यमुना जाइ ॥
मज्जन करि हरि सरबहि तब बिदा कीन घरि आइ ॥
चले लषण सिय सहित प्रभु करि यमुनहिं परनाम ॥
उतरे सीतहि श्रमित लखि बट तरु तर ढिग ग्राम ॥

चौ० एक अली लखि गइ निज गेहा ॥ कहत सखिन ते सहित सनेहा
सखि यहि ग्राम पथिक द्वै आये ॥ गौर श्याम छवि धाम सोहाये

दो० तिन संग सुन्दरि एक जेहि लखि लाजत अगमेव ॥
चारि सुमन फल चारि पसु विहंग चारि श्रुति देव ॥

चौ० सुनि पुरजन सब देखन धाये ॥ उतरे प्रभु जहँ तहँ चलि आये
लखि शिख सुभग स्वरूप निहारी ॥ सीता ढिग आई मिलि नारी ॥
पूछहिं हे स्वामिनि सुकुमारे ॥ ये दोउ बालक कौन तुम्हारे ॥ ॥
देवर लषण कह्यो सिय बैनन ॥ निजपति प्रभुइ बतायो सैनन ॥

कोशल पुर है इनकर धामा॥ नृप दशरथके सुत अभिरामा॥
कारण कौन फिरत बन माहीं॥ कोमलपद पद त्राण हु नाहीं
सासु सवतिकीन्ह्योउत पाता॥ दियो बनबरष सातअरु साता
सुनि सियवचन सकल बिलखानी॥ बोलीं बिधिगति जानन जानी
निपट निठुर चितकरत जो भावै॥ नीके माहिं जबून लगावै॥
आधि सीतल घटबट सकलंकी॥ कोमलकु दलैकिहिसिकदली
रूपकल्पतरु जलनिधिखारी॥ नीचधनिक बड बिप्रभिखारी
इनकार रूप अनूपम कीन्हा॥ तेहिपाछे कानन लिखिदीन्हा
जोपै इन्हे दिहिसिबनबासा॥ तौ कत कीन्हि सभोग बिलासा
यहि बिधि कहि सब आपुसमाहीं॥ बोलीं पुनि रघुपतिके पाहीं
आजु रहौ चलि हमरे धामा॥ आखिर रहा दिवस यक यामा॥
कह प्रभु हमे दूरिहै जाना॥ अस कहि उठि बन कीन्ह पयाना
लखि सब लोग उठे अकुलाई॥ मनहु गई गृह सम्पति आई
दृग जल पूरि कहत करजोरी॥ फिरत करेउ इत कृपा बहोरी
हरि इच्छा जस समय बिलोकी॥ करबत था थलपरथे रोकी
प्रभु सिय लषण जात इमि लागा॥ भक्ति सहित जनु ज्ञान बिरागा
मग में देखि ज्योतिषी कहई॥ राज चिन्ह सब तुम्हरे अहई॥
सो बन बिचरत बिन पद त्राना॥ ज्योतिष झूठ हमारे जाना॥
बहुरि बिचार करहिं गनि आछे॥ होई राज कछुक दिन पाछे॥
जो देखें सो संग सिधावै॥ घूमहि तब जब बहु समुझावे॥॥
जिन सियराम बटोही हेरे॥ भव दुख दूरि भये तिन केरे॥
अजहुं जासु उर वह छवि आवै॥ निश्चय सो परधाम सिधावै
मग निवास करि प्रात सिधाये॥ बालमीक के आश्रम आये

दो॰ कीन्हि दण्डवत मुनिहि प्रभु लीन बिप्र उरलाय॥
लषण राम सियरूप लखि भये मुदित ऋषिराय॥

कंद मूल फल अमीसम दीन्हे करि सनमान ॥
भोजन करि परि भृत्य ते बोले राम सुजान ॥
नाथ चतुर दश बरष मो बन दीन्हो महिपाल ॥
सुथल बतावहु निरबिघन तहां रहों कछु काल ॥
कहमुनि राम नरेश शिर धरहु काहु निज तंत्र ॥
अद्भुत चरित तुम्हार लखि कौन भूलिहैं मंत्र ॥
अकथ अलौकिक रूप तव तर्कि सकै नहिं केउ ॥
जाने सोइ करि कृपा तुम जाहि जनावो देउ ॥
निज रहिवो हित बेस्म जो पूछेउ सो सुनि लेहु
कहैं सुनैं तव चरित जे तस्य हृदय तव गेहु ॥
मंत्र राज तव जपहिं जे रटैं निरंतर नाम ॥
निरद्वंद्वी निस्पृह सदा तस्य उरसि तव धाम ॥
पर त्रिय जानैं जननि जिमि परधन गरलसमान ॥
सम लोष्ठ सम कांच नहिं तस्य मनसि तव थान ॥
जाति पाँति धन धाम तजि तुम्हैं रहैं लवलाय ॥
तिनके मन मंदिर बसहु सिया सहित दोउ भाय ॥
जिनके मान न मोह मद त्वद दासन में नेह ॥
काम क्रोध कटु रहित जे ते मानस तव गेह ॥
तव उच्छिष्ट भोजन करैं तव प्रसाद पट लेहिं ॥
बसहु तासु उर राम जे क्षुधित तहि भोजन देहिं ॥
दुख सुख समुझैं एक सम शांत शुद्ध चित मौन ॥
जगत रीति ते रहित जे तस्य उरसि तव भौन ॥
षट विकार मय बपु लखै आतम रहित विकार ॥
करै सदा सत संग जे तेहि उर भवन तुम्हार ॥
श्री सम सेवै गुरु चरण नावै द्विज पद माथ ॥

करतीनाम प्रभाव नित तहां बसहु रघुनाथ ॥
तप तीरथ व्रत दान करि मागहिं सब पद प्रीति ॥
बसहिं तस्य तप हुँ जे चले राग रस जीति ॥

चौ० और हु ऋषिन बहु आश्रम अहई ॥ बसेउ राम तुम लखि सुख तहई ॥
यहि अवसर सम सुफल जो चहऊ ॥ तो चलि चित्रकूट में रहऊ ॥
करत आन सुर मुनि सत विधाता ॥ चित्रकूट गिरि तिल फल दाता ॥
भले राम कहि कीनि पयाना ॥ आइ कीन पयसरि अस्नाना ॥
हरि दिन का मंदाकिनि प्रभु आये ॥ समाचार सुर सन्तन पाये ॥ ॥
आइ सकल रघुनाथे माथा ॥ नाथ आजु हम भये सनाथा ॥
पर्ण कुटी सुन्दर सुभग बनाई ॥ निज निज लोक गये सुख पाई ॥
सुनि सुनि आये कोल किराता ॥ कंद मूल फल धरि धरि पाता ॥
दै दै भेंट जोहारि जोहारी ॥ निरखि राम छबि होइ सुखारी ॥
करि सनमान राम बैठारे ॥ तिन तब प्रभु ते वचन उचारे ॥ ॥
मानित जानि प्रभु दरशन दीन्हों ॥ हम सब काहु कृतारथ कीन्हों ॥
अब तुम इहैं बसहु सब मासा ॥ सकल सेज कर अहै सुपासा ॥
हम सब दास सहित परिवारा ॥ आयसु देत न करब विचारा ॥
करि पति तोष विदा प्रभु कीन्हे ॥ चले भवन चरणन चित दीन्हे ॥
जब ते राम बसे बन आई ॥ तब ते भयउ सकल सुखदाई ॥
फूलहिं फलें विटप बहु भांती ॥ सुर तरु सम बिहरत अलि पंती ॥

दो० करि हरि कपि वृक कोल मृग विचरत वैर बिहाइ ॥
प्रेम विवस चलि जाहिं तहँ जहँ दशरथ दोउ भाइ ॥

गीतिका छं० चलि जाहिं तहँ जहँ बंधु दोउ तब देखि सु-
र तापस कहैं । ये अहैं बड़भागी सकल जे प्रभु इ अब लोक-
त रहैं ॥ हिम शैल सुरतरु जनु ज्ञा गिरि गहन पयसरि देखहीं ।
तहँ भाग्य जानहिं तुच्छ पावहि तिन्हें बड़ करि लेखहीं ॥ ॥

इति श्रीविश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदासरामसनेही कृत श्रीरामचित्रकूटआगमनो नाम त्रदशो

ऽध्याय:२०॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणापगिरा सुखदानि॥
बरणौं मानस मत कछुक आनि बेश कृत आनि॥
चित्रकूट प्रभु जिमि बसे सो मै कहौं बखानि।
अबसो सुनहु सुमंत्र जिमि अवध गये दुखमानि॥
केवट है हरि ते बिदा जब आयो निज ग्राम॥
देख्यो परे सुमंत्र महि रटै राम हा राम॥ ॥
जाइ निषाद बिषाद बस लीन्ह्यो गोद उठाइ॥
चर्चि चढ़ायेरथ बिषे बहुतभांति समुझाइ॥
लीन्हे सेवक बोलि निज दीन्हे करितिन साथ॥
चलत न हय हिहिनात दिशि देखि देखि रघुनाथ॥
इत उत ऐंचत अटत मग लेत जो हरिको नाम॥
चितवत तेहिं तन हरि दिवस पहुँचे कोशलग्राम॥
पुर प्रवेश नहिं करि सकत लकत सांचि निशि छोर॥
जैसे जाइ चोराइ गृह सबकर समुझा चोर॥ ॥
मनमें करत बिचार माहिं देखि पूछिहैं लोग॥
कौन उतर देहौं तिन्हें नृप रानिन तब भोग॥
निकसत निठुर न प्राण मम रहत कौन सुख लागि॥
धृग जीवन रघुबीर बिन जरत न बपुहिर हागि॥
उभै घरी निशि गत गये कौशिल्या के धाम॥
सुनि नृप उठि उरलाइ कह कहु सुमंत कहँ राम॥
तब सुमंत बोले समुझि धीरधरहु उरनाथ॥
हानि लाभ जीवन मरण दुख सुख सब के साथ॥

सबको कौन अगाम प्रभु सीता लषण समेत ॥
आपु गये बन बचन लगि मोहिं पठै दुख हेत ॥
सुनि महिपाल बिहाल ह्वै गिस्यो धरनि पछिताइ ॥
अन्ध आपकी सुरति करि कही सबन समुझाइ ॥
सत्रिय बिप्र दै बान्ध सुत अवरा बध्यो गज जानि ॥
तजिहौं तन सुत बिरह इमि दिहिनि शाप दुख मानि ॥
पतंगिका के पूछ में सींक चलाई जौन ॥ ॥
लह्यो तासु फल महा सुनि भूल तहां हम कौन ॥
कस्यो शंभु को लिङ्ग-जहँ जल आसन को माथ ॥
मिटत कर्म बस भानु जहँ तहँ हम का रघुनाथ ॥
सत्य कहत श्रुति कर्म बिन भोगे छूटत नाहिं ॥
नाम रटनि ते मिटत जिमि चूना परि निधि माहिं ॥
राम मातु बोली बिलखि नाथ धरहु उर धीर ॥
तौ मिलिहैं सिय राम फिरि सो भमुनी रघुवीर ॥
हाय राम सिय लषण कहि हाय राम करि शोक ॥
तृन सम हरि हित त्यागि तनु भूप गयो सुरलोक ॥
लखि लागीं रोवन रवनि गुन बल तेज बखानि ॥
बिलपहिं दासी दास सब पुरजन परिजन जानि ॥
यहि बिधि बीती राति सब प्रात काल मुनि आइ ॥
सोक मिटायो सबन कर बिबिध प्रसंग सुनाइ ॥

चौ० कह वशिष्ठ मन धीरज धरहू ॥ धर्म बिचारि शोच परिहरहू ॥
जो जनमत सो मरत बिशेषी ॥ देह दृष्या यह प्रघटित देखी ॥
कनक कसिपु हरणाक्ष सरीखे ॥ गुणिन केर गुण गुणि यत नीखे ॥
सागर सहस भुज आदि नरेशा ॥ सुमिरन मात्र रहो अवशेषा ॥
जिनके रथ यहि बन ते सागर ॥ भये सो भये काल बस नागर ॥

पूर्व कर्म अनुसार जहाना ॥ हरत मौत करि विविध बहाना ॥
प्रथम सृष्टि जब रची विधाता ॥ तहे न कोइ तहँ जीव निपाता ॥
तब रचि मौत बधायसु दीन्हा ॥ अयश समुझि तेहि रोदन कीन्हा ॥
आंसु न ते भय रोग घनेरे ॥ कह विधि ये मम संचर तेरे ॥
इनके वोट हरो तुम प्रानी ॥ करत सोई विधि आज्ञा मानी ॥

दो० मेदिनि मेरु मजाहि सुर सोउ एक दिन नशिजात ॥
गज श्रुति सम नर आयु वर ताकी कौन बिसात ॥
लही बड़ाई भूप वर हरि हित परिहरि देह ॥
षट विकार वर्जित है आतम आनन्द गेह ॥
छेदि सकै नहिं शस्त्र जेहि पावक सकै न जारि ॥
मारुत सकै न शोषि यहि बोरि सकै नहिं बारि ॥
जिमि बिहाइ जीरन बसन धारत मनुज नवीन ॥
तिमि देही तनु जीर्ण तजि नूतन गहत प्रवीन ॥
आदि अन्त अव्यक्त है मध्य जासु कछु व्यक्त ॥
तेहि आतम के हेत की करहु कल्पना त्यक्त ॥
रोये जो मिलि जाइ तेहि रोवै भले पुकारि ॥
जौन मिलै रघुनाथ तो धीरज धरै बिचारि ॥
सज्जन के संसर्ग ते कस्यन मानस ताप ॥
मिटो मिटत मिटि है न मुनि त्यागे यासबन कलाप ॥
तैलनाव तनु राखि नृप लियि दूत युग चालि ॥
बेगिहि लावहु भरत कहँ कह्यो न तुम कछु खालि ॥
चले चार इत पवन जिमि उतै भरथ दोउ भाइ ॥
दीख भयावन स्वप्न निशि भावन पहुँचे जाइ ॥

चौ० भूतादिन तहँ पहुँचे जाई ॥ गुरु निदेश सुनि दोनहु भाई ॥
चपल बाजि चढ़ि तुरत सिधाये ॥ कुहू दिवस निज नगरहि आये ॥

पुर प्रविशत भे अस गुनभारी। घरे देखि सब जीव दुखारी॥
लोग मिले नहिं कुशल सुनावैं। गवें जोहारि जोहारि सिधावैं।
गे चलि प्रथम केकई गेहा। बैठारे तिन सहित सनेहा॥
पूंछि कुशल निज नैहर केरी। बोले भरत लासु तन हेरी॥
भूप कहां सुरलोक पधारे। कारण राम बिरह के मारे॥
दुख किं देत रहे युवराजू। काहे न दिहिनि कि हेउ मैं काजू॥
कौन काज नृप पद तब हेता। लिहेउं दिहेउं रामे वन चेता॥
राम कौन सुत सबनि के जानी। सवति कौनि कौशिल्या रानी।
बोलत कस कहं राम सभाई। गे बन बंधु सहित महि जाई॥
सुनि महि मुरछि गिरे दोउ भ्राता। कहि हा राम लषण सिय ताता।
हा पितु स्वर्ग लाग प्रिय तोहीं। रामहिं सौंपि गयऊ किन मोहीं।
हा सिय राम लषण मम पाछे। सहिहैं दुख वन मुनि पट काछे।
हे जननी तैं अस वर मांगे। हरे सकल सुख एकहि लागे॥
जो तैं यहे रहे उर आरे। जनमत मोहिं मारि किन डारे॥
राम सबहि प्रिय प्राण समाना। तैं किमि तिन्हे कहे बन जाना।
भूप प्रतीति कीन्हि भलि तोरी। मरन काल कछु मति भइ भोरी।
भूप लगाइ न दोष तुम्हारा। दुख कर मूल अभाग हमारा॥
अब दृग ओट बैठ उठि जाई। तेहि छिन तहां मंथरा आई।
लखि कर पुद वन लात पकमारी। गिरी भूमि हा हाय पुकारी॥
पकरि केश इत उत घसि लावा। पर अपकार केर फल पावा।
भरत साधु लखि दीन छुड़ाई। कौशिल्या गृह गे दोउ भाई
राम मातु उठि हृदय लगाये। जनु बन राम लषण फिरि आये
रोदन करि पुनि हाल सो बरना। राम गवन बन भूपति मरना॥
जन्म मरण फल भल नृप लीन्हा। मोहिं विधि विरचि बज्र करि दीन्हा
मातु गिरा सुनि दुख रस बोरी। बोले भरथ बिलखि कर जोरी॥

मातु मृषा मोहिं विधि जन भावा ॥ समय पाछे सबहु न दुख पावा ॥
कैकै सुत अपयश अधिकाई ॥ मातु मते मोहिं कौन बलाई ॥

दो० जो अघ गो द्विज मातु पितु सुत तिय मारे होइ ॥
जो मम सम्मत होइ तौ मोहिं अघ लागे सोइ ॥
शिवनिरमाय लपल भखीमद विधि चारा चोर ॥
जो गति पावें सोइ मोहिं मिले मातमत मोर ॥
जे श्रुति निंदक हरि विमुख सत संगति न सोहातु ॥
तिनकी गति मोहिं मिलहि जो होइ भरमत मातु ॥
मातु भरत के वचन सुनि बोली सुचि सुखधाम ॥
रामहिं प्रिय तुम प्राण सम तुम्हें प्राण सम राम ॥

सो० तात मातु मत माहिं । तुम्हें कहैं मति मन्द ते ॥
सुगति लहैंगे नाहिं । अस कहि लिये लगाइ उर ॥

चौ० यहि विधि विलपत रैनि सिरानी ॥ होत प्रात आये मुनि ज्ञानी ॥
करि प्रबोध भरतहि समुझावा ॥ उठे तुरत गुरु आयसु पावा ॥
नृपतन छालि बेवान बनाई ॥ राखी मातु सकल समुझाई ॥
गंधसार समधी बहु लीन्ही ॥ दाह क्रिया सरयू तट कीन्ही ॥
पांडु पीर वाले श्रुति रीती ॥ दीन्हि तिलांजलि सबन सप्रीती ॥
गौर पक्ष ग्यारसि दिन आना ॥ कीन भरत दश गात्र विधाना ॥
द्विजहि दान दीन्हों सब भांती ॥ तिसरे दिन भइ तेरही सांती
पितु हित भरत कीन्ह जस करनी ॥ सो मुख सहसहु जाइ न बरनी ॥

दो० एक दिन गुरुजन सकल जुरि सभा मध्य आइ ॥
शोच विवस लखि भरत तें तब बोले ऋषि राइ ॥

चामर छं० सुवचन सुनि लीजिये । सबन सुख दीजिये ॥
दृगन जल पोंछिये । नृपहि कत शोचिये ॥

छप्पै शोचिय द्विज निज धर्म त्यागि जो रहे विषे रत । शोचि

य नृप नय रहित सहित नमतोष योध गत ॥ शोचिय वणि-
क बजाइ पाइ धन धर्म न ठानहिं । शोचिय तिय पिय छलनि
शूद्र विप्रहि अपमानहिं ॥ शोचिय यती विराग विन तिय
न शोचिय सब भांति भल । सुर दुर्लभ तनु पाइ जिन भजे-
उ नरामहिं छांड़ि छल ॥

चौ० शोचनयोगन जनक तुम्हारे ॥ नीति निरत त्रिभुवन उजियारे
प्राण पुत्र तजि राखे वचना ॥ प्रगटी प्रेम प्रीति की रचना ॥ ॥
अस जियजानि शोच परिहरहू ॥ पितु आयसु सो सिरपर धरहू
तुम्हें राज्य देगे नृप ज्ञानी ॥ पालहु प्रजहि परम हित मानी ॥
सुर पुर नृप पर तोषे पैहैं ॥ राम लषण सिय सुनि हरषैहैं ॥ ॥
यामें दोष न निगम बतावें ॥ जेहि पितु राजि देइ सोइ पावे ॥
सुनि सुमित्र कौशिल्या बोली ॥ गुरु आज्ञा सुत अहै अमोली
पुनि पितु बचन जाइ बलि अंवा ॥ होउ तात सबका अवलंबा
सुनि मृदु बचन भरत अकुलाने ॥ बोले सबन नेह बस जाने ॥

दो० यदपि मातु पितु गुरु बचन विन विचार चहि कीन ॥
तदपि मोह बस उत्तरु मैं देत क्षमेहु लखि दीन ॥

चौ० प्रथम पिता पन पूर निबाहा ॥ राम लषण सिय बन भल चाहा
जो मोहिं राजि देत बरजोरा ॥ यामें हित तुमार की मोरा ॥ ॥
मम हित सो रघुपति पद सेवा ॥ अपर उपाइ न जानहु देवा ॥
हित तुम्हार हम ते किमि होई ॥ केकै सुवन जान सब कोई ॥
जेहि उदगारि सबका दुख दीन्हा ॥ कारण ते कारज कइ चीन्हा ॥
मन मुख मूल सरिस सुखदायक ॥ धर्म शील चाहिय नर नायक
तेहिते सबै कहों शिरनाई ॥ आयसु याहि देहु हरषाई ॥ ॥
प्रात काल रघुपति पहँ जावों ॥ जरनि मिटे जब दरशन पावों ॥
भरत बचन सुनि सब हरषाने ॥ बोले मुनि तुम परम सयाने ॥

शोक सिंधु बूड़त अवगाहू ॥ तुम अवलंब दीन सब काहू ॥ ॥
मातु मते जो तुम्हे बताई ॥ सो सठ कीटन के दुख पाई ॥ ॥ ॥
अवशि चलहु बन जहं अवधेशू ॥ गे निज निज गृह पाइ निदेशू ॥
भरत बोलि सुचि सेवक लीन्हे ॥ भवन भंडार सौंपि सब दीन्हे ।
सचिवहि दीन तिलक कर साजू ॥ बिपिनि देव गुरु रामहि राजू ॥
होत प्रात चढ़ि पुरजन जाना ॥ सबन कीन बन ओर पयाना ॥ ॥
जेहि राखहिं गृह रक्षा हेता ॥ सो कहैं हरि बिन जरै निकेता ॥
सुक सारिका पिंजरन बोलैं ॥ अधिक उचाट कपाटन खोलैं ।
चढ़ि चढ़ि रथ ऋषि द्विजन समेता ॥ चले सकल बन रघुपति हेता ।
शिबिका सुभग समूह संवारी ॥ चढ़ि गवनीं पुनि तिय नृप नारी ।
जेष्ठा दै बिबेक कहि सोहे ॥ भरत शत्रुहन चले पयादे ॥ ॥
भरतहि देखि लाग अनुरागे ॥ तजि तजि जान चलन पग लागे

दो० कौशिल्या ढिग जाइ कै कह्यो चढ़ो रघुतात ॥
है है पुरजन बिकल अति सुनत चढ़े दोउ भ्रात ॥
प्रथम दिवस तमसा रहे उभै गोमती तीर ॥
तिसरे दिन बस सई ढिग प्रात चली सब भीर ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत सागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम
सनेही कृत भरत चित्रकूट गमनो नाम च-
तुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

दो० जेठ कृष्ण चतुरथ दिवस भृगु सरु नियरान ॥
आवत भरत निषाद सुनि गुनि गुरि फसाद बिलखान ॥
प्रथम मातु मिलि दीन बन अब लै कपट समाज ॥
चढ़े राम सिय लषण पर करन अकंटक राज ॥
जान होत यह बात उर तौन लेत दल साथ ॥
उभै भांति गुह ज्ञाति सब बोलि लिये रघुनाथ ॥

चौ० तिन ते कहिसि सजग सब होहू ॥ पारि हारि तात सुतन कर छोहू ॥
सन्मुख समर भरत ते करहू ॥ राम हेतु तनु तजि भव तरहू ॥ ॥
चतुर चित्र नीते मनि लेहीं ॥ मूढ़ रतन कौड़ी लगि देहीं ॥ ॥
भले नाथ कहि भट अनुरागे ॥ कसि कसि अस्त्र शस्त्र मे आगे
सब निज कटक देखि गुह राजा ॥ कहेसि जुझार बजा बहु बाजा
तेहि अवसर भइ बांयें छीका ॥ सगुनिन कहा सगुन यह नीका
रामहिं भरत मनावन जाहीं ॥ तुमते होब रारि कछु नाहीं ॥ ॥ ॥
राम नाथ सुनि सबसे कहेऊ ॥ मैं अब जात सजग तुम रहेऊ ॥
लेहों भेद भरत कर जाई ॥ प्रीति अप्री तिन छित छिपाई ॥ ॥
कंद मूल फल सुरसरि नीरा ॥ धरन भराइ गयो तिन तीरा ॥ ॥
मुनिहिं कीन लखि दण्ड प्रणामा ॥ दीनि असीस समुझि प्रिय रामा
भरत बिलोकि तुरत रथ त्यागा ॥ चलि तेहि मिले सहित अनुरागा
भेटत देखि देव अन कूला ॥ जयति जयति कहि बरषे फूला ॥
कहँ वशिष्ठ कहँ भरत निषादा ॥ भेटत ताहि सहित अहलादा ।
यह हरि शरण केरि प्रभुताई ॥ नीचहु होत पवित्र लखाई ॥ ॥
पूँछी कुशल भरत ता केरी ॥ अब सब भांति कुशल भइ मेरी ॥
समुझि मोहि जे प्रभुइ न भजहीं ॥ ते जग बंचक सब सुख तजहीं ।
बहुरि मिले रिपु दवन कुमारा ॥ पुनि सब रानिन कीन जोहारा ।
दिहिनि अशीष लषण सम जानी ॥ पुरजन लखि हरषे सुख मानी
कहैं सकल यह है बड़ भागी ॥ भेटे जाहि राम अनुरागी ॥ ॥
तब निषाद निज लोग बोलाये ॥ घर बन बाग सकल भर जाये ।
प्रथमे सब सुरसरितट गयऊ ॥ करि मज्जन सुख पावत भयऊ ।
मांगि मांगि रघुपति पद नेहा ॥ टिके आइ जहँ तहँ तरु गेहा ॥
तब गुह पति बहु असन मँगाये ॥ कन्द मूल फल सबहि नखाये ॥
भरत सखा कहि लीन जवाई ॥ गे जहँ रैनि रहे रघुराई ॥ ॥ ॥

कुस साथरी देखि तरु श्यामा ॥ परिक्रमा करि कीन प्रनामा ॥

दो० सजल नैन है सखाते बोले सकुच समेत ॥
हाय राम सिय लखरा बन सहत बिपति मम हेत ॥

चौ० जनक सुता अतिशै सुकुमारी ॥ सासु ससुर पति प्राण पियारी ॥
लोने लखरा सरिस सुचि भ्राता ॥ भयो न अहै न है हैं ताता ॥ ॥
भूरु भूपति रघुपति सुकुमारे ॥ जीव चराचर सबहिं पियारे ॥ ॥
ते सोवत बन दर्भ डसाई ॥ बिधि गति मति कछु जानि न जाई ॥
जिन्हैं प्राण सम पितु महतारी ॥ जोगवत रहे नगर नर नारी ॥ ॥
ते बन चिचरि फूल फल खाहीं ॥ देखि हृदय मम फाटत नाहीं ॥
छग छग छग मोहिं बारहि बारा ॥ धन्य तात प्रण भल प्रति पारा ॥ ॥
सुनि बोला कर जोरि निषादू ॥ जानि बाम बिधि तजहु निषादू ॥
नाथ आपु प्रिय रामै भारी ॥ करत रहे उत कथै तुम्हारी ॥ ॥
धरहु धीर सुख समुझि प्रनामा ॥ करहु सयन चलि गये मुकामा
हरि गुरा कहत भयो भिन सारी ॥ करि मज्जन सब भये तयारी ।
केवट नाव अनेक मगाई ॥ उतरि सकल चलिभे हरखाई ॥ ॥
सानुज भरत पयादे देखी ॥ सुचि सेवक सकुचाहिं विशेखी ॥ ॥
तिसरे पहर प्राग चलि आये ॥ करि अस्नान सबन शिर नाये ॥ ॥
बिप्रन दान दीन बहु भांती ॥ मांगि राम पद प्रीति सोहाती ॥ ॥
जानि काम प्रद तीरथ नाथा ॥ बोले भरत जोरि युग हाथा ॥ ॥
सब फल दायक तुम भगवाना ॥ दीजे आजु सकल मोहिं दाना ॥

दो० चहौं न सुगतिन सुमति सुख रिधिसिधि में नहिं नेह ॥
बढ़ै रामपद प्रीति नित्त यही दान मोहिं देहु ॥
शशि चकोर घन मोर धन कृपिन मकर मधुरीति ॥
सो तृष स्वाती ते अधिक प्रभु पद बाढ़ै प्रीति ॥
जो कहौ प्रथमें तजि तिन्हैं कतगवनेहु परभोन

अंत अनुग अज्ञान ते अघन होय अस कौन ॥ ॥

सो० भरथ बचन सुनि सार । भई विरंचि में गिरा ॥
तात तजहु कुविचार । तुम रामहिं प्रिय प्राण सम-

चौ० बेनी बचन भरत सुनि हरषे । कहि बड़ साधु सुमन सुर बरषे ॥ ॥
भरद्वाज पहँ गे दोउ भाई ॥ कीन दण्डवत मन सकुचाई ॥ ॥
शीश अरतु मुनि मैजल भारी ॥ पद भ्रल कत भलका जनु वारी ॥
लखि मुनीश उठि हृदय लगाये ॥ देइ अशीश निकट बैठाये ॥ ॥
कहि अरथि तुम सकुचत कत ताता ॥ अचल ईश गति बाम बिधाता ॥
रामहिं प्रिय तुम सम नहिं कोई ॥ तब मग कहव लहब अघ सोई ॥
पल लेहु प्रजाहि तदपि नहिं फीका ॥ प्रभु पद प्रेम किहेउ अति नीका ॥
तेहि पर कहि कलंक बड़ येहू ॥ हम सब का उपदेशहि देहू ॥ ॥
समुभि परत मोहि अस निरबहेऊ ॥ राम कृपा मूरति तुम अहेऊ ॥
बालक बिधि मम सुयश तुम्हारा ॥ हरण ताप तम पाप अपारा ॥ ॥
भरि नयनन छबि निरखि तुम्हारी ॥ हम आपुनि बड़ि भाग बिचारी ॥

दो० सब साधन कर फल लहा लषण राम सिय दर्श।
तेहि फल कर फल अब भयो भरत त्वया अस्पर्श।

चौ० सुनि मुनि बचन भरत तव बोले ॥ पुलकि गात जल लोचन लोले ।
नाथ मोहिं नहिं पितु कर शोचा ॥ नहिं दुख जिय जग कहे कि पोचा
बिगरे परलोक लोक न शंका ॥ नहिं कछु डर बिधि भयो दिवंका ॥
एकहि कष्ट हृदय मम भारी ॥ लषण राम सिय होत दुखारी ॥ ॥
यहि आमय की औषद आवे ॥ तव कछु और बात मन भावे ॥ ॥
कह मुनि करहु न शोच तुम्हारे ॥ सब दुख मिटिहैं प्रभुहि निहारे ॥
आजु होउ तुम अतिथ हमारे ॥ भले नाथ कहि कटक सिधारे ॥ ॥
तब मुनि करि बिचार सुख पाई ॥ ऋद्धि सिद्धि अणिमादि बोलाई
कह्यो करहु सबहिन की सेवा ॥ हरषी सकल पाइ बड़ देवा ॥ ॥ ॥

प्रथम कनक मय महल सोहाये॥ कैयो योजन माहिं बनाये ॥ ॥
दीन्ह्यों बास सुरुचि सब काहू ॥ सुभग सेज स्रक सरस उकाहू ॥ ॥
असन बसन बर भोग अनेका ॥ दिये तोपि तिन एक पर एका ॥ ॥
दासी दास अप्सरा नाना ॥ बाग तड़ाग बिबिधि पो माना ॥ ॥
सुर दुरलभ सुख लहि सब लोगा ॥ बिसरे घर बन बिरह बियोगा ॥
भरथ बिलोकि मुनीश प्रभाऊ ॥ भयो राम पद अधिकहु चाऊ ॥
चक्र बाक सम रैनि बितायो ॥ प्रात नहाइ मुनिहिं शिर नायो ॥
बर बिराग बिपेन्द्र निहारी ॥ मुदित दिये संग सेवक चारी ॥ ॥
आयसु पाय सुसैन सिधाये॥ बीच बास करि यमुनहि आये ॥ ॥
रघुपति बरग निरखि बर बारी॥ हरषत भये सकल नर नारी ॥ ॥
भरत भाव भरिग सक तन पेखा ॥ अपर कबिहि अति अगम बिशेषा
जिमि मन मलिन मनुष्यन केहा॥ दुरलभ ब्रह्मानन्द अग मेहा ॥
तेहि निशि रहि तहँ उठि भिनसारा॥ एके खेव भये सब पारा ॥ ॥
करि अस्नान चले शिर नाई ॥ देखि कहैं मग लोग लुगाई ॥ ॥
का दोउ राम लषण हैं सोई ॥ होती संग सीय कहे कोई ॥ ॥
सैन साथ पुनि मानस खेदा ॥ तब इक सखी कह्यो सब भेदा ॥
सुनि सो कथा सकल अनुरागीं ॥ भरतहि बहुरि सराहन लागीं
कैकेय योगन सुतये अहहीं ॥ ॥ एक कठोर बिधाते कह हीं ॥
भली भई भव भूत बिगारी ॥ एक कहैं अस कहो न प्यारी ॥ ॥

दो० राज्य हरण पुनि पितु मरन बिपिनि चरण जगदीश॥
दैव करै ऐसी बिपति परै न काहू शीश ॥ ॥

चौ० यहि बिधि जहँ तहँ ग्राम निवासी॥ कहैं सुनैं सुमिरैं सुख रासी॥
भरतहि जिन देखे मग लोगा ॥ तिनके सकल मिटे भव रोगा ॥
सहित समाज जहां मग धरहीं॥ महि कोमल तरु छाया करहीं।
यह बड़ि बात भर कै नाहीं ॥ जिन्हें राम सुमिरत मन माहीं ॥

लखि गुरु ते बोले सुरराजा॥ बनी बात अब होत अकाजा।
रामहिं भरत मनावन जाहीं॥ अस कछु करहु मिले जेहि नाहीं

दो० कह सुर गुरु हरि भक्त जो कोउ करत कुचालि॥
परत पलटि तेहि शीश सोइ ज्यों रज रविहि उछालि॥
सेवक की सेवा कि है हरिहि होत परितोष॥
वैर भक्त ते वैर जो जरे राम के रोष॥ ॥
यदपि एक रस एक प्रभु गहत न सारा सार॥
तदपि सुभक्तन हित करत सम अरु विषम विहार॥

चौ० अस जिय जानि तजहु अविचारू॥ सुमिरहु भरत चरण सुखसारू
सुनि सुरपति उर धीरज आवा॥ बरषि सुमन पद प्रेम बढ़ावा॥
पूछत प्रभु भरतहि चलि आये॥ नय निवास करि शात सिधाये
सब के उर अभिलाख विशेषी॥ कब सिय राम लखण मुख देखी
नव निषाद गिरवरहि देखावा॥ प्रेम मगन सबहिन शिर नावा।
सुमिरत नाम दरश की आशा॥ उभय कोश चलि कीन निवासा
प्रात काल उठि चले विशेखा॥ इत सिय स्वप्न प्रात अस देखा
पुरजन सहित भरत जनु आये॥ सासु आन विधि सब दुखताये
सुनि प्रभु कह्यो स्वप्न भल नाहीं॥ कीन अस्नान शोच मन माहीं
उत्तर दिशि देखी नभ धूरी॥ दुरे आइ खग मृग सहं भूरी॥ ॥
तब तो चकित उठे रघुराई॥ आइ किरातन खबरि जनाई॥
भरत आगमन सुनि रघुबीरा॥ भये प्रेम बस पुलक शरीरा॥
पुनि मन शोच कीन रघुराऊ॥ उत सुर हित इत बंधु दुराऊ
बहुरि समुझि मन भये सुखारे॥ भरत कहे महं अहें हमारे

दो० लखण लख्यो प्रभु शोच बस उर मनुषशा साधि॥
बोले सन्मुख जोरि कर सहित क्रोध अह लाधि॥

चौ० नाथ कनक रसना प्रभुताई॥ पावत पुरुस जात बौराई॥

वेनु नहुष भुज सहस सुरेशा॥ शशि त्रिशंकु ययाती दिली नरेशा॥
अरु कृत वीर्य दक्ष गति गाई॥ सुरसी में नहिं सिंधु समाई॥ ॥
भरत साधु बड़ रहे सयाने॥ तेउ राज मद पाइ भुलाने॥ ॥ ॥
विपिन न यकाकी समुझि सुभाये॥ करन अकंटक राज सिधाये॥
जो मन में यह बात न आवत॥ तौ केहि कारि हारि कटक सोहावत
प्रथम मातु मिसि किहिनि खोटाई॥ समय पाइ फल लागन आई॥
भरतहि आजु सबन्धु प्रचारी॥ नाथ सपथ रन डरिहौं मारी॥
अति अपमान रजहिं नहिं सोहै॥ हम नृपतनै कराव बुझोहै॥ ॥
सुनत वचन लोक भय मानी॥ तब तहं भई गगन इमि बानी॥
ऐसे बल है तात तुम्हारे॥ परिबुध करत न कछु अविचारे॥
सकुचे लषण राम सनमाने॥ तात वचन तुम सत्य बखाने॥
भरत सरिस शुचि बंधु जहाना॥ भयो न अहै तात तव जाना॥
मरुड़े बहु रजु आहि गहि खावै॥ गोपद बूड़ि घटज बरु जावै॥
भरतहि होब न नृप मद भाई॥ बिन सकि पयनिधि इखद खटाई
गुण अवगुणमय जग विधि कीन्हा॥ भरत हंस जल तजि पय लीन्हा
यहि विधि प्रभु इत करत बड़ाई॥ उतै भरत पय सरित नहाई
सकल समाज राखि तेहि तीरा॥ आपु चले जहं सिय रघुवीरा॥
संग निषाद नाथ लघु भ्राता॥ विविध कुतर्क करत मग जाता॥
केके सुत लखि बहै तजि देही॥ सेवक समुझि अपन करि लेहीं
तजेहु अतजेहु मोहिं गलियाही॥ पिशुन तजि मातु पितहि कित जाहीं
यहि विधि ठटु करत बदत अधीरा॥ आये चलि प्रभु आश्रम तीरा
फूले विटप अनेक प्रकारा॥ खग मृग मधुकर करत विहारा॥
दो॰ पाकरि जंबु तमाल जुत नाम धिवट लखि श्याम॥
तेहि तर सरिता तट बनी परण कुटी अभिराम॥
कहु तुलसी तरु सुमन लखि रुचिर वेदिका एक॥

होत कथा नित आइ तहँ बैठत साधु अनेक॥

चौ० चलत शोभा जब भरत निहारी॥ मिटे सकल दुख भये सुखारी
चले प्रणाम करत दोउ भाई। पहुँचे जब रघुपति पहँ आई॥
उठे तुरत प्रभु जबै निहारा॥ कहुँ धनु शर कहुँ तूण बिसारा॥
धाइ उठाइ लाइ उर लीन्ह्यो॥ मिलनि निरखि सुर जय जय कीन्ह्यो
प्रीति प्रतीति भरत रघुवर की॥ विधि हरि हर सुर सकहिं न बरकी
हौं केहि भाँति कहौं मतिथोरी॥ मिले लषण ते भरत बहोरी॥
राम सखहि भेटे हरषाई॥ मिले शत्रुहन प्रेम बढ़ाई॥ ॥
केवट लषण शत्रुहन भेटे॥ पुनि दोउ बंधु सिय पद लेटे॥
दीनि अशीश सहित बैरागे॥ भे अनुकूल बिलोकि सुखारे
तब केवट वर बचन सुनाये॥ प्रभु मुनि मातु लोग सब आये।
गुरु आगवन सुनत रघुबीरा॥ गये जहाँ सरि तट सब भीरा॥
मुनिहिं प्रणाम कीन दोउ भाई। प्रेम समेत लिये उर लाई॥
विप्र विप्रवनि तन शिरनावा॥ आशिरबाद सबन ते पावा॥
आरत लोग समुझि सुखाता॥ पल मा सभै मिले दोउ भ्राता
पुनि देखी सब मातु बिहाला॥ प्रथम केकइहि मिले कृपाला
पद परि प्रभु तेहि कीन सुखारी॥ बहुरि सकल भेटी महतारी
मिले सुमित्रहि पुनि दोउ भाई॥ कौशिल्यै भेट अकुलाई॥

दो० अति सनेह बस मातु दोउ बंधु लिये उर लाइ॥
तेहि क्षण भयो बिलाप जस तस को पै कहि जाइ॥

सो० भेंटि सबै दोउ भाइ। गुरुहि कह्यो पग धारिये।
मुनि कर आयसु पाइ। उतरे जल थल देखि सब॥

चौ० द्विज गुरु सचिव मातु लै साथा॥ आये निज आश्रम रघुनाथा
सिय उठि मुनि पद नायो माथा। उचित अशीष दीनि ऋषिनाथा
मुनि गुरु तिय द्विज प्रिय पद लागी॥ दीनि अशीश सकल अनुरागी

सासुन सकल मिली बैदेही ॥ लखि लखि सबै लाइ उर लेही ॥
तब मुनीश सब कहँ बैठाये ॥ प्रथम कछुक हरि चरित सुनाये ॥
पुनि नृप सुरपुर गवन जनावा ॥ सुनि सियराम दुसह दुख पावा ॥
करहिं विलाप लषण युत रानी ॥ सो करुणा नहिं जाइ बखानी ॥
तब बिधि सुन दीन्ह्यो रहु ज्ञानी ॥ सबहिंन जाइ कीन्ह असनाना ॥
दशम दिवस रह्यो तेहि दिन चीन्हा ॥ बरत निरजला सबहिन कीन्हा ॥
प्रातहि जो ऋषि आयसु दिहेऊ ॥ सो प्रभु सहित प्रीति ते कहेऊ ॥
करि पितु कृत्या वेद बिधि रीता ॥ मदन दिवस भे शुद्ध पुनीता ॥

सो० परम पुनीत जोइ । कोइ न जानत जासु गति ॥
नर नाटक कृत सोइ । करत निजा नुग भाव बस ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास
रामसनेही कृत भरत चित्रकूट आगमन राम मि-
लाप वर्णनो नाम पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

दो० सुमिरि राम सिय मन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणौं मानस मत कछुक अगिनिवेस कृत आनि ॥
कोशलपुर बासी सकल सुखप्रद परवत पास ॥
बसत करत तनु लसत लखि नशत जगत की आस ॥
तब रघुपति गुरु ते कह्यो नाथ बिकल सब लोग ॥
लखि मोहिं श्रम सम जात पल नहिं फल भरत वियोग ॥

चौ० बोले मुनि तुम सुनहु कृपाला ॥ प्रथम लोग सब रहे बेहाला ॥
तब ते कीन्हि निरख तुम्हारे ॥ तबही ते सब भये सुखारे ॥ ॥
तेहि ते रहन कछुक दिन देहू ॥ भले नाथ कहि गे निज गेहू ॥
लागे रहन मुदित नर नारी ॥ देखि शैल सब होइ सुखारी ॥ ॥
पय सरि करहिं त्रिकाल सनाना ॥ कंद मूल फल ले ले नाना ॥
कोल किरात मुदित ले आवें ॥ धरि धरि आगे शीश नवावें ॥

देहिं लोग धन लेहिं न सोई ॥ कहैं हमार भला किमि होई ॥ ॥
तुम सुकृती हम बन चर पापी ॥ राम कृपा भयउ दरश कलापी ॥ ॥
प्रिय पाहुन तुम सब सुख दाता ॥ सेवा योग न कीन विधाता ॥ ॥
फल दल लेहु दीन जन जानी ॥ रीझत साधु प्रेम पहिचानी ॥
सुनि मृदु बचन सकल अनुरागे ॥ तिनके भाग सराहन लागे ॥
प्रीति विलोकि लेहिं फल फूला ॥ सुखी होहिं तब लखि अनुकूला
यहि विधि लोग सकल हरषाहीं ॥ बासर बीति पलक सम जाहीं
सबके मन इच्छा यह होई ॥ जहँ सियराम तहें सब कोई ॥
सिय करि सब सासुन पद सेवा ॥ किहिनि सुनत कोइ जानन भेवा
यहि विधि रिंधि बासर चलि गयऊ ॥ तृतिया दिन सब बहुरत भयऊ
भरत अशोच राम मुनि रानी ॥ निज मति सोच कहैं सब बानी
तेहि क्षण जनक दूत युग आये ॥ प्रभुइ देखि भे दुखित सुभाय
बूझत गुरु विदेह कुशलाई ॥ बोले तब सुचार शिर नाई ॥ ॥
प्रभु अब कहहु कुशल केहि लागी ॥ कुशल हेतु सो भयो विरागी
ततरु कुशल गे अज सुत साथा ॥ मिथिला पुर भइ अवध अनाथा
नृप परलोक सुना जब राजा ॥ भये विकल तब सहित समाजा

दो० पुनि धीरज धरि अवधपुर दूत पठाये चारि ॥
खबरि कही तिन आइ तब आपुइ चले बिचारि ॥
किहिनि निवास न मग कहूं चलत भये दिन तीनि ॥
आइ पहूंचे खबर हित तब मोहिं आज्ञा दीनि ॥

चौ० जनकागमन सुनत रघुबीरा ॥ आनन चले संग बहु भीरा ॥
पुरजन सुनि सब भये सुखारी ॥ कहैं कि रहब बहुरि दिन चारी
गिरवर देखि जनक रथ त्यागा ॥ कीन प्रणाम साहित अनुरागा ॥
मग श्रम स्वल्प न काहूं पावा ॥ मनु प्रभु पास प्रथम हीं आवा ॥
इत उत लोग सकल नियराने ॥ लागि मिलन प्रेम रस साने ॥ ॥

जनक मुनिन पद नायउ माथा॥ ऋषिन प्रणाम कीन रघुनाथा॥
मिले बिदेहैं बंधु समेता॥ ले आये सह प्रीति निकेता॥ ॥
दोउ समाज मिलि भये बेहाला॥ रहन ज्ञान धीरज तेहि काला॥
भूप रूप गुण शील बखानी॥ रोवहिं सकल बिकल नृप रानी॥
रामहिं देखि अधिक उर दाहा॥ हाइ बाम बिधि कीन्हे काहा॥
सुर नर मुनि सब भये दुखारी॥ नृप बिदेह की दशा निहारी॥ ॥
मोह बिवश भे जनक सुज्ञानी॥ यह रघुपति पद प्रीति पिछानी॥
जप तप योग बिरति बिज्ञाना॥ राम प्रेम बिन सकल समाना॥
मुनिवर सबहि बोध बहु दीन्हा॥ राम घाट तब मज्जन कीन्हा॥
उतरे सब जहँ तहँ जल तीरा॥ तेहि दिन सकल रहे बिन नीरा॥
आन सबन उठि कीन सनाना॥ कोल किरात बात सुनि नाना॥
कंद मूल फल सरस सोहाये॥ भरि भरि भार भूरि भट लाये॥ ॥
मुनिवर भेंट जनक पहँ दीन्हे॥ सेन सहित नृप पारण कीन्हे॥
यहि बिधि भे गत बासर चारी॥ प्रभुहि देखि सब लोग सुखारी॥

दो० दोउ समाज कहँ नारि नर अवन जान घर दूरि॥
सिय रघुपति संग रहब बन सुरपुर ते सुख भूरि॥
जेठ शुक्ल जिष्णु युग दिवस जनक राज रनिबास॥
आयहु सुनि सब कारण तहँ जहँ सिय की सब सासु॥

चौ० कौशिल्या सादर बैठारी॥ श्रवत नयन जल सकल दुखारी॥
सिय मातु बोली बिधि करणी॥ परम कठिन कछु जात न बरणी॥
देखहु बिधवाय सब हु तेरे॥ मधु मराल कहुँ मिलत न हेरे॥ ॥
जन्म बिवाह उछाह अपारा॥ कहँ वह सुख कहँ यह दुख डारा॥
लखण मातु कह ऐसे अहई॥ बाल चरित सम कत जो रहई॥
कौशिल्या कह बिधिहि न दोषू॥ निज कृत कर्म केर सब रोषू॥
मोहिं न शोच भूपति कर कोई॥ नहिं बन जात राम सिय सोई॥

गृहसनेह भरतकर देखी ॥ यहीएक मोहिं शोच बिशेखी ॥ ॥
तेहिते रवि कहेउ नृपपाहीं ॥ बहुरे लषण भरत संग जाहीं ॥
भरत शील गुण प्रेम बड़ाई ॥ कहें शेष पर सकै न गाई ॥ ॥
जबलग मोसे बैठे महीपा ॥ भरत भये हमरे कुल दीपा ॥ ॥
कनक कसौटी चढ़ि खुलि जाई ॥ पुरुष परखिये औसर पाई ॥
मुनिवर बचन सकल बिलखानी ॥ धरहु धीर मुनि कह्यो सुबानी ॥
लषण मातु तब कह्यो सप्रीती ॥ देखि दराइ युग यामिनि बीती ॥
कौशल्या कह्यो अब थल जाहू ॥ हमरे तव पति हाथ निबाहू ॥
सुनि बोले अस काह्न कहहू ॥ राम मातु दशरथ प्रिय अहहू ॥
अंगीकार करै गुरु जाहीं ॥ तृणा गिरि सम प्रतिपालत नाहीं ॥
तब छिन हरि कोइ का अनुसरई ॥ रबि सहाइ कहं दीपक करई ॥

दो० रामलषण सिय जाब बन करि सुर मुनि को काज
फिरि ऐहैं निज नगर तब पैहैं त्रिभुवन राज ॥

चौ० यागबल्क्य नारद इमि काहा ॥ झूंठ न होव सत्य हम चाहा ॥
अस कहि सिय हित बिनै सुनाई ॥ आई निज थल करत बड़ाई ॥
प्रिय परिजन नाहिं मिल्यो लखि सीता ॥ भे सब बिकल मोह मद जीता ॥
जनक सियहि उर लाय्यो लाई ॥ बोले पुनि धरि धीरज राई ॥
पुत्रि पवित्र दोउ कुल कीन्हो ॥ पावन सुयश सकल पुर लीन्हो ॥
मुनि पितु बचन सिया सकुचानी ॥ रैनि रहै भल यहां न जानी ॥
लखि रुख भे प्रसन्न पितु माता ॥ पठइनि तब तहं भेंटि सुगाता ॥
सियामातु तब पतिहि सुनाई ॥ कौशल्या कृत भरत बड़ाई ॥
सुनि पुलकित तन बोले राऊ ॥ ऐसे हैं प्रिय भरत प्रभाऊ ॥
हम बशिष्ठ मुनि बहु अवगाहा ॥ मिली न भरत बुद्धि की थाहा ॥
योग भोग युत नय मैं राऊ ॥ किमि जानो हरिजन कर भाऊ ॥
भरत भाग्य गुण शील बिचारा ॥ शेष कहैं पर लहैं न पारा ॥ ॥

महिमा भरत केरि सुनु प्यारी ॥ जाने राम न सकें उचारी ॥ ॥
तोफिरि अपर सके को गाई ॥ चिरिया उर कहु सिंधु समाई ॥

दो॰ लषणाहिं फेरहु भवन तब कहौं भरत बन जान ॥
जो मैं पावहु थाह कछु प्रीति प्रतीति प्रमान ॥

चौ॰ राम भरत के बाल प्रमाना ॥ जानें राम भरत नहिं आना ॥
इमि यि भरत की करत बड़ाई ॥ हर्ष सहित सब रैनि बिताई
प्रात काल करि मज्जन नीरा ॥ जनक वशिष्ठ भरत रघुवीरा
कौशिका हि पुरजन अधिकाई ॥ बैठे सब बट तरु तर आई ॥
बोले तब राघव ऋषि तेरे ॥ नाथ सहत दुख लोग घनेरे ॥
जो आयसु मोहिं होइ गोसाई ॥ सो मैं करों दास की नाई ॥ ॥
बोले मुनि तुम धर्म जहाजा ॥ कस न कहो यहि विधि महराजा
अस कहि बहुरि भरत ते भाषा ॥ कहौ तात निज मन अभिलाषा
बोले भरत जोरि करि दोऊ ॥ अवसर समुझि कहत सब कोऊ
बैठे जहं प्रभु त्रिभुवन त्राता ॥ पुनि कौशिक मुनि उभे विधाता ॥
तुम प्रभु विधि गति छेकन हारे ॥ सचिव जनक पितु और हमारे ॥
औरो ऋषि बैठे बहु ज्ञानी ॥ तहं हो लघु किमि सकहु बखानी
जो तुम सब कर आयसु होई ॥ सोइ हित मानि करे सब कोई ॥
कह मुनि मम सम्मत सुनि लीजे ॥ जो कछु राम कहें सोइ कीजे
लगुरा आदि दे जहं लग आनी ॥ राम रजाय सबन सिर आनी
कौशिक सचिव भरत सदि देहा ॥ सबन कह्यो भल सम्मत एहा
जानि राम निज ऊपर भारू ॥ बोले पुनि मुनि ते घुलि सारू ॥

दो॰ नाथ सपथ मुनि माह जग भरत सरिस शुचि भाइ ॥
भयो न है नहिं होन अब बहुत कहों का गाइ ॥
जे गुरु पद रज शिर धरें लोक वेद बड़ तौन ॥
तेहि पर रौरे की कृपा भरत सरिस जग कौन ॥

चौ०मुखपरकेहिविधिकरौंवड़ाई॥सकुचतसुमतिसमुझिलघुभाई
भरतेपावककहैजोकोई॥महामूढ़पापीहैसोई॥ ॥ ॥
मातहिदोषदेइसोउमूढ़ा॥जानिनजाइईशगतिगूढ़ा॥ ॥
मातनमेंऽपतिप्रियसोइमाता॥भाइनमेंप्रियभरतसुभ्राता॥
भरतदेइमोहिंऽपायसुजोई॥शम्भुसपथमेंकरिहौंसोई॥ ॥
सुनिप्रभुबचनडरेसुरराई॥पठवतशारदसोनहिंऽपाई॥ ॥
तबबासवशठपरऽपकारी॥निजउच्चाटसदनशिवडारी॥
जनकभरतमुनिसचिवैत्यागी॥सुरमायासोसबकेलागी॥
मनउच्चाटभयेसबकेरे॥छिनसोहातघरछिनबनहेरे॥॥

दो० बोलेतबमुनिभरततेतातकहोऽबसोइ॥
जेहितेंजावतजीवजगसबहिनकरहितहोइ॥
सुनिमुनितेबोलेभरतदेवकहौंसतिभाव॥
मैंजानतनिजनाथकरअतिशैसरलसुभाव॥
जननिजनकसोदरसखासेवकसचिवपरोस॥
काहुनदेख्योऽपाजुतकप्रभुकरबदनसरोस॥

चौ०सबपरकृपाकरतखलखाई॥तदपिप्रीतिमोपरऽधिकाई
शिशुपनमेंखेलतप्रभुसंगा॥कबहुनकिहेउमोरमनभंगा॥
जोकछुवस्तुऽनोखीपावें॥मोहिंदियेबिनआपुनखावें॥
महूंऽपाजुतकऽपतिधृष्टजानी॥प्रभुसन्मुखकछुबातनठानी॥
निशिदिनरहीदरशऽभिलाखा॥सोसनेहविधिमोरनराखा॥
सेवकधर्मस्वामिसेवकाई॥सोतजिगयोकरनऽधमाई॥
सुनिप्रभुमातुपितागुरुबानी॥परिहरिगयेउबासप्रमानी॥
ऐसेहुऽघप्रभुगनेनराई॥शरणजानिलीन्हेऽपनाई॥
ऐसेप्रभुनहींऽनुहरहूँ॥सेवकहैसनमुखहठकरहूँ॥ ॥

दो० निजस्वारथहितस्वामितेहठतेसोसेवकपोच॥

जोमोहिं आयसु देहिं प्रभु सोइ करौंतजिशोच॥

चौ० सुखदवचन सुनि सब हरखाने। भरतहिं धर्मधुरंधर जाने॥
रामभरत तेबचन उचारे॥ तात रहत महि धुगय तुम्हारे॥॥
जो हमही पर राख्यो बाता॥ तौ अब कहौं सुनौ हे ताता॥॥
जोप्रथमैं पितु आयसु दीन्हा॥ हमैं तुम्हैं सोइ चाहिय कीन्हा॥
जिन गुरु पितुपति गिरा नधारी॥ तिन जानहु तेहि डारयो मारी॥
अस जियजानि मानि हित भाई॥ पालहु प्रजहि अवधिभरि जाई॥
होइहि तुम्हैं न लेस कलेशू॥ सिरपर गुरु सुमंत मिथिलेशू॥॥
महूं बिपिनि रहि अवधि बिताई॥ ऐहौं सपदि भवन सुखपाई॥॥

दो० सुनि रघुपति के बचन मृदु भा भरतै संतोष॥
मनहु लह्यो फल जन्म कर मिटे सकल दुखदोष॥

चौ० बोले बहुरि जोरि युगहाथा॥ तिलक साज सब लायो नाथा॥
सो अब कहा करिय रघुबीरा॥ कह प्रभु चलहु चली ऋषितीरा॥
अत्रे मुनि जहं देइं बताई॥ तहं धरि देहु काम फिरि आई॥॥
अस कहि चले गये मुनि धामा॥ करत भये सब दराड प्रणामा॥
आदर करि मुनिवर बैठारे॥ भरत अत्रिते बचन उचारे॥॥॥
नाथ नीर सब तीरथ केरा॥ धरिय कहौं सो करहु निबेरा॥॥॥
कह मुनि है एक कूप रसाला॥ लोपत सोछिन कौनेउ काला॥
ताही में जल राखहु ताता॥ सुनि तब भरत कीनि सोइ बाता॥
भरतकूप कह बावत सोई॥ पीवत जल निरमल मन होई॥

दो० पुनि प्रभु ते बोले भरत नाथ जो आयसु होय॥
आवहुं तीरथ देखि सब राम कह्यो भल सोय॥
पाइ रजायसु चले तब जहां जहां चलि जात॥
नेम प्रेम लखि भरत कर मुनिजन मन सकुचात॥
पांच दिवस में सकल बन देख्यो भरत दिठारि

दूसरे दिन प्रात स्नान करि प्रभुने कह्यौ बहोरि ॥
दीजै मोहिं अधार कछु जेहि लखि अवध सिराय ॥
सुनि दीन्ही निज पादुका भये मुदित मन पाय ॥
जननि जनक गुरु सचिव प्रिय पुरजन सखा सुजात ॥
भेंटि सबन कीन्हे बिदा चले सकल बिलखात ॥
तेहि क्षण माया सुरनकी सबको भई सहाय ॥
नाहित रघुपति बिरह ते क्षण न सकत कोउ जाय ॥
बैठे प्रभु सिय अनुज युत परन कुटी के माहिं ॥
करत बड़ाई भरत की इत उत मन सब जाहिं ॥
तेहि दिन रहि यमुना निकट उभे भील पति ग्राम ॥
तीसर बासा गोमती चौथल अवध मुकाम ॥
भूतो दिन आये अवध जनक रहे दिन चारि ॥
जहँ तहँ सबनि बसाइ के निज पुर गये सिधारि
भरत मुदित बस सोधाइ के पुनि गुरु आयसु मांगि ॥
सिंहासन प्रभु पादुका बैठारी अनुरागि ॥

गीतिका छं॰ बैठारि प्रभुपद पादुका सिरुनाइ अनुज बोलाइ के । सौंपाइ पुरजन मातु सब तब आपु आयसु पाइ के ॥ पुर दक्षिण योजन एक नंदिग्राम गुफा बनायहू । लागे रहन फल पात भखि जग भोग सब बिसरायहू ॥ सुनि अवध सुरख सुरराज लाजत धनद धनु लखि राग ही । तेहि त्यागि दीन्हो भरत किमि जिमि मधुप चम्पक बागही ॥ रघुबीर पिय पुनि बंधु तेहि जड़ मोहि माया किमि सकैं । जे अपहैं सनमुख राम के तेउ तासु तन नाहीं तकैं ॥ यह भरत चरित्र पुनीत पावन करन मुनि बर्णन कस्यो । रघुनाथ करि संक्षेप कछु विश्राम सागर में धस्यो ॥ कहि हैं ज सुनि हैं मुदित नित

की प्रीति प्रभुपद बाढ़िहैं। नशिहैं सकल दुखराम धामन-
जात कोउ आड़िहैं॥

दो० श्री गुरुदेवा दासके चरणकमल धरिमाथ॥
भरत चरित संक्षेपकरि कहा कछुक रघुनाथ॥

सो० हरिहरजन गुण गूढ़। मूढ़ न लखै बिमूढ़ बिन॥
जिमि संध्यित आरूढ़। बूढ़ न जानत जीवगति॥

इतिश्री बिश्राम सागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास
रामसनेही कृत अयोध्याकाण्ड संपूर्ण
नाम षोड़शो ध्याय:
॥(१६)॥

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर

आरण्यकाण्डप्रारम्भः

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं नाटक मन कछुक आदि रमायण जानि॥

चौ॰ भरत चरित्र कहेउ कछु नाना॥ अब सुनिये रघुपति की बाता॥
सीता अनुज समेत कृपाला॥ बसत कामता पर सब काला॥
चहुँ दिशि सघन लता तरु नाना॥ मनहु काम रति रचित बिताना॥
शीतल मंद सुगंधित बाऊ॥ डोलत बोलत बयकरि चाऊ॥
तामधि फटक शिला अति सोहै॥ उपमा देन हार अस को है॥
तहँ एक दिन प्रभु निज करतेरे॥ चुनि प्रसून स्रक रचे घनेरे॥
सीतहि पहिराये सुख मानी॥ तिलक करनि किमि जाइ बखानी॥
तेहि प्रकार मिथिलेशकुमारी॥ प्रभु के अंगन सजे सँवारी॥ ॥
बैठे सहित सनेह जानकी॥ आस दोऊ दिशि प्रेम पान की॥
करहिं प्रकाश धाम मनि भारी॥ रही छिटकि पूनौ उजियारी॥
तेहि निशि नारि जयन्ता केरी॥ आई तहँ ले सुमुखि घनेरी॥ ५
रघुपति रूप बिलोकि जुड़ानी॥ नृत्य गान कीन्हो कल बानी॥
मनभावन बर मांगि सिधाई॥ सो सुधि कतहु जयन्ते पाई॥ ॥
इरषा बस बायस बपु बनिके॥ मार्यो सिय पद चँगुल भरिके॥
रुधिर दीख प्रभु तृण यक लीन्हा॥ ब्रह्म मंत्र पढ़ि पाछे दीन्हा॥
ज्यों ज्यों भागत जात जयन्ता॥ त्यों त्यों बढ़त बान बल हन्ता॥ ॥

दो० बच्यौ वेधा बिरूपाक्ष यक्ष यदि सब पास ॥
गयौ दयो नहिं रहन कें हुं किमपि जानि निज नाश॥
सुखद सुखद है जात तब जब रोखत रघुवीर॥
विकल देखि तेहि देव ऋषि कहि पठये प्रभु तीर॥
है निदाघ सुखवास सम आइ नाइ शिर बैन॥
बोल्यो सन्मुख जोरि कर जय प्रभु करुणा ऐन॥
जय जग जीवन जगतपति प्रणत पाल तुम एक॥
रहि सकल नहिं विपति में अपर जो ईश अनेक॥
दीन बचन सुनि प्रभु के समुझि भाग गति भेद ॥
एक बचन करि तज्यो नहिं जेहि न होइ फिर खेद॥
चौ० यहि प्रकार प्रभु सहित सुपासा॥ शास्त्रमास तहँ कीन्ह्यो बासा॥
अवध लोग तहँ भोर रहावैं॥ बीसक जाइं पचीसक आवैं ॥
तब प्रभु निजमन आन्यो टीका॥ बन कव नगर भयो नहिं नीका॥
दो० माँगि बिदा मव ऋषिन ते क्वार मास शुभ जान॥
सहित लषण सिय राम हिय हर्षित कीन पयान॥
प्रथम गये अत्रि भवन कीन्ह्यो दण्ड प्रणाम॥
लीन लाइ उर विप्र लखि छबि पूजे सब काम॥
प्रमुदित आसन दीन सुचि फल दल मूल पवाइ॥
लागे पुनि अस्तुति करन मुनिवर प्रेम बढ़ाइ॥
नाराच छं० नमामि रामराघवेश देशनाथ नायकं। महेशपो-
षब्रह्मधर्म सेव्यमानदायकं॥ दयाल दास दुःख दोष दर्प दम्भ-
गंजनं। मुनीन्द्र वृन्द भूमि साधु देव धेनु रंजनं॥ भजन्ति जे न-
ते पदारबिन्द बाँझि नर्क में। पतन्ति ते प्रभंति शाश्वनादि अंत
नर्क में॥ त्वमेक सर्वकाल विश्वपाल मूर्ति जापतिं। ददामि
जेन्व दाशि तं सुयोगि दुर्लभं गतिं॥ अनूप श्याम सुंदरं स्वरू

कोटि कामते। वंदति शक्ति सानुजं पराधे स्वगी नाथिने।। स्वछं-
द सानु कूल जक्त मूल भक्त वत्सलं।। भवांब्धि मध्य में सरा
बसंति बुद्धि निर्मलं।। × × + + + + + + + +

चौ० सुनि मुनि विनय राम सुखपावा।। तब सिय मुनि तिय पद शिर नावा
अनसूया लखि मिली सप्रीती।। दीन अशीश सुखद असि रीती।
उपधारि पट भूषण काढ़े।। जे पाये हरिले निज गाढ़े ।। ।। ।।
सीतहि पहिराये हित जानी।। रहत नवल नित बोली बानी
सुनु स्वामिनि जग भामिनि केरा।। पतिहि देव न दूसर हेरा ।। ।।
अंध बधिर किन होइ निकामा।। करि अपमान पते नम बामा
पतिव्रत धौरे छाँड़ि जल जोखा।। बिन श्रम पर पद लहैं न धोखा।।
तुम्हें प्राण प्रिय राम सुजाना।। यासें जग हित कौन बखाना।।
सुनि सिय सुख लहि नायो माथा।। तब मुनि तें बोले रघुनाथा

सो० नाथ जाउं बन आन। आयसु दीजे जानि जन।।
सुनि मुनि परम सुजान।। नाइ शीश बोले बहुरि।।

दो० तुमसम नाथ न नाथ कोउ सुन्दर सरल सुभाउ।।
मैं सेवक कैसे कहों नयन अयन ते जाउ।।
मुनि पद पंकज नाइ शिर दिने बचन बहु भाषि।।
चले लषण सिय सहित प्रभु निज मूरति उर राषि।।

चौ० प्रभु चलत लखि गिरि मग देहीं।। घन सुछांह महि मृदु हैं लेहीं
जहं तहं मुनि आश्रम बहु भावें।। जाइ जाइ सबके शिर नावें।।
पूजें सकल सुरुचि भव भांती।। चलें प्रात बस सुथल सुराती।।
अग जग मग बासी लखि कहईं।। दुतिभा भवन को बनये अहईं
निकसि गये गुफा कहँ बिसरी।। जबतें देख पथिक हजूरी।।
तबते माभ मन ताच अटका।। खबी गाष्ठ नहिं सांगत लटका।
यहि विधि बन नांघत प्रभु जाहीं।। मिला बिराध असुर मग माहीं

महाविशाल रूप बिकराला। हाथ त्रिशूल गहे भृग जाला॥
प्रभुहि पेखि धाला कुबिचारी। साधु भेष तुम हो छलकारी॥
हरि आन्यो काहू की बाला। लिहे फिरत बन संग लला मा॥
अस कहि गहि सिय सपदि सिधावा। लखि रघुबीर दुसह दुख पावा॥

दो० प्रभु हि बांधि दे लषण तब छांडे बिशिख कराल॥
उर लागत भा बिकल तजि सिय धावा जनु काल॥

चौ० धावत लखि तेहि देव डेराने। रक्षा मृगमुनि ले जीव परान॥
गिरि सम बपु बेग यों भाना। फूटहिं पबि टूटहिं तरु नाना॥
लषण मारि तन जर्जर कीन्हा। महि गिरि उठत मरत नहिं चीन्हा॥
तब प्रभु मुनि शर मारि गिरावा। दिव्य देह है स्वपद पठावा॥
अस्ति तासु खनि गाड़ि कृपाला। सीते ले पुनि चले रसाला॥
सुरपति ले तहँ स्यंदन आये। करि प्रणाम निज लोक सिधाये॥
बिचरत प्रभु सिय लषण समेता। पहुँचे शरभंग निकेता॥
निरखि राम छबि अति सुख माना। मनहुं क्षुधित लहि असन प्रधाना॥
करि हरि बिनय भक्ति बर मांगी। जोगानल तनु तजि बड़भागी॥
चढ़ि बिमान बैकुण्ठहि गयऊ। भेद भक्ति हित मोक्ष न भयउ॥
आगे मुनि बहु मिले प्रवीना। भेंटि भेंटि सब का सुख दीन्हा॥

सो० कुंभज शिष्य सुजान। नाम सुतीक्षण रामजन॥
प्रभु आवत सुनि कान। धायो करत मनोरथ बहु॥

दो० बिसरी तन सुधि प्रेम लखि उर प्रगटे सियराम॥
गौर श्याम बहु काम छबि निरखि लह्यो बिश्राम॥

चौ० तब प्रभु निन ढिग जाइ बखाना। उठहु प्राणप्रिय बिप्र सुजाना॥
उठत न जब जान्यो भगवंता। भये चतुर्भुज हृदय तुरंता॥
रामरूप जब उर नहिं देखा। उठे बिकल जिमि मनि बिन शेषा॥
आगे सानुज सिय रघुराई। लखि हरष्यो जिमि गत निधि पाई॥

कीनि दंडवत प्रभु उर लाये॥ आश्रम आनि पूजि मन भाये॥
करि बिनती मांग्यो बर एहा॥ बंदे नाथ पद नित नव नेहा॥
सीता लषण सहित तुम स्वामी॥ बसहु स्वांत मम अंतर्यामी
एवमस्तु कहि राम सिधाये॥ मुनि संमत कुम्भज पहं आये
राम प्रणाम कीन ऋषि देखी॥ लिये लाय उर प्रेम बिशेषी॥
कुशल पूछि आसन बैठारे॥ पूजन करि मृदु बचन उचारे॥
आजु भयो मोहिं आनँद कैसे। चातक पाइ स्वाति जल जैसे।
बैठे प्रभु सब दिशि मुनि वृन्दा॥ चितवें मुख चकोर जिमि चन्दा
कह हरि मंत्र देहु मोहिं सोही॥ जेहि ते मुनि मारौं सुरद्रोही
बोले मुनि मोहिं बूझत काहा॥ तुम्हरे भजन ज्ञान कछु लाहा
जेहि बस सुर मुनि अज त्रिपुरारी॥ सो माया किंकरि तुम्हारी।
काल कराल सकल जग खाई॥ सो तव डर डरपत रघुराई॥
ते तुम बूझत मनुज समाना॥ दीन्ह्यो मोहिं सुयश मैं जाना॥
ऐसे आपु अनुग हितकारी॥ तिन्हैं त्यागि सुर अपर सँभारी।
भवनिधि पार चहैं पुनि लीन्हा॥ स्वान पूंछ गहि जिमि मति हीना।
परबस पार न पावै कबहीं॥ तिमि तव भजन बिना नर सबहीं।
देहु सुभक्ति मोहि रघुराई॥ अब सो कहउं बसहु जहं जाई।

दो॰ पंचवटी गुण गण जटी टटनि दरी नद रास।
अघट घटी दुख सुख पटी कुटी करो तहं बास॥

सो॰ दण्डक नृप मुनि जात भोगी सुनि दियो शाप तिन॥
गिरि बालू दिन सात॥ जस्यो देश सोउ स्वसिये॥
मुनि अनुशासन पाइ॥ पंचवटी सिय अनुज युत॥
आये कोशलराइ। भे प्रसन्न शोभा निरखि॥

कुण्डलिया॥ राम लषण सिय पद परस मिटी शाप ऋषि केरि। भयो दिव्य बन विटप नहं मिले गीध पति हेरि॥ मिले।

गीधपति हेरि पिता इव प्रीति बढ़ाई। गोदावरी समीप रहे इल कुटी गढ़ाई॥ कुटी द्वारि जब ते पैर सेवे सबन के काम। बरिशा-स के कोतासु यश जहँ राजें नित राम॥ + + + + + + + +

चौ० आवें तहँ अनेक ऋषिराजा॥ होइ सदा सत संग समाजा॥
एक दिवस लछिमण शिर नाई॥ बोले प्रभु ते आयसु पाई॥ ॥
नाथ बात सब विधि तुम जानो॥ मैं पूछौं संक्षेप बखानो॥ ॥
जग समुद्र मधि को आधारा॥ गुरु कृपाल यह पोत निहारा॥
गुरु को जो देवे हित बोधा॥ शिष्य कौन जो सुने प्रबोधा॥ ॥
बंधित को विषया अनुरागी॥ को वा मुक्ति विषै जिन त्यागी॥
नर्क सो कौन घोर निज देही॥ तृष्णा त्यागि स्वर्ग सुख येही॥
नर्क द्वार किं किंकर नारी॥ मोक्ष मार्ग सत संग बिचारी॥ ॥
सोवत को जग रहे जे टेकी॥ जागत किं सद असद विवेकी॥
को वा शत्रु निजेन्द्री मीता॥ सोई सुहृद तिन्हें जिन जीता॥
रंक कौन जेहि तृष्णा चोषी॥ धनी सो को सब विधि संतोषी॥
महा अंध को जो मदनातुर॥ निजभल करे सोई बड़ चातुर॥
क्षमावंत कों तहि मुनि कहई॥ परुष वचन सुनि जो नहिं दहई॥
मृतक कौन जेहि कीरति नाहीं॥ जीवत जासु सुयश जग माहीं॥
दीरघ रुज किं यह संसारा॥ औषधि तासु अनूप विचारा॥ ॥

दो० को हौं आयों कहां ते कित जैहों कांतार॥
को मैं जननी को पिता याको कहिय बिचार॥

चौ० किं अनीति जहँ वेद विरुद्धा॥ परम तीर्थ किं निज मन शुद्धा॥
विन प्रतीति दो कञ्चन कांता॥ सेवा करन योग को संता॥
किं ज्वर चिन्ता चितर्ह जानो॥ सठ को जो विन धर्म पिछानो॥
लाभ कौन बड़ि भक्ति हमारी॥ हानि न भज्यो मोहि तनु धारी॥
को वा सूर सुभावे जीतं॥ भूषण किं जो शील नवीनं॥ ॥ ॥

विद्या किं जो भेद मिटि जाई ॥ भेद अविद्या है दुख दाई ॥ ॥
लज्या किं नहिं करै विकारा ॥ महावीर जिन मनहिं प्रहारा ॥
धीरज वंत बली अति कोवा ॥ सुमुखि कटाक्षन मोहै जोवा
दुख किं अनित्य वस्तु में नेहा ॥ सुख प्रद को मम चरण सनेहा
पातक मूल लोभ लखि परई ॥ पढ़न सुनन की कुपथ बिसरई ।
त्यागी को जो मन बच काया ॥ करि सत कर्म भजै फल पाया ।
मन्य बन्धन किं जो मोहिं लीन्हैं ॥ पंडित किं विकार न जि दीन्है ।
मम स्वरूप जानै सोइ ज्ञानी ॥ मूरुख किं सुदेह अभि मानी ॥ ॥
पंथ कवनि जामें मोहिं पावै ॥ दानी जो मम भक्ति बतावै ॥ ॥
महा पतित को हिंसा चारी ॥ धन्य कौन जो पर उपकारी ॥ ॥
को दास रत निरत हरि कर्मा ॥ नीच कौन जो करै कुकर्मा ॥ ॥
संग्रह योग कहा गुण मेरे ॥ आइनि किते कुसंगति नेरे ॥ ॥
तप किं विषै भोग परिहरई ॥ दया जो भूत द्रोह नहिं करई ॥ ॥
किं यम जाल सुता मम मोहा ॥ प्रेम कहा जहं नहिं तन छोहा ॥
साधु कौन जाके उर दाया ॥ हरि ते बिमुख करै सोइ माया ॥
दुख सुख सम सब काल तितीक्षा ॥ किं विज्ञान विवेक परीक्षा ॥

दो० हौं नहिं तन मन बचन बुधि जाति बरण कुल एक ॥
मैं हौं चेतन सबन में याको कहत विवेक ॥ ॥
थावर जङ्गम सबन में अहं तक जीव जहान ॥
सनन रूप निश्चय भयो सोइ अनन्य विज्ञान ॥
जीव ईश्वर में भेद किं यत नोइ भ्रहै सदीव ॥ ॥
बद्ध दशा में जीव कहि मोक्ष दशा में सीव ॥

कुण्ड० जो जानो चित रूप जीव ता लहन कौन विधि ॥ तौ सुनि-
ये हे तात अविद्या रस परम निधि ॥ गुण सुपक्ष बिन ईश बिहं
गम गुण पक्ष नाहि जेव । निसरत नीरै आइ होत गुण पक्ष

प्रगट तब ॥ यथा बासना भ्रमत नित हैं जीवत्व उपाधि इमि ॥
बरज्ञान कर्म करि होत है मोक्षबंध श्रुति कहत इमि ॥

दो० जैसे महदाकासते घटाकाश को भेद ॥
तैसे मिटै उपाधि के जीव ब्रह्म निरभेद ॥

श्लोक सतसंगी वासनात्यान्यो ध्यात्म विद्याविचारयेत् ॥
प्राणस्पन्द निरोधन्ते मुक्ति द्वारा चतुर्विधं ॥

चौ० गुरुप अयोगि हि ब्रह्मन रखै ॥ बिन बिराग जिमि ज्ञान न सरखै ॥
बिरति कहा बिधि लोक प्रयन्ता ॥ काक बिष्ट सम समझै अन्ता ॥
भूत कहा भय धीरज धामा ॥ परम जाप किं जो मम नामा ॥ ॥
चुगल कौन पर औगुण खोले ॥ मौनी बचन युक्ति ते बोले ॥
पिता बिबेक सुमति सोइ माता ॥ हरिजन मिलन मोक्षसुख ताता
दुस्तर किं सब जननि दुरासा ॥ रारि मूल किं केवल हासा ॥
पशु को जो बिन सुकृत रहावै ॥ बंधु बिपति में काम जो आवै ।
सरधा किं जो मुदित अचालस ॥ क्रिया बिषे दुख सहै निरालस
किं बिश्वास गरौ श्रुति सांची ॥ तोष कौन निष्काम अयांची ।
निसा किं करिय जहँ प्रीती ॥ लखि न अभाव होइ बिपरीती ।
रुचि किं रहित शोच सुख पाये ॥ भाव क्षमादि सकल गुण आये
आशक्ती किं प्रिय बिन देखे ॥ रूचत नक कुतन धन के हि लेखे ।
भोजन किं जग तीनि प्रकारा ॥ उत्तम मध्यम नीच निहारा ॥ ॥
मधुर मंजु मृदु सात्विक जानो ॥ तिक्त तात रज गुणहि पिछानो ॥
भक्षा भक्ष तामसिन केरे ॥ तिमि त्रै बिधि के मनुज निबेरे ॥ ॥
पूजा तीनि भाँति की हेरी ॥ प्रतिमा वेश्यो आतम केरी ॥ ॥
उत्तम आतम मध्यम साधू ॥ कछुक निष्ट प्रतिमा अव राधू ॥
सान्ति सो कौन बिकार बिहीना ॥ निर अभिमान ज्ञान किं दीना
बसीकरन किं कोमल बानी ॥ मारण मंत्र क्षमा बड़ जानी ॥ ॥

जीव उभे किं बंध बिमोक्षा ॥ सहित रहित बासना असेोक्षा ॥
साम्य सुबाम कुमाति परकेरी ॥ जगत मन्यता आसा बेरी ॥ ॥
परिमल किं प्रणा धन किं धर्मा ॥ करणी बिन बादे वे सर्मा ॥ ॥
ईश्वर सब पर प्रकृति नियन्ता ॥ बहु बिधि कह्यो जानकी कन्ता
मुनि प्रभु बचन लखण हरषाने ॥ बैठे पुनि निज जाइ ठिकाने ॥
दो० रत्नमाल मत जाल लै भगवत गीता साथ ॥
राम गीत नवनीत यह बरणायो जन रघुनाथ ॥
सो० सुनि गुनि हैं जे जीव । पैहैं परमानन्द ते ॥
पुनि सुधि लिजा पीव । करिहैं तापर अति कृपा ॥

इति श्री विश्राम सागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास
रामसनेही कृत राम दण्डक बन आगमनो प्रश्नोत्तर
बर्णनो नाम सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

दो० सुमिरि राम सिया सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणों मानस मत कछुक नादक रीति बखानि ॥
बीरासन सर चाप गहि चहि चहुं दिशि सौमित्र ॥
लगे बिचारन मन बिषे रघुपति बचन बिचित्र ॥
जनक नन्दनी सहित प्रभु परणकुटी के बीच ॥
राजत लाजत लख लखि रतिपति प्रिय युत नीच ॥
तेहि अवसर रावण स्वसा सुपनेखा तहं आइ ॥
रामरूप मोहित बचन बोली गर्ब बढ़ाइ ॥
त्रिभंगी छं० सुनिये नृपनन्दन सुर मुनि बन्दन मैंहौं राजदु-
लारी । निज सम सुख माने पुरुष न जाते अब तक रहिउं कुमा-
री ॥ तुम का जब देखा कछु मन लेखा विधि कल यह संयोगा ।
तेहि ते निज दासी कुरु बनबासी जो चाहो वर भोगा ॥ सुनि सि-
य दिशि हसिके कह प्रभु हंसिके है मम अनुज कुमारा । सित-

तन तिन केरी हूजे चेरी सोइ संयोग तुम्हारा ॥ हस्तिनि तियला-
यक ससा ननायक दुखदायक सुखहरणी । पदुमिनि मोहिं
धारो निरस निवारो नेति नेति प्रभु बरणी ॥

चौ० तबसीगई खरनिथरिपासा । कहलछिमन मैंउनकरदासा
भूपे परिरी कहे हो रानी ॥ नाहित जग टहलुई बखानी ॥ ॥
यामें कौन सुयश सुख लाहू । तेहि ते महाराज पहँ जाहू ॥ ॥
सुनि पुनिगई जहाँभगवन्ता ॥ तिनफिरि पठई पास अनन्ता ॥
बोलेलषण तोहि सो ब्याहे ॥ जो लोकौ परलोक न चाहे ॥ ॥

दो० तबलजाइ प्रकटत भई निज विकराल स्वरूप ॥
बदन खोह गिरि शृंग औ दन्तनाक कान जनुसूप ॥

चौ० बोली तुमहें दोउ साधु न सहऊ ॥ परपतनी धर घालो चहऊ ।
मोहिं देखि जो कीन्ह्यो हासू ॥ सो फल तुम्हें देवैहों आसू ॥
सुनि सिय सभय रामगे जानी ॥ बैद बाद नभ कह्यो बखानी ॥
गये समुझि लछिमण ततकाला ॥ नाक कान बिन कीनकुचाला ।
हाय हाय करि भवन सिधाई । खर धर दूषण गे जहँ सब भाई ।
बोली धृगलव वीर अभावा ॥ तिन पूछा छल करि समुझावा ।

दो० सुनिखर दूषण क्रोध करि असुर सहस दश चाहि ॥
लिये बोलि संग सब चले अस्त्र शस्त्र भटधारि ॥

चौ० कज्जल गिरि सम जिनके अङ्गा । गर्जहिं तर्जहिं सहित उमङ्गा
बाजें विविध जुझाऊ बाजा ॥ असगुन होत न मानै राजा ॥ ॥
कोउ कहे धरि मारो दोउ भाता ॥ ले लीजे ललना अलिबाता ॥
कोउ कहे निधनि न पाई उनहीं । सुपरहिं चहि दनुजेश न सुनहीं
यहिबिधि बदत निकर चलि आये । लछिमण ते प्रभु वचन सुनाये
सीते ले गिरिकन्दर जाहू ॥ आवा चढ़ि शिर निश्चरनाहू ॥ ॥
ले सिय लषण गये तेहि लागे । चाप चढ़ाइ चले प्रभु आगे ॥ ॥

जिमि केसरी द्विरद दल हेरी ॥ आइ लिहिनि बग भेलु गरेरी ॥ ॥
देखि अकेले अतिसुरसमाना ॥ वैदे सभापर जिमि परवाना ॥ ॥
प्रभु छबि देखि छकित सबभयऊ ॥ खरदूषण मंत्री ते कहेऊ ॥

दो० येकोउ नृपबालक अहैं नरवर रूप निधान ॥
असशोभा भरिजन्म हम देखी सुनी न कान ॥

सो० यद्यपि किहिनि कुकर्म तदपि न मारन योग ये ॥
जाइ कहौ तुम मर्म । देइं नारि फिरि जांइ घर ॥

चौ० आइ सचिव रघुपति ते काहा ॥ सुनत बिहँसि बोले सुरनाहा ।
हम क्षत्री मन शंक न आनें ॥ कालहु ते सन्मुख रण ठानें ॥ ॥
सुररंजन खलगंजन हेता ॥ विचरत हम बन त्यागि निकेता ॥
जो तुमरे पति होइं डेराने ॥ फिरें न हम रण हतें पराने ॥ ॥
दूतन खर दूषन ते भाषा ॥ बोला सुनि सौरी करि माखा ॥ ॥
धायेत बतम चर करि सोरा ॥ लखि प्रभु कीन चाप टंकोरा ॥
भये बधिर मुनि धीरज धारा ॥ लगे विविधि बरसन हथियारा ।
सर तोमर तरवारि त्रिशूला ॥ चक्र परिघ पवि शक्ति सशूला
तिलसमान प्रभु काटि निवारे ॥ निजनराच संधानि पवारे ॥
जाइ असुर दल काटन लागे ॥ हाइ हाइ करि भट बहु भागे ॥
कोइ कहै खरदूषन मतिहीना ॥ इनते आइ समर जेहि कीन्हा ॥
सुनि सकोपि बोले तिहु भ्राता ॥ फिरी जो तेहिं हों करब निपाता
भरताजानि जूझें अनुरागी ॥ चहुँ दिशि मारु मारु रट लागी ।
देखि देव सब होइं अधीरा ॥ निश्चर निकर एक रघुबीरा ॥ ॥
रामबान लागहिं खरभारी ॥ खराड खराड ह्वै गिरहिं सुरारी ॥
शिरधर धरे धरी कहि धावें ॥ गगन उड़ें बहु भगरा चलावें ॥
बहु मरिगे बहु कर हत डारे ॥ बहु कहें कह पितु मातु हमारे ॥
बहु तन कंक काक सिव स्वाना ॥ भक्षण करत कटकटी नाना ।

अन्त्रावलि गहि बहुन भजावैं ॥ विपुल व्याल जनु गुड़ी उड़ावैं ॥
भूत रु प्रेत पिशाच पिशाची ॥ खप्पर भरे योगनी नाची ॥ ॥

दो० निजदल बिचल निहारि ॥ खर दूषण त्रिशिरादि भट ॥
अगणित अस्त्र प्रचारि ॥ प्रभु पर डारे एक संग ॥

चौ० रघुपति सब निज सरनि निवारे ॥ दश दश विशिख सबन के मारे ॥
कहि कहि राम तजे तिन प्राणा ॥ बिन श्रम पायो पद निरवाणा ॥
छिन मा सकल कटक संहारी ॥ सुमन बर्षि सुर जयति पुकारी ॥
सीता लषण आइ शिर नावा ॥ निरखि श्याम बपु अति सुख पावा ॥
तब सुपनखा गई जहँ रावन ॥ जनु दनुजन की मौत भयावन ॥
करि रोदन बोली तकि ताही ॥ तोहिं जियत मम असगति वाही ॥
समुझि परत अब रही न राजू ॥ नहिं देखत निज काज अकाजू ॥

दो० सुनि अकुलानी सभा सब कह रावण कहु हाल ॥
केहि काटे श्रुति नाक तव काकर आयहु काल ॥

चौ० अनुज गिरा सुनि बोली बचना ॥ अति अतर्क अवलोकी रचना ॥
द्वै तपसी तपसी बन आये ॥ सुन्दरि सुन्दरि सुन्दरि लाये ॥ ॥
हौं लखि हौं लखि हौं लखि बोली ॥ राम न योग न राम न जोली ॥

दो० मो कहि कानन कानि तब करी न करी न ध्यान ॥
मो बिन कानन कान बिन करी मो करी न कान ॥

चौ० खर दूषण मुनि लाग गोहारी ॥ छिन महँ तिन सब सेना मारी ॥
त्रिशिरादिक बध सुनि दनुजेशा ॥ मनहुँ जेर सम भयो कलेशा ॥
सूर्पनखे प्रबोधि बल भाषी ॥ भवन गयो बिस्मै मन राखी ॥ ॥
सुर नर अहि त्रिभुवन महँ सोई ॥ मम अनुचरे न निदरत कोई ॥
खर दूषण मोहिं सम बल धामा ॥ तिन्हें को मारै बिन श्री रामा ॥
जो प्रकटे सुर मुनि हित कारी ॥ तौ करि बैर तरौं भव भारी ॥ ॥ ॥
तामस तन कछु भजन न बनई ॥ राम बिमुख गति वेदन भनई ॥

जिन नहिं निज परलोक सुधारा॥ तेते हि बुधि बलजन में छारा।
दो॰ जो नृप सुत कोउ जाइ तो हरि लैहौं निन वाम॥
चला अकेले यान चढ़ि गा मारीच के धाम॥
पूछा करि सनमान तेहिं तात चलेहु केहि हेत॥
कही कथा दशमुख सकल मुनि बोला शिर देत॥
सो॰ मुनि मख में मोहिं राम। बिन फर मारेउ बिशिष एक॥
शत योजन यहि ठाम। आयो छिन मा बिकल है॥
खर दूषण करि बैर। भे बिनाश ताते सबल॥
जो चाहो कुल खैर। तौ फिरि जाउ निकेत निज॥
सुनि दशमुख करि क्रोध। बोला मोहिं सम सुभट को॥
गुरु ज्यों करत प्रबोध। चलत न आई मीचु तव॥
करि बिचार रवि नाथ। चला मुदित सँग मन गुणत॥
मीचे नराधव हाथ चला मुदित मन सँग गुणत॥
भरि नयनन छबि आजु दिखिहौं प्रभु सिय लखण की॥
तव होई मम काज। जब बधिहैं मृग रूप लखि॥
दो॰ इत सिय ते कह राम तुम करो अगिनि निवास॥
जब तक करि नर चरित मैं करों न निशचर नाश॥
सो॰ स्वामि रजाय सु पाइ॥ बेद वती बपु राखि तहँ॥
आपु हुदा गिनि जाइ। कीन बास हरि पास नित॥
चौ॰ यह रहस्य लक्षमण हु न जानी॥ माया धीरा सकल गुण खानी
बैठे प्रभु सिय परण कुटी चा॥ आयो तहँ रावण मारीचा॥ ॥
हेम हरिण ह्वै निकसा आगे॥ लखि जानकी कह्यो अनुरागे॥
हे स्वामी मृग पकरहु पारी॥ नाहित बनी छाल भल मारी॥ ॥
कह प्रभु हिंसा अघ बड़ जाना॥ होन हार बस सिय हठ ठाना॥
भक्त वत्सल प्रभु धनुशर लीन्हा॥ आश्रम सौंपि अनुज कहँ दीन्हा।

अपना चले कपट मृग पाछे॥ आवत देखि भागसो आछे॥
तब शर सजि धाये रघुराई॥ थकनि नवनि चितवनि मोहिं भाई॥
प्रकटत दुरत लखत छबिभूरी॥ लेगा इमि रघुवीरहि दूरी॥ ॥
तब प्रभु ताहि तहां तकि मारा॥ हाइ लषण अस आदि पुकारा॥
पाछे कहि हरु गे सिय रामा॥ तनु तजि गा मुनिदुर्लभ धामा॥
इत सीता सुनि आरतिबानी॥ बोली लक्ष्मण ते छल जानी॥

सो० संकट बस तब भ्रात। जाहु बेगि सुनि शेषकहँ॥
प्रभु इन दुख कहुं मात। तुम्हें सौंपिगे कित जहुं॥
सुनि सिय बचन कठोर। कहे लषण कहँ लषण तब॥
रेख खांचि चहुं ओर। चले बक्कल चित राम पहँ॥

दो० सूनबीच लखि रावण जती सरूप बनाइ॥
मांगी भिक्षा सुनत सिय लगी देन हर्षाइ॥

चौ० बोला कुटिल बंधी यह भीषा॥ सोन लेब मैं मानों पीषा॥
माथ पुरुष भूला दिन जानों॥ इन्द्र महूरत में पहिंचानों॥ ॥
भावी बस सिय बाहर आई॥ रावण बंदि लै चला उड़ाई॥

दो० औध जोति तन में बसा अगिनि धूम के मांह॥
लिखि रावण के कर परी सिय सरूप की छांह॥

चौ० गगन जात रथ बिलपत सीता॥ हा रघुपति हा नाथ पुनीता
हा करुणाकर हा रणधीरा॥ आरत हरण हरहु मम पीरा॥
हा बल सिंधु लषण सुखदाई॥ परी तात गा मर कर गाई॥
कहे वचन के दुख मंझाई॥ सो क्षमि करि मोहिं लेहु छिनाई
तुम्हें कलंक दीन बिन दोषा॥ ताकर फल पावा अलि चोखा॥
उपति वचन कीन्हें नहिं काना॥ लेउ भैं दुख हमें समाना॥ ॥
हा पितु मातु दूरि तव धामा॥ भा कैकयी केर सब कामा॥ ॥
पठे देउ बन देउ कृपाला॥ हरि पति हि चहै बरा स्याला॥

सीता के सुनि आरति बाणी ॥ भे सब विकल चराचर प्राणी ॥
गीधराज जाना बैदेही ॥ लीन्हे जात असुरपति तेही ॥ ॥
चला कहत धुनी धरु धीरा ॥ नीचमीचु मैं आयों तीरा ॥ ॥
रेरे रावण सुनु मम वाता ॥ तजि जानु किहि जाहु कुशलाता ॥
नाहित सकुल नाश तव होई ॥ सुनि तेहि कानन कीन्ह्यो कोई ॥
तव खग चपरि चोच गहि केशा ॥ रथते महि पटका लंकेशा ॥
सियनिज निले राखि फिरि आवा ॥ अरिकर धनुशर काटि गिरावा ॥
चोच चंगुलनि तनु विदकायो ॥ मूर्छित ह्वै पुनि असिले धायो ॥
पंख काटि सीते ले भागा ॥ तब खग अहिं गिरि शोचन लागा ॥
हमते कछु न बनी भलि बाता ॥ पाये करत भयो बपु घाता ॥ ॥
दशरथ सम सुनि प्रेम न पाला ॥ राख्यो सिये न हरि यहि काला ॥
भरत राम मुख देखि न पावा ॥ खलकर तब नहि प्रभु पुनाचा ॥
एके बात भई भलि एहा ॥ राम निहोरे छूटी देहा ॥ ॥

दो० इत सिय बिलपत जात नभ नग पर कपिन निहारि ॥
दियो डारि निज भूषण रघुपति नाम पुकारि ॥
आगे लखि संपाति सुत गहि रथ दीन्ह्यो छारि ॥
महि बिधि लावा लंक तब बोला सिये निहारि ॥
सुमुखि न शोचे नरन हित उनमें कौन प्रभाव ॥
पितु प्रेरित बन सहत दुख निरबल रंक नराव ॥
अकुल अजाति कुजाति पतिगति मति रहित अभीत ॥
जटी कपाली प्रिय प्रशात तव दोषिन कर मीत ॥
नहिं जानी केहि कर्म करि परिउ नरन के हाथ ॥
अब जागे बड़भाग तव जो आइउ मम साथ ॥
हम सम सबल न प्रभु कोउ जेहि बश सुर मुनि सर्व ॥
तेहि ते मेरी भार्या होउ त्यागि दुख खर्व ॥ ॥

सुरकन्या कैयो सहस मंदोदरी समेत ॥ ॥
ह्वैहैं तेरी टहलुई हौं सेवक कहि देत ॥ ॥
सुनि सिय शोच सकोच वश कछू न उत्तर दीन ॥
तब तेहि निज ऐश्वर्य्य सुख सकल देखावै लीन ॥
अधिक बिकल भइ जानु की विभव नीच कर देखि ॥
यथा विरहिनी दुख लहै शरद चंद महि पेखि ॥
सो॰ पुनि बोला दशशीस । देखसम ऐश्वर्य प्रिय ॥
तब सीता कर रीस । कहत भई जग वेद कवि ॥
सुनु दूषन शिर मौर । बिन मराल सर हंसिनी ॥
निरखि काग कर ठौर । मुदित होत कहुं तिमिम हूं ॥
सुनि सिय बचन सरोष । डरि करि विपिनि अशोक महं ॥
राखि सिहित निज मोष । दुरि हवि गये खवाइ हारि ॥
चौ॰ इहां लषण मृग अरि तहं गयऊ ॥ अनुजे लखि बोलत भ्रम भयऊ ॥
द्वादश बरष मास सर बीते ॥ इहां रहत सिय तजी न रीते ॥ ॥
आजु जनक तनया तुम खोई ॥ कहा लषण मम दोष न कोई ॥
आश्रम होब जाइ बिन सीता ॥ भये बिकल जनु जोषित गीता ॥
इत उत हेरि हांकि हंसि बोली ॥ आवहु निकसि न करहु ठठोली ॥
तुम्हरे कहा कौन मैं जाई ॥ अब केहि कारण रहिउ लुकाई ॥
लषण अरोष लखी जब नाहीं ॥ तब प्रभु मूर्छि गिरे महि माहीं ॥
कतहुं बान धनु पट तूनीरा ॥ लषण उठाइ कियेय कतीरा ॥
बोले नमिहे नाथ उदारा ॥ सुरमुनि हेत लियो अवतारा ॥
ज्ञान निधान सबल बुधि माहीं ॥ भूलत मूढ़ मनुज की नाहीं ॥
बंधु बचन सुनि धीरज धारा ॥ बहुरि अज्ञ इव बचन उचारा ॥
को बोलत लछिमण तव दासा ॥ हमको तुम राखो बन बासा ॥
करत कहा रूदन प्रिय प्यारी ॥ हाहा सीते जनक दुलारी ॥

दो० कहा लषण मिलिहैं बहुरि उठि ढूंढो बनमाहिं ॥
धनु सर तरकस साजि तन पूंछि चले सब पाहिं ॥
हे हरि करि कुञ्ज द्विज दखिल सब परमारथ रूप ॥
तुम देखी मम प्रीतमा देहु बताइ अनूप ॥
हे सीते जेहि नेह कहि तजि पितु आरज गेह ॥
हठि आइउ मम साथ अब कहा कियो सोइ नेह ॥
भृंग जलज शुक कुन्द पिक करि हरि श्रीफल केर ॥
मुदित मनहुं अरिजीति किन हरो मान इन केर ॥
यहि बिधि खोजत कुञ्ज बन गण गिरि गुफा तड़ाग ॥
गये जटायू खग जहां आरोत लखि दुख लाग ॥

चौ० आगे परा गीधपति चीन्हा ॥ हा पितु हा कहि उर धरि लीन्हा ॥
पूंछा हालु सकल तेहि काहा ॥ मोहिं बधि सिय लैगा खलनाहा ॥
रहे प्राण तव दरशन हेता ॥ चलन चहत अब कृपा निकेता ॥
सुनि प्रभु पदुम नयन जल ढारी ॥ बोले पांसु जटा ते झारी ॥
हे सौमित्र आइ इन धारणा ॥ मोहिं लखि पस्यो न पितु कर मरणा ॥
सहि न सकौ मो आजु बिधाता ॥ पछिताय अस लखि कीन्हि सिघाता ॥
पुनि कह तात राखिये देहा ॥ बोला तब खग सहित सनेहा ॥
कृपासिंधु तुम शील निधाना ॥ मोहिं खग खलहि पिता सम माना ॥
अस तुम तेहि न भजै नर जोई ॥ महा मूढ़ हत भागी सोई ॥ ॥
जासु नाम अगनित गति दाता ॥ कस न मरहुं तिन के करताता ॥
चारिउ फल नमरण सम मोरे ॥ अस कहि मुदित प्राण निज छोरे ॥
राम रूप ह्वै अस्तुति कीन्ही ॥ अबिचल भक्ति मांगि सोइ लीन्ही ॥
कह प्रभु सिया हरण पितु तेरे ॥ कह्यो न दुख होई सुनि मेरे ॥ ॥

दो० तुम्हरे पुराय प्रताप ते कछु दिन में रिपु मारि ॥
सकुल पठैहौं आइ सोइ सुमुख कही बिस्तारि ॥

भलेनाथकहिनाइ सिर प्रभुमूरतिउर राखि॥
चल्यौगगन लखि सुमन सुरबरषजयजयभाखि॥
पितु ज्यों दीन्ह्यौधाम निज मृतक कर्म सबकीन॥
ऐसे प्रभुइ बिसारिमन तें चाहै सुख लीन॥ ॥

चौ० सहित शोक सिय की सुधि आई। बोले लक्ष्मण ते अकुलाई॥
जावत में यदि जीवति ताता। तावत जीवत बिश्व लखाता॥
नाहित सुरनर असुर समेता। करिहौं भस्म अखिलजगजेता॥
सुनि प्रभु बचन सभय भव काँपा। लागे होन अरिष्ट अमापा॥
सहित शंक लक्ष्मण गहि चरणा। बोले अहो दीन दुख हरणा॥

कुण्डलिया मान्धाता इक्ष्वाकु इभ भागीरथ नृप माथ। रघु दलीप अज आदि है जावत तव पितु नाथ। जावत तवपितु नाथ लोक तिहुं तने समाना। पालत आये सदै सुयश सकलो जग जाना॥ तिन कुल कीरति बर्ध हित प्रगटे आपु सुजान। सो किमि जरिहौ जग अखिल बिन अपराध। श्री मान॥४॥

सो० बंधु बचन सुनि राम। लज्जित है लखि लषण कहँ॥
लिये लाइ निज धाम। बोले पूरब देखि थपि॥

कुण्डलिया लषण तत्कहु तरु उये रबि नाथ मलिन है चन्द। निज कुल के अकलङ्क ते तरुण तेज भो मन्द॥ तरुण तेज भो मन्द कमल नहिं फूले ताता। अहो मित्र दुख दुखी खिले कैसे जलजाता॥ अहैं नखत प्रफुलित कुमुद शत्रु बिपति लखि हँसत मन। पुनि न दीन उत्तर चले मन तरु तर रघुपति लषन॥

चौ० यहि बिधि प्राकृति मनुज समाना। ढूंढ़त कीन्ह्यो पुरः पयाना॥
मिला बिराध ताहि गति दीन्ही। चले बहुरि सेवरी सुधि कीन्ही॥

पूछत फूलभरे मुखतेरे ॥ निवसत बड़भागिनि केहि डेरे ॥
जासु भजन बल बन सुखदाता ॥ करब देखि तेहि शीतलगाता ॥
इहां प्रात सेवरी जब जागी ॥ लखि शुभ सगुन समुझि अनुरागी ॥
रामलषण सिय पाहुन मोरे ॥ ऐहैं आजु अनुजयुत जोरे ॥
ब्रह्मादिक पूजित पद पूजी ॥ मोसम को बड़भागिनि दूजी ॥
लहिहों हों प्रभु प्रभु निज बाना ॥ दोउ दिशि लाभन लाभ समाना ॥
दोनन राखि कन्द फल फूला ॥ चितवत पंथ सरिस अनुकूला ॥
छिन द्वारे छिन भीतर आई ॥ प्रीति परखि पहुंचे दोउ भाई ॥
सेवरी देखि परी तब पायन ॥ मनमानी प्रभु मास सचायन ॥
आश्रम आनि पूजि जसरीती ॥ दिये रुचिर फल दल करि प्रीती ॥
लगे खान प्रभु पुलकित गाता ॥ स्वाद सराहि सराहि न जाता ॥
मांगत देत देखि सुर सन्ता ॥ बरषि सुमन कहि जय भगवन्ता ॥
त्रिभुवन नाथ नरेश कुमारा ॥ पावत फल तजि अरथ अपारा ॥
अस विचारि रघुनाथ अरूखे ॥ जान्यो राम प्रेम के भूखे ॥
अचे उठे तब सेवरी बोली ॥ हाथ जोरि दोउ गिरा अमोली ॥
नाथ अहिउ मैं औगुन खानी ॥ कीन्हों तुम मुद मंगल दानी ॥

दो॰ कह प्रभु तैं निज कर्म ते भई श्रेष्ठ जग बीच ॥
जो न भजै मम चरण प्रिय सोइ सम खली सोइ नीच ॥
सेवरी के सुनि मुनि निकर आये दिग अनखाइ ॥
पूछ्यो सर वर शुद्ध किमि होइ कहो रघुराइ ॥
कह प्रभु पावन कुलक के परसि कीन तुम रोष ॥
गये स्वच्छ हित जल कहुं भयो रुधिर तेहि दोष ॥
अब ते सेवरी के चरण धोइ ताइ ता मध्य ॥
देउ लेउ पावित्र पुनि करत भयो मुनि सभ्य ॥

सो॰ ऐसे प्रभु को औरजो निज लघुता सामकी ॥

करे कीर्ति सबठोर तब हरि सेवरी ने कह्यो ॥
अब सुधि सीता केरि कहिये करि गामिनि सुखद ॥
सुनि सेवरी मुख हेरि कह्यो जाउ पंपा सरहि ॥
तहँ मिलिहैं सुग्रीव कस्यो मिताई तासु ते ॥
सो हित करी सदैव मिलिहैं इमि सीता तुम्हैं ॥
यहि बिधि बदि सब हाल राम धामगइ त्यागि तनु ॥
तेहि की किया कृपाल कीन यथा चित जननि जिमि ॥

गीतिका छं० जिमि जननि की गति करै कोउ तिमि रामसे-
वरी की करी । अस और कौन कृपाल स्वामी शरण जाकी अ-
नुसरी ॥ प्रभु कहल सेवरी केर यश सह प्रीति पंपा सर गये ॥
मन मुदित मज्जन कीन शोभा निरखि मुनि हरषत भये ॥ २४ ॥

दो० भये मुदित मुनि वृन्द तहँ मिले देव ऋषि आइ ॥
पूछिनि प्रभु ते मोह निज राम कहा समुझाइ ॥

सो० सकल दोष दुख दानि जानि हस्यो अभिमान तब ॥
सुमुखि शोक की खानि तेहि तलिहउं बचाइ सुनि ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ
दास राम सनेही कृत आरण्य काण्ड संपूर्ण
नाम अष्टा दशोऽध्यायः ॥
(१८)

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर

किष्किन्धाकाण्डआरम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणपगिरा सुखदानि॥
नरणौं कोकिल मत कछुक दृहद चरित्र बखानि॥
नारद अविचल भक्ति बरु पाइ चले हरधाम॥
तब सानुज रघुबंश मणि रीक मूक भेजात॥
सबल पुरुष सुग्रीव लखि डरि पठये हनुमान॥
द्विजह्वै पूंछाजाइ निजु हाल कहाभगवान॥

सो० सुनिमारुत सुलबैन। प्रभुइ चीन्हि चरणन परे॥
लायेकपि पति ऐन मुदित भये सुग्रीव लखि॥
कीन मित्रता भाव। जनक सुता की बात सुनि॥
सियभूषण कपिराव। दिये लिये उरलाइ प्रभु॥

चौ० कह्योलखणते चीन्हो ताता॥ सुनिसौमित्र कही बरबाता॥
कंकन कुण्डल मैं नहिं जानौ॥ नूपुर नित पद बन्दन ठानौ॥
प्रभुइ दुखित लखि कह्यो सनेही॥ तजहु शोच मिलिहैं वैदेही॥
हर्षप्रीति हरि हरि पति पाहीं॥ तुम केहि हेतु बसहु बन माहीं॥
तब सुग्रीव कहा सब हाला॥ जेहि हित बालि बैर अतिपाला॥
सुनिबोले रघुधीर कुमारा॥ मैं मारिहौं एक शरनु तुम्हारा॥ ॥
मित्र मित्र दुख दुखीन होई॥ बदनबेद मुखि सखा न सोई॥ ॥
सुनिसुभाय बोले कपि नाहू॥ बालिबली वधयोग न काहू॥ ॥

अस्थि दुंदुभी केर समूहा ॥ महा कठिन लागेदश धूहा ॥ ॥
तिन्हे एक शर बेधैं जोई ॥ मुनिवर बालिहि मारै सोई ॥ ॥

दो० दूसर दुंदुभि निधन सुनि इन्द्रताल फलसात॥
पठये हैं हैं सप्त दिन अजर अमरइनरवात ॥
नारद आय बालि कहँ दीन्ह गहन मँझार ॥
महिधरि लगे नहान सो करिया भुजंग अहार॥

चौ० हरिसुन लखि बोला बचनेहा॥ सात ताल ओमें तवदेहा ॥
कहभुजंग जो हमै उबारी ॥ तेहि निधि नासतुम्है सोइ मारी ॥
सर्पाकृत सो ताल बिशाला ॥ कोइ एक बान दहावन वाला ॥
तीसर वरु बासव कर साधा ॥ रिपुबल सन्मुख पावत आधा॥
यहि ते बालि बधन के माहीं ॥ आवत मोहिं प्रतीति प्रभु नाहीं॥

दो० हँसि बोले भगवन्त तब चलो देखावो मोहिं॥
बेधि गिरावौं सुसर जेहि निश्चै आवे तोहि ॥

चौ० भले नाथ कहि प्रभुहि लवाई ॥ दीन्हे गिरि सम अस्ति देखाई ।
बधे सकल एकही बाना ॥ दश योजन शिर गयेउ सयाना॥ ॥
नभ महि तल सब तीर्थ नहाई ॥ राम तून प्रविसे पुनि आई ॥
तब सुग्रीव देखाये ताला ॥ सर्पाकृत सब दहे कृपाला ॥ ॥
छूटि भुजंग चला जय भाषी ॥ बरषे देव सुमन अभिलाषी ॥

दो० प्रभु प्रभाव बल बिपुल लखि कपिपति प्रीति बढ़ाइ॥
निश्चय भय बध बंधु हित बोले पद शिर नाइ ॥
सुनो नाथ तव कृपा ते मिटे सकल मम शोक॥
शत्रु मित्र दुख सुख समधि मन कृत नहिं परलोक॥

चौ० तेहि ते त्यागि मोह मद माया ॥ भजब सदा तव पद रघुराया।
बालि हमार परम हित कारी ॥ मिले आइ जेहि आपु खरारी।
आहित बचसुनि कह्यो खरारी ॥ मृषा होत नहिं गिरा हमारी ॥

तब सुग्रीव जाइ पुर गरजा ॥ । चला बालि सुनि तारा बरजा ॥
राम भ्रित सुग्रीवन जाहू ॥ कह हरि सुत सब विधि मोहिं लाहू ।
अस कहि आवा अर्कज नीरा ॥ भिरे क्रोध करि दोनो वीरा ॥
बालि चहत्त विधु मुष्टिक मारी ॥ विकल भाग सुग्रीव पुकारी ॥
भे जो कही केशव तुम पाही ॥ बालि मोर रिपु सोदर नाही ॥ ॥
कह प्रभु तुम एक सम दोउ आहू ॥ तेहि भ्रम मैं मारा नहिं काहू ॥
कृपा दृषि तकि तुरत मिटावा ॥ सुमन माल पहिराइ पठावा ॥
चैत्र चतुर्दशि सित चित चाई ॥ भिरे फालि भुज पुनि पुर डाई ॥
बिबिधि यतन करि जूझत जोरा ॥ प्रभु पेखत ठाढे तरु ओरा ।
जाना जब सुकराट हिय हारा ॥ साधि बाण बर बालिहि मारा ।
गिरा भूमि व्याकुल है वीरा ॥ तब माधव चलिगे तेहि तीरा ॥ ॥
प्रभुइ बिलोकि मुदित उठि बैसा ॥ बोला बचन क्रोध युत जैसा

दो० राम तुम्हार प्रभाव बल मैं घर सुना अपार ॥
देखा कर्म किरात कर कारण रहित विचार ॥

सो० मोहिं मिलत्यो यहि रीति । तुरत मिलौ त्यो आनि सिय ॥
करि कादर ते प्रीति । मारयो बिन अपराध मोहिं ॥

चौ० कह प्रभु हम निरबल के संगा ॥ अभिमानी ढिग जाहि न बंगा
धरणी पाल कुल रीति हमारे ॥ बधातेहि छिपि सोलके मारे
अनुज बधू कीन्हें निज घरनी ॥ तेहि सम मूढ पतित्त को बरनी
प्रभु अजहूं अघवन्त हमारे ॥ अन्त काल भे दरश तुम्हारे ॥
सुनि कृपाल कह राखे देहा ॥ अकनि बालि बोला सह नेहा ।

दो० जासु नाम जपि जीव जड़ तरै करै मुनि ध्यान ॥
ते तुम मम आगे खड़े कहत राखु निज प्रान ॥
केहि सुख संपति लागि अब राखौं सरल शरीर ॥
सुरतरु खनि रूधे बबुर को अस शठ रघुबीर ॥

चौ० तेहिते अब जैहौं हरिधामा ॥ पर यह वर दीजे अभिरामा ॥
कर्माधीन जहां मैं रहऊं ॥ तहँ तव चरण नेह निरबहऊं ॥
अङ्गद मम समान बलवन्ता ॥ तेहि कीजे निज दास अनन्ता ॥

सो० प्रभुपद शीश नवाइ । बालि गयो हरिधाम तब ॥ ॥
पुरजन सुनि दुख पाइ ॥ आये जहँ कपिपति मृतक ॥
तारा शिर उर मारि । लागी भूमि रोदन बदन ॥
मैं ओरहो पति भाषि । मान्यो सीख न काल बस ॥
राम विकल तेहि जोइ ॥ बोले करहि न शोच प्रिय ॥
मिलि बिछुरत सब कोइ । आपु अकेल न संग कोउ ॥
मातु मही पितु मालि । काल कृपा कर सर समुझि ॥
सोइ प्रथम पुनि पालि लूनि खात ब्रह्मादि सब ॥

चौ० अस विचारि शोचत नहिं ज्ञानी ॥ कर्माधीन देह गति जानी ॥
सब दिन एक थल बसत न कोई ॥ पथिक मेघ इव संगति होई ॥
भूमि विकार घटादिय थाई ॥ उपजत बिनसत बपुष तथाई ।
रहत एक रस धरणी जैसे ॥ जीव अपर मिथ्या होत न तैसे ॥ ॥
जो यह भेद न नीके जानै ॥ सो देहादिक सत्य प्रमानै ॥ ॥
तासु वियोग योग जब लहई ॥ संचित परि भुगतै दुख सहई ॥
ईश कृपा जब होत विशेषी ॥ नित्यानित्य परत तब देखी ॥
नित्य वस्तु भगवत सन बंधी ॥ और सकल ममता मति बन्धी ।

सो० इमि बहु दीन्ह्यो ज्ञान । बोध भानु प्रगट्यो तुरत ॥
मिटा तिमिर अज्ञान । लिहिसि मांगि हरिभक्ति वर ॥

चौ० तब सुग्रीव रजायसु पाई ॥ मृतक कर्म सब कीन बनाई ।
प्रभु लक्ष्मणहि कह्यो सजि साजा ॥ करि आवो सुग्रीवै राजा ।
जाय लषण पुर लोग बोलाये ॥ विप्र महाजन चलि सब आये
राज तिलक सुग्रीवै दीन्हा ॥ बालि सुतहि युवराजा कीन्हा ॥

सब विधि सबै सौंख दै धीरा ॥ गह सुकंठ आये प्रभु तीरा ॥
दिग है राइ दीन उपदेशा ॥ जाहु भवन तजि सकल अंदेशा ॥
मैं सह बंधु शैल पर जाऊं ॥ गहि हौं अरि बरसा तहं छाऊं ॥ ॥
तुम युत अङ्गद कीज्यो राजू ॥ दीजो जनि बिसारि मम काजू ॥
भल नाथ कहि निलय सिधाये ॥ राम प्रवर्षण गिरि पर आये ॥
प्रथम सुरन रचि कंदर राखे ॥ राम रहन हित चित अभिलाखे ॥
जबते प्रभु प्रविशे तहं आई ॥ सकल सौज सुख संपति छाई ॥
नाना रूप विरंचि मुनि देवा ॥ करहिं सदा रघुपति की सेवा ॥
संतत होय सुभग सत संगा ॥ संशय समाधान बहु रंगा ॥ ॥
निगमागम मत विषय दारथ ॥ कहत सुनत सम बोध यथारथ
आविट काल कंद नभ घेरे ॥ गर्जत चलत पवन के पेरे ॥ ॥
जनु रवि ते बासव महि घेरा ॥ है ठान्यो संगर अति घोरा ॥ ॥
की पावस ऋतु रवनि नवेली ॥ प्रभु रिझावन चली छबीली ॥
की संवत की तरुणा अवस्ता ॥ की अवनी की अंब विसरत्ता ॥
राम अनुज ते ताकी करणी ॥ कही जगत जीवन पद बरणी ॥
सरद सुंदरी सुमति समाना ॥ आइ प्रकासी पंथ प्रमाना ॥
गुराल तासु गति मति बिसराई ॥ बदत बंधु ते मोह जनाई ॥ ॥
तात नकत बरषा ऋतु नासी ॥ सिय सुधि कछु न मिली कलु खासी
जियत बियत कैसों सुधि पावों ॥ बल करि बयहि जीति महिं लावों
जिन मम हित सुख सकल बिसारे ॥ तिन बिन हम किमि होंइ सुखारे
सुग्रीवहु कहि काज बिसारा ॥ पाइ राज पुर संपति दारा ॥ ॥

दो० जो हम हूं अब बदलि के बधी बालि सम ताहि ॥
तो सुनि सब मूरुख हमैं कहैं न सके निबाहि ॥
बिरह बचन सुनि लषण तब तमकि लीन धनुवान
लखि प्रभु पुनि पर बोधि के पठयो कृपा निधान ॥

दूत हनुमान विचारि करि कह सुकंठ ने जाइ ॥
राम काज लहि राज सुख दीन्ह्यो तुम बिसराइ ॥
सुनि सुकंठ डरियो कह्यो विषय हस्यो मम ज्ञान ॥
अवते पठवहु दूत ते लै आवें कपि आन ॥

सो॰ कह अंगद यह काम। हनुमाने ते होइ है ॥
नाहित दूरि सुकाम। चले तुरत सुनि पवनसुत ॥

चौ॰ पारपत्र गिरि प्रस्थ मैं गयऊ ॥ गवगवाक्ष ने भावत भयऊ ॥
राम काज लगि मरकट नाहू ॥ बोल्यो बेगि सहित बल जाहू ॥
सुनि कपि असी संकु सत साता ॥ लै संग चले सुभट हरषाता ॥
पुनि रैवत कदली बन आये ॥ दुर्द्धर गज ते वचन सुनाये ॥ ॥
सात पदुम कपि असी करोरी ॥ लै दोउ चले तुरत हरि ओरी ॥

दो॰ पुनि पहुंचे बलबीर के सुनि कपि नेइ सलाख ॥
साठि सहस सत संग लै चले करत अभिलाष ॥
धुंधमाल गिरि पुनि गये मिले सिखंडी नाम ॥
सुनि कपि छप्पन कोटि लै चले कहत जय राम ॥
पुनि पहुंचे अर्जुनी गिरि कुमुद दीन हुकुम्म ॥
कपि सत्तासी लाख लै गवन्यो चारि पदुम्म ॥
पुनि चलि आये ताव गिरि मिले नील बलवन्त ॥
सुनि कपि षोड़श खर्ब लै चले बहुरि हनुमन्त ॥

सो॰ बद्री परवत जाय। गंधमदन ते सबु कह्यो ॥
सुनत चले हरषाय। लै संग गेरा अर्बि कपि ॥

चौ॰ पुनि पहुंचे अर्जुन गिरि जाई ॥ तारा बपत चले सुधि पाई ॥
चले लाख सतासी कोटी ॥ संग सकल मरकट मति मोटी ॥ ॥
पुनि सुमेरु परवत पगु धारा ॥ मिले केसरिहि हालु उचारा ॥ ॥
सुनि दश कोटि लाख नव कीशा ॥ लै संग चले सहस षट बीशा ॥

पुनि कैलाश पुलिंदे कहेऊ ॥ जय अरु विजै अंड सुधि लहेऊ ॥
सत्रह संकु कोटि एक कोरी ॥ चय कपि चले चाह नहिं थोरी ॥ ॥
पुनि विन्ध्याचल भूधर आयो ॥ बाराबसन्त सुनत सुख पायो ॥
हरिहर कोटि सहस सत लैके ॥ चले चपल चित चंचल कैके ॥
तहँ पे बहुरि विजय गिरि गयऊ ॥ मिलि रति मुख से आवत भयऊ ॥
आठ पदुम नौसे इक्यासी ॥ लै कपि चले साहित सर आसी ॥
कूदे बहुरि कास गिरि पावा ॥ मुद मयंद ते हाल सुनावा ॥ ॥
तिन कपि पदुम कोटि एक लीन्हे ॥ चले सपदि प्रभु पद चित दीन्हें ॥
जामवन्त भूधर पुनि गयऊ ॥ जामवान सुनि संगत भयऊ ॥
धूमकेतु निज सोदर नेरे ॥ बाला वृन्द बसु संकु सुडेरे ॥ ॥ ॥
छप्पन कोटि अपर मरु लाखा ॥ लै संग चले भालु करि माखा ॥
पुनि धवला गिरि आइ बिधाता ॥ बरणी सकल दुविद ते बाता ॥
एक कोटि कपि लाख पचीसा ॥ गवने संग सूम लै तीसा ॥ ॥
पुनि उदयाचल पनसय लहेऊ ॥ सर्वा सर्व सत्य ते कहेऊ ॥ ॥
अर्द बुद आठ पदुम मुनि लैके ॥ मरकट चले चहूं चित दैके ॥
यहि विधि सबै बुलाइ कपीशा ॥ आइ सुकंठै नायो शीशा ॥ ॥
यह में गिनती जौन गनाई ॥ बृहद रमायण महं सो पाई ॥ ॥
बाल मीक मुनि पुनि कछु जानी ॥ युद्धकाण्ड में कह्यो बखानी

इति श्री विश्रामसागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथ दास राम
सनेही कृत सुग्रीव मित्रता राम प्रवर्षण निवास वर्णनो
नाम ऊनविंशोऽध्यायः १९ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
सर्व रमायण केर मत जो सो कहौं बखानि ॥

चौ० पवन तनय जहं जहं कहि आयो ॥ किह्यो सो मुनि सुकंठ मन भायो
तेहि अवसर लक्ष्मण तहं आये ॥ देहुं जारि पुर बचन सुनाये ॥

डरे लोग सुनि बालि कुमारा॥ आइ धाइ करि क्रोध नेवारा॥
सुनि सूरजसुत उठि डेराई॥ हनोमान ते कह्यो बुझाई॥ ॥
तारा सहित प्रथम पहँ जावो॥ करि प्रबोध मंदिर लै आवो॥
चलि ईप्त कहि शीश नवाई॥ बिनती कीनि लखन की जाई॥
नाना हँसि बहु बचन सुनाये॥ करि मन मान भवन लै आये॥ ॥
मिले सुकंठ सप्रेम प्रवीना॥ चरण पखारि वरासन दीना॥ ॥
दो॰ कहा लषन सिय केरि सुधि लीन चाहिये भ्रात॥
बालि पठाये बिपुल कपि आवन चाहत तात॥
अस कहि सिबिका रूढ़ है गो जहँ रघुबीर॥
बैठे जनु कैलाश पति सोहत श्याम शरीर॥
सो॰ देखि नवायो माथ हाथ जोरि करि बिनय बद॥
तव माया बस नाथ जीव सदा भरमत फिरत॥
विषय बिवस मुनि देव मैं पशु कपि कामी महा॥
कीन्हे बिनतव सेव मिटत न इन्द्री अनित दुख॥
चौ॰ सुनि प्रभु बैठायो सनमानी॥ सिय सुधि लीन चही सुखदानी॥
जेहि हित त्यागि लाज तनु राखा॥ सो न भई पवनक अभिलाषा॥
तेहि अवसर आये कपि यूथा॥ नाना बरण बिशाल बरूथा॥ ॥
पीतो रक्त बिसंगम नीला॥ करबुर थूला थूल धु मीला॥ ॥
सात ताल सम पृथुल कराला॥ जिन्हे बिलोकि लहै भय काला॥
सब कपि युद्ध बिसारद बीरा॥ स्वामी हित कारक रणधीरा॥ ॥
मिलि लंगूल पति आयसु दीन्हा॥ सबन प्रणाम राम कहँ कीन्हा॥
भये छकित छबि नखशिख देखी॥ धन्य भाग अनुराग बिशेषी॥
राम कुशल बूझी सब केरी॥ बोले तब सूरज सुत टेरी॥ ॥ ॥
सुनहु सकल मरकट मम बाता॥ जात जीव केरि कुशलाता॥
जप तप दान ज्ञान बहु करई॥ बिन हरि भजन न भव निधि तरई॥

दो० विद्याबुद्धि विवेक वित धर्म कर्म भल सोइ ॥
अन्तर्यामी राम प्रभु जाते पर सन होइ ॥
मुख भुज कटि पद ते भये वर्णाश्रम हरि सूत ॥
जो न भजे तेहि चारि महँ तेहि जानिये कपूत ॥
वर्णाश्रम ते भ्रष्ट है सोइ परत भ्रम कूप ॥ ॥
पुनि पावत यम जातना निज अघ के अनुरूप ॥
अस विचारि छल छाड़ि कै करहु राम कर काम ॥
मास दिवस महँ आयहू लय सिय सुधि अभिराम ॥
आई अवधि बिताइ जो सो पाई बड़ दण्ड ॥
गव गवाक्ष ते कह्यो तुम जावो पूरब खण्ड ॥

चौ० भले नाथ कहि माथ नवाये ॥ सात पदुम कपि पाइ सिधाये ॥
तारा बरवत सुखेन मयंदा ॥ कह्यो जाहु उत्तर सह नन्दा ॥ ॥
गेरा पदुम कोशल्य साथा ॥ खोजत चले विपिन गिर पाथा ॥
पुनि बसन्त सत वीर बोलाये ॥ कह्यो जाहु पश्चिम महिं सिधाये ॥
सोरह कोटि कोशल्य भारी ॥ तब अंगद ते कह्यो हकारी ॥ ॥
जामवन्त हनुमत नल नीला ॥ सब दक्षिण दिस जाहु शुशीला ॥
दश करोरि बानर संग लैकै ॥ चले सकल प्रभु पद चित दैकै ॥
हनोमान जब नायौ माथा ॥ कर मुद्रिका दीन रघुनाथा ॥ ॥
कहि नि दिह्यो सीतहि सहिदानी ॥ फिरयो बेगि मम बिरह बखानी ॥
सुनि प्रभु बचन चले सिरनाई ॥ ढूंढत गिरि बन कपि समुदाई ॥
बज्र दंत दानव यक पावा ॥ अंगद तेहि रण मारि गिरावा ॥ ॥
मग में तृषित भये कपि भारी ॥ विवर देखि दुर विसे हित बारी ॥ ॥
भवन एक तहँ बिना निकासू ॥ बैठि बाम तप पुञ्ज प्रकासू ॥
सबहिन जाइ ताहि सिरनावा ॥ बूझे ते वृत्तान्त सुनावा ॥ ॥
सुनि बोली फल दल जल खाहू ॥ खात भये सब सहित उछाहू ॥

पुनि आये जहँ तापसबाला ॥ तबसो कहत भई निजुहाला ॥

कुण्डलिया हेमा अपसरा की सखी स्वयं प्रभा मम नाम । ह-रि आनी मय स्वर्ग ते दुरि राखी यहि ठाम ॥ दुरि राखी यहि ठाम इन्द्र सुनि लयगे ताही । मय रहि गइ यहि नयन राखि राघव मन माहीं ॥ मन माहीं प्रभु राखि नाम सुमिरयो नित नेमा । अबकारज ह्वै गयो भयो पारस मिलि हेमा ॥ अब तुम मूदहु नयन निज जाहु विवर के पार । मैं जैहौं रघुबीर पहँ सुनि झांपे दृगतार ॥ मुनि झांपे दृगतार लखे तो सिंधु किनारे ॥ आपु गइ प्रभु पास बहुरि बद्री पगु धारे ॥ इहाँ विचारहिं कीश मिलि बादिहि बीती अवधि सब । मिली न सीताकेरि सुधि समुझि परत भई मीचु अब ॥

सो० सुनि कपिशन के बैयन । निकसा कहिंसपाति तब ॥
मिला असन निज अयन । हेरिव परा ने कीश सब ॥
कह अपंगद अनुरागि । धन्य जटायू सम न कोउ ॥
राम हेत तनु त्यागि । गा हरि पुर है धृग हमैं ॥
अनुज नाम सुनि सोइ । ठाढ़ कि हिसि कपि सपथ करि ॥
जामि उठे पर होइ । मारी असित दशामी दिवस ॥
निजगति बरसान कीन । जरे पंख जिमि जेहि भये ॥
पुनि सिय की सुधि दीनि । हे रावण पुर विटप तर ॥

चौ० अस कहि गीध गयउ निज गेहा ॥ तब सब कपिन भयो संदेहा ॥
सत योजन सागर हित तरना ॥ निज निज बल सब काहू बरना ॥
पार जान हित सकल सकाने ॥ जामवन्त तब बचन बखाने ॥
हे हनुमान ज्ञान गुण धामा ॥ होई यह तुमही ते कामा ॥ ॥
ताते निज बल अतुल संभारो ॥ हम सब की जनि बाट निहारो ॥
सुनि हनुमंत हरष उर लीन्हा ॥ तेरह योजन कर तनु कीन्हा ॥

बोले ऋक्षपते सुनिलीजे ॥ का ऽब करों तो निशिष दीजे ॥
कहो रावनै ऽपनो मारी ॥ कहो लै ऽावहुं जनक दुलारी ॥
इतनी बात करहु तुम ताता ॥ सीतहि देखि कहो कुशलाता

गीतिका छं० कुशलात प्यो सिय केरि तात सुनाइये सु-
धि ऽाइ कै । जेहिजानि राघो कीश लै गद लंक घेरैं जाइ कै ।
करि समर मारहिं रावणहिं सुर साधु बंदि छोड़ाइ कै । भ-
व सिंधु तरिहैं जीवजड़ यह सुयश सुनि ऽरु गाइ कै ॥ ६

दो० सब रामायण के विषे देख्यो जौन चरित्र ॥
सोई जन रघुनाथ हूं बरन्यो कछुक पवित्र ॥

इति श्री विश्राम सागर सवमत ऽागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ-
दास राम सनेही कृत किष्किंधा काण्ड सपूर्ण
नाम विंशो ऽध्याय: २०

श्रीगणेशायनमः

अथ बिश्राम सागर

सुन्दर काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
कहौं आदि कवि कहनि कछु नाटक रीति बखानि॥
जामवंत के बचन सुनि हनोमान बलवान॥
चले लंक कहँ हरि दिवस जिमि रघुपति को बान॥
सुर प्रेरित बल लखन हित सुरसा हरि रोक्यो आइ॥
बदन पैठि पुनि निकसि कै चल्यो आशिष पाइ॥
राहु जननि रहि सिंधु महँ गहि खग करै अहार॥
सोइ छल लखि हनुमान तेहि मारि भये दधि पार॥
शिवा शाप युत शैल पर गयो भयो नहिं बाल॥
यह नहिं प्रभुता प्लवंग की प्रभु प्रताप बस काल॥
सो० गिरि चढ़ि देखी लंक। अति विचित्र मुनि मन हरनि॥
फिरत असुर बहु बंक। चहुँ दिशि रक्षा हेत पुर॥
करि बिचार कपिशेष। इण्डारि बपु धारि तब॥
निशि गढ़ कीन प्रवेश। लखि बोलत भइ लंकिनी॥
जानत मोहि न अयान। मम अहार हरि लंक कर॥
सुनि मुष्टिक हनुमान। हनत मरी भइ दिव्य वपु॥
कहत भई कर जोरि। भयो सत्य बर ब्रह्म कर॥
जाहु नगर भय छोरि। सुमिरि राम पद कपि चलेहु॥
सब घर हेरे पौन। कतहु न देखी जानकी॥

गये दशाननभौन। अति विचित्र पुष्पक जहां॥
दो॰ सर्व काम प्रद सब रतन सर्व काल जेहि माहिं॥
सर्व मोज देखत बनै बरनि जात सो नाहिं॥॥
चौ॰ तहं। नशंक दसमुखै निहारा॥ सोइ गयो कल करत विहारा
चौदह सहस सुनाग कुमारी॥ जहँ तहँ कनक लतासी डारी॥
देखि भयो हनुमानहिं शोचा॥ नाहक हरिसि जानकिहि पोचा
अब ते देइ पठै जो सीता॥ तौन होइ यहि पुरते रीता॥॥
राम काज लगि सब त्रिय देखी॥ जनक सुता सो कतहुँ न पेखी।
पुनि गे भवन विभीषण केरे॥ रामायुध तहँ अंकित हेरे॥॥
तब लागे मन करण विचारा॥ जागि विभीषण नाम उचारा॥
भयो मुदित कपि सज्जन जानी॥ यहि ते मिले न होइहै हानी॥
लागे कहन राम गुणाधीरा॥ सुनत विभीषण आयो तीरा॥॥
पूछा हाल पवन सुत भाषा॥ दोउ दिशि भइ पूरन अभिलाषा
दो॰ कह्यो विभीषण जोरि कर कबहुंक श्रीरघुनाथ॥
करि हैं कृपा कृपायतन जन पर जानि अनाथ॥
तामस तन कछु भजन नहिं नहिं पद कमल सनेहु॥
बिन हरि कृपा न दरस नव भयो भरोसो येहु॥
कह कपि परम कृपाल प्रभु सचिव किये कपि भाल॥
वाकन बुद्धि न रूप कुल तेरव हेत तिहुँ काल॥
सो॰ ऐसे प्रभुहि बिसारि। फसन परहि नर निरय महं॥
सुनत भयो सुख भारि। पुनि पूछ्यो कहँ जानकी॥
दीन्ही युक्ति बताइ॥ गे अशोक बन बिशद जहँ॥
कनक बिटप समुदाइ। नाना चित्र बिचित्र फल॥
खोजत रवसत प्रभात गये शिंशपा विटप तर॥
बैठी जहँ जग मात। मनहुं बिरह मूरति धरे॥॥

देखिनवायोशीश।मन हीं मनरहे बैठि तस॥
तेहि अवसरदशशीश।अगारीतनहँसंगसुमुखिसब॥

चौ॰ बोलाजनकसुताते बानी॥सुनहुअरा प्रियसुमुखिसयानी॥
मैं सुरअसुरनाथबलधामा॥मन्दोदरी आदिसबभामा॥
मेघनाद आदिकसुत जेते॥तिनकीरवनिरहतजन तेते॥
कहहुसकलसुचिसेवक तोरे॥एकवार निरखो दिशिमोरे॥
तेरे योगसकलसुखआही॥नृशाधवि वदसीता तेहि पाही॥

कुण्ड॰ रेरावण जे अहै राम चरणन अनुरागी।तेसरि प-ति चुम्बवत लखे ललना मम भागी॥चिन्ता मणि अस मवत सरिस खद्योत तमारी॥स्वर्ण मेरु लोष्ठ वत भूप भृत्य वत विचारी॥कल्प विटप तिर्नवत जग रासि भारवत देह। तो तैं काह देखावई मोहि लघु लंका येह॥

दो॰ होतप्रफुल्लितकमलिनी कहु खद्योतप्रकाश॥
कहतवचनमरजादतजि हेत आपनेनाश॥
सुनिसीताके वचनवर मनहुं लगे उरबान॥
काढ़ि खड्ग मारन उठ्यो तैं मम कृत अपमान॥

सो॰ मन्दोदरिगहिपाणि।समुझायोबहु भाँतितब॥
बोलिबकीअघखानि।कहिसिकि त्रासहुजनकजहि।
मास दिवस केबीच।जोनहिंमानी वचन मम॥
तोकटिहौंशिरनीच।लज्जितह्वैगा भवननिज॥

दो॰ विविधरूपधरि राक्षसी लगी सिये दुखदैन॥
त्रिजटातबसमुझाइकै जातभई निज ऐन॥
राम विरह बसजानकी सबनिनिहोरिनिहोरि॥
मांगहिंपावक देहजेहि मिटे विपतिअतिमोरि॥

चौ॰ सुनतपवनसुतहृदयविचारी॥दीनमुद्रिकासनमुखडारी॥

लखि मुंदरी रघुपति कर केरी॥ बोली बचन तासु तन हेरी॥ ॥
श्री घरबन हम तब यह रीती॥ अब को करिहि जियन परतीती
कहु हैं कुशल लखण रघुबीरा॥ कैसे तैं आई ममतीरा॥ ॥
तब हनुमत बोले सह चाऊ॥ मातु भानु कुल दशरथ राऊ॥
तिनके सुवन लखण रघुनाथा॥ आये बन बैदेही साथा॥ ॥
महिं जैं नहं हरि लैगा कोऊ॥ ढूंढत फिरैं बिपिनि महं दोऊ॥
गीधराज ते सुधि जब पाई॥ तबैं तो अधिक उठे अकुलाई
बहुरि सखा सुग्रीवहिं कीन्ह्यो॥ भूषण पाय व्याह सी लीन्ह्यो
बरषा समुझि रहे गम खाई॥ अब कपि अगणित बदुरे आई
पठये चहुं दिश चाहन भूरी॥ मोते कहि नि नयन जल पूरी॥
ले मुंदरी जाहु तुम ताता॥ सीतहि देखि कहो कुशलाता
काल्ह मातु मैं लंकहि आयौं॥ खोजत आनु दरशन पायौं
राम चरित यहि बिधि सुनु सीता॥ भई मुदित दुख दारुण बीता
बोली जेहिं यह कथा सुनाई॥ सो अब प्रगट होत किन भाई

दो० सुनि सीता के बचन कपि आयो पुरह लजात॥
चूके औसर सुजन जिमि सज्जन सन्मुख जात॥

चौ० कपि स्वरूप लखि सीय सकानी॥ राम दूत मैं सत्य सयानी
तिन के गुण कछु करौं बखाना॥ पीप्रनाय बोले हनुमाना॥

कुकुभा छं० प्रथम दया दुख देखि सकै नहिं उभय कृ-
पाकरि गहई। अनुकंपा हित करत न त्याग त करुना कष्ट
न सहई॥ आनृसंस गुण महित दोषहू ताकी रक्षा चाहैं
अनूक्रोश निज सरणि केर कलि कर तब धुनि पुनि काहैं।
दम गुण इन्द्री दमन दर्पपरिभव दानव संतापा। सम गुण
सुमत विरोध बोध बपु परि पूरन निश पापा॥ सत्य सदा स-
च कहत गहत लखि प्रीति प्रतीति अपावन। क्षमा छिद्र-

लखि क्षमहि सदा ग्रापति सो लभ्य सोहावन॥सौशिल्या तज्ञदीन खीन बुधि सुधि धरगा गत पाले। प्रगात विधुर बात्सल्य भोग कृत प्रमुदित आपु कृपाले॥ सब उर फुर सर्वज्ञ अघट घटना कर शक्ति सरूपं। रज कृत गगात कृतज्ञ मेरु सम सुमिरत भक्ति अनूपं॥ गुणगम्भीर रहि तीर जासु की गति मति जातन जानी। चतुरति चित्र बिचित्र रचत रचना अगणित बिचबानी॥ थिर सुनाम गुण धाम अचल अर्पत अन हेतु उदारा। धीर्य धार रिपु मार मोह मधि मानस टरै नटारासूर समर सुख लहत तेज जग जीवनि निज बसराखै बल बड़ कारज करत होइ श्रम स्वल्प न पद्धति नाखै॥ सो दय्या सिल अह्न सुभग चख चाहत चाहन डोलै॥ महा मीठ माधुर्य साम्य सो रम सबते भल बोलै॥ भागवान ब्रह्मादि धनी बहु जाके धनते भयऊ। सिरस सुमन सुकुमार्य आर्य आर्ज्जव लि अजीत अरि जयऊ॥ शुद्ध सुबेव किशोर सौर्य मार्दव विरक्त विज्ञानी। धर्म धाम निष्काम राम रघुनाथ अनाथ अमानी॥

दो० कहि कै कहत न गहत गहि देके देत न काहु॥
बधि कै बधत न तजत तजि भजेहि भजत तरनाहु॥
संग सुमित्रा सुवनते अधिक भरत में प्रीति॥
कइक बार मोसि कहिनि कुटिल काग की रीति॥

चौ० सुनि हनुमान ब नवैदेही॥ जान्यो मन क्रम राम सनेही। बोली अहैं कुशल दोउ भाई॥ हमते तात न कछु बनि आई॥ सासु ससुर पति वचन नेवारी॥ आइन संग सनेह पुकारी॥ अकृत देह जब भयो बिछोहा॥ तजे न प्राण कौन बड़ मोहा॥ यह उसहे उ दुख दुसह अभागी॥ जारेन गयो बपु बिरह दवागी॥

तेहि ते तात प्रीति को बाना ॥ जानत भरत कर इम जल जाता ॥
आरज सुवन दया के सिंधू ॥ सरल सुभाव दीन के बंधू ॥ ॥
निज दिशि देखि चहे सो करहीं ॥ हमरे करम सदा दुख भरहीं ॥
सुनि पवनज कह पुलकित गाता ॥ दीन वचन कल भाषत माता ॥
जन के दुख रघुनाथ दुखारी ॥ तव वियोग संभव दुख भारी ॥
परतु अनरोध सोध बिन माथे ॥ ज्यों त्यों इन ने दिवस बिताये ॥
नाहिन कह रघुपति सरभानू ॥ तम बरूथ कहं निशाचर जानू ॥
जो मैं हरि लै जावों आजू ॥ बिन निदेश बिगरे सुर काजू ॥

दो० तेहि ते कछु दिन धीर धरु कपिन सहित सो आइ ॥
अाइ तुम्हें लै जाइ हैं अरि हरि पुर पहुंचाइ ॥
सुनि बोली सिय कीश सब हैं सुत तोहि समान ॥
तब तो कीन्ह्यो स्वर्ण गिरि सरिस सु तनु हनुमान ॥

सो० बिन कीन्हे करतूति कथत ताहि लघु जानिये ॥
काल्हि कहौंगो भूति । धोइ समर सखि बदन मसि ॥
मे जो सुने कटु बैन । कहे जो निशचर नीच ने ॥
धरि राखे उर ऐन । समय पाइ सब काढ़िहों ॥
भइ सीतहि परतीत । देखि बुद्धि बल की अकर ॥
दीन्ह अशीस सप्रीति । अजर अमर सुत होउ प्रिय ॥
सुनि कपि नायो माथ । हाथ जोरि बोल्यो बहुरि ॥
सुधा लागि मोहिं मात । हरषि कहौ सुत खाहु फल ॥

इतिश्री विश्राम सागरे सब मत सागरे ग्रन्थ उजागरे श्री रघुनाथ दासरामसनेही कृत मारुत नंदन श्री सीतापति श्रीराम संदेश बरणो नाम एकविंशोऽध्यायः

चौ० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखखानि ॥
कहौं आदिकवि कथनि कछु नाटक रीति बखानि ॥
मेघनाद ते अधिक प्रिय पुर हुत ने बर बाग ॥

दसमुख दुख हित खाइ फल कपितरु तोरन लाग॥
बरजत मार असुर कछु कछुक गये गृह भागि॥
कछुन जनायो रावणहि सुनत लागि जनु आगि॥
चौ॰ तुरत बोलि मंत्री सुत लीन्हा॥ लखि किन्नर कहं आयसु दीन्हा
असी सहस्र सुभट संग लैके॥ आवा निकट दुंदभी दैके॥ ॥
हरषे हरि सुत सेन निहारी॥ बोले जै रघुनाथ खरारी॥ ॥
जै लक्ष्मण सुग्रीव कपीसा॥ लखि किन्नर मारे शर बीसा॥
तब हनुमत हसि न रुष्ट कीन्ह्यो॥ तेहि एक विशिख खंड त्रै कीन्ह्यों
कपि योजन की शिला उपाटी॥ लक्ष बाण करि किन्नर काटी
तब बजरङ्ग रोस करि धायो॥ पटकि पानि धिर मारि गिरायो।
पाछे अपर निशाचर मारे॥ भागि बचे ते जाइ पुकारे॥ ॥
सुनि तब अछै कुमार पठावा॥ उभै लाख भट लै सो आवा॥
देखि ताहि गरज्यो कपि भारी॥ भागे हय गय रहहरि पछारी॥
दो॰ साधि सकल आये निकट कहि कहि बानी बिंग॥
कूदेहु कपि तिन मध्य इमि जिमि मेरवन महं सिंग॥
कछुको नाय सोंडे करनि कछु माडे धरि पाइ॥
कछुक मिलाये धूरि महं भूरि मसन कीनाइ॥
चौ॰ निज बल बध लखि अक्षय कुमारा॥ लोह खंभ लै की शहि मारा
लागत सो मुरछा सी आई॥ मारे तब लाखन सर धाई॥ ॥
भयो चेत तनु पूरित देख्यो॥ भानु किरिनि जनु चहुं दिसि लेख्यो
झिटकि देह सब बान गिराये॥ गहि गिरि एक अछै पर धाये॥
आवत लखि मारे बहु बाना॥ दहि ने करते खस्यो परवाना॥
तुरत बाम गहि सिर दै मारा॥ सहित सूत रथ भा संहारा॥ ॥
तासु सचिव सुत पंच प्रचारे॥ कछु खेलाइ पुनि सोऊ मारे॥
बैठ बहुरि महल पर जाई॥ बोले लंका दिसि गोहराई॥ ॥

मैहौं कोशलेंद्र कर दासा ॥ बैठ लखा वन कीन्हे नासा ॥ ॥
जासु सुभट मन होइ खुशाली ॥ आइ करै सो समर कुचाली ॥
अंछै निधन सुनि निश्चर राई ॥ मेघनाद कहँ लिहिसि बोलाई
कह्यो बाँधि वानर कह लावो ॥ मारेहु जनि सुत मोहिं देखावो ॥
आयसु मानि अनीलि संगा ॥ आवा लहँ जहँ कपिरण रंगा ॥ ॥
लखि पवनज फांद्यो तिन बीचा ॥ मारे छिटकि अनेकन नीचा
पुनि प्रचारि रणरिपु ले भिरेऊ ॥ मृगपति सम महि कोउ न गिरेऊ ॥
भरि प्रसंग दिन भई लराई ॥ जाना यह हरिजीत न जाई ॥ ॥
ब्रह्म अस्त्र तब साधि चलावा ॥ करि विचार हनुमान बँधावा
लीलै लै आये जहँ रावण ॥ देखा कपि जनु कुधर भयावन ॥
अरुण नयन रिसबस अंगजरहीं ॥ समय देव सब आयसु करहीं
लखि प्रभाव कपि शंक न आनी ॥ बोला तब दशकंधर बानी ॥

गीतिका छं० कपि कौन तू सुत अस्स घालक कौन बल रघुनाथ के । रघुनाथ को खरदूषणादिक अनुज लक्ष्मण सात के ॥ लखण को तव भगिनि जानत परशुधरिमद जेहि हस्यो । परशु धर को सहस भुज रिपु दीप जेहि तबछीर धस्यो ॥ पठवा जु केहि सुग्रीव का हरि बालिसे दर जानिये । कपि बालि को तुम रहे जाकी कांख में सुधि आनिये ॥ किमि सिंधु नांघे गोपद ज्यों केहि हेत सिय चोरे लखे । सिय कौन कन्या जनक की तुम बानगे जाके मखे ॥ कस बान सादू बलि मुखन जेहि तेहि बाँधि नाच न चा यहू । को कहत यहि विधि पद्मिनी जेहि जलधि मांझ चलायहू ॥ सठ बाँधि आयसि यही बात नबान यह नहिं आन है । तव त्रियन लखि अघ लाग पुनि तोहिं देन शिक्षा ज्ञान है ॥ दे कौन शिक्षा देत याही वयर प्रभु से जनि करौ । परि पाइ सीतहि देहु

सब बिन मोत जाते नामरो ॥ को मारिहै मोहिं कर्म तेरे कौन तिन ते राखिहै । श्रीराम करुणा धाम जब तें शरण सुखते भाषिहै ॥ मम त्रास त्रिभुवन आजु तो हम शरण काकी जाहिंगे । नहिं जाउ है तो पाइहै फल कटुक कछु दिन माहिंगे ॥ मृग नारि द्विज कपि नाह हौं खर दूषणा धक निरबली । मोहिं भेंटि जब फिरि जाइहै तब बात कछु आगे चली ॥ जब समर रोखिहै राम नव को सुभट सायक सहि सकी । सुनि समुझि बूझत नाहिं औसहु नयन फूटे बर बकी ॥ रिपोच कपि नहि डरत काको मोहिं तू सठ है कहा । नहिं दीन आयसु ईश नातरु ख्याल कर त्यों जस चहा । रसराज तोहिं करि सुभट रस युत लेक खल गवल तोरवयं । पुट पाक करि सुर पतिहि देतो घने घर घल तो त्वयं ॥ सुर नाग नर दिग पाल सब जग जाल जेहि कर तल अहे । तेहि शत्रु ते करि रारि जीवन मरण दोनो भल रहें ॥ अपवलीन सेना मापि तव नहिं सबल कोउ मोते हवै । पर डरत आयसु भंगते नत भवन करि जाते सबै ॥ सुनि किहिसि निष्ठुर बोलि यह कपि काल बस बध कीजिये । बर बाग की गति किहिसि जिमि तिमि बाँटि तन को लीजिये ॥

सो० मुनि धाये जिमि भूत । कह्यो बिभीषण जोरि कर ॥
नाथ न मारिय दूत । घटन कि दधि दलि बूँद यक ॥

चौ० अपर दण्ड कीजे जो चहऊ ॥ तो बालधि पावक ते दहऊ ।
जहि ते फिरि तपसिन महँ जावे ॥ कपिन समेत इहाँ ले आवे ॥
एक गये जो मिले अनेका ॥ तो तुरते तजि दीजे एका ॥ ॥
सबहिन कहा मंत्र यह मूला ॥ लगे लयावन घृत पट तूला ॥
जहँ तहँ लगे लपेटन बोरी ॥ कपि खेलार करलूम बढ़ोरी ॥

ठौर ठौर पावक पर जारी ॥ उये कोटि रवि किधौ ईखारी ॥ ११
लघुहे निवुकि मेरु सम भयऊ ॥ रावन भवन कूदि चढ़ि गयऊ ॥
नाराचछंद॥ चढ़ौ फलांगि धाम धूम लाम को उठावऊ।
मनो अकाश ते नदी कृसानु की बहावऊ ॥ किलंकलील
नेक काल जीह सो पसारे हू । किधौं अनेक अयक सूर सय
क सीनि कारेहू ॥ किधौं सुरेश चाप की कलापदामिनी मँहै।
विलोकि जातु धान सो बराल भे जँहैं तहैं ॥ फिराइ लाइ लाइ
अयन मयन से लगे बैरे। गयंद छोरि बाजि छोरि बाजि छो-
रि ऊंट छोरि ये खरे ॥ अनेक हाल बालकी सुतात मात बो-
लहीं। बचाइ लीजिये हमै सभै समान डोलहीं ॥ अनेक ना-
रि मारि डिंभ डिंभ काढ़ि लावही ॥ अनेक डारि डारि वस्तु वा-
रि लेन धावहीं ॥ अनेक कंत बीर ते पुकारि वयन यौं कहैं।
उठाइ लेहु हाल माल जाल दे परोन हैं ॥ विलोकि दैत यौं
कहैं कपी धायन्त माठनी । सुरारि सोज लंक कुंड हाक स्वाह सी
धनी किधौं विराट के सुरारि रत्न शेगजानिजू । तिमित्त तासु वद ज्यो
र भूंगाक ठानिजू ॥ मथं तिमंद्र राजकी मनोज फागु खेलई। विरायभृ-
त्य बोधको विमोह वधु ठेलई। गिरे कपूर द्रुतितन बिकहे मंदोदरी।
विहाइ लोक लाज का निभाग तीन कौं अरी ॥ अरे अकंपनाय किला
प कंठ की महो धरं। लवाइ लेउ पद्म गाति पूत नाति सोदरं ॥ अ-
नेक बार मैं कही बुझाइ हू विभीषणं । नमामि दादि आरको कुठा-
र वंस तीषणं ॥ निकेत द्वार अपई उद्द हाट बार में जहाँ। लुका-
त जाय नीर कीश तीर देखिये तहां ॥ घने स्व बस्तु ज्ञात के-
निसात स्वस्ति पावहीं ॥ बोलाइ शेष राघवेश जानकी क-
हावहीं ॥ बधू जो कुम्भ करी की पसारि पानि भाखिये।
दोहाइ रामचन्द्र केरि मोर कन्त राखिये ॥ अनेक धाइ

धाइ जाइ रावरो सुनायहू। बिचारि वीर मेघनाद से बली पठायहू॥ अनेक अस्त्र शस्त्र लाय आइ मारने लगे। घुमाइ दीनि बालधी पुकारि क्रूर से भगे॥ सुमंत्र जाइ यों कही बड़ो बलाइ कीश है। निशंक बंकहू बड़ो सुनो न ऐस दीस हैं॥ बिशाल ज्वाल जानि कोपि मेघ बोलियों कही। बुलाइ देहु आगि रे बहाइ जन्तु को सही॥ भले सुनाय चाप आय पुंज पाथ छादेऊ॥ यथा सनेह पाइ चौगुनो कृशानु बाढेऊ॥ लगी जु अङ्ग अङ्ग बाण प्राण ले भगे सबै। निहारि रीति मालवान स्यान बोलियों तबै॥ न आहि याहि आभिमूस आहि ईश श्यामता। समीर स्वास सीयकी जु राम रोषा मामला॥ बिड़ोज ब्रह्म बिष्णु रुद्र आदि देव जोन हैं। डेरात माहिं सर्व बंङ्क ईश और कान हैं॥ बोलाइ कालते कह्यो लगूल लाउ मारि कै। बटोरि भूत प्रेत गण्ड दण्ड चंड धारि कै॥ बिलोक बात जात घात कीनि सयन तासु को। उठाइ गाल में धरयो पयोधवं भार जासु को॥ समेत शंभु भास राम दास घास आयहू॥ सभीत पंकजासना दि बीनती सुनायहू॥

दण्डकछं० जयति श्री बात संजात विख्यात बल बिपुल पन बाल रवि गाल धर्ता॥ लोक लिपि कष्ट श्रुत शास्त्र विधानि पुण निरस संसार महिं भार हर्ता॥ जयति बज्रंग रण रङ्ग अरिभङ्ग कृत कर्म निहिं भर्म रिक मूक बासं। सत्य सुग्रीव सुख हेतु बुध केतु बपु बचन मन काय रघुनाथदासं॥ जयति गुण ज्ञान विज्ञान बैराग निधि नाम बसु जाम उर धाम धारी। साधु सुर रंजनं असुर गण गञ्जनं दुष्ट मुख भञ्जनं बिपति हारी॥ जयति कपि मिष्ट पर मिष्ट-

पावक परम धर्म धुर धरणी हरि दर्प हन्ता। स्वर्ण से लाभ जल दाम विग्रह बरण विमल श्रम सूर वीराग्र गन्ता॥ जयति जन कात्मजा शोच मोचन विपिनि निधन निर्द्वन्द दश ग्रीव जाता। निपट निर संक गढ़ लंक दाहक काम क्रोध मद देव दानंद दाता॥ जयति शिर ध्वजा दृग देत कटि उदर कर शूल निरमूल नाभिस्थ आमं। पातु पूरब दक्षि विदिशि पश्चिम उत्तर ऊर्ध अध सर्वदा सर्व ठामं॥ जयति पर यंत्र पर मंत्र नेवारणं साकिनी डाकिनी घोर मारी॥ भूत यम दूत बेताल पावक प्रेत चोर बिग बिच्छू अहि बंध नारी॥ जयति सुर सिद्ध मुनि वृन्द बन्दित चरण सरण भय हरण धृत कुधर हाथं। अंजनी आनि दोहाइ श्री राम की हरहु दुख सपदि रघुनाथ नाथं॥

दो॰ देहु छांड़ि यम राज कहं यही बीनती मोरि॥
परवस आयों लखन सुनि दीन गात ते छोरि॥
जरत देखि पुर जान किहि भयो शोच कपि हेत॥
लागी सोंपन सब विबुध विष्णुहि प्रीति समेत॥
बैदेही की सुरति करि हरि हु लाग पछितान॥
पुनि अपनी दिसि देखि के दूरि कीन अज्ञान॥
बच्यो बिभीषण भवन अरु कुंभ करण कर द्वार॥
अपर लंक सब जारि कपि कूद्यो जलधि मंझार॥
पूंछ बुझाइ बनाइ लघु वपु आय सिय तीर॥
कह्यो चिन्ह कछु देहु मोहिं जिमि दीन्ह्यों रघुबीर॥
मुनि सह प्रीति उतारि निज चूड़ामणि तब दीन्हि॥
गहबर बोली तात तुम भले समय सुधि लीन्हि॥
जिमि मनि बिन व्याकुल भुजग जल बिन व्याकुल मीन॥

तिमि देखे रघुनाथ बिनु तलफत हौं मैं दीन॥
कहु सुत अब कब आइहैं दीनबंधु यहि पार॥
देहैं राज बिभीषणै करि निशिचर संहार॥
बिजैपाइ कब राजिहैं मोहिं सहित दल माहिं॥
देवबंदि ते छूटि कब बिनय करब प्रभु पाहिं॥
कबधौं बिधि यह चाइहै फिरि कौशलपुर तात॥
भरत शत्रुहन लोग सब कब लहिहैं मुद मात॥
ह्वैहैं मंगल काज कब पुजिहैं याचक काम॥
नख सिख कब अवलोकिहौं रघुपति छबि अभिराम॥
सीस मुकुट मणि गण जटित श्रवणनि कुंडल लोल॥
जग मगात कब देखिहौं टोपी दिये अमोल॥
अलकैं सींची अतर सो निकट कपोलन मुक्त॥
भरि लोचन कब देखिहौं कुसुम कलिन संयुक्त॥
भाल तिलक भासित उरद भृकुटी धनु अनुहारि॥
भूरि भाग कब देखिहौं नयनन पलक बिसारि॥
चंचल चारु बिशाल बिदि लोचन मोचन मान॥
चितवत हिसि कब देखिहौं मन को करि कुरबान॥
कीर तुंड सम नासिका लटकन की छबि भूरि॥
कब चकोर सम देखिहौं मुख मयंक तृण तूरि॥
अरुन अधर दाड़िम दशन रसन चारु मृदु हास॥
हे हरि कब अवलोकिहौं ससि कर सरिस प्रकास॥
मधुर बचन जन मन हरण कब सुनिहौं निज कान॥
चिबुक चारु कब देखिहौं चितवन अमी समान॥
कंबु कराट तुलसी सुभग मनि मानिन की माल॥
उर दीरघ अवलोकिहौं कब त्रिवली सुखजाल॥

भुज बिशाल करि कर सरिस करतल कमल समान ॥
भूषित विभूषण देखिहों कब लीन्हे धनुवान ॥
कौन झंगा पहिरे ललित ताऊपर पट पीत ॥
कब निज नयन सेराइ हौं देखि उहर उपवीत ॥
कटि केहरि हरि कर धनी पट पट दनी सुरंग ॥
कब पद पदुम पलोटि हौं जानु पानि सब अङ्ग ॥
मैं सुन कंत अनन्त कर जानत सरल सुभाउ ॥
ताते कहत न सहत दुख तुम ते कौन दुराउ ॥
बिरह आगिनि नें देखि तोहि सीतल भय निज देह ॥
सोउ कहत तुम जान फिरि सोइ दुख सह बस नेह ॥
दीन बचन सुनि सीय के भयो विकल कपि राय ॥
नीकि न लागी अमरता छल बल कछु न बिसाय ॥
दीन्हो मातु प्रबोध तब होई तुव मन जौन ॥
चल्यो नाइ शिर नाद करि कूद्यो सागर लौन ॥
आवत जानि लंगूल सब चंढे बिटप गिरि धाइ ॥
देखत पहुँचे आइ हनु कुहू दिवस सुखदाइ ॥
भये छीन ते पीन सब शाखा मृग एक साथ ॥
इहद रमायन केर मत कहा कछुक रघुनाथ ॥

इति श्री विश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत हनुमान लंकापुरी विध्वंस वर्णनो नाम द्वाविंशो ध्यायः २२ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
सार रमायण कहें कछु गीता बल्लि मत आनि ॥
सिये रंजि बन भंजि पुनि धुर जराइ मनिषाइ ॥
आयो मारुत सुत हि लखि हरषे कपि सम सुदाय ॥

भेंटि भेंटि पूछा सबनि हाल कहा हनुमान॥
सुनत चले सानन्द है जहँ सुकरठ भगवान॥
मार्ग पञ्चमी शुक्र दिन मधुवन पहुँचे आइ॥
खाये फल दल मधु सबनि रखवारे बिड़राइ॥
षष्ठी दिन कपि पतिहि मिलि मुदित कहा सब हाल॥
सतयें दिन आये प्रबिल जहँ रघुनाथ कृपाल॥

चौ० चरणपरत भेंटे रघुवीरा॥ सानुज बैठारे निज तीरा॥ ॥
जामवन्त तब सकल बखाना॥ जेहि बिधि काज कीन्ह हनुमाना॥
सुनत समोद गोद भरि अङ्का॥ हनुमानहिं पुनि मिले श्रीरङ्का॥
उपधारि बूझी कुशलाता॥ किमि सिय खबरि लयायो ताता॥

गीतिका छं० किमि तात लायहु सीय सुधि सुनि पवन सुत पद गहि कहा। प्रभु पास ते जब चलेन ढूंढ़त दूरि एक सागर चहा॥ शत योजन कर तेहि नांघि चालिस कोस न कआराम है। पुनि हेम के त्रैकूट लङ्क सुवेल सुन्दर नाम है॥ तहँ पाँच लाख पषान के गृह दारु के नव लक्ष हैं। पुनि ताम्र के मुनि कोटि घर श्रुति कोटि रजके स्वक्ष हैं॥ ते तनेहि कञ्चन केर केवल कोटि पङ्कज राग के। यट कोटि तृण के बंशछद के कोटि सत बहु भाग के॥ अस्फटिक के नव कोटि मेचक दाम कोटि सहस्र से। मैं दीख इतनेनि लै लंका दुर्ग सत योजन नवंसे॥ दश शीश नाको ईश जाके कोप ते त्रिभुवन कंपै। उपवाग तामें जानकी तव बिरह पावक में तपै॥ जहँ रहत तहँके बिहंग निज निज भवन तजि भजि भजि गये। भइ भेंट स्वास समीर ते तिन फिरि न तिहुं मद पगदये॥ कृशगात सो जरि जात तजि दृग बारि निज हित राखहीं। तव नाम सुमिरत याम आठौं और कछु नहिं भाषहीं॥

जब शरण मीन समान बिन जल जानि तब त्यागो चहे।
तब सींच प्रभु गुण राखि त्रिजटा जाय मैं देखी तहें॥ फिर
नाइ दीन्ह्यों मुद्रिका कहि कुशल बन भंजन कह्यो। बधि अ-
क्ष लङ्क जराइ चूड़ारत्न सीता ते लिह्यो॥ सो लीजिये र-
घुनाथ ले निज हाथ हृदय लगायहू। भे प्रेम पुलकित गात
शिथिल न बात मुख ते आयहू॥ सुनि शोग सीय वियोग सा
गर माझ बूड़न लागहू। हनुमान बोहित सरिस लीन उबारु
आतुर जागहू॥

चौ० शीश नाइ बोले हनुमन्ता। केतनिक बात करो प्रभु चिन्ता
कहो रावणै दल युत मारों। कहौं आनि तव चरणन डारौं॥
कहो लङ्क ले सागर बोरों। कहौ त्रिकूटे घट इव फोरों॥॥
कहौं लाइ गिरि सागर तोपों। कहौ पान करि जल उर लोपों।
कहो धरी में सेतु बढ़ाई। तापर सेन उतरि सब जाई॥॥
कहो तुम्हें लै सिय दिखावों। कहो जानकी आनि मिलावों॥
तब प्रताप ले सब कछु करिहौं। बिन निदेश पथ पाउ न धरिहीं
ताते जो भावै सो कहहू। कह प्रभु तुम सुत ऐसे अहहू॥
सब विधि हौ निज मन अनुमाना। तुम सम और हितू नहिं आना
प्रति उपकार योग मैं नाहीं। तेहि ते हौं ऋनिया तुम पाहीं॥॥
सुनि हनुमान सकुचि अस भाषा॥ तव प्रताप मैं का मृग साषा

दो० धूरि मेरु गोपद जलधि जल पावक भय प्रीति॥
नाथ कृपा जापर करहु विपरीते विपरीति॥
सुनि प्रभु लीन लगाइ उर बोले सम्मत नीक॥
मांग्यो जौन रजाइ तुम तात रहे सो ठीक॥

चौ० परमें निज शायक बरि राखे। रहिहैं सुथित तुम्हारे भाखे॥
अरु जग हित लीला नहिं बाढ़ी। मिटी आस दससुख की गाढ़ी

कर्म प्रधान बिश्व में कीन्हा॥ देव चहैं निज बदला लीन्हा॥
सोसब फिरि रहि जाई नाता॥ तातें अब कीजै यह बाता॥ ॥
ले कपि भालु चलहु चढ़ि लङ्का॥ देखों महूं कैस गढ़ बङ्का॥ ॥
कह कपिनाथ बेगिही कीजे॥ प्रभु जिन समुझि कूच करि दीजे
दो० सब दिन यह साइति सुभग जहं अपयोगन सान॥
सुनत अष्टमी दिवस प्रभु रविवासर कीन पयान॥
गीतिका छं० प्रभु कीन लङ्क पयान जब तब धनुष निज
टंकोरेहू। सुनि शब्द घोर कठोर चौंके शम्भु बिधि मुख मोरहू।
भयो काम सकल निकाम शिर से गंग धारा बहि चली। ध-
रि धीर हृदय बिचारि निज निज काज लागे बिधि भली॥ भ-
य बिकल सब दिगपाल चौदहु भुवन के बासी डरे। दशमौ-
लि सभय बेहाल पुरजन गर्भ तिन के गिरि परे॥ कपि भालु
रीछहिं नाल अति बिकराल धर कट कट करै। बदि बादहू
बहि नाद करि हरि सम उपरो पर परै॥ अति पीन परम बिशाल
कर गिरि बिटप धृत चञ्चल महैं। मुख बिकट लोचन पिङ्ग-
जिन्हैं बिलोकि भय कालहु लहैं॥ धरु मारु भुजा उखारु
अरिदल डारु सागर लोपई॥ नहिं होय देखब ताहि जौ ते-
हि हेत तन कौ कोपई॥ यहि भांति मर कट कटक बोलत
चलत मरु पंगुल भये। शशि भानु लोप जान नभ थल धू-
रि परि सर पटि गये॥ अति भैरव बहत निमेख मानलि स-
हस दृग अकुलानेहूं। सुनि हांक श्री हनुमान की पर आपन
काहु न जानेहू॥ चल खात दिग्गज कोल कूरम शेष गिरि
हालत मही। मुख मुहुर मुहुरा मयि कर्षत गई तन करक-
म सही॥ श्रीराम राजत पवन पर जिमि उदै गिरि पर रबिल-
से। सौमित्र अंगद कंध मानहुं अगिनि घर वेदा बसे॥ कसम

सत इमि मग बसत बिसयें दिवस रुधि तट आयहू। उतरे निरखि जल रासि फल दल फूल सबहिन खायहू ॥ इत रहत असुर ससंक जबते लंक गो कपि जारिके। सुन सचिव रावरा बोलि बूझ्यो मंत्र कहो बिचारिके ॥

चौ० सुनि घटश्रुति बोला अहंकारी॥ को है त्रिभुवन सरिस हमारी
जो सन्मुख सक नयन मिलाई ॥ अस कहि चला बिवस औंघाई
तब सक्रोध बोला अति काया॥ आयसु मोहिं देहु करि दाया।
अबहीं छिति नर हरि बिन करहूं॥ पौर मंत्र का बहुत उचरहूं।
काम रूप बोला घन नादा॥ मम प्रभाव जग जानत आदा ॥
बिधि हरि हर बस किहेउ जुझारू॥ नर बनचर हित कौन बिचारू
कुंभ निकुंभ दंभ छलकारी॥ बोले बिभुता बिदित हमारी ॥ ॥
रूपा हरि सब देव निहारें ॥ देखत उच्चासन बैठारें॥ ॥ ॥
भोजन हित कहियत तिन पाहीं॥ हम काहू कर छुधा न खाहीं।
डाटत बोलि सकै नहिं एकू॥ कपि मानुष हम गनै न नेकू ॥ ॥
मत्सर रूप अकंपन कहई ॥ हमें जियत अस को मिय लहई॥
कहा उपाइ करौ अब सोई ॥ नर बानर जेहि बचै न कोई ॥ ॥
अपर कथा कहिये का छोभी॥ तब भा मनत महोदर लोभी।
जो आवै अनगन्त करोरी॥ डारों खाइ भरे महि झोरी ॥ ॥
तो कपि सहस लाख केहि लेखे॥ जैहैं बूझि न अब हम देखे।
बोला तब दुर्मुख पाखंडी ॥ छल करि हरि आनो दोउ दंडी।
जो चाह्यो सो कीन्ह्यों पाछे॥ बरबस करासि कपट बपु काछे ॥
बिपुल बिप्र जोमें बरि आनी॥ भूसुर बानि कोइ सके न जानी ॥
जनि बो करत सकत करि काहा॥ सो किमि जात जासु नर नाहा
सुनि प्रहस्त बोला डर पाई॥ मम मत सीतहि देहु पठाई ॥ ॥
नारि पाइ जो फिरि चढ़ि आवै॥ करहु युद्ध जेहि जान न पावै ॥

यामें नहिं अधर्म की बाता ॥ बोला तब हिं सकं नर घाता ॥ ॥
सकल वस्तु भोगन हित आवै ॥ धर्मा धर्म कहां कह बावै ॥ ॥
करत बत कही कादर केरी ॥ यह नहिं मारिहि सबन खदेरी ॥
नीति कहत हम कादर ठहरे ॥ जाना अब तुम सोइ हो छहरे

दो० कह्यो सुमति मंदोदरी सुनहु कंत ममबात ॥
कर जामय रिपु अगिन नृप लघु करि गनेन जात ॥
भुवनेश्वर सव यज्ञजो गनत छोट तुम ताहि ॥
सोचु वेसाहत सुकर यह भली बात नहिं आहि ॥
सुवन सचिव तव मंद मति कहत बचन मुखपेखि ॥
नगर जरत तव सबन कर लीन पराक्रम देखि ॥
तेहि ते श्री जानुकी कहं पठऊ देउ मन मानि ॥
नाहित दूषण बालि की होइ गति सति जानि ॥
नारि बचन सुनि मोह बस बोला सोहिं समान ॥
सकल कुटुम्बी नृप धनी पर तापी को आन ॥
भागत सुर जेहि नाम सुनि सको को तातें जूझि ॥
जान्यो तेहि हैं काल बस परे न ताते सूझि ॥
भूहि बिभीषण नाइ शिर तेहि अनुसासन पाइ ॥
जो चाहो निज भद्र तो सीतहि देउ पठाइ ॥
तात राम नहिं नर अधिप अखिल लोक करतार ॥
गो द्विज सुर महि संत हित लीन मनुज अवतार ॥
जप तप तीरथ ध्यान करि जिनके दरशन दूरि ॥
सो प्रभु आयो अकृत अधि धन्य भाग तव भूरि ॥
मेघनाद भट आदि जे बैठे मारत गाल ॥
ते किम सकब धरि धीर जब छुटिहैं बान कराल ॥
तेहि ते सकल बेकार तजि नाउ राम पद शीश ॥

मिटे सकल अपराध जेहि बने रहें भुजबीश ॥

सो० सुनि तिरछे करि पक्ष । बोला शठ जीवत इहां ॥
करत शत्रु कर पक्ष । जाउ न कहि मार्यो चरण ॥
करि विचार शिरु नाइ । आयो घर निज मातु ढिग ॥
कही कथा सब गाइ । सुनि बोली सनमानि सो ॥
कहा भयो जो लात । मारी पितु सम भ्रात बड़ ॥
इहां रहे कुशलात । वहां गये नहि नेकु भल ॥
समुझि विमोहित वयन । चलेउ बन्दि सचिवन सहित ॥
आये धनपति अयन । लखि कीन्ह्यो सनमान तिन ॥
कह्यो सकल निज हेतु । सुनि कुवेर सोचन लगे ॥
बोले तब वृषकेतु । तात किहेउ अति नीक तुम ॥

दो० औषधि हित उपदेश बहु करत न लागत जाहि ॥
रुज असाधि शठ जानि के तजत सुजन जन ताहि ॥

चौ० पर अवशर रा रामकी जाहू ॥ शापदि मत्र बूझौ मति काहू
सुन सुत राम विमुख जे प्रानी ॥ भूले भव वन गज वदि मानी
आगे रूद्र राक्षसी देख्यो । पाछे सिंग भयानक पेख्यो ॥ ॥
तब तो गज वह गयो बिलाई ॥ आपु कूप गृह गिर्यो डेराई ॥

दो० तेहि तर ताक्यो काल सम अजगर छाड़ी नाहिं ॥
तब गहि दुर्वा आर बल लटकि रहा तेहि माहिं ॥

चौ० तहँ सुंदरि मधु लागि निहारी ॥ प्रमुदित है तेहि गहिसि अनारी
सहित कुटुम्ब उड़ी सब माखी ॥ लपटि गईं पग कटि मुख आँखी
पर यक बूंद कि हिसि मधुपाना ॥ सो सुख मूढ़ परम सुख माना ।
श्याम सेत द्वि मूषक रूखा ॥ लागे निशि दिन काटन दूबा ।
तुकि गज वे गिरा हहराई ॥ तुरतै अजगर लीन चबाई ॥ ॥
यह गति सब जीवन की जानो ॥ बिन हरि शरण न कतहुँ ठिकानो ॥

दो० रामशरण बिन कालते बचा चहै भजि ज्ञान ॥
सोश ठऊ सहि भय गरुड़ तजि हाटु पक्ष लुकान ॥
राम विमुख जग जीव जे तपत ताप त्रैमाहिं ॥
तेहि दुख नाशन हित यतन बद श्रुति सोइ मिथ्याहिं ।
जिमि सि सुहित पितु रोग गहनीर तरनहित नाव ॥
पालत पावत चढ़त पर बिरकर होत अभाव ॥
याते साँचे मुनि सुखद शरण पाल रघुवीर ॥
केवल ताके शरन बिन मिटै न भव भय भीर ॥

चौ० मुनि सुख पाइ सिवै सिरु नावा । मंत्रिन सहित समोद सिधावा
अंतह करण सहित जिमि जीवा ॥ हरिहि तके दुख ससुखि अतीवा
करत मनोरथ मग इमि जाहीं । शंभु मिलन गुणि अति हरषाहीं
अहो भाग्य मम उदै अपारा । कौन कीन अस शुभ आचारा
साधु विप्र करका अस दीन्हा ॥ कौन अपूरब तप हम कीन्हा ॥
जो सर्व पर प्रभु सुख अयना । देखिहौं जाइ आजु भरि नयना
निज जन हित धी वपु प्रगटाये ॥ धरा भार भंजन महि आये ।
शोभा सिंधु दरश जब पैहौं ॥ तब का परमानन्दन लेहौं ॥ ॥
जे पद पदुम भजें सब सन्ता ॥ विधि हरि हर सनकादि अनन्ता
जिनके चिन्ह धरा दुखहारी ॥ रजकन परसि तरी ऋषि नारी
जासु बारि भव निज सिर धारा ॥ जेहिं तारे जग अधम अपारा
जिन पद पीठ भरत मन रंजा ॥ धरिहौं मैं शिर तिन पद कंजा
जेहिं कर कमल असुर बहु मारे ॥ भर्म साधु श्रुति रक्षण हारे ॥
जेहिं कर गहि भंज्यो भव चापा ॥ परसत मिटत काल परि तापा ॥
करत प्रणाम नाथ मोहिं जानी ॥ मम मस्तक धरिहैं सोइ पानी ॥
पूछिहैं जब तब कहिहौं नामा ॥ नाथ होब मैं तोर गुलामा ॥ ॥
चिन चिन निज करिहौं सेवकाई ॥ छाँड़ि कपट हठ मान बड़ाई ॥

यहि रव पट उतरे जो पैहों ॥ बची बचाई जूठनि खेहों ॥ ॥ ॥
सुनि लैहैं अपनाइ कृपाला ॥ तब होयहों सब भांति निहाला
निसदिन देखि हों प्रभु की झांकी ॥ तब का रही करता को बाकी
भरतो जाइ कहां बिललाई ॥ यह गति शंभु कृपा हम पाई ॥
निज दिस देखि शंक मन धारे ॥ हरषे जब प्रभु रीति बिचारे ॥

दो० यहि विधि करत मनोरथ आये जहँ हरि सेन ॥
करि बिचार नभ दूरि ते बोले गदगद बैन ॥
जय सर बज्ञ कृतज्ञ प्रभु कृपा सिंधु गुन गाथ ॥
शरण भये पाले बिपुल अब मोहिं पालहु नाथ ॥
नाम बिभीषण असुर कुल रावण रिपु कर भ्रात ॥
श्रवण सुयस सुनि शरण तव आयो लै निज गात ॥

चौ० सुनि प्रभु बोलि सचिव सब लीन्हा ॥ बूझ्यो यहि का चाहिय कीन्हा
कहहिं कपि पति रिपु सोदर येहू ॥ भेद लेन आवा गहि लेहू ॥
कह अंगद आरिवर बध करना ॥ अबहीं क्यों न हनत हे सरना
जामवन्त कह रिपु कर भ्राता ॥ अब हम ते यहि ते कस नाता ।
सीय हरी तब क्यों नहिं आवा ॥ दे हु जान मुख प्रनत सुनावा ।
कह नल दूत पठै मत लीजे ॥ ऐसहि कैसे बिदा करीजे ॥ ॥
उत्तम होइ तो राखहु पासा ॥ नाहित हततब नील प्रकासा ॥
साँचेहु यह शरनागत आवा ॥ राखिय देव मोहि अस भावा ।
सभय तजे अघ लाग अनन्ता ॥ होइ जो मात पिता कुल हन्ता
कह हनुमन्त सुनहु रघुराया ॥ राक्षस है न शरण जो आया ॥
बलि प्रहलाद सुकंठ यथा धू ॥ जानहु तुम तिन सम यह साधू
छली न प्रभु तव सन मुख होई ॥ फिरे सभीत द्वार ते कोई ॥ ॥
बहुरि बात कछु कहन न पाई ॥ बीच बिभीषण गिरा सुनाई ॥

दो० अब तब आवत दीन के हरत रह्यो दुख भार ॥

अस अभाग बड़ मोर जोहि सुरतरु करत बिचार॥
दीनबंधु सुनि दीनके बचन उठे अकुलाय॥
कह्यो लषण सों हनुमान ते अबहीं लावहु जाय॥
सो० लाये करि सनमान। पूसबदी भूता दिवस॥
प्रभु छबि देखि सुजान। कीन दंडवत ताहि कहि॥
चौ० प्रभु उठाइ भेंटे उर लाई। बैठे निज समीप बैठाई॥ ॥ ॥
पूछी कुशल कहो लंकेशा। दुष्ट संग सम कछु न कलेशा।
बोले नाइ बिभीषण भाला। सुमिरन जे तव करत कृपाला।
तिन्है कुशल मंगल कल्याना। देत बिरंचि बिनै करि नाना।
जो मूरति मुनिजन अनुमारी। करहिं ध्यान नहिं सकै निहारी।
तेहि भरि अंक मिल्यो मैं आजू। याहि ते अधिक कवन सुख साजू
कहु प्रभु सत्य कहौं मैं तोही। दास सरिस प्रिय अपर न मोही॥
जिनके हौं हित अनन्य नेहा॥ तिन हित आइ धर्यो मैं देहा॥
अस कहि जलु सागर कर लीन्हा॥ तिलकु बिभीषण के सिर कीन्हा
सुनि सुभाव लखि कपि सब हरषे। जय जय कहि प्रसून सुर बरषे
दो० जो पुर कलह कलेश करि रावण पायो तीन॥
सो प्रभु दिन बिभीषणहि तृण सो अस सम दीन॥
ऐसे प्रभुहि बिसारि जे करत आन की आस॥
ते नर धन हित धनिहिं तजि भजत दास को दास॥
चंद्रोदय परबोध मत मूल सार शुक गाथ॥
बरन्यो सुंदरकांड शुभ सुखप्रद जन रघुनाथ॥

इति श्री बिश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत सुंदरकांड संपूर्ण नाम त्रयो
विंशोऽध्यायः २३॥

श्रीगणेशायनमः

अथविश्रामसागर

लङ्काकाण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि रामसिय सन्त गुरु गणपति गिरा सुखदानि ॥
बरणौं कलिमल कहनि कछु अमित वेदसमत आनि ॥
प्रात पंचमी दिवस प्रभु पूंछा सचिव बोलाइ ॥
केहि विधि उतरिय उदधि सुनि बोले निशचरराइ ॥
नाथ आपु कर एक शर सोखै सागर कोटि ॥
तदपि नीति अस सिंधु तें मांगहु सागर ओटि ॥
कहौं नाथ भल होइहि तो करै दैव सहाइ ॥
लषण बूझि सुर मारिये सोखि न सोको आइ ॥
बोले प्रभु नहि कचत मोहिं साधु अवज्ञा तात ॥
तेहि ते यह करि लीजिये पुनि कहब न बन बात ॥
चौ० अस कहि दर्भ डासि दधि तीरा ॥ बैठे करि प्रणाम रघुबीरा ।
विनवत तीनि दिवस चलि गयऊ ॥ तब प्रभु कोपि शरासन लयऊ ।
अग्निबान संधान्यो जबहीं ॥ लाग्यो जरन वारि निधि तबहीं ।
विप्ररूप धरि हरि ढिग आवा ॥ रतन भेंट दै पद शिर नावा ॥
नाथ सृष्टि सब तुम्हरी अहई ॥ जेहि जस कीन्ह्यो सो तस रहई ।
अब जस आयसु होइ तुम्हारा ॥ सोइ करौं मैं परम उदारा ॥ ॥
कहो सुखाइ जाउं यक बारा ॥ मरि जैहैं जल जीव अपारा ॥ ॥
कृपा सिंधु बोले हंसि ताता ॥ कपि दल तरै करो सोइ बाता ॥ ॥
तेहि तब कहा नील नल कीशा ॥ तिनपर से जल तरत गिरीशा ।

आयसु देहु रचे ते सेतू ॥ महूं सहाय करव तव हेतू ॥ ॥ ॥
अस कहि नौमी दिन सोगयऊ ॥ पर्‌रास दशमी ते भयऊ ॥
बहु दिशि शैल देहि कपि आनी ॥ सो नल नील लेहिं निज पानी
रचहिं सेतु अति सुदृढ बनाई ॥ शिव स्वरूप थाप्यो रघुराई ।
कह्यो महातम विरजग हेतू ॥ तेरसि दिवस सिद्ध भा सेतू ॥
विस्तीरण दश योजन केरा ॥ दीरघ कोस चारि सत हेरा ॥ ॥
प्रभु नल नीलहि बहुत सराहा ॥ पूजो भुजा सहित उत्साहा ॥
प्रात चतुर्दशि लाग उतारा ॥ प्रभु छवि देखत जीव अपारा ॥
राजत हनोमान के कांधे ॥ लक्षिमन बालितने के रांधे ॥

दो० विपुल चले जल चरणि कपि विपुल सेतु असमान ॥
जैसे भव निधि तरण हित कर्म उपासन ज्ञान ॥

चौ० इमि उतरत निश दिन इक धारा ॥ द्वितिया दिवस भये सब पारा
पाइ रजाय निकट फल खाये ॥ तृतिया दिन सुवेल गिरि आये
कोष्टाटालक गोपुर शृंगा ॥ दशमी तक उतरे पल बंगा ॥ ॥
हरि दिन रावण दूत पठाये ॥ दल देखन सुक सारण आये ॥
चरचि चपल गहि मारण लागे ॥ रामशपथ दीन्हा तव त्यागे
आये तव दशमुख के तीरा ॥ बोला लखि कहु कपि दल भीरा
काल विवस आये यहि पारा ॥ होइहैं एक दिवस कर चारा ।
पुनि कहु रहे विभीषण भारू ॥ जानि बूझि भा जब कर कीरू
बहुरि भाखु तपसिन की बाता ॥ जिन्हैं निकारि दीन पितु माता
मुनि बोले शुक सारन ऐसे ॥ सुनो कृपा करि बूझ्यो जैसे ॥

कुण्डलिया सहस लाख कर कोटि यक सहस कोटि कर शंकु । सहस शंकु कर अरबुद सहस दबुद बिर्दकु ॥ सहस दबुद बिर्दकु सहस कर पदुम प्रमाना । सो अष्टादश सुने संग युत्थप बल बाना ॥ बल बाना कपि जाल सबकाल-

सरिस हम लखि गहस। कहत मिलावन लंक तब पंक
माहिं ऐसे सहस॥

दो० आयसु मिलत न मिलत पुर भये विभीषण राज॥
तिनते सम्मत बूझि के करत आपहू काज॥
मुनि बोला हँसि वादि क्यों करै बड़ाई भूरि॥
जासु विभीषण से सचिव भरी कि तिन ते पूरि॥

चौ० तब शुक कह कछु दूरि न भारी॥ चढ़ि अट्टालक लेहु निहारी॥
सहित सुमुख भट चर तेहिं बारा॥ चढ़ि देखी कपि कटक अपारा॥
शुक सारन कहि नाम बताये॥ अंगदादि जे भट सँग आये॥

दो० वै अंगद हनुमान वै वै सुकण्ठ नल नीला॥
वै सुखेन वै रिच्छपति वै दधिमुख सम शीला॥
जटा मुकुट मुनि पट धरे धनुर्बाण तूणीर।
आश्रित हरि मृगचर्म पर सेवत रघुबीर॥
गौर श्याम छबि धाम वै सहित लक्ष्मण राम॥
बैठि विभीषण पुरह लखि कीन्हिसि मन पर नाम॥
ऐसो कपिदल दरसि कै बोला विहँसि निसंक
देख्यो कौतुक कालकर दिहिसि पिपिलकन पंख॥
इत प्रभु छत्र समेत तकि मार्यो शर यक सङ्ग॥
मुकुट प्रसून गिराइ पुनि प्रबिसा आइ निषङ्ग॥

चौ० देखि अचम्भित रहे सब लोगा॥ कोइ कहै प्रथम भयो अपयोगा॥
बोला यामें अपसगुन काहा॥ सिरहु खसे भट करै उमाहा॥
तेहि ते शयन करहु सब जाई॥ चलि भे सकल रजायसु पाई॥
तब मय सुता कह्यो भय भीता॥ हे पति काल भयो विपरीता॥
जे तव सन्मुख सकैं न बोली॥ ते अब तुम ते करत ठठोली॥
जेहिं पुर सकै बिष्णु नहिं आई॥ ताहि तुच्छ कपि गयो जराई॥

जेहि जग नांघ सके नहिं कोई ॥ तासें सेतु कि गिरिकर होई ॥
जासु नाम सुनि सुरअजि जावें । तापर कीश असन चढ़ि आवें ।
जो सादर निज करत बिलासा । सो कि जाइ पिशाचुन पासा ।
तुमहूं अस हठ कबहुं न ठानी । तेहिं ते परत बाम विधि जानी ।
अबते धरि हरि हठ सठ ताई । करहु काम किन होइ भलाई ॥
जेहिं प्रभु मधु कैटभ संहारा । हिरनाकुस हिरणाक्षहि मारा ।
जेहिं खरादि बहु भट बध कीन्हे । बालि प्राण इक शराहि लीन्हें
सोइ प्रभु सेतु समुद्र में बांधा । बीसहु नयन होहिं ज निआंधा
मोहिं समेत जगदम्बहि लैके । पायन परहु राम कहं दै के ॥ ॥
प्रणत पाल प्रभु कृपा अगाधू । तुरतहि क्षमिहैं तव अपराधू ॥
बोला सत्य वचन तव प्यारी । पर इक बात न जानि निहारी ॥ ॥

कुण्डलिया शिव निर्माल्य शीश ये रघुपति लायक नाहिं । तेहि ते इन्हें निवारि हों समर रसा के माहि ॥ समर रसा के माहिं प्रथम बल तिन्हें देखिहों । प्रभु आये जेहि हेत नस्य मन साध मिटैहों ॥ साध मिटैहों नस्य में आपन छाड़ शरीर सब । मिलिहों निज नाथेव सों जस गैहें सन छादि शिव ॥

दो० बीसहि युग जिन बाहुबल किह्यो अकंटक राज ॥
तिन्हें अकृत अरिपद परों धृग कादर कर काज ॥

चौ० मम बस सकल जीव जग जेता ॥ तेयहि भांति डरत कोहि हेता
जासु विनाश निकट जब आवे ॥ तेहि विपरीति क्रिया अतिभावे
अस कहि सो सोइ चुप साधी ॥ जागत निशि बीती सोउ आधी
प्रात काल उठि सभा सिधावा ॥ आपन बल सब भटन सुनावा ॥
सुनि सठ सचिव सेनपति हरषे ॥ लगे कहन कादर जन करषे ॥

इति श्रीविश्रामसागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्रीरघुनाथदास रामसनेही कृत श्रीरामसुवेल आगमनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः २४ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं मानस मन कछुक कोकिल काव्य बखानि॥
दशमुख इतहू दिसि दूत ति दीन्हें दलपति फेरि॥
आपु जान की पास है आयो तेहि छल फेरि॥

चौ० इहाँ साम्ब परिवा दिन प्राता॥ अंगद ते बोले सुर त्राता॥
बालि तनै बल बुद्धि बिशाला॥ लंकहि जाहु जहाँ दशभाला॥
हित उपदेश दियो तुम भूपी॥ नहिं माने तो आयो सूमी॥ ॥
भले नाथ कहि माथ नवाई॥ चले राखि उर प्रभु प्रभुताई॥ ॥
पुर प्रविसत सब बाहन रोका॥ सुनि युवराज सबनि कहँ ठोंका।
रावण सुत लखि मुख तेहि दीशा॥ बोला बदि तैं काकर कीशा।
रामचन्द्र की जा की भामा॥ हरि लायो पितु अपने धामा॥ ॥
सोई राम जिनके लघु भ्राता॥ तव फूकुकारत नि याता॥ ॥ ॥
इतना सुनि तेहि पाँव उछारा॥ अंगद पकरि भूमि है मारा॥ ॥
देखि असुर भट केतेहि काला॥ एक एकते कहे न हाला॥
पुरजन चाहि घट पट दै लेहीं॥ बूझे बिन बताइ मग देहीं॥ ॥
मन में कहें दशानन मीचू॥ सिर का आनी सबकी मीचू॥
आवा प्रथम नगर जेहि जारा॥ यह धौं काहु करै करतारा॥ ॥
जहँ अब निसि दिन मची लराई॥ तेहि पुर बसि पुनि कौनि भलाई
आवत कपि रावण सुनि पावा॥ दूत पठै निज सभा बोलावा॥
दशमुख बैठि दीख कपि आई॥ सहित तहँ सजनु गज गिरि राई॥
सुर मुनि असुर नाग गंधर्वा॥ चितवत तेहि भृकुटी दिशि सर्वा॥
हरि लखि उठे सकल इक बारा॥ बोला तब रिस करि अनिहारा॥

छप्पै पढ़े न कौ बिधि जिन्हें शंभु कत दरशन देवै। जीव करै कत सोर धर्म कौ अब धान सेवै॥ है न दूरि दिनेश देव ऋषि स्वर लय गावै। पवन सहित कुबेर बेर करि कौं नित आवै॥

चंदन बोले मंद मति मातलि सभान यह अहै। बैठि जाहु
गे बैठि सब तब रावण कपि ते कहै॥ रे वानर तू कौन दूत ह-
म रघुपति केरे। दूत आयो केहि हेत अहं रक्षा हित तेरे॥
कौन विपति सठ मोहिं शत्रु सिर पर प्रभु आये। ईश कोपि
रघुनाथ जासु तुम तिय हरि ल्याये॥ कौन कहत हनुमान
की जेहि तेरी लंका दही॥ करुणा सिंधु सर्वज्ञ सो सुनि-
व्याकुल है यों कही॥ जाय जाय कोइ जाय धाय रावणै सु
नावै। जेहि सिय देहि बताइ रंक कर जिउ बचि जावै॥ मु-
नि बोले सब सुभट नाथ जो हम चलि जैहैं। उजुर करौं क-
छु शत्रु ताहि बिन वधे न ऐहैं॥ तब प्रभु नहिं पठयो तिन्हैं॥
मोहिं कह्यो लखि साधु सुनि। मोरेहु मन आई दया निज
पितु कर तोहि मित्र गुनि॥ ताते आयों तात बात अब मा-
नहुं मेरी। जाते तव भल होइ बंचै सब रै अत तेरी॥ श्री मं-
द महिप सुभाव जान अथवा बिन जानेहु। हरि आन्यो ज-
गदम्ब आदि भल यहै न मानेहु॥ सो जस भा तस भा अज-
हुं सीते लै निज नारि सुत। जाहु शरण श्री राम के मिटिहैं।
सब अपराध उत। रे वानर रहु चुप्प बादि बक वा द-
न ठानै॥ विश्व विदित तै मोर अभे पर भाव न जानै। सुर-
नर मुनि पशु नाग जीति सब निज बस कीन्ह्यो। शिवै दियो
सिर स्वकर गिरिहि कंदुक इव लीन्ह्यो॥ अस मैं पुनि धा-
ता सुभट जेहि देखत दुनिया दुरै। मेघनाद अस सुवन जा-
महि आन्यो सुर पति धुरै॥ कह अंगद सो सत्य अहै ऐसब-
ल तोरा। पर नहिं राघव साथ सिंह हित जिमि गज जोरा॥
जे जे भे प्रति कूल परी नहिं किसी कि पूरी। सठ ताड़का सुबा-
हु मिले खर दूषण धूरी। विश्व सुभट बल शंभु धनु हरि-

बैठ्यो तेहि धरि दलो। ताको मिलि तजि मान मद जो चाहै आपन भलो॥ रेसट कट मम सरिस अहै को सुभट अनाी। सो कहु को तव पिता बालि कपि नाथ बिचारी॥ रहा रहा कपि रहा भले कहु है सो नीके। कछु दिन में तहँ जाइ कुशल पूछ्यो निज जीके। राम बिमुख कर जौन फल होत सो सब नीके पढ़ी। जानि बूझि बातें गढ़ल रदन मोत तव शिर चढ़ी॥

दो० मरम बचन युवराज के सुनि रावण रिसरोंकि॥
बोला सुख सुर भेद हित अधम सुकरमहिँयोंकि॥

छप्पै हे अंगद बल बन्त बालि सुत तोही आही। तव सम जोके पुत्र तासु ऐसी गति चाही॥ जन्मत क्यों नहिं मर्यो बालिकर नाम धरायो। जेहि डार्यो पितु मारि तासु शठ दूत कहायो॥ अबते मम दल ले सकल कपि तुव करू निज राज चलि। हनिरन भलसु सुशत्रु ये आठ आठ दिशि देहु बलि॥ कहु अंगद रे नीच मीचबस मति बढ़ि बोले। मम मन ठानत भेद पवन ते गिरि कहु डोले॥ जासु भृत्य ब्रह्मादि तासु हम हैं करि दाशा॥ बैरि दीन कुल कहसि अपहसिते निशिचर खाशा॥ तेहि कछु करत बिचार नहिं सो फल पैहै सपदि बरु। जावत आवत अवधि नहिं तावत मावत सोइ करु॥ रेरे कपि जगमाहिं मोहिं को हय फलदाई। लोकपाल यम काल नमत मोको नित आई॥ चहौं जाहि नृप करौं चहौं तेहि रंक बनावौं। उजुर न करता कोइ बहुत का तोहि सुनावौं॥ कहु अंगद ते अजित अस सो रावण जीरे दियो। जदप सहस भुज बालि बलि अयध नृपन जेहि दुख दियो॥ सुनि अंगद के बचन मूढ़ लज्जित है बोला। बालपने

की बाल गाल तव निरवस्त्र होला ॥ कौशल्ल नृप सब जीनि प्रथम अपने बश को हो। जबते भये दलीप छाड़ि तब नेकर दीहो ॥ ताहित जे कछु घटि गयो भयो न मन में एक तिल। बिदित बरेहु शिर शिवहि पाव गिरि करि धायो यथा शिल ॥ कह अंगद का भयो शीश जो निज कर काटे। बाजीगर बहु करे बेढि कौड़ी हित हाटे ॥ कहा भयो गिरि लयो भालु कपि धारे डोले। तहौं न पायो सुयशु आजु रोउना सब बोले ॥ कहा भयो सब जग जयो भयो न जो रघुनाथ जन। तो सब जानो स्वप्न सम अवनि रवनि सुत धाम धन ॥ कह रावण है सिराम दास तुमहीं जो भयऊ। दिहिनि काल मुख आइ लाभया में कालयऊ ॥ तीन लोक पर लोक शोक सब तन के नाशे। मिलिहैं तो तव बियत जियत जब जाव इहाँ से ॥ तहूँ ऊ तब सुग्रीव रिपु तासु विभीषण केर में। अपर कीश रवहें असुर ऐहैं नप सी धर में ॥ कह अंगद रे चोर बालि जिन इक सर मारा ॥ भृगुपति कर बल दर्प सर्प लीले संहारा ॥ खर दूषण त्रिशिरादि दनुज यदि बचि न भागे। तोरि चाप सिय बरी सकल भूपन के आगे ॥ यस्य अनुग इक लंक दहि चतुर अन्स तव भट दले। तिनसों ते लरिहै कहा गाल मारि ले चहु भले ॥ कह रावण जो अहै सबल अस स्वामि तुमारा। तो पठवत केहि हेत बसीठी बारे बारा ॥ करहि आइ कलि कर्म धर्म जो क्षत्रिन को है ॥ रिपु ते ठानत प्रीति लाज नहिं लागत जो है ॥ मन कद राइ तो जाइ फिरि भागे को नहिं हम हने। यदि आवे जो मोत बस सकल कौन पन की बने ॥

दो० पाथि समुद्र बाँधे कहा अभै पे भुजबीश ॥
 कहै ननाघनहार कोउ सुनि बोल्यो पुनि कीश ॥

कुण्डलिया कारण ज्ञान अज्ञान का बल निरबलक-
र अन्त। कारज ते खुलिजात जिमि नारि कपट सुत पंथ॥
नारि कपट सुत पंथ तुम्हें हम तबहीं जान्यौं। जब धरि ता-
पस रूप विपिनि सिय ते छल ठान्यो॥ ठान्यो लेखा गृहप
गयो धनु रेखा पारण। आयों मैंन बसीठ राम पठयो यहि कारण॥
छप्पै बोले कपि सब आजु चलो प्रभु शत्रुहि मारी। कह
हरि तेहि बध किहे कौन होइ यश भारी॥ जिमि मृग पति ह-
ति भेष शेष सब खप थिर लीन्हें। तिमि लघुता लघु दान
ज्ञान मूरख कहँ दीन्हे॥ यद्यपि यह जानत तदपि छत्रि
जाति कर रोष अपति॥ ताते अबहूँ दीन है सीते ले मिलु
मन्द मति॥ कह रावण नृप सुवन संग सब कीश लवार।
प्रथमें आवा एक झूँठ ही जाय पुकार। हमहीं दीन छुड़ाइ
भीर में भख्यौ अक्ष सुत। लागि गई गृह आगि काहिसि मैं
कीन काम उत॥ तैसे तोहू नरन की करत बड़ाई कूरगति॥
मोको जानत छोट करि विश्व विदित जो सूर सति॥ कह अं-
गद मति मन्द छन्द रत बोलु विचारी। कल्प विटप सम वि-
टप सकल सीता सम नारी॥ चिन्ता मणि पाषाण सरित
शर स्वान समाना। अभै दान विज्ञान सरिस लौकिक कर
ज्ञाना॥ पगली बातें अपकनि तब अस मन होत हमार ह-
रि। तोहि सहित सब लंक लैबोरौं उदधि मझार परि॥

कुण्डलिया सोचु न शालत साधु फिरि राज करी के-
हि भौंन। मोहि जियत किमि होइ नृप तोहि जियन कहँ कौ-
न॥ तोहि जियत कहँ कौन काम बस अजसी मूढ़ा। जीव-
न मृतक समान सरुज हरि विमुख लति बूढ़ा॥ तव शोणित
के भूषित पुनि रघुपति के नाराच। तेहि ते राखत रोकि -

रिस नाहित बन त्यों साँच ॥
छप्पै कह रावण जो होत हिरस यहि विधि बलतेरे । तो-
कत कर त्यों आदु बेराई पितु ऊपरि केरे ॥ करत मातु संग
भोग सूर सुत सो तप जाने । मरत नशठ विषखादु बात ह
मत्त बाढ़ि हाने ॥ नरबन रन की कौन गति तीनि लोक मि-
लि जो चढ़ै । करौं कमर मन सुख तभू कभू न पग पीछे प-
रै ॥ तब अंगद करि कोप पटकि दोउ भुज महि दीन्हे । गि-
रा अधर मुख भट मुकुट कर में युति लीन्हे ॥ प्रेरे प्रभु के य-
स धरे पवन जमहि आगे । भूरि भानु सम तेज तरकि कपि
देखन लागे ॥ राम बिभीषण के शिरसि भूषित किये सवां-
रि तिन । देखि देव बोले विमल जय जानकि पति मराल हि-
त ॥ तब तम चर पति तमकि कह्यो धरि धरि हरि खाहू । मि-
लि मारो दोउ बंधु बंक कपि कल मत जाहू ॥ अब नद नीति
बिचारि बचन सुनि रोसन कीन्हा । आखिर चढ़्यो कपार अ-
धिक अधमैं सुख दीन्हा ॥ जिनबल बाढ़त बलकि बलति-
नके अहिं न अलपतन । पर तिय पर धन पर अहित क-
रत डरत जो छाम छल ॥
कुण्डलिया तब अंगद कह चरण मम जो कोइ देवै
टारि । फिरें राम निज धाम में जाहुँ जानकिहि हारि ॥ जाहुँ
जानकी हारि सुनत घन नादिक योधा । लगे उठावन भूरि
भूरि बल करि करि क्रोधा ॥ डग मगात महि सुतल नभ
उदर सिंधु सुर बिकल सब । बालि बली के सुवन कर प-
ग नहिं हाल्यो नेक तब ॥
छप्पै लखि रावण हिय हारि आपु उठि कपिहि प्रचार्यो ।
चरण छुवत तेहि देखि बचन युवराज उचार्यो ॥ मम पद

पैरन ठीक गहे बिन हरि पद जाई । सुनि सिंहासन सपदि-
बैठ मन माहिं लजाई ॥ कहिसि कौन पतनेहु से धेयो नहिं
डारत खाहु खर । हँसि कपि कुन पगहाइ निज कहि कै च-
ल्यौ उडाइ ऽपर ॥

सो० दीरघ एक प्रसाद पर पद परसत पतेहुँ सोउ ॥
बहुरि चल्यौ करि नाद प्रभु पद नायो आइ शिर ॥

दो० लखि बोले रघुनाथ हँसि तात कियेहु भल काम ॥
कह ऽंगद मम मान नहिं तव प्रभाव सब राम ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मल ऽागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ
दास राम सनेही कृत ऽंगद रावण सम्वादव-
र्णनो नाम पंच विंशो ऽध्यायः २५ ॥

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि ॥
बरणो मानस मत कछुक कोकिल कहनि बखानि ॥
इहां दशानन ऽभै निशि निज चित उर धारवार ॥
लागे निरखन निर्तकी कौतुक करें ऽपार ॥
राम लखण कपि भालु सब हँसे समुझि ऽभिमान ॥
साहि न सके सुग्रीव बिन बूझे कीन पयान ॥
दश योजन कर बीच नहँ पहुंचे एक कुलाँच ॥
सिंहासन ते ऽवनि पर पटको मारि तमाच ॥
गिरा न बाँचे सभरि कै भिरा क्रोध करि सोउ ॥
कर पद मुष्टिक पेंच फिर निज निज मारे दोउ ॥
यहि विधि बाजे जाम भरि पर कोउ सका न हारि ॥
लाग्यो माया करण तब कपिपति चले बिचारि ॥

चौ० इहां न प्रभु सुग्रीवै देखा । भये धाव बस साधि विशेखा ।
इतने में सो पहुंचो ऽाई । बूझे ते सब बात जनाई ॥ ॥ ॥

कह प्रभु अस अधि पै नहिं चाहीं ॥ सो कछु होत रहत गहि काहीं
हम सिय लय का कर तनु ताना । देंतनु त्यागि तुरत निज गाता
सुनि नासत सब कुटुम्ब हमारा ॥ नाथ कृपा को भारन हारा ॥
अस कहि पाइ रजायसु सोये ॥ उठि प्रभात पुनि हरिपद जोये
दुनिया दिन करि कटक बिचारा ॥ लंका घेरी चारिउ द्वारा ॥
पूरब दिशि नल नील बिराजा ॥ दक्षिण सेन सहित युवराजा
पश्चिम पवन पुत्र बल धामा ॥ उत्तर रहे अनुज युत रामा ॥ ॥
मध्य सुकंठ माह संग योधा ॥ चहुं दिशि लेत बिभीषण सोधा
यहि बिधि पुर निरोध सुनि रावण । चहुं दिसि निज भट लाग पठावन
प्राची दिशा प्रहस्त पठावा ॥ जाम्या द्वार महोदर आवा ॥
मेघनाद दिसि गयो प्रतीचा ॥ रहा दशानन द्वार उदीचा ॥ ॥
बिरूपाक्ष तिष्ठा मधि देशा । नारंतक चहुं ओर प्रवेशा ॥ ॥
यहि बिधि राखि सबन ते बोला ॥ गहि गहि खाउ भालु कपि लोला
दो० भले नाथ कहि हाथ गहि परसु भिंड असि साग ॥
तोमर मुगदर सूल सब धाये दै दै बाग ॥ ॥
बाजे बाजन युद्ध के सुनि भट गने न बोध ॥
आवत तमचर चाहि कै धाये कपि करि क्रोध ॥

गीतिका छं० करि क्रोध धाये भालु कपि ग-
हि बिटप परवत अन गने । दोउ ओर ते लागे चला
वन अस्त्र शस्त्रादिक घने ॥ कोउ गिरत कोउ उ-
ठि भिरत कोउ पुर फिरत कोउ लल कारई ॥ को
उ डुरत कोउ भट मुरत नहिं कोउ हटत कोउ चढ़ि
मारई ॥ यक साथ सब रघुनाथ बल पल बंग गढ़-
पर चढ़ि गये । बिकलाइ असुर निकाय मर्दै अपर
नदि भागत भये ॥ पुर परेउ हाहाकार बिपुल कुमार बनित

रोवहीं। दूरि देहि गारी दश मुखें अव जासु हम दुख ओवहीं॥ दि-
शि शीश निज दल बिचल लखि सबते कहिसि गोहराइके।
घर आइ हैं जो भागि सो मम हाथ मारा जाइ है॥ सुनि सु-
भट मानि गलानि घूमे जानि बध दोउ वीर ते। करि युद्ध की-
न्हे चामित बानर भागि चले गढ़ घोर ते॥ एक एक दिति-
सुत दाबि कूदे ताहि नीचे राखिके। बिन आशा कारि हरि धी-
र बोले बचे आरति भाखिके॥ हनुमान पश्चिम वीर सुनि
घननाद के पग मारेहू। रथ सूत हति तेहि बिकल कीपुन-
नि लंक आइ प्रचारेहू॥ इत कूदि आयो बालि बच्च मिलि
उभै रावण गृह गये। लागि दहावन भौन जहँ तहँ राम गु-
ण गावत भये॥ कपि खेल कारि डर वाइ राम कहाइ निन्हे
निवारेहू। कूदे बहुरि रिपु सयन महँ अगणित निशा-
चर मारेहू॥ खरभरि परी सब राम तमचर बाम धीर
धुनि यों कहें। उतपात के घर कीश दोऊ आजु घर आये
अहैं॥ केत नेक खग गहि पटकि रावण निकट दीन चला
इके। केतने फिके प्रभु पास गति तेहि देत राम बजाइ के॥
निशि जानि आय नाथ पहँ दोउ देखि प्रभु बिन श्रम करे।
हनुमान अंगद गये थल सुनि भालु मर्कट सब फिरे॥ सुनि
रोष धाइ प्रदोष चल धाये असुर जय बोलि के। कपि देखि
भिरे प्रचारि धुनि सब चले निशचर डोलि के॥ निज हारि ल-
खि अति काय आदिक अनिप निज माया रनी। भये नि-
सिखि में अंधियार सूझन हाथ भागी कपि अनी। कहुँ वा-
र ते भग मिलत नहिं कच रुधिर बरषत बालुका। लखि
राम मार्यो बिसिख एक मिटि गई माया मालुका॥ कपि गी-
रू पेखि प्रतिस्त पलटे बहुरि रिपु भागत भये। तब प्रमित

आये राम यहं पग परत सबके दुख गये ॥ यहि भाँति बासर आठ निज निज घाट कपि कीनप लरे । तब कही रावण सचिव ते कस करिय दल बहु मर मरे ॥ सुनि माल्यवंत सुमंत्र बोलेहु आपु जबते सिय हरी । तबते कियो बहु काल एकहु तात नहिं पूरी परी ॥ अबते समुझि भल ज्ञान किहिं गहि पाइ प्रभु कहँ दीजिये । भये मूढ़ मारहु तोहि का पर बैट मुख करि लीजिये ॥ कछु रीति पुछियत नाहि सो शठ अधिक भाँति देखावई । जिमि कहै कोइ गिरि मेरु ते भुकि जाहु आँधी आवई ॥ तेहि तुरत जान्यो काल वश रस नाहि उठि घरका गयो । तब मेघनाद सदर्प सन्मुख आइ श्रम बोलत भयो ॥ देख्यो पराक्रम काल्हि मम बहु आनुका निज मुख भनो । सुत वचन सुनि हरषान मन रणसूर सुनि करखा मनो ॥ उठि प्रात नौमी दिवस रथ चढ़ि मुकुत कपि दल आयहू । कहँ राम कहँ सौमित्र कहँ हनुमान कहँ कच जायहू ॥ सुनि भालु कपि धाये कुधर गहि देखि सो मारन लगा । लखि तासु बाना वरी सब अकुलाइ मर्कट दल भगा ॥ तब भिरे लषण प्रचारि बाणन मारि तेहि व्याकुल किया । जब भयो बिनरथ सूत आनिसि मारि दल मोको लियो ॥ तब ब्रह्मदत्त प्रचंड शक्ती लषण के हिय दे हनी । महि मुरछि गिरे अनंत रहा उठाइ करि माया घनी ॥ किमि उठे जगदाधार लखि हनुमान मुष्टिक मारहू । पुनि लात मारि अचेत करि धरि लंक ऊपर डारहू ॥ निशि जानि तब हनुमान शेषहि लादि प्रभु पहँ लायहू ॥ लखि राम हृदय लगाइ भ्रातहि विरह वचन सुनायहू ॥ हा ईश जगनन दीश मैं इक पेत तैं विरचा रहै । अट भांति भायप मित्र गुननि

चढ़ाइ अब बोरा चहे ॥ हा तात तजि पितु मातु बनमम बिपति आइ बटायहू । तिन साथ हों सुर लोक लोंहँसि प्राण नाहिं पठायहू ॥ निज कर्म निज कर मुनि ते तुमतान सब सुकृती भये। मैं राखि तुम बिन देह हीरक नाहिं सिरूप यश लए ॥ अस समुझि परत कठोर ता मम हृदयते कुलिसे भई ॥ जो समुझि आप सनेह तुरते हलकि हर जन है गई ॥ पितु मरण भामिनि हरण खग बध दाहिन भुजा गवायहू । सब भाँति अपने बंध सुचि मैं कालि मामेंलायहू ॥ जिन तुम्हें सौंप्यो मोहिं तिन सों कहा कहि हों जाइ के । पिय बंधु खोयो बाम हित नेहि सक्यौं नाहीं लाइ के ॥ कपि भालु जैहैं गिरिगुफनतब संग मोको सोचहे । हैं हे विभीषण की कवनि गति यही बड़ मोहिं शोच हे॥ दुख देखि सकत नरह्यो मम अब हेत केहि करुना तजी । जेहि देत नहिं उठि बंध बीरन कौन बल धनुशर सजी ॥ धन धाम सुत तिय कुटम्ब जग है जात पुनि पुनि आवही । पितु मातु सोदर जन्मभरि नहिं मिलत जबते जावही ॥ प्रभु बचन नर अनुहारि सुनि कपि भालु सब हिय हारे हू । तब रीछ पति हनुमान कहें तेहि समय जानि प्रचारेहू ॥ + ॥ + ॥ +

चौ० कह हनुमंत जोरि युग हाथा ॥ लषण शोच जनि कीजे नाथा
कहो चन्द्र मैं पट इव गारी ॥ अबहीं देहुं अमी मुख डारी ।
कहो बिबुध बैद गहि आनो ॥ मोन मारि सबके दुख भानो
कहो फारि नभ रविहि निकारौं ॥ रिपुलेहि द्वार राहु बैठारों ॥
कहो ब्रह्म हरि हर का आनी ॥ अमर अमर बोलवावों बानी
कहो पताल जाइ हति नागा ॥ आनौं अमी कुराड यहि जागा
कहो देहुं निज देहै त्यागी ॥ अबहीं उठौं लषण घट जागी

दो० जो कछु तव मन में रुचै सो मोहिं आयसु होइ॥
नाथ सपथ करा में करौं प्रभु प्रताप बल सोइ॥
पवन तनै के बचन सुन सहित राम कपि भाल॥
उठे जागि जिमि मंत्र सुनि सर्प ग्रसित द्रुम जाल॥
बोले श्रीपति सत्य सुत सब लायक तुम आहु॥
चाही वैद सुखेन है अरिपुर आनन जाहु॥
पहुँचे तुरत बिचारि तेहि ल्याये सदन समेत॥
तासु बचन सुनि पुनि चले शीघ्र सजीवन हेत॥
कालनेम मग मारिकै सब गरा साठि हजार॥
रोकत लूम लपेटि सोइ देखा जाइ पहार॥
देखी जहँ तहँ औषधी तब मन माँझ बिसूरि॥
लीले चले उठाइ गिरि दलि दश सुख भट भूरि॥
किधौं अपत्र पलास बन किधौं प्रभात लखाइ॥
छोड़ि शम्भु गरा बहुरि मग दर्यो अवधपर आइ॥
चौ० देखि भरत मन असुर बिचारा॥ बिनु फर बान हृदय महँ मारा॥
कपि महि गिरत राम मुख भाषा॥ पवन साधि द्रोणाचल राखा॥
तेज तासु पुर गयो समाई॥ ज्यों सरिता सागर महँ जाई॥
दौरि भरत गहि हृदय लगावा॥ जागत जब तब बिलखि सुनावा॥
जो रघुपति पद प्रीति हमारी॥ बहुरि होइ अनकूल खरारी॥
तो कपि होउ बिगत श्रम पीरा॥ सुनि उठि बैठ राम कहि बीरा॥
भरत रिपुहने लखि भ्रम छायो॥ का घर राम लषरा फिरि आयो॥
पुनि पहिचानि पुलकि शिर नावा॥ पूछा सब बिरतान्त सुनावा॥
व्याकुल ह्वै बोले धृग हमहीं॥ प्रभु के काज न आयौं कबहीं॥
कुसमय जानि कह्यो धरि धीरा॥ चढ़ि सर सपदि जाहु प्रभु तीरा॥
सुनि सह गर्व बैठ सर जबहीं॥ सुमन समान उठायो तबहीं॥

देखि प्रभाव उतारि कपि परेऊ ॥ शीघ्र नवाइ प्रशंसा करेऊ ॥
तब प्रताप उर धरि रघुबीरा ॥ जैहों अति लाघव प्रभु तीरा ॥
भले भरत कहि बोले ताता ॥ पाछे सुनि दुख पैहैं माता ॥ ॥
तेहि ते चलि दीजै समुझाई ॥ आइ भवन सब कथा सुनाई ॥
सुत घायल सुनि साधु सुमित्रहि ॥ भयो हरष अरु शोच विचित्रहि
बोली धन्य सुवन मम आजू ॥ जू भयो समर स्वामि के काजू ॥
पर इक कलंक होत बड़ि ताता ॥ कुसमय भये राम बिन भ्राता
पुनि सुभाय रिपुहनते कहेऊ ॥ जाहु तात तुम प्रभु पहँ रहेऊ ॥
सब विधि किह्यो भजन सोइ सच्चा ॥ नर तन को फल याही बच्चा
सुनत उठे मुद सहित प्रकासा ॥ विधिबस सुदर दरे जनु पासा

दो० अम्ब अनुज गति देखि मन मानी सबन गलानि ॥
बोली रघुपति मातु तब कपि ले धीरज आनि ॥
प्रथम भेंट कहि कह्यो इमि कह्यो करि न डर अम्ब ॥
लाल लक्षिमरा ते ललित लागत अहो कदम्ब ॥
बोले मारुत सुवन तब सकल धरहु मन धीर ॥
कुशल जानकी लषरा युत ऐहैं घर रघुबीर ॥
अस कहि चले समेत गिरि आये जहँ भगवन्त ॥
ओषधि कीन सुखेन उठि बैठे तुरत अनन्त ॥
कृपा सिंधु बंधुइ मिले मिट्यो सकल दुख भार ॥
मुदित भालु कपि जन लह्यो समर पयोनिधि पार ॥
भेंटि सचिव बूझन लगे बड़ दुख पायो तात ॥
कहत न छूत मेरे लग्यो पीर भई प्रभु गात ॥
होत पदिक के कान्ति जिमि दुख सुख लहे भुआर ॥
सुक मुक जानत पाठ करि अरथ पढ़ावन हार ॥
बिमल बचन सुनि शेष के कहन लगे सब बीर ॥

रामलषण की प्रीति को उपमा क्षीर न नीर॥
इति श्री विश्राम सागर सब मत सागर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत लक्ष्मण शक्ति राम विरह वर्णनो नाम षट्विंशोऽध्यायः २६॥

दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
बरणौं मानस मत कछुक सार रमायण जानि॥
चौ॰ पुनि ताही थल पवन कुमारा॥ धरि आये गिरिवेद अगारा
सुनि रावण मन परयो खभारा॥ डारन लगे कपि चारहु द्वारा॥
मेघनाद पुनि रथ चढ़ि आवा॥ बरषि बान कपिदल बिचलावा
दश हजार बिशिष सबन के मारे॥ जहँ तहँ भट कहरत हैं डारे
पुनि विधि बचन लागि दोउ भाई॥ नाग फाँस ते लीन बंधाई॥
मुदित पिता ढिग लंक हि लावा। रावण देखि परम सुख पावा।
बिबिधि प्रशंसा करि सुत केरी॥ सीतहि जाइ देखाइसि टेरी।
प्रभु बन्धन लखि सिय अकुलानी॥ गरुड़े तब पठयो विधि ज्ञानी
आइ सकल पन्नग बिचलाये॥ पुनि दोउ बंधु कटक महँ लाये
अस्तुति करि पुनि रघुपति बवना॥ हरिपुर गये गुणात प्रभु रचना
इहाँ बिभीषण हनुमत दोऊ॥ सोधा दल अचेत सब कोऊ।
कह्यो बिभीषण मिच्छु पनेरे॥ है कछु चेत चलहु गे सेरे॥ ॥
जामवन्त तब बचन बखाना॥ कहो अहैं नीके हनुमाना॥ ॥
सुनि दनुजेश कह्यो धरि धीरे। पूछ्यो नहीं लषण रघुबीरे॥
तजि कपि पति युवराज समेता॥ हनुमाने बूझ्यो केहि हेता॥
जो होइ है जीवत हनुमंता॥ तो जानो सब जियत अनन्ता॥ ॥
जो कदापि गिरिगे हनुमानो॥ तो तुम मृतक सबन कहँ जानो
सुनि लंकेश परम सुख पावा॥ पवन तने चरणन शिर नावा॥
आयसु होइ करी सोइ बाता॥ लावहु चारि औषधी ताता॥ ॥

दो० एक दिसल्य करनी अहै युग सावरनी नाम ॥
तीसरि संजी वनि तुरत संधानी अभि राम ॥

चौ० सुनि मारुत सुत तुरते धाये ॥ आनि जरी सब सुभट जिआये
भये सबल सब गाजन लागे ॥ देखि राम लछमन अनुरागे ॥
हरि दिन चढ़ि धुम राक्ष सुरारी ॥ आइ कीन्हि अति संगर भारी ॥
भये विकल कपि भालु अपारा ॥ दुवा दसी दिन पवन कुमारा
आवा बहुरि अकंपन योधा ॥ महा समर कीन्हिस सह क्रोधा ।
तेरसि दिन गंजेहु युवराजा ॥ बहुरि प्रहस्त आइ रण गाजा ।
किहिसि मारि सर जरजर गाता ॥ परिवा दिन तेहि नील निपाता
तीनि दिवस तव लरा करीशा ॥ पंचम्या दिन सुनि दशग्रीशा
कुम्भ करन कहँ आनि जगावा ॥ नाना विधि करि कुटिल उपावा
पुनि बहु भाँति कराइसि भोजन ॥ बोला सो निज कहो परोजन
कह रावण है मानुष आये ॥ प्रानु समुझि हम तिय हरि लाये
सेतु बाँधि उतरे यहि पारा ॥ सुभट समूह किहिनि संहारा ॥
मिला विभीषण जाइ अयाना ॥ मोहिं तोहि नहि नेकु डेराना ॥
कपिन सहित तेहि भक्षण कीजे ॥ सहित कुटुम्ब मोहिं सुख दीजे
सुनि घट करन कह्यो सुरसाली ॥ प्रथम पूँछि किन किहेउ कुचाली
यक दिन बात जनाई थोरी ॥ प्रकटी नाहिं सीता की चोरी ॥ ॥
त्रिभुवन पति सों बैर बढ़ाई ॥ पुनि सुख चहत कहा अब भाई ।
ताते त्यागि कुटिल पन येहू ॥ जग दम्बा लै रामहिं देहू ॥ ॥
जेहि ते करो सकल सुख भेरी ॥ सुनि बोला रावण मुख हेरी ॥
किती करी चलि संगर भारी ॥ किती रहो पुनि सोइ सभारी ॥ ॥
नाहित भीरु विभीषण जैसे ॥ परो पाइ रिपु पायन तैसे ॥ ॥
मैं निज बल बिरोध यह ठाना ॥ करिहौं तिमि सब कर कल्याना ।
सुनि घट करन काल कृत जानी ॥ प्रभु दरशन हित मन में आनी

अनुजै भेंटि समोद सिधावा॥ लखि रावण बहु सुरा पियावा
करि मद पान भयो मतवारा। चला कहत कहँ भूपकुमारा
हाय हाय करि खेचर भागे॥ लखि तेहि मिले विभीषण आगे
चरण परसि निज नाम बतावा॥ सुनि सराहि प्रभु पास पठावा
कहिनि नाइ रघुपति पद माथा॥ कुम्भकर्ण यह आवत नाथा
रावण बंधु बिपुल बल लाहू॥ जो त्रिभुवन में गनत न काहू॥
उड़ै अकास ब्योम चर मारै॥ धसै पताल फनिक फन फारै
मणि उतारि लावत है कैसे॥ उपवन ते पुहपन को जैसे॥
बिनही प्रलै प्रलै करि देतो॥ जो षट मास न सूतत येतो॥
पर प्रभु भृकुटी कुटिल निहारी॥ लोप होत भव का तम भारी
सुनि कपि भालु चले करि हूहा॥ डारिनि तेहि शिर शैल समूहा
सुमन सरिस बरषत जिय जानी॥ धावा मुख पसारि होउ पानी
कोटिन कपि चपिगे तरवाके॥ कोटिन कर समेटि मुख झोंके।
कोटिन श्रवण नाक मग मारी॥ निकसहिं जिमि बाबिन ते पाँखी
कोटिन दिशा विदिशा उड़ि भागे॥ कोटिन प्रभु के पाछे लागे।
कोटिन हनुमंतादिक बोले॥ कोटिन कुनपटु रावत डोले
कोटिन गये समुद महँ बूड़ी॥ कोटिन काटि चलाये मूड़ी
आगे लखि रघुनाथै पावा॥ करि प्रणाम मन बचन सुनावा

दो० नामें आहौं ताड़ुका नामें अहौं सुबाहु॥
नाहीं धनु मारीच मग नाहौं खर कपि नाहु॥
मैहौं रावन केर रिपु आइ करौ रन राम॥
जेहि चढ़ि आयेगर्व करि सो अब पूजो काम॥

चौ० सुनि सुग्रीव लात यक मारी॥ पकरि तिन्हैं पुर चला अचारी
लखि सब हनन लगे यक साथा॥ सीस पाद निकस्यो कपिनाथा
कर्ण नाक कर मुखते कारी॥ गयो राम पहँ प्रभु के आरी॥

चला रुधिर तब देखि लजाना॥ फिरि कपि निकर किहेसि बिनप्राना
हनो मान निज लूम लपेटी॥ डारिनि सिंधु मांझ जिमि फेंटी।
धावा तब करि क्रोध कराला॥ मारि कीस सब किहिसि बिहाला
नारद आइ कही असि बाता॥ बधउ बेगि प्रभु प्रोक्त बिधाता॥
खीझा नाइ जब कीन पयाना॥ तब हरि धनुष बान संधाना॥
मारे शायक बिपुल प्रचारी॥ धावा मुख पसारि गिरधारी॥
लखि राघो भुज काटि गिराई॥ लिहिसि बाम कर सोउ उड़ाई
बिन भुज गिरि मंदर सम धावा॥ शीस काटि प्रभु लंक बहावा
लुराड मुराड बिन चल्यो प्रचंडा॥ तब प्रभु काटि किये युग खंडा

दो० देखि देव बरषे सुमन हरषे मुनिन समेत॥
मुदित भालु कपि कटक मधि सोहे कृपा निकेत॥

चौ०—अनुज शोक लखि रावण शोचा॥ असन बसन तेहि भये असोचा
सेवहिं रजनि बनिता गुण ताके॥ चला महोदर लै भट बांके॥
कपि दल आइ समर अति ठाना॥ एका दिवस हता हनुमाना
फाल्गुण कृष्ण आदि दिन भोरा। चढ़ा नरंतक लै भट घोरा॥
नाना बिधि तेहि युद्ध मचावा॥ जाना कपिन काल निज आवा
हरिबल पाइ लरत तेहि चीन्हा॥ फनि दिन निधन अगनन कीन्हा
तब अति काय आय रन ठाना॥ अष्टम्या दिन भे गत प्राना॥
कुम्भकरण सुत कुंभ निकुंभा॥ आइ किहिनि दोउ युद्ध अरंभा
लरत लरत दिन पांच बिताये॥ तेरसि दिवस गये दोउ पाये
तब रावण सुत मक राक्षसि धावा॥ कपि दल दलतु लछमण पहं आवा
मारे अस्त्र शस्त्र भट नाना॥ कटे न बपु बिधि कर बर दाना
झपटि लछमण कहं निगलि सिधावा॥ मनहुं मयंकहि तुदन दुरावा
हाहाकार भयो दल भारी॥ निकसे लछमण उदर तेहि फारी॥
फाल्गुण शुक्ल प्रथम दिन जूझा॥ भा रावनै मोह यथा बूझा॥

मेघनाद लखि बचन सुनावा। केहि हित तुम अस खेद बढ़ावा
जब लग मैं जीवत सुत तोरा॥ तब लगि करहु राज्य बरजोरा
देखो आजु मोर संग्रामा। अस कहि चला दिव्य रथ नामा
एक अदृष्य पुनि निसि नभ गामी। आवा जहं भालु कपि स्वामी
गर्ज्जा प्रलय पयोद समाना। सुनि कटु शब्द सबन भय माना
अस्त्र शस्त्र पुनि बरषन लागा। मघा नखत सम असि सर सांगा
गहि गिरि तरु कपि जाहिं अकासा। मिलै न कोउ तब फिरैं उदासा
भये बिकल कपि भागन लागे। जहं जोइ मग मिले न आगे।
अंगद हनोमान नल नीला॥ शेष सुकंठ विभीषण कीन्हा॥
औरौ दुर्द्द रादि जे बीरा॥ मारि सबन कह किहिसि अधीरा
पुनि अति समर राम ते ठाना। नाग फांस बस भै भगवाना।
जासु नाम भवबंधन हर्त्ता॥ सो कि होइ पर बस जस कर्त्ता।
समय समान चरित प्रभु करहीं। अस बिचारि बुध भर्म न परहीं
देखा सबन बिकल धननादा। तब भा प्रगट कहत दुर्वादा॥
देखि नर अपति चले प्रचारी। तब तेहि तीब्र शक्ति तकि मारी
जामवन्त सोइ मारि गिरावा। चरण पकरि पुनि लंक पठावा
गरुड़ आइ प्रभु बंधन काटा। भे सब सबल राम जब डाटा।
गहि गहि गिरि गुरु पादप धाये। मारि सकल निश्चर बिचलाये
मेघनाद मुरछा ते जागा॥ जाय अजैमख करन सो लागा

दो॰ जानि विभीषण प्रभु सों कह्यो जोरि युग पानि॥
इन्द्रजीत निकुम्भ लै गा मख हित रिसि आनि॥

सो॰ जब लगि होइ न सिद्धि तब तक ताको मारि अपु।
पाछे पाइ प्रसिद्धि बेगि न जाइहि जीति रिपु॥

चौ॰ सुनि प्रभु कहा लषण ते तबहीं। जाहु तात लै कपि दल सबही
मख बिध्वन्सि पुनि मारेहु ताही। भलै नाथ तव आयसु आही

अस कहि साजि धनुसर तूनीरा॥ चले संग हनुमत युत वीरा।
आवहिं कपिन अंग अव कीन्हा॥ मारत लखि धनुही गहि लीन्हा
हुं सर जाम यन्त्र के छेदे॥ तीनि बाण अंगद के भेदे॥ ॥
चारि विभीषण अंगनि पारे॥ पांच विशिख पवनज के मारे।
एक एक सर सबके दयऊ॥ पुनि लक्ष्मण पर छोड़त भयऊ
सकल अनंत काटि महि डारे॥ पुनि निज बाण कराल पवारे
भासन लखि सर भयो अलोपा॥ छांड़ेसि बहुरि शूल करि कोपा
तुरत कीन्ह सत खण्ड अहीशा॥ तब एक गिरि गहि डारिसि शीशा
रुआमग करि सोऊ महि पारा॥ अस्त्र शस्त्र पुनि तजेसि अपारा
सो तब लक्ष्मण निवारत भयऊ॥ यहि विधि बीति मास दिन गयऊ
महा युद्ध लखि सुर मुनि सारे॥ हर्ष शोच बस होइ विचारे॥
तब लक्ष्मण करि कोप कराला॥ छांड़ेउ एक नराच बिशाला
जासहि शिर भुज काटेउ तासू॥ गर्जत पुनि मारेउ अस आसू॥
राम लक्ष्मण कहि सह अनुरागा॥ तेरसि दिवस भयो तन त्यागा
सुनि बोले अंगद हनुमाना॥ धन्य मातु तव तोहि बलवाना
कटि तनु परयो समर महि तामा॥ दहिनी भुजा गई तेहि धामा
शिर लै कीश राम पहँ आये॥ अनुजहि लखि प्रभु हृदय लगाये
फेरि कमल कर छतहारी लीन्हा॥ बरषे देव सुमन जय कीन्हा
पुनि रघुपति कपि भालु बिलोके॥ भये सकल श्रम रहित बिशोके
अरि पुर मेघनाद की नारी॥ पति भुज लखि मन सुधो धारी॥
दीन्हि कलम खरिकर गहि लीन्ही॥ लक्ष्मण की कीरति लिखि दीन्ही
कोटि कलप जो योग कमावे॥ सो उन लक्ष्मण की पाम सरि पावें।
सुनत सखिन युत रोवन लागी॥ आजु दशानन भयो अभागी
करिहैं कीश मुदित पुर फेरी॥ छूटि बंदि सब देवन केरी॥ ॥
कोउ जय लैहै हमै का करना॥ जस्यो जगत जो आपन जरना।

अस कहि भुज पालकी चढाई ॥ आपु बैठि रावण पहँ आई ॥
सासु ससुर पद शीश नवाई ॥ रोदन करि सब कथा सुनाई ॥
जो पावों निजपति कर माथा ॥ तौ रचि चिता जरहुँ तेहि साथा ॥
मय तन यादि जहाँ तक रानी ॥ लगीं बिलाप करन दुख मानी ॥
सुनि दश मुख हू मुरछि महि परेऊ ॥ पुनि धरि धीर बचन अनुसरेऊ ॥
सुमुखि समुझि जिय करहु न शोका ॥ प्रकट नाम याको मृत लोका ॥
मातु भूमि पितु बीज बेसारा ॥ काल किसान जीव तृण भारा ॥
पालत पुनि लूटत सोइ खाई ॥ कौन कौन हित रोवै धाई ॥

दो० रह्यो न कोई रहैगो पुनि कछु जाइ न साथ ॥
धन्य भाग्य इन सबन के जो जूझे प्रभु हाथ ॥
सब सम जानन मोहि तू मैं हौं पति बलवान ॥
देखो कालिहि कपिन कर मेटि हौं जाइ गुमान ॥
बालि बिभीषण पवन बिधि ताप सनील कपीश ॥
इन सब शीशन सहित तव आनौ पति कर शीश ॥
बड़ बिमोह बस जानि तेहि कुछू न उत्तर दीन ॥
नारद के बर बचन तव मय जा बखान कीन ॥
ताते निज हित राम पहँ जाहु सकल तजि शंक ॥
होइ भूप धर मन्त्र जहँ तहँ कोउ रहे कि बंक ॥
बहरि रहत तहँ ससुर तव भयन कछू शिर नाइ ॥
चली यान चढि भवन युत पहुँची कपिदल जाइ ॥

सो० लखि हरषे कपि भालु । बिन श्रम पाई जानकी ॥
मिटा सकल जंजालु । भयो सुयश हम सबन कहँ ॥

चौ० यहि बिधि गई जहाँ रघुराई ॥ नख सिख लखि दोउ बंधु लोनाई ॥
कीन्हि दण्डवत बिनय समेता ॥ तब लंकेश कहा सब हेता ॥
सुनि कृपाल बोले अनुरागी ॥ जो भावै सो लीजै मागी ॥ ॥

कहौं देहु पति तोर जियाई ॥ भूजहु राज कल्पभरि जाई ॥
सुनि सुर मुनि कपि भालु डेराने ॥ बहुरि सुलोचनि वचन बखाने
कृपा सिंधु मैं दीख बिचारी ॥ यहि मरने ते जीवन खारी ॥ ॥
बिष बदले जो अम्मृत पावै ॥ लेइ फेरि सो मूढ़ कहावै ॥
ताते नाथ देहु पति शीशा ॥ दीन देवाइ तुरत जग दीशा ॥

दो० मस्तक पाइ हँसाइ तहँ लाई सागर पास ॥ ॥
भई सती पति सहित पुनि किहिस सत्य पुर वास ॥

इति श्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत मेघनाद बध और सुलोचना सती बरणो नाम सप्तविंशो ध्याय: २७

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा मुद दानि ॥
बरणों मानस मत कछुक सार रमायण जानि ॥
तेहि दिन भयो न समर कछु दश मुख शोचे लीन ॥
अहिरावण को याद करि आकर्षन जप कीन ॥

चौ० दंड चारि महँ सो तहँ आवा ॥ रावण लखि निज हाल सुनावा
सकल सैन कपि भालुन मारी ॥ तात रही यक आस तुम्हारी ।
सुनि बोला यह केतिक बाता ॥ जैहों लै पताल दोउ भ्राता ॥
देहों बलि कामद कहँ सोई ॥ जानेहु नभ प्रकाश जब होई
अस कहि बिरचि बिभीषण रूपा ॥ गयो जहाँ लछिमन सुर भूपा
सोवत लखि लै गगन उड़ाना ॥ दश मुख देखि सत्य तेहि जाना
यहि बिधि सो लै गयो पताला ॥ प्रभु बिन भे कपि भालु बेहाला
तब सब हाल बिभीषण काहा ॥ अहिरावण लैगा नर नाहा ।
दहत नाग पुर जो कोइ लावै ॥ सो सब को रे प्राण जियावै ॥
कह हनुमान तजहु सब शोका ॥ लैहों प्रभुहि ढूंढि तिहु लोका
चले खबरि मग खगते पाई ॥ छिन महँ अहिपुर पहुँचे जाई ॥

द्वारपाल मकरध्वज आढ़ा॥ तासु पूँछि तेहिं बाँध्यो गाढ़ा।
पुनि लघु बन देवी मठ गयऊ॥ हाँन हाँस लहे दानव भयऊ॥
तब तहँ बिकट रूप धरि लीन्हा॥ गे धामि पाँन सुतल थल दीन्हा
देखि सहित कुल हरषा राजा॥ प्रगटी देवि भना अब काजा
नाना बिधि मेवा पकवाना॥ आनि चढ़ावे पुरजन नाना॥
यावति वस्तु सकल कपि खाईं॥ पुनि बल हित आने मेउ आईं
बाजहिं बाजन गावहिं नारी॥ सुनि निश्चर सब होइ सुखारी॥
तब प्रभु ते बोले सब साईं॥ सुनि मेरो जो कोइ तुम्हरे होई॥
सुनि रघुपति तब कीन बखाना॥ यहि अवसर चहिय हनुमाना
मारन हित निश्चर सब ठाढ़े॥ जम समान कपि गर्जेहु गाढ़े।
निश्चर डरि अस कहत विशेषी॥ क्रोध कीन देवी नर देखी॥
बहुरि गर्जि कपि प्रभु अगटावा॥ दोउ भे यम दोउ कंध चढ़ावा
निज लंगूर कर कोट बनाई॥ अभिलै मारेहु खलसमुदाई
अहि रावरा शिर काटि कुमारा॥ देवी की आहुति में डारा॥
औरो असुर मिले ते मारे॥ पुनि ले प्रभु चलेहु लखि द्वारे
बिनै कीनि मकरध्वज भाये॥ राज देइ निज सेनहिं आये
लखि कपि भालु सुखी सब भयऊ॥ बूड़त मनहु थाह मिलि गयऊ
हनुमाने सब लोग सराहे॥ कह प्रभु इन बिन को मम आहे
बोले पवन तनै शिर नाई॥ आपु चहे तेहि देउ बड़ाई॥

दो० यहाँ दशानन दूत मुख सुनि अहिरावण नाश॥
एका दिन निज सैन लखि चढ़ा समर बिन त्रास॥
बाजहिं बाजन बिबिधि बिधि अस गुणा होइ अपार॥
गनहिं न एकहु गर्व बस महि सहि सकत न भार॥

चौ० निज निज नाथ केरि जै भाखी॥ धाये इत उत भट अभिलाखी
कपि कर मुक दल संगम भयऊ॥ जनु घनश्याम सेत मिलि गयऊ

गर्जहिं मनहुं बाजने बाजैं ॥ चमकहिं खड्ग छटासी राजैं।
बर्षहिं बान बूंद जनु भारी ॥ छूटे तोब गाज जनु पारीं ॥ ॥
भयो अंधेर उड़ी रज कूरा ॥ इन्द्र धनुष बहु लसै लंगूरा ॥
गिरहिं सुभट मंदिर हहराई ॥ श्रोनित सरित चली उमड़ाई।
भुज अहि कच्छप चर्म सोहावै ॥ कुंजर अश्व ग्राह द्युति पावै ॥
फिरत चक्र आवर्त अनेका ॥ उछरहिं शीश सूंसि टिगएका
भूषण भेक उपल सम रेनू ॥ धनुष तरंग बहै पट फेनू ॥ ॥
कर पद मीन जु केस सेवाला ॥ दोउ दल कूल बिटप रथ जाला।
बहु भट बहैं चढ़े खग नीचा ॥ जनु नेवार खेलहिं सरि बीचा।
खैंचे आंत गीध गहि तीरा ॥ बंशी मनहुं लगाई कीरा ॥ ॥
भूतरु प्रेत पिसाच पिसाची ॥ मंजहिं मुंडन जोगनी नाची ॥
बीर बिनोद लहैं सर देखी ॥ कायर त्यागहिं प्राण बिशेषी ॥
देखि कठिन कोपेहु हनुमाना ॥ मर्दन लगे निशाचर नाना।
गजते गज घोड़न ते घोरा ॥ खरते खर रथते रथ तोरा ॥ ॥
महिष ते महिष ऊंट ते ऊंटा ॥ पैदर ते पैदर दल कूटा ॥ ॥
कोटिन कर धरि लातन मारे ॥ कोटिन पटकि सिंधु महं डारे।
कोटिन हाथ पाय बिन कीन्हे ॥ कोटिन फेंकि गगन महं दीन्हे
हँसि प्रभु कहैं लषण ते हेरी ॥ देखउ लरनि पवन सुत केरी।
निज दल बिचल देखि दशशीशा ॥ धावा लै धनु सर भुज बीसा।
जहं तहं उड़े कीस भय पाये ॥ यथा पात बौंडर के आये ॥ ॥
अंगद हनुमदादि भट भारी ॥ लै लै गिरि मारै एक बारी ॥ ॥
फूटहिं पविसो मुंरे न नेका ॥ लाग निपातन कीस अनेका ॥
दीन्हिसि पूरि दशहु दिशि बाना ॥ भागत कतहुं न मिलै ठिकाना।
बिकल पुकारहिं जहं तहं ठाढ़े ॥ पाहि राम लछिमन दिन गाढ़े
सुनि लछिमन धनु बान सिधारा ॥ सरिस आइ सन्मुख ललकारा।

होउ सजग अब सुन दशभालू । पहुंचेउ आइ तोर मैं कालू ।
सुनि तेहि अस्त्र शस्त्र बहु मारे । सकल काटि सोमित्र निवारे
पुनि छांड़े निज बान अहीशा । सूत समेत भयो रथ खीशा ।
सत सत बिशिष दसो शिर मारे । मनहु चले बहु रुधिर पनारे
पुनि सत सर छाती महं दीन्हे । बीसहु भुज बरही सम कीन्हे
धावा बिकल क्रोध करि भारी । बिधि की दीनि सांगि तकि मारी
लागत उर लक्षिमन महि परेऊ । रहा उठाइ न नेकहु टरेऊ ॥
जेहि शिर रज सम भुवन अपारा । तेहि उठाइ किमि सके लबारा
देखि पवन सुत मुष्टिक हनेऊ । है अचेत अवनी ढनमनेऊ ।
प्रभु ले गयो जहां भगवाना । देखि दसानन अचरज माना

दो० चैत्र कृष्ण नौमी दिवस अनुजै लखि रघुबीर ॥
कहौं काल के काल तुम सुनत उठे रन धीर ॥
पुनि रिपु सन्मुख जाइ तेहि बिकल कीन सर मारि ॥
लखि अचेत निज नगर तब लेगा सूत निकारि ॥

चौ० भवन दीख जब रावण जागा । निज सुमंत्र कहं खोजन लागा
रे मति मन्द भीरु धृग तोहीं । रण ते बिमुख कराये मोहीं ।
अस कहि दशमी दिवस सचेता । लाग करन मख बिजै के हेता
सुनि प्रभु भट पठये बहु पासू । करहु विध्वंस जाइ मख जासू
अंगद हनुमदादि कपि बीरा । कौतुक हीं आये तेहि तीरा ॥
लखि लागे सब मारन लाता । उठे न सो स्वारथ मन राता ॥
तब कपि करन उपद्रव लागे । दिये छोरि हैगे मृग भागे ॥
फारे पट बितान घट फोरे । छत्र चमर बिञ्जन गहि तोरे ॥
लखि मदोदरि उठी रिसाई । दुरी चित्रशाला महं जाई ॥
अंगद हू घुसि गे तहं भूले ॥ ॥ विविधि चित्र पुतरी लखि भूले
धाइ धरें पुनि तजे निहारी । पावे किमि सुन्दरि बन चारी ॥

देखि हँसी सुर कन्या एका ॥ गहत बताइ सिनारि अनेका।
तेही देखाई रावण रानी ॥ असुर निकट लाये गहि पानी
भूषण बसन परे सब कूटी ॥ कामपुरी जनु शिव गण लूटी
आरत बचन पतिहि लखि कहई ॥ जे जस करे सो तस फल लहई
सीतहि दियो भूप दुख भारी। देखहु निरगति सो चुहमारी।
नारि बचन सुनि उठा रिसाई ॥ गये भागि कपि जहँ रघुराई

त्रिभङ्गी छं. गे भागि कपीशा तव दशशीशा गहि भुज बीसा धनु तीरा। संग सेन अपारा चलेउ जुझारा मद मतवारा रणधीरा॥ इन सुर प्रभु तीरा कह्यो अधीरा भेदहु पीरा बेगि भले। कटि कसि पट बाँधा धनु शर साँधा दलन प्रबाधा हेतु चले॥ लखि इंद्र अजाना स्यंदन आना पवन समाना देखि प्रभू। हरि दिन तेहि माहीं चढ़ि सब पाहीं कहो कि नाहीं नीक अभू॥ सुनि सब बन चारी भये सुखारी देखि मुरारी कोप ठन्यो॥ कहि बचन कठोरा घायक बोरा तजि बहु बोरा कीश हन्यो॥ है बिकल पराने सकल ठिकाने लखि अकुलाने बिसिरवभरे। तव राम सुजाना पावक बाना छाँड़े नाना सकल जरे॥ दशमुख दिशि दयऊ रथ बिनभयऊ दूसर लयऊ क्रोध जुतं। पुनि सर बर पाटे सब प्रभु काटे निष्ठुर डाँटे बालि सुतं॥ कटि कटि भट परहीं पुनि उठि लरहीं बल करि धरहीं यक खोले। कोटिन बिन माथा धावहिं साथा कह रघुनाथा सिर बोले॥ धरु धरु धरु मारू पकरि पछारू करहु अहारू कोउ नखवें। अति चंचल कीसा बध बन रीसा जो वागीसा भूलि रवे॥ धाये कपि भालू जनु बपु कालू मारि बेहालू असुकिये। नख उदर बिदारें आँत निकारें निज

गए डारें हर्ष हिये ॥ लखि रावण कोपा प्रभु रथ तोपा देखि अलोपा देव डरे । हय मारि गिराये राम उठाये सन्मुख धाये क्रोध किये ॥ कर खेउ सर दावा श्रुति तक आवा तब कर वावा यों बोला । भोजन हित हारू रहत अगारू समर पछारु क्यों डोला ॥ सुनि कहों जु आँहू पूछन जाहूं दश शिर दाहूं की एका । प्रभु सकल बलाये अस कहि धाये जाइ गिराये सिर तेका ॥ फिरि भये नवीने पुनि प्रभु बीने पुनि हरि दीन्हे पुनि काटे । पुनि पुनि इमि जामें राम गिरामें दस दिशि तामें भरि पाटे ॥ जब असुर तिसाई सांग चलाई लखि रघुराई आपु सही । चहि चल्यो विभीषण जहं रिपु तीखन वदन सुभी घन नीच गही । अस कहि लल कारा गदा प्रहारा लगत प्रहारा मरिस गिरा । मुख श्रव ननि दाहा श्रोणित बाहा उठि करि हाहा बहुरि भिरा ॥ मारे एक एके अस्त्र अनेके हरि बल छैके अमित लखा । पवनज तब धायो मारि गिरायो प्रभु दिग आयो राम सखा ॥ रावण हनुमाना मेरु समाना भिरत बहाना असुर ठने । नभ सुर मुनि हेरी दुनहुन केरी जय जय टेरी टेरि भने ॥ कपि भालु निहारे हनु मति हारे गिरि तरु धारे सब धाये । लखि निश्चर भूपा धरि बहु रूपा कीश अनूपा विचलाये ॥ भागत भट घेरहिं आतुर तेरहिं मुख में गेरहिं भुज बीशा । दुरि देव पराने बहुरि धुजाने रहे ठिकाने अज ईशा ॥ व्याकुल लखि बंदर हँसि कमुकंदर सब दस कन्धर नाश किये । पुनि एक निहारा मर्कट धारा धाइ अपारा असुर छिये ॥

दो० पुनि छाड़े निज बाण प्रभु काल सरिस वध हेत ॥

लागे काटन असुर के यथा हाथ तृण खेत ॥

सो० सात दिवस दिन राति। बाजेउ घंटा धनुक कर ॥
हरि पूजा की भाँति। भये सुभट संहार सब ॥

कुंडलिया घंटा की परमान अब सुनु जेहि संगर बीच। नाग अ-
युत दश लाख है रथी इंदु शत मीच। रथी इंदु शत मीच लहैं पैसह-
स कोटी। तब एक नटै कबंध कोटि पर खेचर चोटी॥ खेचर नाचहिं को-
टि बिना सिर के निह कंटा। तब राघो के धनुष केर बाजत इक घंटा॥

श्लोक नागा नाम युतं तुरंग नियुतं। साहं रथी नाबुदं ॥
पैदलानां दस कोटि सन्निपतने निर्तत कबंधारवो ॥
एवं कोटि कबंध निर्तन विधौ नृत्येत्तथा खेचर ॥
तेषां कोटिक निर्त्तने रघुपते कोदंड घंटारवः ॥
एवं सप्त दिनि स्थितं स्वर्गमृत्ते रसा तले ॥
भवेन्स्मृति भर्द नाथ राम रावण संगरे ॥

चौ० देखा सुख आपुहि जानि अकेला॥ लाग करन माया कर खेला॥
भूत पिशाच प्रेत बैताला॥ अमित जंतु प्रकटे तेहि काला॥
लीन्हे धनुष सिली मुख घोरे॥ मारु मारु धरु बोलहिं रोरे॥
निर्तहिं करहिं रुधिर कर पाना॥ गहे कपाल योगिनी नाना॥
मुख पसारि दौरें हम खावा॥ भागे कपि जहँ देखहिं दावा॥
ऊपर ते बरषैं बहु बालू॥ भये थकित सब मर्कट भालू॥
शेष सहित नवहैं हाय खरारी॥ सुनि प्रभु माया सकल नेवारी॥
देखि सुभट धाये करि हूहा॥ प्रकटे तेहि कपि भालु समूहा॥
सन्मुख चले बिटप गिरि धारी॥ देखि क्रोध बोले हिय हारी॥
सब मर्कट है गे रिपु घोरा॥ कौन कुशल जो बिधि घर फोरा॥
आपुहु आप लखै नहिं कोई॥ भागे अब कछु जीति न होई॥
बहुरि करी माया भगवाना॥ तब तेहि देखे लषण हनुमाना॥

लखिकपि भालुसकहि नहिं मारी॥ घेरेनि रामहि धनुहिं गिर धारी।
इरे देव कपि प्रभु हरषाने॥ पुनि समूह शायक संधाने॥॥
छोड़त रिपु शिर काटन लागे॥ जनु समूह शर ते खग भागे।
रहे पूरि नभ केतु समाना॥ छेदे निकर एक यक बाना॥॥
लोक लोक गिरि गिरि बन जहई॥ भयो राम रावण रण तहई॥
सुर नर नाग सबै अकुलाने॥ जाइ कहा कोउ सुखद ठिकाने
मारु मारु धरु धरु शिर बोलें॥ कालव्याल से खेदे डोलें॥
प्रभु काटत शिर बारहिं बारी॥ मनहुं अनार उड़ै फुल नारी।
सो॰ यहि विधि छीनत माथ बीते अष्ट दिवस तब॥
बोले श्री रघुनाथ। सुयश देन हित सज्जन ते॥
इतिश्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथ दास
राम सनेही कृत राम रावण समर वर्णनो नाम
अष्ट विंशोऽध्यायः २८॥
दो॰ सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
सार रमायणा केर मत कहौं इतिहास बखानि॥
चौ॰ नाथ थकित भे भुजा हमारे॥ तदपि असुर मरत नहिं मारे।
ताते यतन करहु जेहि छीजे॥ कह अगस्त्य मुनि प्रभु सुनि लीजे
प्रथम तुम्हारे पितर दिनेशा॥ जासु प्रताप विदित सब देशा॥
तिनकी विनय करहु कर जोरी॥ होइ विजै आनंद बहोरी॥॥
सुनि प्रभु देन बड़ाई हेता॥ बोले रवि दिशि प्रीति समेता॥

भुजंग प्रयात छंद

नमो मार तंडं प्रचंड नमारी॥ नमो कल्मषा मेदुरवातंक हारी।
नमो भानु मे पातु प्राच्या दिवासं। नमो पातु वेदांग जाम्याते नाशं।
नमो पातु तापेन्द्र देव प्रतीचं। नमो मे रविं रक्षरक्षेदुदीचं॥
नमो रश्मि गर्भस्सि ईशान देशं। नमो संयमा पातु देने सुवेशं॥

नमो पातुनैऋत्य हौरत्य रेतं। नमो पातुवायव्य देवार्क मेतं॥
नमो मित्र मूर्द्धा निसे धिस्तु मर्द्धं। नमो चारुतां पातुसर्वत्र बर्द्धं
नमो मातु सर्वांगसुर्या मतोयं। नमोजन्म मृत्युजरा व्याधि सोयं
नमो धर्म का मार्थ निर्वान दाता। नमो दोषदारिद्र संताप हाता।
नमो विश्व भूता छ भूतात्म भूपं। नमो ज्ञान विज्ञान रूपं अनूपं
नमो लोक नाथादि मध्यांत येकं। नमो तीव्र तेजार्क नामं अनेकं
नमो मेक चक्रं रथं दिव्य गामी। नमो कंद कालज्ञ कारुन्य स्वामी
नमो निर्मलं निर्बिलोकं विरालं। नमो भूधिलं भूसुरां रत्नजालं
नमो स्वर्ग संकाश माकाशवासी। नमो सज्जनानंद दावेग रासी
नमो सुक्ष्म भावित्त प्रागल्भमीसं। नमो ब्रह्म विद्या विभौ वैक्ली
सं। नमो त्रैगुणां त्वं त्रिमूर्ति त्रिकालं। नमोत्वं तुरीयं निरीहं
निरालं॥ नमो त्व सुरा सुभृ ता सेव्य मानं। करो सो कृपा ज्यों
तज्यों शत्रु घालं॥ यही बीनती दास रघुनाथ की है। यथा
बाल बानी लेहो आनि ही है॥

श्लोक सूर्याष्टकं जे सुमिदं पठे नरा: मध्यान्हकाले शु
चि नेम युक्त: नश्यन्ति सर्वा निरुजानि तस्य प्राप्नोति मो
क्षार्थ जया भिरामं॥

चौ० यहि बिधि करि बिनती अहीशा। छांड़े शर सुदेशि एक तीसा
एकबार नाभि सर भूत शोषा। बीस भुजा काटे करि रोषा॥
दस शिर काटि दशौं दिशि माहीं॥ धरि आये रघुनन्दन पाहीं।
बिन भुज शिर धावा करि कोपा॥ कहां राम रावण कहु भलोपा॥
तब प्रभु काटि किये युग खंडा॥ गिरत भूमि हाल्यो ब्रह्म खंडा।
तासु तेज प्रभु बदन समाना॥ देखि देव नभ हने निशाना॥
जय धुनि पूरि रही चहुँ वोरा॥ तिन मधि कोशलराज किशोरा
कुसमित किंसुक तरु के बीचा॥ राजत तरु तमाल जनु सीचा

जटा मुकुट सोहत मुनि चीरा॥ करकमलन फेरत धनुतीरा॥
राजिव दृग करि क्रिया निहारे॥ सुरनर मुनि सब भये सुखारे॥
यह छवि सुखद बसै उर जासू॥ मोह असुर तब होइ बिनासू॥
पति बध सुनि मैजादिक रानी॥ आईं तहँ शिर पीटत पानी॥
रावन गति लखि देह बिसारी॥ लागी कहन तासु गुण भारी॥
जेहि भुजबल जीतेउ सुर सर्बा॥ लनसुख किहेउ सकल सहगर्बा॥
सोइ बपु बाहु स्वान शिव खाहीं॥ राम बिमुख कछु अचरज नाहीं॥
जासु कर्म फल चाहिय सोका॥ तदपि कृपाल दीन निजलोका॥
देखि बिभीषण हूँ दुख पावा॥ प्रभु प्रेरित लछिमन समुझावा॥
अनुज क्रिया कीन्ही जस चाही॥ द्वितिया दिन आये प्रभु पाहीं॥
तब रघुपति लिय बोलि अनंतहि॥ कपि रिच्छप अंगद हनुमंतहि॥

दो॰ कह्यो बिभीषण जाइ पुर राज देहु जस रीति॥
भले नाथ कहि आइ शिर कीन्हों तिलक सप्रीति॥
बाजे बाजन बहु किये सुरतिन मंगल गान॥
सहित बिभीषण लखण पुनि आये जहँ भगवान॥

चौ॰ तब प्रभु कह्यो पवनसुत तेरा॥ जनकसुतहि लावहु दिग मेरे॥
सुनि पवनज अंगद लंकेशा॥ आइ मातु पद नायो शीशा॥
पूछी कुशल कुशल सब भाषी॥ पुनि पवनज बोले मन साखी॥
मातु तम चरित तोहि दुख दीन्हा॥ तेहिं ते इन्हें चही बध कीन्हा॥
कह सीता जनि मारिय तासा॥ रिच्छ मनुज की बरणी बाता॥
सुनि सुख सहित बिभीषण भावा॥ षोडस बिधि शृंगार करावा॥
शिबिका सुभग मांझ बैठारी॥ लाये सादर जहाँ खरारी॥
पावक ते प्रगटन के हेता॥ कहे बचन दुर्बाद समेता॥
सुनि जानकी बहुरि दुख पाई॥ लछिमन ते पावक मँगवाई॥
चिता रचाइ कह्यो तेहि पाहीं॥ रघुपति तजि गति दूसरि नाहीं॥

तौ जल सरिस होउ तुम केशा ॥ अस कहि तामें किये प्रवेशा
बिप्र रूप धरि पावक लाये ॥ प्रभुइ सौंपि अस बचन सुनाये।
राम बाम दिशि आसन रयऊ ॥ देखि भालु कपि हरषित भयऊ।
लषण राम सिय शोभा रूरी ॥ निरखि सुमन बरषे सुर भूरी ॥
दशरथ साहित राम पहँ आये ॥ लषण सहित प्रभु शीस नवाये
बोले तव प्रसाद रिपु मारे ॥ सुनि बिनती सुर लोक पधारे ॥ ॥
तब बिरंचि बिनती बहु कीन्ही ॥ प्रभु पद प्रीति मांगि सो लीन्ही
आइ तिनै तब कौन पुरारी ॥ भल कीन्हे प्रभु बधे सुरारी ॥ ॥
मन बांछित बर मांगि सिधाये ॥ तब सुरेश बर बचन सुनाये ॥
नाथ कृपा करि सुर मुनि रंजे ॥ दास आनि सबकदुखभंजे ॥ ॥
अब मोहिं जौन रजायसु देहू ॥ करहुं सो सुनि बोले प्रभु येहू।
तात देहु कपि भालु जियाई ॥ दिये जियाय अमी बर धाई ॥
तब लंका पति बचन उचारा ॥ नाथ करिय कछु अंगीकारा ॥
कह प्रभु तोर कोश गृह मोरा ॥ मोर कोश गृह तवन निहोरा ॥
करहु कल्प भरि राज्य बिरामा ॥ अंत समय आयो मम धामा ॥
पुनि बोले पट भूषण लाये ॥ कपि भालुन चहिये बर ताये ॥
कह प्रभु होइ गरह बिरोधी ॥ मम मन है भरतहि कब देखौ
ताते लै अकाश महं जाहू ॥ देहु बरसि मिलिहै सब काहू ॥
जाइ बिभीषण नभ बर साये ॥ पहिरि पहिरि सब प्रभु पहँ आये
नाना जिनिसि देखि कपि भालू ॥ बिहँसि सकल ते कहौ कृपालू
तुम्हरे बल में रिपुरण जीता ॥ भे लंकेश मिली मोहिं सीता।
होइ त्रिभुवन सुयश तुम्हारा ॥ पुनि पैहो पर धाम हमारा ॥
अबहिं जाहु निज निज गृह भाई ॥ सुनि कपि भालु चले हरषाई

दो॰ सहित जानकी लषण पुत युत्यप सब लंकेश ॥
फनि दिन पुष्पक पान चढ़ि चले आपने देश।

लखत लखावत बास निज आये दंडक तीर ॥
मिलि घट जादिक मुनिन कहं पुनि गवने रघुबीर ॥

सो० चित्रकूट में आइ। परतोषे मुनि साधु सब ॥
पुनि तीरथ पति पाइ। न्हाइ दान दीन्हो द्विजन ॥

चौ० भरद्वाज कहं मिलि सनमाना ॥ सिंगबेर पुनि आयउ जाना
मिला गुहा अति प्रीति समेता ॥ पवनज ते कह कृपा निकेता
जाइ अवध भरतहि सुधि देहू ॥ तिनके रहसि कहेउ मोहिं तेहू
मुनि चलिभे कपि करि परनामा ॥ आइ रहे तेहि निशि तेहि ग्रामा
इहां सकल शोचहिं पुर बासी ॥ आवत हैं की नहिं सुख रासी
रघुपति बिरह अनल सब जाहीं ॥ सगुण सबुभि सुभ धीरज धरहीं
अवधि बीच एकहि दिन जानी ॥ कौशिल्यादि मातु अकुलानी
फणि दिन रबि भरणी सह चावा ॥ तिसरे पहर गनिक बोलवावा
पग परि पूंछेहु सह अनुरागा ॥ सुनि जोतषी बिचारै लागा ॥

कुण्डलिया तिथि रु पहर संयुक्त करि बारहु नार मिलाय। देइ सात कर भाग औ बचै तासु फल गाइ ॥ बचै तासु फल गाइ एक ते तेहि अस्थाना। द्वै ते आवन कहत तीनि ते मग में जाना ॥ चतुरथ पहुंचे आइ दिग पंचम पुनरावृत्ति षिथि। षष्ठ ब्याधि समेत मुनि मृतक कहै इमि बिधु तिथि ॥

दो० यहि बिचार ते जानिये। आये प्रभु पुर पास ॥
सुनि सब मातन दान बहु दीन्हे सहित हुलास ॥

इति श्री बिश्राम सागर सबमत आगर ग्रंथ उजागर श्री रघुनाथदास राम सनेही कृत लंकाकांडे रावण बध और श्री राम अयोध्या आगमन बर्णनो नाम ऊनविंशो ऽध्यायः २९ ॥

लङ्काकाण्ड समाप्तः ॥

श्रीगणेशायनमः

अथ विश्राम सागर

उत्तर काण्ड प्रारम्भः

दो० सुमिरि राम सिय सन्त गुरु गणप गिरा सुखदानि॥
सार रामायण को रुचत कहौं इतिहास बखानि
रहा एक दिन अवधि का भरत समुझि मनमाहिं॥
लागे शोचन विरह बस धीरज आवत नाहिं॥
तेहि अवसर हनुमान तहं आये विप्रस्वरूप॥
रटत नाम अब लोकि कै बोले वचन अनूप॥
जासु विरह शोचत अहो आवत सो समरत्थ॥
लषण जानुकी सहितमुनि प्रभु हित मिलै भरत्थ॥
तात कह्यो सन्देश जस तस कछु नहिं जो देहु॥
तातेऽनिया पापकर हौं मैं उऋण न लेहु॥
देखि भरत की प्रीति कपि कही राम तें जाइ॥
सुनत चढ़े प्रभु यान चढ़ि पुर ढिग पहुंचे आइ॥
भरत शत्रुहन सहित गुरु पुरजन सचिव समाज॥
लेन सिधाये रघुपतिहि कहि जननिन ते काज॥
जहं तहं सुनि पुर नारि नर धाये दरशन हेत॥
एक एक तें कहें तुम देखु कृपा निकेत॥ ॥
कोटिन चढ़ि गिरि तरु अटनि निरखैं व्योम विमान॥
कोटिन मंगल द्रव्य लै करहिं राम गुन गान॥
कुण्डलिया अवध विराजत आजु यामिनी जिमि-

विरहिनि निय वारु। पति आवत सुनि मुदित मन कीन सु
तन सिंगारु॥ कीन सुतन सिंगारु कोटि कटि किंकिनि जानो
मनि विद्रुम मय भवन अंग प्रति भूषण मानो॥ साजे बस
न सुरंग संग सखि विच अनेका। पगनू पुर पुर सोर घोर ग
ति बाजत एका॥ चंचल अंचल पानि पताका धुज फह
राहीं। ग्राम धाम के लोग सकल धाये प्रभु पाहीं॥ ऊंच अ
टनि पर कुच उचकि चितवत मग फूली। कनक कलस
कुच प्रगट मोद बस कंचुकि भूली॥ भूली कंचुकि मोद ब
स नेत्र भरोखा खवब बबध। थक टक रहे निमेष तजि ना
रि रूपमय इमि प्रबंध॥

दो॰ भरतहि आवत देखि प्रभु त्याग्यो तुरत बिमानु॥
सन्मुख चले सनेह बस पठे धनद पहं जानु॥
प्रथम मिले गुरु द्विजन पुनि गहे भरत प्रभु पाय॥
बल करि तुरत उठाइ हरि भेंटे हृदय लगाय॥
राम शत्रुहन मिले पुनि भरत लक्षिमन दोउ॥
पुरवासी छिन में मिले बाल वृद्ध सब कोउ॥
भरत शत्रुहन सीय पद परसे पाय असीष॥
पुनि भेंटे सब कपिन कहं विप्रन सहित मुनीष॥
बाजहिं बाजन विपुल सुर बरषहिं सुमन सराहि॥
द्वार द्वार प्रति आरती करहिं लोग सब चाहि॥
सुनि सुनि धाईं मातु सब ज्यों बच्छा हित धेनु॥
प्रथम केकई भेंटि पुनि मिले सबन सुखदेनु॥
ऐसे दिन गे सबन गृह सबके भोजन कीन॥
केहू न जानेहु मर्म यह कच उतरावे लीन॥
प्रात सप्तमी दिवस मुनि कह्यो राज पद देन॥

सुनि रघुपति सब ऋषिन ते बोले कोमल बैन ॥
नाथ द्रव्य मद राज मद विद्यामद बपुलेखि ॥
जोबन मद तहँ राजमद सबते यहै विशेखि ॥
तेहि पीने कछु सुख नहीं केवल निरै नेवासु ॥
पुनि चंचल नहिं होत निजु ताते चहै न दासु ॥

सो० नरतन कर फल एक । कहत वेद बुध आपु सम ॥
परि हरि काम अनेक । भजे सदा जग ईश कहँ ॥
मुनि बोले ऋषिनाथ । तुम बिन अस को कहै प्रभु ॥
सो माया तव हाथ । काल कर्म गुण जासु बस ॥
जो सुमिरत तव नाम । ते छूटत अभिमान ते ॥
प्रभु परि पूरन काम । तोहि को होइ श्रीराजपद ॥

चौ० तेहि ते लेहु राज पद राखा ॥ पूजे हम सब की अभिलाषा ॥
भले भाखि पट भूषण साजे ॥ घर घर मोद बधाये बाजे ॥
मंगल द्रव्य अनेक प्रकारा ॥ लैलै आये अनुग अपारा ॥
जोजन एक कनक की छोनी ॥ तामधि चंद्र वेदिका लीनी ॥
ताके बीच महल यक रंभा ॥ मनि मे चहु दिशि षोडश खंभा ॥
कोनेन प्रति सुर तरु तहँ आसन ॥ तेहि गृह मध्य रतन सिंहासन ॥
तेहि पर कमल अष्ट दल केरा ॥ धरे विविध भाजन बहु फेरा ॥
गुरु बशिष्ठ शुभ सम्वत चाहा ॥ तेहि ऊपर बैठन हित काहा ॥

कुण्डलिया बिप्रन शीश नवाइ के सिंहासन श्री राम ॥ बैठ श्री सीता सहित मानो रति युत काम ॥ मानो रति युत काम किधौ श्री युत भगवाना । किधौं तड़ित युत मेघ किधौं विद्या युत ज्ञाना ॥ किधौं सिद्धि युत इन्द्र रवि कल्प लता प्रद छिप्र । छवि सिंगार श्रम कीर्ति लखि वेद उच्चारे बिप्र ॥ ससि सम छत्र सुकर ठकर चँवर

बिभीषण हाथ। लषण लिहे आदेश वर अंगद पावन पाथ॥ अंगद पावन पाथ पान रिपु दल नप बावै। बिंजन करत निषाद भरत सब का ढिग लावै॥ जामवन्त हनुमन्त कर छरी छबीली शक्ति असि। बचन सुधारत तरनि तन चंरनु शिर चंद्रिका शशि॥ नाक नटी गुन गन जटी लटी नछटी अनूप। रटनि उटी नहिं कछु घटी मननि पटी पट रूप॥ घनि मटी पट रूप टहि बिघटहि गति ऊपर॥ भटकि मुकर कटि मटकि लटकि पट कहि पग नूपुर। नूपुर पट कहि लटकि छबि लखि मट के बुधि बाकानान कटी मुनि चट पटीलहे मनुज मुनि नाक॥ जान्यो जब अविशेष की आई घटिका सिष्ट। प्रथमे श्री रघुनाथ सिर कीन्हों तिलक बशिष्ट। कीन्हो तिलक बशिष्ट अपर सब तिन के पाछे करहिं आरती मातु निछावरि पट अलि आछे॥ विप्रन दीन्हें दान सोई जेहि जो मन आन्यो। नृपन धरी बहु भेंट बंदि त्रिभुवन पति जान्यो॥ तब बिरंचि कर जोरि के बोले सन्मुख बयन। जय रघुनाथ अनाथ पति प्रनत पाल सुख अयन॥ प्रनत पाल सुख ऐन मयन छबि कोटि बिराजै। धन्य भाग्य बड़ तासु लखा जिन याहि समाजै॥ लखा समाजे आज मोहि दान देहु निज भक्ति अब। सुनि तथास्तु बैठे पुरहू आये मुदित महेश तब॥ बन्दे हं त्वत्पद प्रभो संसृताब्धि दृढ़ पोत। परि भवाब्धि धेयं सदा तीर्थास्पद सुख स्रोत। तीर्थास्पद सुखस्रोत नुतं कमलज हर रिईशं। प्रनत पाल श्री भीष्ट द्रोह भृत्यारत खीसं खीसं कृत अघ बोघ सब्य श्री मुनि मानं दे। गुनागार मे पातु सततं स्याहं बंदे॥ विप्र रूप धरि बेद तब बोले गिरा अनूप॥ जय जग दीश अजीस पति निर्गुन सगुन सरूप॥ निर्गुन

सगुण सरूप भूप भव पार उतारणं ॥ जे नर तजि तव भक्ति पचत जग सुखके कारणं ॥ सुर दुर्लभ तनु पाइ ते पत तनर्कम हँ छिप्र । चरण कमल रति देहु सुनि सबहि न जाने विप्र ॥ बोले विश्वा मित्र तव जय जन बन मन हंस । रघुकुल कुमुद चकोर शशि शिव धनु कृत विध्वंस ॥ शिवधनु कृत विध्वंश वंश सुत असुर निकंदन । जय सुर नर मुनि पाल काल सब दशरथ नन्दन ॥ दशरथ नन्दन भक्ति देहु निज मोहिं अडोले । तब तहँ बाल सरूप आइ सनकादिक बोले ॥ जय भगवन्त अनन्त अज अनघ अनामें एक । करुणा सिंधु सर्वज्ञ शिव सुख प्रद नाम अनेक ॥ सुख प्रद नाम अनेक कर सतत पावन कारी । काम क्रोध मद मोह लोभ गज सिकव खरारी ॥ जगत् धिता रन पोत दिद कहत सुनत हरि लेत भय ॥ बसहु सदा मम उर अयन सीता लक्ष्मण समेत जय ॥ कह वशिष्ठ कर जोरि तव जय प्रभु रूप सुभार । बचन अगोचर बुद्धि पर जाने कहा गँवार ॥ जाने कहा गँवार परस धर सके न जानी । प्रगट विष्णु अवतार वेग निज कीन्हिनि हानी ॥ शिव अरधंगिनि दक्ष जा भ्रम बस बहु संकट सहा । खग पति काग भसुण्ड से भूले तो जड़ नर कहा ॥ सगुण सरूप भूप भव पार उतारणं ।

दो० कृपासु जना बहु जाहि सो बिन श्रम लेइ पिछानि ॥
मम उर करहु निवास नित यहि समाज सुखदानि ॥

कुण्डलिया यहि विधि सुर नर नाग नृप सबहिन बिनती कीनि । तब रघुपति सब कपिन कहँ निज घर सादी दीनि ॥ निज घर सादी दीनि मुकुट लंका पति पावा । कुंडल लहे सुकण्ठ भालु हनुमत गर नावा ॥ पीताम्बर ।

युव राज कहं दीन्हो जामा रिछ पहि॥ औरो गहन मँगाइ ब-
पु बच्यो न कोई भाँति यहि॥ सब विधि सबहि प्रसन्न करि
बोले मुनिते राम। विपति माँझ ए सखा सब आये मेरे काम॥
आये मेरे काम नाम जिन केर बतायो। तिनजो कीन पुरुषा-
र्थ ता सुसह प्रीति सुनायो॥ भरतहु ते मोहिं अधिक प्रि-
य देहुं कहा अस कवनि निधि। लषण चरित का कहउं
जिन सेवा कीन्ही सकल विधि॥

सो० सुनत सभा हरषानि। जय कहि सुर बरषे सुमन॥
प्रणत सुखद प्रभु बानि। पहिरे पट भूषण बहुरि॥

छं० पुरवासी नर नारि जे कहैं कि आज विशेषि। नयन
सफल करि लीजिये रघुपति छवि देखि। नीलजलद मनि
सरिस बपु दिनकर मनि सम तेज॥ कोटि मनो भवले रुचिर
राजत मनि मेज॥ रतन जटित मनि मुकुट सिर जग म-
गत अपार। श्रुति कुंडल निज केतु के दीन्हें जनु मार॥
भृकुटी ललित लिलार में दिहे तिलक सुभास। जनु
लाये अलि रवि किरिनि हित कमल प्रकास॥ चंचल
चारु विशाल दृग मधिप्राण सो हाव। मानहुं विवि षंज-
न लरे सुख करत बराव॥ श्याम सुकेश प्रसून घर ज-
नु मनि युत नाग। उतरे मुख शशि अमी हित लखि रिपु
डर लाग॥ बिंबा दाड़िम दसन मदि रसन सुरंग॥ कमल
कोस में कुलिस जनु बसे दामिनि संग॥ मंद हास बोल
त मधुर खाये मुख पान। धर कृपा हरि की दृष्टि सों करै
अमी समान॥ कंबु कंठ कौस्तुभ लसै मुकतन की माल।
पयद मध्य सोही मनो बग पाँति विशाल॥ भुज आ जानु
वर जनु बही युग यमुना धार। धनुशर तट भूषण भँवर

कर कंज उदार ॥ असित श्यल उपवीत उर बोढ़े उप बीता।
लसत सीर सरिला मनो खपला लखि मीत ॥ नाभि छिद्र सि-
त्रिवली सुपथ रोमालि सेवाल । कटि केहरि हरि किंकि-
णी जनु मुखर मराल ॥ कदलि जंघ युग गुलफवर नूपुर अ-
नमोल । मुकुट पदुम के कलिन में जनु अलिगन बोल ॥
अरुण चरण चिर चिन्ह युत युग पद जन रवाभ । श्याम र-
क हरि रलनि जनु बेठे जल दाभ ॥ विधि हरि हर ध्यावत
जिन्हें मुनि गन तजि साथ । तिन पायन में प्रीति दृढ चा-
हें जन रघुनाथ ॥

दो० यहि विधि नख सिख रूप लखि मुदित होंइ सब कोइ ॥
एक एक ते आइ गृह बोली बूझेउ सोइ ॥

चौ० हे सखि आजु राम छबि देखी ॥ नयनन मम परि हरी निमेषी
तहँ पुनि बसब संग प्रभु केरे ॥ अद्भुत रचना हेरी नेरे ॥ ॥
युगल कंज दस दल तिन माहीं ॥ बसत मराल उड़त ते नाहीं
पिक बक कीर लाल मिलि डोलें ॥ बैठे घेरि चहूँ दिशि बोलें ॥
तिन के मध्य मयन रथ केरे ॥ चक्र बिराजत मनि मय हेरे ॥
कमल नाल रति गलकी हासा ॥ रंभा तरु तेहि ऊपर बासा ॥
तेहि पर गज करि पर मृग राई ॥ दिव्य बसन ते दीन उड़ाई ॥
हरि पर सर मधि भवरू बिराजे ॥ बिविधि बरण के पंछी राजे
सर पर कनक केर गिरि दोई ॥ तिन पर रहा नील घन सोई ॥
तेहि पर सुमन पंच रंग फूले ॥ तामधि बैठि परेवा भूले ॥ ॥
तेहि पर कुसुम कुसुम परि अलि सुत ॥ तेहि पर युग बिंबा फल अद्भुत
तेहि पर सुक अंत से लागत भल ॥ लीन्हे पल्लव चोच सहित फल
सुक तर पिक ऊपर बिबि खंजन ॥ खंजन पर धन पर शशि रंजन
इत उत दिन मनि उदित सोहाये ॥ मानहुँ शशि सहाय हित आये

शशि ऊपर बहु नखत सोहावन॥ इन्दु मइन्दु लसत मनभावन
तेहि पर गिरि गिरि पर बन सोहै॥ तेहि बिच लाल पंथ मन मोहै
तेहि पर मनि धर नागिनि देखी॥ तेहि ऊपर दीरघ सरिता पेखी॥
तेहि ते बही सरित युग जोई॥ जलचर बिपुल बिबिधि बिधि सोई॥
फूले कमल मिथुनयक संगा॥ कीड़त बिहंग जानि बहु रंगा॥
सुनत सखी सो देखन धाई॥ मुदित भूप के मन्दिर आई॥॥
दम्पति रूप देखि हरषानी॥ आई भवन तोरि तृण पानी॥

दो॰ यहि बिधि सायंकाल भो रहे दीप पुर पूरि॥
मनहुं शेष आये मिलन किधौं धरनि सुत भूरि॥

चौ॰ तब मुनि मुदित रजायसु दीन्हा॥ संध्या बंदन सबहिन कीन्हा
राज सभा पुनि बैठे आई॥ हरषि पहर भरि रयन बिताई।
सेवक आइ कही तब बाता॥ चलहु भवन प्रभु बोलत माता॥
उठे तुरत पुरजन घर नाई॥ गे निजभवन रजायसु पाई॥
आये रघुपति जहं महं तारी॥ अनुज सिया युत कीन बियारी
अचवन करि पुनि बीरी खादी॥ हनुमदादि जन लिहिनि प्रसादी
बोला सुख चलि सोवहु श्यामा॥ आये तब प्रभु कंचन धामा॥
देखि सखिन हंसि पाइ परवारे॥ मनिमिं ऊपर सिज्या बैठारे॥
स्रक सुगंध मेवा पकवाना॥ धरे कनक भाजन भरि नाना
सुर नर नाग सुता अनुरागी॥ नृत्य गान मिलि करने लागी।
देखत हीगे सोइ कृपाला॥ लखि प्रभात बोला तब सारा।
उठहु नाथ जग नाथ हमारे॥ बिधि हरि हर मुनि ठाढे द्वारे।
मिलि सबहिन कहं दरशन दीजै॥ याचक सकल अजाचक कीजै
बिहंग बचन सुनि उठे खरारी॥ देखि सखिन आरती उतारी॥
प्रीति सहित दातूनि कराई॥ मिले सबनि पुनि द्वारे आई॥
बिप्रन दान देइ बहु रंगा॥ सेवक सखा अनुज ले संगा॥ ॥

जाइ कीन सरजू असनाना। देखि लोग सुख लहैं निदाना।
पूजन करि पुनि मंदिर आये॥ मुदित मातु तब असन कराये
कछुक बार करि सयन कृपाला॥ पुनि सब मिलि आये नृपशाला
राम राज बैठे जब तेरे॥ त्रिभुवन दुःख मिटे सब केरे॥ ॥
काम धेनु भय भूमि सोहाई॥ मांगे मेघ देइं जल आई॥ ॥
चारिहु बरन धर्म निज चरहीं॥ कोउ काहू ते बैर न करहीं॥
बाल वृद्ध यौवन नर नारी॥ सब के प्रभु पद प्रीति अपारी॥
रघुपति चरित सुनैं नित कहई॥ परमानन्द मगन सब रहई॥
अजहूं जे हरि पद मन लावै॥ राम राज कर सुख ते पावै॥
रघुपति चरित सुनैं जे कहहीं॥ निश्चै ते अव्यय पद लहहीं

दो॰ राम चरित विचित्र अति कहि कोइ लहै किपार॥
सुख प्रद निज मति सरिस मैं तुम्है सुनाये सार॥
सुनि हरषे श्रोता सकल धन्य भाग्य निज जानि॥
कहत दास रघुनाथ अब सहित जोरि युग पानि॥
हे प्रभु सीता नाथ तुम जस पुर मायो मोहिं॥
तस मैं भाख्यो ग्रंथ यह सो अरपत हौं तोहिं॥
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ॥
राम चरित सुख प्रद कछुक बरने जन रघुनाथ॥

तोमर छं॰ श्री राम चरन प्रताप। कछु कीन किपा आप॥ ते-
हि नाथ चरित सिखालि। अब कहत गुरु पर नालि॥ + ॥

कवित्त श्री रामानुज संप्रदाय द्वारा अग्रदास जू को तहां
के महन्त भे गोविन्द राम जानिये। तिनहीं के शिष्य सन्तदा-
स तस्य कृपा राम कृपा राम जू के राम चरन पिछानिये॥ राम
चरण जू के राम जन्न तस्य कान्ह रभे कान्हर के शिष्य हरि
राम को बखानिये। हरी राम जू के देवा दास राम नाम भाल

देया दास जू के रघुनाथ मोहिं जानिये ॥

दो० इष्ट हमारी राम सिय राम नाम प्रिय भाल ॥ ८ ॥
राम रकार मकार है बिन्दु आनुकी लाल ॥
पावन को पावन करन शिव को धनु मुनि वर्ण ॥
सुचि सतन के प्रानहैं राम नाम दोउ अर्ण ॥
विविध ग्रंथ बहुविध सुमन ममभति माखी आनि ॥
विश्रामो दधि ग्रंथ मधु कीन इकट्ठ ज्ञानि ॥
स्वच्छ मधुर आरोग्य सुचि आवत सब के काम ॥
जतन किहे सह जे मिले नाहिन महँगे दाम ॥
कथा रसिक जे संत जिमि गुन ग्राही रस चोर ॥
ते आदरि हैं ग्रंथ यह देखि परिश्रम मोर ॥
लहि हैं सुख सम्पत्ति विविध जैहैं मिटि तिहुं ताप ॥
चारों युग में प्रबल है रघुपति भक्ति प्रताप ॥

छं० अति प्रबल भक्ति प्रताप सब पर ईश जेहि निज बस करे। कलि कालहू हरि भजन करि बहु जीव भव सागर तरे ॥ सर बज्र शंभु बिराग सुनि जप योग तप प्रेमी जने। सठ कोप जामुनि बर्जि शुचि नव नन्द गोपा दिक घने ॥ रूपहि नाथ सुरु तरु तरनि नीवा दित्य तम भ्रमहा रेहू। सम मेघ मध्वा चार्य स्वामी बिष्णु वोहित तारेहू ॥ गुरु निम्ब लाला चार्य्य रामा नन्द श्री रङ्ग रंगियो। पयपान कृत की लाग्र शंकर नाम सुर पारस बियो ॥ जय देव श्री धर बिन्द मङ्गल ज्ञान देव त्रिलोचनं। भय जासु सेवक पाइ श्री पति प्रेम बस दुख मोचनं ॥ रूप रूप बल्लभ भूप जन जेहि राम सिय दधि मे लखे। विवि सूर कूबा गदा धर हर प्रेम निधि मङ्गल सखे ॥ गति गूढ़ हरि अनु-

करन राजहि पानि पुर आतम दियो॥ प्रिय लागि कर्माके-रि खीचरि बोलि निजमंदिर लियो॥ सिय टूक भजि नि-ज सुतन विषदे प्रभुइ पिय वाई भई। हरि हंस मामाभा-नजे सद वृत्तिकी कसनी लई॥ भइ भुवन की आसि सा-रकी सिल केश देवा हित करे। दियो दाह कामध्वज क-लेवर आइजे मल दिशि लरे॥ घरदीन महि थी गोपकी द्विज हेत चलि साखी भरी। शिर नयो गनिका काज शक्ती दास लगि निजउर धरी॥ सुख पाव सुन्दरि राम कहिरेदा-स हरिहि बोलायहू। बहु वार राम कबीर हित धनु दीन ब-रदी लायहू॥ बिन बीज जामेहु धना को भाशि सैन हित छुरहरि गही। रघुनाथ माधो दास जनको सोच कर वा-यो सही॥ हरिव्यास देविहि दीनि दिक्षा नर हरी समधी लई॥ त्रिपुरारि तत्वा जीव नित्या नन्द नाभा अनभई॥ भूगर्भ देव मुरारि गज्ज गोबिन्द गिरधर को सखा। गोपाल रूप सनात नानद दीन नग लीन्हे लखा॥ बिठि लेश ला-खाभक्त नरसी खलनि बहु पर चै दये पर मार्थ के रसरू-प पीपा पतित बहु पावन किये॥ कोतह्ल केसौं भट्ट मीरा लीन गिर धर में भई। रतना वती कर मैतिभक्ति गरोघ्रदे हेद करि गई॥ चतुरोग तुलसीदास पावन रामजस जिन उर धरेहु। कविकृष्ण लखरा प्रयाग जूड़े युगुल हरि जनआ-दरेहु॥ भे और हू बहु सन्त अपवजे अहे आगे होइ हे। र-घुनाथ तिन के चरित सब कहि सके नहिं अस कोइ हे॥ जिमि क्षीर सिंधु अपार खग निज चोचसम भरि पावहीं। तेहि भाँति कवि निज मति सरिस हरि सन्त जन गुन गावहीं॥ ॥

कुंडलिया अहो सन्त भगवन्त गुरु बिनै करहुँ मम कान। तहाँ नमहि सुखदेव मुख बिधि सुख पुनि निर्वान॥ बिधि सुख पुनि निर्वान रिद्धि सिधि सकल धरीजै। जहँ राखो प्रभु मोहिं तहाँ निज पद रत दीजै॥ दीजै पुनि सन्त संग जहँ तव गुन सुन वाको लहौं। भक्ति बिमुख कर बदन जनि देखरावो सुखप्रद अहौं॥

चौ० अयन तीसरे संख्या गाई॥ युग सहस्र नव सै हैं भाई॥ और मतजर जानो जोई॥ इतनी है चौपाई सोई॥ ॥ दोहा पांचसै साठि सब जानो॥ नब्बे सोरठ सोउ पिछानो॥ हैं छप्पै बावन यहि माहीं॥ गितिका छन्द बत्तालिस आहीं॥ चौबोला युग यामे होई॥ मंजु छन्द एक सुन्दर सोई॥ छंदै हैं मुनि कहा सोहाई॥ कुण्डलिया माहि बीस लखाई॥ टोटक एक एक दण्डक जानो॥ कमल एक एक तोमर मानो॥ रोला वेद वेद श्लोका॥ रुद्र त्रिभङ्गी छन्द बिलोका॥ एक मालिका यामे भाई॥ संख्या अयन कहा मैं गाई॥

सो० महिस्वर छन्द जो एक। युग नराच छंदै अहैं॥
भुजङ्ग प्रिया ता एक। एक कवित यामे बिशद॥

दो० जो कछु देख्यो चूक मम छम्यो जानि अज्ञान॥
पराधीन जग जीव सब ज्ञानी इक भगवान॥

इतिश्री विश्राम सागर सब मत आगर ग्रंथ उजागर श्री मज्जगज्जन निजनक जानकी रामस्यानुगानुगोहं श्री रघुनाथदास राम सनेही निर्मित विश्राम सागर ग्रंथः समाप्तः॥

कमल महादेव हंस	कुन्द यमराज गरुड़	निवारि हनुमान पपीहा	दुपहरिया इन्द्र गीध
बेला राम मैना	केवड़ा गणेश कोयल	गुल्दावदी शनिश्चर खूसट	पियावास भैरों बया
कलगा भरत टिटीरी	सुदर्शन पवन शरदूल	गुल्मेहदी जल खड़रैचा	नरगिस शारदा चंडूल
कंदथल अन्न गरगवा	मरुवा शुक्र कटनास	गुलफिरङ्ग अश्विनीकु॰ तूती	सेवती स्वामका॰ सारस

गुलाब हरि सुवा	निवारी हनोमान पपीहा	कदम्ब सूर्य्य होरिल	दुपहरिया इन्द्र गिद्ध
बेला राम मैना	मोतिया कृष्ण बाज	गुलाचीन प्रद्युम्न मुरैला	गुल्दावदी शनिश्चर खूसट
चमेली ब्रह्मा काग	जूही पावक चकोर	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शारदूल
कलयर अन्न गरगवा	मरुवा शुक्र कटनास	नरगिस शारदा चंडूल	गुलफिरङ्ग अश्विनीकु॰ तूती

(४)

चाँदनी सीता लाल	कुन्द यमराज गरुड़	गुल्लाला गुरुजन कठफोरा	मोतिया कृष्ण बाज
चमेली ब्रह्मा काग	निवारी हनुमान पपीहा	कलगा भरत टिटीरी	गुलमेहदी जल खड़रैचा
गुड़हल देवी महरि	जूही पावक चकोर	केतकी मुनि बटेर	सेवती स्वामका॰ सारस
कनेर अन्न गरगवा	मरुवा शुक्र कटनास	गुलाबास बृहस्पति सारदूल	गुलफिरङ्ग अश्वनीकु॰ तूती

(८)

गेंदा लक्ष्मी बकुला	केवड़ा गणेश कोयल	कदम्ब सूर्य्य होरिल	दुपहरिया इन्द्र गिद्ध
गुल्लाला गुरजन कठफोरा	मोतिया कृष्ण बाज	पियाबा॰ भैरों बया	नरगिस शारदा चंडूल
कलगा भरत टिटीरी	चम्पा बुध बुलबुल	केतकी मुनि बटेर	सेवती स्वामका॰ सारस
कनेर अन्न गरगवा	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शारदूल	गुलफिरंग अश्वनीकु॰ तूती

हरिसिंगार चन्द्रमा कबूतर	सुदर्शन पवन शरदूल	गुलाचीन शत्रुहन मुरैला	गुल्दावदी शनीचर खूसट	अंगुली रख कर इस प्रश्न को निकालते हैं ॥
गुडहल देवीजी महरि	गुल्मेहदी जल खड़रैचा	पियाबा॰ भैरों बया	नरगिस शारदा चंडूल	१ २ १३ ८ २६ २४ ३१ २३ २८ ११ ७
जूही पापक चकोर	चम्पा बुध बुलबुल	केतकी सुरवर बटेर	सेवती स्वामका॰ सारस	१७ १४ २० २७ १९ ९ १८ ४ २२ ५
मरुवा शुक्र कारन्वास	अनार नरसिंह तीतर	गुलाबास बृहस्पति शारदूल	गुलाके॰ अश्वनीकु॰ तूती	३ २९ १६ ६ ३० १५ १० १२ २५ २१

श्रीगणेशायनमः

बंदि गणाधिप शारदा राम सिया गुरु विष्णु ॥
हरि प्रेरित रघुनाथ जन बरणत मानस प्रश्नु ॥१॥
कह महेश प्रभु पद कमल भजकुरि भेष मराल॥
ह्वै है मंगल लाभ बहु मिटिहै सब दुख हाल ॥२॥
जैसा रंग गुलाब का तैसा यह संसार ॥ ॥
कह हरि मति भूले सुवा यामें दुक्ख अपार ॥३॥
पढ़ि मैना बैठि में परयो अबते सुमिरहु राम ॥
जब वह बेला आइहै तबही सरि है काम ॥४॥
कह सिय पिय गुन लाल से सुयश चांदनी छाय॥
मिलत मोद गावत सुनत गनत बिपति सबजाय॥५॥
कुंद सरिस तन आउ बढ़ि लक्ष्मरा भलकुल नीक॥

कहत धर्म करि गरुड़ पति भजे होइ सब ठीक ॥ ६॥
काक भक्ष को त्यागि के लीन चमेली बास ॥ ॥
कह बिधि अस सत संग है करु पूजी सब आस ॥७॥
सुमिरि नाम चातृक सरिस मनका मैल निवारि ॥
कर तल तेरे चारि फल कह हनुमान पुकारि ॥८॥
जिन करि तू सुख चहत है तिनते होई दुक्ख ॥
बक गेंदा सम कुटिल तजि श्री पति सन मुख सुक्ख ॥९॥
बुद्धि मान गणपति सरिस बोलत कोकिल बैन ॥
भजहु हरिहि है केवड़ा तुम सम को सुख ऐन ॥ १०॥
मित्र मिली होरिल मिली सम्पति मिली कदंब ॥
भूलेहु जनि रघुनाथ को मतिहि दुखायो अम्ब ॥११॥
कीन क्रिया जिमि गीधि की तज्यो इन्द्र सुत जानि ॥
तासु चरन दुप हर सरिस भजु तू सुख की खानि ॥ १२॥
सेवहु गुरु जन प्रीति करि फूली मुद गुल्लाल ॥
कठ फोरवा सम रिपु मिटी मिली सुहृद सुत बाल ॥ १३॥
भरत रहनि धरु हृदय महं तजु टीड़ी सुत मूल ॥
कलगा भक्ति बढ़ाइ ये निशि दिन मंगल मूल ॥ १४॥
गई ताहि अब भरवै मति रही ते भजु नंदलाल ॥
काल बाज सिर सूझ नहिं पर्यो मोतिया जाल ॥ १५॥
कर्म कृषी मलि कीजिये जेहि उपजे सुख अन्न ॥
सुगहि गरगवा जीव तब होइ नकँ दयल मन्न ॥ १६॥
साम धरेवा काल रवे करु तू हरि शृंगार ॥
देखु नयन भरि सुखद छबि एहि अब सर एहि बार १७॥
भरुही के अंडा बचे बच्यो पवन सुत जानि ॥
तिमि तू बचि सुख भोगि है सुमिरु सुदर्शन पानि ॥ १८॥
गुल्ला बीन कर हार करि रिपु हं ताहि पहि राउ ॥
पैहै बिजै बिनोद यश मोर तोर मति याउ ॥ १९॥
बसे शनीचर पाय तेहि फिरै दावरी जैस ॥
बिन हरि सुमिरे सुख नहीं खोउ न खूसट तैस ॥ २०॥
गुड़ हल सम तन हरि भगति देवी शीस चढ़ाउ ॥

होइ सिद्धि कल्याण जेहि महरि सुवन यश गाउ ॥ २१ ॥
दुख सुख आवत समय पर ज्यों खंजन ऋतु पाइ ॥
आनंद जल बरषत उठी गुल्मेहदी हरि आइ ॥ २२
जूही अपने मित्र हित पावक खात चकोर ॥
जो हरि सुमिरे प्रीति ते क्यों न होइ भल तोर ॥ २३ ॥
नारि खेहरिया सरिस है छू मति मन कट नाश ॥
मरुवा एकरि भुलाइ है कबि कौड़ी की आश ॥ २४ ॥
ज्यों मधुकर चंपहि तजे त्यों तू तजि यह काज ॥
बुलबुल से लड़ि जाइ हो कह बुध फिरि बन राज ॥ २५ ॥
बिन बर्षा खन समुझि घर दीन्हे बयन बिसारि ॥
धिया बास तब तिमि तजा मैंरौ आस निवारि ॥ २६ ॥
तीतुर त्यागे प्राण निज गा अनार तरु सूखि ॥
नर सिंह को करु आदि अब तू मति काहु दूखि ॥ २७ ॥
सुमिरि शारदा के चरण वंदे भक्यो चंडूल ॥
नर गस करि का करहिं गे जो ईश्वर अनुकूल ॥ २८ ॥
कहिये रहनि बटेर की चहिये सुयश गजारि ॥
लहै केत की बास किमि मुनिवर कहत बिचारि ॥ २९ ॥
शास बद को आदि करु है सो मंगल खानि ॥
स्याम कार्तिक रटत जेहि शंभु सेवती मानि ॥ ३० ॥
गुला बास की आस तजि शार दूल को ध्याउ ॥
होई सुख परदेश में कहत रहे स्याति जाउ ॥ ३१ ॥
गुल फिरंग फूली बिपनि भई रूपण के दर्वि ॥
कह रवि सुत हरि बिन वृथा तूती बोले गर्वि ॥ ३२ ॥
श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ ॥
बरणौं मानस प्रश्न यह पूरण जन रघुनाथ ॥ ३३ ॥
देव सुमन अरु खगन के नाम जानि धक तीस ॥
पंच धाम कोठा असी अंक पाँच तिन शीस ३४ ॥
सकल सुनावे नाम जो धाम मध्य ठहराइ ॥
अंक जोरि दोहा समुझि सगुन हिं देउ बताइ ॥ ३५ ॥

। इति ।

नामकिताब	नाम किताब	नामकिताब
छन्दोर्णवपिंगल	दोहावलीरत्नावली	ज्ञान चालीसी
कविकुलकल्पतरु	गोकर्णमहात्म्य	मनमौजचरित्र
रसराज	हनुमानबाहुक	सौदागरलीला
सतसई सटीक	जनकपच्चीसी	बिनय प्रकाश
सभाविलास	बनयात्रा	वैद्यक वेदान्त आदि
तुलसी शब्दार्थ प्रकाश	कल्पसूत्र	योग वाशिष्ठ
प्रेमरत्न	समरबिहारविंद्रावन	प्रबोध चन्द्रोदयनाटक
युगलबिलास	बिहार विंद्रावन	सांख्य तत्त्व कौमुदी
चित्रचन्द्रिका	अनेकार्त्थ कोष	रामाभिषेक नाटक
बारहमासा बलदेव प्र-	स्त्री दर्प्पण	कैवल्य कल्प द्रुम
साद कृत	श्रृङ्गार प्रकाश	आनन्दामृत वर्षिणी
जगद विनोद	शंकर दिग्विजयभाषा	निघण्ट भाषा
राग प्रकाश	ब्रह्मसार	अमरबिनोद
लावनी व शेरबनारसी	परमार्त्थसार	वैद्यजीवन
श्रृङ्गार बत्तीसी	बारहमासा फ़क़ीरअ-	औषधसंग्रह कल्प-
शिवसिंह सरोज	लाबख़्स	वल्ली
नानार्त्थनौसंग्रहावली	सुन्दरी चरित्र	अमृत सागर
शनिश्चर की कथा	राम कलेवा	अमृत सागर बड़ी
ज्ञान माला	गंगा लहरी	वैद्यमनोत्सव
गोपीचंद भरतरी	कथा चित्रगुप्त	ज्योतिष
कथा श्री गंगा जी	भजनावली	जातक चन्द्रिका
अवध यात्रा	कृष्ण बाल लीला	जातकालंकार
भरतरी गीत	कायस्थ दर्प्पण	शीघ्रबोध भाषा

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
ज्ञान स्वरोदय	याज्ञवल्क्य स्मृति	जातक लङ्कार
रमल सार	व्रतार्क	षट्पञ्चाशिका
इन्द्रजाल	निर्णयसिन्धु	मुहूर्त्त गणपति
सामुद्रिक	लघु कौमुदी	मुहूर्त्त चिन्तामणि सटीक
मुहूर्त्तचक्र दीपिका	सिद्धान्त चन्द्रिका	मुहूर्त्त मार्त्तण्ड सटीक
संस्कृत पुराण स्मृति	अमरकोष प्रथम कांड	मुहूर्त्त दीपक
व्याकरण इत्यादि	अमरकोष भा·टी·स·	होरा मकरन्द
श्री मद्भागवत पुराण	सन्ध्योपासन	शीघ्र बोध सटीक
मार्कण्डेय पुराण	संग्रह शिरोमणि	मुतफ़र्रक़ात
भविष्योत्तर पुराण प-	शिवार्च्चन	विष्णुविनय
म द्वितीया	कायस्थ कुल भास्कर	अक्षरावली
श्री सत्यनारायण कथा	कायस्थ धर्म निरूपण	स्वयस्वोध
भगवद्गीता	मथुरा सभा	ज्ञान चालीसी
श्री भगवती गीता	तुलसी तत्व भास्कर	बाला बोध
भगवद्गीता विष्णुसह-	श्री गोपाल सहस्रनाम	विद्यार्थी की प्रथम पु-
स्रनाम सहित	शार्ङ्गधर सटीक	स्तक
दुर्गापाठ सटीक	गीत गोविन्द भा·ति·स·	गणित कामधेनु
दुर्गा पाठ स्तोत्र	ज्योतिष	लीलावती भाषा
महिम्न स्तोत्र	जातकाभरण	पटवारियों की पुस्तक
अपराध भञ्जन स्तोत्र	पाराशरी सटीक	चार भाग
मनुस्मृति उर्दू टीका स-	वृहज्जातक सटीक	पद्मावत
हारीत स्मृति	लघु जातक	इति

Anel
9L